जामेअ सुनन तिर्मिज़ी

2950-3956

جامع سنن ترمذی

تالیف : الامام الحافظ ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ الترمذی رحمہ اللہ

जामेअ सुनन तिर्मिज़ी

मय शरह

तालीफ़

इमाम हाफ़िज़ अबू ईसा मुहम्मद
बिन ईसा अत्तिर्मिज़ी (रह.)

तहक़ीक़

अल्लामा नासिरूद्दीन अल्बानी (रह.)

तख़रीज

फ़ज़ीलतुश्शैख़ हाफ़िज अबू सुफ़यान मीर मुहम्मदी

उर्दू तर्जुमा

फ़ज़ीलतुश्शैख़ मौलाना अली मुर्तज़ा ताहिर

بِسْـــــمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيم

अस्सलामु अलयकुम व-रहेमतुल्लाही व-बरकातुहू

बाद सलाम के मालुम हो की अल्लाह रब्बुल इज्जत के फजल-व-करम से हदीसों की 6 मोअतबर किताबें सिआ सत्ता / सिआ कुतुब पढ़ने में, समझने में और दावत पहुंचाने में आसानी हो इस नेक मक़सद से उम्मत-ए-मुस्लिमा के ख़िदमात में PDF की शकल में पेश है।

तफसीर ईब्ने क़सीर (8 जिल्द)

1. सहीह बुख़ारी (8 जिल्द)
2. सहीह मुस्लिम (8 जिल्द)
3. सुनन अबु दाऊद (6 जिल्द)
4. ज़ामेअ सुनन तिर्मिज़ी (4 जिल्द)
5. सुनन नसाई शरीफ़ (6 जिल्द)
6. सुनन इब्ने माजह (1 जिल्द)

इन PDF बनाने में हदीस नंबर,पेज नंबर, स्केनींग वगैरा मे कोई भूल हुई हो तो बराए मेहरबानी नीचे लिखे हुए मोबाइल नंबर पर इत्तेला करे।

अल्लाह रब्बुल इज्जत इन तमाम किताबों की PDF बनाने में और इसमे ता'ऊन करने वाले हजरात की ख़िदमात को कुबुल फरमाए ओर लोगों के लिए हिदायत का सबब बनाए।

शेरख़ान (अहमदाबाद-गुजरात) M.: +91 9825 696 131

جامع سُنن ترمذی

تالیف: الاما حافظ ابوعیسیٰ محمد بن عیسیٰ الترمذی رحمہ اللہ

जामेअ सुनन तिर्मिज़ी

मय शरह

तालीफ

इमाम हाफ़िज़ अबू ईसा मुहम्मद
बिन ईसा अत्तिर्मिज़ी (रह.)

तहक़ीक

अल्लामा नासिरूद्दीन अल्बानी (रह.)

तख़रीज

फ़ज़ीलतुश्शैख़ हाफ़िज अबू सुफ़यान मीर मुहम्मदी

उर्दू तर्जुमा

फ़ज़ीलतुश्शैख़ मौलाना अली मुर्तज़ा ताहिर

ज़िल्द नम्बर

4

हदीस नम्बर 2036 से 2949

नाम किताब	**जामेअ सुनन तिर्मिज़ी (जिल्द - 4)**
तालीफ़	**इमामुल हाफ़िज़ अबू ईसा मुहम्मद बिन ईसा अत्तिर्मिज़ी**
उर्दू तर्जुमा	**मौलाना अ़ली मुर्तज़ा ताहिर (हफिजहुल्लाह)**
हिन्दी तर्जुमा	**दारूत-तर्जुमा, शोबा नश्रो इशाअ़त** **जमीअ़त अहले हदीस, जोधपुर (राज.)**
तहक़ीक़	**मौलाना मुहम्मद नासिरुद्दीन अल्बानी (رحمه الله)**
तख़रीज	**हाफ़िज़ अबू सुफ़यान मीर मुहम्मदी**
तस्हीह व नज़्रे सानी	**मौलाना जमशेद आलम सल्फ़ी** (97857-69878)
लेज़र टाइपसेटिंग	**मोहम्मद शकील, (9351998441)**
मेनेजिंग डायरेक्टर मार्केटिंग मैनेजर	**अली हम्ज़ा,** (82338-55857) अहमद अब्बास (97397-31956)
प्रिण्टिंग	**आदर्श आफसेट**, स्टेडियम शॉपिंग सेन्टर, जोधपुर 92144-85741
बाइंडिंग	**कमाल बाईण्डिंग हाउस** मो. शाहिद भाई 93516-68223 0291-2551615

तादाद पेज	696	तादाद कॉपी	500 (पांच सौ)
प्रकाशन (प्रथम संस्करण)	नवम्बर 2020	क़ीमत	800/- (आठ सौ रुपये)

प्रकाशक	**मर्कज़ी अन्जुमन खुद्दामुल क़ुरआन वल हदीस, जोधपुर**
जेरे निगरानी	**शहरी व सूबाई जमीअत अहले हदीस, जोधपुर-राजस्थान**

फरमाने रसूले अकरम (ﷺ)

من أطاعني فقد أطاع الله ومن عصاني فقد عصى الله

जिसने मेरी इताअत की तो बिलाशुबा उसने
अल्लाह तआला की इताअत की
और जिसने मेरी नाफरमानी की तो बिलाशुबा
उसने अल्लाह तआला की नाफरमानी की।

[सहीह मुस्लिम (1835) 4739]

Sherkhan
9825 696 131

मिलने के पते

मकतबा तर्जुमान, 4116 उर्दू बाजार, नई दिल्ली
फोन: 011-23273407

इकरा बुक डिपो, 2/3978, ग्राउण्ड फ्लोर, फारूकी मंजिल सरगरामपुरा, सूरत, गुजरात 84608-53200

अल हिरा पब्लिकेशन, 423 उर्दू बाजार, मटिया महल जामा मस्जिद, दिल्ली 090153-82970

मदरसा दारूल उलूम सलफिया,
मोहल्ला सब्जी फरोश, रतलाम, (एम.पी.)

मोहम्मद अब्बास, 903, बडे ओम्ती,
जबलपुर, (एम.पी.) 89595-13602

हाफ़िज़ मोहम्मद राशिद,
विज्ञान नगर, कोटा (राज.) 70146-75559

तौहीद किताब सेन्टर, 08039-72503 सीकर (राज.)

कलीम बुक डिपो, सीकर (राज.) 70148-98515

नईम कुरैशी, 2 सी.एच.ए. 18 हाउसिंग बोर्ड, शास्त्री नगर, भट्टा बास, पुलिस स्टेशन के पास, जयपुर (राज.) 82091-64214

अल कौसर ट्रेडर्स, जोधपुर 94141-920119

अमरीन बुक एजेन्सी:
जमालपुर, अहमदाबाद। फोन: 84010-10786

साद सिद्दीकी:
राजा बाजार चौक, लखनऊ। फोन: 78608-22244

हुजैफा : मकतबा दारूस्सलाम, इस्लामिया सीनियर धोबिया इमली रोड़ मऊनाथ भंजन, मऊ, (यूपी) 275101
फोन: 74287-38778

मकतबा अस्सून्नह,
मुम्बई 08097-44448

उमरी बुक डिपो, मदरसा तालीमुल कुरआन, अशोक नगर, हिल नं. 3 कुर्ला, मुम्बई 82918-33897

दारूल इल्म,
नागपाड़ा, मुम्बई 022-23088989, 23082231

मो. इस्हाक, अल हुदा रिफाई फाउण्डेशन, खजराना, इन्दौर 95846-51411

सैफुल्लाह खालिद,
माणक बाग, इन्दौर 98273-97772

अबू रेहान मुहम्मदी मदनी,
जुलैखा चिल्ड्रन हॉस्पीटल केसर कॉलोनी, औरंगाबाद 88307-46536, 95452-45056

शैख सुहैल सल्फ़ी,
मकतबा सलफिया, वारणासी 094519-15874

आई.आई.सी. नूरी होटल के पास, डाण्डा बाजार, भुज, कच्छ (गुजरात) 094291-17111

मकतबा अलफहीम,
मऊनाथ, भंजन (यूपी) 0547-2222013

उम्मेद अली: इस्लामिया सीनियर सैकण्डरी स्कूल, वार्ड नं. 10, सीकर। फोन: 7742457343

सल्फी बुक सेन्टर,
मटिया महल, दिल्ली। फोन: 91365-05582

GUIDANCE PUBLISHERES & DISTRIBUTORS
D-105, Shop No. 2, Abul Fazl Enclaves, Jamia nagar, Okhla, New Delhi-110025,
9899693655, 9958923032

ALL INDIA DISTRIBUTOR
AL KITAB INTERNATIONAL
JAMIA NAGAR, NEW DELHI-25
PH: 26986973 M. 9312508762

SOLE DISTRIBUTOR
POPULAR BOOK STORE
OUT SIDE MERTI GATE, JODHPUR [RAJ.]
9460768990, 9664159557

फेहरिस्ते मज़ामीन

रसूलुल्लाह (ﷺ) से मर्वी क़ुरआने करीम की तफ़सीर	17
बाब 1 अपनी राय से क़ुरआने करीम की तफ़सीर करने वाला।	17
बाब 2 सूरह फ़ातिहा की तफ़सीर।	19
बाब 3 तफ़सीर सूरह बक़रा।	23
बाब 4 तफ़सीर सूरह आले इमरान।	46
बाब 5 तफ़सीर सूरह निसा।	60
बाब 6 तफ़सीर सूरह माइदा।	80
बाब 7 तफ़्सीर सूरह अन्आम।	94
बाब 8 सूरह आराफ़ की तफ़्सीर।	100
बाब 9 तफ़्सीर सूरह अन्फ़ाल।	103
बाब 10 तफ़्सीर सूरह तौबा।	108
बाब 11 तफ़्सीर सूरह यूनुस।	127
बाब 12 तफ़्सीर सूरह हूद।	129
बाब 13 तफ़्सीर सूरह यूसुफ़।	135
बाब 14 तफ़्सीर सूरह राद।	136
बाब 15 तफ़्सीर सूरह इब्राहीम।	137
बाब 16 तफ़्सीर सूरह हिज्र।	139
बाब 17 तफ़्सीर सूरह नहल।	142
बाब 18 तफसीर सूरह बनी इस्राईल।	143
बाब 19 तफ़्सीर सूरह कहफ़।	156
बाब 20 तफ़्सीर सूरह मरियम।	163
बाब 21 तफ़्सीर सूरह ताहा।	168
बाब 22 तफ़्सीर सूरह अंबिया।	169
बाब 23 तफ़्सीर सूरह हज।	172
बाब 24 तफ़्सीर सूरह मूमिनून।	176
बाब 25 तफ़्सीर सूरह नूर।	179
बाब 26 तफ़्सीर सूरह फुरकान।	190
बाब 27 तफ़्सीर सूरह शोरा।	192
बाब 28 तफ़्सीर सूरह नम्ल।	194
बाब 29 तफ़्सीर सूरह क़सस।	194
बाब 30 तफ़्सीर सूरह अन्कबूत।	195
बाब 31 तफ़्सीर सूरह रूम।	196
बाब 32 तफ़्सीर सूरह लुक़्मान।	200
बाब 33 तफ़्सीर सूरह सज्दा।	201
बाब 34 तफ़्सीर सूरह अहज़ाब।	203
बाब 35 तफ़्सीर सूरह सबा।	220
बाब 36 तफ़्सीर सूरह मलाइका (फ़ातिर)	223
बाब 37 तफ़्सीर सूरह यासीन।	223
बाब 38 तफ़्सीर सूरह साफ़्फ़ात	224
बाब 39 तफ़्सीर सूरह साद।	226
बाब 40 तफ़्सीर सूरह ज़ुमर।	231
बाब 41 तफ़्सीर सूरह मोमिन (ग़ाफ़िर)।	237
बाब 42 तफ़्सीर सूरह हा मीम सज्दा।	238
बाब 43 तफ़्सीर सूरह शूरा।	240
बाब 44 तफ़्सीर सूरह ज़ुख्रुफ़।	241
बाब 45 तफ़्सीर सूरह दुख़ान।	242
बाब 46 तफ़्सीर सूरह अह्काफ़।	244
बाब 47 तफ़्सीर सूरह मुहम्मद।	247

बाब 48 तफ़्सीर सूरह फ़तह।	249
बाब 49 तफ़्सीर सूरह हुजुरात।	251
बाब 50 तफ़्सीर सूरह क़ाफ़।	255
बाब 51 तफ़्सीर सूरह ज़ारियात।	255
बाब 52 तफ़्सीर सूरह तूर।	257
बाब 53 तफ़्सीर सूरह नज्म।	258
बाब 54 तफ़्सीर सूरह क़मर।	263
बाब 55 तफ़्सीर सूरह रहमान।	265
बाब 56 तफ़्सीर सूरह वाक़िया।	266
बाब 57 तफ़्सीर सूरह हदीद।	269
बाब 58 तफ़्सीर सूरह मुजादला।	271
बाब 59 तफ़्सीर सूरह हश्र।	275
बाब 60 तफ़्सीर सूरह मुम्तहिना।	277
बाब 61 तफ़्सीर सूरह सफ़।	281
बाब 62 तफ़्सीर सूरह जुमा।	282
बाब 63 तफ़्सीर सूरह मुनाफ़िक़ीन।	283
बाब 64 तफ़्सीर सूरह तगाबुन।	289
बाब 65 तफ़्सीर सूरह तहरीम।	290
बाब 66 तफ़्सीर सूरह नून वल क़लम।	295
बाब 67 तफ़्सीर सूरह हाक्क़ा।	296
बाब 68 तफ़्सीर सूरह मआरिज।	298
बाब 69 तफ़्सीर सूरह जिन्न।	298
बाब 70 तफ़्सीर सूरह मुद्दस्सिर।	301
बाब 71 तफ़्सीर सूरह क़यामा।	304
बाब 72 तफ़्सीर सूरह अबस।	305
बाब 73 तफ़्सीर सूरह तक्वीर।	306
बाब 74 तफ़्सीर सूरह मुतफ़्फ़िफ़ीन	307
बाब 75 तफ़्सीर सूरह इन्शिकाक।	308
बाब 76 तफ़्सीर सूरह बुरूज।	309
बाब 77 तफ़्सीर सूरह ग़ाशिया	314
बाब 78 तफ़्सीर सूरह फज्र।	315
बाब 79 तफ़्सीर सूरह शम्स।	315
बाब 80 तफ़्सीर सूरह लैल।	316
बाब 81 – तफ़्सीर सूरह ज़ुहा।	317
बाब 82 तफ़्सीर सूरह इन्शिराह	318
बाब 83 तफ़्सीर सूरह तीन।	318
बाब 84 तफ़्सीर सूरह अलक़।	319
बाब 85 तफ़्सीर सूरह क़द्र।	320
बाब 86 तफ़्सीर सूरह बय्यना।	322
बाब 87 तफ़्सीर सूरह ज़िल्ज़ाल।	322
बाब 88 तफ़्सीर सूरह तकासुर।	323
बाब 89 तफ़्सीर सूरह कौसर।	325
बाब 90 तफ़्सीर सूरह नस्र।	327
बाब 91 तफ़्सीर सूरह लहब।	327
बाब 92 तफ़्सीर सूरह इख़्लास	328
बाब 93 तफ़्सीर सूरह फ़लक व सूरह नास।	329
बाब 94 आदम (عليه السلام) की तख़्लीक़, सलाम की इब्तिदा, छींक, उनके इंकार और उनकी औलाद के इंकार का वाक़िया।	330
बाब 95 ज़मीन में पहाड़ पैदा करने की हिक्मत यह है कि यह हिलने से रुक जाए।	332

नबी अकरम (ﷺ) से मर्वी दुआओं का बयान 335

बाब 1 दुआ की फ़ज़ीलत।	335
बाब 2 दुआ इबादत का मगज़ है।	336
बाब 3 जो अल्लाह से माँगता नहीं अल्लाह उस पर नाराज़ हो जाता है।	336
बाब 4 ज़िक्र तुम्हारा बेहतरीन अमल और तुम्हारे मालिक के यहाँ सब से पाकीज़ा चीज़ है।	337
बाब 5 ज़िक्र करने की फ़ज़ीलत।	338
बाब 6 कसरत से (ज़्यादा से ज़्यादा) अल्लाह का ज़िक्र करने वाला अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले से अफ़ज़ल है।	338
बाब 7 जो लोग बैठ कर अल्लाह का ज़िक्र करें उनकी फ़ज़ीलत।	339
बाब 8 जिस मजलिस में ज़िक्रे इलाही न होता हो	341
बाब 9 मुसलमान की दुआ क़ुबूल की जाती है।	341
बाब 10 दुआ करने वाला पहले अपने लिए दुआ करे।	343
बाब 11 दुआ के वक़्त हाथ उठाना।	343
बाब 12 दुआ में जल्द बाज़ी करने वाला।	344
बाब 13 सुबह और शाम की दुआएं।	344
बाब 14 दुआ: ऐ अल्लाह गैब व हाज़िर के जानने वाले ज़मीन व आसमानों को बनाने वाले	347
बाब 15 सय्यदुल इस्तिग़फ़ार।	348
बाब 16 सोते वक़्त की दुआ।	349
बाब 17 दुआ: मैं उस अल्लाह से बख्शिश माँगता हूँ जिस के सिवा कोई माबूद नहीं जो ज़िंदा कायम रहने वाला है।	350
बाब 18 दुआ: ऐ अल्लाह जिस दिन तू अपने बन्दों को जमा करेगा मुझे अपने अज़ाब से बचाना।	351
बाब 19 दुआ: ऐ अल्लाह! आसमानों और ज़मीनों के रब... आख़िर तक।	352
बाब 20 दुआ: ऐ मेरे रब मैं तेरे नाम के साथ ही अपना पहलू बिस्तर पर रखता हूँ।	353
बाब 21 सोते वक़्त क़ुरआन पढ़ने वाला।	353
बाब 22 सूरह काफ़िरून, सज्दा, मुल्क, बनी इस्राईल और मुसब्बिहात सूरतें पढ़ना।	354
बाब 23 दुआ: ऐ अल्लाह मैं हर काम में तुझ से साबित कदमी का सवाल करता हूँ।	356
बाब 24 सोते वक़्त सुब्हान अल्लाह, अल्हम्दुलिल्लाह और अल्लाहु अकबर कहना	357
बाब 25 नमाज़ों के बाद और सोते वक़्त सुब्हान अल्लाह, अल्हम्दुलिल्लाह और अल्लाहु अकबर कहने की फ़ज़ीलत।	358
बाब 26 रात को आँख खुल जाने पर पढ़ी जाने वाली दुआ।	361
बाब 27 दुआ: अल्लाह ने उसकी सुन ली जिस ने उसकी तारीफ़ की।	362
बाब 28 दुआ: तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए है जिसने मेरी जान को ज़िंदा किया।	362
बाब 29 रात को नमाज़ के लिए खड़े होते वक़्त की दुआ	363
बाब 30 दुआ: ऐ अल्लाह मैं तेरी रहमत का सवाल करता हूँ।।	364
बाब 31 नमाज़े तहज्जुद शुरू करते वक़्त की दुआ।	366

बाब 32 दुआ: मैंने यक्सू हो कर अपना चेहरा ज़मीनों आसमान को बनाने वाले की तरफ़ फेर दिया।	367
बाब 33 सज्द ए तिलावत की दुआएं।	373
बाब 34 घर से निकलने की दुआ।	374
बाब 35 दुआ: अल्लाह के नाम से मैंने अल्लाह पर ही भरोसा किया।	375
बाब 36 बाज़ार में दाख़िल होने की दुआ।	375
बाब 37 मरीज़ क्या दुआ पढ़े?	376
बाब 38 जब कोई किसी मुसीबत ज़दा को देखे तो क्या कहे?	378
बाब 39 मजलिस से उठते वक़्त की दुआ।	379
बाब 40 मुसीबत के वक़्त की दुआ।	380
बाब 41 किसी जगह उतरने की दुआ	381
बाब 42 सफ़र पर निकलते वक़्त की दुआ।	381
बाब 43 जब सफ़र से वापस आए तो क्या कहे?	383
बाब 44. मदीना की दीवारें देखकर आप (ﷺ) का अपनी सवारी को दौड़ाना और अपने जानवर को हरकत देना।	383
बाब 45 किसी आदमी को अल्विदा करने की दुआ।	384
बाब 46 दुआ: अल्लाह तआला तुझे तक़्वा का तोशा दे।	385
बाब 47 आप (ﷺ) का मुसाफिर को अल्लाह से डरने और हर बलंदी पर अल्लाहु अकबर कहने की वसिय्यत करना।	385
बाब 48 सवारी (किसी जानवर) पर सवार होने की दुआ।	386
बाब 50 मुसाफ़िर की दुआ।	388
बाब 51 आंधी चलने के वक़्त की दुआ।	388
बाब 52 बादल की गरज की आवाज़ सुन कर क्या दुआ पढ़ी जाए।	389
बाब 53 चाँद देखने की दुआ।	389
बाब 54 गुस्से के वक़्त की दुआ।	390
बाब 55 बुरा ख़्वाब देखते वक़्त की दुआ।	391
बाब 56 नया नया फल देखते वक़्त की दुआ।	391
बाब 57 खाना खाने की दुआ।	392
बाब 58 खाने से फ़रागत के बाद की दुआएँ	393
बाब 59 गधा रेंकने के वक़्त की दुआ।	394
बाब 60 सुब्हान अल्लाह, अल्लाहु अकबर, ला इलाहा इलल्लाह और अल्हम्दुलिल्लाह कहने की फ़ज़ीलत।	394
बाब 61 सुब्हान अल्लाह, अल्हम्दुलिल्लाह कहने से जन्नत में दरख़्त लगते हैं।	396
बाब 62 सुब्हान अल्लाह व बिहम्दिही की फ़ज़ीलत।	397
बाब 63 सौ मर्तबा सुब्हान अल्लाह व बिहम्दिही कहने की फ़ज़ीलत का ज़िक्र।	399
बाब 64 सुब्हान अल्लाह, अल्हम्दुलिल्लाह, ला इलाहा इल्लल्लाह और अल्लाहु अकबर कहने की फ़ज़ीलत।	400
बाब 65 जिस क़लिमे तौहीद में वाहिद, अहद, समद के अल्फ़ाज़ हों उस की फ़ज़ीलत।	401
बाब 66 रसूलुल्लाह (ﷺ) से मर्वी जामेअ दुआएं।	402

Sherkhan
9825 696 131

बाब 67 दुआ में सब से पहले अल्लाह की हम्दो सना, फिर नबी (ﷺ) पर दरूद भेजा जाए तो वह क़ुबूल होती है।	403
बाब 68 दुआ। ऐ अल्लाह मेरे जिस्म में आफ़ियत दे।	405
बाब 69 वह दुआ जो नबी (ﷺ) ने फातिमा (رضي الله عنها) को सिखाई थी जब उन्होंने आप(ﷺ) से ख़ादिम माँगा था।	406
बाब 70 दुआ। ऐ अल्लाह मैं ऐसे दिल से तेरी पनाह माँगता हूँ जो डरता न हो।	407
बाब 71 दुआ: ऐ अल्लाह! मुझे मेरा दीन सिखा दे" की तालीम का किस्सा।	407
बाब 72 दुआ: ऐ अल्लाह मैं गम और परेशानी से तेरी पनाह में आता हूँ।	408
बाब 73 हाथों की उँगलियों पर तस्बीहात गिनना।	409
बाब 74 दुआ: ऐ अल्लाह! मैं तुझ से हिदायत, तक़्वा पाक दामनी और ग़िना का सवाल करता हूँ।	410
बाब 75 दाऊद (عليه السلام) की दुआ: ऐ अल्लाह मैं तुझ से तेरी मोहब्बत का सवाल करता हूँ	411
बाब 76 दुआ: ऐ अल्लाह! मुझे अपनी मोहब्बत अता फ़रमा, और उस शख़्स की मोहब्बत कि जिसकी मोहब्बत तेरे नज़दीक मुझे नफ़ा बख्शे।	411
बाब 77 दुआ: ऐ अल्लाह! मैं तुझ से अपने कानों और आँखों के शर से पनाह माँगता हूँ।	412
बाब 78 दुआ: ऐ अल्लाह! मैं तेरी रज़ा के साथ तेरे गुस्से से पनाह माँगता हूँ।	413
बाब 80 आदमी यह न कहे कि ऐ अल्लाह! अगर तू चाहे तो मुझे माफ़ कर दे।	415
बाब 81 हदीस: हमारा रब हर रात आसमाने दुनिया की तरफ़ नुज़ूल करता है।	415
बाब 82 दुआ ऐ अल्लाह मेरे गुनाह माफ़ फ़र्मा और मेरे घर को वसीअ कर दे	416
बाब 83 दुआ: ऐ अल्लाह हमने सुबह की या शाम की, हम तुझे और तेरे अर्श को उठाने वाले फ़रिश्तों को गवाह बनाते हैं	417
बाब 84 दुआ: ऐ अल्लाह! हमारे लिए अपना ऐसा डर तक्सीम कर दे जो हमारे और हमारी नाफ़रमानियों के दर्मियान हायल हो जाए।	417
बाब 84 दुआ: अल्लाह बलंद व बरतर के अलावा कोई माबूद नहीं।	419
बाब 85 मछली वाले नबी की दुआ।	419
बाब 86 अल्लाह तआला के निन्नान्वे नाम है।	420
बाब 87 अल्लाह तआला के अस्मा उल हुस्ना की तफ़्सील।	420
बाब 88 मुसीबत के वक़्त इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन पढ़ना	424
बाब 89 माफ़ी और आफ़ियत का सवाल करने की फ़ज़ीलत।	425
बाब 91 दुआ: ऐ अल्लाह मेरे लिए ख़ैरो बरकत इख़्तियार फ़रमा।	427
बाब 92 वुज़ू, अल्हम्दुलिल्लाह और सुब्हान अल्लाह की फ़ज़ीलत	428

बाब 93 दो अहादीस पर मुश्तमिल बाबः तस्बीह आधा मीजान है। 428

बाब 94 अरफा की दुआः ऐ अल्लाह हर क़िस्म की तारीफ़ तेरे लिए ही है। 429

बाब 95 दुआः ऐ अल्लाह! हम तुझ से वह भलाई मांगते हैं जो तुझ से तेरे नबी मुहम्मद (ﷺ) ने मांगी थी। 430

बाब 96 दुआः ऐ दिलों के फेरने वाले। 431

बाब 97 बे ख़्वाबी का इलाज करने के लिए पढ़ी जाने वाली दुआ। 431

बाब 98 दुआः ऐ ज़िंदा कायम रखने वाले नीज़ या ज़ुल जलाल वल इक्राम को लाज़िम रखो। 432

बाब 99 बा वुज़ू सोने की फ़ज़ीलत। 433

बाब 100 नीन्द में घबराहट के वक़्त की दुआ 435

बाब 101 वह दुआ जो आप (ﷺ) ने अबू बक्र (رضي الله عنه) को सिखाई थी। 435

बाब 102 अल्लाह से बढ़ कर कोई ग़ैरत वाला नहीं 436

बाब 103 दुआः ऐ अल्लाह! मैंने अपनी जान पर बहुत ज़ुल्म किया। 437

बाब 103 गुनाहों का गिर जाना। 438

बाब 104 तौबा व इस्तिग़्फ़ार की फ़ज़ीलत और अल्लाह तआला की अपने बन्दों पर रहमत का तज़किरा। 439

बाब 105 अल्लाह बन्दे की तौबा उस वक़्त तक क़ुबूल करता है जब तक उसका दम गले में न अटक जाए। 442

बाब 106 अल्लाह तआला बन्दे की तौबा से बहुत ख़ुश होता है 443

बाब 107 अगर तुम गुनाह न करो तो अल्लाह तआला ऐसे लोग पैदा कर दे जो गुनाह करें फिर अल्लाह उन्हें बख़्शे 443

बाब 108 हदीसे क़ुद्सीः ऐ इब्ने आदम तू जब तक मुझे पुकारता रहेगा.. 444

बाब 109 अल्लाह तआला ने सौ रहमतों को पैदा किया। 445

बाब 110 अगर मोमिन अल्लाह के अज़ाबों को जान ले 445

बाब 111 मेरी रहमत मेरे ग़ुस्से पर ग़ालिब है 446

बाब 112 फ़रमाने रसूल (ﷺ) उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो।। 447

बाब 113 दुआ:ऐ अल्लाह मेरे दिल को ठंडा कर दे। 448

बाब 114 जिसके लिये दुआ का दरवाज़ा खोल दिया जाए 448

बाब 115 मेरी उम्मत की उम्रें साठ से सत्तर के दर्मियान होगी 450

बाब 116 ऐ मेरे रब मेरी मदद फ़रमा मेरे ख़िलाफ़ मदद न करना। 450

बाब 117 जिस शख़्स ने अपने ज़ालिम पर बद्दुआ की उसने बदला ले लिया 451

बाब 118 दस बार मुकम्मल कलिम ए तौहीद कहने वाला। 452

बाब 119. मै अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता हूँ उस की मख़्लुक़ की तादाद के बराबर कहने का सवाब 452

बाब 120 अल्लाह तआला बहुत हया वाला और करीम है।	454
बाब दुआओं की मुख़्तलिफ़ अहादीस	**456**
बाब 121 अल्लाह से माफ़ी और आफ़ियत का सवाल करो	456
बाब 122 जो इस्तिग़फ़ार करता रहे वह गुनाहों पर मुसिर्र नहीं कहलाता	456
बाब 126 मरीज़ की दुआ।	459
बाब 127 दुआए वित्र।	460
बाब 128 नबी (ﷺ) का हर नमाज़ के बाद दुआ और तअव्वुज़ करना।	461
बाब 129 हिफ्ज़े क़ुरआन की दुआ।	463
बाब 130 तकालीफ़ (तक्लीफ़ों) के ख़त्म होने का इन्तिज़ार करना।	466
बाब 131 सोने की दुआ।	467
बाब 132 मेहमान की दुआ (मेज़बान को)	469
बाब 134 ला हौला वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह कहने की फ़ज़ीलत।	471
बाब 135 तस्बीह, तह्लील और तक्दीस की फ़ज़ीलत।	472
बाब 136 जंग के वक़्त की दुआ।	473
बाब 137 यौमे अरफ़ा (नौ ज़िल हिज्जा) की दुआ।	473
बाब 138 दुआ। ऐ अल्लाह मेरा बातिन मेरे ज़ाहिर से अच्छा बना दे।	474
बाब 139 दुआ: ऐ दिलों को फेरने वाले मेरे दिल को मज़बूत कर।	474
बाब 140 किसी तक्लीफ़ की वजह से दम करना।	475
बाब 141 सय्यदा उम्मे सलमा (رضي الله عنها) की दुआ।	475
बाब 142 अल्लाह तआला को कौन सा कलाम सब से ज़्यादा पसंद है?	477
बाब 143 माफ़ी और आफ़ियत का सवाल।	478
बाब 144 हल्के फुल्के लोग आगे निकल गये	479
बाब 145 अल्लाह के कुछ फ़रिश्ते ज़मीन में चलते हैं।	481
बाब 146 ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह कहने की फ़ज़ीलत।	482
बाब 147 अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के साथ हुस्ने ज़न (अच्छा गुमान) रखना।	483
बाब 148 पनाह तलब करना।	484
बाब 149 दुआ: मैं अल्लाह के मुकम्मल कलिमात के साथ उसकी मख़्लूक़ के शर से पनाह माँगता हूँ।	485
बाब 150 दुआ: ऐ अल्लाह! मुझे ऐसा बना दे कि मैं तेरा बड़ा शुक्र बजा लाऊँ।	485
बाब 151 आदमी अल्लाह से जो भी दुआ करता है उसे क़ुबूल किया जाता है।	486
बाब 151 अल्लाह के साथ अच्छा गुमान कर लेना अल्लाह की अच्छी इबादत करना है।	487
बाब 152 आदमी को यह ख्याल ज़रूर रखना चाहिए कि वह क्या ख़्वाहिश कर रहा है	487
बाब 153 दुआ: ऐ अल्लाह मुझे मेरे कानों और मेरी निगाह से फ़ायदा दे।	488
बाब 154 आदमी को अपनी तमाम ज़रूरीयात का सवाल अपने रब से ही करना चाहिए।	488

Sherkhan
9825 696 131

बाब रसूलुल्लाह (ﷺ) से मर्वी फ़ज़ाइल व मनाकिब का बयान 491

बाब 1 नबी करीम (ﷺ) के फ़ज़ाइल। 491

बाब 2 नबी (ﷺ) की विलादत का बयान। 499

बाब 3 नबी (ﷺ) की नबुव्वत की इब्तिदा का बयान। 500

बाब 4 नबी (ﷺ) की बिअ्सत का बयान और आपको कितनी उम्र में नबुव्वत दी गई थी। 502

बाब 5 नबी (ﷺ) के मोजिज़ात और आप(ﷺ) की ख़ुसूसियात का बयान। 504

बाब 6 अली (رضی اللہ) का कौल कि पहाड़ और दरख़्त सलाम कह कर नबी (ﷺ) का इस्तिकबाल करता था। 505

बाब 7 नबी (ﷺ) पर वहि कैसे नाज़िल होती थी। 510

बाब 8 नबी (ﷺ) का हुलिया मुबारक। 510

बाब 9 आयशा (رضی اللہ) का कौल: आप (ﷺ) खुली और वाज़ेह कलाम करते थे।. 513

बाब 10 इब्ने जज़्आ का कौल कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से ज़्यादा मुस्कुराने वाला कोई नहीं देखा। 514

बाब 11 महरे नबुव्वत का बयान। 515

बाब 12 जाबिर बिन समुरह् (رضی اللہ) का बयान कि रसूलुल्लाह(ﷺ) की पिंडली में बारीकी थी 516

बाब 13 नबी (ﷺ) की उम्रे मुबारक का बयान। 518

बाब 14 सय्यदना अबू बक्र (رضی اللہ) के फ़ज़ाइल व मनाकिब उनका नाम अब्दुल्लाह बिन उस्मान और लक़ब अतीक है। 520

बाब 15 बाब: अगर मैं किसी को दोस्त बनाने वाला होता तो अबू बक्र को दोस्त बनाता। 522

बाब 17 आप (ﷺ) का एक औरत से यह फ़रमाना अगर मैं न हुआ तो अबू बक्र के पास आना। 531

बाब 18 अबू हफ़्स उमर बिन ख़त्ताब के फ़ज़ाइल व मनाक़िब 533

बाब 19 सय्यदना उस्मान बिन अफ़्फ़ान (رضی اللہ) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब उनकी दो कुनियतें थी अबू अम्र और अबू अब्दुल्लाह। 541

बाब 20 सय्यदना अली बिन अबी तालिब(رضی اللہ) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब उनकी भी दो कुनियतें थी अबू तुराब और अबुल हसन। 552

बाब 21 सय्यदना अबू मुहम्मद तल्हा बिन उबैदुल्लाह(رضی اللہ) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब। 565

बाब 22 सय्यदना ज़ुबैर बिन अव्वाम (رضی اللہ) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब। 568

बाब 23 हर नबी का एक मददगार साथी होता है। 568

बाब 24 बाब: साबिक़ा हदीस वाला किस्सा के बारे में आप (ﷺ) का फ़रमान। 568

बाब 25 सय्यदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ अज़्ज़ोहरी(رضی اللہ) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब 569

बाब 26 सय्यदना अबू इस्हाक़ साद बिन अबी वक़्क़ास (رضی اللہ) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब और अबू वक़्क़ास का नाम मालिक बिन वहीब है। 572

बाब 27 सय्यदना अबू आवर जिनका नाम सईद बिन ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल है के फ़ज़ाइल व मनाकिब। 574

बाब 28 सय्यदना अबुल फ़ज़्ल नबी (ﷺ) के चचा यानी अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब के फ़ज़ाइल व मनाक़िब — 577

बाब 29 सय्यदना जाफ़र बिन अबू तालिब जो कि अली(رضي الله عنه) के भाई हैं उनके फ़ज़ाइल व मनाक़िब — 579

बाब 30 अबू हुरैरा का कौल: रसूल (ﷺ) के बाद किसी ने जूता नहीं पहना जो जाफ़र (رضي الله عنه) से अफ़ज़ल हो। — 580

बाब 31 अबू मुहम्मद हसन बिन अली बिन अबी तालिब और हुसैन बिन अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) के फ़जाइल व मनाक़िब। — 582

बाब 32 नबी{ﷺ} के घर वालों के फ़ज़ाइल व मनाक़िब — 590

बाब 33 मुआज़ बिन जबल, ज़ैद बिन साबित, उबय बिन काब और अबू उबैदा बिन जर्राह (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब। — 592

बाब 34 सय्यदना सलमान फ़ारसी (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब। — 596

बाब 35 सय्यदना अबुल यकंज़ान अम्मार बिन यासिर (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब। — 597

बाब 36 सय्यदना अबू ज़र गिफ़ारी (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब। — 598

बाब 37 सय्यदना अब्दुल्लाह बिन सलाम (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब। — 599

बाब 38 सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब। — 601

बाब 39 सय्यदना हुज़ैफा बिन यमान (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब। — 605

बाब 40 सय्यदना ज़ैद बिन हारिसा (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब। — 605

बाब 41 सय्यदना उसामा बिन ज़ैद के फ़ज़ाइल व मनाक़िब। — 607

बाब 42 सय्यदना जरीर बिन अब्दुल्लाह अल बजली (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब। — 610

बाब 43 सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब। — 610

बाब 44 सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब। — 611

बाब 45 सय्यदना अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब। — 612

बाब 46 सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब। — 612

बाब 47 बाब: अबू हुरैरा (رضي الله عنه) के मनाक़िब का बयान। — 615

बाब 48 सय्यदना मुआविया बिन अबी सुफ़ियान (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब। — 619

बाब 49 सय्यदना अम्र बिन आस (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब। — 620

बाब 50 सय्यदना ख़ालिद बिन वलीद (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब। — 620

बाब 51 सय्यदना साद बिन मुआज़ (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब। — 621

बाब 52 सय्यदना कैस बिन साद बिन उबादा (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब। — 622

बाब 53 सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब। — 623

Sherkhan
9825 696 131

बाब 54 सय्यदना मुसअब बिन उमैर (رضی اللہ) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।	624
बाब 55 सय्यदना बराअ बिन मालिक (رضی اللہ) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।	625
बाब 56 सय्यदना अबू मूसा अशअरी (رضی اللہ) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।	625
बाब 57 नबी{ﷺ} के सहाबी की फ़ज़ीलत।	626
बाब 58 दरख़्त के नीचे बैअत करने वाले सहाबा की फ़ज़ीलत।	627
बाब 59 सहाबा को बुरा भला कहने वाला।	628
बाब 61 सय्यदा फ़ातिमा (رضی اللہ) बिन्ते मुहम्मद{ﷺ} के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।	630
बाब 62 सय्यदा ख़दीजा (رضی اللہ) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।	635
बाब 63 सय्यदा आयशा (رضی اللہ) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।	637
बाब 64 नबी{ﷺ} की अज़्वाजे मुतह्हरात (رضی اللہ) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।	642
बाब 65 सय्यदना उबय बिन काब (رضی اللہ) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।	646
बाब 66 अंसार और कुरैश की फ़ज़ीलत।	647
बाब 67 अंसार के कौन से घराने बेहतर हैं।	651
बाब 68 मदीना की फ़ज़ीलत।	653
बाब 69 मक्का की फ़ज़ीलत।	658
बाब 70 अरब की फ़ज़ीलत।	659
बाब 71 अजम की फ़ज़ीलत।	661
बाब 72 यमन की फ़ज़ीलत।	662
बाब 73 गिफ़ार, असलम, जुहैना और मुज़ैना के फ़ज़ाइल।	665
बाब 74 सक़ीफ़ और बनू हनीफ़ा का बयान।	665
बाब 75 शाम और यमन की फ़ज़ीलत।	671
बाब हदीस की इल्लतों का बयान।	675

मज़मून नम्बर. 45

أَبْوَابُ تَفْسِيرِ الْقُرْآنِ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

रसूलुल्लाह (ﷺ) से मर्वी क़ुरआने करीम की तफ़सीर

तआरुफ़

420 अहादीस और 95 अबवाब पर मुश्तमिल इस उन्वान में हैं:

- क़ुरआन की 93 सूरतों की तफ़सीर।
- तफ़सीर करने का तरीक़ा।
- आयात व सूरत का शाने नुज़ूल।

1 بَابُ مَا جَاءَ فِي الَّذِي يُفَسِّرُ الْقُرْآنَ بِرَأْيِهِ

1 - अपनी राय से क़ुरआने करीम की तफ़सीर करने वाला।

2950 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ السَّرِيِّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَبْدِ الأَعْلَى، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ قَالَ فِي الْقُرْآنِ بِغَيْرِ عِلْمٍ فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ.

2950 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिस शख़्स ने क़ुरआन (की तफ़सीर) में अपनी राय से कोई बात कही वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।"

ज़ईफ़: अहमद: 1/233. दारमी:238. अबू याला:2338. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा: 1783. हिदायतुर्रूवात:225

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2951 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ عَمْرٍو الكَلْبِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ عَبْدِ الأَعْلَى، عَنْ سَعِيدِ بْنِ

2951 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "मेरी तरफ़ से हदीस बयान करने से बचो, सिवाए उसके जिसका तुम्हें इल्म हो, पस

جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: اتَّقُوا الحَدِيثَ عَنِّي إِلاَّ مَا عَلِمْتُمْ، فَمَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ، وَمَنْ قَالَ فِي القُرْآنِ بِرَأْيِهِ فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ.

जो शख़्स जान बूझ कर मुझ पर झूठ बोले उसे चाहिए कि अपना ठिकाना जहन्नम की आग से बना ले और जिसने कुरआन में अपनी राय से कुछ कहा उसे भी चाहिए कि अपना ठिकाना जहन्नम की आग से बना ले।"

ज़ईफ़: इसकी तख़रीज पिछली हदीस में गुज़र चुकी है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2952 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَبَّانُ بْنُ هِلاَلٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُهَيْلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ وَهُوَ ابْنُ أَبِي حَزْمٍ، أَخُو حَزْمٍ القُطَعِيِّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عِمْرَانَ الجَوْنِيُّ، عَنْ جُنْدَبِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَنْ قَالَ فِي القُرْآنِ بِرَأْيِهِ فَأَصَابَ فَقَدْ أَخْطَأَ.

2952 - सय्यदना जुन्दुब बिन अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिस शख़्स ने अपनी राय से कुरआन की तफ़सीर में कोई बात कही वह सहीह भी हुई तो उसने ग़लती की।"

ज़ईफ़: अबू दाऊद:3652. हिदायतुर्रूवात: 226. निसाई: 111. अबू याला:1520. तबरानी:1672.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है और बअ़ज़ मुहद्दिसीन ने सहल बिन अबी हज़्म के बारे में कलाम की है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: नबी (ﷺ) के बअ़ज़ उलमा सहाबा और दीगर लोगों से यह मर्वी है कि वह बग़ैर इल्म कुरआन की तफ़सीर करने से बहुत

सख़्ती से रोकते थे, और रही बात जो क़तादा और दीगर उलमा के बारे में मर्वी है कि उन्होंने भी कुरआन की तफ़सीर की है तो उनके बारे में यह गुमान नहीं है कि उन्होंने बग़ैर इल्म या अपनी तरफ़ से तफ़सीर की हो और हमारी इस बात की दलील में उन से मर्वी है कि उन्होंने बग़ैर इल्म अपनी तरफ़ से कोई बात नहीं कही।

अबू ईसा कहते हैं: हमें हसन बिन महदी बसरी ने उन्हें अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने मामर से बयान किया है कि क़तादा फ़रमाते हैं: कुरआन में कोई आयत ऐसी नहीं है जिसके बारे में मैंने कुछ सुना न हो।(सहीहुल इस्नाद मक़्तूअ)

हमें इब्ने अबी उमर ने बवास्ता सुफ़ियान बिन उयय्ना आमश से रिवायत की है कि मुजाहिद फ़रमाते हैं: अगर मैं इब्ने मसऊद (رضي الله عنه) की किरअत पढ़ू तो मुझे इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) से बहुत कुछ न पूछने की ज़रुरत पड़े जो मैं उन से पूछता हूँ। (सहीहुल इस्नाद मक़्तूअ)

2 - सूरह फ़ातिहा की तफ़सीर।

2 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ فَاتِحَةِ الكِتَابِ

2953 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया," जिस ने कोई नमाज़ पढ़ी, उसमें उम्मुल कुरआन (फ़ातिहा) न पढ़ी तो वह नमाज़ नाक़िस है, वह नाक़िस है मुकम्मल नहीं।"

रावी अब्दुर्रहमान कहते हैं: मैंने कहा: ऐ अबू हुरैरा! मैं कभी इमाम के पीछे हूँ तो? तो उन्होंने फ़रमाया, ऐ फ़ारसी के बेटे! तुम उसे अपने दिल में पढ़ लिया करो क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना है: " अल्लाह तआला फ़रमाते हैं:आधा मेरे लिए और आधा मेरे बन्दे के लिए और मेरे बन्दे के लिए वह है जो उस ने माँगा बन्दा खड़ा हो कर कहता है { الحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ العَالَمِينَ} तो अल्लाह तबारक व तआला फ़रमाते हैं: मेरे बन्दे ने मेरी तारीफ़ की, फिर बन्दा कहता है: {الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ} तो अल्लाह फ़रमाते हैं:मेरे बन्दे ने मुझ पर सना भेजी। वह कहता है: {مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ} तो वह फ़रमाता है: मेरे बन्दे ने मेरी बुज़ुर्गी बयान की, यह मेरे लिए है और मेरे और मेरे बन्दे के दर्मियान {إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ} है और सूरत का आख़िरी हिस्सा मेरे बन्दे के लिए और मेरे बन्दे के वह है जो उस ने माँगा, बन्दा कहता है { اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلاَ الضَّالِّينَ}.

मुस्लिम:395. इब्ने माजह:3784. अहमद:2/241. हुमैदी:973.

2953 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ العَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنِ العَلاَءِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: مَنْ صَلَّى صَلاَةً لَمْ يَقْرَأْ فِيهَا بِأُمِّ القُرْآنِ فَهِيَ خِدَاجٌ فَهِيَ خِدَاجٌ، غَيْرُ تَمَامٍ قَالَ: قُلْتُ: يَا أَبَا هُرَيْرَةَ، إِنِّي أَحْيَانًا أَكُونُ وَرَاءَ الإِمَامِ. قَالَ: يَا ابْنَ الفَارِسِيِّ، فَاقْرَأْهَا فِي نَفْسِكَ، فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: قَسَمْتُ الصَّلاَةَ بَيْنِي وَبَيْنَ عَبْدِي نِصْفَيْنِ، فَنِصْفُهَا لِي وَنِصْفُهَا لِعَبْدِي، وَلِعَبْدِي مَا سَأَلَ. يَقُومُ العَبْدُ فَيَقُولُ: {الحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ العَالَمِينَ} فَيَقُولُ اللَّهُ: حَمِدَنِي عَبْدِي. فَيَقُولُ {الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ} فَيَقُولُ اللَّهُ: أَثْنَى عَلَيَّ عَبْدِي. فَيَقُولُ {مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ} فَيَقُولُ: مَجَّدَنِي عَبْدِي وَهَذَا لِي، وَبَيْنِي وَبَيْنَ عَبْدِي {إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ} وَآخِرُ السُّورَةِ لِعَبْدِي، وَلِعَبْدِي مَا سَأَلَ، يَقُولُ: {اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلاَ الضَّالِّينَ}.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है। और शोबा इस्माईल बिन जाफ़र और दीगर रुवात ने भी इसे अला बिन अब्दुर्रहमान से उनके बाप के ज़रिए, अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से नबी (ﷺ) की इस हदीस को इसी तरह ही रिवायत किया है। जबकि इब्ने जुरैज और मालिक बिन अनस ने अला बिन अब्दुर्रहमान से बवास्ता अबू साइब मौला हिशाम बिन ज़ोहरी, अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से नबी (ﷺ) की ऐसी हदीस बयान की है।

नीज इब्ने अबू उवैस ने अपने बाप से बयान किया है कि अला बिन अब्दुर्रहमान कहते हैं: मुझे मेरे बाप अबू साइब ने बवास्ता अबू हुरैरा (رضي الله عنه) नबी (ﷺ) से इसी तरह बयान किया है।

हमें यह हदीस मुहम्मद बिन यह्या और याकूब बिन सूफ़ियान फ़ारसी ने बयान की वह दोनों कहते हैं: हमें इस्माईल बिन अबू उवैस ने अपने बाप से उन्होंने अला बिन अब्दुर्रहमान से वह कहते हैं: मुझे मेरे बाप और अबू साइब मौला हिशाम बिन ज़ोहरी ने बयान किया कि यह दोनों अबू हुरैरा (رضي الله عنه) के साथ बैठा करते थे, चुनांचे अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिस ने कोई नमाज़ पढ़ी उस में उम्मुल क़ुरआन को न पढ़ा तो वह नमाज़ नाक़िस है। वह नाक़िस है वह नाक़िस है मुकम्मल नहीं है।" (अख्रजहू मुस्लिम: 10/ 2 .व अहमद:250/ 2. व अबू दाऊद:821) इस्माईल बिन अबू उवैस की हदीस में इस से ज़्यादा नहीं है, मैंने अबू ज़ुर्आ से इस हदीस के बारे में पूछा, तो उन्होंने फ़रमाया, "दोनों हदीसें ही सहीह हैं और उन्होंने ख़ुद इब्ने अबू उवैस की अपने बाप के ज़रिए अला से बयान कर्दा हदीस से दलील ली।

۲۹۵۳. حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ سَعْدٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ أَبِي قَيْسٍ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، عَنْ عَبَّادِ بْنِ حُبَيْشٍ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ، قَالَ: أَتَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ جَالِسٌ فِي الْمَسْجِدِ فَقَالَ الْقَوْمُ: هَذَا عَدِيُّ بْنُ حَاتِمٍ وَجِئْتُ بِغَيْرِ أَمَانٍ وَلاَ كِتَابٍ، فَلَمَّا دُفِعْتُ إِلَيْهِ أَخَذَ بِيَدِي، وَقَدْ كَانَ قَالَ قَبْلَ ذَلِكَ: إِنِّي لأَرْجُو أَنْ يَجْعَلَ اللَّهُ يَدَهُ فِي يَدِي، قَالَ: فَقَامَ فَلَقِيَتْهُ امْرَأَةٌ وَصَبِيٌّ

2953 - सय्यदना अदी बिन हातिम (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, आप मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे तो लोगों ने कहा: यह अदी बिन हातिम है, जब कि मैं बगैर अमान व तहरीर के आया था जब मुझे आप तक पहुंचाया गया तो आप ने मेरा हाथ पकड़ लिया और आप ने इस से पहले यह बात इर्शाद फ़रमाई थी कि : "मुझे उम्मीद है कि अल्लाह उसका हाथ मेरे हाथ में दे दे।" अदी कहते हैं: फिर आप मुझे लेकर खड़े हुए, तो आपको एक औरत मिली उसके साथ बच्चा भी था उन्होंने कहा: हमें आप से एक काम है। आप उनके साथ खड़े रहे यहाँ तक कि

مَعَهَا، فَقَالاَ: إِنَّ لَنَا إِلَيْكَ حَاجَةً. فَقَامَ مَعَهُمَا حَتَّى قَضَى حَاجَتَهُمَا، ثُمَّ أَخَذَ بِيَدِي حَتَّى أَتَى بِي دَارَهُ، فَأَلْقَتْ لَهُ الوَلِيدَةُ وِسَادَةً فَجَلَسَ عَلَيْهَا، وَجَلَسْتُ بَيْنَ يَدَيْهِ، فَحَمِدَ اللَّهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ، ثُمَّ قَالَ: مَا يُفِرُّكَ أَنْ تَقُولَ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ. فَهَلْ تَعْلَمُ مِنْ إِلَهٍ سِوَى اللهِ؟. قَالَ: قُلْتُ: لاَ. قَالَ: ثُمَّ تَكَلَّمَ سَاعَةً ثُمَّ قَالَ: إِنَّمَا تَفِرُّ أَنْ تَقُولَ اللَّهُ أَكْبَرُ، وَتَعْلَمُ شَيْئًا أَكْبَرُ مِنَ اللهِ؟ قَالَ: قُلْتُ: لاَ، قَالَ: فَإِنَّ اليَهُودَ مَغْضُوبٌ عَلَيْهِمْ، وَإِنَّ النَّصَارَى ضُلاَّلٌ قَالَ: قُلْتُ: فَإِنِّي ضَيْفٌ مُسْلِمٌ، قَالَ: فَرَأَيْتُ وَجْهَهُ تَبَسَّطَ فَرَحًا، قَالَ: ثُمَّ أَمَرَ بِي فَأُنْزِلْتُ عِنْدَ رَجُلٍ مِنَ الأَنْصَارِ جَعَلْتُ أَغْشَاهُ آتِيهِ طَرَفَيِ النَّهَارِ، قَالَ: فَبَيْنَا أَنَا عِنْدَهُ عَشِيَّةً إِذْ جَاءَهُ قَوْمٌ فِي ثِيَابٍ مِنَ الصُّوفِ مِنْ هَذِهِ النِّمَارِ، قَالَ: فَصَلَّى وَقَامَ فَحَثَّ عَلَيْهِمْ، ثُمَّ قَالَ: وَلَوْ صَاعٌ وَلَوْ بِنِصْفِ صَاعٍ وَلَوْ قَبْضَةٌ وَلَوْ بِبَعْضِ قَبْضَةٍ يَقِي أَحَدُكُمْ وَجْهَهُ حَرَّ جَهَنَّمَ أَوِ النَّارِ وَلَوْ بِتَمْرَةٍ وَلَوْ بِشِقِّ تَمْرَةٍ، فَإِنَّ أَحَدَكُمْ لاَقِي اللَّهَ وَقَائِلٌ لَهُ مَا أَقُولُ لَكُمْ:

उन दोनों की ज़रुरत पूरी हुई, फिर मेरा हाथ पकड़ कर मुझे अपने घर लाये तो एक लौंडी ने आप के लिए एक गद्दा रखा आप उस पर जलवा अफ़रोज़ हुए और मैं आप के साथ बैठ गया, तो आप ने अल्लाह की हम्दो सना के बाद फ़रमाया, "तुम्हें لا إله الا الله कहने से क्या चीज़ भगाती है क्या तुम अल्लाह के अलावा भी किसी माबूद को जानते हो?" मैंने कहा: नहीं, रावी कहते हैं: फिर आप ने कुछ देर बातें करने के बाद फ़रमाया, "तु الله أكبر कहने से भागता है और क्या तुम अल्लाह से बड़ी किसी चीज़ को जानते हो?" मैंने कहा: नहीं, आप ने फ़रमाया," यहूदियों पर ग़ज़ब नाज़िल हुआ और ईसाई गुमराह हैं, मैंने अर्ज़ की मैं एक तरफ़ा मुसलमान हूँ, कहते हैं: मैंने आपका चेहरा मुबारक देखा खुशी से चमक उठा। फिर आप ने हुक्म दिया मुझे अंसार के एक आदमी के यहाँ ठहराया गया। मैं सुबह शाम उसके पास जाता था कहते हैं एक शाम मैं उसके पास था कि ऊन लकीरदार चादरों में मलबूस कुछ लोग आए (जो मुफ़्लिस लोग थे) कहते हैं: आप (ﷺ) ने नमाज़ पढ़ी और खड़े हो कर उनको सदक़ा देने पर रग़बत दिलाई फिर आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "अगरचे एक साअ, आधा साअ, एक मुट्ठी या एक मुट्ठी का कुछ हिस्सा ही हो आप उसके साथ अपने चेहरे को जहन्नम या आग की गर्मी से बचाएँ अगरचे एक खुजूर या उसका टुकड़ा ही हो, तुम में से हर आदमी अल्लाह से मिलने वाला है और उस से यह बात कहेगा जो मैं तुम्हें

أَلَمْ أَجْعَلْ لَكَ سَمْعًا وَبَصَرًا؟ فَيَقُولُ: بَلَى، فَيَقُولُ: أَلَمْ أَجْعَلْ لَكَ مَالاً وَوَلَدًا؟ فَيَقُولُ: بَلَى، فَيَقُولُ، أَيْنَ مَا قَدَّمْتَ لِنَفْسِكَ؟ فَيَنْظُرُ قُدَّامَهُ وَبَعْدَهُ، وَعَنْ يَمِينِهِ وَعَنْ شِمَالِهِ، ثُمَّ لاَ يَجِدُ شَيْئًا يَقِي بِهِ وَجْهَهُ حَرَّ جَهَنَّمَ، لِيَقِ أَحَدُكُمْ وَجْهَهُ النَّارَ وَلَوْ بِشِقِّ تَمْرَةٍ، فَإِنْ لَمْ يَجِدْ فَبِكَلِمَةٍ طَيِّبَةٍ، فَإِنِّي لاَ أَخَافُ عَلَيْكُمُ الْفَاقَةَ، فَإِنَّ اللَّهَ نَاصِرُكُمْ وَمُعْطِيكُمْ حَتَّى تَسِيرَ الظَّعِينَةُ فِيمَا بَيْنَ يَثْرِبَ وَالْحِيرَةِ أَوْ أَكْثَرَ مَا يُخَافُ عَلَى مَطِيَّتِهَا السَّرَقُ قَالَ: فَجَعَلْتُ أَقُولُ فِي نَفْسِي: فَأَيْنَ لُصُوصُ طَيِّئٍ.

कह रहा हूँ क्या मैंने तुम्हें कान और आँख नहीं दी थी? वह कहेगा: क्यों नहीं, फिर वह फ़रमाएगा: क्या अल्लाह तआला ने माल और औलाद से नहीं नवाज़ा। तो वह कहेगा क्यों नहीं। तो वह कहेगा: कहाँ है वह चीज़ जो तूने अपने लिए आगे भेजी थी? तो वह अपने आगे पीछे, दायें और बाएं देखेगा तो उसे कोई चीज़ नहीं मिलेगी जिस से अपने चेहरे को बचाए ख़्वाह खुजूर के टुकड़े के साथ ही अगर वह भी न मिले तो अच्छी बात के साथ, मैं तुम पर फ़ाके से नहीं डरता क्योंकि अल्लाह तुम्हारा मददगार और तुम्हें अता करने वाला है, यहाँ तक कि एक ऊँट सवार औरत यस्रिब से हियरा तक या उस से भी आगे जाएगी उसे अपने सामान पर चोरों का ख़तरा नहीं होगा।" रावी कहते हैं: मैं अपने दिल में कहा करता था कि क़बीले तै के चोर कहाँ होंगे।

मुस्लिम:395. इब्ने माजह:3784. अहमद:2/241. हुमैदी:973

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।हम इसे सिमाक बिन हर्ब के तरीक़ से ही जानते हैं और शोबा ने भी सिमाक बिन हर्ब से बवास्ता अब्बाद बिन हुबैश, अदी बिन हातिम से नबी (ﷺ) की इस लम्बी हदीस को बयान किया है।

2954 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَبُنْدَارٌ، قَالاَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، عَنْ عَبَّادِ بْنِ حُبَيْشٍ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: الْيَهُودُ مَغْضُوبٌ عَلَيْهِمْ وَالنَّصَارَى ضُلاَّلٌ فَذَكَرَ الْحَدِيثَ بِطُولِهِ.

2954 - सय्यदना अदी बिन हातिम (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "यहूदियों पर ग़ज़ब नाज़िल हुआ और ईसाई गुमराह हैं।"

सहीह लिग़ैरिही: इस से पहली हदीस के तहत तख़रीज गुज़र चुकी है। अस-सिलसिला अस-सहीहा:3263.

3 - तफ़सीर सूरह बक़रा।

3 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الْبَقَرَةِ

2955 - सय्यदना अबू मूसा अशअरी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने आदम को मिट्टी की एक मुट्ठी से पैदा किया जो उस ने सारी ज़मीन से ली थी, फिर बनू आदम ज़मीन के मुताबिक़ ही आए, इन में से सुर्ख़, सफ़ेद, सियाह और इनके दर्मियान भी हैं (इसी तरह) नर्म मिजाज़, सख़्त, नापाक और पाक भी हैं।"

सहीह: अबू दाऊद:4693. अहमद:4/400. हाकिम:12/261. इब्ने हिब्बान:6160

2955 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، وَابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، وَعَبْدُ الوَهَّابِ، قَالُوا: حَدَّثَنَا عَوْفُ بْنُ أَبِي جَمِيلَةَ الأَعْرَابِيُّ، عَنْ قَسَامَةَ بْنِ زُهَيْرٍ، عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى خَلَقَ آدَمَ مِنْ قَبْضَةٍ قَبَضَهَا مِنْ جَمِيعِ الأَرْضِ، فَجَاءَ بَنُو آدَمَ عَلَى قَدْرِ الأَرْضِ، فَجَاءَ مِنْهُمُ الأَحْمَرُ وَالأَبْيَضُ وَالأَسْوَدُ وَبَيْنَ ذَلِكَ، وَالسَّهْلُ وَالحَزْنُ وَالخَبِيثُ وَالطَّيِّبُ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2956 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अल्लाह तआला के फ़रमानः दरवाज़े में सज्दे की हालत में दाखिल हो जाओ।" (अल- बक़रा:58) के बारे में फ़रमाया, "वह अपने सुरीनों के बल घसीटते हुए दाख़िल हुए।" यानी अल्लाह के हुक्म से इन्हिराफ़ करते हुए। और इसी सनद से ही मर्वी है कि नबी (ﷺ) ने (फ़रमाने इलाही) "उन ज़ालिमों ने इस बात को बदल दिया जो उन से कही गई थी (आयत:58) के बारे में फ़रमाया, "उन्होंने कहा था: दाना बाली में है।" (تقدم في الذي قبله).

बुख़ारी:3403. मुस्लिम:3015. इब्ने हिब्बान:6251. अहमद:2/312.

2956 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي قَوْلِهِ تَعَالَى: {وَادْخُلُوا البَابَ سُجَّدًا} قَالَ: دَخَلُوا مُتَزَحِّفِينَ عَلَى أَوْرَاكِهِمْ أَيْ مُنْحَرِفِينَ، وَبِهَذَا الإِسْنَادِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: {فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا قَوْلاً غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ} قَالَ: قَالُوا حَبَّةٌ فِي شَعْرَةٍ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2957 - अब्दुल्लाह बिन आमिर बिन रबीया अपने बाप से रिवायत करते हैं कि हम अंधेरी रात में नबी (ﷺ) के साथ सफ़र पर थे हमें पता न चला कि क़िब्ला कहाँ है, चुनाँचे हम में से हर आदमी ने अपने सामने मुंह कर के नमाज़ पढ़ ली, जब सुबह हुई तो हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) से इस बात का तजकिरा किया तो यह आयत नाजिल हुई: "तुम जिधर भी मुंह करो उधर ही अल्लाह की ज़ात है।" (अल- बक़रा: 115)

हसन: तख़रीज 345 के तहत गुज़र चुकी है।

2957 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَشْعَثُ السَّمَّانُ، عَنْ عَاصِمِ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَامِرِ بْنِ رَبِيعَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سَفَرٍ فِي لَيْلَةٍ مُظْلِمَةٍ فَلَمْ نَدْرِ أَيْنَ القِبْلَةُ، فَصَلَّى كُلُّ رَجُلٍ مِنَّا عَلَى حِيَالِهِ، فَلَمَّا أَصْبَحْنَا ذَكَرْنَا ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَنَزَلَتْ: {فَأَيْنَمَا تُوَلُّوا فَثَمَّ وَجْهُ اللَّهِ}.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे अशअ़स बिन अबी रबीअ के ज़रिए ही आसिम बिन उबैदुल्लाह से जानते हैं और अशअ़स हदीस में ज़ईफ़ है।

2958 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) नफ़्ल नमाज़ अपनी सवारी पर ही पढ़ते थे जिधर भी उसका मुंह होता जब आप मक्का से मदीना आ रहे थे, फिर अब्दुल्लाह बिन उमर ने यह आयत पढ़ी: " मशरिक़ और मगरिब अल्लाह ही का है।" (आयत : 115) और इब्ने उमर (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं: यह आयत इसी बारे में नाज़िल हुई है।

बुख़ारी:999. मुस्लिम:700. निसाई:491। इब्ने खुजैमा: 1267.

2958 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ أَبِي سُلَيْمَانَ، قَالَ: سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ جُبَيْرٍ، يُحَدِّثُ عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّي عَلَى رَاحِلَتِهِ تَطَوُّعًا حَيْثُمَا تَوَجَّهَتْ بِهِ وَهُوَ جَاءٍ مِنْ مَكَّةَ إِلَى الْمَدِينَةِ ثُمَّ قَرَأَ ابْنُ عُمَرَ، هَذِهِ الآيَةَ: {وَلِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالمَغْرِبُ} الآيَةَ. فَقَالَ ابْنُ عُمَرَ: فَفِي هَذَا أُنْزِلَتْ هَذِهِ الآيَةُ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और क़तादा से मर्वी है कि उन्होंने इस आयत: "और मशरिक़ व मगरिब अल्लाह ही का है जिधर भी मुंह करोगे उधर ही अल्लाह की ज़ात है।" की तफ़सीर में फ़रमाया कि: यह मंसूख है इसे अल्लाह के फ़रमान: " पस अपने चेहरे को मस्जिदे हराम की तरफ़ फेरें।" (आयत: 144) ने मंसूख किया है। यानी उस मस्जिदे हराम की तरफ़ कर लें।

यह बात हमें मुहम्मद बिन अब्दुल मलिक बिन अबी शवारिब ने यज़ीद बिन अबी ज़ुरैर से बवास्ता सईद, क़तादा से बयान किया है। नीज मुजाहिद से इस आयत; "जिधर मुंह करो उधर ही अल्लाह की ज़ात है।" के बारे में मर्वी है कि उधर ही अल्लाह का क़िब्ला है। यह बात अबू कुरैब मुहम्मद बिन अला ने वकीअ से बवास्ता नज़र बिन अरबी, मुजाहिद (رحمه الله) से बयान की है। (सहीहुल इस्नाद मक़्तूअ)

2959 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الحَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ حُمَيْدٍ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ عُمَرَ قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ لَوْ صَلَّيْنَا خَلْفَ الْمَقَامِ، فَنَزَلَتْ {وَاتَّخِذُوا مِنْ مَقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى}.

2959 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) से रिवायत है कि उमर बिन ख़त्ताब (رضي الله عنه) ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! अगर हम मक़ामे इब्राहीम के पीछे नमाज़ पढ़ें (तो क्या ही ख़ूब हो) चुनाँचे यह आयत नाज़िल हुई: "और मक़ामे इब्राहीम को नमाज़ की जगह बना लो।" (125)

बुख़ारी:402. मुस्लिम:2399. इब्ने माजह्: 1009.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2960 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ الطَّوِيلُ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: قَالَ عُمَرُ بْنُ الخَطَّابِ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ: لَوِ اتَّخَذْتَ مِنْ مَقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى، فَنَزَلَتْ {وَاتَّخِذُوا مِنْ مَقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى}.

2960 - सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! अगर आप मक़ामे इब्राहीम को नमाज़ की जगह बना लें (तो क्या ही अच्छा हो) तो यह आयत नाज़िल हुई: "और तुम मक़ामे इब्राहीम को जाए नमाज़ बना लो।"

सहीह: देखिये पिछली हदीस

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और इस बारे में इब्ने उमर (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

2961 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي قَوْلِهِ: {وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا} قَالَ: عَدْلاً.

2961 - सय्यदना अबू सईद (رضي الله عنه) नबी (ﷺ) से अल्लाह के फ़रमान: " इसी तरह हम ने तुम्हें दर्मियानी उम्मत बनाया। (आयत: 143) के बारे में रिवायत करते हैं कि हमें आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "अदल वाली।"

बुख़ारी:3339. इब्ने माजह्:4284

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

अबू ईसा फ़रमाते हैं: हमें अब्द बिन हुमैद जाफ़र बिन औन से उन्होंने आमश से बवास्ता अबू सालेह, अबू सईद (رضي الله عنه) से हदीस बयान की है कि रसूलुल्लाह (صلى الله عليه وسلم) ने फ़रमाया, "क़यामत के दिन नूह (अलैहि०) को बुला कर पूछा जाएगा: क्या आप ने तब्लीग की थी? तो वह कहेंगे: हाँ, फिर उनकी कौम को बुला कर पूछा जाएगा: क्या इन्होने तुम्हें तब्लीग की थी? तो वह कहेंगे : हमारे पास कोई डराने वाला शख़्स नहीं आया? (नूह अलैहि०) से कहा जाएगा: आप के गवाह कौन हैं? तो वह कहेंगे कि मुहम्मद (صلى الله عليه وسلم) और उनकी उम्मत।

आप (صلى الله عليه وسلم) ने फ़रमाया, "फिर तुम्हें लाया जाएगा तुम गवाही दोगे कि उन्होंने तबलीग़ की थी यही अल्लाह का फ़रमान है।" इसी तरह उसने तुम्हें दर्मियानी (इन्साफ वाली) उम्मत बनाया ताकि तुम लोगों पर गवाह बन जाओ और रसूल तुम्हारे ऊपर गवाह रहें।" (الوسط عدل) को कहा जाता है। تقدم تخريجه في الذي قبله

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस भी हसन सहीह है। नीज हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने बवास्ता जाफ़र बिन औन आमश से ऐसी ही हदीस बयान की है।

2962 - सय्यदना बराअ बिन आज़िब (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(صلى الله عليه وسلم) जब मदीना में तशरीफ़ लाये तो आप ने सोलह या सत्तरह महीने बैतूल मक्दिस की तरफ़ मुंह करके नमाज़ पढ़ी, और रसूलुल्लाह(صلى الله عليه وسلم) चाहते थे कि उन्हें काबा की तरफ़ मुतवज्जह कर दिया जाए, चुनाँचे अल्लाह अज्ज़ व जल्ल ने आयत उतार दी। " हम आप के चेहरे को बार बार आसमान की तरफ़ उठते हुए देख रहे हैं अब हम आप को उस किब्ला की जानिब मुतवज्जेह करेंगे जिस से आप ख़ुश हो जाएँ, आप अपना मुंह मस्जिदे हराम की तरफ़ फेर लें।" (आयत: 144) फिर आप(صلى الله عليه وسلم) को काबा की तरफ़ मुतवज्जह कर दिया गया और आप यही चाहते थे। एक आदमी ने आप(صلى الله عليه وسلم) के साथ अस्र की नमाज़ पढ़ी फिर वह अंसारी लोगों के पास से गुजरा वह बैतूल मक्दिस की

2962 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ، قَالَ: لَمَّا قَدِمَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَدِينَةَ صَلَّى نَحْوَ بَيْتِ الْمَقْدِسِ سِتَّةَ أَوْ سَبْعَةَ عَشَرَ شَهْرًا، وَكَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُحِبُّ أَنْ يُوَجَّهَ إِلَى الكَعْبَةِ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ: {قَدْ نَرَى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضَاهَا فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الحَرَامِ} فَوُجِّهَ نَحْوَ الكَعْبَةِ، وَكَانَ يُحِبُّ ذَلِكَ، فَصَلَّى رَجُلٌ مَعَهُ العَصْرَ، قَالَ: ثُمَّ مَرَّ عَلَى قَوْمٍ مِنَ الأَنْصَارِ وَهُمْ رُكُوعٌ فِي

صَلَاةِ الْعَصْرِ نَحْوَ بَيْتِ الْمَقْدِسِ، فَقَالَ: هُوَ يَشْهَدُ أَنَّهُ صَلَّى مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنَّهُ قَدْ وُجِّهَ إِلَى الكَعْبَةِ، قَالَ: فَانْحَرَفُوا وَهُمْ رُكُوعٌ.

तरफ़ मुंह किए अस्र की नमाज़ के रुकू में थे, उसने कहा: वह गवाही देता है कि उस ने नबी (ﷺ) के साथ नमाज़ पढ़ी है और आप(ﷺ) का चेहरा काबा की तरफ़ फेर दिया गया है। रावी कहते हैं: वह रुकू में ही फिर गए।

सहीह: तख़रीज के लिए हदीस नम्बर 340 मुलाहजा फ़रमाएं।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। इसे सुफ़ियान सौरी ने भी अबू इस्हाक़ से रिवायत किया है।

2963 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: كَانُوا رُكُوعًا فِي صَلَاةِ الفَجْرِ.

وَفِي البَابِ عَنْ عَمْرِو بْنِ عَوْفٍ الْمُزَنِيِّ، وَابْنِ عُمَرَ، وَعُمَارَةَ بْنِ أَوْسٍ، وَأَنَسِ بْنِ مَالِكٍ.

2963 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि वह लोग नमाज़े फज्र में रुकू की हालत में थे।

सहीह: तख़रीज के लिए 341 मुलाहजा फ़रमाए।

वज़ाहत: इस बारे में अम्र बिन औफ़ मुज़्नी, इब्ने उमर, उमारा बिन औस और अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه)की हदीस हसन सहीह है।

2964 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، وَأَبُو عَمَّارٍ، قَالَا: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ سِمَاكٍ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: لَمَّا وُجِّهَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى الكَعْبَةِ قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ كَيْفَ بِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ مَاتُوا وَهُمْ يُصَلُّونَ إِلَى بَيْتِ الْمَقْدِسِ؟ فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: {وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِيعَ إِيمَانَكُمْ} الآيَةَ.

2964 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि जब नबी (ﷺ) को काबा की तरफ़ मुतवज्जह किया गया तो लोगों ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! हमारे उन भाइयों का क्या बनेगा जो बैतूल मक्दिस की तरफ़ नमाज़ पढ़ते हुए फौत हो गए हैं? तो अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी: "अल्लाह तआला तुम्हारे ईमान (यानी नमाज़ें) ज़ाया नहीं करेगा।" (143)

सहीह: लिगैरिही: अबू दाऊद:4680. अहमद:295. दारमी:1238. हाकिम:2/269.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2965 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، قَالَ: سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ، يُحَدِّثُ عَنْ عُرْوَةَ، قَالَ: قُلْتُ لِعَائِشَةَ: مَا أَرَى عَلَى أَحَدٍ لَمْ يَطُفْ بَيْنَ الصَّفَا وَالمَرْوَةِ شَيْئًا، وَمَا أُبَالِي أَنْ لاَ أَطُوفَ بَيْنَهُمَا، فَقَالَتْ: بِئْسَ مَا قُلْتَ يَا ابْنَ أُخْتِي، طَافَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَطَافَ الْمُسْلِمُونَ، وَإِنَّمَا كَانَ مَنْ أَهَلَّ لِمَنَاةَ الطَّاغِيَةِ الَّتِي بِالْمُشَلَّلِ لاَ يَطُوفُونَ بَيْنَ الصَّفَا وَالمَرْوَةِ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى: {فَمَنْ حَجَّ البَيْتَ أَوْ اعْتَمَرَ فَلاَ جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّفَ بِهِمَا} وَلَوْ كَانَتْ كَمَا تَقُولُ لَكَانَتْ فَلاَ جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ لاَ يَطَّوَّفَ بِهِمَا

2965 - उर्वा (ﷺ) बयान करते हैं कि मैंने सय्यदा आयशा (ﷺ) से कहा: मेरे ख़याल में वह शख़्स जो सफ़ा व मर्वा के दर्मियान तवाफ़ न करे उस पर कोई हर्ज नहीं है और मैं यह भी परवाह नहीं करता कि मैं ख़ुद भी उनका तवाफ़ न करूं तो उन्होंने फ़रमाया, ऐ भांजे तुमने गलत कहा, रसूलुल्लाह (ﷺ) और मुसलमानों ने सफ़ा व मर्वा का तवाफ़ किया है और वजह यह है कि मुशल्लल में कायम मनात बुत के लिए एहराम बाँधने वाले सफ़ा व मर्वा का तवाफ़ (सई) नहीं करते थे, तो अल्लाह तआला ने यह हुक्म नाजिल किया "बैतुल्लाह का हज और उम्रा करने वाले के लिए इन दोनों का तवाफ़ करना गुनाह नहीं है।" (आयत: 158) और अगर मामला ऐसे ही होता जैसे तुम कह रहे हो तो हुक्म यह होता कि उनका तवाफ़ न करने वाले पर गुनाह नहीं है।

बुख़ारी:1643. मुस्लिम:1277. अबू दाऊद:1901. इब्ने माजह:2986. निसाई:2967.

वज़ाहत: ज़ोहरी फ़रमाते हैं: मैंने यह हदीस अबू बक्र बिन अब्दुर्रहमान बिन हारिस बिन हिशाम से ज़िक्र की, तो उन्हें यह बात अच्छी लगी और कहने लगे यह तो एक इल्मी बात है, मैंने अहले इल्म को यह कहते हुए सुना है कि सफ़ा व मर्वा के दर्मियान सई न करने वाले अरब लोग कहा करते थे कि उन दोनों पत्थरों के दर्मियान तवाफ़ जाहिलियत का काम है और दूसरे अंसार कहने लगे: हमें बैतुल्लाह के तवाफ़ का हुक्म दिया गया है सफ़ा व मर्वा का नहीं तो अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी: "सफ़ा व मर्वा अल्लाह की निशानियों में से हैं।"

अबू बक्र बिन अब्दुर्रहमान कहते हैं: मेरे ख़याल में यह आयत उन लोगों के बारे में नाजिल हुई थी।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2966 - आसिम अह्वल कहते हैं: मैंने अनस बिन मालिक (ﷺ) से सफ़ा व मर्वा के बारे में पूछा तो उन्होंने फ़रमाया, "यह दोनों जाहिलियत की निशानियों में से थे फिर जब इस्लाम आया तो हम उन दोनों के तवाफ़ से रुक गए। चुनाँचे अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी: "सफ़ा व मर्वा अल्लाह की निशानियों में से हैं, इसलिए बैतुल्लाह का हज व उम्रा करने वाले पर इनका तवाफ़ कर लेने में कोई गुनाह नहीं है।" फ़रमाने लगे: उनका तवाफ़ नफ़ली है, जब कि अपनी खुशी से भलाई करने वालों का अल्लाह कदरदान और उन्हें खूब जानने वाला है। (आयत: 158)

2966 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ أَبِي حَكِيمٍ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ عَاصِمٍ الأَحْوَلِ، قَالَ: سَأَلْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ، عَنِ الصَّفَا وَالمَرْوَةِ، فَقَالَ: كَانَا مِنْ شَعَائِرِ الجَاهِلِيَّةِ، فَلَمَّا كَانَ الإِسْلَامُ أَمْسَكْنَا عَنْهُمَا، فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى: {إِنَّ الصَّفَا وَالمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللهِ فَمَنْ حَجَّ البَيْتَ أَوْ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّفَ بِهِمَا} قَالَ: هُمَا تَطَوُّعٌ {وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَإِنَّ اللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ}.

बुख़ारी: 1648. मुस्लिम: 1278.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2967 - जाबिर बिन अब्दुल्लाह (ﷺ) बयान करते हैं कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) मक्का में आए तो आप (ﷺ) ने बैतुल्लाह के गिर्द सात चक्कर लगाए, फिर यह आयत पढ़ी {وَاتَّخِذُوا مِنْ مَقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى} आप (ﷺ) ने मक़ामे इब्राहीम के पीछे नमाज़ पढ़ी, फिर हजरे अस्वद पर आकर उसका इस्तिलाम किया, फिर फ़रमाया, "हम भी वहीं से शुरू करेंगे जहां से अल्लाह ने शुरू किया।" और यह आयत पढ़ी: "बेशक सफ़ा व मर्वा अल्लाह की निशानियों में से हैं।"

2967 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ جَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ قَدِمَ مَكَّةَ طَافَ بِالبَيْتِ سَبْعًا فَقَرَأَ: {وَاتَّخِذُوا مِنْ مَقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى} فَصَلَّى خَلْفَ الْمَقَامِ، ثُمَّ أَتَى الحَجَرَ فَاسْتَلَمَهُ، ثُمَّ قَالَ: نَبْدَأُ بِمَا بَدَأَ اللَّهُ وَقَرَأَ: {إِنَّ الصَّفَا وَالمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ}.

सहीह: तख़रीज के लिए 817 देखें।

2968 - सय्यदना बराअ बिन आज़िब (ﷺ) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) के सहाबा के लिए

2968 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا

عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ إِسْرَائِيلَ بْنِ يُونُسَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ الْبَرَاءِ، قَالَ: كَانَ أَصْحَابُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا كَانَ الرَّجُلُ صَائِمًا فَحَضَرَ الإِفْطَارُ فَنَامَ قَبْلَ أَنْ يُفْطِرَ، لَمْ يَأْكُلْ لَيْلَتَهُ وَلاَ يَوْمَهُ حَتَّى يُمْسِيَ، وَإِنَّ قَيْسَ بْنَ صِرْمَةَ الأَنْصَارِيَّ كَانَ صَائِمًا، فَلَمَّا حَضَرَهُ الإِفْطَارُ أَتَى امْرَأَتَهُ، فَقَالَ: هَلْ عِنْدَكِ طَعَامٌ؟ قَالَتْ: لاَ، وَلَكِنْ أَنْطَلِقُ فَأَطْلُبُ لَكَ، وَكَانَ يَوْمَهُ يَعْمَلُ فَغَلَبَتْهُ عَيْنُهُ وَجَاءَتْهُ امْرَأَتُهُ، فَلَمَّا رَأَتْهُ قَالَتْ: خَيْبَةً لَكَ. فَلَمَّا انْتَصَفَ النَّهَارُ غُشِيَ عَلَيْهِ، فَذَكَرَ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَنَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةَ: {أُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ إِلَى نِسَائِكُمْ} فَفَرِحُوا بِهَا فَرَحًا شَدِيدًا {وَكُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ}.

हुक्म था कि जब आदमी रोज़े से होता, फिर इफ़्तार के वक़्त इफ्तारी से पहले सो जाता तो वह सारी रात और अगला सारा दिन शाम तक कुछ नहीं खा सकता था, और कैस बिन सिर्मा अंसारी (ﷺ) रोज़े से थे इफ्तारी के वक़्त अपनी बीवी के पास आकर कहने लगे: क्या तुम्हारे पास खाना है? उन्होंने कहा: नहीं, लेकिन मैं जाकर आप के लिए तलाश करती हूँ। वह सारा दिन काम करते रहे थे। इसलिए उन पर नींद का गलबा हो गया और उनकी बीवी उनके पास आयी, तो उन्हें (सोते हुए) देख कर कहने लगी: हाय आप की महरूमी! फिर जब आधा दिन गुजरा तो आप पर गशी तारी हो गई, नबी (ﷺ) से इसका तज़किरा किया गया तो यह आयत नाजिल हुई: "रोज़े की रातों में अपनी बीवियों से मिलना तुम्हारे लिए हलाल कर दिया गया है।" तो लोग इस से बहुत खुश हुए फिर यह हुक्म आया कि तुम खाते पीते रहो, यहाँ तक कि सुबह का सफ़ेद धागा (रात तक) सियाह धागे से ज़ाहिर हो जाए। (आयत: 187)

बुख़ारी: 1915. अबू दाऊद: 2314. निसाई: 2168

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2969 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ ذَرٍّ، عَنْ يُسَيْعٍ الْكِنْدِيِّ، عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي قَوْلِهِ تَعَالَى: {وَقَالَ رَبُّكُمْ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ} قَالَ:

2969 - सय्यदना नौमान बिन बशीर (ﷺ) नबी (ﷺ) से अल्लाह तआला के फ़रमान: "और तुम्हारे रब ने फ़रमाया है मुझे पुकारो मैं तुम्हारी सुनूँगा।" (गाफिर: 60) के बारे में रिवायत करते हैं कि आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "दुआ इबादत ही है।" और आप (ﷺ) ने आयत " और तुम्हारे रब ने कहा है कि मुझे

الدُّعاءُ هُوَ العِبادَةُ، وَقَرأَ: {وَقالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ}، إِلَى قَوْلِهِ: {داخِرِينَ}.

पुकारो मैं तुम्हारी सुनूंगा।" यहाँ से {داخرين} तक पढ़ी।"

सहीह: अबू दाऊद:1479. इब्ने माजह:3828. अस-सिलसिला अस-सहीहा:2654. अहमद:4/ 267.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। इसे मंसूर ने भी रिवायत किया है।

2970 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا حُصَيْنٌ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَدِيُّ بْنُ حَاتِمٍ، قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ: {حَتَّى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الخَيْطُ الأَبْيَضُ مِنَ الخَيْطِ الأَسْوَدِ مِنَ الفَجْرِ} قَالَ لِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّمَا ذَلِكَ بَيَاضُ النَّهَارِ مِنْ سَوَادِ اللَّيْلِ.

2970 - सय्यदना अदी बिन हातिम (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि जब आयत "यहाँ तक कि जब तुम्हारे लिए सफ़ेद धागा, सियाह धागे से ज़ाहिर हो जाए।" (अल- बक़रा 187) नाज़िल हुई तो नबी (ﷺ) ने मुझ से फ़रमाया, "यह दिन की रोशनी का रात की सियाही से ज़ाहिर होना है।"

बुख़ारी:1916. मुस्लिम:1090. अबू दाऊद:2369. निसाई:2169

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। हमें अहमद बिन मुनीअ ने हुशैम से बवास्ता मुजालिद शाबी से अदी बिन हातिम, (رضي الله عنه) के ज़रिए नबी (ﷺ) की इसी तरह हदीस बयान की है।

2971 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مُجَالِدٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ، قَالَ: سَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الصَّوْمِ فَقَالَ: {حَتَّى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الخَيْطُ الأَبْيَضُ مِنَ الخَيْطِ الأَسْوَدِ} قَالَ: فَأَخَذْتُ عِقَالَيْنِ أَحَدُهُمَا أَبْيَضُ وَالآخَرُ أَسْوَدُ، فَجَعَلْتُ أَنْظُرُ إِلَيْهِمَا، فَقَالَ لِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، شَيْئًا لَمْ يَحْفَظْهُ سُفْيَانُ، فَقَالَ: إِنَّمَا هُوَ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ.

2971 - सय्यदना अदी बिन हातिम (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से रोज़े के बारे में सवाल किया। तो आप ने फ़रमाया," यहाँ तक कि तुम्हारे लिए सफ़ेद धागा सियाह धागे से ज़ाहिर हो जाए।" कहते हैं: फिर मैंने दो धागे लिए एक सफ़ेद था दूसरा सियाह मैं उनकी तरफ़ देखने लगा, तो नबी (ﷺ) ने मुझ से कोई बात इर्शाद फ़रमाई: (इब्ने अबी उमर कहते हैं:) सुफ़ियान को यह बात याद नहीं रही, फिर आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "इस से दिन और रात मुराद है।"

सहीह: साबिक़ हदीस देखिए।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2972 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الضَّحَّاكُ بْنُ مَخْلَدٍ، عَنْ حَيْوَةَ بْنِ شُرَيْحٍ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ أَسْلَمَ أَبِي عِمْرَانَ التُّجِيبِيِّ، قَالَ: كُنَّا بِمَدِينَةِ الرُّومِ، فَأَخْرَجُوا إِلَيْنَا صَفًّا عَظِيمًا مِنَ الرُّومِ، فَخَرَجَ إِلَيْهِمْ مِنَ الْمُسْلِمِينَ مِثْلُهُمْ أَوْ أَكْثَرُ، وَعَلَى أَهْلِ مِصْرَ عُقْبَةُ بْنُ عَامِرٍ، وَعَلَى الجَمَاعَةِ فَضَالَةُ بْنُ عُبَيْدٍ، فَحَمَلَ رَجُلٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ عَلَى صَفِّ الرُّومِ حَتَّى دَخَلَ فِيهِمْ، فَصَاحَ النَّاسُ وَقَالُوا: سُبْحَانَ اللهِ يُلْقِي بِيَدَيْهِ إِلَى التَّهْلُكَةِ. فَقَامَ أَبُو أَيُّوبَ الأَنْصَارِيُّ فَقَالَ: يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّكُمْ لَتُؤَوِّلُونَ هَذِهِ الآيَةَ هَذَا التَّأْوِيلَ، وَإِنَّمَا أُنْزِلَتْ هَذِهِ الآيَةَ فِينَا مَعْشَرَ الأَنْصَارِ لَمَّا أَعَزَّ اللَّهُ الْإِسْلَامَ وَكَثُرَ نَاصِرُوهُ، فَقَالَ بَعْضُنَا لِبَعْضٍ سِرًّا دُونَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ أَمْوَالَنَا قَدْ ضَاعَتْ، وَإِنَّ اللَّهَ قَدْ أَعَزَّ الإِسْلَامَ وَكَثُرَ نَاصِرُوهُ، فَلَوْ أَقَمْنَا فِي أَمْوَالِنَا، فَأَصْلَحْنَا مَا ضَاعَ مِنْهَا. فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَى نَبِيِّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرُدُّ عَلَيْنَا مَا قُلْنَا: {وَأَنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللهِ وَلاَ تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ}، فَكَانَتِ التَّهْلُكَةُ الإِقَامَةَ عَلَى الأَمْوَالِ وَإِصْلَاحِهَا، وَتَرْكَنَا

2972 - असलम अबू इमरान तुजीबी रिवायत करते हैं कि हम (जिहाद के लिए) रूम शहर में थे कि उन्होंने हमारे मुक़ाबिले में रूमियों की एक बहुत बड़ी सफ़ निकाली तो मुसलमानों में से भी उनकी तरह या उनसे भी ज़्यादा निकले, मिस्र वालों के अमीर उक़्बा बिन आमिर और बाकी जमाअत के अमीर फ़ज़ाला बिन उबैद (رضي الله عنه) थे। मुसलमानों में से एक आदमी ने रूम की सफ़ पर हमला किया यहाँ तक कि उन पर दाख़िल हो गया तो लोग चीखते हुए कहने लगे: सुब्हान अल्लाह! यह अपने हाथ हलाकत में डाल रहा रहा है। तो अबू अय्यूब अंसारी खड़े होकर कहने लगे: ऐ लोगो! तुम इस आयत की यह तावील करते हो, यह आयत तो हम अंसार के बारे में नाज़िल हुई थी जब अल्लाह ने इस्लाम को मज़बूत किया और इसके मददगार बढ़ गए तो हम ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से छिप कर एक दुसरे से कहा: हमारे अमवाल ज़ाया हो रहे हैं, और अब अल्लाह ने इस्लाम को मज़बूत कर दिया है उसके मददगार बढ़ गए। अगर हम अपने मालों में रहकर उनकी जिया को दुरुस्त कर लें (तो बेहतर होगा), चुनाँचे अल्लाह तबारक व तआला ने अपने नबी (ﷺ) पर हमारी कही हुई बात का रद्द नाज़िल किया: " अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करो और अपने आप को हलाकत में न डालो। (अल- बक़रा: 195) तो हलाकत यह थी कि अपने मालों में रहकर उनकी देखभाल करते हुए हम जिहाद को छोड़ दें, फिर अबू अय्यूब (رضي الله عنه) अल्लाह के रास्ते में (जिहाद के

الغَزْوَ فَمَا زَالَ أَبُو أَيُّوبَ، شَاخِصًا فِي سَبِيلِ اللهِ حَتَّى دُفِنَ بِأَرْضِ الرُّومِ.

लिए) निकले रहे, यहाँ तक कि रूम के इलाक़ा में दफ़न हुए।

सहीह: अबू दाऊद:2512. अस-सिलसिला अस-सहीहा:13. इब्ने हिब्बान:4711. हाकिम:2/84.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है।

2973 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مُغِيرَةُ، عَنْ مُجَاهِدٍ قَالَ: قَالَ كَعْبُ بْنُ عُجْرَةَ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَفِيَّ أُنْزِلَتْ هَذِهِ الآيَةُ، وَلِإِيَّايَ عَنَى بِهَا {فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ بِهِ أَذًى مِنْ رَأْسِهِ فَفِدْيَةٌ مِنْ صِيَامٍ أَوْ صَدَقَةٍ أَوْ نُسُكٍ} قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالحُدَيْبِيَةِ وَنَحْنُ مُحْرِمُونَ وَقَدْ حَصَرَنَا الْمُشْرِكُونَ، وَكَانَتْ لِي وَفْرَةٌ فَجَعَلَتِ الهَوَامُّ تَسَاقَطُ عَلَى وَجْهِي، فَمَرَّ بِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: كَأَنَّ هَوَامَّ رَأْسِكَ تُؤْذِيكَ؟ قَالَ: قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: فَاحْلِقْ، وَنَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ.

2973 - सय्यदना काब बिन उज्रा (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं कि उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! यह आयत मेरे बारे में ही नाजिल हुई और इससे सिर्फ़ मैं ही मुराद हूँ। "तुम में से जो शख़्स बीमार हो या उसके सर में कोई तक्लीफ़ हो (जिसकी वजह से सर मुंडा ले) तो उस पर फिद्या है ख़्वाह रोज़े रख ले, ख़्वाह सदक़ा दे दे या कुर्बानी करे।" (अल- बक़रा: 196) फ़रमाते हैं: हम नबी (ﷺ) के साथ एहराम की हालत में हुदैबिया में थे, हमें मुश्रिकीन ने रोक दिया था मेरे बाल कानों तक थे, जुएँ मेरे चेहरे पर गिर रही थीं तो नबी (ﷺ) मेरे पास से गुज़रे आप (ﷺ) ने मुझ से फ़रमाया, "शायद तुम्हारे सर की जुएँ तुम्हें तक्लीफ़ दे रही हैं, कहते हैं: मैंने अर्ज़ की जी हाँ, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम सर के बाल मुंडवा लो।" और यह आयत नाज़िल हुई: (जिसका ऊपर ज़िक्र हुआ है।)

सहीह: अबू दाऊद:1858. अहमद:4/241.

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं: हमें अली बिन हुज्र ने हुशैम से बवास्ता अबुल बशर मुजाहिद से, उन्होंने अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला से बवास्ता काब बिन उज्रा (رضي الله عنه) नबी (ﷺ) की इस जैसी हदीस बयान की है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

हमें अली बिन हुज्र ने हुशैम से बवास्ता अशअस बिन सवार, शाबी से अब्दुल्लाह बिन माकिल से बज़रिये काब बिन उज्रा (رضي الله عنه) नबी करीम (ﷺ) से ऐसी ही हदीस बयान की है।

नीज़ अब्दुर्रहमान बिन अस्बहानी ने भी अब्दुल्लाह बिन माकिल से इसी तरह की रिवायत की है।

2974 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ، قَالَ: أَتَى عَلَيَّ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنَا أُوقِدُ تَحْتَ قِدْرٍ وَالقَمْلُ يَتَنَاثَرُ عَلَى جَبْهَتِي، أَوْ قَالَ: حَاجِبَيَّ، فَقَالَ: أَتُؤْذِيكَ هَوَامُّ رَأْسِكَ؟ قَالَ: قُلْتُ: نَعَمْ، قَالَ: فَاحْلِقْ رَأْسَكَ وَانْسُكْ نَسِيكَةً أَوْ صُمْ ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ أَوْ أَطْعِمْ سِتَّةَ مَسَاكِينَ قَالَ أَيُّوبُ: لاَ أَدْرِي بِأَيَّتِهِنَّ بَدَأَ. قَالَ مُجَاهِدٌ: الصِّيَامُ ثَلاَثَةُ أَيَّامٍ، وَالطَّعَامُ لِسِتَّةِ مَسَاكِينَ، وَالنُّسُكُ شَاةٌ فَصَاعِدًا

2974 - सय्यदना काब बिन उज्रा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरे पास तशरीफ़ लाए मैं एक हंडिया के नीचे आग जला रहा था और जुएँ मेरी पेशानी या पलकों पर गिर रही थीं, तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या तुम्हारी जुएँ तुम्हें तक्लीफ़ दे रही हैं?" मैंने अर्ज़ किया, जी हाँ! आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "फिर अपना सर मुंडवा लो और एक कुर्बानी करो या दो तीन रोज़े रखो या छ मिस्कीनों को खाना खिला दो" अय्यूब कहते हैं: मैं नहीं जानता कि किस चीज़ से इब्तिदा की थी। मुजाहिद फ़रमाते हैं: रोज़े तीन दिन के, खाना छ मिस्कीनों का और कुर्बानी एक बकरी या इस से ज़्यादा।

सहीह: तख़रीज 953 के तहत देखें।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2975 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ سُفْيَانَ الثَّوْرِيِّ، عَنْ بُكَيْرِ بْنِ عَطَاءٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَعْمَرَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الحَجُّ عَرَفَاتٌ، الحَجُّ عَرَفَاتٌ، الحَجُّ عَرَفَاتٌ، أَيَّامُ مِنًى ثَلاَثٌ {فَمَنْ تَعَجَّلَ فِي يَوْمَيْنِ فَلاَ إِثْمَ عَلَيْهِ وَمَنْ تَأَخَّرَ فَلاَ إِثْمَ عَلَيْهِ} وَمَنْ أَدْرَكَ عَرَفَةَ قَبْلَ أَنْ يَطْلُعَ الفَجْرُ فَقَدْ أَدْرَكَ الحَجَّ.

2975 - अब्दुर्रहमान बिन यामर (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "हज अरफ़ात में हाज़िर होना है हज अरफ़ात का वकूफ़ ही है। हज अरफ़ात में हाजिरी का नाम है। मिना के दिन तीन हैं "फिर दो दिन की जल्दी करने वाले पर कोई गुनाह नहीं है और जो पीछे रह जाए उस पर भी कोई गुनाह नहीं है।" (1) (अल-बक़रा :203) और जो शख़्स तुलूए फज्र से पहले अरफ़ात में पहुँच गया उसने हज पा लिया।"

सहीह: तख़रीज के लिए 889 के तहत देखें।

तौज़ीह: (1) इस से रमी जिमार (जमरात को कंकरियाँ मारना) मुराद है, 3 दिन अफ़ज़ल हैं लेकिन अगर कोई शख़्स दो दिन (11- 12 ज़िलहिज्जा को) कंकरियाँ मार कर वापस आ जाए तो उसकी भी इजाज़त है

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

इब्ने अबी उमर कहते हैं कि सुफ़ियान बिन उयय्ना ने फ़रमाया, "यह सौरी की बेहतरीन रिवायत है और शोबा ने भी इसे बुकैर बिन अता से रिवायत किया है, और हम इसे बुकैर बिन अता की रिवायत से ही जानते हैं।

2976 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: أَبْغَضُ الرِّجَالِ إِلَى اللهِ الأَلَدُّ الخَصِمُ.

2976 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "लोगों में सब से ज़्यादा अल्लाह को क़ाबिले नफ़रत वह शख़्स है जो बहुत झगड़ालू हो।"

बुख़ारी:2457. मुस्लिम:2668. निसाई:5423.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।

2977 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: كَانَتِ اليَهُودُ إِذَا حَاضَتْ امْرَأَةٌ مِنْهُمْ لَمْ يُؤَاكِلُوهَا وَلَمْ يُشَارِبُوهَا وَلَمْ يُجَامِعُوهَا فِي البُيُوتِ، فَسُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ عَنْ ذَلِكَ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: {وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْمَحِيضِ قُلْ هُوَ أَذًى} فَأَمَرَهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَنْ يُؤَاكِلُوهُنَّ وَيُشَارِبُوهُنَّ وَأَنْ يَكُونُوا مَعَهُنَّ فِي البُيُوتِ، وَأَنْ يَفْعَلُوا كُلَّ شَيْءٍ مَا خَلاَ النِّكَاحَ. فَقَالَتِ اليَهُودُ: مَا يُرِيدُ أَنْ يَدَعَ شَيْئًا مِنْ أَمْرِنَا إِلاَّ خَالَفَنَا فِيهِ، قَالَ: فَجَاءَ عَبَّادُ بْنُ بِشْرٍ وَأُسَيْدُ بْنُ حُضَيْرٍ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَأَخْبَرَاهُ بِذَلِكَ، وَقَالاَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَفَلاَ

2977 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि यहूदियों का तरीक़ा था कि जब उन में से किसी औरत को हैज़ आ जाता तो वह न उसके साथ खाते पीते और न ही उसके साथ घरों में रहते थे, फिर नबी (ﷺ) से इस के बाबत पूछा गया, तो अल्लाह तआला ने यह आयत उतार दी: "आप से हैज़ के मुताल्लिक़ पूछते हैं आप कह दीजीए कि वह गन्दगी है।" चुनाँचे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें हुक्म दिया कि उनके साथ मिलकर खाएं, पियें और उनके साथ मिलकर घरों में रहें और हमबिस्तरी के अलावा हर काम कर सकते हैं तो यहूदी कहने लगे: यह हमारा कोई काम नहीं छोड़ेंगे जिस में हमारी मुख़ालिफ़त न करें। रावी कहते हैं: अब्बाद बिन बिश्र और उसैद बिन हुजैर (رضي الله عنه) ने आकर रसूलुल्लाह (ﷺ) को यह बात बताई और कहने लगे: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! क्या

نَنْكِحُهُنَّ فِي الْمَحِيضِ، فَتَمَعَّرَ وَجْهُ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى ظَنَنَّا أَنَّهُ قَدْ غَضِبَ عَلَيْهِمَا، فَقَامَا فَاسْتَقْبَلَتْهُمَا هَدِيَّةٌ مِنْ لَبَنٍ، فَأَرْسَلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي أَثَرِهِمَا فَسَقَاهُمَا، فَعَلِمَا أَنَّهُ لَمْ يَغْضَبْ عَلَيْهِمَا.

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، عَنْ حَمَّادِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، نَحْوَهُ بِمَعْنَاهُ.

हम अय्यामे हैज़ में उन से हमबिस्तरी भी न करें? तो रसूलुल्लाह (ﷺ) के चेहरे का रंग बदल गया यहाँ तक कि हमें यकीन हो गया कि आप(ﷺ) को इन दोनों पर गुस्सा आ गया है, वह दोनों खड़े होकर चल दिए तो उनके आगे दूध का तोहफा आया, नबी (ﷺ) ने उनके पीछे आदमी भेजा, उन्हें दूध पिलाया तो हम जान गए कि आप उन पर गुस्सा नहीं हुए।

मुस्लिम:302. अबू दाऊद:258. इब्ने माजह:644. निसाई:288.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

अबू ईसा कहते हैं: हमें मुहम्मद बिन अब्दुल आला ने अब्दुर्रहमान बिन महदी से उन्होंने हम्माद बिन सलमा से बवास्ता साबित, सय्यदना अनस (رضي الله عنه) से ऐसी ही हदीस बयान की है।

2978 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ ابْنِ الْمُنْكَدِرِ، سَمِعَ جَابِرًا، يَقُولُ كَانَتِ الْيَهُودُ تَقُولُ مَنْ أَتَى امْرَأَتَهُ فِي قُبُلِهَا مِنْ دُبُرِهَا كَانَ الْوَلَدُ أَحْوَلَ فَنَزَلَتْ : (نِسَاؤُكُمْ حَرْثٌ لَكُمْ فَأْتُوا حَرْثَكُمْ أَنَّى شِئْتُمْ)

2978 - हमें इब्ने अबी उमर ने बवास्ता सुफ़ियान, इब्ने मुन्कदिर से हदीस बयान की है कि जाबिर (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं: यहूदी कहा करते थे कि जो शख़्स अपनी बीवी की पिछली तरफ़ से अगले हिस्से में जिमा (हमबिस्तरी) करता है तो बच्चा भेंगा पैदा होता है तो यह आयत उतरी: "तुम्हारी बीवियां तुम्हारे लिए खेती हैं अपनी खेती में जहां से चाहो आओ।" (अल-बक़रा: 223)

बुख़ारी:4528. मुस्लिम:1435. अबू दाऊद:2163. इब्ने माजह:1925.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2979 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ،

2979 - सय्यदा उम्मे सलमा (رضي الله عنها) नबी (ﷺ) से फ़रमाने बारी तआला: तुम्हारी बीवियाँ तुम्हारी खेती हैं अपनी खेती में जिस

عَنِ ابْنِ خُثَيْمٍ، عَنِ ابْنِ سَابِطٍ، عَنْ حَفْصَةَ بِنْتِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي قَوْلِهِ تَعَالَى: {نِسَاؤُكُمْ حَرْثٌ لَكُمْ فَأْتُوا حَرْثَكُمْ أَنَّى شِئْتُمْ} يَعْنِي: صِمَامًا وَاحِدًا.

तरह चाहो आओ।" के बारे में रिवायत करती हैं कि इस से मुराद एक ही सूराख है।"

सहीह: अहमद:6/305. दारमी:1124. अबू याला:6972. आदाबुज़्ज़फात:102.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

इब्ने ख़ुसैम, अब्दुल्लाह बिन उस्मान बिन ख़ुसैम और इब्ने साबित, अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन साबित जुमही मक्की हैं और हफ्सा, अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र सिद्दीक़ की बेटी हैं और ((سمَامًا وَاحِدًا) सीन के साथ भी मर्वी है।)

2980 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ مُوسَى، قَالَ: حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأَشْعَرِيُّ، عَنْ جَعْفَرِ بْنِ أَبِي الْمُغِيرَةِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: جَاءَ عُمَرُ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ هَلَكْتُ قَالَ: وَمَا أَهْلَكَكَ؟ قَالَ: حَوَّلْتُ رَحْلِي اللَّيْلَةَ، قَالَ: فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيْهِ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَيْئًا، قَالَ: فَأُوحِيَ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَذِهِ الآيَةُ: {نِسَاؤُكُمْ حَرْثٌ لَكُمْ فَأْتُوا حَرْثَكُمْ أَنَّى شِئْتُمْ} أَقْبِلْ وَأَدْبِرْ، وَاتَّقِ الدُّبُرَ وَالحَيْضَةَ.

2980 - अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि उमर (رضي الله عنه) रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आकर अर्ज़ करने लगे: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मैं हलाक हो गया, आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "किस चीज़ ने तुम्हें हलाक किया?" कहने लगे: आज रात मैंने अपनी सवारी बदल ली, रावी कहते हैं: रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें कोई जवाब न दिया, फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) पर यह आयत नाज़िल हुई: "तुम्हारी बीवियां तुम्हारी खेतियाँ है, अपनी खेतियों में जैसे चाहो आओ।" (223) सामने से सोहबत करो, पीछे की तरफ़ से (अगले हिस्से में) करो लेकिन दुबुर में और हैज़ के दौरान जिमा (हमबिस्तरी) से बचो।

हसन: अहमद:1/297. अबू याला:2736. बैहक़ी:7/198. आदाबुज़्ज़फात:103

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। और याक़ूब बिन अब्दुल्लाह अश्अरी, याक़ूब क़ुम्मी ही हैं।

2981 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الهَاشِمُ بْنُ القَاسِمِ، عَنِ الْمُبَارَكِ بْنِ فَضَالَةَ، عَنِ الحَسَنِ، عَنْ مَعْقِلِ بْنِ يَسَارٍ، أَنَّهُ زَوَّجَ أُخْتَهُ رَجُلاً مِنَ الْمُسْلِمِينَ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَكَانَتْ عِنْدَهُ مَا كَانَتْ، ثُمَّ طَلَّقَهَا تَطْلِيقَةً لَمْ يُرَاجِعْهَا حَتَّى انْقَضَتِ العِدَّةُ، فَهَوِيَهَا وَهَوِيَتْهُ، ثُمَّ خَطَبَهَا مَعَ الخُطَّابِ، فَقَالَ لَهُ: يَا لُكَعُ أَكْرَمْتُكَ بِهَا وَزَوَّجْتُكَهَا فَطَلَّقْتَهَا، وَاللَّهِ لاَ تَرْجِعُ إِلَيْكَ أَبَدًا آخِرُ مَا عَلَيْكَ، قَالَ: فَعَلِمَ اللَّهُ حَاجَتَهُ إِلَيْهَا، وَحَاجَتَهَا إِلَى بَعْلِهَا، فَأَنْزَلَ اللَّهُ: تَبَارَكَ وَتَعَالَى {وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ}، إِلَى قَوْلِهِ: {وَأَنْتُمْ لاَ تَعْلَمُونَ} فَلَمَّا سَمِعَهَا مَعْقِلٌ قَالَ: سَمْعًا لِرَبِّي وَطَاعَةً، ثُمَّ دَعَاهُ فَقَالَ: أُزَوِّجُكَ وَأُكْرِمُكَ.

2981 - सय्यदना माकिल बिन यसार (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के दौर में अपनी बहन का निकाह एक मुसलमान आदमी से कर दिया, चुनाँचे वह कुछ अर्सा आदमी के पास रही, फिर उस ने उसे तलाक़ दे दी, उस से रुजू न किया यहाँ तक कि इद्दत गुज़र गई, फिर उस आदमी ने भी उस की ख़्वाहिश की और उनकी बहन ने भी उस आदमी की ख़्वाहिश की, फिर उस ने भी पैग़ाम भेजने वालों के साथ निकाह का पैग़ाम भेज दिया, तो माकिल ने कहा: अरे पागल मैंने तुम्हें उस के साथ इज़्ज़त दी, तुम्हारे साथ उसकी शादी की लेकिन तूने उसे तलाक़ दे दी, अल्लाह की क़सम! यह तेरी तरफ़ आख़िरी दम तक वापिस नहीं जा सकती, रावी कहते हैं: अल्लाह तआला ने उस मर्द की उस औरत की तरफ़ और उस औरत की खाविंद की तरफ़ हाजत जान ली, तो अल्लाह तबारक व तआला ने यह आयत: "जब तुम औरतों को तलाक़ दे बैठो फिर वह अपनी इद्दत पूरी कर ले।" से लेकर {وَأَنْتُمْ لاَ تَعْلَمُونَ तक नाज़िल फ़रमाई (आयत: 232) जब माकिल ने यह सुना तो कहने लगे: मैंने अपने रब की बात सुनी और मानी, फिर उसे बुला कर कहने लगे: मैं तुम्हें निकाह और इज़्ज़त देता हूँ।

बुख़ारी:4529. अबू दाऊद:2087

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और कई तुरूक़ के साथ हसन (رضي الله عنه) से मर्वी है जबकि हसन बसरी से यह हदीस ग़रीब है। नीज़ इस हदीस में दलील है कि वली के

बगैर निकाह जायज़ नहीं, क्योंकि माकिल बिन यसार की बहन सय्यिबा थीं, अगर मामला उसके हाथ में होता वली के पास न होता, तो वह अपना निकाह कर सकती थीं और उसे अपने वली माकिल बिन यसार (رضي الله عنه) की ज़रुरत नहीं थी, और इस आयत में अल्लाह तआला ने वलियों को खिताब किया है फ़रमाया, "उन्हें अपने शौहरों के साथ निकाह करने से मत रोको।" तो इस आयत में दलील है कि शादी का इख्तियार औरतों की रजामंदी के साथ वलियों को ही है।

2982 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ، قَالَ: (ح) وحَدَّثَنَا الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنِ القَعْقَاعِ بْنِ حَكِيمٍ، عَنْ أَبِي يُونُسَ، مَوْلَى عَائِشَةَ قَالَ: أَمَرَتْنِي عَائِشَةُ، أَنْ أَكْتُبَ لَهَا مُصْحَفًا، فَقَالَتْ: إِذَا بَلَغْتَ هَذِهِ الآيَةَ فَآذِنِّي {حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الوُسْطَى} فَلَمَّا بَلَغْتُهَا آذَنْتُهَا، فَأَمْلَتْ عَلَيَّ حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الوُسْطَى وَصَلَاةِ العَصْرِ وَقُومُوا لِلَّهِ قَانِتِينَ، وَقَالَتْ: سَمِعْتُهَا مِنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

2982 - अबू यूनुस (رحمه الله) मौला आयशा (رضي الله عنها) बयान करते हैं कि मुझे सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) ने मुस्हफ़ (कुरआन) लिखने का हुक्म दिया तो फ़रमाने लगीं: जब तुम यह आयत: "नमाज़ों की हिफ़ाज़त करो ख़ुसूसन दर्मियान वाली की" (आयत:238) पर पहुँचो तो मुझे बताना, जब मैं वहा पहुंचा तो उन्हें बताया तो उन्होंने मुझे लिखवाया, नमाज़ों की हिफ़ाज़त करो ख़ुसूसन दर्मियानी नमाज़ की और नमाज़े अस्र की और अल्लाह के लिए ख़ामोश हो कर खड़े हो जाओ, और फ़रमाने लगीं मैंने यह रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना था।

मुस्लिम :629, अबू दाऊद:410, निसाई 472

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2983 - حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ مَسْعَدَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ قَتَادَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا الحَسَنُ، عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدَبٍ، أَنَّ نَبِيَّ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: صَلَاةُ الوُسْطَى صَلَاةُ العَصْرِ.

2983 - सय्यदना समुरा बिन जुन्दुब (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया," दर्मियानी नमाज़ नमाज़े अस्र है।"

सहीह: तख़रीज के लिए 182 के तहत देखें।

2984 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي حَسَّانَ الأَعْرَجِ، عَنْ عَبِيدَةَ السَّلْمَانِيِّ، أَنَّ عَلِيًّا، حَدَّثَهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ يَوْمَ الأَحْزَابِ: اللَّهُمَّ امْلأْ قُبُورَهُمْ وَبُيُوتَهُمْ نَارًا كَمَا شَغَلُونَا عَنْ صَلاَةِ الوُسْطَى حَتَّى غَابَتِ الشَّمْسُ.

2984 - सय्यदना अली (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) ने अहज़ाब के दिन फ़रमाया, "ऐ अल्लाह इनकी क़ब्रों और इनके घरों को आग से भर दे, जिस तरह इन्होंने हमें दर्मियानी नमाज़ से मशगूल रखा यहाँ तक कि सूरज ग़ायब हो गया।"

बुख़ारी:2931. मुस्लिम:627.अबू दाऊद:409. इब्ने माजह:684. निसाई:473

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और कई तुरूक़ से अली (رضي الله عنه) से मर्वी है। नीज़ अबू हस्सान आरज का नाम मुस्लिम था।

2985 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو النَّضْرِ، وَأَبُو دَاوُدَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ طَلْحَةَ بْنِ مُصَرِّفٍ، عَنْ زُبَيْدٍ، عَنْ مُرَّةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: صَلاَةُ الوُسْطَى صَلاَةُ العَصْرِ.

2985 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "दर्मियानी नमाज़ नमाज़े अस्र है।"

सहीह: तख़रीज के लिए 181 के तहत देखें।

वज़ाहत: इस बारे में ज़ैद बिन साबित, अबू हाशिम बिन उत्बा और अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2986 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَرْوَانُ بْنُ مُعَاوِيَةَ، وَيَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ، عَنِ الحَارِثِ بْنِ شُبَيْلٍ، عَنْ أَبِي عَمْرٍو الشَّيْبَانِيِّ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ، قَالَ: كُنَّا نَتَكَلَّمُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي الصَّلاَةِ فَنَزَلَتْ {وَقُومُوا لِلَّهِ قَانِتِينَ} فَأُمِرْنَا بِالسُّكُوتِ.

2986 - सय्यदना ज़ैद बिन अर्क़म (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के दौर में हम दौराने नमाज़ बात कर लिया करते थे, फिर जब यह आयत नाजिल हुई: "अल्लाह के लिए बाअदब खड़े रहा करो।" (आयत:238) तो हमें खामोशी का हुक्म दिया गया।

सहीह: तख़रीज के लिए 405 के तहत देखें।

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं: हमें अहमद बिन मुनीअ ने बवास्ता हुशैम इस्माईल बिन अबी खालिद से भी इसी तरह की हदीस बयान की है और इसमें इजाफा है कि हमें बात करने से रोक दिया गया।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और अबू अम्र शैबानी का नाम साद बिन इयास था।

2987 - सय्यदना बराअ (رضي الله عنه) आयत: " इन में से बुरी चीजों के ख़र्च करने का कसद न करो।" (267) के बारे में फ़रमाते हैं: यह हम अंसार के लोगों के बारे में उतरी थी हम खुजूरों वाले थे, आदमी अपनी खुजूरों की किल्लत या कसरत के मुताबिक़ लेकर आता और कई एक या दो गुच्छे ला कर मस्जिद में लटका देता, और अहले सुफ़्फ़ा के पास खाना नहीं होता था, उन में से कोई शख़्स गुच्छे के पास आकर उसे अपनी लाठी मारता, तो नीम पुख्ता और पक्की खुजूरें गिरतीं तो वह खा लेता, और जिन लोगों को भलाई के काम में रगबत नहीं होती थी (उन में से) कोई ऐसा गुच्छा लेकर आता जिस में खराब (1) और सूखी खुजूरें होती या ऐसा गुच्छा लाता जो टूट चुका होता था, उसे लटका देता चुनाँचे अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी: " ऐ ईमान वालो! अपनी पाकीज़ा कमाई और ज़मीन में से तुम्हारे लिए हमारी निकाली हुई चीजों में से ख़र्च करो, उनमें से बुरी चीजों के ख़र्च करने का कसद न करो, जिन्हें तुम ख़ुद लेने वाले नहीं हो हाँ अगर आँखें बंद कर लो तो।" फ़रमाया, अगर किसी शख़्स को ऐसा ही कोई तोहफा दिया जाए जो उस ने दिया है तो वह उसे आँख बंद करके हया की वजह से

2987 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنِ السُّدِّيِّ، عَنْ أَبِي مَالِكٍ، عَنِ الْبَرَاءِ، {وَلاَ تَيَمَّمُوا الخَبِيثَ مِنْهُ تُنْفِقُونَ} قَالَ: نَزَلَتْ فِينَا مَعْشَرَ الأَنْصَارِ، كُنَّا أَصْحَابَ نَخْلٍ فَكَانَ الرَّجُلُ يَأْتِي مِنْ نَخْلِهِ عَلَى قَدْرِ كَثْرَتِهِ وَقِلَّتِهِ، وَكَانَ الرَّجُلُ يَأْتِي بِالقِنْوِ وَالقِنْوَيْنِ فَيُعَلِّقُهُ فِي الْمَسْجِدِ، وَكَانَ أَهْلُ الصُّفَّةِ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ، فَكَانَ أَحَدُهُمْ إِذَا جَاعَ أَتَى القِنْوَ فَضَرَبَهُ بِعَصَاهُ فَيَسْقُطُ مِنَ البُسْرِ وَالتَّمْرِ فَيَأْكُلُ، وَكَانَ نَاسٌ مِمَّنْ لاَ يَرْغَبُ فِي الخَيْرِ يَأْتِي الرَّجُلُ بِالقِنْوِ فِيهِ الشِّيصُ وَالحَشَفُ وَبِالقِنْوِ قَدْ انْكَسَرَ فَيُعَلِّقُهُ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَبَارَكَ تَعَالَى: {يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّا أَخْرَجْنَا لَكُمْ مِنَ الأَرْضِ وَلاَ تَيَمَّمُوا الخَبِيثَ مِنْهُ تُنْفِقُونَ وَلَسْتُمْ بِآخِذِيهِ إِلاَّ أَنْ تُغْمِضُوا فِيهِ} قَالُوا: لَوْ أَنَّ أَحَدَكُمْ أُهْدِيَ إِلَيْهِ مِثْلُ مَا أَعْطَى، لَمْ يَأْخُذْهُ إِلاَّ عَلَى إِغْمَاض

أَوْ حَيَاءٍ. قَالَ: فَكُنَّا بَعْدَ ذَلِكَ يَأْتِي أَحَدُنَا بِصَالِحِ مَا عِنْدَهُ.

ही ले लेता है। रावी कहते हैं: फिर इसके बाद हम उम्दा चीज़ लेकर आते थे।

सहीह: इब्ने माजह:1822. बैहक़ी:4/136. हाकिम:2/285

तौज़ीह: (1) الشيص : रद्दीऔर नकारा खुजूर जिसका गाभा सहीह न लगा हो। (अल-मोजमुल वसीत:592) और حشف ऐसी खुजूर को कहा जाता है: जो पकने से पहले सूख जाएँ इसमें गुठली होती है न गूदा और न ही मिठास (अल-मोजमुल वसीत:208)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। और अबू मालिक क़बील-ए-गिफ़ार के थे उनका नाम गजवान बयान किया जाता है, नीज़ सुफ़ियान सौरी ने भी सुद्दी से इस हदीस का कुछ हिस्सा रिवायत किया है।

2988 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ السَّائِبِ، عَنْ مُرَّةَ الهَمْدَانِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ لِلشَّيْطَانِ لَمَّةً بِابْنِ آدَمَ وَلِلْمَلَكِ لَمَّةً فَأَمَّا لَمَّةُ الشَّيْطَانِ فَإِيعَادٌ بِالشَّرِّ وَتَكْذِيبٌ بِالحَقِّ، وَأَمَّا لَمَّةُ الْمَلَكِ فَإِيعَادٌ بِالخَيْرِ وَتَصْدِيقٌ بِالحَقِّ، فَمَنْ وَجَدَ ذَلِكَ فَلْيَعْلَمْ أَنَّهُ مِنَ اللهِ فَلْيَحْمَدِ اللَّهَ وَمَنْ وَجَدَ الأُخْرَى فَلْيَتَعَوَّذْ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ، ثُمَّ قَرَأَ {الشَّيْطَانُ يَعِدُكُمُ الفَقْرَ وَيَأْمُرُكُمْ بِالفَحْشَاءِ} الآيَةَ.

2988 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "इब्ने आदम पर एक शैतान का असर[1] होता है और एक फ़रिश्ते का भी असर होता है। शैतान का असर तो उसे शर की तरफ़ ले जाना और हक़ को जुठ्लाना है मगर फ़रिश्ते का असर तो ख़ैर की तरफ़ लौटाना और हक़ की तस्दीक़ करना है, चुनाँचे जो शख़्स इस चीज़ को पाए वह जान ले कि यह अल्लाह की तरफ़ से है, फिर अल्लाह का शुक्र करे और जो शख़्स दूसरी चीज़ पाए वह शैताने मर्दूद से अल्लाह की पनाह मांगे। फिर आप (ﷺ) ने यह आयत पढ़ी: "शैतान तुम से फ़क़ीरी का वादा करता है और तुम्हें बेहयाई का हुक्म देता है।" (आयत:268)

सहीह: अबू याला:4999. इब्ने हिब्बान:997. तबरी: 3/8889.

तौज़ीह: لمة : जिन्नाती असर, कहते हैं:أصابته من الجنة لمة। : उस पर जिन्नाती असर हो गया है इसकी जमा لمام : आती है: (अल-मोजमुल वसीत:प।1015)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। और यह अबू अह्वस की रिवायत है हम इसे अबू अह्वस के तरीक़ से ही मर्फ़ूअ जानते हैं।

2989 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا فُضَيْلُ بْنُ مَرْزُوقٍ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَا أَيُّهَا النَّاسُ، إِنَّ اللَّهَ طَيِّبٌ وَلاَ يَقْبَلُ إِلاَّ طَيِّبًا وَإِنَّ اللَّهَ أَمَرَ الْمُؤْمِنِينَ بِمَا أَمَرَ بِهِ الْمُرْسَلِينَ، فَقَالَ: {يَا أَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوا مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَاعْمَلُوا صَالِحًا إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ}، وَقَالَ: {يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ} قَالَ: وَذَكَرَ الرَّجُلَ يُطِيلُ السَّفَرَ أَشْعَثَ أَغْبَرَ يَمُدُّ يَدَهُ إِلَى السَّمَاءِ يَا رَبِّ، يَا رَبِّ وَمَطْعَمُهُ حَرَامٌ، وَمَشْرَبُهُ حَرَامٌ، وَمَلْبَسُهُ حَرَامٌ، وَغُذِّيَ بِالحَرَامِ، فَأَنَّى يُسْتَجَابُ لِذَلِكَ.

2989 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ लोगो अल्लाह तआला पाक है और पाक (यानी हलाल) को ही कुबूल करता है और अल्लाह तआला ने ईमान वालों को वही हुक्म दिया है जो उस ने पैगम्बरों को दिया था उसने फ़रमाया, "ऐ रसूलो! हलाल खाओ और अच्छे आमाल करो मैं तुम्हारे आमाल को जानने वाला हूँ।" (अल-मूमिनून: 23) और फ़रमाया, "ऐ ईमान वालो! जो हलाल रिज्क हमने तुम्हें दिया है उसमें खाओ।" (अल-बक़रा: 172) रावी कहते हैं: आप (ﷺ) ने एक आदमी का ज़िक्र किया, लंबा सफ़र करने की वजह से उसके बिखरे बाल और कपड़े गर्द में अटे हुए है वो अपना हाथ आसमान की तरफ़ फैला कर कहता है: ऐ मेरे रब! ऐ मेरे रब! जब कि उसका खाना हराम, पीना हराम, लिबास हराम, और हराम से ही पला होता है तो उसकी दुआ कैसे कुबूल हो?"

हसन: मुस्लिम: 1015. अहमद: 2/328. दारमी: 2720. अस-सिलसिला अस-सहीहा: 1136.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे फुजैल बिन मर्जूक की सनद से ही जानते हैं और अबू हाज़िम, अशजई हैं इनका नाम सुलैमान मौला अज्ज़तुल अश्जइया है।

2990 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنِ السُّدِّيِّ، قَالَ: حَدَّثَنِي مَنْ سَمِعَ عَلِيًّا، يَقُولُ:

2990 - सय्यदना अली (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं जब यह आयत नाजिल हुई "तुम्हारे दिलों में जो कुछ है तुम उसे ज़ाहिर करो या छिपाओ, अल्लाह तआला उसका हिसाब तुम से लेगा

لَمَّا نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةَ {إِنْ تُبْدُوا مَا فِي أَنْفُسِكُمْ أَوْ تُخْفُوهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللَّهُ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ} الآيَةَ أَحْزَنَتْنَا قَالَ: قُلْنَا: يُحَدِّثُ أَحَدُنَا نَفْسَهُ فَيُحَاسَبُ بِهِ، لاَ نَدْرِي مَا يُغْفَرُ مِنْهُ وَلاَ مَا لاَ يُغْفَرُ؟ فَنَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ بَعْدَهَا فَنَسَخَتْهَا {لاَ يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلاَّ وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ}.

फिर जिसे चाहे बख्शे और जिसे चाहे सज़ा दे।" (आयत :284) इस ने हमें ग़मज़दा कर दिया, कहते हैं: हम ने कहा: आदमी अपने दिल में बात करता है उस पर भी उसका हिसाब होगा हम नहीं जानते कि इसमें से क्या बख्शा जाए और क्या न बख्शा जाए। चुनाँचे यह आयत नाजिल हुई: "अल्लाह तआला किसी जान को उसकी ताक़त से ज्यादा तक्लीफ़ नहीं देता जो नेकी वह करे वह उसके लिए है और जो बुराई वह करे उस पर है।" (आयत: 286).

ज़ईफुल इस्नाद: अब्द बिन हुमैद: 2/ 128, 129.

2991 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ مُوسَى، وَرَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، عَنْ حَمَّادِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ أُمَيَّةَ، أَنَّهَا سَأَلَتْ عَائِشَةَ، عَنْ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: {إِنْ تُبْدُوا مَا فِي أَنْفُسِكُمْ أَوْ تُخْفُوهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللَّهُ} وَعَنْ قَوْلِهِ: {مَنْ يَعْمَلْ سُوءًا يُجْزَ بِهِ} فَقَالَتْ: مَا سَأَلَنِي عَنْهَا أَحَدٌ مُنْذُ سَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: هَذِهِ مُعَاتَبَةُ اللهِ العَبْدَ بِمَا يُصِيبُهُ مِنَ الحُمَّى وَالنَّكْبَةِ حَتَّى البِضَاعَةُ يَضَعُهَا فِي كُمِّ قَمِيصِهِ فَيَفْقِدُهَا فَيَفْزَعُ لَهَا حَتَّى إِنَّ العَبْدَ لَيَخْرُجُ مِنْ ذُنُوبِهِ كَمَا يَخْرُجُ التِّبْرُ الأَحْمَرُ مِنَ الكِيرِ.

2991 - उमय्या (رحمها الله) से रिवायत है कि उन्होंने सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) से अल्लाह तबारक व तआला के फ़रमान: "तुम्हारे दिलों में जो कुछ है तुम लोग उसे ज़ाहिर करो या छिपाओ अल्लाह तआला इसका हिसाब तुम लोगों से लेगा।" और फ़रमाने इलाही: "जो बुरा अमल करेगा उसका बदला पाएगा।" (अन- निसा: 123) के बारे में पूछा तो वह फ़रमाने लगीं: जब से मैंने इस के बाबत रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा है मुझ से किसी ने नहीं पूछा। आप (ﷺ) ने फ़रमाया था: " यह अल्लाह तआला का बन्दे को बुखार, तक्लीफ़ यहाँ तक कि कोई चीज़ अपने कुर्ते के बाज़ू में रखता है फिर उसे गुम पाता है तो घबरा जाता है (ऐसी चीजों) से सज़ा देता है यहाँ तक कि बंदा अपने गुनाहों से ऐसे निकल जाता है जैसे सुर्ख सोना भट्टी से निकल आता है।"

ज़ईफुल इस्नाद:अहमद:6/ 218. तयालिसी: 1584. हिदायतुर्रूवात: 1502.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: आयशा (ﷺ) की हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे हम्माद बिन सलमा की सनद से ही जानते हैं।

2992 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ آدَمَ بْنِ سُلَيْمَانَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةَ {إِنْ تُبْدُوا مَا فِي أَنْفُسِكُمْ أَوْ تُخْفُوهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللَّهُ} قَالَ: دَخَلَ قُلُوبَهُمْ مِنْهُ شَيْءٌ، لَمْ يَدْخُلْ مِنْ شَيْءٍ، فَقَالُوا لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: قُولُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا، فَأَلْقَى اللَّهُ الإِيمَانَ فِي قُلُوبِهِمْ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى {آمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ} الآيَةَ {لاَ يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلاَّ وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لاَ تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا} قَالَ: قَدْ فَعَلْتُ {رَبَّنَا وَلاَ تَحْمِلْ عَلَيْنَا إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا} قَالَ: قَدْ فَعَلْتُ {رَبَّنَا وَلاَ تُحَمِّلْنَا مَا لاَ طَاقَةَ لَنَا بِهِ وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا} الآيَةَ قَالَ: قَدْ فَعَلْتُ.

2992- सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (ﷺ) बयान करते हैं कि जब यह आयत: "तुम्हारे दिलों में जो कुछ है तुम उसे ज़ाहिर करो या छिपाओ, अल्लाह तआला उसका हिसाब लेगा" नाज़िल हुई, तो उन (सहाबा) के दिलों में ऐसा खौफ़ दाख़िल हुआ जो किसी चीज़ से दाख़िल नहीं हुआ था, फिर उन्होंने नबी(ﷺ) से अर्ज़ किया, तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम कहो हम ने सुन लिया और मान लिया।" चुनाँचे अल्लाह तआला ने उनके दिलों में ईमान डाल दिया, फिर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारीं: "रसूल ईमान लाया उस चीज़ पर जो उसकी तरफ़ अल्लाह की जानिब से उतारी गई और मोमिन भी ईमान लाए।" (आयत:285) अल्लाह तआला किसी जान को उसकी ताक़त से ज़्यादा तक्लीफ़ नहीं देता है जो नेकी वह करे उसके लिए है और जो बुराई वह करे उस पर है, ऐ हमारे रब! अगर हम भूल गये हों या खता की हो तो हमें न पकड़ना।" तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया," मैंने यह काम किया (यानी दुआ कुबूल करली)। ऐ हमारे रब! हम पर वह बोझ न डाल जो हम से पहले लोगों पर डाला था।" अल्लाह तआला ने फ़रमाया," मैंने यह काम किया। "ऐ हमारे रब! हम पर वह बोझ न डाल जिसकी हमें ताक़त न हो और हम से दरगुज़र फ़रमा, हमें बख्श दे और हम पर रहम फ़रमा।"

(अल- बक़रा: 286) तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया, " मैंने यह काम किया।"

सहीह: मुस्लिम: 126. अहमद: 1/233. इब्ने हिब्बान: 5069.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है। इसके अलावा एक और सनद से भी इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। और आदम बिन सुलैमान के बारे में कहा जाता है कि वह यह्या बिन आदम के वालिद थे।

4 - तफ़सीर सूरह आले इमरान।

4 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ آلِ عِمْرَانَ

2993 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ الطَّيَالِسِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ وَهُوَ الخَزَّازُ، وَيَزِيدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ كِلَاهُمَا، عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ. قَالَ يَزِيدُ: عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنِ القَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ عَائِشَةَ،، وَلَمْ يَذْكُرْ أَبُو عَامِرٍ القَاسِمَ -. قَالَتْ: سَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ عَنْ قَوْلِهِ: {فَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ الفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ}، قَالَ: فَإِذَا رَأَيْتِيهِمْ فَاعْرِفِيهِمْ وقَالَ يَزِيدُ: فَإِذَا رَأَيْتُمُوهُمْ فَاعْرِفُوهُمْ قَالَهَا مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلَاثًا.

2993 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) रिवायत करती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से फ़रमाने बारी तआला "पस जिन लोगों के दिलों में कजी है वह इसकी मुतशाबेह आयतों के पीछे लग जाते हैं फित्ने की तलब और इसकी मुराद की जुस्तजु के लिए।" (आयत: 7) के बारे में सवाल किया तो आप ने फ़रमाया, "जब तुम उन लोगों को देखो तो उन्हें पहचान लेना यह बात आप ने दो तीन मर्तबा कही।

बुख़ारी: 4547. मुस्लिम: 2665. अबू दाऊद: 4598. इब्ने माजह: 47.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

2994 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا أَبُو الوَلِيدِ الطَّيَالِسِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنِ

2994 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से इस आयत : "वही अल्लाह तआला है जिसने आप पर किताब उतारी जिस में वाज़ेह मज़बूत आयतें हैं,

القَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: سُئِلَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ هَذِهِ الآيَةِ {هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ الكِتَابَ مِنْهُ آيَاتٌ مُحْكَمَاتٌ} إِلَى آخِرِ الآيَةِ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا رَأَيْتُمُ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ فَأُولَئِكَ الَّذِينَ سَمَّاهُمُ اللَّهُ فَاحْذَرُوهُمْ.

आख़िर आयत तक के बारे में पूछा गया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब तुम उन लोगों को देखो जो मुतशाबेह आयतों के पीछे लगते हैं तो उनका नाम ही अल्लाह ने लिया है उन से बचो।"

सहीह: साबिक़ हदीस देखिये।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और अय्यूब से भी बवास्ता इब्ने अबी मुलैका सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) से मर्वी है, कई रावियों ने बवास्ता इब्ने अबी मुलैका सय्यदा आयशा (رضي الله عنها)से इसी तरह रिवायत की है। इसमें कासिम बिन मुहम्मद का ज़िक्र नहीं है उनका ज़िक्र सिर्फ यज़ीद बिन इब्राहीम तस्तरी ने किया है और इब्ने अबी मुलैका अब्दुल्लाह बिन उबैदुल्लाह बिन अबी मुलैका हैं उन्होंने सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) से सिमा किया है (सुना है)।

2995 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي الضُّحَى، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ لِكُلِّ نَبِيٍّ وُلاَةً مِنَ النَّبِيِّينَ، وَإِنَّ وَلِيِّي أَبِي وَخَلِيلُ رَبِّي، ثُمَّ قَرَأَ: {إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لَلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ وَهَذَا النَّبِيُّ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ}.

2995 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "हर नबी नबियों में दोस्त थे और मेरे दोस्त मेरे बाप और मेरे रब के खलील (इब्राहीम अलैहि०) हैं। फिर आप (ﷺ) ने यह आयत पढ़ी: "सब लोगों से ज़्यादा इब्राहीम के नज़दीक तर वह लोग हैं जिन्होंने उनका कहा माना, यह नबी और जो लोग ईमान लाये, मोमिनों का वली और सहारा अल्लाह ही है।"

सहीह: हाकिम:2/292. तबरी:7216. हिदायतुर्रूवात: 5700.

अबू ईसा कहते हैं : हमें महमूद ने अबू नुऐम से भी सुफ़ियान के ज़रिए उनके बाप से बवास्ता अबू जुहा, अब्दुल्लाह से नबी (ﷺ) की ऐसी ही हदीस बयान की है इसमें मसरूक का नाम नहीं लिया।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस अबू जुहा की मसरूक से बयान कर्दा हदीस से ज़्यादा सहीह है अबू जुहा का नाम मुस्लिम बिन सुबेह था।

अबू ईसा कहते हैं: हमें अबू कुरैब ने भी वकीअ से, उन्हें सुफ़ियान ने अपने बाप से बवास्ता अबू जुहा, अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) से नबी (ﷺ) की हदीस अबू नुऐम की तरह बयान की है इसमें भी मसरूक का ज़िक्र नहीं।

2996 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ شَقِيقِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ حَلَفَ عَلَى يَمِينٍ وَهُوَ فِيهَا فَاجِرٌ لِيَقْتَطِعَ بِهَا مَالَ امْرِئٍ مُسْلِمٍ، لَقِيَ اللَّهَ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضْبَانُ، فَقَالَ الأَشْعَثُ بْنُ قَيْسٍ: فِيَّ وَاللَّهِ كَانَ ذَلِكَ، كَانَ بَيْنِي وَبَيْنَ رَجُلٍ مِنَ اليَهُودِ أَرْضٌ فَجَحَدَنِي، فَقَدَّمْتُهُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ لِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَلَكَ بَيِّنَةٌ؟ فَقُلْتُ: لاَ، فَقَالَ لِلْيَهُودِيِّ: احْلِفْ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ إِذَنْ يَحْلِفُ فَيَذْهَبُ بِمَالِي، فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى: {إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلاً} إِلَى آخِرِ الآيَةِ.

2996 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिसने कोई ऐसी क़सम उठाई जिस में वह गुनहगार हो, ताकि उसके साथ मुसलमान आदमी का माल ले ले, वह अल्लाह से मुलाक़ात करेगा तो वह उस पर गुस्से में होगा।" अशअस बिन कैस कहने लगे: अल्लाह की क़सम यह आयत मेरे बारे में थी। मेरे और एक यहूदी के दर्मियान एक मुश्तरक ज़मीन थी, उस ने मेरे हिस्से का इन्कार कर दिया, तो मैं उसे नबी (ﷺ) के पास ले गया, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझ से फ़रमाया, "क्या तुम्हारे पास कोई दलील है?" मैंने कहा: नहीं, तब आप ने यहूदी से फ़रमाया, "तुम क़सम उठाओ।" मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! यह तो क़सम उठा कर मेरा माल ले जाएगा, तो अल्लाह तआला ने आयत: "बेशक जो लोग अल्लाह तआला के अहद और अपनी क़स्मों को थोड़ी कीमत पर बेच डालते हैं।" आख़िर तक नाज़िल फ़रमा दी। (आयत: 77)

सहीह: तख़रीज के लिए 1269 के तहत देखें।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और इस बारे में इब्ने औफ़ा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

2997 - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ بَكْرٍ السَّهْمِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةَ {لَنْ تَنَالُوا البِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ} أَوْ {مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا}، قَالَ أَبُو طَلْحَةَ: وَكَانَ لَهُ حَائِطٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ حَائِطِي لِلَّهِ، وَلَوْ اسْتَطَعْتُ أَنْ أُسِرَّهُ لَمْ أُعْلِنْهُ فَقَالَ: اجْعَلْهُ فِي قَرَابَتِكَ أَوْ أَقْرَبِيكَ.

2997 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि जब यह आयत: "जब तक तुम अपनी पसंदीदा चीज़ अल्लाह तआला की राह में ख़र्च न करोगे हरगिज़ भलाई न पाओगे।" (आले इमरान: 92) या यह आयत: "कौन है जो अल्लाह तआला को अच्छा क़र्ज़ दे।" (अल- बक़रा: 245) नाजिल हुई, तो अबू तल्हा (رضي الله عنه) जिनका एक बाग़ था, कहने लगे: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मेरा बाग़ अल्लाह के लिए सदक़ा है अगर मैं इसे छिपाने की ताकत रखता तो इसे ज़ाहिर न करता तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "उसे अपने क़राबतदारों में तक्सीम कर दो।"

बुख़ारी:1461. मुस्लिम:998. अबू दाऊद:1689. निसाई:3602.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। इसे मालिक बिन अनस (رضي الله عنه) ने भी बवास्ता इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तल्हा, सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) से रिवायत किया है।

2998 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ يَزِيدَ، قَالَ: سَمِعْتُ مُحَمَّدَ بْنَ عَبَّادِ بْنِ جَعْفَرٍ، يُحَدِّثُ عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: قَامَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: مَنِ الحَاجُّ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: الشَّعِثُ التَّفِلُ فَقَامَ رَجُلٌ آخَرُ فَقَالَ: أَيُّ الحَجِّ أَفْضَلُ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: العَجُّ وَالثَّجُّ فَقَامَ رَجُلٌ آخَرُ فَقَالَ: مَا

2998 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने खड़े हो कर अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! हाजी कौन? आप (ﷺ) ने फ़रमाया," गर्द आलूद बालों और मुतग़य्यर हालत वाला।" फिर दूसरा आदमी खड़ा होकर कहने लगा:ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! कौन सा हज अफ़ज़ल है? आप (ﷺ) ने फ़रमाया," जिस में बलंद आवाज़ से तल्बिया कहना और खून बहाना हो।" फिर एक और आदमी खड़ा हुआ उस ने अर्ज़ किया ऐ

السَّبِيلُ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: الزَّادُ وَالرَّاحِلَةُ.

अल्लाह के रसूल (ﷺ)! सबील से क्या मुराद है? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, " सफ़र के लिए राशन और सवारी।"

ज़ईफ़ जिद्दा: (العج والثج) के अलावा: तख़रीज के लिए 813 के तहत देखें।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं:इस हदीस को इब्ने अबी उमर से सिर्फ इब्राहीम बिन यज़ीद खौज़ी मक्की के तरीक़ से ही जानते हैं और इब्राहीम के हाफ़िज़े की वजह से बअ़ज़ उलमा ने इस पर कलाम किया है।

2999 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَاتِمُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ بُكَيْرِ بْنِ مِسْمَارٍ، عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: لَمَّا أَنْزَلَ اللَّهُ هَذِهِ الآيَةَ: {تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ}، دَعَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلِيًّا وَفَاطِمَةَ وَحَسَنًا وَحُسَيْنًا، فَقَالَ: اللَّهُمَّ هَؤُلَاءِ أَهْلِي.

2999 - सय्यदना साद बिन अबी वक़्क़ास (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि जब यह आयत: "आप कह दें आओ हम तुम अपने फ़रज़न्दों और अपनी- अपनी औरतों को बुला लें (आले इमरान:61) नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अली, फातिमा और हसन व हुसैन (رضي الله عنهم) को बुला कर कहा "ऐ अल्लाह यह मेरे अहले बैत हैं।"

सहीह: तख़रीज के लिए 3724 के तहत देखें।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है।

3000 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنِ الرَّبِيعِ بْنِ صَبِيحٍ، وَحَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي غَالِبٍ، قَالَ: رَأَى أَبُو أُمَامَةَ رُءُوسًا مَنْصُوبَةً عَلَى دَرَجِ دِمَشْقَ، فَقَالَ أَبُو أُمَامَةَ: كِلَابُ النَّارِ شَرُّ قَتْلَى تَحْتَ أَدِيمِ السَّمَاءِ، خَيْرُ قَتْلَى مَنْ قَتَلُوهُ، ثُمَّ قَرَأَ: {يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ} إِلَى آخِرِ الآيَةِ، قُلْتُ لِأَبِي أُمَامَةَ: أَنْتَ سَمِعْتَهُ مِنْ رَسُولِ اللهِ

3000 - अबू ग़ालिब (رحمه الله) कहते हैं कि सय्यदना अबू उमामा (رضي الله عنه) ने दमिश्क की मस्जिद की सीढ़ियों पर कुछ सर गाड़े हुए देखे तो अबू उमामा (رضي الله عنه) ने फ़रमाया, "जहन्नम के कुत्ते[1] हैं, आसमान के छत के नीचे बुरे तरीन मक़्तूल हैं, बेहतरीन शोहदा हैं जिन्होंने इन्हें क़त्ल किया है। फिर यह आयत: "जिस दिन बअ़ज़ चेहरे सफ़ेद होंगे और बअ़ज़ चेहरे सियाह" (आयत: 106) आख़िर तक पढ़ी। मैंने अबू उमामा ?(رضي الله عنه) से पूछा क्या आप ने यह रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है? उन्होंने फ़रमाया,

صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَوْ لَمْ أَسْمَعْهُ إِلاَّ مَرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلاَثًا أَوْ أَرْبَعًا حَتَّى عَدَّ سَبْعًا مَا حَدَّثْتُكُمُوهُ.

"अगर मैंने एक, दो, तीन या चार यहाँ तक कि सात गिना, मर्तबा सुना होता तो मैं तुम्हें यह बयान न करता। (यानी मैंने कई मर्तबा सुना है)

सहीह: इब्ने माजह:176. हिदायतुर्रूवात:3485. अहमद:5/253. हुमैदी:908.

तौज़ीह: (1) यह दीन से निकलने वाले खारजी लोगों के सर थे।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है। नीज़ अबू ग़ालिब का नाम हज़व्वर और उमामा बाहिली का नाम सुद्दी बिन अजलान था और यह बाहिला के सरदार थे।

3001 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ بَهْزِ بْنِ حَكِيمٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ فِي قَوْلِهِ تَعَالَى: {كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ} قَالَ: أَنْتُمْ تُتِمُّونَ سَبْعِينَ أُمَّةً أَنْتُمْ خَيْرُهَا وَأَكْرَمُهَا عَلَى اللهِ

3001 - बहज़ बिन हकीम अपने बाप के ज़रिए अपने दादा से रिवायत करते हैं कि उन्होंने नबी (ﷺ) को फ़रमाने बारी तआला: " तुम लोगों के लिए निकाली गई बेहतरीन उम्मत हो।" (आयत: 110) के बारे में फ़रमाते हुए सुना: तुम सत्तर उम्मतों को पूरा करने वाले हो तुम सब से बेहतर और अल्लाह के नज़दीक सब से ज़्यादा इज्ज़त वाली उम्मत हो।"

हसन: तख़रीज के लिए 2192 के तहत देखें।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है। और कई रावियों ने इस हदीस को बहज़ बिन हकीम से इसी तरह ही रिवायत किया है लेकिन इसमें {كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ} का ज़िक्र नहीं किया।

3002 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا حُمَيْدٌ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كُسِرَتْ رَبَاعِيَتُهُ يَوْمَ أُحُدٍ وَشُجَّ وَجْهُهُ شَجَّةً فِي جَبْهَتِهِ حَتَّى سَالَ الدَّمُ عَلَى وَجْهِهِ، فَقَالَ: كَيْفَ يُفْلِحُ قَوْمٌ فَعَلُوا هَذَا بِنَبِيِّهِمْ وَهُوَ يَدْعُوهُمْ إِلَى اللهِ؟ فَنَزَلَتْ: {لَيْسَ لَكَ مِنَ الأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ

3002 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) से रिवायत है कि उहुद के दिन नबी (ﷺ) के रुबाई दांत टूट गए और आप का चेहरा मुबारक भी ज़ख्मी हो गया, एक ज़ख्म पेशानी पर भी आया, यहाँ तक कि खून आप (ﷺ) के चेहरे पर बहने लगा, तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "वह कौम फलाह कैसे पाएगी जिन्होंने अपने नबी से यह सुलूक किया है? हालांकि वह उन्हें अल्लाह की तरफ़ बुलाता है। तो यह आयत: "ऐ पग़म्बर आप के इख़्तियार में कुछ नहीं, अल्लाह

عَلَيْهِمْ أَوْ يُعَذِّبَهُمْ} إِلَى آخِرِهَا.

तआला चाहे तो उनकी तौबा कुबूल करे या उन्हें अज़ाब दे क्योंकि वह ज़ालिम हैं।" (आयत: 128) नाजिल हुई।

मुस्लिम: 1791. इब्ने माजह: 4027. अहमद: 3/99

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।

3003 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَا: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا حُمَيْدٌ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شُجَّ فِي وَجْهِهِ وَكُسِرَتْ رَبَاعِيَتُهُ وَرُمِيَ رَمْيَةً عَلَى كَتِفِهِ، فَجَعَلَ الدَّمُ يَسِيلُ عَلَى وَجْهِهِ، وَهُوَ يَمْسَحُهُ وَيَقُولُ: كَيْفَ تُفْلِحُ أُمَّةٌ فَعَلُوا هَذَا بِنَبِيِّهِمْ وَهُوَ يَدْعُوهُمْ إِلَى اللهِ؟ فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: {لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ أَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ}.

3003 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के चेहरे में ज़ख्म लगा, आप के रुबाई दांत टूट गए और आप के शाने पर एक तीर लगा: खून आप के चेहरे पर बह रहा था और आप उसे साफ़ करते हुए फ़रमा रहे थे: "वह उम्मत कैसे कामयाब होगी जिन्होंने अपने नबी से यह सुलूक किया हालांकि वह उन्हें अल्लाह की तरफ़ बुलाता है। तो अल्लाह तबारक व तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमा दी: "ऐ पैगम्बर आप के इख़्तियार में कुछ नहीं है, अल्लाह तआला चाहे तो उनकी तौबा कुबूल करे या उन्हें अज़ाब दे क्योंकि यह ज़ालिम हैं।" (आयत: 128)

सहीह: तख़रीज के लिए पिछली हदीस देखें।

वज़ाहत: मैंने अब्द बिन हुमैद से सुना वह कह रहे थे: इसमें यज़ीद बिन हारून ने ग़लती की है। इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।

3004 - حَدَّثَنَا أَبُو السَّائِبِ سَلْمُ بْنُ جُنَادَةَ الْكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ بَشِيرٍ، عَنْ عُمَرَ بْنِ حَمْزَةَ، عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ أُحُدٍ: اللَّهُمَّ الْعَنْ أَبَا سُفْيَانَ، اللَّهُمَّ الْعَنِ الْحَارِثَ بْنَ هِشَامٍ، اللَّهُمَّ

3004 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उहुद के दिन फ़रमाया, "ऐ अल्लाह अबू सुफ़ियान पर लानत कर, ऐ अल्लाह हारिस बिन हिशाम पर लानत कर, ऐ अल्लाह सफ़वान बिन उमय्या पर लानत कर।" कहते हैं: फिर यह आयत नाज़िल हुई: "आप के इख़्तियार में कुछ नहीं है, अल्लाह तआला चाहे तो उनकी तौबा

العَنْ صَفْوَانَ بْنَ أُمَيَّةَ، قَالَ: فَنَزَلَتْ {لَيْسَ لَكَ مِنَ الأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ} فَتَابَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ فَأَسْلَمُوا فَحَسُنَ إِسْلَامُهُمْ.

कुबूल करे या उन्हें अज़ाब दे।" फिर अल्लाह ने उनकी तौबा कुबूल की यह मुसलमान हुए और इनका इस्लाम भी अच्छा था।

बुख़ारी:4069. निसाई:1078. अहमद:2/147.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। यह उमर बिन हम्ज़ा, सालिम और इब्ने उमर से ग़रीब है। नीज़ ज़ोहरी ने भी सालिम के ज़रिए उनके बाप से इसी तरह की रिवायत की है और मुहम्मद बिन इस्माईल इसे उमर बिन हम्ज़ा के तरीक़ से नहीं बल्कि ज़ोहरी के तरीक से जानते थे।

3005 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَبِيبِ بْنِ عَرَبِيٍّ الْبَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا خَالِدُ ابْنُ الحَارِثِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَجْلَانَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَدْعُو عَلَى أَرْبَعَةِ نَفَرٍ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى: {لَيْسَ لَكَ مِنَ الأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ أَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ} فَهَدَاهُمُ اللَّهُ لِلْإِسْلَامِ.

3005 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) चार आदमियों पर बद्दुआ किया करते थे। तो अल्लाह तबारक व तआला ने यह आयत: "आप के इख़्तियार में कुछ नहीं है अल्लाह तआला चाहे तो उनकी तौबा कुबूल करे या उन्हें अज़ाब दे क्योंकि यह ज़ालिम हैं।" नाज़िल कर दी फिर अल्लाह तआला ने उन्हें इस्लाम की तरफ़ हिदायत दे दी।

हसन सहीह: अहमद:2/104. इब्ने खुज़ैमा:623. इब्ने हिब्बान:1988.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। और बवास्ता नाफ़े, इब्ने उमर (رضي الله عنه) से ग़रीब बनती है इसे यह्या बिन अय्यूब ने भी इब्ने अजलान से रिवायत किया है।

3006 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ الْمُغِيرَةِ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ رَبِيعَةَ، عَنْ أَسْمَاءَ بْنِ الحَكَمِ الفَزَارِيِّ، قَالَ: سَمِعْتُ عَلِيًّا، يَقُولُ: إِنِّي كُنْتُ رَجُلاً إِذَا سَمِعْتُ مِنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَدِيثًا نَفَعَنِي اللَّهُ مِنْهُ بِمَا شَاءَ أَنْ يَنْفَعَنِي، وَإِذَا حَدَّثَنِي رَجُلٌ مِنْ أَصْحَابِهِ اسْتَحْلَفْتُهُ. فَإِذَا

3006 - सय्यदना अली (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैं ऐसा आदमी था जब अल्लाह के रसूल (ﷺ) से कोई हदीस सुन लेता तो जितना अल्लाह को मंज़ूर होता मुझे उस से फ़ायदा दे देता, और जब आपके सहाबा में से कोई आदमी मुझे हदीस बयान करता तो मैं उस से क़सम लेता जब वह क़सम दे देता तो मैं उसे सच्चा समझता और अबू बक्र (رضي الله عنه) ने मुझ से हदीस बयान की और अबू बक्र ने सच कहा है,

حَلَفَ لِي صَدَّقْتُهُ، وَإِنَّهُ حَدَّثَنِي أَبُو بَكْرٍ، وَصَدَقَ أَبُو بَكْرٍ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: مَا مِنْ رَجُلٍ يُذْنِبُ ذَنْبًا ثُمَّ يَقُومُ فَيَتَطَهَّرُ، ثُمَّ يُصَلِّي ثُمَّ يَسْتَغْفِرُ اللَّهَ إِلاَّ غَفَرَ لَهُ، ثُمَّ قَرَأَ هَذِهِ الآيَةَ {وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللَّهَ} إِلَى آخِرِ الآيَةِ.

कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आप फ़रमा रहे थे: " कोई आदमी गुनाह करने के बाद खड़ा हो कर वुज़ू करे, फिर नमाज़ पढ़कर अल्लाह से बख्शिश मांगे, तो अल्लाह उसे माफ़ कर देता है। फिर आप ने यह आयत : जब उन से कोई ना शाइस्ता काम हो जाए या कोई गुनाह कर बैठें तो फ़ौरन अल्लाह का जिक्र करते हैं।" (आयत: 135) आखिर तक पढ़ी।

हसन: तख़रीज के लिए 405 के तहत देखें।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस हदीस को शोबा और दीगर मुहद्दिसीन ने उस्मान बिन मुग़ीरा से मर्फ़ूअ रिवायत नहीं किया और मिस्अर व सुफ़ियान ने उस्मान बिन मुग़ीरा से रिवायत की है लेकिन मर्फ़ूअ नहीं।

नीज़ बअ़ज़ ने इस हदीस को मिस्अर से मौक़ूफ़ और बअ़ज़ ने मर्फ़ूअ रिवायत किया है, सुफ़ियान सौरी ने उस्मान बिन मुग़ीरा से मौक़ूफ़ रिवायत की है और हम अस्मा बिन हकम की सिर्फ़ यही एक हदीस जानते हैं।

3007 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، عَنْ حَمَّادِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، عَنْ أَبِي طَلْحَةَ، قَالَ: رَفَعْتُ رَأْسِي يَوْمَ أُحُدٍ فَجَعَلْتُ أَنْظُرُ، وَمَا مِنْهُمْ يَوْمَئِذٍ أَحَدٌ إِلاَّ يَمِيدُ تَحْتَ حَجَفَتِهِ مِنَ النُّعَاسِ، فَذَلِكَ قَوْلُهُ عَزَّ وَجَلَّ: {ثُمَّ أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ بَعْدِ الغَمِّ أَمَنَةً نُعَاسًا}.

3007 - सय्यदना अबू तल्हा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैंने उहुद के दिन अपना सर उठा कर देखा तो उन में से हर आदमी उस दिन ऊंघ की वजह से अपनी ढाल के नीचे झुक रहा था, यही अल्लाह तआला का फ़रमान है।" फिर उसने गम के बाद ऊंघ को बतौर अमन नाज़िल किया।" (आयत: 154)

बुख़ारी:4068. अहमद:4/729. इब्ने हिब्बान:7180.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। हमें अब्दुल्लाह बिन हुमैद ने रौह बिन उबादा से उन्होंने हम्माद बिन मस्लमा से उन्होंने हिशाम बिन उर्वा से भी बवास्ता उर्वा, अबू ज़ुबैर से इस जैसी हदीस बयान की है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस भी हसन सहीह है।

3008 - सय्यदना अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि अबू तल्हा (रज़ियल्लाहु अन्हु) फ़रमाते हैं: उहुद के दिन हम अपनी सफ़ों में थे कि हमें (ऊंघ से) ढाँप दिया गया। वह बयान करते हैं कि उस दिन वह भी उन लोगों में शामिल थे जिन्हें ऊंघ ने ढांपा था, चुनाँचे मेरी तलवार मेरे हाथ से गिर जाती मैं उसे पकड़ता वह फिर मेरे हाथ से गिर जाती तो मैं उसे पकड़ लेता और दूसरा मुनाफिकों का गिरोह था उन्हें तो सिर्फ अपनी जानों की फ़िक्र थी, वह बहुत ही बुज़दिल, डरपोक और हक़ को रुस्वा करने वाले लोग थे।

3008 - حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ حَمَّادٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ أَبَا طَلْحَةَ، قَالَ: غُشِينَا وَنَحْنُ فِي مَصَافِّنَا يَوْمَ أُحُدٍ، حَدَّثَ أَنَّهُ كَانَ فِيمَنْ غَشِيَهُ النُّعَاسُ يَوْمَئِذٍ قَالَ: فَجَعَلَ سَيْفِي يَسْقُطُ مِنْ يَدِي وَآخُذُهُ، وَيَسْقُطُ مِنْ يَدِي وَآخُذُهُ، وَالطَّائِفَةُ الأُخْرَى الْمُنَافِقُونَ لَيْسَ لَهُمْ هَمٌّ إِلاَّ أَنْفُسُهُمْ، أَجْبَنُ قَوْمٍ وَأَرْعَبُهُ وَأَخْذَلُهُ لِلْحَقِّ.

तख़रीज के लिए पिछली हदीस के तहत देखें।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रहमतुल्लाह अलैह) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3009 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) फ़रमाते हैं: "ना मुम्किन है कि नबी से ख़यानत हो जाए।" (आयत: 161) एक सुर्ख चादर के बारे में नाज़िल हुई थी जो बद्र के दिन गुम हो गई थी, बअ़ज़ (कुछ) लोगों ने कहा: शायद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने ले ली हो, तो अल्लाह तबारक व तआला ने यह आयत: "ना मुम्किन है कि नबी से ख़यानत हो जाए" आखिर तक नाजिल फ़रमा दी।

3009 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الوَاحِدِ بْنُ زِيَادٍ، عَنْ خُصَيْفٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مِقْسَمٌ، قَالَ: قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةَ {وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَغُلَّ} فِي قَطِيفَةٍ حَمْرَاءَ افْتُقِدَتْ يَوْمَ بَدْرٍ. فَقَالَ بَعْضُ النَّاسِ: لَعَلَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَخَذَهَا، فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى: {مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَغُلَّ} إِلَى آخِرِ الآيَةِ.

सहीह: अबू दाऊद:3971. अस-सिलसिला अस-सहीहा:2788. अबू याला:2651

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रहमतुल्लाह अलैह) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। इसे अब्दुस्सलाम बिन हर्ब ने भी खुसैफ़ से इसी तरह रिवायत किया है। जबकि बअ़ज़ ने इस हदीस को बवास्ता खुसैफ़, मिक्सम से रिवायत किया है और इसमें इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) का ज़िक्र नहीं किया।

3010 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَبِيبِ بْنِ عَرَبِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ كَثِيرٍ الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: سَمِعْتُ طَلْحَةَ بْنَ خِرَاشٍ، قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ، يَقُولُ: لَقِيَنِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ لِي: يَا جَابِرُ مَا لِي أَرَاكَ مُنْكَسِرًا؟ قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ اسْتُشْهِدَ أَبِي، وَتَرَكَ عِيَالاً وَدَيْنًا، قَالَ: أَفَلاَ أُبَشِّرُكَ بِمَا لَقِيَ اللَّهُ بِهِ أَبَاكَ؟ قَالَ: بَلَى يَا رَسُولَ اللَّهِ. قَالَ: مَا كَلَّمَ اللَّهُ أَحَدًا قَطُّ إِلاَّ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ، وَأَحْيَا أَبَاكَ فَكَلَّمَهُ كِفَاحًا. فَقَالَ: يَا عَبْدِي تَمَنَّ عَلَيَّ أُعْطِكَ. قَالَ: يَا رَبِّ تُحْيِينِي فَأُقْتَلَ فِيكَ ثَانِيَةً. قَالَ الرَّبُّ عَزَّ وَجَلَّ: إِنَّهُ قَدْ سَبَقَ مِنِّي أَنَّهُمْ إِلَيْهَا لاَ يُرْجَعُونَ قَالَ: وَأُنْزِلَتْ هَذِهِ الآيَةُ: {وَلاَ تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللهِ أَمْوَاتًا}.

3010 - सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मुझे मिले तो आप ने फ़रमाया, "ऐ जाबिर क्या वजह है कि मैं तुम्हें परेशान देख रहा हूँ?" मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मेरे वालिद उहुद के दिन शहीद हो गए हैं और बच्चे और क़र्ज़ छोड़ गए हैं? आप (ﷺ) ने फ़रमाया "क्या मैं तुम्हें ख़ुश ख़बरी न सुनाऊँ कि अल्लाह तआला तुम्हारे बाप से कैसे मिला है?" मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ) ज़रूर, आप ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने किसी से कभी भी बगैर पर्दे के बात नहीं की लेकिन तुम्हारे बाप को ज़िंदा करके आमने सामने उससे बात की। फ़रमाया, ऐ मेरे बन्दे! मुझसे ख्वाहिशें बयान करो मैं तुम्हें दूंगा। उसने कहा:ऐ मेरे परवरदिगार तु मुझे ज़िन्दा करदे दूसरी मर्तबा तेरे रास्ते में शहीद हो जाऊं, तो अल्लाह तबारक व तआला ने फ़रमाया मेरी तरफ़ से यह बात पहले ही तै है कि वह वापस नहीं जायेंगे। (अल- अंबिया:95)कहते हैं: और यह आयत : " जो लोग अल्लाह की राह में शहीद किए गए हैं उनको हरगिज़ मुर्दा न समझें।" (आयत 169) नाजिल हुई।

हसन: इब्ने माजह:190. 2800. सहीहुत्तर्गीब:1360.अहमद:3/361. हुमैदी:1265.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे मूसा बिन इब्राहीम के तरीक़ से ही जानते हैं। इसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी जैसे किबारे मुहद्दिसीन ने भी मूसा बिन इब्राहीम से इसी तरह रिवायत किया है। नीज़ अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अकील ने भी इसका कुछ हिस्सा जाबिर (رضي الله عنه) से रिवायत किया है।

3011 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) से फ़रमाने बारी तआला: " जो लोग अल्लाह के रास्ते में शहीद कर दिए जाते हैं उन्हें हरगिज़ मुर्दा न समझो बल्कि वह ज़िन्दा हैं अपने रब के पास रोज़ियाँ दिए जाते हैं।" (आयत: 169) के बारे में सवाल किया गया उन्होंने फ़र्माया हमने भी इसी बारे में सवाल किया था तो हमें यह बताया गया था कि इनकी रूहें सब्ज़ परिंदों में होती हैं, जो जन्नत में जहां चाहते हैं जाते हैं और अर्श के साथ लटकती किन्दीलों पर बैठते हैं, एक दफ़ा अल्लाह तआला ने उनकी तरफ़ झाँक कर फ़रमाया," क्या तुम्हें और कुछ चाहिए तो मैं तुम्हें दूं? उन्होंने कहा: ऐ हमारे रब! हमें मजीद कुछ नहीं चाहिए हम जन्नत में हैं हम जहाँ चाहते चलते फिरते हैं। फिर अल्लाह तआला ने दूसरी मर्तबा झांका तो फ़रमाया "क्या तुम्हें और कुछ चाहिए तो मैं तुम्हें दे दूं? जब उन्होंने देखा कि हमें इस तरह छोड़ा नहीं जाएगा तो वह कहने लगे: तु हमारी रूहों को हमारी जिस्मों में वापस करदे ताकि हम दुनिया में जाकर एक मर्तबा फिर तेरे रास्ते में क़त्ल हो जाएँ।

3011 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُرَّةَ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، أَنَّهُ سُئِلَ عَنْ قَوْلِهِ: {وَلاَ تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللهِ أَمْوَاتًا بَلْ أَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ} فَقَالَ: أَمَا إِنَّا قَدْ سَأَلْنَا عَنْ ذَلِكَ، فَأُخْبِرْنَا أَنَّ أَرْوَاحَهُمْ فِي طَيْرٍ خُضْرٍ تَسْرَحُ فِي الجَنَّةِ حَيْثُ شَاءَتْ، وَتَأْوِي إِلَى قَنَادِيلَ مُعَلَّقَةٍ بِالعَرْشِ، فَاطَّلَعَ إِلَيْهِمْ رَبُّكَ اطِّلاَعَةً، فَقَالَ: هَلْ تَسْتَزِيدُونَ شَيْئًا فَأَزِيدُكُمْ؟ قَالُوا رَبَّنَا: وَمَا نَسْتَزِيدُ وَنَحْنُ فِي الجَنَّةِ نَسْرَحُ حَيْثُ شِئْنَا؟ ثُمَّ اطَّلَعَ عَلَيْهِمُ الثَّانِيَةَ، فَقَالَ: هَلْ تَسْتَزِيدُونَ شَيْئًا فَأَزِيدُكُمْ؟ فَلَمَّا رَأَوْا أَنَّهُمْ لاَ يُتْرَكُونَ قَالُوا: تُعِيدُ أَرْوَاحَنَا فِي أَجْسَادِنَا حَتَّى نَرْجِعَ إِلَى الدُّنْيَا، فَنُقْتَلَ فِي سَبِيلِكَ مَرَّةً أُخْرَى.

मुस्लिम:1887.इब्ने माजह:2801.दारमी:1415. हुमैदी:120

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

हमें इब्ने अबी उमर ने सुफ़ियान से बवास्ता अता बिन साइब से अबू उबैदा के ज़रिए इब्ने मसऊद (رضي الله عنه) से इस जैसी हदीस बयान की है और इसमें यह इजाफा है कि तु हमारे नबी को सलाम कह देना और उन्हें बता देना कि हम राजी हैं और तु हम से राजी है। (अख्रअहू अल-हुमैदी: 121. ज़ईफ़ अत्-तिर्मिज़ी लिल अल्बानी:578)

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।

तौज़ीह: यह हदीस ज़ईफ़ है।

3012 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ جَامِعٍ وَهُوَ ابْنُ أَبِي رَاشِدٍ، وَعَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ أَعْيَنَ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، يَبْلُغُ بِهِ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَا مِنْ رَجُلٍ لاَ يُؤَدِّي زَكَاةَ مَالِهِ إِلاَّ جَعَلَ اللَّهُ يَوْمَ القِيَامَةِ فِي عُنُقِهِ شُجَاعًا، ثُمَّ قَرَأَ عَلَيْنَا مِصْدَاقَهُ مِنْ كِتَابِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ: {وَلاَ يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ} الآيَةَ، وقَالَ مَرَّةً: قَرَأَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِصْدَاقَهُ: سَيُطَوَّقُونَ مَا بَخِلُوا بِهِ يَوْمَ القِيَامَةِ وَمَنْ اقْتَطَعَ مَالَ أَخِيهِ الْمُسْلِمِ بِيَمِينٍ لَقِيَ اللَّهَ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضْبَانُ، ثُمَّ قَرَأَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِصْدَاقَهُ مِنْ كِتَابِ اللهِ: {إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ} الآيَةَ.

3012 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो शख़्स अपने माल की ज़कात अदा नहीं करता तो कयामत के दिन अल्लाह तआला उसकी गर्दन में सांप डाल देंगे।" फिर आप ने इसकी मिसाल किताबुल्लाह की आयत पढ़कर हमें सुनाई: "जिन्हें अल्लाह ने अपने फ़ज़ल से कुछ दे रखा है वह इसमें अपनी कंजूसी को बेहतर ख़याल न करें।" (आयत: 108) और एक मर्तबा उन्होंने यह कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इस के मिस्दाक़ में यह आयत पढ़ी: " अन्क़रीब क़यामत वाले दिन यह अपनी कंजूसी वाली चीज़ के तौक डाले जाएंगे।" (आयत: 180) और जिसने झूठी क़सम के साथ अपने मुस्लिम भाई का माल ले लिया वह अल्लाह से इस हाल में मिलेगा कि उस पर गुस्सा होगा। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसके मुताबिक अल्लाह की किताब की आयत पढ़ी "जो लोग अल्लाह के अहद के साथ खरीदते हैं।" (आयत: 77)

सहीह: तख़रीज के लिए 1269 के तहत देखें।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और شُجَاعًاأقراع से मुराद सांप है।

3013 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، وَسَعِيدُ بْنُ عَامِرٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ مَوْضِعَ سَوْطٍ فِي الْجَنَّةِ خَيْرٌ مِنَ

3013 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जन्नत में एक कोड़े के बराबर जगह दुनिया और उसकी तमाम चीजों से बेहतर है अगर चाहते हो तो तुम पढ़ो: "पस जो शख़्स आग से हटा लिया जाए और जन्नत में दाख़िल कर दिया जाए बेशक वह कामयाब हो गया और

الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا اقْرَءُوا إِنْ شِئْتُمْ: {فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلاَّ مَتَاعُ الْغُرُورِ}.

दुनिया की ज़िंदगी तो सिर्फ धोके की जिन्स से है।" (आयत: 185)

अहमद:2/438. दारमी:2823. इब्ने माजह:4335.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3014 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدٍ الزَّعْفَرَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الحَجَّاجُ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ: قَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ: أَخْبَرَنِي ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ، أَنَّ حُمَيْدَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ، أَخْبَرَهُ أَنَّ مَرْوَانَ بْنَ الحَكَمِ، قَالَ: اذْهَبْ يَا رَافِعُ، لِبَوَّابِهِ، إِلَى ابْنِ عَبَّاسٍ فَقُلْ لَهُ: لَئِنْ كَانَ كُلُّ امْرِئٍ فَرِحَ بِمَا أُوتِيَ، وَأَحَبَّ أَنْ يُحْمَدَ بِمَا لَمْ يَفْعَلْ مُعَذَّبًا، لَنُعَذَّبَنَّ أَجْمَعُونَ. فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: مَا لَكُمْ وَلِهَذِهِ الآيَةِ إِنَّمَا أُنْزِلَتْ هَذِهِ فِي أَهْلِ الكِتَابِ ثُمَّ تَلاَ ابْنُ عَبَّاسٍ: {وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ الَّذِينَ أُوتُوا الكِتَابَ لَتُبَيِّنُنَّهُ لِلنَّاسِ} وَتَلاَ {لاَ تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَفْرَحُونَ بِمَا أَتَوْا وَيُحِبُّونَ أَنْ يُحْمَدُوا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوا} قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: سَأَلَهُمُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ شَيْءٍ فَكَتَمُوهُ، وَأَخْبَرُوهُ بِغَيْرِهِ فَخَرَجُوا، وَقَدْ أَرَوْهُ أَنْ قَدْ أَخْبَرُوهُ بِمَا سَأَلَهُمْ عَنْهُ، وَاسْتُحْمِدُوا بِذَلِكَ إِلَيْهِ، وَفَرِحُوا بِمَا أُوتُوا مِنْ كِتْمَانِهِمْ، مَا سَأَلَهُمْ عَنْهُ.

3014 - हुमैद बिन अब्दुर्रहमान बिन औफ़ बयान करते हैं कि मरवान बिन हकम ने अपने दरबान से कहा: ऐ राफ़े! इब्ने अब्बास के पास जा कर उन से कहो अगर हर आदमी दी गई चीज़ से खुश हो और बग़ैर काम किए तारीफ़ किया जाना अच्छा समझे उसे अज़ाब हो, तो फिर हम सभी को अज़ाब होगा तो इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) ने फ़रमाया, "तुम्हें इस आयत से क्या गरज़ यह तो अहले किताब के बारे में नाज़िल हुई थी, फिर इब्ने अब्बास ने आयत "और अल्लाह तआला ने जब अहले किताब से अहद लिया कि तुम इसे लोगों से ज़रूर बयान करोगे और इसे छिपाओगे नहीं।" आयत: 187) की तिलावत की और यह आयत भी पढ़ी: "वह लोग जो अपने करतूतों पर खुश हैं और चाहते हैं कि जो उन्होंने नहीं किया उस पर भी उनकी तारीफ़ की जाए।" (आयत: 188) इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) ने फ़रमाया, "(अहले किताब से) नबी (ﷺ) ने कोई बात पूछी थी उन्होंने उसे छिपा कर कोई और बात बता दी, फिर वह चले गए और उनका ख़याल था कि उन्होंने आप (ﷺ) को उनके सवाल का जवाब दे दिया है, इस से उन्होंने आप से तारीफ़ करवाना चाही और बात छिपा कर खुश हुए जिस के बारे में आप ने उन से सवाल किया था।

बुख़ारी:4568. मुस्लिम:2778.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है।

5 - तफ़सीर सूरह निसा।

5 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ النِّسَاءِ

3015 - सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैं बीमार हुआ तो रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरी इयादत के लिए तशरीफ़ लाए, मुझ पर गशी तारी थी, फिर जब मुझे होश आया, तो मैंने अर्ज़ किया मैं अपने माल में कैसे फैसला करूं? आप (ﷺ) थोड़ी देर ख़ामोश रहे यहाँ तक कि आयत: "अल्लाह तआला तुम्हें औलाद के बारे में वसीयत करता है कि एक लड़के का हिस्सा दो लड़कियों के बराबर है।" (अन- निसा: 11) नाजिल हुई।

तख़रीज के लिए 2069 के तहत देखें।

3015 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ، يَقُولُ: مَرِضْتُ فَأَتَانِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعُودُنِي، وَقَدْ أُغْمِيَ عَلَيَّ، فَلَمَّا أَفَقْتُ، قُلْتُ: كَيْفَ أَقْضِي فِي مَالِي؟ فَسَكَتَ عَنِّي حَتَّى نَزَلَتْ: {يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الأُنْثَيَيْنِ}.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और बहुत से मुहद्दिसीन ने इसे मुहम्मद बिन मुन्कदिर से रिवायत किया है।

अबू ईसा कहते हैं हमें फ़ज़ल बिन सबाह बगदादी ने भी सुफ़ियान बिन उयय्ना से बवास्ता मुहम्मद बिन मुन्कदिर, सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) से नबी (ﷺ) की ऐसी हदीस बयान की है और फ़ज़ल बिन सबाह की हदीस में इस से ज़्यादा कलाम है।

3016 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि जब औतास का दिन था हमें औरतें मिलीं जिनके मुश्रिक शौहर भी थे चुनाँचे उनमें से कुछ लोगों ने उनसे सोहबत करने को ना पसंद किया, तो अल्लाह तआला ने यह आयत उतार दी: "और हराम की गई हैं शौहरों वाली औरतें मगर वह जो तुम्हारी मिल्कियत में आ जाएं।" (आयत: 24)

सहीह: तख़रीज के लिए 1132 के तहत देखें।

3016 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا حَبَّانُ بْنُ هِلَالٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا هَمَّامُ بْنُ يَحْيَى، قَالَ: حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ أَبِي الخَلِيلِ، عَنْ أَبِي عَلْقَمَةَ الهَاشِمِيِّ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، قَالَ: لَمَّا كَانَ يَوْمُ أَوْطَاسٍ أَصَبْنَا نِسَاءً لَهُنَّ أَزْوَاجٌ فِي الْمُشْرِكِينَ فَكَرِهَهُنَّ رِجَالٌ مِنَّا، فَأَنْزَلَ اللَّهُ {وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ النِّسَاءِ إِلاَّ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ}.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।

3017 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि औतास के दिन हमें लौंडियाँ मिलीं, उनकी कौम में उनके शौहर भी थे फिर लोगों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से इसका तजकिरा किया तो यह आयत नाज़िल हुई " और हराम की गई शौहरों वाली औरतें मगर जो तुम्हारी मिल्कियत में आजाएं।" (आयत: 24)

सहीह: तख़रीज के लिए 1132 के तहत देखें।

3017 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عُثْمَانُ الْبَتِّيُّ، عَنْ أَبِي الخَلِيلِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، قَالَ: أَصَبْنَا سَبَايَا يَوْمَ أَوْطَاسٍ لَهُنَّ أَزْوَاجٌ فِي قَوْمِهِنَّ، فَذَكَرُوا ذَلِكَ لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَنَزَلَتْ: {وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ النِّسَاءِ إِلاَّ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ}.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है। सौरी ने भी सुफ़ियान अल-बत्ती से बवास्ता अबू खलील, अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) से नबी (ﷺ) की हदीस इसी तरह रिवायत की है, और इसमें अबू अल्क़मा का ज़िक्र नहीं है, और मैं किसी को नहीं जानता जिसने इस हदीस में अबू अल्क़मा का ज़िक्र किया हो, सिवाए हम्माम के उन्होंने क़तादा से ज़िक्र किया है। नीज़ अबू खलील का नाम सालेह बिन अबी मरियम है।

3018 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने कबीरा गुनाहों के बारे में फ़रमाया; "अल्लाह के साथ शिर्क करना, वालिदैन की नाफ़रमानी, क़त्ल करना और झूठ बोलना है।"

सहीह: तख़रीज के लिए 1207 के तहत देखें।

3018 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى الصَّنْعَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الحَارِثِ، عَنْ شُعْبَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ أَبِي بَكْرِ بْنِ أَنَسٍ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِي الكَبَائِرِ قَالَ: الشِّرْكُ بِاللَّهِ، وَعُقُوقُ الوَالِدَيْنِ، وَقَتْلُ النَّفْسِ، وَقَوْلُ الزُّورِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है। इसे रौह बिन उबादा ने भी शोबा से रिवायत किया है, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन अबी बक्र कहा है जो सहीह नहीं है।

3019 - सय्यदना अबू बक्रा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या मैं तुम्हें सब से बड़ा गुनाह न बताऊँ?" लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! ज़रूर आप ने फ़रमाया, "अल्लाह के

3019 - حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ مَسْعَدَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ، قَالَ: حَدَّثَنَا الجُرَيْرِيُّ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: أَلاَ

أَحَدِّثُكُمْ بِأَكْبَرِ الكَبَائِرِ؟ قَالُوا: بَلَى يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ: الإِشْرَاكُ بِاللَّهِ، وَعُقُوقُ الوَالِدَيْنِ قَالَ: وَجَلَسَ وَكَانَ مُتَّكِئًا قَالَ: وَشَهَادَةُ الزُّورِ، أَوْ قَوْلُ الزُّورِ، قَالَ: فَمَا زَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَقُولُهَا حَتَّى قُلْنَا لَيْتَهُ سَكَتَ.

साथ शिर्क करना और वालिदैन की नाफ़रमानी।" रावी कहते हैं" : आप टेक लगाए हुए थे फिर बैठ गए और फ़रमाया, "झूठी गवाही भी या झूठी बात कहा।" कहते हैं: रसूलुल्लाह (ﷺ) यही कहते रहे यहाँ तक कि हम ने कहा: काश आप खामोश हो जाएँ।

सहीह: तख़रीज के लिए1901 के तहत देखें।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3020 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ هِشَامِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زَيْدِ بْنِ مُهَاجِرِ بْنِ قُنْفُذٍ التَّيْمِيِّ، عَنْ أَبِي أُمَامَةَ الأَنْصَارِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أُنَيْسٍ الجُهَنِيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: إِنَّ مِنْ أَكْبَرِ الكَبَائِرِ الشِّرْكُ بِاللَّهِ، وَعُقُوقُ الوَالِدَيْنِ، وَاليَمِينُ الغَمُوسُ، وَمَا حَلَفَ حَالِفٌ بِاللَّهِ يَمِينَ صَبْرٍ، فَأَدْخَلَ فِيهَا مِثْلَ جَنَاحِ بَعُوضَةٍ إِلاَّ جُعِلَتْ نُكْتَةً فِي قَلْبِهِ إِلَى يَوْمِ القِيَامَةِ.

3020 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उनैस जुहनी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "सब से बड़ा कबीरा गुनाह अल्लाह के साथ शिर्क करना, वालिदैन की नाफ़रमानी और झूठी क़सम है, जो शख़्स क़सम उठाए फिर इसमें मच्छर के बराबर भी झूठ मिलाए तो क़यामत तक के लिए उस के दिल में निशान लगा दिया जाता है।"

हसन: अहमद:3/495। हाकिम:4/294. सहीहुत्तर्गीब:1832.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। और अबू उमामा अंसारी सालबा के बेटे थे हम उनका नाम नहीं जानते उन्होंने नबी (ﷺ) से कई अहादीस रिवायत की हैं।

3021 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ فِرَاسٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: الكَبَائِرُ: الإِشْرَاكُ بِاللَّهِ، وَعُقُوقُ الوَالِدَيْنِ أَوْ

3021 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "कबीरा गुनाह, अल्लाह के साथ शिर्क करना और वालिदैन की नाफ़रमानी करना हैं" या आप(ﷺ) ने "झूठी क़सम" कहा। शोबा को शक है।

قَالَ: اليَمِينُ الغَمُوسُ شَكَّ شُعْبَةُ.

बुख़ारी:6870. निसाई:4011. इब्ने हिब्बान:5562. दारमी:2365.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3022 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ ابْنِ أَبِي نَجِيحٍ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ، أَنَّهَا قَالَتْ: يَغْزُو الرِّجَالُ وَلاَ تَغْزُو النِّسَاءُ وَإِنَّمَا لَنَا نِصْفُ الْمِيرَاثِ. فَأَنْزَلَ اللَّهُ {وَلاَ تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللَّهُ بِهِ بَعْضَكُمْ عَلَى بَعْضٍ} قَالَ مُجَاهِدٌ: وَأَنْزَلَ فِيهَا {إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ} وَكَانَتْ أُمُّ سَلَمَةَ أَوَّلَ ظَعِينَةٍ قَدِمَتِ الْمَدِينَةَ مُهَاجِرَةً.

3022 - सय्यदा उम्मे सलमा (رضي الله عنها) से रिवायत है कि उन्होंने कहा: मर्द जंग करते हैं और औरतें जंग नहीं करतीं और हमारे लिए मीरास भी आधी है। तो अल्लाह तबारक व तआला ने यह आयत उतार दी, "उस चीज़ की आरज़ू न करो जिस के बाइस अल्लाह तआला ने तुम से बअ़ज़ को बअ़ज़ पर फ़ज़ीलत दी है।" (आयत:32) मुजाहिद कहते हैं: इस बारे में यह आयत भी नाज़िल हुई " बेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें" ? (अल- अहज़ाब: 35) और उम्मे सलमा पहली ऊँट सवार औरत थीं जो हिजरत करके मदीना आई थीं।

सहीहुल इस्नाद:अहमद:6/322. अबू याला:6959. हाकिम:2/305.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस मुर्सल है। बअ़ज़ ने इसे बवास्ता इब्ने अबी नजीह, मुजाहिद से मुर्सल रिवायत किया है कि उम्मे सलमा (رضي الله عنها) इसी तरह फ़रमाती हैं।

3023 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ رَجُلٍ، مِنْ وَلَدِ أُمِّ سَلَمَةَ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ، قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ لاَ أَسْمَعُ اللَّهَ ذَكَرَ النِّسَاءَ فِي الهِجْرَةِ. فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: {أَنِّي لاَ أُضِيعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِنْكُمْ مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَى بَعْضُكُمْ مِنْ بَعْضٍ}.

3023 - सय्यदा उम्मे सलमा (رضي الله عنها) से मर्वी है कि उन्होंने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मैं यह नहीं सुनती कि अल्लाह तआला ने हिजरत में औरतों का भी ज़िक्र किया हो। तो अल्लाह तबारक व तआला ने यह आयत उतार दी " मैं तुम में से किसी काम करने वाले के काम को ख़्वाह मर्द हो या औरत हरगिज़ ज़ाया नहीं करूंगा तुम आपस में एक दुसरे के हम जिन्स हो।" (आले इमरान: 195)

सहीह: लिग़ैरिही: हुमैदी:301. हाकिम:2/300.

3024 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ، قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللهِ، أَمَرَنِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ أَقْرَأَ عَلَيْهِ وَهُوَ عَلَى الْمِنْبَرِ. فَقَرَأْتُ عَلَيْهِ مِنْ سُورَةِ النِّسَاءِ حَتَّى إِذَا بَلَغْتُ {فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَى هَؤُلاَءِ شَهِيدًا} غَمَزَنِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِيَدِهِ، فَنَظَرْتُ إِلَيْهِ وَعَيْنَاهُ تَدْمَعَانِ.

3024 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे हुक्म दिया कि मैं आपको कुरआन पढ़कर सुनाऊँ, आप मिम्बर पर थे तो मैंने आप को सूरह निसा पढ़ कर सुनाई, यहाँ तक कि जब मैं इस आयत " पस क्या हाल होगा जिस वक़्त हम हर उम्मत से एक गवाह लायेंगे।" (आयत:41) पर पहुंचा तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे अपने हाथ से ख़ामोश हो जाने का इशारा किया, मैंने आप की तरफ़ देखा तो आप की आँखों से आंसू जारी थे।

सहीहुल इस्नाद: इब्ने माजह:4194. इब्ने खुजैमा:1454. तबरानी:8467.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: अबू अह्वस ने आमश से बवास्ता इब्राहीम, अल्क़मा के ज़रिए अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) से इसी तरह रिवायत की है लेकिन यह इब्राहीम, उबैदा के ज़रिए अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) से रिवायत करते हैं।

3025 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ هِشَامٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ الثَّوْرِيُّ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَبِيدَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: اقْرَأْ عَلَيَّ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ أَقْرَأُ عَلَيْكَ وَعَلَيْكَ أُنْزِلَ؟ قَالَ: إِنِّي أُحِبُّ أَنْ أَسْمَعَهُ مِنْ غَيْرِي فَقَرَأْتُ سُورَةَ النِّسَاءِ حَتَّى بَلَغْتُ {وَجِئْنَا بِكَ عَلَى هَؤُلاَءِ شَهِيدًا} قَالَ: فَرَأَيْتُ عَيْنَيِ النَّبِيِّ ﷺ تَهْمِلاَنِ.

3025 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझ से फ़रमाया, "मुझे कुरआन पढ़ कर सुनाओ।" मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मैं पढूँ हालांकि आप पर नाज़िल हुआ है। आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "मैं चाहता हूँ कि किसी दुसरे से सुनूं।" तो मैंने सूरह निसा पढ़ी। यहाँ तक कि जब मैं आयत "और हम आप को उन पर गवाह लायेंगे" पर पहुंचा मैंने देखा कि नबी (ﷺ) की दोनों आँखों से आंसू[1] जारी हैं।

बुख़ारी:4582. मुस्लिम:800. अबू दाऊद:3668.

तौज़ीह: همل : आंसू बहना, همل العين هملا و هملانا وهمولا आँख से आंसू ढुलक कर बहना, आंसुओं की झड़ी लगना। (अल-कामूसुल वहीद।प. 1780)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस अबू अह्वस की रिवायत से ज़्यादा सहीह है।

3026 - حَدَّثَنَا سُوَيْدٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنِ الأَعْمَشِ، نَحْوَ حَدِيثِ مُعَاوِيَةَ بْنِ هِشَامٍ.
حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ أَبِي جَعْفَرٍ الرَّازِيِّ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ السَّائِبِ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ السُّلَمِيِّ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ، قَالَ: صَنَعَ لَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ طَعَامًا فَدَعَانَا وَسَقَانَا مِنَ الخَمْرِ، فَأَخَذَتِ الخَمْرُ مِنَّا، وَحَضَرَتِ الصَّلَاةُ فَقَدَّمُونِي فَقَرَأْتُ: {قُلْ يَا أَيُّهَا الكَافِرُونَ لاَ أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ} وَنَحْنُ نَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ. قَالَ: فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: {يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تَقْرَبُوا الصَّلَاةَ وَأَنْتُمْ سُكَارَى حَتَّى تَعْلَمُوا مَا تَقُولُونَ}.

3026 - सय्यदना अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (رضي الله عنه) ने हमारे लिए खाना बनाया फिर हमें दावत दी और हमें शराब भी पिलाई तो शराब ने हमारे ऊपर असर कर दिया और नमाज़ का वक़्त हुआ तो उन्होंने हमें आगे कर दिया मैंने पढ़ा: आप काफ़िरों से कह दीजिए मैं उसकी इबादत नहीं करूंगा जिसकी तुम इबादत करते हो, और हम उसी की इबादत करते हैं जिसकी तुम इबादत करते हो, कहते हैं फिर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमा दी: " ऐ ईमान वालो! जब तुम नशे में मस्त हो नमाज़ के क़रीब भी न जाओ जब तक अपनी बात को समझने न लगो।" (आयत:43)

सहीह:अबू दाऊद:3671. हाकिम:2/7307. अब्द बिन हुमैद:82. बज़्ज़ार:598.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

3027 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ بْنُ سَعْدٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، أَنَّهُ حَدَّثَهُ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ الزُّبَيْرِ، حَدَّثَهُ أَنَّ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ خَاصَمَ الزُّبَيْرَ فِي شِرَاجِ الحَرَّةِ الَّتِي يَسْقُونَ بِهَا النَّخْلَ فَقَالَ

3027 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि अंसार के एक आदमी ने ज़ुबैर (رضي الله عنه) के साथ हर्रा की पानी वाली खाल में झगड़ा किया जिससे वह खुजूरों को सैराब करते थे। अंसारी कहने लगा: पानी को गुजरने दो, लेकिन ज़ुबैर ने इन्कार कर

الأَنْصَارِيُّ: سَرِّحِ الْمَاءَ يَمُرُّ، فَأَبَى عَلَيْهِ، فَاخْتَصَمُوا إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِلزُّبَيْرِ: اسْقِ يَا زُبَيْرُ وَأَرْسِلِ الْمَاءَ إِلَى جَارِكَ. فَغَضِبَ الأَنْصَارِيُّ وَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، أَنْ كَانَ ابْنَ عَمَّتِكَ؟ فَتَغَيَّرَ وَجْهُ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، ثُمَّ قَالَ: يَا زُبَيْرُ اسْقِ وَاحْبِسِ الْمَاءَ حَتَّى يَرْجِعَ إِلَى الجُدُرِ فَقَالَ الزُّبَيْرُ: وَاللَّهِ إِنِّي لأَحْسِبُ هَذِهِ الآيَةَ نَزَلَتْ فِي ذَلِكَ {فَلاَ وَرَبِّكَ لاَ يُؤْمِنُونَ حَتَّى يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ} الآيَةَ.

दिया। फिर वह रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास मुक़द्दमा लेकर आए तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ज़ुबैर से फ़रमाया, "ऐ ज़ुबैर (अपने खेत को) पानी देकर पानी अपने हमसाये की तरफ़ छोड़ दिया करो।" तो अंसारी नाराज़ हो कर कहने लगा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! इसलिए कि यह आप की फूफी का बेटा है। रसूलुल्लाह (ﷺ) के चेहरे मुबारक का रंग (गुस्से की वजह से) तब्दील हो गया। फिर आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ ज़ुबैर पानी दो और पानी को मुंडेरों तक पहुँच जाने तक रोके रखो।" ज़ुबैर (رضي الله عنه) कहते हैं: अल्लाह की क़सम मेरा गुमान है कि यह आयत इसी बारे में नाज़िल हुई है" क़सम है तेरे परवरदिगार की! यह मोमिन नहीं हो सकते जब तक कि आपस के इख़्तिलाफ़ात में आप को हाकिम ना मान लें।" (आयत:65)

सहीह: तख़रीज के लिए 1363 के तहत देखें।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: मैंने मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (رحمه الله) से सुना कि इब्ने वहब ने यह हदीस लैस बिन साद और यूनुस से बवास्ता ज़ोहरी, उर्वा के ज़रिए अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رضي الله عنه) से इसी तरह रिवायत की है। जबकि शोऐब बिन अबी हम्ज़ा ने बवास्ता ज़ोहरी, उर्वा बिन ज़ुबैर से जो रिवायत की है इसमें अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رضي الله عنه) का ज़िक्र नहीं किया।

3028 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ، قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ يَزِيدَ، يُحَدِّثُ عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ، فِي هَذِهِ الآيَةِ {فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنَافِقِينَ فِئَتَيْنِ} قَالَ: رَجَعَ نَاسٌ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ

3028 - सय्यदना ज़ैद बिन साबित (رضي الله عنه) आयत: "तुम्हें क्या हो गया है कि मुनाफिकों के बारे में दो गिरोह हो रहे हैं।" (आयत:80) के बारे में फ़रमाते हैं: उहुद के दिन नबी (ﷺ) के सहाबा में से कुछ लोग वापस आ गए तो उनके मामले में लोगों के दो गिरोह बन गए, उन में से एक गिरोह कहता था " आप उन्हें क़त्ल कर दीजिए, और दूसरा कहने लगा: नहीं, तो यह

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ أُحُدٍ، فَكَانَ النَّاسُ فِيهِمْ فِرْقَتَيْنِ: فَرِيقٌ مِنْهُمْ يَقُولُ: اقْتُلْهُمْ، وَفَرِيقٌ يَقُولُ: لاَ، فَنَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةَ: {فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنَافِقِينَ فِئَتَيْنِ} وَقَالَ: إِنَّهَا طِيبَةُ وَقَالَ: إِنَّهَا تَنْفِي الْخَبَثَ كَمَا تَنْفِي النَّارُ خَبَثَ الْحَدِيدِ.

आयत नाज़िल हुई " तुम्हें क्या हो गया है जो मुनाफ़िक़ों के बारे में दो गिरोह हो रहे हैं" फिर आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "यह मदीना तय्यबा है" और आप ने फ़रमाया, "यह बुरी चीज़ को ख़त्म करता है जैसे आग लोहे के ज़ंग (कचरे) को उतारती है।"

बुख़ारी:4589. मुस्लिम:1383. अहमद:5/ 184

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और अब्दुल्लाह बिन यज़ीद अंसारी खतमी हैं उन्हें शरफ़े सहाबियत हासिल है।

3029 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدٍ الزَّعْفَرَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا شَبَابَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَرْقَاءُ بْنُ عُمَرَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: يَجِيءُ الْمَقْتُولُ بِالقَاتِلِ يَوْمَ القِيَامَةِ نَاصِيَتُهُ وَرَأْسُهُ بِيَدِهِ وَأَوْدَاجُهُ تَشْخَبُ دَمًا، يَقُولُ: يَا رَبِّ، قَتَلَنِي هَذَا، حَتَّى يُدْنِيَهُ مِنَ العَرْشِ قَالَ: فَذَكَرُوا لاِبْنِ عَبَّاسٍ، التَّوْبَةَ، فَتَلاَ هَذِهِ الآيَةَ: {وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُتَعَمِّدًا}، قَالَ: مَا نُسِخَتْ هَذِهِ الآيَةُ، وَلاَ بُدِّلَتْ، وَأَنَّى لَهُ التَّوْبَةُ.

3029 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "क़यामत के दिन मक़्तूल क़ातिल को लायेगा उसकी पेशानी और उसका सर उसके हाथ में होगा जबकि उसकी रगों से खून बह रहा होगा, कहेगा: ऐ मेरे परवरदिगार! इस ने मुझे क़त्ल किया था। यहाँ तक कि उसे अर्श के क़रीब कर देगा" अम्र बिन दीनार राविये हदीस कहते हैं: लोगों ने सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) से ज़िक्र किया तो उन्होंने इस आयत की तिलावत की: "और जो कोई किसी मोमिन को क़सदन क़त्ल कर डाले उसकी सज़ा दोज़ख है।" (आयत:93) फ़रमाने लगे: ना ये आयत मंसूख़ हुई है और ना ही इसका हुक्म तब्दील हुआ है, इसकी तौबा कहाँ क़ुबूल होगी?

सहीह: इब्ने माजह:2621. निसाई:3999. हिदायतुर्रूवात: 3397. अहमद:1/ 222. तबरानी:12597.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। और बअ़ज़ ने इस हदीस को बवास्ता अम्र बिन दीनार, इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) से इसी तरह रिवायत किया है लेकिन वह मर्फ़ूअ नहीं है।

3030 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ العَزِيزِ بْنُ أَبِي رِزْمَةَ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ سِمَاكٍ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: مَرَّ رَجُلٌ مِنْ بَنِي سُلَيْمٍ عَلَى نَفَرٍ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَعَهُ غَنَمٌ لَهُ، فَسَلَّمَ عَلَيْهِمْ قَالُوا: مَا سَلَّمَ عَلَيْكُمْ إِلاَّ لِيَتَعَوَّذَ مِنْكُمْ فَقَامُوا فَقَتَلُوهُ وَأَخَذُوا غَنَمَهُ، فَأَتَوْا بِهَا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: {يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا ضَرَبْتُمْ فِي سَبِيلِ اللهِ فَتَبَيَّنُوا وَلاَ تَقُولُوا لِمَنْ أَلْقَى إِلَيْكُمُ السَّلاَمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا}.

3030 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि बनी सुलैम का एक आदमी रसूलुल्लाह (ﷺ) के सहाबा की एक जमाअत के पास से गुजरा, उसके साथ उसकी बकरियां भी थीं, तो उस ने उन सहाबा को सलाम कहा, यह कहने लगे: उस ने तुम से बचने के लिए सलाम किया है, फिर वह खड़े हुए उसे क़त्ल किया और उस की बकरियां पकड़ लीं फिर उन्हें लेकर रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास ले आए तो अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमा दी: " ऐ ईमान वालो! जब तुम अल्लाह की राह में जा रहे हो तो तहक़ीक़ कर लिया करो और जो तुम से सलाम करे तुम उसे यह न कहो कि तु ईमान वाला नहीं।" (आयत: 94)

बुख़ारी:4591. मुस्लिम:3025. अबू दाऊद:3974.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है। और इस बारे में उसामा बिन ज़ैद से भी हदीस मर्वी है।

3031 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ البَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ، قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ {لاَ يَسْتَوِي القَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ} الآيَةَ جَاءَ عَمْرُو ابْنُ أُمِّ مَكْتُومٍ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: وَكَانَ ضَرِيرَ البَصَرِ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ مَا تَأْمُرُنِي؟ إِنِّي ضَرِيرُ البَصَرِ؟ فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى هَذِهِ الآيَةَ: {غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ} الآيَةَ. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى

3031 - सय्यदना बराअ बिन आज़िब (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि जब यह आयत: "अपनी जानों और मालों से अल्लाह की राह में जिहाद करने वाले और बैठने वाले बराबर नहीं हो सकते।" (आयत: 95) नाज़िल हुई तो अम्र बिन उम्मे मक्तूम जो कि नाबीना थे, नबी (ﷺ) के पास आकर अर्ज़ करने लगे: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! आप मुझे क्या हुक्म देते हैं? मैं नाबीना हूँ, तो अल्लाह तआला ने यह आयत " बगैर उज्र के" नाज़िल कर दी, तो नबी करीम (ﷺ) ने फ़रमाया, "मेरे पास शाने की हड्डी और दवात या तख़्ती और दवात लाओ।"

اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ائْتُونِي بِالكَتِفِ وَالدَّوَاةِ، أَوْ اللَّوْحِ وَالدَّوَاةِ.

सहीह: तख़रीज के लिए 1670 के तहत देखें।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। नीज़ अम्र बिन उम्मे मक्तूम को अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम भी कहा जाता है। यह अब्दुल्लाह बिन ज़ायदा हैं, उम्मे मक्तूम इनकी मां थीं।

3032 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدٍ الزَّعْفَرَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الحَجَّاجُ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ الكَرِيمِ، سَمِعَ مِقْسَمًا، مَوْلَى عَبْدِ اللهِ بْنِ الحَارِثِ، يُحَدِّثُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّهُ قَالَ: {لاَ يَسْتَوِي القَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ} عَنْ بَدْرٍ، وَالخَارِجُونَ إِلَى بَدْرٍ لَمَّا نَزَلَتْ غَزْوَةُ بَدْرٍ قَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ جَحْشٍ، وَابْنُ أُمِّ مَكْتُومٍ: إِنَّا أَعْمَيَانِ يَا رَسُولَ اللهِ، فَهَلْ لَنَا رُخْصَةٌ؟ فَنَزَلَتْ: {لاَ يَسْتَوِي القَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ} وَ {فَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ عَلَى القَاعِدِينَ دَرَجَةً} فَهَؤُلاَءِ القَاعِدُونَ غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ {وَفَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ عَلَى القَاعِدِينَ أَجْرًا عَظِيمًا} دَرَجَاتٍ مِنْهُ عَلَى القَاعِدِينَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرِ أُولِي الضَّرَرِ.

3032 - मिक़्सम बयान करते हैं कि सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) ने आयत: "अपनी जानों और मालों से अल्लाह की राह में जिहाद करने वाले मोमिन और बगैर उज़्र के बैठे रहने वाले मोमिन बराबर नहीं हो सकते" के बारे में फ़रमाया, "यह बद्र से पीछे रहने वाले और बद्र की तरफ़ निकलने वाले मर्द हैं, जब गज़्व-ए- बद्र पेश आया, तो अब्दुल्लाह बिन जहश और इब्ने उम्मे मक्तूम ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! हम दोनों अंधे हैं क्या हमारे लिए रूख़सत है? तो आयत: "बगैर उज़्र जिहाद से पीछे बैठ जाने वाले और जिहाद करने वाले बराबर नहीं हो सकते" और अल्लाह तआला ने मुजाहिदीन को बैठ रहने वालों पर बड़े अज्र की फ़ज़ीलत दे रखी है " नाज़िल हुई पहले वह लोग थे जो बगैर उज़्र बैठे" और अल्लाह ने मुजाहिदीन को बैठ रहने वाले लोगों पर बहुत बड़े अज्र की फ़ज़ीलत दी है।" मुजाहिदीन को दर्जात के साथ बरतरी है, जो माज़ूर हों।

बुख़ारी:3954. निसाई: 137. बैहक़ी:9/47.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) के तरीक़ से मर्वी यह हदीस हसन ग़रीब है और मिक़्सम के बारे में कहा जाता है कि वह अब्दुल्लाह बिन हारिस के आज़ादकर्दा गुलाम थे और यह भी कहा जाता है कि अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) के आज़ादकर्दा थे, मिक्सम की कुनियत अबुल क़ासिम थी।

3033 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ صَالِحِ بْنِ كَيْسَانَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: حَدَّثَنِي سَهْلُ بْنُ سَعْدٍ، قَالَ: رَأَيْتُ مَرْوَانَ بْنَ الحَكَمِ، جَالِسًا فِي الْمَسْجِدِ فَأَقْبَلْتُ حَتَّى جَلَسْتُ إِلَى جَنْبِهِ، فَأَخْبَرَنَا أَنَّ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ، أَخْبَرَهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمْلَى عَلَيْهِ: {لاَ يَسْتَوِي القَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ} {وَالمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ} قَالَ: فَجَاءَهُ ابْنُ أُمِّ مَكْتُومٍ وَهُوَ يُمِلُّهَا عَلَيَّ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، وَاللَّهِ لَوْ أَسْتَطِيعُ الجِهَادَ لَجَاهَدْتُ، وَكَانَ رَجُلاً أَعْمَى. فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَفَخِذُهُ عَلَى فَخِذِي فَثَقُلَتْ حَتَّى هَمَّتْ تَرُضُّ فَخِذِي، ثُمَّ سُرِّيَ عَنْهُ فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَلَيْهِ {غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ}.

3033 - सय्यदना सहल बिन साद साइदी (ﷺ) बयान करते हैं कि मैंने मरवान बिन हकम को मस्जिद में बैठे हुए देखा तो मैं भी उसके साथ जाकर बैठ गया, उस ने हमें बताया कि ज़ैद बिन साबित (ﷺ) ने उसे बयान किया कि नबी (ﷺ) ने उन्हें यह इबारत लिखवाई थी, "पीछे बैठ रहने वाले मोमिन और अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले बराबर नहीं हो सकते।" फ़रमाते हैं: इतने में आप(ﷺ) के पास उम्मे मक्तूम आए आप (ﷺ) मुझे वह लिखवा रहे थे वह कहने लगे: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! अल्लाह की क़सम! अगर मुझ में जिहाद की ताक़त होती, तो मैं जिहाद ज़रूर करता और वह नाबीना आदमी थे। तो अल्लाह तआला ने अपने रसूल पर वहि नाज़िल की उस वक़्त आप की रान मुबारक मेरी रान पर थी वह बोझल हो गई यहाँ तक कि मेरी रान टूटना चाहती थी, फिर आप से वह कैफ़ियत ख़त्म की गई तो अल्लाह तआला ने आप पर हुक्म उतारा कि "उज़्र वालों के अलावा।"

बुख़ारी:2832. निसाई:3099. अहमद:5/ 184. तबरानी:4814.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। कई रावियों ने बवास्ता ज़ोहरी सहल बिन साद (ﷺ) से इसी तरह रिवायत की है, जबकि मामर ने इस हदीस को ज़ोहरी से बवास्ता क़बीसा बिन ज़ुऐब, ज़ैद बिन साबित (ﷺ) से रिवायत किया है।

इस हदीस में नबी (ﷺ) के सहाबी ताबेई से रिवायत करते हैं सहल बिन साद अंसारी (ﷺ) ने, मरवान बिन हकम से रिवायत की है और मरवान बिन हकम ने नबी (ﷺ) से नहीं सुना, यह ताबेईन में से हैं।

3034 - याला बिन उमय्या बयान करते हैं कि मैंने उमर बिन ख़त्ताब (رضي الله عنه) से कहा: अल्लाह तआला ने तो सिर्फ़ यह फ़रमाया है: "अगर तुम्हें दुश्मन का खौफ़ है तो नमाज़ को क़स्र कर लो" (आयत: 101) और अब तो लोग अम्न में हैं। उमर (رضي الله عنه) ने फ़रमाया, "मैंने भी इस से तअज्जुब किया था जिससे तूने तअज्जुब किया है। फिर मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से यह बात ज़िक्र की। तो आप ने फ़रमाया, "यह एक सदक़ा (या तोहफ़ा) है जो अल्लाह ने तुम्हारे ऊपर किया है सो तुम उसका सदक़ा (या तोहफ़ा) कुबूल करो।"

मुस्लिम:686. अबू दाऊद:1199. इब्ने माजह:1065. निसाई:1433.

3034 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي عَمَّارٍ، يُحَدِّثُ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ بَابَاهُ، عَنْ يَعْلَى بْنِ أُمَيَّةَ، قَالَ: قُلْتُ لِعُمَرَ بْنِ الخَطَّابِ: إِنَّمَا قَالَ اللَّهُ: {أَنْ تَقْصُرُوا مِنَ الصَّلَاةِ إِنْ خِفْتُمْ أَنْ يَفْتِنَكُمْ} وَقَدْ أَمِنَ النَّاسُ، فَقَالَ عُمَرُ: عَجِبْتُ مِمَّا عَجِبْتَ مِنْهُ. فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَقَالَ: صَدَقَةٌ تَصَدَّقَ اللَّهُ بِهَا عَلَيْكُمْ فَاقْبَلُوا صَدَقَتَهُ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3035 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ज़ज्नान और अस्फ़ान के दर्मियान पड़ाव किया तो मुश्रिकीन कहने लगे: उन लोगों की एक नमाज़ है जो उन्हें बाप दादा और बेटों से भी महबूब है और वह असर की नमाज़ है, तुम अपनी तदबीर पर पुख्ता अज़्म हो जाओ, फिर उन पर एक ही मर्तबा हल्ला बोल देना और जिब्रील ने नबी (ﷺ) के पास आकर आप को हुक्म दिया कि आप अपने सहाबा को दो हिस्सों में तक्सीम करके उन्हें नमाज़ पढ़ाएं और उन में से एक जमाअत उन के पीछे अपना बचाव और अस्लहा लेकर खड़ी हो, , फिर दुसरे लोग आ

3035 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ بْنُ عَبْدِ الوَارِثِ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُبَيْدٍ الهُنَائِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ شَقِيقٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَزَلَ بَيْنَ ضَجْنَانَ وَعُسْفَانَ، فَقَالَ الْمُشْرِكُونَ: إِنَّ لِهَؤُلَاءِ صَلَاةً هِيَ أَحَبُّ إِلَيْهِمْ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَبْنَائِهِمْ وَهِيَ الْعَصْرُ، فَأَجْمِعُوا أَمْرَكُمْ فَمِيلُوا عَلَيْهِمْ مَيْلَةً وَاحِدَةً، وَأَنَّ جِبْرِيلَ أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَمَرَهُ أَنْ يَقْسِمَ

أَصْحَابَهُ شَطْرَيْنِ فَيُصَلِّي بِهِمْ، وَتَقُومُ طَائِفَةٌ أُخْرَى وَرَاءَهُمْ، وَلْيَأْخُذُوا حِذْرَهُمْ وَأَسْلِحَتَهُمْ، ثُمَّ يَأْتِي الآخَرُونَ وَيُصَلُّونَ مَعَهُ رَكْعَةً وَاحِدَةً، ثُمَّ يَأْخُذُ هَؤُلَاءِ حِذْرَهُمْ وَأَسْلِحَتَهُمْ، فَتَكُونُ لَهُمْ رَكْعَةٌ رَكْعَةٌ، وَلِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَكْعَتَانِ.

जाएं वह आप के साथ एक रकअत पढ़ें, फिर यह लोग अपना बचाव और अस्लहा पकड़ लें तो इस तरह इनके लिए एक- एक रकअत और रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिए दो रकअतें हो गयीं।

सहीहुल इस्नाद:निसाई:1543. हिदायतुर्रूवात:137. अहमद:2/522. इब्ने हिब्बान:2872.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: बवास्ता अब्दुल्लाह बिन शफीक, अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से मर्वी यह हदीस इस तरीक़ से हसन सहीह ग़रीब है।

नीज़ इस बारे में अब्दुल्लाह बिन मसऊद, ज़ैद बिन साबित, इब्ने अब्बास, जाबिर, अबू अयाश ज़रकी, इब्ने उमर, हुज़ैफा, अबू बक्रा और सहल बिन हस्मा(رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है, अबू अयाश ज़रकी का नाम ज़ैद बिन सामित (رضي الله عنه) था।

3036 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ أَحْمَدَ بْنِ أَبِي شُعَيْبٍ أَبُو مُسْلِمٍ الحَرَّانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلَمَةَ الحَرَّانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْحَاقَ، عَنْ عَاصِمِ بْنِ عُمَرَ بْنِ قَتَادَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ قَتَادَةَ بْنِ النُّعْمَانِ، قَالَ: كَانَ أَهْلُ بَيْتٍ مِنَّا يُقَالُ لَهُمْ: بَنُو أُبَيْرِقٍ بِشْرٌ وَبُشَيْرٌ وَمُبَشِّرٌ، وَكَانَ بُشَيْرٌ رَجُلاً مُنَافِقًا يَقُولُ الشِّعْرَ يَهْجُو بِهِ أَصْحَابَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ يَنْحَلُهُ بَعْضَ العَرَبِ ثُمَّ يَقُولُ: قَالَ فُلَانٌ كَذَا وَكَذَا، فَإِذَا سَمِعَ أَصْحَابُ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَلِكَ الشِّعْرَ قَالُوا: وَاللَّهِ مَا يَقُولُ

3036 - सय्यदना क़तादा बिन नौमान (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि हम में से एक खानदान था जिसे बनू उबैरिक़ कहा जाता था यह बिश्र, बुशैर, मुबश्शिर तीन भाई थे। बशीर एक मुनाफ़िक़ आदमी था, यह नबी (ﷺ) के सहाबा की तौहीन में अशआर कहता, फिर उन्हें किसी अरब शायर की तरफ़ मंसूब कर देता, फिर कहता: फुलां शायर ने ऐसे कहा है, फुलां ने ऐसे कहा है, जब रसूलुल्लाह (ﷺ) के सहाबा यह अशआर सुनते तो कहते: अल्लाह की क़सम! यह अशआर इसी खबीस ने कहे हैं या जैसे भी आदमी कहता और वह कहते: यह उबैरिक के बेटे के कहे हैं, रावी कहते हैं: यह घर वाले जाहिलियत और इस्लाम में मोहताज और तंगदस्त ही थे, मदीना में लोगों का खाना खुजूर और जौ था, जब किसी आदमी के पास कुछ

هَذَا الشِّعْرَ إِلاَّ هَذَا الخَبِيثُ، أَوْ كَمَا قَالَ الرَّجُلُ، وَقَالُوا: ابْنُ الأُبَيْرِقِ قَالَهَا، قَالَ: وَكَانُوا أَهْلَ بَيْتِ حَاجَةٍ وَفَاقَةٍ، فِي الجَاهِلِيَّةِ وَالإِسْلاَمِ، وَكَانَ النَّاسُ إِنَّمَا طَعَامُهُمْ بِالمَدِينَةِ التَّمْرُ وَالشَّعِيرُ، وَكَانَ الرَّجُلُ إِذَا كَانَ لَهُ يَسَارٌ فَقَدِمَتْ ضَافِطَةٌ مِنَ الشَّامِ مِنَ الدَّرْمَكِ، ابْتَاعَ الرَّجُلُ مِنْهَا فَخَصَّ بِهَا نَفْسَهُ، وَأَمَّا العِيَالُ فَإِنَّمَا طَعَامُهُمُ التَّمْرُ وَالشَّعِيرُ، فَقَدِمَتْ ضَافِطَةٌ مِنَ الشَّامِ فَابْتَاعَ عَمِّي رِفَاعَةُ بْنُ زَيْدٍ حِمْلاً مِنَ الدَّرْمَكِ فَجَعَلَهُ فِي مَشْرَبَةٍ لَهُ، وَفِي الْمَشْرُبَةِ سِلاَحٌ وَدِرْعٌ وَسَيْفٌ، فَعُدِيَ عَلَيْهِ مِنْ تَحْتِ البَيْتِ، فَنُقِبَتْ الْمَشْرُبَةُ، وَأُخِذَ الطَّعَامُ وَالسِّلاَحُ، فَلَمَّا أَصْبَحَ أَتَانِي عَمِّي رِفَاعَةُ، فَقَالَ: يَا ابْنَ أَخِي إِنَّهُ قَدْ عُدِيَ عَلَيْنَا فِي لَيْلَتِنَا هَذِهِ، فَنُقِبَتْ مَشْرَبَتُنَا فَذُهِبَ بِطَعَامِنَا وَسِلاَحِنَا. قَالَ: فَتَحَسَّسْنَا فِي الدَّارِ وَسَأَلْنَا فَقِيلَ لَنَا: قَدْ رَأَيْنَا بَنِي أُبَيْرِقٍ اسْتَوْقَدُوا فِي هَذِهِ اللَّيْلَةِ، وَلاَ نَرَى فِيمَا نَرَى إِلاَّ عَلَى بَعْضِ طَعَامِكُمْ، قَالَ: وَكَانَ بَنُو أُبَيْرِقٍ قَالُوا وَنَحْنُ نَسْأَلُ فِي الدَّارِ: وَاللَّهِ مَا نُرَى صَاحِبَكُمْ إِلاَّ

मयस्सर होता तो अगर शाम से कोई ताजिर मैदा लेकर आता तो आदमी उस से सिर्फ अपने लिए मैदा खरीद लेता जब कि बच्चों का खाना ख़ुजूर और जौ ही रहता, शाम से एक ताजिर आया तो मेरे चचा रिफ़ाआ बिन ज़ैद ने भी कुछ मैदा ख़रीद कर उसे अपने बाला खाना में रख दिया, बाला खाना में हथियार जिरह और तलवार भी थी, फिर घर के निचले हिस्से से उस पर ज्यादती की गई, बाला खाने को नक़ब लगा कर कोई शख़्स मैदा और हथियार ले गया, जब सुबह हुई तो मेरे चचा रिफ़ाआ मेरे पास आए कहने लगे: ऐ भतीजे आज रात हम पर ज्यादती हुई है। हमारे बालाखाने पर नक़ब लगा कर हमारा अनाज और अस्लहा चोरी कर लिया गया है, रावी कहते हैं: हम ने महल्ले में तलाशी ली तो हमें बताया गया कि हमने आज रात उबैरिक के बेटों को आग जलाए देखा है और हमारा ख़याल यही है कि वह तुम्हारे ही खाने पर होगी। रावी कहते हैं कि हम महल्ले में पूछ गछ कर रहे थे कि बनू उबैरिक कहने लगे: अल्लाह की क़सम! हमारे ख्याल में तुम्हारा चोर लबीद बिन सहल है, वह हम में से ही एक आदमी सालेह और मुसलमान था, जब लबीद ने सुना तो अपनी तलवार सौंत ली और कहा: मैं चोरी करूंगा? अल्लाह की क़सम! यह तलवार तुम्हारे जिस्मों के साथ ज़रूर मिलेगी या तुम इस चोरी को वाज़ेह करो, वह कहने लगे: ऐ आदमी अपनी तलवार हम से हटाओ, तुमने यह काम नहीं किया फिर हमने महल्ले में पूछ गछ की यहाँ तक कि हमें यक़ीन हो

لَبِيدَ بْنَ سَهْلٍ، رَجُلٌ مِنَّا لَهُ صَلَاحٌ وَإِسْلَامٌ، فَلَمَّا سَمِعَ لَبِيدٌ اخْتَرَطَ سَيْفَهُ وَقَالَ: أَنَا أَسْرِقُ؟ فَوَاللَّهِ لَيُخَالِطَنَّكُمْ هَذَا السَّيْفُ أَوْ لَتُبَيِّنُنَّ هَذِهِ السَّرِقَةَ، قَالُوا: إِلَيْكَ عَنْهَا أَيُّهَا الرَّجُلُ فَمَا أَنْتَ بِصَاحِبِهَا، فَسَأَلْنَا فِي الدَّارِ حَتَّى لَمْ نَشُكَّ أَنَّهُمْ أَصْحَابُهَا، فَقَالَ لِي عَمِّي: يَا ابْنَ أَخِي لَوْ أَتَيْتَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرْتَ ذَلِكَ لَهُ، قَالَ قَتَادَةُ: فَأَتَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ: إِنَّ أَهْلَ بَيْتٍ مِنَّا أَهْلَ جَفَاءٍ، عَمَدُوا إِلَى عَمِّي رِفَاعَةَ بْنِ زَيْدٍ فَنَقَبُوا مَشْرَبَةً لَهُ، وَأَخَذُوا سِلَاحَهُ وَطَعَامَهُ، فَلْيَرُدُّوا عَلَيْنَا سِلَاحَنَا، فَأَمَّا الطَّعَامُ فَلَا حَاجَةَ لَنَا فِيهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: سَآمُرُ فِي ذَلِكَ، فَلَمَّا سَمِعَ بَنُو أُبَيْرِقٍ أَتَوْا رَجُلًا مِنْهُمْ يُقَالُ لَهُ: أُسَيْرُ بْنُ عُرْوَةَ فَكَلَّمُوهُ فِي ذَلِكَ، فَاجْتَمَعَ فِي ذَلِكَ نَاسٌ مِنْ أَهْلِ الدَّارِ، فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ قَتَادَةَ بْنَ النُّعْمَانِ وَعَمَّهُ عَمَدَا إِلَى أَهْلِ بَيْتٍ مِنَّا أَهْلِ إِسْلَامٍ وَصَلَاحٍ، يَرْمُونَهُمْ بِالسَّرِقَةِ مِنْ غَيْرِ بَيِّنَةٍ وَلَا ثَبَتٍ، قَالَ قَتَادَةُ: فَأَتَيْتُ رَسُولَ اللهِ

गया कि यही चोर हैं, चुनाँचे मेरे चचा ने मुझ से कहा: ऐ भतीजे! अगर तुम रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास जाकर आप से यह तजकिरा करो (तो बेहतर रहेगा) क़तादा कहते हैं: मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया हम में से एक घराने वाले तंगदस्त हैं उन्होंने मेरे चचा रिफ़ाआ बिन ज़ैद के बालाखाने में नक़ब लगा कर उनका अस्लहा और अनाज चोरी कर लिया है,(आप उन्हें कहें कि) वह हमारा अस्लहा वापस कर दें, अनाज की हमें ज़रूरत नहीं है। तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैं इस बारे में जल्दी हुक्म दूंगा।" जब बनू उबैरिक ने यह सुना तो वोह अपने ही कबीले के एक आदमी के पास गए, जिसे उसैर बिन उर्वा कहा जाता था: उस से इस मामले में बात की तो महल्ले के बहुत से लोग जमा हो कर कहने लगे: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! क़तादा बिन नौमान और उसके चचा ने हम मुसलमानों के एक इस्लाह पसंद घराने पर बगैर दलील और सबूत चोरी का इल्ज़ाम लगाया है। क़तादा कहते हैं: मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास जाकर आप से बात की तो आप ने फ़रमाया, "तुमने ऐसे घर वालों पर जिन के इस्लाम और इस्लाह का तजकिरा होता है बगैर सबूत और दलील चोरी का इल्ज़ाम लगाया है।" रावी कहते हैं: मैं लौट आया और मैंने चाहा की मैं अपना माल दे दूं और रसूलुल्लाह (ﷺ) से इस बारे में बात न करूं, फिर मेरे चचा रिफ़ाआ मेरे पास आए कहने लगे: भतीजे तुमने क्या कहा, मैंने उनको वह बात

صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَلَّمْتُهُ، فَقَالَ: عَمَدْتَ إِلَى أَهْلِ بَيْتٍ ذُكِرَ مِنْهُمْ إِسْلاَمٌ وَصَلاَحٌ تَرْمِيهِمْ بِالسَّرِقَةِ عَلَى غَيْرِ ثَبَتٍ وَبَيِّنَةٍ ، قَالَ: فَرَجَعْتُ، وَلَوَدِدْتُ أَنِّي خَرَجْتُ مِنْ بَعْضِ مَالِي وَلَمْ أُكَلِّمْ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي ذَلِكَ، فَأَتَانِي عَمِّي رِفَاعَةُ فَقَالَ: يَا ابْنَ أَخِي مَا صَنَعْتَ؟ فَأَخْبَرْتُهُ بِمَا قَالَ لِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: اللَّهُ الْمُسْتَعَانُ، فَلَمْ يَلْبَثْ أَنْ نَزَلَ الْقُرْآنُ {إِنَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَا أَرَاكَ اللَّهُ وَلاَ تَكُنْ لِلْخَائِنِينَ خَصِيمًا} بَنِي أُبَيْرِقٍ {وَاسْتَغْفِرِ اللَّهَ} أَيْ مِمَّا قُلْتَ لِقَتَادَةَ {إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا} {وَلاَ تُجَادِلْ عَنِ الَّذِينَ يَخْتَانُونَ أَنْفُسَهُمْ إِنَّ اللَّهَ لاَ يُحِبُّ مَنْ كَانَ خَوَّانًا أَثِيمًا يَسْتَخْفُونَ مِنَ النَّاسِ وَلاَ يَسْتَخْفُونَ مِنَ اللهِ وَهُوَ مَعَهُمْ}، إِلَى قَوْلِهِ: {غَفُورًا رَحِيمًا} أَيْ: لَوِ اسْتَغْفَرُوا اللَّهَ لَغَفَرَ لَهُمْ {وَمَنْ يَكْسِبْ إِثْمًا فَإِنَّمَا يَكْسِبُهُ عَلَى نَفْسِهِ}، إِلَى قَوْلِهِ: {وَإِثْمًا مُبِينًا} قَوْلَهُمْ لِلَبِيدٍ {وَلَوْلاَ فَضْلُ اللهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهُ}،

बताई जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझ से फ़रमाई थी, तो उन्होंने कहा: अल्लाह से ही मदद का सवाल है। ज़्यादा देर नहीं गुजरी थी कि कुरआन नाज़िल हो गया "यकीनन हमने तुम्हारी तरफ़ हक़ के साथ किताब नाजिल फ़रमाई है ताकि तुम लोगों में उस चीज़ के मुताबिक़ फैसला करो जिस से अल्लाह ने तुम्हें शनासा किया है और खयानत करने वालों के हिमायती न बनो" यानी बनू उबैरिक के "और अल्लाह से बख्शिश मांगो!" यानी जो क़तादा से आप ने कहा है "बेशक अल्लाह तआला बख्शने वाला मेहरबानी करने वाला है।" और उनकी तरफ़ से झगड़ा न करो जो ख़ुद अपनी ही खयानत करते हैं, यक़ीनन दगाबाज़, गुनहगार अल्लाह को अच्छा नहीं लगता, वह लोगों से तो छिप जाते हैं (लेकिन) अल्लाह तआला से नहीं छिप सकते और अल्लाह उनके साथ होता है, से लेकर رحيما तक आयात नाज़िल हुई, यानी अगर वह अल्लाह तआला से माफ़ी मांगें तो वह उन्हें माफ़ कर देगा। अबू ईसा को शक हुआ है। "और जो शख़्स गुनाह करता है उसका बोझ उसी पर है। यहाँ से लेकर अल्लाह के फ़रमान إثما مبينا तक उनका लबीद पर इल्ज़ाम लगाना था, और अगर आप पर अल्लाह का फ़ज़्लो रहम न होता से लेकर{فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا} तक। (105-114) आयात नाजिल हुई।

जब कुरआन नाज़िल हुआ तो रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास हथियार लाये गए तो आप ने वह रिफ़ाआ को दे दिऐ, क़तादा कहते हैं जब मैं

إِلَى قَوْلِهِ: {فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا} فَلَمَّا نَزَلَ الْقُرْآنُ أَتَى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالسِّلاَحِ فَرَدَّهُ إِلَى رِفَاعَةَ، فَقَالَ قَتَادَةُ: لَمَّا أَتَيْتُ عَمِّي بِالسِّلاَحِ، وَكَانَ شَيْخًا قَدْ عَشَا، أَوْ عَسَا، فِي الجَاهِلِيَّةِ، وَكُنْتُ أُرَى إِسْلاَمَهُ مَدْخُولاً، فَلَمَّا أَتَيْتُهُ بِالسِّلاَحِ قَالَ: يَا ابْنَ أَخِي، هُوَ فِي سَبِيلِ اللهِ، فَعَرَفْتُ أَنَّ إِسْلاَمَهُ كَانَ صَحِيحًا، فَلَمَّا نَزَلَ الْقُرْآنُ لَحِقَ بُشَيْرٌ بِالْمُشْرِكِينَ، فَنَزَلَ عَلَى سُلاَفَةَ بِنْتِ سَعْدِ ابْنِ سُمَيَّةَ فَأَنْزَلَ اللَّهُ {وَمَنْ يُشَاقِقِ الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدَى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ نُوَلِّهِ مَا تَوَلَّى وَنُصْلِهِ جَهَنَّمَ وَسَاءَتْ مَصِيرًا إِنَّ اللَّهَ لاَ يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلاَلاً بَعِيدًا} فَلَمَّا نَزَلَ عَلَى سُلاَفَةَ رَمَاهَا حَسَّانُ بْنُ ثَابِتٍ بِأَبْيَاتٍ مِنْ شِعْرٍ، فَأَخَذَتْ رَحْلَهُ فَوَضَعَتْهُ عَلَى رَأْسِهَا ثُمَّ خَرَجَتْ بِهِ فَرَمَتْ بِهِ فِي الأَبْطَحِ، ثُمَّ قَالَتْ: أَهْدَيْتَ لِي شِعْرَ حَسَّانَ؟ مَا كُنْتَ تَأْتِينِي بِخَيْرٍ.

अपने चचा के पास हथियार लेकर गया: वह बूढ़े आदमी थे जाहिलियत में उनकी बीनाई कमज़ोर हो गई थी, और मेरा गुमान था कि उनके इस्लाम में कुछ खलल है जब मैं उनके पास गया तो उन्होंने कहा: भतीजे! यह अल्लाह के रास्ते में सदक़ा हैं तो मैं जान गया कि उनका इस्लाम सहीह है, जब कुरआन नाज़िल हुआ तो बुशैर मुश्रिकीन से मिल गया, फिर सलाफा बिन्ते साद बिन उमय्या के यहाँ उतरा, तो अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल कीं "जो शख़्स राहे हिदायत के वाज़ेह हो जाने के बावजूद रसूलुल्लाह (ﷺ) के ख़िलाफ़ चले और मोमिनों की राह छोड़ कर चले, हम उसे उधर ही मुतवज्जह कर देंगे जिधर वह ख़ुद मुतवज्जह हुआ और उसे दोज़ख में डाल देंगे वह पहुँचने की बहुत बुरी जगह है, उसे अल्लाह तआला क़तअन न बख़्शेगा कि उसके साथ शरीक मुक़र्रर किया जाए, हाँ शिर्क के अलावा गुनाह, जिसे चाहे माफ़ कर देता है और अल्लाह के साथ शिर्क करने वाला बहुत दूर की गुमराही में जा पड़ा।" (आयत: 115- 116)

जब वह सलाफ़ा के यहाँ ठहरा तो हस्सान बिन साबित(رضي الله عنه) ने अपने अशआर में उस (सलाफ़ा) की मज़म्मत की तो उस ने बुशैर का सामान पकड़ा, उसे अपने सर पर रखा, फिर उसे लेकर निकली और अब्तह में फेंक दिया, फिर कहने लगी: तु मेरे लिए हस्सान के शेरों का तोहफ़ा लाया था तुम मेरे पास भलाई नहीं लाए।

हसन: हाकिम 4/385, तबरानी फिल कबीर 19, तबरी:58265

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है मुहम्मद बिन सलमा हर्रानी के अलावा हम किसी को नहीं जानते जिस ने इसे मुत्तसिल बयान किया हो, यूनुस बिन बुकैर और दीगर रुवात ने इस हदीस को बवास्ता मुहम्मद बिन इस्हाक़, आसिम बिन उमर बिन क़तादा से मुर्सल रिवायत किया है इसमें उनके बाप और दादा का ज़िक्र नहीं किया।

नीज क़तादा बिन नौमान मां की तरफ़ से अबू सईद ख़ुदरी (ﷺ) के भाई थे और अबू सईद ख़ुदरी (ﷺ) का नाम साद बिन मालिक बिन सिनान था।

3037 - सय्यदना अली बिन अबी तालिब (ﷺ) फ़रमाते हैं: कुरआन में कोई आयत मुझे इस आयत से ज़्यादा महबूब नहीं है " अल्लाह तआला अपने साथ किए गए शिर्क को क़तअन नहीं बख्शेगा हाँ शिर्क के अलावा गुनाह जिसे चाहेगा बख्श देगा। " अन- निसा: 116)

3037 - حَدَّثَنَا خَلَّادُ بْنُ أَسْلَمَ، قَالَ: حَدَّثَنَا النَّضْرُ بْنُ شُمَيْلٍ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ ثُوَيْرِ بْنِ أَبِي فَاخِتَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ، قَالَ: مَا فِي الْقُرْآنِ آيَةٌ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ هَذِهِ الآيَةِ {إِنَّ اللَّهَ لاَ يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ}.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। अबू फ़ाख्ता का नाम सईद बिन इलाक़ा था और सुवैर की कुनियत अबू जुहैम थी यह कूफा का रहने वाला था इस का शुमार ताबेईन में होता है उस ने इब्ने उमर और इब्ने ज़ुबैर (ﷺ) से सिमा किया है (सुना है) और इब्ने महदी इस पर कुछ तअन करते हैं।

3038 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) बयान करते हैं कि जब यह आयत: "जो बुराई करेगा उसकी सज़ा पाएगा" (आयत: 123)नाज़िल हुई तो यह मुसलमानों पर गिराँ गुजरी, उन्होंने नबी (ﷺ) से शिक्वा किया, तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "म्याना रवी रखो और सीधे रहो क्योंकि मोमिन को पहुँचने वाली हर तक्लीफ़ में कफ्फ़ारा है यहाँ तक कि जो काँटा भी उसे चुभे या कोई मुसीबत आए।"

सहीह: मुस्लिम:2574. अहमद:2/248. हुमैदी:1148.

3038 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى بْنِ أَبِي عُمَرَ، وَعَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي زِيَادٍ الْمَعْنَى وَاحِدٌ، قَالاَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ ابْنِ مُحَيْصِنٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ قَيْسِ بْنِ مَخْرَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: لَمَّا نَزَلَ: {مَنْ يَعْمَلْ سُوءًا يُجْزَ بِهِ} شَقَّ ذَلِكَ عَلَى الْمُسْلِمِينَ، فَشَكَوْا ذَلِكَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: قَارِبُوا وَسَدِّدُوا، وَفِي كُلِّ مَا

يُصِيبُ الْمُؤْمِنَ كَفَّارَةٌ حَتَّى الشَّوْكَةَ يُشَاكُهَا وَالنَّكْبَةَ يُنْكَبُهَا

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। इब्ने मुहैसिन, उमर बिन अब्दुर्रहमान बिन मुहैसिन हैं।

3039 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ قَالاَ حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ عَنْ مُوسَى بْنِ عُبَيْدَةَ أَخْبَرَنِي مَوْلَى ابْنِ سِبَاعٍ قَالَ سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ قَالَ: كُنْتُ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَأُنْزِلَتْ عَلَيْهِ هَذِهِ الآيَةَ {مَنْ يَعْمَلْ سُوءًا يُجْزَ بِهِ وَلاَ يَجِدْ لَهُ مِنْ دُونِ اللهِ وَلِيًّا وَلاَ نَصِيرًا} , فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَا أَبَا بَكْرٍ أَلاَ أُقْرِئُكَ آيَةً أُنْزِلَتْ عَلَيَّ قُلْتُ بَلَى يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ فَأَقْرَأَنِيهَا فَلاَ أَعْلَمُ إِلاَّ أَنِّي قَدْ كُنْتُ وَجَدْتُ انْقِصَامًا فِي ظَهْرِي فَتَمَطَّأْتُ لَهَا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ مَا شَأْنُكَ يَا أَبَا بَكْرٍ قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي وَأَيُّنَا لَمْ يَعْمَلْ سُوءًا وَإِنَّا لَمُجْزَوْنَ بِمَا عَمِلْنَا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمَّا أَنْتَ يَا أَبَا بَكْرٍ وَالْمُؤْمِنُونَ فَتُجْزَوْنَ بِذَلِكَ فِي الدُّنْيَا حَتَّى تَلْقَوْا اللَّهَ وَلَيْسَ لَكُمْ ذُنُوبٌ وَأَمَّا الآخَرُونَ فَيُجْمَعُ ذَلِكَ لَهُمْ حَتَّى يُجْزَوْا بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

3039 - सय्यदना अबू बक्र सिद्दीक़ (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैं नबी (ﷺ) के पास था कि आप पर यह आयत नाजिल हुई "जो बुराई करेगा वह सज़ा पाएगा" (आयत:123) तो अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ अबू बक्र क्या मैं तुम्हें वह आयत न पढ़ाऊं जो मुझ पर नाजिल हुई है?" मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! क्यों नहीं फिर आप ने मुझे पढ़ाई, मैं यह जानता हूँ कि मैंने उसके साथ अपनी कमर को टूटता हुआ पाया फिर मैंने अंगड़ाई ली, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अबू बक्र तुम्हें क्या हुआ?" मैंने अर्ज़ की ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! आप पे मेरे मां बाप कुर्बान हों, हम में से कौन बुरा अमल नहीं करता क्या हमें हमारे आमाल की सज़ा दी जाएगी? तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया " अबू बक्र तुम और अहले ईमान, दुनिया में ही इसकी सज़ा पा लोगे यहाँ तक कि जब अल्लाह से मिलोगे, तो तुम्हारे गुनाह नहीं होंगे। लेकिन दुसरे लोगों के लिए यह सज़ाएँ जमा होती रहेंगी यहाँ तक कि उन्हें क़यामत के दिन सज़ा दी जाएगी।"

ज़ईफुल इस्नाद: अस-सिलसिला अस-सहीहा:2924.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। इस की सनद में एतराज़ है और मूसा बिन उबैदा हदीस में ज़ईफ़ है, इसे यह्या बिन सईद और अहमद बिन हंबल ने ज़ईफ़ कहा है। नीज़ इब्ने सबा भी मजहूल है, यह हदीस एक और सनद से भी अबू बक्र (رضي الله عنه) से मर्वी है इसकी सनद भी सहीह नहीं है।

इस बारे में सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) से भी हदीस मर्वी है।

3040- सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि सय्यदा सौदा (رضي الله عنها) को खौफ लाहिक़ हुआ कि रसूलुल्लाह (ﷺ) उन्हें तलाक़ दे देंगे तो वह कहने लगीं: आप मुझे तलाक़ न दें मुझे अपने निकाह में रखें, मैं अपना दिन आयशा (رضي الله عنها) को देती हूँ चुनाँचे आप ने ऐसा ही किया। फिर यह आयत नाज़िल हुई: "दोनों मियाँ बीवी आपस में सुलह कर लें इसमें किसी पर कोई गुनाह नहीं। सुलह बहुत बेहतर चीज़ है।" (आयत: 128) जिस चीज़ पर भी वह सुलह करे जायज़ है। यह कौल इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) का है।

सहीह: तयालिसी:2683. तबरानी:11746. बैहक़ी:7/297. अल-इर्वा:2020.

3040 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ مُعَاذٍ، عَنْ سِمَاكٍ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: خَشِيَتْ سَوْدَةُ أَنْ يُطَلِّقَهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَتْ: لاَ تُطَلِّقْنِي وَأَمْسِكْنِي، وَاجْعَلْ يَوْمِي لِعَائِشَةَ، فَفَعَلَ فَنَزَلَتْ: {فَلاَ جُنَاحَ} عَلَيْهِمَا أَنْ يُصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا وَالصُّلْحُ خَيْرٌ فَمَا اصْطَلَحَا عَلَيْهِ مِنْ شَيْءٍ فَهُوَ جَائِزٌ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3041 - बराअ (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि आख़िरी आयत या आख़िरी हुक्म जो नाजिल हुआ वह यह था: "आप से फ़त्वा पूछते हैं आप कह दें अल्लाह तआला तुम्हें कलाला के बारे में फ़त्वा देता है।" (आयत: 176)

मुस्लिम:1618. अबू दाऊद:2888. अहमद:4/298. अबू याला:1723. बतरीके आखर।

3041 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ مِغْوَلٍ، عَنْ أَبِي السَّفَرِ، عَنِ الْبَرَاءِ، قَالَ: آخِرُ آيَةٍ أُنْزِلَتْ، أَوْ آخِرُ شَيْءٍ نَزَلَ: {يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلاَلَةِ}.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है और अबू सफ़र का नाम सईद अहमद या युहमिद सौरी है।

3042 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ عَيَّاشٍ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ الْبَرَاءِ، قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ {يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلَالَةِ}، فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: تُجْزِئُكَ آيَةُ الصَّيْفِ.

3042 - सय्यदना बराअ (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि एक आदमी नबी (ﷺ) के पास आकर अर्ज़ करने लगा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! आयत "वह आप से मसला पूछते हैं आप कह दें कि अल्लाह तुम्हें कलाला के बारे में फ़त्वा देता है" का मतलब क्या है? नबी (ﷺ) ने उस से फ़रमाया, "तुम्हें गर्मियों में नाज़िल होने वाली आयत काफी है।" (1)

सहीह: अबू दाऊद:2889. अहमद:4/293. अबू याला:1656.

तौज़ीह: (1) इस से मुराद मुकम्मल आयत है यह गर्मी के मौसम में नाज़िल हुई थी इसमें कलाला की विरासत तक़्सीम करने का मुकम्मल तरीक़ा है और कलाला उस शख़्स को कहा जाता है। जिसकी औलाद और मां बाप न हों।

6 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الْمَائِدَةِ

6 - तफ़सीर सूरह माइदा।

3043 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مِسْعَرٍ وَغَيْرِهِ، عَنْ قَيْسِ بْنِ مُسْلِمٍ، عَنْ طَارِقِ بْنِ شِهَابٍ، قَالَ: قَالَ رَجُلٌ مِنَ الْيَهُودِ لِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ، لَوْ عَلَيْنَا أُنْزِلَتْ هَذِهِ الآيَةَ: {الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الإِسْلَامَ دِينًا} لَاتَّخَذْنَا ذَلِكَ الْيَوْمَ عِيدًا، فَقَالَ لَهُ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ: أَنِّي لَأَعْلَمُ أَيَّ يَوْمٍ أُنْزِلَتْ هَذِهِ الآيَةُ، أُنْزِلَتْ يَوْمَ عَرَفَةَ فِي يَوْمِ جُمُعَةٍ.

3043 - तारिक़ बिन शिहाब कहते हैं: यहूदियों के एक आदमी ने उमर बिन ख़त्ताब (رضي الله عنه) से कहा: ऐ अमीरुल मोमिनीन! अगर यह आयत: " आज मैंने तुम्हारे लिए दीन को कामिल कर दिया, अपनी नेअ्मत को पूरा कर दिया और तुम्हारे इस्लाम के दीन होने पर रज़ामन्द हो गया।" (अल- माइदा:3) हम पर नाज़िल होती तो हम उस दिन को ईद बना लेते। तो उमर बिन ख़त्ताब(رضي الله عنه) ने उससे फ़रमाया, "मैं खूब जानता हूँ कि यह आयत किस दिन नाज़िल हुई थी, यह नौ ज़िल हिज्जा (यौमे अरफ़ा) जुमा के दिन नाज़िल हुई थी।

बुख़ारी:45. मुस्लिम:3017. निसाई:3002.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3044 - अम्मार बिन अबी अम्मार (ﷺ) बयान करते हैं की सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (ﷺ) ने आयत: " आज मैंने तुम्हारे लिए दीन को कामिल कर दिया, अपनी नेमत को पूरा और तुम्हारे लिए इस्लाम के दीन होने पर रज़ामन्द हो गया।" पढ़ी, उनके पास एक यहूदी बैठा था कहने लगा: अगर यह आयत हम पर नाजिल होती तो हम इस दिन को ईद बना लेते, इब्ने अब्बास (ﷺ) ने फ़रमाया, "यह तो नाज़िल ही दो ईदों के दिन हुई है जुमा और अरफ़ा (हज) के दिन।

सहीहुल इस्नाद: तयालिसी:2709. तबरानी:12835. हिदायतुर्रूवात:1317.

3044 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ عَمَّارِ بْنِ أَبِي عَمَّارٍ، قَالَ: قَرَأَ ابْنُ عَبَّاسٍ: {الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الإِسْلاَمَ دِينًا} وَعِنْدَهُ يَهُودِيٌّ فَقَالَ: لَوْ أُنْزِلَتْ هَذِهِ عَلَيْنَا لاَتَّخَذْنَا يَوْمَهَا عِيدًا، قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: فَإِنَّهَا نَزَلَتْ فِي يَوْمِ عِيدَيْنِ فِي يَوْمِ جُمُعَةٍ، وَيَوْمِ عَرَفَةَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इब्ने अब्बास (ﷺ) की हदीस हसन ग़रीब है और यह सहीह हदीस है।

3045 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "रहमान का दायाँ हाथ भरा हुआ है, खूब फय्याज़ी करने वाला है, दिन रात अता करने से कमी नहीं होती।" आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम यह देखो कि जब अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है तो अल्लाह के दायें हाथ की फय्याज़ी में कमी नहीं हुई, उसका अर्श पानी पर था नीज़ उसके दुसरे हाथ में तराज़ू है वह उसे झुकाता और उठाता है।"

बुखारी:4684) मुस्लिम:993. इब्ने माजह:197.

3045 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَمِينُ الرَّحْمَنِ مَلأَى سَحَّاءُ لاَ يُغِيضُهَا اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ قَالَ: أَرَأَيْتُمْ مَا أَنْفَقَ مُنْذُ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضَ؟ فَإِنَّهُ لَمْ يَغِضْ مَا فِي يَمِينِهِ، وَعَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ، وَبِيَدِهِ الأُخْرَى الْمِيزَانُ يَرْفَعُ وَيَخْفِضُ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और यह हदीस इस आयत की तफ़सीर में है, और यहूदियों ने कहा अल्लाह का हाथ बंद है, उनके हाथ वही बाँध दिए गए।" (अल-माइदा:64)

अइम्म-ए-दीन इस हदीस के बारे में कहते हैं इसी तरह ईमान ; लाना ज़रूरी है न कि इसकी तफ़सीर की जाए और न वहम किया जाए, जुम्हूर अइम्म-ए-दीन, यही कहते हैं जिन में सुफ़ियान सौरी मालिक बिन अनस इब्ने उयय्ना और इब्ने मुबारक भी हैं यह कहते हैं कि उन चीजों की रिवायत किया जाए, उन पर ईमान रखा जाए लेकिन कैफ़ियत बयान न किया जाए।

3046 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ: حَدَّثَنَا الحَارِثُ بْنُ عُبَيْدٍ، عَنْ سَعِيدٍ الجُرَيْرِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ شَقِيقٍ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُحْرَسُ حَتَّى نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةَ: {وَاللَّهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ} فَأَخْرَجَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأْسَهُ مِنَ القُبَّةِ، فَقَالَ لَهُمْ: يَا أَيُّهَا النَّاسُ انْصَرِفُوا فَقَدْ عَصَمَنِي اللَّهُ.

3046 - सय्यदा आयशा (رضی اللہ عنہا) बयान करती हैं कि नबी (ﷺ) की हिफ़ाज़त के लिए पहरा लगाया जाता था यहाँ तक कि यह आयत नाजिल हुई " और अल्लाह तआला आप को लोगों से बचाएगा।" (आयत:76) तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ख़ेमे से अपना सर मुबारक बाहर निकाल कर उन से फ़रमाया, "ऐ लोगो! चले जाओ अल्लाह तआला ने मुझे महफ़ूज़ (सुरक्षित) कर दिया है।"

हसन: हाकिम:2/313. बैहक़ी:8/9. अस-सिलसिला अस-सहीहा:2489.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है।

अबू ईसा कहते हैं हमें नस्र बिन अली ने भी मुस्लिम बिन इब्राहीम से इसी सनद के साथ ऐसी ही हदीस बयान की है।

और बअ़ज़ ने इस हदीस को जुरैरी के वास्ते से अब्दुल्लाह बिन शफ़ीक़ से रिवायत किया है कि नबी (ﷺ) का पहरा दिया जाता था इसमें आयशा (رضی اللہ عنہا) का ज़िक्र नहीं है।

3047 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا شَرِيكٌ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ بَذِيمَةَ، عَنْ أَبِي عُبَيْدَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَمَّا وَقَعَتْ بَنُو إِسْرَائِيلَ فِي الْمَعَاصِي فَنَهَتْهُمْ عُلَمَاؤُهُمْ فَلَمْ

3047 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضی اللہ عنہ) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब बनू इस्राईल गुनाहों में मुब्तला हुए तो उनके उलमा ने उन्हें रोका, लेकिन वह बाज़ न आए तो वह उलमा भी उनके साथ उनकी मजलिसों में बैठने लगे उनके साथ मिलकर खाने पीने लगे, तो अल्लाह तआला ने

يَنْتَهُوا، فَجَالَسُوهُمْ فِي مَجَالِسِهِمْ وَوَاكَلُوهُمْ وَشَارَبُوهُمْ، فَضَرَبَ اللَّهُ قُلُوبَ بَعْضِهِمْ عَلَى بَعْضٍ وَلَعَنَهُمْ {عَلَى لِسَانِ دَاوُدَ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ذَلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ} قَالَ: فَجَلَسَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَكَانَ مُتَّكِئًا فَقَالَ: لاَ وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ حَتَّى تَأْطُرُوهُمْ عَلَى الحَقِّ أَطْرًا

उनके दिल एक दुसरे जैसे बना दिए और दाऊद और ईसा (عليه السلام) की ज़बानी उन पर लानत की, क्योंकि वह नाफ़र्मान और हद से गुजरने वाले थे।" रावी कहते हैं: रसूलुल्लाह (ﷺ) टेक लगाए हुए थे फिर आप (ﷺ) उठ कर बैठ गए। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, तुम निजात न पा सकोगे जब तक तुम हक़ पर ज़ालिम को न रोकोगे।" (यानी बे इन्साफी से)

ज़ईफ़: अबू दाऊद:4336. इब्ने माजह:4006. अहमद: 1/391. अबू याला:5035.

वज़ाहत: अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान यज़ीद का कौल नक़ल करते हैं कि सुफ़ियान सौरी इसमें अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) का ज़िक्र नहीं करते थे।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। और यह हदीस मुहम्मद बिन मुस्लिम बिन अबी वजाह से भी बवास्ता अली बिन बज़ीमा, अबू उबैदा से अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) के ज़रिए नबी (ﷺ) से ऐसे ही मर्वी है। जबकि बअ़ज़ रावी अबू उबैदा के ज़रिए नबी (ﷺ) से मुर्सल रिवायत करते हैं।

3048 - حَدَّثَنَا بُنْدَارٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ بَذِيمَةَ، عَنْ أَبِي عُبَيْدَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ بَنِي إِسرائيل لَمَّا وَقَعَ فِيهِمُ النَّقْصُ كَانَ الرَّجُلُ فِيهِمْ يَرَى أَخَاهُ يَقَعُ عَلَى الذَّنْبِ فَيَنْهَاهُ عَنْهُ، فَإِذَا كَانَ الغَدُ لَمْ يَمْنَعْهُ مَا رَأَى مِنْهُ أَنْ يَكُونَ أَكِيلَهُ وَشَرِيبَهُ وَخَلِيطَهُ، فَضَرَبَ اللَّهُ قُلُوبَ بَعْضِهِمْ بِبَعْضٍ، وَنَزَلَ فِيهِمُ القُرْآنُ فَقَالَ:

3048 - अबू उबैदा (رحمه الله) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब बनी इस्राईल में नुक्स वाक़ेअ हुआ, तो उन में से कोई आदमी अपने भाई को गुनाह करते देखता, तो उसे रोकता फिर जब अगला दिन होता तो उसे देख कर उसे न रोकता बल्कि उस के साथ खाता पीता और उसका साथी बन जाता, तो अल्लाह तआला ने उनके दिल एक दुसरे से मिला दिए और उनके बारे में कुरआन नाज़िल हुआ: "बनी इस्राईल के काफ़िरों पर दाऊद (अलैहि०) और ईसा बिन मरियम (अलैहि०) की ज़बानी लानत की गई इस वजह

{لُعِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ بني إسرائيل عَلَى لِسَانِ دَاوُدَ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ذَلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ} فَقَرَأَ حَتَّى بَلَغَ: {وَلَوْ كَانُوا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالنَّبِيِّ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوهُمْ أَوْلِيَاءَ وَلَكِنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ فَاسِقُونَ} قَالَ: وَكَانَ نَبِيُّ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُتَّكِئًا فَجَلَسَ، فَقَالَ: لاَ، حَتَّى تَأْخُذُوا عَلَى يَدِ الظَّالِمِ فَتَأْطُرُوهُ عَلَى الحَقِّ أَطْرًا.

से कि वह नाफ़र्मानियाँ करते और हद से बढ़ते थे।" और किरअत करते यहाँ तक पहुंचे।" और अगर उन्हें अल्लाह तआला, नबी और जो उस पर नाज़िल किया गया है उस पर यक़ीन होता तो यह कुफ्फ़ार से दोस्तियाँ न करते लेकिन इन में से अक्सर फासिक़ हैं।" (आयत: 78- 81) रावी कहते हैं: नबी (ﷺ) टेक लगाए हुए थे फिर बैठ गए फ़रमाया, "नहीं उस वक़्त तक तुम्हें कामयाबी नहीं मिलेगी) जब तक तुम जालिम का हाथ रोक कर उसे हक़ पर माइल न कर दो।"

ज़ईफ़ : इब्ने माजह:4006. तबरी:6/ 318.

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं: हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने अबू दाऊद तयालिसी से मुझे लिखवा कर हदीस बयान की कि उन्हें मुहम्मद बिन मुस्लिम बिन अबू वज़ाह ने अली बिन बज़ीमा से बवास्ता उबैदा, अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) के ज़रिए नबी (ﷺ) की ऐसी ही हदीस बयान की है।

3049 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا إِسْرَائِيلُ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُرَحْبِيلَ أَبِي مَيْسَرَةَ، عَنْ عُمَرَ بْنِ الخَطَّابِ، أَنَّهُ قَالَ: اللَّهُمَّ بَيِّنْ لَنَا فِي الخَمْرِ بَيَانَ شِفَاءٍ، فَنَزَلَتِ الَّتِي فِي البَقَرَةِ: {يَسْأَلُونَكَ عَنِ الخَمْرِ وَالمَيْسِرِ}، فَدُعِيَ عُمَرُ فَقُرِئَتْ عَلَيْهِ فَقَالَ: اللَّهُمَّ بَيِّنْ لَنَا فِي الخَمْرِ بَيَانَ شِفَاءٍ، فَنَزَلَتِ الَّتِي فِي النِّسَاءِ: {يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تَقْرَبُوا الصَّلاَةَ وَأَنْتُمْ سُكَارَى}، فَدُعِيَ عُمَرُ فَقُرِئَتْ عَلَيْهِ، ثُمَّ قَالَ:

3049 - सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब (رضي الله عنه) से रिवायत है कि उन्होंने कहा: ऐ अल्लाह! हमारे लिए शराब के मुताल्लिक़ वाज़ेह बयान कर दे, तो सूरह बक़रा की आयत "आप से शराब और जुए के मुताल्लिक़ पूछते हैं आप कह दीजिए इन में बहुत बड़ा गुनाह है।" (अल- बक़र:219) नाजिल हुई, उमर (رضي الله عنه) को बुला कर उन्हें सुनाई गई तो उन्होंने फिर कहा: ऐ अल्लाह हमारे लिए शराब के बारे में वाज़ेह बयान कर दे तो सूरह निसा की आयत "ऐ ईमान वालो! नशे की हालत में नमाज़ के क़रीब न जाओ।" (अन- निसा:43) नाज़िल हुई" उमर (رضي الله عنه) को बुलाकर यह आयत सुनाई गई तो उन्होंने फिर कहा: ऐ अल्लाह हमारे लिए शराब के बारे

اللَّهُمَّ بَيِّنْ لَنَا فِي الخَمْرِ بَيَانَ شِفَاءٍ، فَنَزَلَتِ الَّتِي فِي الْمَائِدَةِ: {إِنَّمَا يُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُوقِعَ بَيْنَكُمُ العَدَاوَةَ وَالبَغْضَاءَ فِي الخَمْرِ وَالمَيْسِرِ}، إِلَى قَوْلِهِ: {فَهَلْ أَنْتُمْ مُنْتَهُونَ} فَدُعِيَ عُمَرُ فَقُرِئَتْ عَلَيْهِ فَقَالَ: انْتَهَيْنَا انْتَهَيْنَا.

में वाज़ेह बयान कर दे तो सूरह मायदा की आयत: "शैतान तो यही चाहता है कि वह शराब और जुए के ज़रिए तुम्हारे दर्मियान दुश्मनी और बुग्ज़ डाल दे और अल्लाह के ज़िक्र और नमाज़ से रोक दे, क्या अब बाज़ आ जाओगे।" (अल-माइदा:91) नाज़िल हुई। फिर उमर (ﷺ) को बुला कर उन्हें सुनाई गई तो उन्होंने कहा: हम रुक गए हम रुक गए।

सही: अबू दाऊद:3670. निसाई:5540. अहमद:1/53.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस इस्राईल से भी मुर्सल मर्वी है। हमें मुहम्मद बिन अला ने, वकीअ, इस्राईल से बवास्ता अबू इस्हाक़, अबू मैसरा से हदीस बयान की है कि उमर बिन ख़त्ताब (رضي الله عنه) ने कहा: ऐ अल्लाह! हमारे लिए शराब के मुताल्लिक़ कोई वाज़ेह बयान जारी फ़रमा दे। फिर इसी तरह बयान की और यह मुहम्मद बिन यूसुफ़ की रिवायत से भी ज़्यादा सहीह है।

3050 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ البَرَاءِ، قَالَ: مَاتَ رِجَالٌ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَبْلَ أَنْ تُحَرَّمَ الخَمْرُ، فَلَمَّا حُرِّمَتِ الخَمْرُ، قَالَ رِجَالٌ: كَيْفَ بِأَصْحَابِنَا وَقَدْ مَاتُوا يَشْرَبُونَ الخَمْرَ، فَنَزَلَتْ: {لَيْسَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جُنَاحٌ فِيمَا طَعِمُوا إِذَا مَا اتَّقَوْا وَآمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ}.

3050 - सय्यदना बराअ (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि शराब हराम होने से पहले नबी (ﷺ) के सहाबा में से कुछ लोग फौत हो गए थे, फिर जब शराब हराम हुई, तो कुछ लोगों ने कहा: हमारे उन साथियों का क्या बनेगा जो शराब पीते फौत हुए हैं? तो यह आयत: " ईमान वालों और नेक आमाल करने वालों पर इस चीज़ में कोई गुनाह नहीं है जिसे उन्होंने खा - पी लिया जब कि वह लोग मुत्तक़ी, ईमानदार और नेक आमाल करने वाले हों।" (आयत:93) नाज़िल हुई।

सहीह: लिग़ैरिही: इब्ने हिब्बान:5350. तयालिसी:715. अबू याला:1719. अस-सिलसिला अस-सहीहा:3486.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। इसे शोबा ने भी बवास्ता अबू इस्हाक़ बराअ (رضي الله عنه) से रिवायत किया है।*

3051 - حَدَّثَنَا بِذَلِكَ مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ:

3051 - सय्यदना बराअ बिन आज़िब (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि (शराब हराम होने से पहले)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، قَالَ: قَالَ الْبَرَاءُ: مَاتَ نَاسٌ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُمْ يَشْرَبُونَ الخَمْرَ، فَلَمَّا نَزَلَ تَحْرِيمُهَا قَالَ نَاسٌ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: فَكَيْفَ بِأَصْحَابِنَا الَّذِينَ مَاتُوا وَهُمْ يَشْرَبُونَهَا؟ قَالَ: فَنَزَلَتْ: {لَيْسَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ} الآيَةَ.

रसूलुल्लाह (ﷺ) के कुछ सहाबा शराब पीते हुए फौत हुए, फिर जब : की हुर्मत नाज़िल हुई, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) के सहाबा में से कुछ लोगों ने कहा: हमारे उन साथियों का क्या बनेगा जो इसे पीते हुए फौत हुए हैं? तो यह आयत: "ईमान वाले और नेक आमाल करने वाले लोगों पर उस चीज़ का गुनाह नहीं है जो उन्होंने खा पी लिया।" नाज़िल हुई।

सहीहुल इस्नाद: तख़रीज इस से पहली हदीस में गुज़र चुकी है। अस-सिलसिला अस-सहीहा:3486.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3052 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ العَزِيزِ بْنُ أَبِي رِزْمَةَ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ سِمَاكٍ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ أَرَأَيْتَ الَّذِينَ مَاتُوا وَهُمْ يَشْرَبُونَ الخَمْرَ لَمَّا نَزَلَ تَحْرِيمُ الخَمْرِ، فَنَزَلَتْ: {لَيْسَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جُنَاحٌ فِيمَا طَعِمُوا إِذَا مَا اتَّقَوْا وَآمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ}.

3052 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि कुछ लोगों ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! आप उन लोगों के बारे में बताइए जो शराब पीते हुए फौत हुए हैं। (उन्होंने बात उस वक़्त कही) जब शराब की हुर्मत नाज़िल हुई थी, तो यह आयत: "ईमान वाले और नेक आमाल करने वाले लोगों पर उस चीज़ में कोई गुनाह नहीं है जो उन्होंने (पहले) खा लिया जब आइन्दा तक़्वा इख़्तियार करें, ईमान लायें और अच्छे आमाल करें।" नाज़िल हुई।

सहीह: लिग़ैरिही: अहमद:1/234. हाकिम:4/143. तबरी:11730.अस-सिलसिला अस-सहीहा:3486

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3053 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ مُسْهِرٍ، عَنِ

3053 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि जब यह आयत: "ईमान वाले और नेक आमाल करने वाले

الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ: {لَيْسَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جُنَاحٌ فِيمَا طَعِمُوا إِذَا مَا اتَّقَوْا وَآمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ} قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: أَنْتَ مِنْهُمْ.

लोगों पर उस चीज़ में कोई गुनाह नहीं है जो उन्होंने खाया पिया जब आइन्दा तक़वा इख़्तियार करें, मोमिन रहें और अच्छे आमाल करते रहें।" नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझ से फ़रमाया, "तुम उन में से ही हो।"

मुस्लिम:2459. हाकिम:4/ 143. अबू याला:5064.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3054 - حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ أَبُو حَفْصٍ الفَلَّاسُ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ سَعْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَجُلاً أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنِّي إِذَا أَصَبْتُ اللَّحْمَ انْتَشَرْتُ لِلنِّسَاءِ وَأَخَذَتْنِي شَهْوَتِي، فَحَرَّمْتُ عَلَيَّ اللَّحْمَ. فَأَنْزَلَ اللَّهُ {يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تُحَرِّمُوا طَيِّبَاتِ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلاَ تَعْتَدُوا إِنَّ اللَّهَ لاَ يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ وَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلاَلاً طَيِّبًا}.

3054 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि एक आदमी नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हो कर कहने लगा: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ) मैं जब गोश्त खा लूं तो औरतों से सोहबत के लिए बेचैन हो जाता हूँ और मुझे शहवत आ जाती है इसलिए मैंने अपने आप पर गोश्त हराम कर लिया है तो अल्लाह तआला ने यह आयत : "ऐ ईमान वालो अल्लाह तआला ने जो पाकीज़ा चीजें तुम्हारे लिए हलाल की हैं उन्हें हराम मत करो और (अल्लाह) हद से आगे निकलने वालों को पसंद नहीं करता और जो चीजें अल्लाह तआला ने तुम्हें अता की हैं उन में से हलाल मरगूब खाओ।" (87- 88) नाज़िल फ़रमा दीं।

सहीह: तबरानी:11981.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है और बअ़ज़ ने उस्मान बिन साद की सनद से मुर्सल रिवायत की है इसमें सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) का ज़िक्र नहीं है इसे खालिद अल- हज्ज़ा ने इक्रिमा से मुर्सल रिवायत किया है।

3055 - حَدَّثَنَا أَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَنْصُورُ بْنُ وَرْدَانَ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ

3055 - सय्यदना अली (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि जब आयत: "और अल्लाह के लिऐ लोगों के ज़िम्मे बैतुल्लाह का हज है जो उसकी तरफ़

عَبْدِ الأَعْلَى، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي الْبَخْتَرِيِّ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ: {وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنْ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلاً} قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ، فِي كُلِّ عَامٍ؟ فَسَكَتَ، قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ فِي كُلِّ عَامٍ؟ قَالَ: لاَ، وَلَوْ قُلْتُ نَعَمْ لَوَجَبَتْ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ: {يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءَ إِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ}.

जाने की ताक़त रखता हो।" (आले इमरान:97) नाजिल हुई, तो लोगों ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! क्या हर साल? आप खामोश रहे लोगों ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! क्या हर साल? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "नहीं और अगर मैं कह देता कि हाँ! तो हर साल वाजिब हो जाता।" चुनाँचे अल्लाह तआला ने यह आयत उतार दी, " ऐ ईमान वालो ऐसी बात मत पूछो कि तुम पर ज़ाहिर कर दी जाए तो तुम्हें नागवार हों।" (आयत: 101)

ज़ईफ़: तख़रीज के लिए 814 के तहत देखें।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: सय्यदना अली (رضي الله عنه) के तरीक़ से यह हदीस हसन ग़रीब है नीज इस बारे में अबू हुरैरा और इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

3056 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَعْمَرٍ أَبُو عَبْدِ اللهِ الْبَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي مُوسَى بْنُ أَنَسٍ، قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ، يَقُولُ: قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللهِ مَنْ أَبِي؟ قَالَ أَبُوكَ فُلاَنٌ. فَنَزَلَتْ: {يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءَ إِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ}.

3056 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि एक आदमी ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मेरा बाप कौन ? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम्हारा बाप फुलां शख़्स है।" रावी कहते हैं: फिर यह आयत नाजिल हुई : "ऐ ईमान वालो ऐसी बात मत पूछो कि अगर तुम पर ज़ाहिर कर दी जाए तो तुम्हें नागवार हों।"

बुख़ारी:7295. मुस्लिम:2359. अहमद:3/206.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3057 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي خَالِدٍ، عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي

3057 - सय्यदना अबू बक्र सिद्दीक़ (رضي الله عنه) से रिवायत है कि उन्होंने फ़रमाया, "ऐ लोगो! तुम यह आयत पढ़ते हो "ऐ ईमान वालो! अपनी फ़िक्र करो जब तुम सीधी राह पर चल रहे हो तो गुमराह शख़्स से तुम्हें नुकसान नहीं।"

بَكْرٍ الصِّدِّيقِ، أَنَّهُ قَالَ: يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّكُمْ تَقْرَءُونَ هَذِهِ الآيَةَ {يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنْفُسَكُمْ لاَ يَضُرُّكُمْ مَنْ ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ}، وَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: إِنَّ النَّاسَ إِذَا رَأَوْا ظَالِمًا، فَلَمْ يَأْخُذُوا عَلَى يَدَيْهِ أَوْشَكَ أَنْ يَعُمَّهُمُ اللَّهُ بِعِقَابٍ مِنْهُ.

(आयत: 105) जबकि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आप फ़रमा रहे थे: "लोग जब ज़ालिम को देख कर उसके हाथ न रोकें तो हो सकता है अल्लाह तआला अज़ाब में सबको मुब्तला कर दे।"

सहीह: तख्रीज़ के लिये हदीस 2168 देखें।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और इस हदीस को कई रावियों ने इस्माईल बिन अबी ख़ालिद से इसी तरह मर्फ़ूअ बयान किया है जब बअ़ज़ ने बवास्ता इस्माईल, कैस से अबू बक्र (رضي الله عنه) का कौल ज़िक्र किया है उसे मर्फ़ूअ ज़िक्र नहीं किया।

3058 - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ يَعْقُوبَ الطَّالَقَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عُتْبَةُ بْنُ أَبِي حَكِيمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ جَارِيَةَ اللَّخْمِيُّ، عَنْ أَبِي أُمَيَّةَ الشَّعْبَانِيِّ، قَالَ: أَتَيْتُ أَبَا ثَعْلَبَةَ الخُشَنِيَّ، فَقُلْتُ لَهُ: كَيْفَ تَصْنَعُ بِهَذِهِ الآيَةِ؟ قَالَ: أَيَّةُ آيَةٍ؟ قُلْتُ: قَوْلُهُ تَعَالَى: {يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنْفُسَكُمْ لاَ يَضُرُّكُمْ مَنْ ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ} قَالَ: أَمَا وَاللَّهِ لَقَدْ سَأَلْتَ عَنْهَا خَبِيرًا، سَأَلْتُ عَنْهَا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: بَلْ ائْتَمِرُوا بِالمَعْرُوفِ وَتَنَاهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ، حَتَّى إِذَا رَأَيْتَ شُحًّا مُطَاعًا، وَهَوًى مُتَّبَعًا، وَدُنْيَا مُؤْثَرَةً، وَإِعْجَابَ كُلِّ ذِي رَأْيٍ بِرَأْيِهِ، فَعَلَيْكَ بِخَاصَّةِ نَفْسِكَ وَدَعِ العَوَامَّ، فَإِنَّ مِنْ

3058 - अबू उमय्या शअ़बानी (رحمه الله) कहते हैं मैं अबू सअ़लबा खुशनी (رضي الله عنه) के पास गया मैंने उन से कहा: आप इस आयत के बारे में क्या कहते हैं? उन्होंने फ़रमाया, कौन सी आयत? मैंने कहा: "फ़रमाने बारी तआला: "ऐ ईमान वालो! अपनी फ़िक्र करो जब तुम सीधी राह पर चल रहे हो तो गुमराह शख़्स से तुम्हें नुकसान नहीं।" तो उन्होंने फ़रमाया, "अल्लाह की क़सम! मैंने इसकी बाबत खूब जानने वाले से दर्याफ़्त किया था तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "बल्कि तुम नेकी का हुक्म दो, एक दुसरे को बुराई से रोको, यहाँ तक कि जब तुम ऐसी बखीली देखो जिसकी बात मानी जा रही हो, ऐसी ख़्वाहिश जिसकी पैरवी की जाती हो, ऐसी दुनिया जिसे आख़िरत पर तर्जीह दी जा रही हो और हर अक्ल वाले का अपनी अक्ल को पसंद करना देखो, तो फिर सिर्फ अपनी जान की फ़िक्र करो और अवाम को छोड़ दो,

وَرَائِكُمْ أَيَّامًا الصَّبْرُ فِيهِنَّ مِثْلُ الْقَبْضِ عَلَى الْجَمْرِ، لِلْعَامِلِ فِيهِنَّ مِثْلُ أَجْرِ خَمْسِينَ رَجُلاً يَعْمَلُونَ مِثْلَ عَمَلِكُمْ، قَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ: وَزَادَنِي غَيْرُ عُتْبَةَ، قِيلَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَجْرُ خَمْسِينَ رَجُلاً مِنَّا أَوْ مِنْهُمْ. قَالَ: بَلْ أَجْرُ خَمْسِينَ رَجُلاً مِنْكُمْ.

तुम्हारे आगे ऐसे दिन आ रहे हैं जिन में सब्र करना, किसी अंगारे को पकड़ने की तरह होगा, उन अय्याम में अमल करने वाले को तुम्हारे जैसे आमाल करने वाले पच्चास आदमियों जितना अज्र मिलेगा।" अब्दुल्लाह बिन मुबारक कहते हैं: उत्बा के अलावा बाकी रावियों ने यह इजाफा भी ज़िक्र किया है। कि कहा गया: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! हम में से पच्चास आदमियों जितना अज्र या उन में से ? आप ने फ़रमाया, "नहीं, बल्कि तुम में से पच्चास आदमियों जितना अज्र।"

ज़ईफ़: अबू दाऊद:4341. इब्ने माजह:4014. इब्ने हिब्बान:385. अस-सिलसिला अस-सहीहा:494

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

3059 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ أَحْمَدَ بْنِ أَبِي شُعَيْبٍ الحَرَّانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلَمَةَ الحَرَّانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي النَّضْرِ، عَنْ بَاذَانَ، مَوْلَى أُمِّ هَانِئٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنْ تَمِيمٍ الدَّارِيِّ، فِي هَذِهِ الآيَةِ: {يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ} قَالَ: بَرِئَ مِنْهَا النَّاسُ غَيْرِي وَغَيْرَ عَدِيِّ بْنِ بَدَّاءٍ، وَكَانَا نَصْرَانِيَّيْنِ يَخْتَلِفَانِ إِلَى الشَّامِ قَبْلَ الإِسْلاَمِ، فَأَتَيَا الشَّامَ لِتِجَارَتِهِمَا، وَقَدِمَ عَلَيْهِمَا مَوْلًى لِبَنِي سَهْمٍ، يُقَالُ لَهُ: بُدَيْلُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ

3059 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) से रिवायत है कि तमीम दारी (رضي الله عنه) इस आयत: "ऐ ईमान वालो! तुम्हारे आपस में दो आदमियों का गवाह होना बेहतर है जब कि तुममें से किसी को मौत आने लगे" (आयत: 106) के बारे में फ़रमाते हैं: मेरे और अदी बिन बद्दा के अलावा बाकी लोग इस से बरी रहे, यह दोनों ईसाई थे और इस्लाम कुबूल करने से पहले शाम की तरफ़ आते जाते रहते थे, वह दोनों शाम में अपनी तिजारत की गरज़ से गए और उनके साथ बनू सहम का मौला बुदैल बिन अबी मरियम तिजारत का सामान लेकर गया, उसके पास चांदी का एक प्याला भी था जिसे वह बादशाह को देना चाहता था और वह प्याला उसकी माले तिजारत की बड़ी चीज़ थी,

بِتِجَارَةٍ، وَمَعَهُ جَامٌ مِنْ فِضَّةٍ يُرِيدُ بِهِ الْمَلِكَ وَهُوَ عُظْمُ تِجَارَتِهِ، فَمَرِضَ فَأَوْصَى إِلَيْهِمَا، وَأَمَرَهُمَا أَنْ يُبَلِّغَا مَا تَرَكَ أَهْلَهُ، قَالَ تَمِيمٌ: فَلَمَّا مَاتَ أَخَذْنَا ذَلِكَ الجَامَ فَبِعْنَاهُ بِأَلْفِ دِرْهَمٍ، ثُمَّ اقْتَسَمْنَاهُ أَنَا وَعَدِيُّ بْنُ بَدَّاءٍ، فَلَمَّا قَدِمْنَا إِلَى أَهْلِهِ دَفَعْنَا إِلَيْهِمْ مَا كَانَ مَعَنَا وَفَقَدُوا الجَامَ فَسَأَلُونَا عَنْهُ، فَقُلْنَا مَا تَرَكَ غَيْرَ هَذَا، وَمَا دَفَعَ إِلَيْنَا غَيْرَهُ، قَالَ تَمِيمٌ: فَلَمَّا أَسْلَمْتُ بَعْدَ قُدُومِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَدِينَةَ تَأَثَّمْتُ مِنْ ذَلِكَ، فَأَتَيْتُ أَهْلَهُ فَأَخْبَرْتُهُمْ الخَبَرَ، وَأَدَّيْتُ إِلَيْهِمْ خَمْسَ مِائَةِ دِرْهَمٍ، وَأَخْبَرْتُهُمْ أَنَّ عِنْدَ صَاحِبِي مِثْلَهَا، فَأَتَوْا بِهِ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَسَأَلَهُمُ البَيِّنَةَ، فَلَمْ يَجِدُوا، فَأَمَرَهُمْ أَنْ يَسْتَحْلِفُوهُ بِمَا يَعْظُمُ بِهِ عَلَى أَهْلِ دِينِهِ، فَحَلَفَ فَأَنْزَلَ اللَّهُ: {يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ}، إِلَى قَوْلِهِ: {أَوْ يَخَافُوا أَنْ تُرَدَّ أَيْمَانٌ بَعْدَ أَيْمَانِهِمْ} فَقَامَ عَمْرُو بْنُ العَاصِ، وَرَجُلٌ آخَرُ فَحَلَفَا، فَنُزِعَتِ الخَمْسُ مِائَةِ دِرْهَمٍ مِنْ عَدِيِّ بْنِ بَدَّاءٍ.

वह बीमार हो गया तो उस ने उन दोनों को वसीयत की और उन्हें हुक्म दिया कि उसका माल उसके अहल तक पहुंचा दें।

तमीम कहते हैं: जब वह मर गया तो हम ने वह प्याला लिया और उसे एक हज़ार दिरहम में बेच दिया, फिर उस रक़म को मैं और अदी बिन बद्दा ने तक्सीम कर लिया, जब हम उसके घर वालों के पास पहुंचे तो जो कुछ हमारे पास था हम ने उनके हवाले कर दिया लेकिन उन्हें प्याला न मिला, उन्होंने हम से इस बारे में दर्याफ़्त किया। तो हम ने कहा: उस ने इस के अलावा और कुछ नहीं छोड़ा और न ही हमें और कुछ दिया था।

तमीम (ﷺ) फ़रमाते हैं: रसूलुल्लाह (ﷺ) के मदीना तशरीफ़ लाने के बाद मैंने इस्लाम कुबूल कर लिया तो मुझे उस में गुनाह महसूस होने लगा, मैं उस के घर वालों के पास गया, उन्हें वाक़िया सुनाया और पांच सौ दिरहम उन्हें दे दिए और उन्हें यह भी बता दिया कि मेरे साथी के पास भी इतने ही हैं, वह उसे रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास ले गए तो आप ने उन से सबूत माँगा जो उनके पास नहीं था, तो आप (ﷺ) ने उन्हें हुक्म दिया कि उस से क़सम ले लें जिसे उसके दीन वाले बड़ा समझते हों, उस ने क़सम दे दी, तो अल्लाह तआला ने यह आयत "तुम्हारे आपस में दो गवाहों का होना बेहतर है जब तुम में से किसी को मौत आने लगे" से लेकर" या उन्हें डर हो कि उन से कसमें लेने के बाद क़समें उलटी पड़ जाएँगी।" तक नाज़िल फ़रमाई (आयत: 106- 108) तो अम्र बिन

आस और एक दुसरे आदमी ने खड़े होकर क़सम खाई तो अदी बिन बद्दा से पांच सौ दिरहम ले लिए गए।

ज़ईफुल इस्नाद जिद्दा: तबरी:7/ 115.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रहिमहुल्लाह) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है, और इसकी सनद सहीह नहीं है, अबू नज़र जिसे मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने इस हदीस को रिवायत किया है। मेरे मुताबिक वह मुहम्मद बिन साइब कलबी है जिसकी कुनियत अबू नज़र थी। अहले इल्म इससे हदीस नहीं लेते यह मुफस्सिर भी था।

मैंने मुहम्मद बिन इस्माईल को फ़रमाते हुए सुना: मुहम्मद बिन साइब कलबी की कुनियत अबू नज़र थी। नीज हम सालिम अबू नज़र मदनी का उम्मे हानी के मौला अबू सालेह से रिवायत करना नहीं जानते। नीज इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) से एक और सनद से इस बारे में कुछ इख़्तिसार के साथ मर्वी है।

3060 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، عَنِ ابْنِ أَبِي زَائِدَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي الْقَاسِمِ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: خَرَجَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي سَهْمٍ، مَعَ تَمِيمٍ الدَّارِيِّ وَعَدِيِّ بْنِ بَدَّاءٍ، فَمَاتَ السَّهْمِيُّ بِأَرْضٍ لَيْسَ بِهَا مُسْلِمٌ، فَلَمَّا قَدِمْنَا بِتَرِكَتِهِ فَقَدُوا جَامًا مِنْ فِضَّةٍ مُخَوَّصًا بِالذَّهَبِ، فَأَحْلَفَهُمَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، ثُمَّ وَجَدُوا الْجَامَ بِمَكَّةَ، فَقِيلَ: اشْتَرَيْنَاهُ مِنْ عَدِيٍّ وَتَمِيمٍ، فَقَامَ رَجُلَانِ مِنْ أَوْلِيَاءِ السَّهْمِيِّ، فَحَلَفَا بِاللَّهِ لَشَهَادَتُنَا أَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا، وَأَنَّ الجَامَ لِصَاحِبِهِمْ، قَالَ: وَفِيهِمْ نَزَلَتْ {يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ}.

3060 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि बनू सहम का एक आदमी तमीम दारी और अदी बिन बद्दा के साथ सफ़र पर निकला, फिर वह सहमी एक ऐसे इलाक़े में फौत हो गया जहां कोई मुसलमान नहीं था, जब वह दोनों उसका सामान लेकर आये उसके घर वालों को चांदी का एक प्याला ना मिला जिस में सोना भी लगा हुआ था तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उन दोनों से कसमें लीं, फिर वह प्याला मक्का में मिल गया तो उन्हें बताया गया कि हम ने यह तमीम और अदी से ख़रीदा था, फिर सहमी के वारिसों में से दो आदमियों ने अल्लाह के नाम की क़समें उठाई कि हमारी गवाही इनकी गवाही से ज़्यादा हक़दार है और वह प्याला उनके आदमी का ही था, रावी कहते हैं: उन्हीं के बारे में यह आयत नाज़िल हुई, "ऐ ईमान वालो! तुम्हारे आपस में गवाह का होना"

बुख़ारी:2780. अबू दाऊद:3606. अबू याला:2453.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है,और यह इब्ने अबी ज़ायदा की रिवायत है।

3061 - सय्यदना अम्मार बिन यासिर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "आसमान से रोटी और गोश्त वाला दस्तरख़्वान उतरा, और उन लोगों को हुक्म दिया गया कि न ख़यानत करें और न ही कल के लिए जमा कर के रखें, लेकिन उन्होंने ख़यानत की और अगले दिन के लिए जमा कर के भी रख लिया तो उनकी शक्लें बंदरों और खिंजीरों से बदल दी गई।

ज़ईफ़ुल इस्नाद:अबू याला: 1651.

3061 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ قَزَعَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ حَبِيبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيدٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ خِلَاسِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ عَمَّارِ بْنِ يَاسِرٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أُنْزِلَتِ الْمَائِدَةُ مِنَ السَّمَاءِ خُبْزًا وَلَحْمًا، وَأُمِرُوا أَنْ لاَ يَخُونُوا وَلاَ يَدَّخِرُوا لِغَدٍ، فَخَانُوا وَادَّخَرُوا وَرَفَعُوا لِغَدٍ، فَمُسِخُوا قِرَدَةً وَخَنَازِيرَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है, इसे अबू आसिम और दीगर रावियों ने भी सईद बिन अबी अरूबा से बवास्ता क़तादा, खिलास से अम्मार बिन यासिर (رضي الله عنه) का कौल बयान किया है और हम सिर्फ़ हसन बिन क़ज़आ की रिवायत से इसे मर्फ़ूअ जानते हैं। हमें हुमैद बिन मस्अदा ने भी बवास्ता सुफ़ियान बिन हबीब, सईद बिन अबी अरूबा से इसी तरह हदीस बयान की है वह भी मर्फ़ूअ नहीं है, और यह हसन बिन क़ज़आ की रिवायत से ज़्यादा सहीह है, जब कि मर्फ़ूअ हदीस की कोई असल हमारे इल्म में नहीं है। (ज़ईफ़ है।)

3062 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) बयान करते हैं ईसा (عليه السلام) को उनकी हुज्जत दी गई और यह हुज्जत अल्लाह तआला ने अपने इस फ़रमान में दी: " जब अल्लाह तआला कहेगा: ऐ ईसा बिन मरियम! क्या तुमने लोगों से कहा था कि अल्लाह को छोड़ कर मुझे और मेरी मां को माबूद बना लो" अबू हुरैरा (رضي الله عنه) कहते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "फिर अल्लाह तआला उनके दिल में यह बात डालेगा कि "तु पाक है मेरे लिए किसी तरह भी जेबा न था कि

3062 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ طَاوُوسٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: يُلَقَّى عِيسَى حُجَّتَهُ وَلَقَّاهُ اللَّهُ فِي قَوْلِهِ: {وَإِذْ قَالَ اللَّهُ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ أَأَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأُمِّيَ إِلَهَيْنِ مِنْ دُونِ اللَّهِ} قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَلَقَّاهُ اللَّهُ: {سُبْحَانَكَ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي بِحَقٍّ} الآيَةَ كُلَّهَا.

मैं ऐसी बात कहता जिसके कहने का मुझे कोई हक़ नहीं था, आगे तक सारी आयत। (अल-माइदा: 116)

सहीहुल इस्नाद: निसाई फ़िल कुबरा व तफ्सीरिही: 182. अस-सिलसिला अस-सहीहा:2454.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3063 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ وَهْبٍ، عَنْ حُيَيٍّ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ الحُبُلِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ: آخِرُ سُورَةٍ أُنْزِلَتِ الْمَائِدَةُ وَالْفَتْحُ.

3063 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि सब से आखिर में सूरह माइदा और सूरह फ़तह नाज़िल हुई थीं।

मुस्लिम:3024. हाकिम:2/311.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है, और इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) से मर्वी है कि सब से आखिर में إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللهِ وَالْفَتْحُ. नाजिल हुई थी।

7 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الأَنْعَامِ

7 - तफ़सीर सूरह अनआम!

3064 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ هِشَامٍ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ نَاجِيَةَ بْنِ كَعْبٍ، عَنْ عَلِيٍّ: أَنَّ أَبَا جَهْلٍ، قَالَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّا لاَ نُكَذِّبُكَ، وَلَكِنْ نُكَذِّبُ بِمَا جِئْتَ بِهِ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ: {فَإِنَّهُمْ لاَ يُكَذِّبُونَكَ وَلَكِنَّ الظَّالِمِينَ بِآيَاتِ اللهِ يَجْحَدُونَ}.

3064 - सय्यदना अली (رضي الله عنه) से रिवायत है कि अबू जहल ने नबी (ﷺ) से कहा: हम आप को नहीं झुठलाते बल्कि जो किताब आप लाये हैं उसे झुठलाते हैं, तो अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई: "यह लोग आप को झूठा नहीं कहते लेकिन यह ज़ालिम तो अल्लाह तआला की आयतों का इन्कार करते हैं।" (आयत: 33)

ज़ईफुल इस्नाद:हाकिम; 2/315. हिदायतुर्रूवात:5772.

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं: हमें इस्हाक़ बिन मंसूर ने उन्हें अब्दुर्रहमान बिन महदी ने सुफ़ियान से बवास्ता अबू इस्हाक़, नजीह से बयान किया है कि अबू जहल ने नबी (ﷺ) से कहा। फिर इसी तरह ज़िक्र किया और इसमें अली (رضي الله عنه) का ज़िक्र किया। यह ज़्यादा सहीह है।

Sherkhan
9825 696 131

3065 - सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि जब यह आयत "आप कह दीजिए वही इस पर क़ादिर है कि तुम्हारे ऊपर से अज़ाब भेज दे या तुम्हारे पाँव के नीचे से।" (आयत:65) नाज़िल फ़रमाई, तो नबी (ﷺ) ने कहा: "(ऐ अल्लाह) मैं तेरी ज़ात के साथ पनाह माँगता हूँ।" जब अल्फ़ाज़ "या तुम्हें मुख़्तलिफ़ गिरोह बना कर गुत्थम गुत्था कर दे और तुम्हारे बअ़ज़ (कुछ) को बअ़ज़ (कुछ) की लड़ाई (का मज़ा) चखाए।" नाज़िल हुए तो नबी (ﷺ) ने कहा: "यह दोनों बातें आसान हैं।"

3065 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ، يَقُولُ: لَمَّا نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةَ: {قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَى أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِنْ فَوْقِكُمْ أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ} قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَعُوذُ بِوَجْهِكَ، فَلَمَّا نَزَلَتْ: {أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَيُذِيقَ بَعْضَكُمْ بَأْسَ بَعْضٍ} قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: هَاتَانِ أَهْوَنُ، أَوْ هَاتَانِ أَيْسَرُ.

बुख़ारी:4628. अहमद:3/309.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3066 - सय्यदना साद बिन अबी वक़्क़ास (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने इस आयत: "कह दीजिए वही इस बात पर क़ादिर है कि तुम्हारे ऊपर से अज़ाब भेज दे या तुम्हारे पाँव के नीचे से।" के बारे में फ़रमाया, "आगाह रहो यह काम होने वाला है अभी तक हुआ नहीं है।"

ज़ईफुल इस्नाद:अहमद:1/170. अबू याला:745.

3066 - حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَرَفَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَيَّاشٍ، عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ أَبِي مَرْيَمَ الغَسَّانِيِّ، عَنْ رَاشِدِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِي هَذِهِ الآيَةِ: {قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَى أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِنْ فَوْقِكُمْ أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ} فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: أَمَا إِنَّهَا كَائِنَةٌ وَلَمْ يَأْتِ تَأْوِيلُهَا بَعْدُ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

3067 - सय्यदना अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि जब आयत " वह लोग जो ईमान लाए और अपने ईमान के साथ ज़ुल्म की आमेज़िश नहीं की।" (अन्आम:82) नाज़िल हुई, तो मुसलमानो पर बहुत गिराँ गुज़री, कहने

3067 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ خَشْرَمٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ: {الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا} إِيمَانَهُمْ

بِظُلْمٍ شَقَّ ذَلِكَ عَلَى الْمُسْلِمِينَ، فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ وَأَيُّنَا لاَ يَظْلِمُ نَفْسَهُ. قَالَ: لَيْسَ ذَلِكَ إِنَّمَا هُوَ الشِّرْكُ، أَلَمْ تَسْمَعُوا مَا قَالَ لُقْمَانُ لِابْنِهِ: {يَا بُنَيَّ لاَ تُشْرِكْ بِاللَّهِ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ}.

लगे: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! हम में से कौन है जो अपनी जान पर ज़ुल्म नहीं करता? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "इसका मतलब यह नहीं है। इस से शिर्क मुराद है क्या तुमने वह नहीं सुना जो लुक़मान ने अपने बेटे से कहा था? " ऐ मेरे बेटे अल्लाह के साथ शिर्क न करना बेशक शिर्क बहुत बड़ा ज़ुल्म है।" (लुक़मान: 13)

बुख़ारी:32. मुस्लिम:124. अहमद:1/378.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3068 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ يُوسُفَ، قَالَ: حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ أَبِي هِنْدٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ مَسْرُوقٍ، قَالَ: كُنْتُ مُتَّكِئًا عِنْدَ عَائِشَةَ، فَقَالَتْ: يَا أَبَا عَائِشَةَ، ثَلاَثٌ مَنْ تَكَلَّمَ بِوَاحِدَةٍ مِنْهُنَّ فَقَدْ أَعْظَمَ الْفِرْيَةَ عَلَى اللهِ: مَنْ زَعَمَ أَنَّ مُحَمَّدًا رَأَى رَبَّهُ فَقَدْ أَعْظَمَ الفِرْيَةَ عَلَى اللهِ، وَاللَّهُ يَقُولُ: {لاَ تُدْرِكُهُ الأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الأَبْصَارَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الخَبِيرُ} {وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُكَلِّمَهُ اللَّهُ إِلاَّ وَحْيًا أَوْ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ} وَكُنْتُ مُتَّكِئًا فَجَلَسْتُ، فَقُلْتُ: يَا أُمَّ الْمُؤْمِنِينَ أَنْظِرِينِي وَلاَ تُعْجِلِينِي، أَلَيْسَ يَقُولُ اللَّهُ: {وَلَقَدْ رَآهُ نَزْلَةً أُخْرَى} {وَلَقَدْ رَآهُ بِالأُفُقِ الْمُبِينِ}

3068 - मसरूक़ (رحمه الله) बयान करते हैं कि मैं सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) के पास टेक लगाए बैठा था कि उन्होंने फ़रमाया, ऐ अबू आयशा। तीन बातें ऐसी हैं जिनमें एक बात भी कोई शख़्स कर दे तो उस ने अल्लाह पर बहुत बड़ा झूठ बांधा, जो यह कहे कि मुहम्मद (ﷺ) ने अपने रब को देखा है यक़ीनन उस ने अल्लाह पर बहुत बड़ा झूठ बांधा, क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है: "उसे निगाहें नहीं पातीं, वह सब निगाहों को पाता है और वही निहायत बारीक बीन, सब ख़बर रखने वाला है।" (अल-अन्आम: 103) " और किसी बशर के लिए मुम्किन नहीं कि वह अल्लाह से क़लाम करे मगर वहि के ज़रिए या पर्दे के पीछे से।" (अश-शूरा: 51) (रावी कहते हैं: मैंने टेक लगाई हुई फिर मैं बैठ गया, मैंने कहा: ऐ उम्मुल मोमिनीन। रुकिए मुझे मोहलत दीजिए जल्दी न करें, क्या अल्लाह तआला यह नहीं फ़रमाता कि: "बिलाशुबा यक़ीनन उस ने उसे पार उतरते हुए भी देखा है।" (अन्नज्म: 13) " और बिलाशुबा उस ने उसे रोशन किनारे पर देखा है।" (अत्तक्वीर: 23)

قَالَتْ: أَنَا وَاللَّهِ أَوَّلُ مَنْ سَأَلَ عَنْ هَذَا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّمَا ذَاكَ جِبْرِيلُ، مَا رَأَيْتُهُ فِي الصُّورَةِ الَّتِي خُلِقَ فِيهَا غَيْرَ هَاتَيْنِ الْمَرَّتَيْنِ، رَأَيْتُهُ مُنْهَبِطًا مِنَ السَّمَاءِ سَادًّا عِظَمُ خَلْقِهِ مَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ، وَمَنْ زَعَمَ أَنَّ مُحَمَّدًا كَتَمَ شَيْئًا مِمَّا أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَيْهِ، فَقَدْ أَعْظَمَ الفِرْيَةَ عَلَى اللهِ، يَقُولُ اللَّهُ: {يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ}، وَمَنْ زَعَمَ أَنَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي غَدٍ، فَقَدْ أَعْظَمَ الفِرْيَةَ عَلَى اللهِ، وَاللَّهُ يَقُولُ: {قُلْ لاَ يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ الغَيْبَ إِلاَّ اللَّهُ}.

फ़रमाने लगे: अल्लाह की क़सम। मैंने सब से पहले रसूलुल्लाह (ﷺ) से इस के बारे में सवाल किया था आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "वह तो जिब्रील थे, मैंने उसे उसकी सूरत सिर्फ़ दो मर्तबा देखा है मैंने उसे आसमान से उतरते हुए देखा, उन के जिस्म की बड़ाई ने आसमानों ज़मीन की दर्मियानी जगह को भर लिया था।" और दूसरी बात जिस शख़्स ने यह कहा कि मुहम्मद (ﷺ) ने नाज़िलकर्दा अहकामात में कोई चीज़ छिपा ली है। यक़ीनन उस ने अल्लाह तआला पर बहुत बड़ा झूठ बांधा, क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: "ऐ रसूल उस चीज़ को उम्मत तक पहुँचा दीजिये जो आप की तरफ़ आप के रब की जानिब से नाज़िल की गई है।" (अल माइदा:67) और तीसरी बात जिस ने यह कहा कि आप (ﷺ) कल होने वाले काम को जानते हैं। यक़ीनन उस ने भी अल्लाह तआला पर बहुत बड़ा झूठ बांधा, जब कि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: "कह दीजिए कि अल्लाह के सिवा आसमानों और ज़मीन में जो भी है गैब नहीं जानता।" (अन्नमल:65)

बुख़ारी:3234. मुस्लिम:177. अहमद:6/236.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रहिमहुल्लाह) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और मस्रूक बिन अजदा की कुनियत अबू आयशा है। यह मस्रूक बिन अब्दुर्रहमान हैं दीवान में इनका इसी तरह नाम मज़्कूर है।

3069 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُوسَى البَصْرِيُّ الحَرَشِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا زِيَادُ بْنُ عَبْدِ اللهِ البَكَّائِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَطَاءُ بْنُ السَّائِبِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ،

3069 - अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि कुछ लोग नबी (ﷺ) के पास आकर कहने लगे: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! क्या हम उस चीज़ को खाएं जिसे हम ख़ुद क़त्ल करें और जिसे अल्लाह क़त्ल करे उसे न खाएं? तो अल्लाह तआला ने आयत:

قَالَ: أَتَى أُنَاسٌ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ، أَنَأْكُلُ مَا نَقْتُلُ وَلاَ نَأْكُلُ مَا يَقْتُلُ اللَّهُ؟ فَأَنْزَلَ اللَّهُ: {فَكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللهِ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ بِآيَاتِهِ مُؤْمِنِينَ}، إِلَى قَوْلِهِ: {وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ}.

"पस जिस चीज़ पर अल्लाह के नाम का ज़िक्र किया गया हो उसे खाओ अगर तुम उसकी आयात पर ईमान रखते हो" से लेकर " और अगर तुम लोगों ने उनकी बात मान ली तो तुम भी मुशरिक हो जाओगे।" तक नाज़िल फ़रमाई। (आयत: 121)

सहीह: अबू दाऊद:2819. बैहक़ी:9/240. तबरानी:12295.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। और यह हदीस एक और सनद से भी इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) से इसी तरह मर्वी है। जबकि बअ़ज़ ने इसे अता बिन साइब से बवास्ता सईद बिन जुबैर नबी (صلى الله عليه وسلم) से मुर्सल बयान किया है।

3070 - حَدَّثَنَا الفَضْلُ بْنُ الصَّبَّاحِ البَغْدَادِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، عَنْ دَاوُدَ الأَوْدِيِّ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَنْظُرَ إِلَى الصَّحِيفَةِ الَّتِي عَلَيْهَا خَاتَمُ مُحَمَّدٍ صلى الله عليه وسلم فَلْيَقْرَأْ هَذِهِ الآيَاتِ: {قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ}، الآيَةَ إِلَى قَوْلِهِ، {لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ}.

3070 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं जिसे चाहत हो कि वह उस सहीफे को देखे जिस पर मुहम्मद (صلى الله عليه وسلم) की मोहर हो तो उसे यह आयात पढ़ लेनी चाहिए " कह दीजिए, आओ मैं वह पढ़ाता हूँ जो तुम पर तुम्हारे रब ने हराम किया है।" से लेकर { لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ} तक (आयात : 151- 153)

ज़ईफ़ुल इस्नाद: तबरानी फ़िल औसत: 1208.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

3071 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، عَنِ ابْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنْ عَطِيَّةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي قَوْلِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ {أَوْ يَأْتِيَ بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ} قَالَ: طُلُوعُ الشَّمْسِ مِنْ مَغْرِبِهَا.

3071 - सय्यदना अबू सईद (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (صلى الله عليه وسلم) ने अल्लाह तआला के फ़रमान "या तुम्हारे रब की कोई निशानी आ जाए।" (आयत: 158) के बारे में फ़रमाया, "यह सूरज का मग़रिब से निकलना है।"

सहीह: अहमद:3/31. अबू याला:1353. अब्द बिन हुमैद:902.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। बअ़ज़ ने इसे मर्फ़ूअ ज़िक्र नहीं किया।

3072 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَعْلَى بْنُ عُبَيْدٍ، عَنْ فُضَيْلِ بْنِ غَزْوَانَ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ثَلاَثٌ إِذَا خَرَجْنَ {لاَ يَنْفَعُ نَفْسًا إِيمَانُهَا لَمْ تَكُنْ آمَنَتْ مِنْ قَبْلُ}، الآيَةُ: الدَّجَّالُ، وَالدَّابَّةُ وَطُلُوعُ الشَّمْسِ مِنَ الْمَغْرِبِ أَوْ مِنْ مَغْرِبِهَا.

3072 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "तीन चीजें जब ज़ाहिर हो जायेंगी तो किसी जान को उसका ईमान लाना नफ़ा नहीं देगा, जो पहले ईमान नहीं लाई होगी, (वह चीजें हैं) दज्जाल, जानवर और सूरज का मगरिब से तुलू होना।"

मुस्लिम:158. अहमद:2/445. अबू याला:6170.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और अबू हाज़िम अश्जई कूफी हैं उनका नाम सुलैमान था यह अज्जा अल अश्जइया के आज़ादकर्दा थे।

3073 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: قَالَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ وَقَوْلُهُ الحَقُّ: إِذَا هَمَّ عَبْدِي بِحَسَنَةٍ فَاكْتُبُوهَا لَهُ حَسَنَةً، فَإِنْ عَمِلَهَا فَاكْتُبُوهَا لَهُ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا، وَإِذَا هَمَّ بِسَيِّئَةٍ فَلاَ تَكْتُبُوهَا، فَإِنْ عَمِلَهَا فَاكْتُبُوهَا بِمِثْلِهَا، فَإِنْ تَرَكَهَا، وَرُبَّمَا قَالَ: فَإِنْ لَمْ يَعْمَلْ بِهَا، فَاكْتُبُوهَا لَهُ حَسَنَةً ثُمَّ قَرَأَ: {مَنْ جَاءَ بِالحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ أَمْثَالِهَا}.

3073 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तबारक व तआला फ़रमाते हैं, जबकि उसका फ़रमान बरहक़ है: (फरिश्तो) जब मेरा बन्दा किसी नेकी का इरादा करे तो उसके लिए एक नेकी लिख दो, फिर अगर उस इरादे पर अमल करे तो उसके लिये उस जैसी दस नेकियाँ लिख दो, और जब बुराई का इरादा करे तो तुम मत लिखो फिर अगर वह कर लेता है तो उस जैसी एक बुराई ही लिखो, अगर छोड़ दे।" या फ़रमाया, "कि उस पर अमल न करे तो उसके लिए एक नेकी लिख दो।" फिर आप (ﷺ) ने यह आयत पढ़ी: "जो शख़्स एक नेकी लाया उसके लिए दस गुना अज्र होगा।" (160)

बुख़ारी:7501. मुस्लिम:127. अहमद:2/242.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

Sherkhan
9825 696 131

8 - सूरह आराफ़ की तफ़सीर।

8 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الأَعْرَافِ

3074 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने यह आयत पढ़ी "जब उसका रब पहाड़ के सामने ज़ाहिर हुआ तो उसे रेज़ा रेज़ा कर दिया, हम्माद कहते हैं: इसी तरह सुलैमान ने अपने अंगूठे की नोक अपने दायें उंगली के पोर पर रखी कहने लगे: फिर पहाड़ फट गया" और मूसा (عليه السلام) बेहोश हो कर गिर पड़े।" (आयत: 143)

सहीह: अहमद:3/ 125.

3074 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: قَرَأَ هَذِهِ الآيَةَ {فَلَمَّا تَجَلَّى رَبُّهُ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُ دَكًّا} قَالَ حَمَّادٌ: هَكَذَا، وَأَمْسَكَ سُلَيْمَانُ بِطَرَفِ إِبْهَامِهِ عَلَى أُنْمُلَةِ إِصْبَعِهِ اليُمْنَى قَالَ: فَسَاخَ الجَبَلُ {وَخَرَّ مُوسَى صَعِقًا}.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।हम इसे हम्माद बिन ज़ैद के तरीक़ से ही जानते हैं। हमें अब्दुल वह्हाब वर्राक़ बगदादी ने भी मुआज़ बिन मुआज़ से बवास्ता हम्माद बिन सलमा, साबित से उन्होंने बवास्ता अनस, नबी (ﷺ) से ऐसी ही हदीस बयान की है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3075 - मुस्लिम बिन यसार जुहनी से रिवायत है कि सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब (رضي الله عنه) से इस आयत : "और जब तुम्हारे रब ने आदम के बेटों से उनकी पुश्तों से उनकी औलाद को निकाला उन्हें ख़ुद उनकी जानों पर गवाह बनाया, क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? उन्होंने कहा: क्यों नहीं, हम ने शहादत दी। (ऐसा न हो) कि तुम क़यामत के दिन कहो बेशक हम इस से ग़ाफ़िल थे। (अल-आराफ़: 172) के बारे में दरयाफ़्त किया गया तो उमर बिन ख़त्ताब (رضي الله عنه) ने फ़रमाया, "मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आप से भी इस के बारे में पूछा गया था, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने

3075 - حَدَّثَنَا الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ، عَنِ ابْنِ أَبِي أُنَيْسَةَ، عَنْ عَبْدِ الحَمِيدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ زَيْدِ بْنِ الْخَطَّابِ، عَنْ مُسْلِمِ بْنِ يَسَارٍ الجُهَنِيِّ، أَنَّ عُمَرَ بْنَ الخَطَّابِ، سُئِلَ عَنْ هَذِهِ الآيَةِ {وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِنْ بَنِي آدَمَ مِنْ ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ} وَأَشْهَدَهُمْ عَلَى أَنْفُسِهِمْ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ قَالُوا بَلَى شَهِدْنَا أَنْ تَقُولُوا يَوْمَ القِيَامَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هَذَا غَافِلِينَ، قَالَ عُمَرُ بْنُ

الخطَّاب: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُسْأَلُ عَنْهَا، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ اللَّهَ خَلَقَ آدَمَ، ثُمَّ مَسَحَ ظَهْرَهُ بِيَمِينِهِ، فَأَخْرَجَ مِنْهُ ذُرِّيَّةً، فَقَالَ: خَلَقْتُ هَؤُلَاءِ لِلْجَنَّةِ وَبِعَمَلِ أَهْلِ الجَنَّةِ يَعْمَلُونَ، ثُمَّ مَسَحَ ظَهْرَهُ فَاسْتَخْرَجَ مِنْهُ ذُرِّيَّةً فَقَالَ: خَلَقْتُ هَؤُلَاءِ لِلنَّارِ وَبِعَمَلِ أَهْلِ النَّارِ يَعْمَلُونَ، فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللهِ، فَفِيمَ العَمَلُ؟ قَالَ: فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ اللَّهَ إِذَا خَلَقَ العَبْدَ لِلْجَنَّةِ اسْتَعْمَلَهُ بِعَمَلِ أَهْلِ الجَنَّةِ حَتَّى يَمُوتَ عَلَى عَمَلٍ مِنْ أَعْمَالِ أَهْلِ الجَنَّةِ فَيُدْخِلَهُ اللَّهُ الجَنَّةَ، وَإِذَا خَلَقَ العَبْدَ لِلنَّارِ اسْتَعْمَلَهُ بِعَمَلِ أَهْلِ النَّارِ حَتَّى يَمُوتَ عَلَى عَمَلٍ مِنْ أَعْمَالِ أَهْلِ النَّارِ، فَيُدْخِلَهُ اللَّهُ النَّارَ.

फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने आदम (عليه السلام) को पैदा किया फिर उनकी पुश्त पर हाथ फेर कर उन से उनकी औलाद को निकाला, फिर फ़रमाया, "मैंने इन लोगों को जन्नत के लिए पैदा किया है और जन्नितयों वाले काम करेंगे, तो एक आदमी कहने लगा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! फिर अमल की क्या ज़रूरत है? तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "बेशक अल्लाह तआला जब किसी बन्दे को जन्नत के लिए पैदा करता है तो उस से जन्नती लोगों के कामों जैसे काम लेता है, यहाँ तक कि वह अहले जन्नत के आमाल में से किसी अमल पर फौत हो जाता है, चुनाँचे अल्लाह तआला उसे जन्नत में दाख़िल कर देता है, और जब वह बन्दे को दोज़ख़ के लिए पैदा करता है तो उस से जहन्नमी लोगों के आमाल जैसे काम करवाता है यहाँ तक कि वह अहले दोज़ख के आमाल में से किसी अमल पर मर जाता है तो अल्लाह तआला उसे दोज़ख़ में दाख़िल कर देते हैं।"

ज़ईफ़: अबू दाऊद:4703. अहमद:1/744. मालिक:1873. अस-सिलसिला अस-सहीहा:3071.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है और मुस्लिम बिन यसार ने उमर (رضي الله عنه) से सिमा (सुनना) नहीं किया, जब कि बअ़ज़ लोगों ने इस सनद में मुस्लिम बिन यसार और उमर (رضي الله عنه) के दर्मियान एक मजहूल आदमी का ज़िक्र भी किया है।

3076 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي

3076 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब अल्लाह तआला ने आदम (عليه السلام) को पैदा करके उनकी पुश्त पर हाथ फेरा तो उनकी पुश्त से हर वह जान गिर पड़ी जिसे वह उनकी

هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَمَّا خَلَقَ اللَّهُ آدَمَ مَسَحَ ظَهْرَهُ، فَسَقَطَ مِنْ ظَهْرِهِ كُلُّ نَسَمَةٍ هُوَ خَالِقُهَا مِنْ ذُرِّيَّتِهِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ، وَجَعَلَ بَيْنَ عَيْنَيْ كُلِّ إِنْسَانٍ مِنْهُمْ وَبِيصًا مِنْ نُورٍ، ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى آدَمَ فَقَالَ: أَيْ رَبِّ، مَنْ هَؤُلَاءِ؟ قَالَ: هَؤُلَاءِ ذُرِّيَّتُكَ، فَرَأَى رَجُلاً مِنْهُمْ فَأَعْجَبَهُ وَبِيصُ مَا بَيْنَ عَيْنَيْهِ، فَقَالَ: أَيْ رَبِّ مَنْ هَذَا؟ فَقَالَ: هَذَا رَجُلٌ مِنْ آخِرِ الأُمَمِ مِنْ ذُرِّيَّتِكَ يُقَالُ لَهُ دَاوُدُ فَقَالَ: رَبِّ كَمْ جَعَلْتَ عُمْرَهُ؟ قَالَ: سِتِّينَ سَنَةً، قَالَ: أَيْ رَبِّ، زِدْهُ مِنْ عُمْرِي أَرْبَعِينَ سَنَةً، فَلَمَّا قُضِيَ عُمْرُ آدَمَ جَاءَهُ مَلَكُ الْمَوْتِ، فَقَالَ: أَوَلَمْ يَبْقَ مِنْ عُمْرِي أَرْبَعُونَ سَنَةً؟ قَالَ: أَوَلَمْ تُعْطِهَا ابْنَكَ دَاوُدَ قَالَ: فَجَحَدَ آدَمُ فَجَحَدَتْ ذُرِّيَّتُهُ، وَنُسِّيَ آدَمُ فَنُسِّيَتْ ذُرِّيَّتُهُ، وَخَطِئَ آدَمُ فَخَطِئَتْ ذُرِّيَّتُهُ.

औलाद से क़यामत के दिन तक पैदा करने वाला था, और हर इंसान की दोनों आँखों के दर्मियान नूर की चमक रखी, फिर उन्हें आदम (عليه السلام) के सामने पेश किया तो उन्होंने कहा: " ऐ मेरे रब! यह कौन हैं? अल्लाह तआला ने फ़रमाया, "यह तुम्हारी औलाद हैं। तो उन्होंने उन लोगों में से एक आदमी को देखा जिसकी आँखों के दर्मियान वाली चमक उन्हें बहुत अच्छी लगी, कहने लगे: ऐ मेरे रब ! यह कौन हैं? तो अल्लाह ने कहा यह आखिर उम्मतों में से आप की औलाद में से एक आदमी है इसे दाऊद कहा जाता है, कहने लगे: ऐ मेरे परवरदिगार! तूने इनकी उम्र कितनी बनाई है? फ़रमाया, "साठ साल, कहा ऐ मेरे रब! मेरी उमर में से चालीस साल उसे दे दे, फिर जब आदम (عليه السلام) की उमर पूरी हो गई तो मलकुल मौत उनके पास आया, वह कहने लगे: क्या अभी मेरी उमर के चालीस साल बाकी नहीं? उस फ़रिश्ते ने कहा: वह आप ने अपने बेटे दाऊद को नहीं दे दी थी? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "आदम (عليه السلام) ने इन्कार किया तो उनकी औलाद ने भी इन्कार किया, आदम (عليه السلام) भूले तो उनकी औलाद भी भूली और आदम (عليه السلام) से खता हुई तो उनकी औलाद से भी गलतियाँ हुई।"

सहीह: हाकिम:2/325. अबू याला:6654. हिदायतुर्रूवात:114.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और कई सनदों से बवास्ता अबू हुरैरा (رضي الله عنه) नबी करीम (ﷺ) से मर्वी है।

3077 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ بْنُ عَبْدِ الوَارِثِ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنِ الحَسَنِ، عَنْ سَمُرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: لَمَّا حَمَلَتْ حَوَّاءُ طَافَ بِهَا إِبْلِيسُ وَكَانَ لاَ يَعِيشُ لَهَا وَلَدٌ، فَقَالَ: سَمِّيهِ عَبْدَ الحَارِثِ، فَسَمَّتْهُ عَبْدَ الحَارِثِ، فَعَاشَ، وَكَانَ ذَلِكَ مِنْ وَحْيِ الشَّيْطَانِ وَأَمْرِهِ.

3077 - सय्यदना समुरा बिन जुन्दुब (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब हव्वा हामिला हुई तो इब्लीस उनके पास आकर घूमने लगा और उनका कोई बच्चा ज़िंदा नहीं रहता था, यह इब्लीस कहने लगा: उसका नाम अब्दुल हारिस रखना, चुनाँचे उन्होंने उसका नाम अब्दुल हारिस रख दिया, फिर वह ज़िंदा रहा। और यह शैतान के वस्वसे और उसके हुक्म से था।"

ज़ईफ़: अहमद:5/ 11. हाकिम:2/ 545. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:342.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है हम इसे बवास्ता उमर बिन इब्राहीम, क़तादा से मर्फ़ू जानते हैं जबकि बाज ने इसे अब्दुस्समद से रिवायत करते वक़्त ज़िक्र नहीं किया, उमर बिन इब्राहीम बसरा के रहने वाले थे।

3078 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: لَمَّا خُلِقَ آدَمُ ... الْحَدِيثُ

3078 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब आदम (عليه السلام) को पैदा किया" फिर इसी तरह की हदीस बयान की है।

सहीह: तख़रीज के लिए 3076 के तहत देखें। लेकिन इसका माना तकरार से नहीं है।

9 بَابٌ وَمِنْ سُورَةِ الأَنْفَالِ

9 - तफ़सीर सूरह अन्फ़ाल।

3079 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ عَيَّاشٍ، عَنْ عَاصِمِ ابْنِ بَهْدَلَةَ، عَنْ مُصْعَبِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: لَمَّا كَانَ يَوْمُ بَدْرٍ جِئْتُ بِسَيْفٍ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّ اللَّهَ قَدْ شَفَى صَدْرِي مِنَ الْمُشْرِكِينَ، أَوْ

3079 - मुसअब बिन साद अपने बाप (साद رضي الله عنه) से रिवायत करते हैं कि जब बद्र का दिन था मैं एक तलवार लेकर गया मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! अल्लाह तआला ने मुशरिकों के मामले में मेरे सीने को ठंडा कर दिया है, या ऐसा कोई और जुम्ला बोला। आप यह तलवार मुझे इनायत कर दें तो आप (ﷺ)

نَحْوَ هَذَا، هَبْ لِي هَذَا السَّيْفَ، فَقَالَ: هَذَا لَيْسَ لِي وَلاَ لَكَ فَقُلْتُ: عَسَى أَنْ يُعْطَى هَذَا مَنْ لاَ يُبْلِي بَلاَئِي، فَجَاءَنِي الرَّسُولُ فَقَالَ: إِنَّكَ سَأَلْتَنِي وَلَيسَ لِي، وَإِنَّهُ قَدْ صَارَ لِي وَهُوَ لَكَ، قَالَ: فَنَزَلَتْ: {يَسْأَلُونَكَ عَنِ الأَنْفَالِ} الآيَةَ.

ने फ़रमाया, "यह मेरी है और न तुम्हारी" मैंने कहा हो सकता है यह उसे दे दी जाए जिस ने मेरी जैसी जंग न की हो, फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरे पास तशरीफ़ लाये आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "तुमने मुझ से यह तलवार मांगी थी और उस वक़्त यह मेरी नहीं थी और अब यह मेरी हो गई लेकिन यह तुम्हारी है" रावी कहते हैं: फिर यह आयत नाज़िल हुई थी: "यह आप से ग़नीमातों के बारे में पूछते हैं।" (अन्फ़ाल: 1)

हसन सहीह: अबू दाऊद:2740. मुस्लिम:1748. अहमद:1/178.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और इसे सिमाक बिन हर्ब ने भी मुस्अब बिन साद से इसी तरह रिवायत किया है और इसके बारे में उबादा बिन सामित (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

3080 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ سِمَاكٍ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: لَمَّا فَرَغَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ بَدْرٍ قِيلَ لَهُ: عَلَيْكَ العِيرَ لَيْسَ دُونَهَا شَيْءٌ، قَالَ: فَنَادَاهُ العَبَّاسُ وَهُوَ فِي وَثَاقِهِ: لاَ يَصْلُحُ، وَقَالَ: لأَنَّ اللَّهَ وَعَدَكَ إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ وَقَدْ أَعْطَاكَ مَا وَعَدَكَ، قَالَ: صَدَقْتَ.

3080 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब बद्र की जंग से फ़ारिग हुए तो आप(ﷺ) से कहा गया: तिजारती काफ़िला पकड़ें उसके सामने कोई लड़ने वाला नहीं है, तो अब्बास ने आप(ﷺ) को आवाज़ दी, जब कि वह उस वक़्त ज़ंजीरों में थे। यह सहीह नहीं है और कहने लगे: इसलिए कि अल्लाह तआला ने आप(ﷺ) से दो में से एक चीज़ का वादा किया था जब कि उस ने आप(ﷺ) को वह दे दिया है जो आप(ﷺ) से वादा किया था। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुमने सच कहा"

ज़ईफ़ुल इस्नाद:अहमद:1/228. हाकिम:2/327. अबू याला:2373.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है

3081 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ يُونُسَ اليَمَامِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ بْنُ عَمَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو زُمَيْلٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبَّاسٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ الخَطَّابِ، قَالَ: نَظَرَ نَبِيُّ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى الْمُشْرِكِينَ وَهُمْ أَلْفٌ وَأَصْحَابُهُ ثَلَاثُ مِائَةٍ وَبِضْعَةَ عَشَرَ رَجُلاً، فَاسْتَقْبَلَ نَبِيُّ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ القِبْلَةَ، ثُمَّ مَدَّ يَدَيْهِ وَجَعَلَ يَهْتِفُ بِرَبِّهِ: اللَّهُمَّ أَنْجِزْ لِي مَا وَعَدْتَنِي، اللَّهُمَّ إِنَّكَ إِنْ تُهْلِكْ هَذِهِ العِصَابَةَ مِنْ أَهْلِ الإِسْلَامِ لَا تُعْبَدُ فِي الأَرْضِ، فَمَا زَالَ يَهْتِفُ بِرَبِّهِ، مَادًّا يَدَيْهِ، مُسْتَقْبِلَ القِبْلَةِ حَتَّى سَقَطَ رِدَاؤُهُ مِنْ مَنْكِبَيْهِ، فَأَتَاهُ أَبُو بَكْرٍ فَأَخَذَ رِدَاءَهُ فَأَلْقَاهُ عَلَى مَنْكِبَيْهِ، ثُمَّ التَزَمَهُ مِنْ وَرَائِهِ، فَقَالَ: يَا نَبِيَّ اللهِ كَفَاكَ مُنَاشَدَتَكَ رَبَّكَ، إِنَّهُ سَيُنْجِزُ لَكَ مَا وَعَدَكَ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ: {إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُمْ بِأَلْفٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُرْدِفِينَ} فَأَمَدَّهُمُ اللَّهُ بِالمَلَائِكَةِ.

3081 - सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि अल्लाह के नबी (ﷺ) ने मुश्रिकीन की तरफ़ देखा तो वह एक हज़ार थे जब कि आप(ﷺ) के सहाबा तीन सौ दस से कुछ ऊपर थे तो अल्लाह के नबी (ﷺ) ने किब्ला की तरफ़ मुंह किया, फिर अपने दोनों हाथ फैलाकर अपने रब को पुकारने लगे: ऐ अल्लाह जो वादा तूने मुझ से किया था अता फ़रमा, ऐ अल्लाह अगर तूने इस अहले इस्लाम की जमाअत को हलाक कर दिया तो ज़मीन में तेरी इबादत नहीं की जाएगी" आप(ﷺ) ने अपने हाथ फैलाए, किब्ले की तरफ़ मुंह किए अपने रब को पुकारते रहे, यहाँ तक कि आप(ﷺ) की चादर आप के कन्धों से गिर गई, तो अबू बक्र (رضي الله عنه) आए और उन्होंने आप की चादर पकड़ कर आप के कन्धों पर रखी, फिर पिछली जानिब से आप के साथ चिमट गए कहने लगे: ऐ अल्लाह के नबी(ﷺ)! आप को अपने रब के सामने इतनी अर्ज़ करना ही काफ़ी है वह आप से किया हुआ वादा ज़रूर पूरा करेगा। तो अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी, "जब तुम अपने रब से मदद मांग रहे थे तो उसने तुम्हारी दुआ कुबूल कर ली कि बेशक मैं एक हज़ार फरिश्तों के साथ तुम्हारी मदद करने वाला हूँ जो एक दुसरे के पीछे आने वाले हैं" (अन्फ़ाल:9) चुनाँचे अल्लाह तआला ने फरिश्तों के साथ उनकी मदद फ़रमाई।

मुस्लिम:1763.अबू दाऊद:2690. इब्ने हिब्बान:4793. अहमद:1/30.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रहमतुल्लाह) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है हम इसे बवास्ता इक्रिमा बिन अम्मार, अबू ज़ुमैल के तरीक़ से ही उमर (रज़ियल्लाहु) से जानते हैं, और अबू ज़ुमैल का नाम सिमाक हनफी था नीज यह दिन बद्र का दिन था।

3082 - सय्यदना अबू मूसा (रज़ियल्लाहु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने मुझ पर मेरी उम्मत के लिए दो अमान की चीजें नाज़िल की हैं, (एक) और अल्लाह कभी ऐसा नहीं कि उन्हें अज़ाब दे जब कि तु उन में हो और अल्लाह उन्हें कभी अज़ाब देने वाला नहीं जब कि वह बख्शिश मांगते हों (आयत: 33) (दूसरी) जब मैं दुनिया से चला जाउंगा तो क़यामत के दिन तक उनमें इस्तिग़फ़ार छोड़ जाउंगा।"

ज़ईफुल इस्नाद: तबरानी:9/236.मौकूफन: अहमद:4/393.अस-सिलसिला अज़-ज़ईफ़ा:1690.

3082 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ مُهَاجِرٍ، عَنْ عَبَّادِ بْنِ يُوسُفَ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ بْنِ أَبِي مُوسَى، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَيَّ أَمَانَيْنِ لأُمَّتِي {وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ وَمَا كَانَ اللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ} فَإِذَا مَضَيْتُ تَرَكْتُ فِيهِمُ الاِسْتِغْفَارَ إِلَى يَوْمِ القِيَامَةِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रहमतुल्लाह) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है और इस्माइल बिन इब्राहीम बिन मुहाजिर को हदीस में ज़ईफ़ कहा गया है। (नीज अब्बाद बिन यूसुफ़ मज्हूल है। अबू सुफ़ियान)

3083 - सय्यदना उक़्बा बिन आमिर (रज़ियल्लाहु) से रिवायत है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने मिम्बर पर यह आयत "और उनके मुकाबले के लिए कुव्वत से तैयारी रखो" (आयत:60) पढ़ कर फ़रमाया, "आगाह रहो कुव्वत से मुराद तीरअंदाजी है" यह तीन मर्तबा फ़रमाया, "और फ़रमाया, "आगाह रहो अन्क़रीब अल्लाह तआला तुम्हारे लिए ज़मीन खोलेगा और तुम्हें काम करने की भी ज़रुरत नहीं पड़ेगी तो तुम में से कोई भी शख़्स अपने तीरों के साथ खेलने से आजिज़ न आ जाए।"

मुस्लिम:1917. अबू दाऊद:2514. इब्ने माजह:2813. अहमद:4/156.

3083 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ صَالِحِ بْنِ كَيْسَانَ، عَنْ رَجُلٍ لَمْ يُسَمِّهِ، عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَرَأَ هَذِهِ الآيَةَ عَلَى الْمِنْبَرِ: {وَأَعِدُّوا لَهُمْ مَا اسْتَطَعْتُمْ مِنْ قُوَّةٍ} قَالَ: أَلاَ إِنَّ القُوَّةَ الرَّمْيُ، ثَلاَثَ مَرَّاتٍ، أَلاَ إِنَّ اللَّهَ سَيَفْتَحُ لَكُمُ الأَرْضَ، وَسَتُكْفَوْنَ الْمُؤْنَةَ، فَلاَ يَعْجِزَنَّ أَحَدُكُمْ أَنْ يَلْهُوَ بِأَسْهُمِهِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: बअ़ज़ ने इस हदीस को बावस्ता उसामा बिन ज़ैद, सालेह बिन कैसान से रिवायत किया है जब कि अबू उसामा और दीगर रावियों ने इसे उक़्बा बिन आमिर (ﷺ) से रिवायत किया है, वकीअ की हदीस ज़्यादा सही है क्योंकि सालेह बिन कैसान ने उक़्बा बिन आमिर (ﷺ) को नहीं पाया, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उमर (ﷺ) को पाया है।

3084 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ، عَنْ أَبِي عُبَيْدَةَ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ: لَمَّا كَانَ يَوْمُ بَدْرٍ وَجِيءَ بِالأُسَارَى، قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا تَقُولُونَ فِي هَؤُلاَءِ الأَسَارَى، فَذَكَرَ فِي الحَدِيثِ قِصَّةً، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: لاَ يَنْفَلِتَنَّ مِنْهُمْ أَحَدٌ إِلاَّ بِفِدَاءٍ أَوْ ضَرْبِ عُنُقٍ، فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْعُودٍ: فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِلاَّ سُهَيْلَ ابْنَ بَيْضَاءَ فَإِنِّي قَدْ سَمِعْتُهُ يَذْكُرُ الإِسْلاَمَ قَالَ: فَسَكَتَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ، قَالَ: فَمَا رَأَيْتُنِي فِي يَوْمٍ أَخْوَفَ أَنْ تَقَعَ عَلَيَّ حِجَارَةٌ مِنَ السَّمَاءِ مِنِّي فِي ذَلِكَ اليَوْمِ، حَتَّى قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِلاَّ سُهَيْلَ ابْنَ البَيْضَاءِ، قَالَ: وَنَزَلَ القُرْآنُ بِقَوْلِ عُمَرَ: {مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَكُونَ لَهُ أَسْرَى حَتَّى يُثْخِنَ فِي الأَرْضِ} إِلَى آخِرِ الآيَاتِ.

3084 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (ﷺ) बयान करते हैं कि जब बद्र के दिन क़ैदी लाए गए तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम इन क़ैदियों के बारे में क्या कहते हो? फिर आगे हदीस में एक वाक़िया बयान किया, (इसमें है कि) रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "इन में से कोई भी वापस नहीं जाएगा, सिवाए फिद्ये या गर्दन उतारने के साथ, अब्दुल्लाह बिन मसऊद कहते हैं कि मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! सिवाए सुहैल बिन बैज़ा के, मैंने इसे इस्लाम का तजकिरा करते हुए सुना है, रावी कहते हैं: अल्लाह के रसूल (ﷺ) खामोश हो गए कहते हैं मैंने अपने आप को किसी दिन इस से ज़्यादा खौफ ज़दा नहीं देखा कि कहीं मुझ पर आसमान से पत्थर न गिरने लगें जितना खौफ उस दिन था यहाँ तक कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "सिवाए सुहैल बिन बैज़ा के" कहते हैं: और कुरआन उमर (ﷺ) के कौल के मुताबिक़ उतरा था " कभी किसी नबी के लायक़ नहीं कि उसके पास कैदी रहें यहाँ तक कि वह ज़मीन में खूब खून बहा ले।" (आयत: 67) से आख़िरी आयात तक।

ज़ईफ़: तख़रीज के लिए 1714 के तहत देखें।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है और अबू उबैदा बिन अब्दुल्लाह ने अपने बाप से नहीं सुना।

3085 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرٍو، عَنْ زَائِدَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَمْ تَحِلَّ الغَنَائِمُ لأَحَدٍ سُودِ الرُّءُوسِ مِنْ قَبْلِكُمْ، كَانَتْ تَنْزِلُ نَارٌ مِنَ السَّمَاءِ فَتَأْكُلُهَا قَالَ سُلَيْمَانُ الأَعْمَشُ: فَمَنْ يَقُولُ هَذَا إِلاَّ أَبُو هُرَيْرَةَ، الآنَ، فَلَمَّا كَانَ يَوْمُ بَدْرٍ وَقَعُوا فِي الغَنَائِمِ قَبْلَ أَنْ تَحِلَّ لَهُمْ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: {لَوْلاَ كِتَابٌ مِنَ اللهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيمَا أَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ}.

3085 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया : "ग़नीमतें तुम से पहले किसी काले सर वाले (यानी इंसान) के लिए हलाल नहीं हुईं आसमान से आग उतर कर उसे खा जाती थी।"

सुलैमान आमश कहते हैं: अब यह अबू हुरैरा (ﷺ) के अलावा और कौन कहता है जब बद्र का दिन था लोग ग़नीमतों को हासिल करने में मस्रूफ़ हो गए, उन के लिए हलाल होने से पहले ही। चुनाँचे तो अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई: "अगर अल्लाह की तरफ़ से लिखी हुई बात न होती, जो पहले तै हो चुकी थी तो इसकी वजह से जो तुमने लिया था बहुत बड़ा अज़ाब पहुंचता।" (आयत:68)

सहीह: अबू दाऊद:2/252. तयालिसी:2429. इब्ने अबी शैबा:14/388., 387. अस-सिलसिला अस-सहीहा:2155.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस आमश के तरीक़ से हसन सहीह ग़रीब है।

10 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ التَّوْبَةِ

10 - तफ़सीर सूरह तौबा।

3086 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، وَابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، وَسَهْلُ بْنُ يُوسُفَ، قَالُوا: حَدَّثَنَا عَوْفُ بْنُ أَبِي جَمِيلَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ الفَارِسِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ عَبَّاسٍ، قَالَ: قُلْتُ لِعُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ: مَا حَمَلَكُمْ أَنْ عَمَدْتُمْ إِلَى الأَنْفَالِ وَهِيَ مِنَ المَثَانِي وَإِلَى بَرَاءَةٌ وَهِيَ مِنَ

3086 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (ﷺ) बयान करते हैं कि मैंने उस्मान बिन अफ़्फ़ान (ﷺ) से कहा: आप लोगों को उस तरफ़ जाने पर किस चीज़ ने उभारा कि अन्फ़ाल जो कि मसानी[1] में से है और सूरह बाराआ जो मुईन में से है उन दोनों को मिला दिया और दर्मियान में بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ की सतर नहीं लिखी और तुम लोगों ने इसे सात लंबी सूरतों में रख दिया, इस काम पर आप लोगों को

الْمِئِينَ فَقَرَنْتُمْ بَيْنَهُمَا وَلَمْ تَكْتُبُوا بَيْنَهُمَا سَطْرَ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَوَضَعْتُمُوهَا فِي السَّبْعِ الطُّوَلِ، مَا حَمَلَكُمْ عَلَى ذَلِكَ؟ فَقَالَ عُثْمَانُ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِمَّا يَأْتِي عَلَيْهِ الزَّمَانُ وَهُوَ يُنْزَلُ عَلَيْهِ السُّوَرُ ذَوَاتُ الْعَدَدِ، فَكَانَ إِذَا نَزَلَ عَلَيْهِ الشَّيْءُ دَعَا بَعْضَ مَنْ كَانَ يَكْتُبُ فَيَقُولُ: ضَعُوا هَؤُلَاءِ الآيَاتِ فِي السُّورَةِ الَّتِي يُذْكَرُ فِيهَا كَذَا وَكَذَا وَإِذَا نَزَلَتْ عَلَيْهِ الآيَةَ فَيَقُولُ: ضَعُوا هَذِهِ الآيَةَ فِي السُّورَةِ الَّتِي يُذْكَرُ فِيهَا كَذَا وَكَذَا، وَكَانَتِ الأَنْفَالُ مِنْ أَوَائِلِ مَا نَزَلَتْ بِالْمَدِينَةِ وَكَانَتْ بَرَاءَةٌ مِنْ آخِرِ الْقُرْآنِ وَكَانَتْ قِصَّتُهَا شَبِيهَةً بِقِصَّتِهَا فَظَنَنْتُ أَنَّهَا مِنْهَا، فَقُبِضَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَمْ يُبَيِّنْ لَنَا أَنَّهَا مِنْهَا، فَمِنْ أَجْلِ ذَلِكَ قَرَنْتُ بَيْنَهُمَا وَلَمْ أَكْتُبْ بَيْنَهُمَا سَطْرَ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ، فَوَضَعْتُهَا فِي السَّبْعِ الطُّوَلِ.

किस चीज़ ने रागिब किया? तो उस्मान (رضي الله عنه) ने फ़रमाया, "जब रसूलुल्लाह (ﷺ) मौजूद थे तो आप पर बहुत सी सूरतें नाजिल होती रहीं आप पर जब भी कोई चीज़ नाज़िल होती तो आप किसी लिखने वाले को बुला कर फ़रमाते: इन आयात को इस सूरत में रख दो जिन में फुलां फुलां चीज़ का ज़िक्र है और सूरह अन्फ़ाल मदीना के अन्दर शुरू शुरू में नाज़िल हुई थी और सूरह बरात कुरआन की आख़िरी सूरतों में से है, और इसका उन्वान इस (अन्फ़ाल) के साथ मिलता जुलता था तो मैंने समझा यह इसी सूरत से ही है, फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात हो गई लेकिन आप (ﷺ) ने हमारे लिए वाज़ेह नहीं किया कि यह इसी से है या नहीं इसी लिए मैंने इन दोनों को मिला दिया और दर्मियान में بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ की सतर नहीं लिखी, नीज़ मैंने इसे सात लम्बी सूरतों में रखा।

ज़ईफ़: अबू दाऊद:786. अहमद:1/57. हाकिम:2/221. इब्ने हिब्बान:43.

तौज़ीह: (1) मसानी दो सूरतें है: जो मिईन से छोटी हैं और हुनीन वह सूरतें हैं जिन की आयात सौ या इसके क़रीब के हैं। सूरह तौबा का ही दूसरा नाम बरात है नीज़ यह मदनी सूरत है फ़तहे मक्का के बाद 9 हिज्री में नाज़िल हुई। (अबू सुफ़ियान)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है हम इसे औफ़ के तरीक़ से ही जानते हैं वह बवास्ता यज़ीद फारसी, इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) से रिवायत करते हैं यज़ीद फारसी का शुमार अहले बस्रा के ताबेईन में होता है और यज़ीद बिन अबान रकाशी भी बस्रा के ताबेइन में से है। यह यज़ीद फारसी से छोटे थे और यज़ीद राकाशी सिर्फ अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) से रिवायत करते हैं।

3087 - सुलैमान बिन अम्र बिन अहवस रिवायत करते हैं कि मुझे मेरे बाप ने बयान किया कि वह रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ हज्जतुल विदा में शरीक थे, आप(ﷺ) ने अल्लाह की हम्दो सना की फिर वाज़ो नसीहत करते हुए फ़रमाया, "कौन सा दिन ज़्यादा हुर्मत वाला है? कौन सा दिन ज़्यादा हुर्मत वाला है? कौन सा दिन ज़्यादा हुर्मत वाला है? तो लोगों ने अर्ज़ की ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! हज्जे अकबर का दिन। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम्हारे खून तुम्हारे माल और तुम्हारी इज्ज़तें तुम्हारे ऊपर तुम्हारे इस दिन की इस शहर और इस महीन में हुर्मत की तरह हराम हैं। याद रखो! मुजरिम जुर्म नहीं करता मगर अपनी जान पर ही, और कोई बाप अपनी औलाद पर ज़ुल्म न करे और न ही बेटा अपने वालिद से ज्यादती करे, आगाह रहो! मुसलमान मुसलमान का भाई है, मुसलमान के लिए अपने भाई से वही चीज़ हलाल है जो उसकी अपनी जान से हलाल है, सुन लो दौरे जाहिलियत का हर सूद ख़त्म है तुम्हारे लिए असल माल है न तुम ज़ुल्म करो, न तुम पर ज़ुल्म किया जाए, सिवाए अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब के सूद के, वह सब का सब ख़त्म है, सुनो जाहिलियत में होने वाला हर खून माफ़ है और जाहिलियत का पहला खून जिसे मैं ख़त्म करता हूँ वह हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब का खून है, जिसे बनी लैस में दूध पिलाया गया था, फिर उसे क़बील- ए- हुजैल के लोगों ने क़त्ल कर दिया था, आगाह हो जाओ! औरतों के साथ अच्छे तरीक़े से रहो, यह

3087 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الخَلاَّلُ، قَالَ: حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ عَلِيٍّ الجُعْفِيُّ، عَنْ زَائِدَةَ، عَنْ شَبِيبِ بْنِ غَرْقَدَةَ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ عَمْرِو بْنِ الأَحْوَصِ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، أَنَّهُ شَهِدَ حَجَّةَ الوَدَاعِ مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَحَمِدَ اللَّهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ وَذَكَّرَ وَوَعَظَ ثُمَّ قَالَ: أَيُّ يَوْمٍ أَحْرَمُ، أَيُّ يَوْمٍ أَحْرَمُ، أَيُّ يَوْمٍ أَحْرَمُ؟ قَالَ: فَقَالَ النَّاسُ: يَوْمُ الحَجِّ الأَكْبَرِ يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ: فَإِنَّ دِمَاءَكُمْ وَأَمْوَالَكُمْ وَأَعْرَاضَكُمْ عَلَيْكُمْ حَرَامٌ كَحُرْمَةِ يَوْمِكُمْ هَذَا فِي بَلَدِكُمْ هَذَا فِي شَهْرِكُمْ هَذَا، أَلاَ لاَ يَجْنِي جَانٍ إِلاَّ عَلَى نَفْسِهِ، وَلاَ يَجْنِي وَالِدٌ عَلَى وَلَدِهِ، وَلاَ وَلَدٌ عَلَى وَالِدِهِ، أَلاَ إِنَّ الْمُسْلِمَ أَخُو الْمُسْلِمِ، فَلَيْسَ يَحِلُّ لِمُسْلِمٍ مِنْ أَخِيهِ شَيْءٌ إِلاَّ مَا أَحَلَّ مِنْ نَفْسِهِ، أَلاَ وَإِنَّ كُلَّ رِبًا فِي الجَاهِلِيَّةِ مَوْضُوعٌ، لَكُمْ رُءُوسُ أَمْوَالِكُمْ لاَ تَظْلِمُونَ وَلاَ تُظْلَمُونَ غَيْرَ رِبَا العَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ فَإِنَّهُ مَوْضُوعٌ كُلُّهُ، أَلاَ وَإِنَّ كُلَّ دَمٍ كَانَ فِي الجَاهِلِيَّةِ مَوْضُوعٌ، وَأَوَّلُ دَمٍ وُضِعَ مِنْ دَمِ الْجَاهِلِيَّةِ دَمُ الحَارِثِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، كَانَ مُسْتَرْضَعًا فِي بَنِي

لَيْثٍ فَقَتَلَتْهُ هُذَيْلٌ، أَلاَ وَاسْتَوْصُوا بِالنِّسَاءِ خَيْرًا، فَإِنَّمَا هُنَّ عَوَانٍ عِنْدَكُمْ لَيْسَ تَمْلِكُونَ مِنْهُنَّ شَيْئًا غَيْرَ ذَلِكَ إِلاَّ أَنْ يَأْتِينَ بِفَاحِشَةٍ مُبَيِّنَةٍ فَإِنْ فَعَلْنَ فَاهْجُرُوهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ، وَاضْرِبُوهُنَّ ضَرْبًا غَيْرَ مُبَرِّحٍ، فَإِنْ أَطَعْنَكُمْ فَلاَ تَبْغُوا عَلَيْهِنَّ سَبِيلاً، أَلاَ وَإِنَّ لَكُمْ عَلَى نِسَائِكُمْ حَقًّا، وَلِنِسَائِكُمْ عَلَيْكُمْ حَقًّا، فَأَمَّا حَقُّكُمْ عَلَى نِسَائِكُمْ، فَلاَ يُوطِئْنَ فُرُشَكُمْ مَنْ تَكْرَهُونَ، وَلاَ يَأْذَنَّ فِي بُيُوتِكُمْ لِمَنْ تَكْرَهُونَ، أَلاَ وَإِنَّ حَقَّهُنَّ عَلَيْكُمْ أَنْ تُحْسِنُوا إِلَيْهِنَّ فِي كِسْوَتِهِنَّ وَطَعَامِهِنَّ.

तो तुम्हारे पास कैदी हैं तुम उनसे किसी चीज़ के मालिक नहीं हो सिवाए इस के कि वाज़ेह बुराई करें, फिर अगर यह काम करें तो उन्हें बिस्तरों में अलाहिदा (अलग) कर दो, और उन्हें इस तरह मारो कि हड्डी ना टूटे फिर अगर वह तुम्हारी बात मान लें तो उनको सज़ा देने का रास्ता तलाश न करो, आगाह रहो! तुम्हारे लिए तुम्हारी बीवियों के ज़िम्मे हुक़ूक़ हैं और तुम्हारी बीवियों के साथ तुम्हारे ज़िम्मे हुक़ूक़ हैं, तुम्हारा हक़ तुम्हारी बीवियों पर यह है कि वह तुम्हारे बिस्तरों पर उसको ना आने दें जिसे तुम ना पसंद करते हो और न ही तुम्हारे घरों में उसे आने दें जिसे तुम ना पसंद करते हो, सुनो! तुम्हारे ज़िम्मे उनका हक़ यह है कि उन्हें पहनाने और खिलाने में उन से अच्छाई करो।

हसन: देखिए: (1163)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और इसे अबू अहवस ने भी शोऐब बिन गर्क़द से रिवायत किया है।

3088 - حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ بْنُ عَبْدِ الصَّمَدِ بْنِ عَبْدِ الْوَارِثِ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ الْحَارِثِ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ: سَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ عَنْ يَوْمِ الحَجِّ الأَكْبَرِ فَقَالَ: يَوْمُ النَّحْرِ.

3088 - सय्यदना अली (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से हज्जे अकबर के दिन के बारे में पूछा तो आप ने फ़रमाया, "कुर्बानी का दिन है।"

सहीह: तख़रीज के लिए 957 के तहत देखें।

3089 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ الحَارِثِ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ: يَوْمُ الحَجِّ الأَكْبَرِ يَوْمُ النَّحْرِ

3089 - सय्यदना अली (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं: "हज्जे अकबर का दिन कुर्बानी का दिन है।"

सहीह: देखिए पिछली हदीस।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस मुहम्मद बिन इस्हाक़ की हदीस से ज़्यादा सहीह है, क्योंकि यह हदीस कई तुरूक़ से अबी इस्हाक़ से बवास्ता हारिस, अली (رضي الله عنه) से मौकूफ़न मर्वी है और मुहम्मद बिन इस्हाक़ के अलावा हम किसी को नहीं जानते जिस ने इसे मर्फ़ू रिवायत किया हो। नीज़ शोबा ने इस हदीस को अबू इस्हाक़ से बवास्ता अब्दुल्लाह बिन मुर्रा, हारिस के ज़रिए अली (رضي الله عنه) से मौक़ूफ़ रिवायत किया है।

3090 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَفَّانُ بْنُ مُسْلِمٍ، وَعَبْدُ الصَّمَدِ بْنُ عَبْدِ الْوَارِثِ، قَالاَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: بَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ بِبَرَاءَةٌ مَعَ أَبِي بَكْرٍ، ثُمَّ دَعَاهُ فَقَالَ: لاَ يَنْبَغِي لأَحَدٍ أَنْ يُبَلِّغَ هَذَا إِلاَّ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِي فَدَعَا عَلِيًّا فَأَعْطَاهُ إِيَّاهُ.

3090 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) ने सूरह बरात (के इब्तिदाई कलिमात का ऐलान करने के लिए) अबू बक्र के साथ भेजा फिर उन्हें बुला कर फ़रमाया, "किसी शख़्स के लिए भी लायक़ नहीं है कि इस बात की तब्लीग़ करे सिवाए मेरे अहल के किसी आदमी के, फिर आप(ﷺ) ने अली (رضي الله عنه) को बुलाया उन्हें इस काम पर भेजा।

हसनुल इस्नाद:अहमद:3/ 212. अबू याला:3095.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) के तरीक़ से मर्वी यह हदीस हसन ग़रीब है।

3091 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ سُلَيْمَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبَّادُ بْنُ الْعَوَّامِ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ حُسَيْنٍ، عَنِ الْحَكَمِ بْنِ عُتَيْبَةَ، عَنْ مِقْسَمٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: بَعَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَبَا بَكْرٍ وَأَمَرَهُ أَنْ يُنَادِيَ بِهَؤُلاَءِ الْكَلِمَاتِ، ثُمَّ أَتْبَعَهُ عَلِيًّا، فَبَيْنَا أَبُو بَكْرٍ فِي بَعْضِ الطَّرِيقِ إِذْ سَمِعَ رُغَاءَ نَاقَةِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْقَصْوَاءِ، فَخَرَجَ أَبُو

3091 - सय्यदना इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने अबू बक्र (رضي الله عنه) को रवाना किया और उन्हें हुक्म दिया कि इन बातों का ऐलान करें, फिर उनके पीछे अली (رضي الله عنه) को रवाना कर दिया अबू बक्र (رضي الله عنه) भी रास्ते में ही थे कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की कस्वा नामी ऊँटनी की आवाज़ सुनी तो अबू बक्र (رضي الله عنه) घबरा कर निकले उनका ख़याल था कि अल्लाह के रसूल (ﷺ) हैं, लेकिन वह अली (رضي الله عنه) थे तो उन्होंने उन्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) की लिखी हुई तहरीर दी और अली (رضي الله عنه) को हुक्म दिया इन बातों का

بَكْرٍ فَزِعًا فَظَنَّ أَنَّهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَإِذَا هُوَ عَلِيٌّ، فَدَفَعَ إِلَيْهِ كِتَابَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَمَرَ عَلِيًّا أَنْ يُنَادِيَ بِهَؤُلَاءِ الكَلِمَاتِ فَانْطَلَقَا فَحَجَّا، فَقَامَ عَلِيٌّ أَيَّامَ التَّشْرِيقِ، فَنَادَى: ذِمَّةُ اللهِ وَرَسُولِهِ بَرِيئَةٌ مِنْ كُلِّ مُشْرِكٍ، فَسِيحُوا فِي الأَرْضِ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ، وَلَا يَحُجَّنَّ بَعْدَ العَامِ مُشْرِكٌ، وَلَا يَطُوفَنَّ بِالبَيْتِ عُرْيَانٌ، وَلَا يَدْخُلُ الجَنَّةَ إِلَّا مُؤْمِنٌ. وَكَانَ عَلِيٌّ يُنَادِي، فَإِذَا عَيِيَ قَامَ أَبُو بَكْرٍ فَنَادَى بِهَا.

ऐलान कर दें फिर वह दोनों चले, हज किया फिर अय्यामे तशरीक़ में अली (ؓ) ने खड़े होकर ऐलान किया: अल्लाह और उसके रसूल का ज़िम्मा हर मुशरिक से ख़त्म हो चुका है सो तुम ज़मीन में चार महीने (अम्न व अमान) के साथ फिरो, इस साल के बाद कोई मुशरिक हरगिज़ हज न करे कोई बर्हना शख़्स बैतुल्लाह का तवाफ न करे और जन्नत में सिर्फ़ मोमिन ही दाख़िल होगा, अली (ؓ) ऐलान करते रहे फिर जब वह थक गए तो अबू बक्र (ؓ) खड़े हुए और यह ऐलान किया।

सहीहुल इस्नाद: हाकिम:3/51. बैहक़ी:9/224.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इब्ने अब्बास (ؓ) से मर्वी हदीस इस तरीक़ से हसन ग़रीब है।

3092 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ زَيْدِ بْنِ يُثَيْعٍ، قَالَ: سَأَلْنَا عَلِيًّا، بِأَيِّ شَيْءٍ بُعِثْتَ فِي الحَجَّةِ؟ قَالَ: بُعِثْتُ بِأَرْبَعٍ: أَنْ لَا يَطُوفَ بِالبَيْتِ عُرْيَانٌ، وَمَنْ كَانَ بَيْنَهُ وَبَيْنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَهْدٌ فَهُوَ إِلَى مُدَّتِهِ، وَمَنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ عَهْدٌ فَأَجَلُهُ أَرْبَعَةُ أَشْهُرٍ، وَلَا يَدْخُلُ الجَنَّةَ إِلَّا نَفْسٌ مُؤْمِنَةٌ، وَلَا يَجْتَمِعُ المُشْرِكُونَ وَالمُسْلِمُونَ بَعْدَ عَامِهِمْ هَذَا.

3092 - ज़ैद बिन युसैअ (رحمه الله) कहते हैं हमने अली (ؓ) से पूछा आप को हज में किस चीज़ का हुक्म दे कर भेजा गया था? उन्होंने फ़रमाया, "चार चीजों के साथ मुझे रवाना किया गया था: कोई बर्हना शख़्स बैतुल्लाह का तवाफ़ न करे, जिस शख़्स का नबी (ﷺ) के साथ अहद है वह तो मुद्दत पुरी होने तक रहेगा लेकिन जिस के साथ कोई अहद नहीं है उसकी मोहलत चार महीने है जिसमें सिर्फ मोमिन जान ही जा सकती है और मुश्रिकीन और मुसलमान इस साल के बाद इकट्ठे नहीं होंगे।

सहीह: तख़रीज के लिए 872 के तहत देखें।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और यह सुफ़ियान बिन उययना की अबू इस्हाक़ से बयानकर्दा हदीस है इसे सूफियाना सौरी ने भी अबू इस्हाक़ से उनके किसी साथी के वास्ते के

साथ अली (رضي الله) से रिवायत किया है। नीज़ इस बारे में अबू हुरैरा (رضي الله) से भी हदीस मर्वी है हमें नस्र बिन अली और दीगर मोहद्दिसीन ने भी सुफ़ियान बिन उयय्ना से बवास्ता अबू इस्हाक़, ज़ैद बिन युसैअ (رحمه الله) से अली (رضي الله) की हदीस इसी तरह बयान की है। हमें अली बिन खुश्रम ने भी सुफ़ियान बिन उयय्ना से बवास्ता अबू इस्हाक़, ज़ैद बिन युसैअ (رحمه الله) से अली (رضي الله) की हदीस ऐसे ही बयान की है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इब्ने उयय्ना से दोनों रिवायतें इब्ने उसैअ या इब्ने युसैअ (رحمه الله) से मर्वी हैं। लेकिन सहीह इब्ने युसैअ ही है और शोबा ने बवास्ता अबू इस्हाक़, ज़ैद से इसके अलावा एक और हदीस रिवायत की है लेकिन इसमें इन्हें वहम हुआ है उन्होंने ज़ैद बिन उसैल कहा है जब कि उस पर मुताबअत नहीं की गई।

3093 - सय्यदना अबू सईद (رضي الله) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब तुम किसी ऐसे आदमी को देखो जो मस्जिद में आता जाता हो तो उसके लिए ईमान की गवाही दो क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: "अल्लाह की मस्जिदें तो वही आबाद करता है जिसका अल्लाह तआला और आख़िरत के दिन पर ईमान हो।" (आयत: 18)

ज़ईफ़: तख़रीज के लिए 2617 के तहत देखें। सहीहुत्तर्गीब:203.

3093 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا رِشْدِينُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ الحَارِثِ، عَنْ دَرَّاجٍ، عَنْ أَبِي الهَيْثَمِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا رَأَيْتُمُ الرَّجُلَ يَعْتَادُ الْمَسْجِدَ فَاشْهَدُوا لَهُ بِالإِيمَانِ، قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: {إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسَاجِدَ اللهِ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَاليَوْمِ الآخِرِ}.

वज़ाहत: हमें इब्ने उमर ने, उन्हें अब्दुल्लाह बिन वहब ने अम्र बिन हारिस से उन्होंने दराज से बवास्ता अबू हैसम, अबू सईद (رضي الله) से नबी (ﷺ) की हदीस ऐसी ही बयान की है लेकिन इसमें है कि जो मस्जिद का खयाल रखता हो।"

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है, और अबू हैसम का नाम सुलैमान बिन अम्र बिन अतवारी है यह यतीम थे, इन्होने अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله) के यहाँ परवरिश पाई थी। (ज़ईफ़)

3094 - सय्यदना सौबान (رضي الله) बयान करते हैं कि जब आयत " और वह लोग जो सोने और चांदी का खज़ाना रखते हैं।" (आयत:34) नाज़िल हुई, तो हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ आप के किसी सफ़र में थे, आप(ﷺ) के किसी

3094 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي الجَعْدِ، عَنْ ثَوْبَانَ، قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ {وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ

الذَّهَبَ وَالفِضَّةَ} قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي بَعْضِ أَسْفَارِهِ، فَقَالَ بَعْضُ أَصْحَابِهِ: أُنْزِلَتْ فِي الذَّهَبِ وَالفِضَّةِ، لَوْ عَلِمْنَا أَيُّ الْمَالِ خَيْرٌ فَنَتَّخِذَهُ؟ فَقَالَ: أَفْضَلُهُ لِسَانٌ ذَاكِرٌ، وَقَلْبٌ شَاكِرٌ، وَزَوْجَةٌ مُؤْمِنَةٌ تُعِينُهُ عَلَى إِيمَانِهِ.

सहाबी ने कहा: यह सोने और चांदी के बारे में नाज़िल हुई है, अगर हम जान लें कि कौन सा माल बेहतर है तो वही रखें, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "बेहतरीन माल ज़िक्र करने वाली ज़बान, शुक्र करने वाला दिल और ईमान वाली बीवी है जो उसके ईमान पर उसकी मदद करे।"

सहीह: इब्ने माजह्:1856. अहमद:5/278. सहीहुत्तर्गीब:1499.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है मैंने मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी से पूछा: क्या सालिम बिन अबी जअ़दा ने सौबान (رضي الله عنه) से सिमा किया है? उन्होंने फ़रमाया, नहीं, मैंने कहा: उन्होंने नबी (ﷺ) के किसी सहाबी से सिमा किया है तो उन्होंने फ़रमाया, जाबिर बिन अब्दुल्लाह और अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) से और भी कुछ सहाबा का ज़िक्र किया।

3095 - حَدَّثَنَا الحُسَيْنُ بْنُ يَزِيدَ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ السَّلَامِ بْنُ حَرْبٍ، عَنْ غُطَيْفِ بْنِ أَعْيَنَ، عَنْ مُصْعَبِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ، قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَفِي عُنُقِي صَلِيبٌ مِنْ ذَهَبٍ. فَقَالَ: يَا عَدِيُّ اطْرَحْ عَنْكَ هَذَا الوَثَنَ، وَسَمِعْتُهُ يَقْرَأُ فِي سُورَةِ بَرَاءَةٌ: {اتَّخَذُوا أَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللَّهِ}، قَالَ: أَمَا إِنَّهُمْ لَمْ يَكُونُوا يَعْبُدُونَهُمْ، وَلَكِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا أَحَلُّوا لَهُمْ شَيْئًا اسْتَحَلُّوهُ، وَإِذَا حَرَّمُوا عَلَيْهِمْ شَيْئًا حَرَّمُوهُ.

3095 - सय्यदना अदी बिन हातिम (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैं नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, मेरे गले में सोने की सलीब थी, तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ अदी अपने ऊपर से इस बुत को उतार दो और मैंने आप (ﷺ) को सुना आप पढ़ रहे थे: " उन्होंने अल्लाह को छोड़ कर अपने उलमा और दुर्वेशों को रब बना लिया।" (आयत:31) आप ने फ़रमाया " यह उनकी इबादत नहीं करते थे बल्कि जब वह उनके लिए कोई चीज़ हलाल कहते तो उसे हलाल समझते और जब उन पर कोई चीज़ हराम कर देते तो वह उसे हराम समझते।"

हसन:तबरानी: 17/218. गायतुल मराम:6.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है हम इसे अब्दुस्सलाम बिन हर्ब के तरीक़ से ही जानते हैं और गुतैफ़ बिन आयन फन्ने हदीस में मारूफ नहीं है।

3096 - حَدَّثَنَا زِيَادُ بْنُ أَيُّوبَ البَغْدَادِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَفَّانُ بْنُ مُسْلِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا ثَابِتٌ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ أَبَا بَكْرٍ حَدَّثَهُ، قَالَ: قُلْتُ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَحْنُ فِي الغَارِ: لَوْ أَنَّ أَحَدَهُمْ يَنْظُرُ إِلَى قَدَمَيْهِ لأَبْصَرَنَا تَحْتَ قَدَمَيْهِ، فَقَالَ: يَا أَبَا بَكْرٍ، مَا ظَنُّكَ بِاثْنَيْنِ اللَّهُ ثَالِثُهُمَا.

3096 - सय्यदना अबू बक्र (رضي الله عنه) बयान करते हैं हम ग़ारे सौर में थे कि मैंने नबी (ﷺ) से अर्ज़ किया अगर इन में से किसी ने अपने पाँव की तरफ़ देखा तो वह अपने पाँव के नीचे हमें भी देख लेगा आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "अबू बक्र तुम्हारा उन दो आदमियों के बारे में क्या ख़याल है जिनका तीसरा अल्लाह हो।"

बुख़ारी:3653. मुस्लिम:2381. अहमद:1/4.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है, यह सिर्फ हम्माम की सनद से मर्वी है जिसमें वह अकेला है नीज़ इस हदीस को हिब्बान बिन हिलाल और दीगर रावियों ने भी हम्माम से इसी तरह ही रिवायत किया है।

3097 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: سَمِعْتُ عُمَرَ بْنَ الخَطَّابِ، يَقُولُ: لَمَّا تُوُفِّيَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ دُعِيَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِلصَّلَاةِ عَلَيْهِ، فَقَامَ إِلَيْهِ، فَلَمَّا وَقَفَ عَلَيْهِ يُرِيدُ الصَّلَاةَ تَحَوَّلْتُ حَتَّى قُمْتُ فِي صَدْرِهِ. فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، أَعَلَى عَدُوِّ اللهِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أُبَيٍّ القَائِلِ يَوْمَ كَذَا وَكَذَا كَذَا وَكَذَا؟، يَعُدُّ أَيَّامَهُ، قَالَ: وَرَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَبَسَّمُ،

3097 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) बयान करते हैं मैंने उमर बिन खत्ताब (رضي الله عنه) से सुना वह फ़रमा रहे थे कि जब अब्दुल्लाह बिन उबय मरा तो रसूलुल्लाह (ﷺ) को उसकी नमाज़े जनाज़ा के लिए बुलाया गया, आप (ﷺ) उस के लिए खड़े हुए, चुनाँचे जब आप उसके पास ठहरे, आप का नमाज़ पढ़ाने का इरादा था, मैं गया, यहाँ तक कि आप के सामने खड़े हो कर अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! क्या अल्लाह के दुश्मन अब्दुल्लाह बिन उबय पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ेंगे जिस ने फुलां फुलां दिन यह यह बात कही थी। पुराने दिन शुमार करने लगे और रसूलुल्लाह (ﷺ) मुस्कुराते रहे, यहाँ तक कि जब मैंने बहुत ज़्यादा ज़ोर दिया तो आप ने फ़रमाया, ऐ उमर पीछे हट जाओ मुझे इख़्तियार दिया गया था मैंने जनाज़ा पढ़ने को इख़्तियार किया मुझ से कहा गया है

حَتَّى إِذَا أَكْثَرْتُ عَلَيْهِ قَالَ: أَخِّرْ عَنِّي يَا عُمَرُ إِنِّي قَدْ خُيِّرْتُ فَاخْتَرْتُ، قَدْ قِيلَ لِي: {اسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لاَ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ إِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ} لَوْ أَعْلَمُ أَنِّي لَوْ زِدْتُ عَلَى السَّبْعِينَ غُفِرَ لَهُ لَزِدْتُ، قَالَ: ثُمَّ صَلَّى عَلَيْهِ وَمَشَى مَعَهُ، فَقَامَ عَلَى قَبْرِهِ حَتَّى فُرِغَ مِنْهُ، قَالَ: فَعُجِبَ لِي وَجُرْأَتِي عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَاللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، فَوَاللَّهِ مَا كَانَ إِلاَّ يَسِيرًا حَتَّى نَزَلَتْ هَاتَانِ الآيَتَانِ: {وَلاَ تُصَلِّ عَلَى أَحَدٍ مِنْهُمْ مَاتَ أَبَدًا وَلاَ تَقُمْ عَلَى قَبْرِهِ} إِلَى آخِرِ الآيَةِ، قَالَ: فَمَا صَلَّى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعْدَهُ عَلَى مُنَافِقٍ وَلاَ قَامَ عَلَى قَبْرِهِ حَتَّى قَبَضَهُ اللَّهُ.

"आप इनके लिए बख़्शिश की दुआ करें या न करें, अगर आप इन के लिए सत्तर मर्तबा भी बख़्शिश की दुआ करे, अल्लाह तआला इन्हें हरगिज़ नहीं बख़्शेगा।" (आयत:80) अगर मुझे इल्म हो कि मैं सत्तर मर्तबा से ज़्यादा पढ़ दूं तो उसे बख़्श दिया जाएगा मैं उस से भी ज़्यादा दफ़ा पढ़ूँ, रावी कहते हैं: फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और उसके जनाज़े के लिए साथ चले, फिर फ़ारिग होने तक उसकी क़ब्र पर खड़े रहे, मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) पर अपनी जुर्अत करने पर तअज्जुब है हालांकि अल्लाह और उसके रसूल खूब जानते थे, अल्लाह की क़सम! फिर थोड़ा वक़्त ही गुजरा था कि यह दो आयात नाज़िल हुई, "उन में कोई मर जाए तो आप हरगिज़ उनकी नमाज़े जनाज़ा न पढ़ें और न ही उसकी क़ब्र पर खड़े हों।" (आयत:84) के इख़्तिताम तक, कहते हैं: फिर इसके बाद नबी (ﷺ) ने किसी मुनाफ़िक़ की नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ी और न ही अपनी वफ़ात तक किसी मुनाफ़िक़ की क़ब्र पर खड़े हुए।

बुख़ारी:1366. निसाई:1966. अहमद:1/ 16.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है।

3098 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا نَافِعٌ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: جَاءَ عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ أُبَيٍّ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ مَاتَ

3098 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उबय रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आए जब उनका बाप अब्दुल्लाह बिन उबय मरा था, कहने लगे: आप मुझे अपनी क़मीस दें जिस में उसे कफ़न दे दूं, और आप उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ कर उस के लिए बख़्शिश की दुआ कर दीजिए,

أَبُوهُ فَقَالَ: أَعْطِنِي قَمِيصَكَ أُكَفِّنْهُ فِيهِ، وَصَلِّ عَلَيْهِ، وَاسْتَغْفِرْ لَهُ، فَأَعْطَاهُ قَمِيصَهُ وَقَالَ: إِذَا فَرَغْتُمْ فَآذِنُونِي، فَلَمَّا أَرَادَ أَنْ يُصَلِّيَ جَذَبَهُ عُمَرُ وَقَالَ: أَلَيْسَ قَدْ نَهَى اللَّهُ أَنْ تُصَلِّيَ عَلَى الْمُنَافِقِينَ؟ فَقَالَ: أَنَا بَيْنَ خِيرَتَيْنِ {اسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لاَ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ} فَصَلَّى عَلَيْهِ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ: {وَلاَ تُصَلِّ عَلَى أَحَدٍ مِنْهُمْ مَاتَ أَبَدًا وَلاَ تَقُمْ عَلَى قَبْرِهِ} فَتَرَكَ الصَّلاَةَ عَلَيْهِمْ.

तो आप (ﷺ) ने अपनी क़मीस दे दी और फ़रमाया, "जब तुम कफ़न से फ़ारिग हो जाओ तो मुझे बता देना" फिर जब आप ने उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ने का इरादा किया तो उमर (رضی الله عنه) ने आप के कपड़े को खींचा और अर्ज़ किया क्या अल्लाह तआला ने आप (ﷺ) को मुनाफ़िकों की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने से मना नहीं किया? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "मुझे दो चीजों का इख़्तियार है।" उनके लिए बख़्शिश की दुआ करें या न करें।" (आयत:80) फिर आप(ﷺ) ने उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी तो अल्लाह तआला ने यह हुक्म उतार दिया: "उन में कोई मर जाए तो आप हरगिज़ उनकी नमाज़े जनाज़ा न पढ़ें और न ही उसकी क़ब्र पर खड़े हों।" (आयत:84) फिर आप(ﷺ) ने उन पर नमाज़ पढ़ना छोड़ दी।

बुख़ारी:1269. मुस्लिम:2400. इब्ने माजह:1523. निसाई:1900.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3099 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ أَبِي أَنَسٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، أَنَّهُ قَالَ: تَمَارَى رَجُلاَنِ فِي الْمَسْجِدِ الَّذِي أُسِّسَ عَلَى التَّقْوَى مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ، فَقَالَ رَجُلٌ: هُوَ مَسْجِدُ قُبَاءَ، وَقَالَ الآخَرُ: هُوَ مَسْجِدُ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: هُوَ مَسْجِدِي هَذَا.

3099 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (رضی الله عنه) बयान करते हैं कि दो आदमियों ने उस मस्जिद के बारे में तकरार की जिस की बुनियाद पहले दिन से ही तक़्वा पर रखी गई थी, एक आदमी ने कहा: वह मस्जिदे क़ुबा है और दूसरा कहने लगा: वह रसूलुल्लाह (ﷺ) की मस्जिद है तो अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़रमाया, "वह मेरी यही मस्जिद है।"

मुस्लिम:1398. निसाई:698. अहमद:3/89.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इमरान बिन अबू अनस के तरीक़ से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है और यह हदीस एक और सनद से भी अबू सईद (رضي الله عنه) से मर्वी है इसे उनैस बिन अबी यह्या ने अपने बाप के ज़रिए अबू सईद (رضي الله عنه) से रिवायत किया है।

3100 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ العَلَاءِ أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ هِشَامٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ الحَارِثِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ أَبِي مَيْمُونَةَ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ فِي أَهْلِ قُبَاءَ {فِيهِ رِجَالٌ يُحِبُّونَ أَنْ يَتَطَهَّرُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِينَ} قَالَ: كَانُوا يَسْتَنْجُونَ بِالمَاءِ، فَنَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ فِيهِمْ.

3100 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "यह आयत: "इसमें कुछ लोग हैं जो पाकीज़ा रहना पसंद करते हैं और अल्लाह तआला पाक रहने वालों को पसंद करता है" (आयत: 108) कुबा वालों के बारे में नाजिल हुई" आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "यह लोग पानी के साथ इस्तिंजा करते हैं तो यह आयत उनके मुताल्लिक़ नाज़िल हुई है।"

सहीह: अबू दाऊद:44. इब्ने माजह:357.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस इस सनद से ग़रीब है। नीज़ इस बारे में अबू अय्यूब, अनस बिन मालिक और मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन सलाम (رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है।

3101 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي الخَلِيلِ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ: سَمِعْتُ رَجُلاً يَسْتَغْفِرُ لِأَبَوَيْهِ وَهُمَا مُشْرِكَانِ، فَقُلْتُ لَهُ: أَتَسْتَغْفِرُ لِأَبَوَيْكَ وَهُمَا مُشْرِكَانِ؟ فَقَالَ: أَوَلَيْسَ اسْتَغْفَرَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ وَهُوَ مُشْرِكٌ، فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَنَزَلَتْ: {مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ}.

3101 - सय्यदना अली (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैंने एक आदमी को सुना वह मुशरिक मां बाप के लिए मग़्फ़िरत की दुआ कर रहा था। मैंने उससे कहा: तुम अपने मुशरिक वालिदैन के लिए इस्तिग़फ़ार कर रहे हो? तो वह कहने लगा: " क्या इब्राहीम (عليه السلام) ने अपने बाप के लिए बख्शिश की दुआ नहीं की थी? हालांकि वह भी मुश्रिक था। मैंने नबी (ﷺ) से इस बात का तज़किरा किया तो आयत: "नबी और दुसरे मोमिनों को जायज़ नहीं कि वह मुश्रिकीन के लिए मग़फिरत की दुआ करें।" (आयत: 113) नाजिल हुई।

सहीह: निसाई:2036. अह्कामुल जनाइज़:123. अहमद:1/99. हाकिम:2/335.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है। नीज़ इस बारे में सईद बिन मुसय्यब भी अपने बाप से रिवायत करते हैं।

3102 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: لَمْ أَتَخَلَّفْ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي غَزْوَةٍ غَزَاهَا حَتَّى كَانَتْ غَزْوَةُ تَبُوكَ إِلاَّ بَدْرًا، وَلَمْ يُعَاتِبِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَحَدًا تَخَلَّفَ عَنْ بَدْرٍ، إِنَّمَا خَرَجَ يُرِيدُ العِيرَ فَخَرَجَتْ قُرَيْشٌ مُغِيثِينَ لِعِيرِهِمْ فَالتَقَوْا عَنْ غَيْرِ مَوْعِدٍ كَمَا قَالَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ، وَلَعَمْرِي إِنَّ أَشْرَفَ مَشَاهِدِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي النَّاسِ لَبَدْرٌ، وَمَا أُحِبُّ أَنِّي كُنْتُ شَهِدْتُهَا، مَكَانَ بَيْعَتِي لَيْلَةَ العَقَبَةِ حَيْثُ تَوَاثَقْنَا عَلَى الإِسْلاَمِ، ثُمَّ لَمْ أَتَخَلَّفْ بَعْدُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى كَانَتْ غَزْوَةُ تَبُوكَ، وَهِيَ آخِرُ غَزْوَةٍ غَزَاهَا، وَآذَنَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ النَّاسَ بِالرَّحِيلِ، فَذَكَرَ الحَدِيثَ بِطُولِهِ، قَالَ: فَانْطَلَقْتُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَإِذَا هُوَ جَالِسٌ فِي الْمَسْجِدِ وَحَوْلَهُ الْمُسْلِمُونَ وَهُوَ يَسْتَنِيرُ

3102 - अब्दुर्रहमान बिन काब बिन मालिक अपने बाप से रिवायत करते हैं (काब बिन मालिक ने कहा) मैं किसी जंग में रसूलुल्लाह (ﷺ) से पीछे नहीं रहा जो जंग भी आप(ﷺ) ने की, सिवाए बद्र के, यहाँ तक कि गज्व-ए-तबूक आ गया, और नबी (ﷺ) ने बद्र से पीछे रहने वाले किसी शख़्स को नहीं डांटा था, आप तो तिजारती क़ाफ़िले पर हमले की गरज़ से निकले थे, लेकिन कुरैशी अपने क़ाफ़िले की मदद के लिए निकल पड़े, तो बगैर वादा मुठभेड़ हो गई, जैसा कि अल्लाह अज्ज़ व जल्ल ने भी बयान फ़रमाया है, अल्लाह की क़सम! लोगों के नज़दीक अल्लाह के रसूल (ﷺ) के मारकों में सब से बेहतरीन मारका बद्र है और मुझे यह नहीं पसंद कि अक़बा की रात वाली बैअत के मुक़ाबले में मुझे बद्र में शिरकत का मौक़ा मिलता जब हम ने इस्लाम पर अहदो पैमान किए थे। फिर इस जंगे बद्र के बाद मैं नबी (ﷺ) से पीछे नहीं रहा यहाँ तक कि ग़ज़्व-ए- तबूक आ गया और यह आप (ﷺ) की आख़िरी जंग थी, और नबी ने लोगों को कूच करने का हुक्म दिया। फिर लम्बी हदीस बयान करने के बाद कहते हैं। मैं नबी (ﷺ) के पास गया आप(ﷺ) मस्जिद में बैठे हुए थे, आप के इर्द गिर्द मुसलमान थे, आप (ﷺ) का चेहरा चाँद की तरह चमक रहा था, और जब भी आपको खुशी होती तो आप का चेहरा चमक जाता था, मैं भी आकर आप के

كَاسْتِنَارَةِ الْقَمَرِ، وَكَانَ إِذَا سُرَّ بِالأَمْرِ اسْتَنَارَ، فَجِئْتُ فَجَلَسْتُ بَيْنَ يَدَيْهِ فَقَالَ: أَبْشِرْ يَا كَعْبُ بْنَ مَالِكٍ بِخَيْرِ يَوْمٍ أَتَى عَلَيْكَ مُنْذُ وَلَدَتْكَ أُمُّكَ، فَقُلْتُ: يَا نَبِيَّ اللهِ، أَمِنْ عِنْدِ اللهِ أَمْ مِنْ عِنْدِكَ؟ قَالَ: بَلْ مِنْ عِنْدِ اللهِ ثُمَّ تَلاَ هَؤُلاَءِ الآيَاتِ: {لَقَدْ تَابَ اللَّهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِينَ وَالأَنْصَارِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيغُ قُلُوبُ فَرِيقٍ مِنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ إِنَّهُ بِهِمْ رَءُوفٌ رَحِيمٌ} قَالَ: وَفِينَا أُنْزِلَتْ أَيْضًا: {اتَّقُوا اللَّهَ وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ} قَالَ: قُلْتُ: يَا نَبِيَّ اللهِ، إِنَّ مِنْ تَوْبَتِي أَنْ لاَ أُحَدِّثَ إِلاَّ صِدْقًا، وَأَنْ أَنْخَلِعَ مِنْ مَالِي كُلِّهِ صَدَقَةً إِلَى اللهِ وَإِلَى رَسُولِهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَمْسِكْ عَلَيْكَ بَعْضَ مَالِكَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكَ، فَقُلْتُ: فَإِنِّي أُمْسِكُ سَهْمِيَ الَّذِي بِخَيْبَرَ، قَالَ: فَمَا أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيَّ نِعْمَةً بَعْدَ الإِسْلاَمِ أَعْظَمَ فِي نَفْسِي مِنْ صِدْقِي رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ صَدَقْتُهُ أَنَا وَصَاحِبَايَ، وَلاَ نَكُونُ كَذَبْنَا فَهَلَكْنَا كَمَا هَلَكُوا، وَإِنِّي لأَرْجُو أَنْ لاَ يَكُونَ اللَّهُ أَبْلَى

सामने बैठ गया, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ काब बिन मालिक इस भलाई के साथ खुश हो जाओ कि तुम्हारी पैदाइश से आज तक ऐसी ख़ुशी नहीं मिली होगी" मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! क्या यह अल्लाह की तरफ़ से है या आप की तरफ़ से? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "बल्कि अल्लाह की तरफ़ से? आप (ﷺ) ने इन आयात की तिलावत फ़रमाई "अल्लाह तआला ने नबी के हाल पर तवज्जोह फ़रमाई और मुहाजिरीन व अंसार के हाल पर भी जिन्होंने ऐसी तंगी के वक़्त पैगम्बर का साथ दिया इस के बाद कि इन में से एक गिरोह के दिलों में तज़ल्जुल हो चला था फिर अल्लाह ने उनके हाल पर तवज्जोह फ़रमाई बिला शुब्हा अल्लाह तआला सब से ज़्यादा शफीक़ और मेहरबान है।(117) यहाँ तक कि पढ़ते- पढ़ते आप وان الله هو التواب الرحيم (आयत: 118) तक पहुंचे। कहते हैं इसी तरह हमारे बारे में यह भी नाज़िल हुई: अल्लाह से डरो और सच्चों के साथी बनो।" (119) काब कहते हैं: मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी(ﷺ)! मेरी तौबा की कुबूलियत की वजह से यह अहद भी है कि मैं सिर्फ़ सच बोलूंगा, और मैं अपने सारे माल को अल्लाह और रसूल की तरफ़ सदक़ा करके उस से अलाहिदा(अलग) होता हूँ, तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "अपना कुछ माल अपने पास रख लो यह तुम्हारे लिए बेहतर है" मैंने कहा: फिर मैं अपना खैबर का हिस्सा रख लेता हूँ, कहते हैं इस्लाम के बाद अल्लाह ने मुझ पर

أَحَدًا فِي الصِّدْقِ مِثْلَ الَّذِي أَبْلَانِي مَا تَعَمَّدْتُ لِكَذْبَةٍ بَعْدُ، وَإِنِّي لأَرْجُو أَنْ يَحْفَظَنِي اللَّهُ فِيمَا بَقِيَ.

कोई इन्आम नहीं किया जो मेरे दिल में रसूलुल्लाह (ﷺ) से सच बोलने से बड़ा हो जब मैंने आप को सच-सच बता दिया और मेरे दो साथियों (हिलाल बिन उमय्या और मुरारा बिन रबीअ (رضي الله عنه)) ने भी, हम ने झूठ नहीं बोला वरना हम भी उन मुनाफ़िक़ों की तरह हलाक हो जाते, और मुझे यक़ीन है कि सच्चाई की वजह से अल्लाह तआला ने किसी को इतना नहीं आज़माया होगा जितना मुझे आज़माया, उस (दिन) के बाद मैंने झूठ का सोचा भी नहीं, और मुझे उम्मीद है कि बाक़ी ज़िंदगी में भी अल्लाह महफ़ूज़ रखेगा।

बुख़ारी:4418. मुस्लिम:2769. अबू दाऊद:2605. निसाई:3823, 3824.

वज़ाहत: यह हदीस ज़ोहरी से इसके अलावा एक और सनद से भी मर्वी है, इसमें अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन काब बिन मालिक से उन के बाप के ज़रिए काब (رضي الله عنه) से मर्वी होने का ज़िक्र है, इस के अलावा भी ज़िक्र किया गया है। नीज़ यूनुस बिन यज़ीद ने इस हदीस को ज़ोहरी से रिवायत किया है कि अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन काब बिन मालिक रिवायत करते हैं कि उनके बाप ने काब बिन मालिक (رضي الله عنه) से हदीस बयान की है।

3103 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُبَيْدِ بْنِ السَّبَّاقِ، أَنَّ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ، حَدَّثَهُ قَالَ: بَعَثَ إِلَيَّ أَبُو بَكْرٍ الصِّدِّيقُ مَقْتَلَ أَهْلِ الْيَمَامَةِ فَإِذَا عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ عِنْدَهُ فَقَالَ: إِنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ قَدْ أَتَانِي فَقَالَ: إِنَّ الْقَتْلَ قَدْ اسْتَحَرَّ بِقُرَّاءِ الْقُرْآنِ يَوْمَ الْيَمَامَةِ،

3103 - सय्यदना ज़ैद बिन साबित (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि जब जंगे यमामा हुई तो अबू बक्र (رضي الله عنه) ने मुझे बुलाया उमर बिन ख़त्ताब (رضي الله عنه) भी उनके पास थे वह फ़रमाने लगे: उमर ने आकर मुझ से कहा है कि यमामा के दिन कुर्राए कुरआन का क़त्ले आम हुआ है, और मुझे डर है कि जंगों में ऐसे ही कुर्राए कुरआन शहीद होते रहे तो कुरआन का बहुत सारा हिस्सा जाता रहेगा, मेरा ख़याल यह है की आप कुरआन को जमा करने का हुक्म दें, अबू बक्र

وَإِنِّي لأَخْشَى أَنْ يَسْتَحِرَّ الْقَتْلُ بِالْقُرَّاءِ فِي الْمَوَاطِنِ كُلِّهَا فَيَذْهَبَ قُرْآنٌ كَثِيرٌ، وَإِنِّي أَرَى أَنْ تَأْمُرَ بِجَمْعِ الْقُرْآنِ، قَالَ أَبُو بَكْرٍ لِعُمَرَ: كَيْفَ أَفْعَلُ شَيْئًا لَمْ يَفْعَلْهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ فَقَالَ عُمَرُ: هُوَ وَاللَّهِ خَيْرٌ، فَلَمْ يَزَلْ يُرَاجِعُنِي فِي ذَلِكَ حَتَّى شَرَحَ اللَّهُ صَدْرِي لِلَّذِي شَرَحَ لَهُ صَدْرَ عُمَرَ، وَرَأَيْتُ فِيهِ الَّذِي رَأَى، قَالَ زَيْدٌ: قَالَ أَبُو بَكْرٍ: إِنَّكَ شَابٌّ عَاقِلٌ لاَ نَتَّهِمُكَ، قَدْ كُنْتَ تَكْتُبُ لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْوَحْيَ فَتَتَبَّعِ الْقُرْآنَ، قَالَ: فَوَاللَّهِ لَوْ كَلَّفُونِي نَقْلَ جَبَلٍ مِنَ الْجِبَالِ مَا كَانَ أَثْقَلَ عَلَيَّ مِنْ ذَلِكَ، قَالَ: قُلْتُ: كَيْفَ تَفْعَلُونَ شَيْئًا لَمْ يَفْعَلْهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: هُوَ وَاللَّهِ خَيْرٌ، فَلَمْ يَزَلْ يُرَاجِعُنِي فِي ذَلِكَ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ حَتَّى شَرَحَ اللَّهُ صَدْرِي لِلَّذِي شَرَحَ لَهُ صَدْرَهُمَا: صَدْرَ أَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ فَتَتَبَّعْتُ الْقُرْآنَ أَجْمَعُهُ مِنَ الرِّقَاعِ وَالعُسُبِ وَاللِّخَافِ، يَعْنِي الْحِجَارَةَ الرِّقَاقَ، وَصُدُورِ الرِّجَالِ، فَوَجَدْتُ آخِرَ سُورَةِ بَرَاءَةٌ مَعَ خُزَيْمَةَ بْنِ ثَابِتٍ {لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ أَنْفُسِكُمْ عَزِيزٌ

(رضي الله عنه) ने उमर (رضي الله عنه) से कहा: मैं वह काम कैसे कर सकता हूँ? जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नहीं किया। तो उमर (رضي الله عنه) कहने लगे: अल्लाह की क़सम! यही बेहतर है। यह मुझसे बार बार कहते रहे यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने मेरे सीने को भी इस बात के लिए खोल दिया जिसके लिए उमर के सीने को खोला था और मेरी भी इस बारे में वही राय हो गई जो उनकी राय थी।

ज़ैद कहते हैं अबू बक्र (رضي الله عنه) ने फ़रमाया, "तुम एक अक़्लमंद नौजवान हो हम तुम्हें झूठा भी नहीं समझते, तुम रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिए वहि लिखते रहे हो सो तुम ही कुरआन की आयात को तलाश करो, कहते हैं अल्लाह की क़सम! अगर वह मुझे पहाड़ों में से किसी पहाड़ को मुन्तकिल करने का हुक्म देते तो मुझे इस काम से मुश्किल नहीं था। मैंने कहा: आप लोग वह काम कैसे कर सकते हो जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नहीं किया? तो अबू बक्र कहने लगे: अल्लाह की क़सम यही बेहतर है, इस बारे में अबू बक्र और उमर (رضي الله عنه) मुझे बार बार कहते रहे यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने मेरे सीने को भी इस काम के लिए खोल दिया जिसके लिए अबू बक्र और उमर (رضي الله عنه) के सीने को खोला था। फिर मैंने कुरआन की आयात को तलाश किया मैं उसे चमड़े के टुकड़ों, ख़ुजूर की शाख़ों[1] लखाफ़ यानी नर्म पत्थरों और लोगों के सीनों से जमा करता था, फिर मुझे सूरह बरात की आख़िरी आयात खुजैमा अंसारी से मिलीं

عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ}.

"तुम्हारे पास एक ऐसे पैगम्बर तशरीफ़ लाये हैं जो तुम्हारी जिंस से हैं, जिन्हें तुम्हारी तक्लीफ़ निहायत गिराँ गुज़रती है, जो तुम्हारी मंफ़अत के बड़े ख़्वहिशमन्द रहते हैं, ईमान वालों के साथ बड़े शफीक़ और मेहरबान हैं, फिर भी अगर रुगर्दानी करें तो आप कह दीजिए कि मेरे लिए अल्लाह ही काफी है उसके सिवा कोई माबूद नहीं मैंने उसी पर भरोसा किया और वह बड़े अर्श का मालिक है।" (अत्तौबा: 128- 129)

बुख़ारी:4769. अहमद: 1/ 10. तयालिसी:3.

तौज़ीह: العُسُب : ख़ुजूर की वह शाख जिस से पत्ते उतार लिए गए हों, (अल-मोजमुल औसत,प; 711) الرِّقَاع: टुकड़ों को कहा जाता है इस से मुराद चमड़े के टुकड़े हैं जिन पर अहदे नबवी में कुरआन की आयात लिखी जाती थीं।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह है।

3104 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ حُذَيْفَةَ قَدِمَ عَلَى عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ، وَكَانَ يُغَازِي أَهْلَ الشَّامِ فِي فَتْحِ أَرْمِينِيَةَ وَأَذْرَبِيجَانَ مَعَ أَهْلِ العِرَاقِ، فَرَأَى حُذَيْفَةُ اخْتِلاَفَهُمْ فِي الْقُرْآنِ، فَقَالَ لِعُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ، أَدْرِكْ هَذِهِ الأُمَّةَ قَبْلَ أَنْ يَخْتَلِفُوا فِي الكِتَابِ كَمَا اخْتَلَفَتِ اليَهُودُ وَالنَّصَارَى، فَأَرْسَلَ إِلَى حَفْصَةَ أَنْ أَرْسِلِي إِلَيْنَا بِالصُّحُفِ نَنْسَخُهَا فِي

3104 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) से रिवायत है कि हुज़ैफा (رضي الله عنه) सय्यदना उस्मान बिन अफ्फ़ान (رضي الله عنه) के पास आए, और वह अहले इराक़ के साथ मिल कर आर्मीनिया और आज़र बाईजान की फुतूहात के सिलसिले में अहले शाम से जंग करते रहे थे वहाँ हुज़ैफा ने कुरआन की किरअत में उन लोगों के इख़्तिलाफ़ को देखा तो उस्मान बिन अफ़्फ़ान से कहने लगे: ऐ अमीरुल मोमिनीन! इस उम्मत की ख़बर लीजिये इससे पहले कि यह भी किताबुल्लाह में ऐसे ही इख़्तिलाफ़ करने लगें जैसे यहूदियों और ईसाइयों ने इख़्तिलाफ़ किया था, तो उन्होंने सय्यदा हफ्सा (رضي الله عنها) को पैगाम भेजा कि हमें कुरआन के नुसख़े भेज दें हम उन्हें मसाहिफ़ में लिख कर वापस भेज देंगे, तो सय्यदा हफ्सा

الْمَصَاحِفِ ثُمَّ نَرُدُّهَا إِلَيْكِ، فَأَرْسَلَتْ حَفْصَةُ إِلَى عُثْمَانَ بِالصُّحُفِ، فَأَرْسَلَ عُثْمَانُ إِلَى زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ وَسَعِيدِ بْنِ الْعَاصِ وَعَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ هِشَامٍ وَعَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ أَنِ انْسَخُوا الصُّحُفَ فِي الْمَصَاحِفِ،وَقَالَ لِلرَّهْطِ الْقُرَشِيِّينَ الثَّلاَثَةِ: مَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ أَنْتُمْ وَزَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ فَاكْتُبُوهُ بِلِسَانِ قُرَيْشٍ، فَإِنَّمَا نَزَلَ بِلِسَانِهِمْ، حَتَّى نَسَخُوا الصُّحُفَ فِي الْمَصَاحِفِ، بَعَثَ عُثْمَانُ إِلَى كُلِّ أُفُقٍ بِمُصْحَفٍ مِنْ تِلْكَ الْمَصَاحِفِ الَّتِي نَسَخُوا قَالَ الزُّهْرِيُّ: وَحَدَّثَنِي خَارِجَةُ بْنُ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ، أَنَّ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ، قَالَ: فَقَدْتُ آيَةً مِنْ سُورَةِ الأَحْزَابِ كُنْتُ أَسْمَعُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقْرَؤُهَا {مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللَّهَ عَلَيْهِ فَمِنْهُمْ مَنْ قَضَى نَحْبَهُ وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْتَظِرُ} فَالتَمَسْتُهَا فَوَجَدْتُهَا مَعَ خُزَيْمَةَ بْنِ ثَابِتٍ أَوْ أَبِي خُزَيْمَةَ فَأَلْحَقْتُهَا فِي سُورَتِهَا قَالَ الزُّهْرِيُّ: فَاخْتَلَفُوا يَوْمَئِذٍ فِي التَّابُوتِ وَالتَّابُوهِ، فَقَالَ الْقُرَشِيُّونَ: التَّابُوتُ، وَقَالَ زَيْدٌ: التَّابُوهُ فَرُفِعَ اخْتِلاَفُهُمْ إِلَى عُثْمَانَ، فَقَالَ:

(ﷺ) ने वह नुस्ख़े उस्मान बिन अफ़्फ़ान (ﷺ) को भेज दिए, फिर उस्मान ने ज़ैद बिन साबित, सईद बिन आस, अब्दुर्रहमान बिन हारिस बिन हिशाम और अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (ﷺ) को पैग़ाम भेजा कि इन नुस्ख़ों को मसाहिफ़ में लिखें और तीनों कुरैशियों को कहा कि जिस आयत के बारे में तुम्हारा और ज़ैद बिन साबित का इख़्तिलाफ़ हो जाए तो उसे कुरैश की ज़बान में लिखना, क्योंकि कुरआन (कुरैश) की ज़बान में नाज़िल हुआ है। यहाँ तक कि जब उन्होंने मसाहिफ़ लिख लिए, तो उस्मान (ﷺ) ने उन मसाहिफ़ में से हर एक मुल्क की तरफ़ मुस्हफ़ भेजा जो उन्होंने लिखे थे।

जोहरी कहते हैं मुझे खारिजा बिन ज़ैद बिन साबित (ﷺ) ने बताया कि ज़ैद बिन साबित (ﷺ) फ़रमाते हैं: मुझे सूरह अहज़ाब की एक आयत न मिली जो मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को पढ़ते हुए सुना था " मोमिनों में से कुछ लोग ऐसे हैं जिन्होंने अल्लाह से किया हुआ अपना वादा सच कर दिखाया कुछ ने अपना अहद निभा दिया और कुछ इन्तिज़ार में हैं" (अल-अहज़ाब: 23) फिर मैंने इसे तलाश किया तो यह मुझे खुजैमा बिन साबित या अबू खुजैमा से मिली तो मैंने उसे उसकी सूरत में मिला दिया।

ज़ोहरी कहते हैं: उस दिन उन लोगों का लफ्ज़े तातूब और ताबूह में इख़्तिलाफ हुआ, कुरैशियों ने कहा ताबूत है ज़ैद बिन साबित कहने लगे: ताबूह है, यह इख़्तिलाफ़ सय्यदना उसमान

اكْتُبُوهُ التَّابُوتُ فَإِنَّهُ نَزَلَ بِلِسَانِ قُرَيْشٍ.

قَالَ الزُّهْرِيُّ: فَأَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ، أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ مَسْعُودٍ، كَرِهَ لِزَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ نَسْخَ الْمَصَاحِفِ وَقَالَ: يَا مَعْشَرَ الْمُسْلِمِينَ أُعْزَلُ عَنْ نَسْخِ كِتَابَةِ الْمُصْحَفِ وَيَتَوَلَّاهَا رَجُلٌ وَاللَّهِ لَقَدْ أَسْلَمْتُ وَإِنَّهُ لَفِي صُلْبِ رَجُلٍ كَافِرٍ، يُرِيدُ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ، وَلِذَلِكَ قَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْعُودٍ: يَا أَهْلَ الْعِرَاقِ اكْتُمُوا الْمَصَاحِفَ الَّتِي عِنْدَكُمْ وَغُلُّوهَا فَإِنَّ اللَّهَ يَقُولُ: {وَمَنْ يَغْلُلْ يَأْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ} فَالْقُوا اللَّهَ بِالْمَصَاحِفِ قَالَ الزُّهْرِيُّ: فَبَلَغَنِي أَنَّ ذَلِكَ كَرِهَهُ مِنْ مَقَالَةِ ابْنِ مَسْعُودٍ رِجَالٌ مِنْ أَفَاضِلِ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

(ﷺ) के पास पहुंचा तो उन्होंने फ़रमाया, "इसे अत्ताबूत" ही लिखो क्योंकि यह कुरआन कुरैश की ज़बान में नाजिल हुआ है। ज़ोहरी फ़रमाते हैं: मुझे उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उत्बा ने बताया कि सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) ने ज़ैद बिन साबित (رضي الله عنه) के मसाहिफ़ लिखने को ना पसंद किया और फ़रमाने लगे: ऐ मुसलमानों की जमाअत मुझे मुस्हफ़ की किताबत से दूर रखा गया और यह काम ऐसे आदमी को दिया गया कि अल्लाह की क़सम! जब मैं मुसलमान हुआ था तो वह एक काफ़िर की पुश्त में था। इस से मुराद ज़ैद बिन साबित थे, और इसलिए अब्दुल्लाह बिन मसऊद कहा करते थे ऐ अहले इराक़ इन मसाहिफ़ को छिपा लो जो तुम्हारे पास हैं और उन्हें बंद रखो, क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: "जो शख़्स छिपाएगा वह क़यामत के दिन अपनी छिपाई हुई चीज़ लेकर आएगा।" (आले इमरान: 161) तो तुम अल्लाह तआला से इन मसाहिफ़ के साथ मिलोगे। ज़ोहरी फ़रमाते हैं: मुझे यह बात भी पहुंची है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के जलीलुल क़द्र सहाबा ने इब्ने मसऊद (رضي الله عنه) की इस बात को ना पसंद किया था।

बुख़ारी:4987. अहमद:5/ 188. अब्दुर्रज्जाक़:15568.

तौज़ीह: इमाम ज़ोहरी के ताबूत वाले कौल से आगे का आख़िर तक बयान सहीह बुख़ारी में नहीं है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह है। और यह ज़ोहरी की रिवायत है हम इसे उनके तरीक़ से ही जानते हैं।

11 - तफ़सीर सूरह यूनुस।

11 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ يُونُسَ

3105 - सय्यदना सुहैब (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने अल्लाह तआला के फ़रमान **"जिन लोगों ने नेकी की उन के लिए अच्छाई ही है और कुछ मजीद भी"** (आयत:26) के बारे में फ़रमाया, "जब जन्नत वाले जन्नत में चले जाएँगे तो एक ऐलान करने वाला आवाज़ देगा: तुम्हारे लिए अल्लाह के पास एक वादा भी है और वह चाहता है कि उसे पूरा कर दे, वह (जन्नत वाले) कहेंगे: क्या उसने हमारे चेहरों को सफ़ेद कर के हमें जहन्नम से निजात और जन्नत का दाखिला नहीं दिया? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "फिर पर्दा हटा दिया जाएगा, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह की क़सम! अल्लाह तआला ने उन्हें अपने चेहरे के दीदार से बढ़ कर कोई चीज़ अता नहीं की होगी।"

3105 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ الْبُنَانِيِّ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنْ صُهَيْبٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي قَوْلِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ: {لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَى وَزِيَادَةٌ} قَالَ: إِذَا دَخَلَ أَهْلُ الْجَنَّةِ الْجَنَّةَ نَادَى مُنَادٍ: إِنَّ لَكُمْ عِنْدَ اللهِ مَوْعِدًا يُرِيدُ أَنْ يُنْجِزَكُمُوهُ، قَالُوا: أَلَمْ يُبَيِّضْ وُجُوهَنَا وَيُنْجِنَا مِنَ النَّارِ وَيُدْخِلْنَا الْجَنَّةَ؟ قَالَ: فَيُكْشَفُ الْحِجَابُ قَالَ: فَوَاللَّهِ مَا أَعْطَاهُمُ اللَّهُ شَيْئًا أَحَبَّ إِلَيْهِمْ مِنَ النَّظَرِ إِلَيْهِ.

सहीह: तख़रीज के लिए 2252 के तहत देखें।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : हम्माद बिन सलमा की हदीस को बहुत से रावियों ने इसी तरह ही हम्माद बिन सलमा से मर्फ़ू रिवायत किया है। जब कि सुलैमान बिन मुग़ीरा ने यह हदीस साबित से अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला के कौल की सूरत में रिवायत की है इसमें सुहैब (رضي الله عنه) के नबी (ﷺ) से रिवायत करने का ज़िक्र नहीं किया।

3106 - अता बिन यसार (رحمه الله) मिस्र के एक शख़्स से रिवायत करते हैं कि मैंने सय्यदना अबू दर्दा (رضي الله عنه) से इस आयत: **"उनके लिए दुनिया की ज़िंदगी में खुश ख़बरी है"** (यूनुस:64) के बारे में सवाल किया तो उन्होंने फ़रमाया, "जब से मैंने इस बारे में रसूलुल्लाह (ﷺ) से दरयाफ़्त किया है मुझ से किसी ने नहीं पूछा आप (ﷺ)

3106 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ ابْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ رَجُلٍ، مِنْ أَهْلِ مِصْرَ قَالَ: سَأَلْتُ أَبَا الدَّرْدَاءِ، عَنْ هَذِهِ الآيَةِ {لَهُمُ الْبُشْرَى فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا} قَالَ: مَا سَأَلَنِي

عَنْهَا أَحَدٌ مُنْذُ سَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْهَا فَقَالَ: مَا سَأَلَنِي عَنْهَا أَحَدٌ غَيْرُكَ مُنْذُ أُنْزِلَتْ، فَهِيَ الرُّؤْيَا الصَّالِحَةُ يَرَاهَا الْمُسْلِمُ أَوْ تُرَى لَهُ.

ने भी फ़रमाया था: " जब से नाज़िल हुई है तुम्हारे अलावा किसी और ने इस बारे में नहीं पूछा, यह अच्छा ख़्वाब है जिसे मुसलमान देखे या उसे दिखाया जाए।"

सहीह: तख़रीज के लिए 2273 के तहत देखें।

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं: हमें इब्ने अबी उमर ने बवस्ता सुफ़ियान, अब्दुल अज़ीज़ बिन रूफ़ैअ से उन्होंने अबू सालेह सम्मान से बवास्ता अता बिन यसार, मिस्र के एक आदमी से अबू दर्दा (رضي الله عنه) की हदीस ऐसे ही बयान की है।

हमें अहमद बिन अब्दा ज़बी ने भी हम्माद बिन ज़ैद से उन्होंने आसिम बिन बह्दला से बवास्ता अबू सालेह, सय्यदना अबू दर्दा (رضي الله عنه) से नबी (صلى الله عليه وسلم) की हदीस इसी तरह बयान की है इसमें अता बिन यसार का ज़िक्र नहीं है। नीज इस बारे में उबादा बिन सामित (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

3107 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الحَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ يُوسُفَ بْنِ مِهْرَانَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَمَّا أَغْرَقَ اللَّهُ فِرْعَوْنَ قَالَ: {آمَنْتُ أَنَّهُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ الَّذِي آمَنَتْ بِهِ بَنُو إِسْرَائِيلَ} فَقَالَ جِبْرِيلُ: يَا مُحَمَّدُ فَلَوْ رَأَيْتَنِي وَأَنَا آخُذُ مِنْ حَالِ البَحْرِ فَأَدُسُّهُ فِي فِيهِ مَخَافَةَ أَنْ تُدْرِكَهُ الرَّحْمَةُ.

3107 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (صلى الله عليه وسلم) ने फ़रमाया, "जब अल्लाह तआला ने फ़िरऔन को गर्क़ किया तो वह कहने लगा: मैं भी ईमान लाया कि कोई सच्चा माबूद नहीं मगर वही ज़ात जिस पर बनू इस्राईल ईमान लाये हैं, जिब्रील (عليه السلام) ने कहा: ऐ मुहम्मद! काश आप मुझे देखते जिस वक़्त मैं समन्दर का कीचड़ पकड़ कर उस के मुंह में ठूंस रहा था इस डर से कि कहीं उसे रहमते इलाही न मिल जाए।"

सहीह लिगैरिही: अहमद: 1/245. तयालिसी:2693. अब्द बिन हुमैद:664. अस-सिलसिला अस-सहीहा:2015.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन है।

3108 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى الصَّنْعَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الحَارِثِ،

3108 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (صلى الله عليه وسلم) ने बताया कि जिब्रील (عليه السلام) फ़िरऔन के मुंह में इस

قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَدِيُّ بْنُ ثَابِتٍ، وَعَطَاءُ بْنُ السَّائِبِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، ذَكَرَ أَحَدُهُمَا، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ ذَكَرَ أَنَّ جِبْرِيلَ جَعَلَ يَدُسُّ فِي فِي فِرْعَوْنَ الطِّينَ خَشْيَةَ أَنْ يَقُولَ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ، فَيَرْحَمَهُ اللَّهُ، أَوْ خَشْيَةَ أَنْ يَرْحَمَهُ اللَّهُ.

बात के डर से मिट्टी डालने लगे कि कहीं वह لاَ إِلَٰهَ إِلاَّ اللّٰهُ न कह दे फिर अल्लाह उस पर रहमते कर दे या यह कहा कि इस बात के डर से अल्लाह उस पर रहम न कर दे।

सहीहुल इस्नाद:अहमद:1/240. तयालिसी:2618. हाकिम:2/240. अस-सिलसिला अस-सहीहा:2015.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है।

12 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ هُودٍ

12 - तफ़सीर सूरह हूद।

3109 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ يَعْلَى بْنِ عَطَاءٍ، عَنْ وَكِيعِ بْنِ حُدُسٍ، عَنْ عَمِّهِ أَبِي رَزِينٍ، قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، أَيْنَ كَانَ رَبُّنَا قَبْلَ أَنْ يَخْلُقَ خَلْقَهُ؟ قَالَ: كَانَ فِي عَمَاءٍ مَا تَحْتَهُ هَوَاءٌ وَمَا فَوْقَهُ هَوَاءٌ، وَخَلَقَ عَرْشَهُ عَلَى الْمَاءِ قَالَ أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ: قَالَ يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ: الْعَمَاءُ: أَيْ لَيْسَ مَعَهُ شَيْءٌ.

3109 - सय्यदना अबू रज़ीन (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! हमारा परवरदिगार कायनात को पैदा करने से पहले कहाँ था? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "वह अमा[1] में था उसके नीचे कोई चीज़ नहीं थी और उसके ऊपर भी कोई चीज़ नहीं थी और उस ने अपना अर्श पानी पर बनाया था।"

ज़ईफ़: इब्ने माजह:182. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफ़ा:5320. अहमद: 4/11. तयालिसी:1093.

तौज़ीह: अमा: बादल को भी कहा जाता है और हारून बिन यज़ीद (رحمه الله) ने कहा है कि ऐसी चीज़ जिस के साथ कुछ न हो यह भी हो सकता है कि सिर्फ़ बादल का ज़िक्र है जिस के साथ और कुछ नहीं था। (वल्लाहु तआला आलम)

वज़ाहत: अहमद बिन मुनीअ ने ज़िक्र किया है कि यज़ीद बिन हारून कहते हैं: अमा वह चीज़ होती है जिसके साथ कुछ न हो।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : हम्माद बिन सलमा, वकीअ बिन हुदस ही कहते हैं जबकि शोबा, अबू

अवाना और हुसैम ने वकीअ बिन उदस कहा है और यही ज़्यादा सहीह है नीज़ अबू रज़ीन का नाम लकीत बिन आमिर है और यह हदीस हसन है।

3110 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنْ بُرَيْدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ اللَّهَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى يُمْلِي، وَرُبَّمَا قَالَ: يُمْهِلُ، لِلظَّالِمِ حَتَّى إِذَا أَخَذَهُ لَمْ يُفْلِتْهُ، ثُمَّ قَرَأَ: {وَكَذَلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ القُرَى} الآيَةَ.

3110 - सय्यदना अबू मूसा (رضي الله) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला ज़ालिम को ढील देता है।" कभी रावी ने यह कहा है कि उसे मोहलत देता है यहाँ तक कि जब उसे पकड़ता है तो उसे छोड़ता नहीं" फिर आप(ﷺ) ने यह आयत पढ़ी: " तेरे रब की पकड़ का यही तरीक़ा है जब वह बस्तियों के रहने वाले ज़ालिमों को पकड़ता है।" (आयत: 102)

बुख़ारी:4686. मुस्लिम:2583. इब्ने माजह:4018. इब्ने हिब्बान :5175.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन ग़रीब है और अबू उसामा ने भी यज़ीद से इसी तरह يملي :" (ढील देता है) के अल्फ़ाज़ से रिवायत की है।

हमें इब्राहीम बिन सईद जौहरी ने उसामा से वह कहते हैं: हमें यज़ीद बिन अब्दुल्लाह बिन अबी बुर्दा ने अपने दादा अबू बुर्दा से बवास्ता अबू मूसा (رضي الله) नबी (ﷺ) से इसी तरह रिवायत की है, उन्होंने बग़ैर शक يملي :" का लफ्ज़ ही बोला है।

3111 - حَدَّثَنَا بُنْدَارٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ العَقَدِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ سُفْيَانَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنْ عُمَرَ بْنِ الخَطَّابِ، قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةَ {فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَسَعِيدٌ} سَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ: يَا نَبِيَّ اللهِ، فَعَلَى مَا نَعْمَلُ؟ عَلَى شَيْءٍ قَدْ فُرِغَ مِنْهُ، أَوْ عَلَى شَيْءٍ لَمْ يُفْرَغْ مِنْهُ؟ قَالَ: بَلْ عَلَى شَيْءٍ

3111 - सय्यदना उमर बिन खत्ताब (رضي الله) बयान करते हैं जब यह आयत "इन में से बदबख़्त भी हैं और ख़ुश नसीब भी" (आयत: 105) नाज़िल हुई, तो मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से दर्याफ़्त किया, मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी(ﷺ)! फिर हम अमल किस बिना पर करते हैं? उस चीज़ से जिस से फ़रागत हो चुकी है या उस चीज़ पर जिस से फ़रागत नहीं हुई? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "बल्कि ऐसी चीज़ के मुवाफिक़ जिस से फ़रागत हो चुकी है और ऐ उमर! इस के साथ कलम चल चुके हैं।

قَدْ فُرِغَ مِنْهُ وَجَرَتْ بِهِ الأَقْلاَمُ يَا عُمَرُ، وَلَكِنْ كُلٌّ مُيَسَّرٌ لِمَا خُلِقَ لَهُ.

लेकिन हर आदमी जिस के लिए पैदा किया गया है उसे वही काम मयस्सर किया जाता है।"

सहीह:अब्द बिन हुमैद:20. बज़्ज़ार:168. इब्ने अबी आसिम फ़िस् सुन्ना: 170. अज-ज़िलाल:165, 167.

वज़ाहतः इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं : इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है, हम इसे अब्दुल मलिक बिन अम्र के तरीक़ से ही जानते हैं।

3112 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ، وَالأَسْوَدِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: إِنِّي عَالَجْتُ امْرَأَةً فِي أَقْصَى الْمَدِينَةِ وَإِنِّي أَصَبْتُ مِنْهَا مَا دُونَ أَنْ أَمَسَّهَا وَأَنَا هَذَا فَاقْضِ فِيَّ مَا شِئْتَ، فَقَالَ لَهُ عُمَرُ: لَقَدْ سَتَرَكَ اللَّهُ لَوْ سَتَرْتَ عَلَى نَفْسِكَ، فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيْهِ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَيْئًا، فَانْطَلَقَ الرَّجُلُ فَأَتْبَعَهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلاً، فَدَعَاهُ فَتَلاَ عَلَيْهِ {وَأَقِمِ الصَّلاَةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِنَ اللَّيْلِ إِنَّ الحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ ذَلِكَ ذِكْرَى لِلذَّاكِرِينَ} إِلَى آخِرِ الآيَةِ، فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ: هَذَا لَهُ خَاصَّةً؟ قَالَ: لاَ، بَلْ لِلنَّاسِ كَافَّةً.

3112 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (ﷺ) रिवायत करते हैं कि एक आदमी नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ करने लगा: मैंने मदीना के किनारे पर एक औरत से बोसो किनार किया और मैंने उसके साथ सिवाए जिमा के हर काम किया, मैं हाज़िर हूँ आप जो चाहें मेरे बारे में फैसला फ़रमाएं, तो उमर (ﷺ) ने उस से कहा: "अल्लाह ने तेरे ऊपर पर्दा रखा था काश तुम भी अपने ऊपर पर्दा रखते, लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसे कोई जवाब न दिया फिर वह आदमी चला गया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसके पीछे एक आदमी भेज कर उसे बुलाया और उसे यह आयत पढ़ कर सुनाई: "और दिन के दोनों किनारों में नमाज़ कायम करो और रात की कुछ घड़ियों में भी, बेशक नेकियाँ बुराइयों को ले जाती हैं, यह याद करने वालों के लिए याद दहानी है।" (आयत: 114) तो लोगों में से एक आदमी कहने लगा: क्या यह हुक्म उसके लिए ख़ास है? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "नहीं, बल्कि सब लोगों के लिए है।"

मुस्लिम:2763. अबू दाऊद:4468. अहमद:1/445. इब्ने खुज़ैमा:313.

वज़ाहतः इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह है और इस्राईल ने भी सिमाक से उन्होंने इब्राहीम से बवास्ता अल्क़मा और अस्वद, अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) से नबी (ﷺ) की ऐसी ही हदीस बयान की है। जबकि सूफ़ियान सौरी ने सिमाक से बवास्ता इब्राहीम, अब्दुर्रहमान बिन यज़ीद से अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) के ज़रिए नबी (ﷺ) की ऐसी ही हदीस रिवायत की है लेकिन इन लोगों की रिवायत मेरे नज़दीक सौरी की रिवायत से ज़्यादा सहीह है।

हमें मुहम्मद बिन यह्या निशापूरी ने वह कहते हैं, हमें मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने उन्हें आमश और सिमाक ने इब्राहीम से बवास्ता अब्दुर्रहमान बिन यज़ीद अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) से नबी (ﷺ) की इस मफ्हूम की हदीस बयान की है।

हमें महमूद बिन गैलान ने, उन्हें फ़ज़्ल बिन मूसा ने सुफ़ियान से (वह कहते हैं) हमें सिमाक ने इब्राहीम से बवास्ता अब्दुर्रहमान बिन यज़ीद, अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) से नबी (ﷺ) की ऐसी ही हदीस बयान की है इसमें आमश का ज़िक्र नहीं, नीज़ सुलैमान अत्तैमी ने भी इस हदीस को अबू उस्मान नहदी से बवास्ता इब्ने मसऊद (رضي الله عنه) नबी (ﷺ) से रिवायत किया है।

3113 - सय्यदना मुआज़ बिन जबल (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) के पास एक आदमी आकर कहने लगा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! आप यह बताइए कि एक आदमी किसी औरत से मिले और आपस में उन दोनों की पहचान भी न हो फिर आदमी जो कुछ अपनी बीवी से करता है वह उस औरत से करे लेकिन उस से जिमा (हमबिस्तरी) न करे? रावी कहते हैं: अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई: "और दिन के दो किनारों में नमाज़ कायम कर और रात की कुछ घड़ियों में भी, बेशक नेकियाँ बुराइयों को ले जाती हैं यह याद करने वालों के लिए याद दहानी है।" मुआज़ कहते हैं: फिर आप ने उसे हुक्म दिया कि वुज़ू करके नमाज़ पढ़े फिर मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! क्या यह हुक्म इसके लिए ख़ास है या सब मोमिनों के लिए है? आप

3113 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا حُسَيْنُ الْجُعْفِيُّ، عَنْ زَائِدَةَ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنْ مُعَاذٍ، قَالَ: أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، أَرَأَيْتَ رَجُلاً لَقِيَ امْرَأَةً وَلَيْسَ بَيْنَهُمَا مَعْرِفَةٌ فَلَيْسَ يَأْتِي الرَّجُلُ شَيْئًا إِلَى امْرَأَتِهِ إِلاَّ قَدْ أَتَى هُوَ إِلَيْهَا إِلاَّ أَنَّهُ لَمْ يُجَامِعْهَا؟ قَالَ: فَأَنْزَلَ اللَّهُ {وَأَقِمِ الصَّلاَةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِنَ اللَّيْلِ إِنَّ الحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ ذَلِكَ ذِكْرَى لِلذَّاكِرِينَ} فَأَمَرَهُ أَنْ يَتَوَضَّأَ وَيُصَلِّيَ. قَالَ مُعَاذٌ: فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ،

أَهِيَ لَهُ خَاصَّةً أَمْ لِلْمُؤْمِنِينَ عَامَّةً؟ قَالَ: بَلْ لِلْمُؤْمِنِينَ عَامَّةً.

(ﷺ) ने फ़रमाया, **"बल्कि सब मोमिनों के लिए है।"**

ज़ईफ़ुल इस्नाद: अहमद:5/244. हाकिम:1/135. बैहक़ी:1/125. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफ़ा:1000.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : इसकी सनद मुत्तसिल नहीं है, अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला ने मुआज़ बिन जबल (رضي الله عنه) से सिमा नहीं किया। क्योंकि मुआज़ बिन जबल (رضي الله عنه) उमर (رضي الله عنه) की ख़िलाफ़त में फौत हुए हैं और जब उमर (رضي الله عنه) शहीद हुए थे तो उस वक़्त अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला छ साल के बच्चे थे, उन्होंने उमर (رضي الله عنه) से रिवायत की है और उन्हें देखा भी नीज़ शोबा ने इस हदीस को अब्दुल मलिक बिन उमैर से बवास्ता अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला, नबी (ﷺ) से मुर्सल रिवायत किया है।

3114 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ سُلَيْمَانَ التَّيْمِيِّ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ، عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ، أَنَّ رَجُلاً أَصَابَ مِنْ امْرَأَةٍ قُبْلَةً حَرَامٍ فَأَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَأَلَهُ عَنْ كَفَّارَتِهَا، فَنَزَلَتْ {وَأَقِمِ الصَّلاَةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِنَ اللَّيْلِ إِنَّ الحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ} فَقَالَ الرَّجُلُ: أَلِي هَذِهِ يَا رَسُولَ اللهِ؟ فَقَالَ: لَكَ وَلِمَنْ عَمِلَ بِهَا مِنْ أُمَّتِي.

3114 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) से रिवायत है कि एक आदमी ने एक औरत को हराम तरीक़े से बोसा दिया, फिर वह नबी (ﷺ) के पास आया और आप (ﷺ) से उस के कफ़्फ़ारे का पूछा तो यह आयत: "दिन के दोनों किनारों और रात की घड़ियों में नमाज़ क़ायम कर।" नाज़िल हुई। वह आदमी आकर कहने लगा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! क्या यह सिर्फ मेरे लिए है? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम्हारे लिए भी है और मेरी उम्मत के हर उस शख़्स के लिए भी जो यह काम करेगा।"

बुख़ारी:526. मुस्लिम:2763. इब्ने माजह:1398.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह है।

3115 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا قَيْسُ بْنُ الرَّبِيعِ، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَوْهَبٍ، عَنْ مُوسَى بْنِ طَلْحَةَ، عَنْ أَبِي اليَسَرِ، قَالَ: أَتَتْنِي امْرَأَةٌ تَبْتَاعُ تَمْرًا،

3115 - सय्यदना अबू यसर (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि एक औरत मेरे पास खुजूरें ख़रीदने आई, तो मैंने कहा: (मेरे) घर में इस से भी उम्दा खुजूरें हैं तो वह मेरे साथ घर में चली गई चुनाँचे मैं उसकी तरफ़ झुका उसे बोसा दिया, फिर अबू बक्र (رضي الله عنه) के पास आकर उनसे इसका तज़किरा किया, तो वह कहने लगे: अपने आप

فَقُلْتُ: إِنَّ فِي الْبَيْتِ تَمْرًا أَطْيَبَ مِنْهُ، فَدَخَلَتْ مَعِي فِي الْبَيْتِ، فَأَهْوَيْتُ إِلَيْهَا فَتَقَبَّلْتُهَا، فَأَتَيْتُ أَبَا بَكْرٍ فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لَهُ قَالَ: اسْتُرْ عَلَى نَفْسِكَ وَتُبْ وَلاَ تُخْبِرْ أَحَدًا، فَلَمْ أَصْبِرْ فَأَتَيْتُ عُمَرَ فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لَهُ، فَقَالَ: اسْتُرْ عَلَى نَفْسِكَ وَتُبْ وَلاَ تُخْبِرْ أَحَدًا، فَلَمْ أَصْبِرْ، فَأَتَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لَهُ، فَقَالَ: أَخَلَفْتَ غَازِيًا فِي سَبِيلِ اللهِ فِي أَهْلِهِ بِمِثْلِ هَذَا حَتَّى تَمَنَّى أَنَّهُ لَمْ يَكُنْ أَسْلَمَ إِلاَّ تِلْكَ السَّاعَةَ حَتَّى ظَنَّ أَنَّهُ مِنْ أَهْلِ النَّارِ. قَالَ: وَأَطْرَقَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ طَوِيلاً حَتَّى أَوْحَى اللَّهُ إِلَيْهِ {وَأَقِمِ الصَّلاَةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِنَ اللَّيْلِ}، إِلَى قَوْلِهِ: {ذِكْرَى لِلذَّاكِرِينَ}. قَالَ أَبُو الْيَسَرِ: فَأَتَيْتُهُ فَقَرَأَهَا عَلَيَّ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ أَصْحَابُهُ: يَا رَسُولَ اللهِ، أَلِهَذَا خَاصَّةً أَمْ لِلنَّاسِ عَامَّةً؟ قَالَ: بَلْ لِلنَّاسِ عَامَّةً.

पर पर्दा रखो, तौबा करो और किसी को मत बताना लेकिन मैं न रह सका, फिर मैं उमर (رضی اللہ) के पास चला गया उन से भी इसका ज़िक्र किया तो उन्होंने कहा: अपने आप पर पर्दा रखो, तौबा करो और किसी को न बताना। लेकिन मुझ से सब्र न हो सका, फिर मैं नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर आप से इसका ज़िक्र किया, तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या तुमने एक ग़ाज़ी जो अल्लाह की राह में निकला उस के पीछे उसकी बीवी से यह काम किया? यहाँ तक कि मैंने ख़्वाहिश की काश! इस से पहले मुसलमान ही न हुआ होता और यक़ीन हो गया कि मैं जहन्नमी हूँ। रावी कहते हैं:कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने काफी देर तक सर झुकाए रखा, यहाँ तक कि अल्लाह ने आप(ﷺ) की तरफ़ वहि किया "और दिन के किनारों में नमाज़ कायम कर और रात की घड़ियों में भी।" बेशक नेकियाँ बुराइयों को ले जाती हैं, यह याद करने वालों के लिए याद दहानी है" अबू यसर कहते हैं: फिर मैं आप(ﷺ) के पास गया, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे पढ़कर सुनाई, आप के सहाबा ने अर्ज़ किया अल्लाह के रसूल (ﷺ)! यह इसके लिए ख़ास है या सब लोगों के लिए है? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "बल्कि सब लोगों के लिए है।"

हसन: तबरानी: 19/371.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। और कैस बिन रबीअ को वकीअ वगैरह ने ज़ईफ़ कहा है। नीज़ शरीक ने भी इस हदीस को उस्मान बिन अब्दुल्लाह से कैस बिन रबीअ की रिवायत की तरह रिवायत किया है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : इस बारे में अबू उमामा, वासिला बिन अस्क़ा और अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है, और अबू यसर काब बिन उमर (رضي الله عنه) हैं।

13 - तफ़सीर सूरह यूसुफ़।

13 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ يُوسُفَ

3116 - حَدَّثَنَا الحُسَيْنُ بْنُ حُرَيْثٍ الخُزَاعِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الفَضْلُ بْنُ مُوسَى، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ الْكَرِيمَ ابْنَ الْكَرِيمِ ابْنِ الْكَرِيمِ ابْنِ الْكَرِيمِ يُوسُفُ بْنُ يَعْقُوبَ بْنِ إِسْحَاقَ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ: وَلَوْ لَبِثْتُ فِي السِّجْنِ مَا لَبِثَ يُوسُفُ ثُمَّ جَاءَنِي الرَّسُولُ أَجَبْتُ ثُمَّ قَرَأَ {فَلَمَّا جَاءَهُ الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَى رَبِّكَ فَاسْأَلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ اللاَّتِي قَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ} قَالَ وَرَحْمَةُ اللهِ عَلَى لُوطٍ إِنْ كَانَ لَيَأْوِي إِلَى رُكْنٍ شَدِيدٍ، إِذْ قَالَ: {قَالَ لَوْ أَنَّ لِي بِكُمْ قُوَّةً أَوْ آوِي إِلَى رُكْنٍ شَدِيدٍ} فَمَا بَعَثَ اللَّهُ مِنْ بَعْدِهِ نَبِيًّا إِلاَّ فِي ذِرْوَةٍ مِنْ قَوْمِهِ.

3116 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "ख़ुद भी बुजुर्ग, बुजुर्ग के बेटे, बुजुर्ग के पोते और बुजुर्ग शख़्सिय्यत के ही पड़ पोते, यूसुफ़ (عليه السلام) हैं, जो याकूब के बेटे, इस्हाक़ के पोते और इब्राहीम (عليه السلام) के पड़ पोते हैं" आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "अगर मैं इतना अर्सा जेल में रहता जितना यूसुफ़ (عليه السلام) रहे, फिर कासिद मेरे पास आता तो मैं उसकी बात मान लेता" फिर आप(ﷺ) ने यह आयत पढ़ी " जब उस के पास क़ासिद आया तो उस ने कहा: "अपने मालिक के पास वापस जाकर उस से पूछ उन औरतों का क्या हाल है जिन्होंने अपने हाथ काट लिए थे।" (आयत:50) आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "लूत (عليه السلام) पर अल्लाह की रहमत हो, वह मज़बूत सहारे की पनाह लेते थे जब उन्होंने कहा था "काश! वाक़ेई मेरे पास तुम्हारे मुकाबले की कुछ ताक़त होती, या मैं किसी मज़बूत सहारे की पनाह लेता" (हूद:80) चुनाँचे अल्लाह तआला ने उन के बाद कोई नबी नहीं भेजा मगर उनकी कौम के अशराफ़ में से ही।"

अहमद:2/332. हाकिम:2/346. निसाई:11254.

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं: हमें अबू कुरैब ने भी बवास्ता अबू अब्दा और अब्दुर्रहीम, मुहम्मद बिन अम्र से फ़ज़ल बिन मूसा की तरह हदीस बयान की है, लेकिन इसमें है कि आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह

ने उन के बाद कोई नबी नहीं भेजा मगर उनकी कौम के साहिबे सर्वत लोगों में ही।"

मुहम्मद बिन अम्र कहते हैं सर्वत से मुराद कस्रत और कुव्वत व ताक़त है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस फ़ज़्ल बिन मूसा की रिवायत से ज़्यादा सहीह है और यह हदीस हसन है।

14 - तफ़सीर सूरह राद।

14 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الرَّعْدِ

3117 - अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि यहूदी नबी (ﷺ) के पास आकर कहने लगे: ऐ अबुल क़ासिम! आप हमें राद के बारे में बताइए यह क्या है? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "फरिश्तों में से एक फ़रिश्ता है जिसकी ड्यूटी बादलों पर है, उसके पास आग के कोड़े हैं जिन के साथ वह बादलों को हांक कर वहाँ ले जाता है जहां अल्लाह तआला चाहता है" उन्होंने कहा: यह आवाज़ क्या होती है जो हमें सुनाई देती है? आप (ﷺ) ने फ़रमाया:" उसका बादलों को डांटना होता जब वह उसे डांटता है, यहाँ तक कि वह बादल वहाँ पहुँच जाते हैं जहां का हुक्म होता है" उन्होंने कहा:' आप(ﷺ) ने सच कहा, फिर कहने लगे: तो आप(ﷺ) हमें बताईए कि इस्राईल (याकूब عليه السلام) ने अपने ऊपर क्या हराम किया था? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "उन्हें इर्कुन्नसा[1] की बीमारी थी तो उन्होंने सिर्फ ऊंटों का गोश्त और दूध छोड़ना ही मुवाफ़िक़ पाया तो इसलिए उसे हराम कर लिया।" उन्होंने कहा: " आप ने सच फ़रमाया।

3117 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الوَلِيدِ، وَكَانَ يَكُونُ فِي بَنِي عِجْلٍ، عَنْ بُكَيْرِ بْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: أَقْبَلَتْ يَهُودُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالُوا: يَا أَبَا القَاسِمِ، أَخْبِرْنَا عَنِ الرَّعْدِ مَا هُوَ؟ قَالَ: مَلَكٌ مِنَ المَلَائِكَةِ مُوَكَّلٌ بِالسَّحَابِ مَعَهُ مَخَارِيقُ مِنْ نَارٍ يَسُوقُ بِهَا السَّحَابَ حَيْثُ شَاءَ اللَّهُ فَقَالُوا: فَمَا هَذَا الصَّوْتُ الَّذِي نَسْمَعُ؟ قَالَ: زَجْرَةٌ بِالسَّحَابِ إِذَا زَجَرَهُ حَتَّى يَنْتَهِيَ إِلَى حَيْثُ أُمِرَ قَالُوا: صَدَقْتَ. فَقَالُوا: فَأَخْبِرْنَا عَمَّا حَرَّمَ إِسْرَائِيلُ عَلَى نَفْسِهِ؟ قَالَ: اشْتَكَى عِرْقَ النَّسَا فَلَمْ يَجِدْ شَيْئًا يُلَائِمُهُ إِلَّا لُحُومَ الإِبِلِ وَأَلْبَانَهَا فَلِذَلِكَ حَرَّمَهَا قَالُوا: صَدَقْتَ.

अहमद: 1/274. तबरानी: 12429. अस-सिलसिला अस-सहीहा: 1872.

तौज़ीह: عِرْقِ النَّسَا : यह एक बहुत ही तकलीफ़देह बीमारी है इस बीमारी में रान के शुरू वाले हिस्से से दर्द उठती है जो घुटने तक जाती है कभी कभार घुटने से नीचे भी चली जाती है इसे लंगड़ी का दर्द भी कहा जाता है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3118 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ خِدَاشٍ البَغْدَادِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَيْفُ بْنُ مُحَمَّدٍ الثَّوْرِيُّ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي قَوْلِهِ: {وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلَى بَعْضٍ فِي الأُكُلِ} قَالَ: الدَّقَلُ وَالفَارِسِيُّ وَالحُلْوُ وَالحَامِضُ.

3118 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाने बारी तआला: " हम ज़ायके में बअ़ज़ फलों को बअ़ज़ पर फ़ज़ीलत देते हैं।" (अर-राद:4) के बारे में फ़रमाया, "कोई रद्दी खुजूर, कोई उम्दा, कोई मीठा फल और कोई कड़वा।"

हसन: तबरी:13/103. इब्ने अबी हातिम फ़िल इलल:1733.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन ग़रीब है। इसे ज़ैद बिन अबी उनैसा ने भी आमश से ऐसे ही रिवायत किया है।

नीज़ सैफ बिन मुहम्मद, अम्मार बिन मुहम्मद के भाई हैं और अम्मार उन से ज़्यादा पुख़्ता रावी थे और यह सुफ़ियान सौरी के भांजे थे।

15 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ إِبْرَاهِيمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ

15 - तफ़सीर सूरह इब्राहीम।

3119 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الوَلِيدِ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ شُعَيْبِ بْنِ الحَبْحَابِ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: أُتِيَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِقِنَاعٍ عَلَيْهِ رُطَبٌ، فَقَالَ: {مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ تُؤْتِي أُكُلَهَا كُلَّ حِينٍ بِإِذْنِ رَبِّهَا}، قَالَ: هِيَ النَّخْلَةُ {وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ كَشَجَرَةٍ

3119 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास एक किना[1] लाया गया जिस पर खुजूरें थीं आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "पाकीज़ा क़लिमा की मिसाल पाकीज़ा दरख़्त की तरह है जिस की जड़ मज़बूत और चोटी आसमान में है, वह अपना फल अपने रब के हुक्म से हर वक़्त देता है" आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "यह खुजूर है," और बुरी बात की मिसाल एक गंदे पौधे की तरह है जो ज़मीन के ऊपर से उखाड़ लिया गया उस के लिए

خَبِيثَةٍ اجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الأَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ} قَالَ: هِيَ الحَنْظَلَة))

कुछ भी क़रार नहीं।" (इब्राहीम :26) आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "यह हंज़ल (तम्मा) है।

ज़ईफ़ मर्फ़ूअन: निसाई:11262. हाकिम:2/352. इब्ने हिब्बान:475.

तौज़ीह: قناع : खुजूर के डंडों से बना हुआ तश्त (थाल, ट्रे) जिस में खाना खाया जाता है या फल रखा जाता है। (अल-मोजमुल वसीत:प।921)

वज़ाहत: शोऐब बिन हब्हाब कहते हैं: मैंने अबू आलिया को यह हदीस बयान की तो उन्होंने फ़रमाया, "(अनस رضی اللہ عنہ ने) सच्ची और उम्दा बात कही है।

अबू ईसा कहते हैं: हमें क़ुतैबा ने भी शोऐब बिन हब्हाब से उनके बाप के ज़रिए, अनस बिन मालिक (رضی اللہ عنہ) की इस मफ़्हूम की हदीस बयान की है। जो मर्फ़ू नहीं है और न ही इसमें अबू आलिया का ज़िक्र किया है लेकिन यह हम्माद बिन सलमा की हदीस से ज़्यादा सहीह है और कई रावियों ने इसे ऐसे ही मौक़ूफ़ रिवायत किया है नीज़ मामर, हम्माद बिन ज़ैद और दीगर मुहद्दिसीन ने भी इसे मौक़ूफ़ रिवायत किया है। (सहीह मौकूफन)

अबू ईसा कहते हैं: हमें अहमद बिन अब्दा ज़बी ने वह कहते हैं हमें हम्माद बिन ज़ैद ने शोऐब बिन हब्हाब के ज़रिए अनस बिन मालिक (رضی اللہ عنہ) से, अब्दुल्लाह बिन अबू बक्र बिन शोऐब बिन हब्हाब की तरह हदीस बयान की है वह भी मर्फ़ू नहीं है। (सहीह मौकूफन)

3120 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَلْقَمَةُ بْنُ مَرْثَدٍ، قَالَ: سَمِعْتُ سَعْدَ بْنَ عُبَيْدَةَ، يُحَدِّثُ عَنِ البَرَاءِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: {يُثَبِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الآخِرَةِ} قَالَ: فِي القَبْرِ إِذَا قِيلَ لَهُ: مَنْ رَبُّكَ، وَمَا دِينُكَ، وَمَنْ نَبِيُّكَ.

3120 - सय्यदना बराअ (رضی اللہ عنہ) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने अल्लाह के फ़रमान "अल्लाह तआला ईमान वालों को मज़बूत क़लिमे के साथ दुनिया की ज़िन्दगी और आख़िरत में साबित क़दम रखेगा।" (आयत: 27) के बारे में फ़रमाया, "यह क़ब्र में होगा जब उस से कहा जाएगा! तेरा रब कौन है? दीन क्या है? और तेरा नबी कौन है?"

बुख़ारी:1369. मुस्लिम:2871. अबू दाऊद:4750. इब्ने माजह:4269. निसाई:2056.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह है।

3121 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ دَاوُدَ بْنِ أَبِي هِنْدٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ مَسْرُوقٍ، قَالَ: تَلَتْ عَائِشَةُ، هَذِهِ الآيَةَ {يَوْمَ تُبَدَّلُ الأَرْضُ غَيْرَ الأَرْضِ} قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ، فَأَيْنَ يَكُونُ النَّاسُ؟ قَالَ: عَلَى الصِّرَاطِ.

3121 - मसरूक (رحمه الله) रिवायत करते हैं कि सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) ने यह आयत: "जिस दिन यह ज़मीन, और ज़मीन से बदल दी जाएगी (आयत:48) पढ़कर अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! तो फिर लोग कहाँ होंगे? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "(पुल) सिरात पर।"

मुस्लिम; 2791. इब्ने माजह:4279. अहमद:6/35.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह है। और सनद से भी आयशा (رضي الله عنها) से हदीस मर्वी है।

16 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الحِجْرِ

16 - तफ़सीर सूरह हिज्र।

3122 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا نُوحُ بْنُ قَيْسٍ الحُدَّانِيُّ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مَالِكٍ، عَنْ أَبِي الجَوْزَاءِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: كَانَتْ امْرَأَةٌ تُصَلِّي خَلْفَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَسْنَاءَ مِنْ أَحْسَنِ النَّاسِ، فَكَانَ بَعْضُ القَوْمِ يَتَقَدَّمُ حَتَّى يَكُونَ فِي الصَّفِّ الأَوَّلِ لِئَلاَّ يَرَاهَا، وَيَسْتَأْخِرُ بَعْضُهُمْ حَتَّى يَكُونَ فِي الصَّفِّ الْمُؤَخِّرِ، فَإِذَا رَكَعَ نَظَرَ مِنْ تَحْتِ إِبْطَيْهِ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى {وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِينَ}.

3122 - सय्यदना इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि एक बहुत ही खूबसूरत औरत नबी (ﷺ) के पीछे नमाज़ पढ़ा करती थी, चुनाँचे बअज़ लोग आगे बढ़ जाते यहाँ तक कि पहली सफ़ पहुंच जाते ताकि उसे देख न सकें और बअज़ पीछे हटते यहाँ तक की आख़िरी सफ़ में आ जाते, फिर जब रुकूअ होता तो वह अपनी बगलों के नीचे से देखते, तो अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई: "और बिला शुब्हा यक़ीनन हम ने उन लोगों का हाल जान रखा है जो तुम में से बहुत आगे जाने वाले हैं और हम ने उन को भी जान रखा है जो पीछे आने वाले हैं।" (आयत: 24)

सहीह: इब्ने माजह:1046. निसाई:871.अस-सिलसिला अस-सहीहा:2472.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : जाफ़र बिन सुलैमान ने भी इस हदीस को बवास्ता अम्र बिन मालिक, अबू जौज़ा से इसी तरह रिवायत किया है, इसमें इब्ने अब्बास का ज़िक्र नहीं किया और दुरुस्त भी यही है कि ये हदीस नूह की रिवायत से ज़्यादा सहीह है।)इस हदीस की तस्हीह व तज़ईफ़ में

इख़्तिलाफ़ है। मुताला का शौक़ रखने वाले कारेईने किराम तोहफ़तुल अहवज़ी शरह तिर्मिज़ी रक़म हदीस: 3122 और तफ़सीर इब्ने कसीर: 549, 550/2 का मुताला ज़रूर करें। हमारे नज़दीक मोतबर बात यह है कि इब्ने अब्बास से यह तफ़सीर सहीह सनद से साबित नहीं। (वल्लाहु आलम)

3123 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (﵁) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जहन्नम के सात दरवाज़े हैं: उन में से एक दरवाज़ा उस शख़्स के लिए है जो मेरी उम्मत पर तलवार सौंते" या फ़रमाया, "कि उम्मते मुहम्मदिया पर।"

ज़ईफ़: अहमद:2/92. हियातुर्रूवात:3461.

3123 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ، عَنْ مَالِكِ بْنِ مِغْوَلٍ، عَنْ جُنَيْدٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لِجَهَنَّمَ سَبْعَةُ أَبْوَابٍ، بَابٌ مِنْهَا لِمَنْ سَلَّ السَّيْفَ عَلَى أُمَّتِي أَوْ قَالَ: عَلَى أُمَّةِ مُحَمَّدٍ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस ग़रीब है। हम इसे मालिक बिन मिग्वल के तरीक़ से ही जानते हैं।

3124 - सय्यदना अबू हुरैरा (﵁) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्हम्दुलिल्लाह (यानी फातिहा) उम्मुल कुरआन, उम्मुल किताब और बार बार दोहराई जाने वाली सात आयतें हैं।"

बुख़ारी:4704. अबू दाऊद:1457. अहमद:2/448.

3124 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَلِيٍّ الحَنَفِيُّ، عَنِ ابْنِ أَبِي ذِئْبٍ، عَنِ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الحَمْدُ لِلَّهِ أُمُّ القُرْآنِ وَأُمُّ الكِتَابِ وَالسَّبْعُ الْمَثَانِي.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह है।

3125 - सय्यदना उबय बिन काब (﵁) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने तौरात व इंजील में उम्मुल कुरआन जैसी कोई सूरत नहीं उतारी, यह सब्ए मसानी है, और अल्लाह कहते हैं यही मेरे और बन्दे के दर्मियान तक्सीम होती है और मेरे बन्दे के लिए वह है जो वह मांगे।"

सहीह: तख़रीज के लिए देखिए हदीस नम्बर 2875. सहीहुत्तर्गीब: 1453.

3125 - حَدَّثَنَا الحُسَيْنُ بْنُ حُرَيْثٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الفَضْلُ بْنُ مُوسَى، عَنْ عَبْدِ الحَمِيدِ بْنِ جَعْفَرٍ، عَنِ العَلَاءِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنْ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ، قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا أَنْزَلَ اللَّهُ فِي التَّوْرَاةِ وَالإِنْجِيلِ مِثْلَ أُمِّ القُرْآنِ، وَهِيَ السَّبْعُ الْمَثَانِي، وَهِيَ مَقْسُومَةٌ بَيْنِي وَبَيْنَ عَبْدِي، وَلِعَبْدِي مَا سَأَلَ.

वज़ाहत: अबू ईसा फ़रमाते हैं हमें कुतैबा ने वह कहते हैं हमें अब्दुल अज़ीज़ बिन मुहम्मद ने अला बिन अब्दुर्रहमान से उनके बाप के ज़रिए अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत की है नबी (ﷺ) का गुज़र उबय बिन काब (رضي الله عنه) के पास से हुआ तो वह नमाज़ पढ़ रहे थे, फिर इसी मफ़हूम की हदीस बयान की है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : अब्दुल अज़ीज़ बिन मुहम्मद की रिवायत ज़्यादा लम्बी और मुकम्मल है और यह अब्दुल हमीद बिन जाफ़र की हदीस से ज़्यादा सहीह है, बहुत से रावियों ने अला बिन अब्दुर्रहमान से इसी तरह रिवायत की है।

3126 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدَةَ الضَّبِّيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ لَيْثِ بْنِ أَبِي سُلَيْمٍ، عَنْ بِشْرٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي قَوْلِهِ: {لَنَسْأَلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ} قَالَ: عَنْ قَوْلِ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ.

3126 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) नबी (ﷺ) से अल्लाह तआला के फ़रमान "हम उन सब से उस चीज़ के बारे में ज़रूर पूछेंगे जो वह अमल करते थे।" (92- 93) के बारे में रिवायत करते हैं कि आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ: के कौल के बारे में,"

ज़ईफुल इस्नाद:अबू याला:4058.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस ग़रीब है, हम इसे लैस बिन अबी सुलैम के तरीक़ से ही जानते हैं इसे अब्दुल्लाह बिन इदरीस ने भी लैस बिन अबी सुलैम से बवास्ता बिश्र, अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) से इसी तरह रिवायत किया है लेकिन वह मर्फ़ू नहीं है।

3127 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي الطَّيِّبِ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُصْعَبُ بْنُ سَلاَّمٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ قَيْسٍ، عَنْ عَطِيَّةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: اتَّقُوا فِرَاسَةَ الْمُؤْمِنِ فَإِنَّهُ يَنْظُرُ بِنُورِ اللهِ، ثُمَّ قَرَأَ: {إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِلْمُتَوَسِّمِينَ}.

3127 - अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मोमिन की फ़िरासत[1] से बचो क्योंकि यह अल्लाह के नूर से देखता है" फिर आप(ﷺ) ने यह आयत पढ़ी: " बेशक इसमें गहरी नज़र रखने वालों के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं।" (आयत:75)

ज़ईफ़: बुख़ारी:7/ 1529. हिल्या:10/28. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफ़ा:1821.

तौज़ीह: (1) فِرَاسَةَ : ज़हानत, क़याफ़ा शनासी, ज़ाहिर से बातिन को जान लेने की महारत, समझ और दानाई (अल-कामूसुल वहीद:प।1217)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस ग़रीब है हम इसे सिर्फ इसी सनद से ही जानते हैं और बअ़ज़ उलमा के मुताबिक इस आयत {إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِلْمُتَوَسِّمِينَ} में गहरी नज़र रखने वाले मुराद हैं।

17 - तफ़सीर सूरह नहल।

17 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ النَّحْلِ

3128 - सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "ज़ुहर से पहले, जवाल के बाद चार रकअतें इतनी ही तहज्जुद की तरह शुमार की जाती है" रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया:" इस घड़ी में हर चीज़ अल्लाह की तस्बीह करती है" फिर आप (ﷺ) ने यह आयत पढ़ी। " हर चीज़ के साए दायें तरफ़ और बाएं तरफ़ से अल्लाह को सज्दा करते हुए ढलते हैं इस हाल में कि वह आजिज़ हैं।" (आयत:48)

ज़ईफ़: अब्द बिन हुमैद:24. अस-सिलसिला अस-सहीहा:1431. हियातुर्रूवात:1135.

3128 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَاصِمٍ، عَنْ يَحْيَى الْبَكَّاءِ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ، قَالَ: سَمِعْتُ عُمَرَ بْنَ الخَطَّابِ، يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَرْبَعٌ قَبْلَ الظُّهْرِ بَعْدَ الزَّوَالِ تُحْسَبُ بِمِثْلِهِنَّ فِي صَلَاةِ السَّحَرِ، قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: وَلَيْسَ مِنْ شَيْءٍ إِلاَّ وَهُوَ يُسَبِّحُ اللَّهَ تِلْكَ السَّاعَةَ، ثُمَّ قَرَأَ {يَتَفَيَّأُ ظِلاَلُهُ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَائِلِ سُجَّدًا لِلَّهِ} الآيَةَ كُلَّهَا.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस ग़रीब है हम इसे अली बिन आसिम के तरीक़ से ही जानते हैं।

3129 - सय्यदना उबय बिन काब (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि जब उहुद का दिन था तो अंसार के चौसठ आदमी और मुहाजिरीन के छ आदमी शहीद हुए, जिन में हम्ज़ा भी थे, काफ़िरों ने उनके आज़ा (शरीर के अंग) काट दिए थे, तो अंसार ने कहा: अगर किसी दिन हम उन पर ग़ालिब आए तो हम भी उन से भी ज़्यादा के साथ ये सुलूक करेंगे, रावी कहते हैं: फिर जब फ़तहे मक्का का दिन आया तो अल्लाह तआला

3129 - حَدَّثَنَا أَبُو عَمَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الفَضْلُ بْنُ مُوسَى، عَنْ عِيسَى بْنِ عُبَيْدٍ، عَنِ الرَّبِيعِ بْنِ أَنَسٍ، عَنْ أَبِي العَالِيَةِ، قَالَ: حَدَّثَنِي أُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ، قَالَ: لَمَّا كَانَ يَوْمُ أُحُدٍ أُصِيبَ مِنَ الأَنْصَارِ أَرْبَعَةٌ وَسِتُّونَ رَجُلاً، وَمِنَ الْمُهَاجِرِينَ سِتَّةٌ مِنْهُمْ حَمْزَةُ، فَمَثَّلُوا بِهِمْ، فَقَالَتِ الأَنْصَارُ: لَئِنْ أَصَبْنَا

مِنْهُمْ يَوْمًا مِثْلَ هَذَا لَنُرْبِيَنَّ عَلَيْهِمْ قَالَ: فَلَمَّا كَانَ يَوْمُ فَتْحِ مَكَّةَ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى {وَإِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوا بِمِثْلِ مَا عُوقِبْتُمْ بِهِ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِلصَّابِرِينَ} فَقَالَ رَجُلٌ: لاَ قُرَيْشَ بَعْدَ الْيَوْمِ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كُفُّوا عَنِ الْقَوْمِ إِلاَّ أَرْبَعَةً.

ने यह आयात उतारी: " और अगर तुम बदला लेना चाहो तो उतना ही बदला लो जितनी तुम्हें तक्लीफ़ दी गई है और बिला शुब्हा अगर तुम सब्र करो तो यक़ीनन वह सब्र करने वालों के लिए बेहतर है।" (आयत: 126) एक आदमी ने कहा: आज के बाद कुरैशी नहीं होंगे तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, चार लोगों के सिवा बाकी लोगों पर हाथ न उठाना।"

हसन सहीहुल इस्नाद:हाकिम:2/358. इब्ने हिब्बान:487. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:550.

वज़ाहत: अबू ईसा तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस सय्यदना उबय बिन काब (رضی اللہ عنہ) की निस्बत हसन ग़रीब है।

18 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ بَنِي إِسْرَائِيلَ

18 - तफसीर सूरह बनी इस्राईल।

3130 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: حِينَ أُسْرِيَ بِي لَقِيتُ مُوسَى، قَالَ فَنَعَتَهُ، فَإِذَا رَجُلٌ، حَسِبْتُهُ قَالَ، مُضْطَرِبٌ رَجِلُ الرَّأْسِ، كَأَنَّهُ مِنْ رِجَالِ شَنُوءَةَ. قَالَ: وَلَقِيتُ عِيسَى، قَالَ فَنَعَتَهُ، قَالَ: رَبْعَةٌ أَحْمَرُ كَأَنَّمَا خَرَجَ مِنْ دِيمَاسٍ، يَعْنِي الْحَمَّامَ، وَرَأَيْتُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ: وَأَنَا أَشْبَهُ وَلَدِهِ بِهِ. قَالَ: وَأُتِيتُ بِإِنَاءَيْنِ أَحَدُهُمَا لَبَنٌ

3130 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضی اللہ عنہ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब मुझे मेराज के मौक़े पर सैर कराई गई तो मैं मूसा (عليه السلام) से मिला।" रावी कहते हैं: फिर आप ने उनका हुलिया बयान किया वह बिखरे बालों वाले आदमी थे गोया उनका ताल्लुक़ क़बील-ए-शनूआ से हो" आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "और मैं ईसा (عليه السلام) से भी मिला फिर उनका हुलिया बयान किया वह दर्मियानी जसामत के सुर्ख़ रंग के आदमी थे गोया वह अभी हम्माम से निकले हों," " मैं इब्राहीम (عليه السلام) से मिला और मैं उनकी औलाद में सब से ज़्यादा उनके साथ मिलता हूँ, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "फिर मुझे दो बर्तन पेश किए गए एक दूध का और दुसरे में शराब थी, फिर मुझ से कहा गया: इन में

وَالآخَرُ فِيهِ خَمْرٌ، فَقِيلَ لِي: خُذْ أَيَّهُمَا شِئْتَ، فَأَخَذْتُ اللَّبَنَ فَشَرِبْتُهُ، فَقِيلَ لِي: هُدِيتَ لِلفِطْرَةِ، أَوْ أَصَبْتَ الفِطْرَةَ، أَمَا إِنَّكَ لَوْ أَخَذْتَ الخَمْرَ غَوَتْ أُمَّتُكَ.

से जो चाहें ले लें मैंने दूध पकड़ कर उसे पी लिया, तो मुझ से कहा गया फ़ित्रत की तरफ़ आप की रहनुमाई की गई है, या आप ने फ़ित्रत को पा लिया, अगर आप शराब पकड़ लेते तो आप की उम्मत गुमराह हो जाती।"

बुख़ारी:3397. मुस्लिम:168. निसाई:5657. अहमद:2/281.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह है।

3131 - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أُتِيَ بِالبُرَاقِ لَيْلَةَ أُسْرِيَ بِهِ مُلْجَمًا مُسْرَجًا، فَاسْتَصْعَبَ عَلَيْهِ، فَقَالَ لَهُ جِبْرِيلُ: أَبِمُحَمَّدٍ تَفْعَلُ هَذَا؟ فَمَا رَكِبَكَ أَحَدٌ أَكْرَمُ عَلَى اللهِ مِنْهُ، قَالَ: فَارْفَضَّ عَرَقًا.

3131 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि जिस रात नबी (ﷺ) को सैर कराई गई आप के पास बुराक लाया गया जिस को लगाम दी हुई थी और उस पर ज़ीन रखी हुई थी, उसने शोख़ी की, तो जिब्रील (عليه السلام) ने कहा: क्या तु मुहम्मद (ﷺ) से ऐसे करता है? तुम्हारे ऊपर अल्लाह के नज़दीक इन से ज़्यादा इज्ज़त वाला कोई नहीं बैठा, रावी कहते हैं: (यह सुनकर) उसे पसीना आ गया।

सहीहुल इस्नाद:अहमद:3/164. इब्ने हिब्बान:46. अबू याला:3184.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे अब्दुर्रज़्ज़ाक के तरीक़ से ही जानते हैं।

3132 - حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الدَّوْرَقِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو تُمَيْلَةَ، عَنِ الزُّبَيْرِ بْنِ جُنَادَةَ، عَنِ ابْنِ بُرَيْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: لَمَّا انْتَهَيْنَا إِلَى بَيْتِ الْمَقْدِسِ قَالَ جِبْرِيلُ بِإِصْبَعِهِ، فَخَرَقَ بِهِ الحَجَرَ، وَشَدَّ بِهِ البُرَاقَ.

3132 - सय्यदना बुरैदा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब हम बैतूल मक्दिस पहुंचे तो जिब्रील ने अपनी उंगली से पत्थर में सूराख किया और उसके साथ बुराक़ को बांधा।"

सहीहुल इस्नाद:हाकिम:2/360. इब्ने हिब्बान:47. अस-सिलसिला अस-सहीहा:3487.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन ग़रीब है।

3133 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَمَّا كَذَّبَتْنِي قُرَيْشٌ قُمْتُ فِي الحِجْرِ فَجَلَّى اللَّهُ لِي بَيْتَ الْمَقْدِسِ، فَطَفِقْتُ أُخْبِرُهُمْ عَنْ آيَاتِهِ وَأَنَا أَنْظُرُ إِلَيْهِ.

3133 - सय्यदना जाबिर (रज़ियल्लाहु अन्हु) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, "जब कुरैश ने मुझे झुठलाया तो मैं हतीम में खड़ा हो गया फिर अल्लाह तआला ने मेरे लिए बैतूल मक्दिस को ज़ाहिर कर दिया मैं उन्हें उसकी निशानियाँ बताने लगा और मैं उसकी तरफ़ देख रहा था।"

बुख़ारी:3886. मुस्लिम:170. अहमद:3/377.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रहमतुल्लाह अलैह) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह है। नीज इस बारे में मालिक बिन सासा, अबू सईद इब्ने अब्बास, अबू ज़र और इब्ने मसऊद (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से भी हदीस मर्वी है।

3134 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، فِي قَوْلِهِ تَعَالَى: {وَمَا جَعَلْنَا الرُّؤْيَا الَّتِي أَرَيْنَاكَ إِلاَّ فِتْنَةً لِلنَّاسِ} قَالَ: هِيَ رُؤْيَا عَيْنٍ أُرِيهَا النَّبِيُّ ﷺ لَيْلَةَ أُسْرِيَ بِهِ إِلَى بَيْتِ الْمَقْدِسِ. قَالَ: {وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُونَةَ فِي الْقُرْآنِ} هِيَ شَجَرَةُ الزَّقُّومِ.

3134 - सय्यदना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु), अल्लाह तआला के फ़रमान " और हम ने जो मंज़र आप को दिखाया उसे सिर्फ लोगों के लिए आज़माइश बनाया" (आयत:60) के बारे में फ़रमाते हैं: यह आँख का (हक़ीक़त में) देखना था जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को बैतूल मक्दिस तक सैर वाली रात में दिखाया गया ''और कुरआन में लानत किए गए दरख़्त के बारे में फ़रमाते हैं: वह थूहड़ का दरख़्त है।''

बुख़ारी:3888. अहमद:1/221.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रहमतुल्लाह अलैह) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह है।

3135 - حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ أَسْبَاطِ بْنِ مُحَمَّدٍ قُرَشِيٌّ كُوفِيٌّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي قَوْلِهِ تَعَالَى: {وَقُرْآنَ الْفَجْرِ إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا} قَالَ: تَشْهَدُهُ مَلاَئِكَةُ اللَّيْلِ

3135 - सय्यदना अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाने इलाही: "और फज्र का कुरआन पढ़ना बेशक फज्र का कुरआन हमेशा से हाज़िर होने का वक़्त रहा है।" (आयत:78) के बारे में फ़रमाया, "इस वक़्त दिन और रात के फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं।"

बुख़ारी:648. मुस्लिम:649. इब्ने माजह:670.

وَمَلَائِكَةُ النَّهَارِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह है। इसे अली बिन मुस्हिर ने भी आमश से बवास्ता सालेह, अबू हुरैरा (رضي الله عنه) और अबू सईद (رضي الله عنه) के ज़रिए नबी (صلى الله عليه وسلم) से रिवायत किया है।

यह हदीस हमें अली बिन हुज्र ने बवास्ता अली बिन मुस्हिर, आमश से इसी तरह रिवायत की है।

3136 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنِ السُّدِّيِّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي قَوْلِ اللهِ: {يَوْمَ نَدْعُو كُلَّ أُنَاسٍ بِإِمَامِهِمْ} قَالَ: يُدْعَى أَحَدُهُمْ فَيُعْطَى كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ، وَيُمَدُّ لَهُ فِي جِسْمِهِ سِتُّونَ ذِرَاعًا، وَيُبَيَّضُ وَجْهُهُ، وَيُجْعَلُ عَلَى رَأْسِهِ تَاجٌ مِنْ لُؤْلُؤٍ يَتَلَأْلَأُ، فَيَنْطَلِقُ إِلَى أَصْحَابِهِ فَيَرَوْنَهُ مِنْ بُعْدٍ فَيَقُولُونَ: اللَّهُمَّ ائْتِنَا بِهَذَا وَبَارِكْ لَنَا فِي هَذَا، حَتَّى يَأْتِيَهُمْ فَيَقُولُ لَهُمْ: أَبْشِرُوا لِكُلِّ رَجُلٍ مِنْكُمْ مِثْلُ هَذَا، قَالَ: وَأَمَّا الكَافِرُ فَيُسَوَّدُ وَجْهُهُ وَيُمَدُّ لَهُ فِي جِسْمِهِ سِتُّونَ ذِرَاعًا عَلَى صُورَةِ آدَمَ فَيُلْبَسُ تَاجًا، فَيَرَاهُ أَصْحَابُهُ فَيَقُولُونَ: نَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شَرِّ هَذَا، اللَّهُمَّ لَا تَأْتِنَا

3136 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) नबी करीम ?(صلى الله عليه وسلم) से अल्लाह तआला के फ़रमान " जिस दिन हम सब लोगों को उनके इमाम के साथ बुलाएंगे।" (आयत:71) के बारे में रिवायत करते हैं कि आप (صلى الله عليه وسلم) ने फ़रमाया, "एक आदमी बुलाया जाएगा फिर उसका नाम-ए-आमाल उसके दायें हाथ में रख दिया जाएगा, उसके जिस्म को साठ हाथ की लम्बाई दी जाएगी, उसके चेहरे को रोशन किया जाएगा और उसके सर पर मोतियों का ताज रखा जाएगा जो चमक रहा होगा फिर वह अपने साथियों के पास जाएगा वह दूर से ही उसे देख कर कहेंगे: ऐ अल्लाह हमें भी यही अता कर, और हमारे लिए इन में बरकत दे यहाँ तक कि वह उनके पास आकर उनसे कहेगा: ख़ुश हो जाओ, तुम में से हर आदमी के लिए इसी तरह का इक्राम है।" आप (صلى الله عليه وسلم) ने फ़रमाया, "रहा काफ़िर तो उसका चेहरा सियाह कर दिया जाएगा और आदम (عليه السلام) की तरह उसका जिस्म साठ हाथ लंबा कर दिया जाएगा, और उसे भी ताज पहनाया जाएगा, उसके साथी उसे देख कर कहेंगे: हम इसके शर से अल्लाह की पनाह चाहते हैं, और अल्लाह इसे हमारे पास न लाता

بِهَذَا، قَالَ: فَيَأْتِيهِمْ فَيَقُولُونَ: اللَّهُمَّ أَخْزِهِ، فَيَقُولُ: أَبْعَدَكُمُ اللَّهُ فَإِنَّ لِكُلِّ رَجُلٍ مِنْكُمْ مِثْلَ هَذَا.

वह उनके पास जाएगा तो वह कहेंगे: ऐ अल्लाह इसे दूर कर दे वह कहेगा, अल्लाह तुम्हें दूर करे तुम में से हर आदमी के लिए इसी तरह का सिला है।

ज़ईफुल इस्नाद:हाकिम:2/242, इब्ने हिब्बान:7349. अबू याला:6144. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफ़ा:827.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन ग़रीब है और सुद्दी का नाम इस्माईल बिन अब्दुर्रहमान है।

3137 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ دَاوُدَ بْنِ يَزِيدَ الزَّعَافِرِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي قَوْلِهِ: {عَسَى أَنْ يَبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَحْمُودًا} وَسُئِلَ عَنْهَا قَالَ: هِيَ الشَّفَاعَةُ.

3137 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से फ़रमाने बारी तआला:' "क़रीब है कि आप का रब आपको मक़ामे महमूद पर पहुंचाए।" (आयत:79) के बारे में पूछा गया तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "यह शफ़ाअत है।"

सहीह: अहमद:2/441. बैहक़ी: 5/484. अस-सिलसिला अस-सहीहा:2369.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन है और दाऊद ज़आफिरी यह दाऊद औदी बिन यज़ीद बिन अब्दुल्लाह ही हैं और यह अब्दुल्लाह बिन इदरीस के चचा थे।

3138 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ ابْنِ أَبِي نَجِيحٍ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنْ أَبِي مَعْمَرٍ، عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ: دَخَلَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَكَّةَ عَامَ الفَتْحِ وَحَوْلَ الكَعْبَةِ ثَلَاثُ مِائَةٍ وَسِتُّونَ نُصُبًا، فَجَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ يَطْعَنُهَا بِمِخْصَرَةٍ فِي يَدِهِ، وَرُبَّمَا قَالَ بِعُودٍ، وَيَقُولُ: {جَاءَ الحَقُّ وَزَهَقَ} البَاطِلُ إِنَّ البَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا {جَاءَ

3138 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि फ़तहे मक्का के साल रसूलुल्लाह (ﷺ) मक्का में दाख़िल हुए जब कि काबा के गिर्द तीन सौ साठ बुत थे, चुनाँचे नबी (ﷺ) अपने हाथ में पकड़ी हुई छड़ी उन्हें मारने लगे। रावी ने (मिख्सरा की जगह) ऊद (छड़ी) का लफ्ज़ भी ज़िक्र किया है, आप फ़रमा रहे थे: " कह दीजिए हक़ आ गया और बातिल मिट गया, बेशक बातिल मिटने वाला ही था।" (इस्रा:81) " हक़ आ गया और बातिल न

الحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ البَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ}.

पहली दफ़ा कुछ करता है और न ही दोबारा करता है।" (सबा:49)

बुख़ारी:2478. मुस्लिम:1781. अहमद:1/377.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह है। और इस बारे में इब्ने उमर (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

3139 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ قَابُوسَ بْنِ أَبِي ظَبْيَانَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَكَّةَ ثُمَّ أُمِرَ بِالهِجْرَةِ فَنَزَلَتْ عَلَيْهِ {وَقُلْ رَبِّ أَدْخِلْنِي مُدْخَلَ صِدْقٍ وَأَخْرِجْنِي مُخْرَجَ صِدْقٍ وَاجْعَلْ لِي مِنْ لَدُنْكَ سُلْطَانًا نَصِيرًا}.

3139 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) मक्का में थे, फिर आप को हिजरत का हुक्म हुआ, तो आप (ﷺ) पर यह आयत नाज़िल हुई: "और कहें ऐ मेरे रब दाख़िल कर मुझे सच्चा दाख़िल करना, और निकाल मुझे सच्चा निकालना और मेरे लिए अपनी तरफ़ से गलबा बना जो मददगार हो।" (आयत:80)

ज़ईफुल इस्नाद:अहमद:1/223. हाकिम:3/3. तबरानी:12618.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह है।

3140 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ زَكَرِيَّا بْنِ أَبِي زَائِدَةَ، عَنْ دَاوُدَ بْنِ أَبِي هِنْدَ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: قَالَتْ قُرَيْشٌ لِيَهُودَ: أَعْطُونَا شَيْئًا نَسْأَلُ هَذَا الرَّجُلَ، فَقَالَ: سَلُوهُ عَنِ الرُّوحِ، فَسَأَلُوهُ عَنِ الرُّوحِ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى {وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ العِلْمِ إِلاَّ قَلِيلاً}، قَالُوا: أُوتِينَا عِلْمًا كَثِيرًا أُوتِينَا التَّوْرَاةَ،

3140 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि कुरैश ने यहूदियों से कहा : हमें कोई चीज़ बताओ जिस के बारे में हम उस आदमी (मुहम्मद (ﷺ)) से पूछें, तो वह कहने लगे: तुम उस से रूह के बारे में पूछो, तो अल्लाह तआला ने यह आयत उतार दी "वह आप से रूह के बारे में पूछते हैं कह दीजिए रूह मेरे रब के हुक्म से है और तुम्हें इल्म में से बहुत थोड़े के अलावा कुछ नहीं दिया गया" (आयत:85) उन्होंने कहा: हमें बहुत बड़ा इल्म दिया गया है, हमें तौरात मिली है और जिसे तौरात मिली है उसे बहुत बड़ी भलाई नसीब हुई तब यह आयत नाज़िल हुई: " कह दीजिए:

وَمَنْ أُوتِيَ التَّوْرَاةَ فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيرًا، فَأُنْزِلَتْ {قُلْ لَوْ كَانَ البَحْرُ مِدَادًا لِكَلِمَاتِ رَبِّي لَنَفِدَ البَحْرُ} إِلَى آخِرِ الآيَةِ.

अगर समन्दर मेरे रब की बातों के लिए सियाही बन जाएँ तो यक़ीनन समन्दर ख़त्म हो जाएगा इस से पहले कि मेरे रब की बातें ख़त्म हों" (अल- कहफ़: 109)

सहीह: अहमद: 1/255. हाकिम:2/531. इब्ने हिब्बान:99. अबू याला:2501.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं : इस सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3141 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ خَشْرَمٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: كُنْتُ أَمْشِي مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حَرْثٍ بِالمَدِينَةِ وَهُوَ يَتَوَكَّأُ عَلَى عَسِيبٍ فَمَرَّ بِنَفَرٍ مِنَ اليَهُودِ، فَقَالَ بَعْضُهُمْ: لَوْ سَأَلْتُمُوهُ، فَقَالَ بَعْضُهُمْ: لاَ تَسْأَلُوهُ فَإِنَّهُ يُسْمِعُكُمْ مَا تَكْرَهُونَ، فَقَالُوا لَهُ: يَا أَبَا القَاسِمِ حَدِّثْنَا عَنِ الرُّوحِ، فَقَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَاعَةً وَرَفَعَ رَأْسَهُ إِلَى السَّمَاءِ فَعَرَفْتُ أَنَّهُ يُوحَى إِلَيْهِ حَتَّى صَعِدَ الوَحْيُ، ثُمَّ قَالَ: {الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ العِلْمِ إِلاَّ قَلِيلاً}.

3141 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (ﷺ) रिवायत करते हैं कि मैं नबी (ﷺ) के साथ मदीना के एक खेत में चल रहा था और आप(ﷺ) एक छड़ी पर सहारा लिये हुए थे, कि आप(ﷺ) यहूदियों के कुछ लोगों के पास से गुज़रे तो उन में से किसी ने कहा: अगर तुम उनसे कुछ पूछो तो बेहतर होगा बअ्ज़ ने कहा: उनसे मत पूछो वर्ना वह तुम्हें ऐसी बात सुनायेंगे जो तुम्हें नागवार होगी, फिर वह आप(ﷺ) से कहने लगे: ऐ अबुल कासिम आप रूह के मुताल्लिक़ बताएं, तो नबी (ﷺ) थोड़ी देर खड़े हुए और अपना सर आसमान की तरफ़ उठाया, मैं जान गया कि आप(ﷺ) पर वहि उतर रही है यहाँ तक कि वहि वापस हुई तो आप ने फ़रमाया, "रूह मेरे रब के हुक्म से है और तुम्हें बहुत थोड़ा इल्म दिया गया है।" (आयत:85)

बुख़ारी:125. मुस्लिम:2794. अहमद:1/389.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह है।

3142 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ مُوسَى، وَسُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، قَالاَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ

3142 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "क़यामत के दिन लोगों को तीन किस्मों में इकट्ठा कर के लाया जाएगा, एक क़िस्म के लोग

زَيْدٍ، عَنْ أَوْسِ بْنِ خَالِدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: يُحْشَرُ النَّاسُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ثَلَاثَةَ أَصْنَافٍ: صِنْفًا مُشَاةً، وَصِنْفًا رُكْبَانًا، وَصِنْفًا عَلَى وُجُوهِهِمْ. قِيلَ: يَا رَسُولَ اللهِ، وَكَيْفَ يَمْشُونَ عَلَى وُجُوهِهِمْ؟ قَالَ: إِنَّ الَّذِي أَمْشَاهُمْ عَلَى أَقْدَامِهِمْ قَادِرٌ عَلَى أَنْ يُمْشِيَهُمْ عَلَى وُجُوهِهِمْ، أَمَا إِنَّهُمْ يَتَّقُونَ بِوُجُوهِهِمْ كُلَّ حَدَبٍ وَشَوْكٍ.

पैदल दुसरे सवार और तीसरी क़िस्म के लोग चेहरों के बल होंगे। कहा गया: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! वह अपने चेहरों के बल कैसे चलेंगे? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "वह ज़ात जिस ने उन्हें उनके पाँव पर चलाया है यक़ीनन वह उन्हें उनके चेहरों के बल चलाने पर भी क़ादिर है। आगाह रहो कि वह अपने चेहरों के साथ ही हर बलंदी और कांटे से बचेंगे।"

ज़ईफ़: अहमद: 2/354. हियातुर्रूवात:5479.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन है और वहब ने भी ताऊस से उनके बाप के ज़रिए अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से और उन्होंने इसमें से कुछ हिस्सा नबी (ﷺ) से रिवायत किया है।।

3143 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا بَهْزُ بْنُ حَكِيمٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّكُمْ مَحْشُورُونَ رِجَالاً وَرُكْبَانًا وَتُجَرُّونَ عَلَى وُجُوهِكُمْ.

3143 - बहज़ बिन हकीम अपने बाप के ज़रिए अपने दादा से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम पैदल, सवार और अपने चेहरों के बल खींच कर मैदाने महशर में लाये जाओगे।"

हसन: तख़रीज के लिये देखिए हदीस नम्बर:2192. सहीहुत्तर्गीब:3582.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन है।

3144 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، وَيَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، وَأَبُو الْوَلِيدِ، وَاللَّفْظُ لَفْظُ يَزِيدَ وَالْمَعْنَى وَاحِدٌ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ صَفْوَانَ بْنِ عَسَّالٍ، أَنَّ يَهُودِيَّيْنِ قَالَ أَحَدُهُمَا لِصَاحِبِهِ: اذْهَبْ بِنَا إِلَى هَذَا النَّبِيِّ نَسْأَلُهُ، فَقَالَ: لاَ تَقُلْ لَهُ

3144 - सय्यदना सफ़वान बिन अस्साल मुरादी से रिवायत है कि दो यहूदी थे, उन में से एक ने अपने साथी से कहा: हमारे साथ उस नबी की तरफ़ चलो हम उस से कुछ पूछें, तो उस ने कहा: तुम उसे नबी न कहो, क्योंकि अगर उसने सुन लिया कि तु उसे नबी कह रहा है तो उसकी चार आँखें हो जायेंगी, फिर वह दोनों नबी (ﷺ) के पास आकर आप से अल्लाह तआला के फ़रमान: "और हम ने मूसा (عليه السلام) को दस

نَبِيٌّ فَإِنَّهُ إِنْ سَمِعَهَا تَقُولُ نَبِيٌّ كَانَتْ لَهُ أَرْبَعَةُ أَعْيُنٍ، فَأَتَيَا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَأَلَاهُ عَنْ قَوْلِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ {وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى تِسْعَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ} فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لاَ تُشْرِكُوا بِاللَّهِ شَيْئًا، وَلاَ تَزْنُوا، وَلاَ تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلاَّ بِالحَقِّ، وَلاَ تَسْرِقُوا، وَلاَ تَسْحَرُوا، وَلاَ تَمْشُوا بِبَرِيءٍ إِلَى سُلْطَانٍ فَيَقْتُلَهُ، وَلاَ تَأْكُلُوا الرِّبَا، وَلاَ تَقْذِفُوا مُحْصَنَةً، وَلاَ تَفِرُّوا مِنَ الزَّحْفِ،، شَكَّ شُعْبَةُ، وَعَلَيْكُمْ اليَهُودَ خَاصَّةً أَلاَّ تَعْتَدُوا فِي السَّبْتِ فَقَبَّلاَ يَدَيْهِ وَرِجْلَيْهِ وَقَالاَ: نَشْهَدُ أَنَّكَ نَبِيٌّ، قَالَ: فَمَا يَمْنَعُكُمَا أَنْ تُسْلِمَا؟ قَالاَ: إِنَّ دَاوُدَ دَعَا اللَّهَ، أَنْ لاَ يَزَالَ فِي ذُرِّيَّتِهِ نَبِيٌّ، وَإِنَّا نَخَافُ إِنْ أَسْلَمْنَا أَنْ تَقْتُلَنَا اليَهُودُ.

"वाज़ेह बातें दी थीं" (आयत: 101) के बारे में पूछा, तो अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम अल्लाह के साथ कुछ भी शरीक न करो, न ज़िना करो, उस जान को क़त्ल न करो जिसे अल्लाह ने हराम किया है सिवाए हक़ के, चोरी न करो, किसी बेगुनाह को हाकिम के पास न ले जाओ कि वह उसे क़त्ल कर दे, सूद न खाओ, किसी पाक दामन औरत पर तोहमत न लगाओ और मुठभेड़ की जंग से मत भागो, शोबा को शक है कि आप (ﷺ) ने यह भी फ़रमाया, "और ऐ यहूदियों! तुम्हारे लिए ख़ास हुक्म यह भी है कि तुम हफ़्ते के बारे में ज्यादती न करो, फिर इन दोनों ने आप (ﷺ) के हाथों और पावों को चूमा और कहने लगे: हम गवाही देते हैं कि आप नबी हैं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "फिर तुम्हें मुसलमान होने से क्या चीज़ रोकती है?" कहने लगे: दाऊद (عليه السلام) ने अल्लाह से दुआ की थी कि उनकी औलाद में हमेशा नबी रहे और हमें डर है कि हम अगर मुसलमान हो गए तो यहूदी हमें क़त्ल कर देंगे।

ज़ईफ़: तख़रीज के लिये देखिए हदीस नम्बर:2733.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन है।

3145 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ أَبِي بِشْرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، وَلَمْ يَذْكُرْ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، وَهُشَيْمٍ، عَنْ أَبِي بِشْرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، {وَلاَ تَجْهَرْ بِصَلاَتِكَ

3145 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं: और अपनी नमाज़ को बहुत बलंद आवाज़ से पढ़ो और न उसे पस्त करो" मक्का में नाज़िल हुई थी, रसूलुल्लाह (ﷺ) जब कुरआन को बलंद आवाज़ से पढ़ते तो मुश्रिकीन इस कुरआन के उतारने वाले और उसे लाने वाले को बुरा भला कहते, तो अल्लाह

وَلاَ تُخَافِتْ} بِهَا قَالَ: نَزَلَتْ بِمَكَّةَ كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا رَفَعَ صَوْتَهُ بِالْقُرْآنِ سَبَّهُ الْمُشْرِكُونَ وَمَنْ أَنْزَلَهُ وَمَنْ جَاءَ بِهِ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ {وَلاَ تَجْهَرْ بِصَلاَتِكَ} فَيُسَبَّ الْقُرْآنُ وَمَنْ أَنْزَلَهُ وَمَنْ جَاءَ بِهِ {وَلاَ تُخَافِتْ بِهَا} عَنْ أَصْحَابِكَ بِأَنْ تُسْمِعَهُمْ حَتَّى يَأْخُذُوا عَنْكَ الْقُرْآنَ.

तआला ने, और अपनी नमाज़ को बलंद न करें" नाजिल फ़रमाई कि काफिर कुरआन उसे उतारने वाले और लाने वाले को गालियाँ देते हैं" और न उसे पस्त करें" यानी अपने सहाबा से यानी उन्हें सुनाएँ यहाँ तक कि वह आप से कुरआन याद कर लें।

बुख़ारी:4722. मुस्लिम:446. अहमद:1/23.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह है।

3146 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو بِشْرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، فِي قَوْلِهِ: {وَلاَ تَجْهَرْ بِصَلاَتِكَ وَلاَ تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلاً} قَالَ: نَزَلَتْ وَرَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُخْتَفٍ بِمَكَّةَ، فَكَانَ إِذَا صَلَّى بِأَصْحَابِهِ رَفَعَ صَوْتَهُ بِالْقُرْآنِ، فَكَانَ الْمُشْرِكُونَ إِذَا سَمِعُوهُ شَتَمُوا الْقُرْآنَ وَمَنْ أَنْزَلَهُ وَمَنْ جَاءَ بِهِ، فَقَالَ اللَّهُ لِنَبِيِّهِ: {وَلاَ تَجْهَرْ بِصَلاَتِكَ} أَيْ بِقِرَاءَتِكَ، فَيَسْمَعَ الْمُشْرِكُونَ فَيَسُبَّ الْقُرْآنَ، {وَلاَ تُخَافِتْ بِهَا} عَنْ أَصْحَابِكَ {وَابْتَغِ بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلاً}.

3146 - सय्यदना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) आयत: " और अपनी नमाज़ को न बलंद आवाज़ से पढ़ और न उसे पस्त कर और इसके दर्मियान का रास्ता इख़्तियार कर" के बारे में फ़रमाते हैं: जब यह आयत नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) मक्का में छिप कर रहते थे और आप(ﷺ) जब अपने सहाबा को नमाज़ पढ़ाते बलंद आवाज़ से कुरआन पढ़ते, तो मुश्रिकीन कुरआन सुनकर कुरआन, इसे नाज़िल करने वाले और इसे लाने वाले को बुरा भला कहते, तो अल्लाह तआला ने अपने नबी से फ़रमाया, "और अपनी नमाज़ बलंद आवाज़ से न पढ़" यानी किरअत को' वर्ना मुश्रिकीन इसे सुनकर इस कुरआन को गाली देंगे" और न ही ज़्यादा पस्त आवाज़ करें" यानी अपने सहाबा से" और इसके दर्मियान कोई रास्ता तलाश करें।"

सहीह: तख़रीज इस से पहली हदीस में गुज़र चुकी है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह है।

3147 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مِسْعَرٍ، عَنْ عَاصِمِ بْنِ أَبِي النَّجُودِ، عَنْ زِرِّ بْنِ حُبَيْشٍ، قَالَ: قُلْتُ لِحُذَيْفَةَ بْنِ الْيَمَانِ: أَصَلَّى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي بَيْتِ الْمَقْدِسِ؟ قَالَ: لاَ، قُلْتُ: بَلَى، قَالَ: أَنْتَ تَقُولُ ذَاكَ يَا أَصْلَعُ، بِمَ تَقُولُ ذَلِكَ؟ قُلْتُ: بِالْقُرْآنِ. بَيْنِي وَبَيْنَكَ الْقُرْآنُ، فَقَالَ حُذَيْفَةُ: مَنْ احْتَجَّ بِالْقُرْآنِ فَقَدْ أَفْلَحَ.، قَالَ سُفْيَانُ: يَقُولُ فَقَدْ احْتَجَّ، وَرُبَّمَا قَالَ: قَدْ فَلَجَ، فَقَالَ: {سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلاً مِنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الأَقْصَى} قَالَ: أَفَتَرَاهُ صَلَّى فِيهِ؟ قُلْتُ: لاَ، قَالَ: لَوْ صَلَّى فِيهِ لَكُتِبَ عَلَيْكُمْ فِيهِ الصَّلاَةُ كَمَا كُتِبَتِ الصَّلاَةُ فِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ قَالَ حُذَيْفَةُ: قَدْ أُتِيَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِدَابَّةٍ طَوِيلَةِ الظَّهْرِ، مَمْدُودَةٍ. هَكَذَا خَطْوُهُ مَدُّ بَصَرِهِ، فَمَا زَايَلاَ ظَهْرَ الْبُرَاقِ حَتَّى رَأَيَا الْجَنَّةَ وَالنَّارَ وَوَعْدَ الآخِرَةِ أَجْمَعَ، ثُمَّ رَجَعَا عَوْدَهُمَا عَلَى بَدْئِهِمَا. قَالَ: وَيَتَحَدَّثُونَ أَنَّهُ رَبَطَهُ، لِمَ؟ لِيَفِرَّ مِنْهُ وَإِنَّمَا سَخَّرَهُ لَهُ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ.

3147 – ज़िर्र बिन हुबैश कहते हैं: मैंने हुज़ैफा बिन यमान (ﷺ) से पूछा क्या रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बैतूल मक्दिस में नमाज़ पढ़ी थी? उन्होंने कहा: नहीं, मैंने कहा: पढ़ी है। वह कहने लगे: ऐ गंजे तुम यह क्या कहते हो ? दलील है तुम्हारे पास? मैंने कहा: कुरआन, मेरे और आप के दर्मियान कुरआन फैसला करने वाला है, तो हुज़ैफा ने फ़रमाया “ जिस ने कुरआन से दलील ली वह कामियाब हुआ, सुफ़ियाना ने कहा है उसकी दलील मज़बूत हुई, और कभी यह भी कहा है कि वह मुराद को पहुंचा फिर जिर्र कहने लगे: वह ज़ात पाक है जिस ने रातों रात अपने बन्दे को मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक्सा तक सैर कराई” (आयत: 1) हुज़ैफा कहने लगे: क्या तुम देखते हो कि आप(ﷺ) ने इसमें नमाज़ पढ़ी? मैंने कहा: नहीं, तो उन्होंने फ़रमाया, “अगर आप(ﷺ) ने उस में नमाज़ पढ़ी होती तो तुम पर वहाँ नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ हो जाता जैसे मस्जिदे हराम में फ़र्ज़ है, हुज़ैफा कहते हैं: रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास एक लम्बी पुश्त वाला जानवर लाया गया, उसका क़दम इन्तिहाए नज़र तक उठता था, फिर वह (मुहम्मद (ﷺ) और जिब्रील (عليه السلام) दोनों उसकी पुश्त से न उतरे यहाँ तक कि उन्होंने जन्नत, दोज़ख और आख़िरत के वादे की तमाम चीजें देखीं, फिर वह वहीं पर लौट आए जहां से सफ़र शुरू किया था। हुज़ैफा कहते हैं: लोग यह बयान करते हैं कि आप (ﷺ) ने इसे बांधा था, किस लिए? ताकि भाग न जाए? उसे तो गैब और

हाज़िर चीज़ के जानने वाले ने आप(ﷺ) के ताबे किया था।

हसनुल इस्नाद: अहमद:5/387. हुमैदी:448. तयालिसी:411. अस- सिलसिला अस- सहीहा:874.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह है।

3148 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ زَيْدِ بْنِ جُدْعَانَ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَنَا سَيِّدُ وَلَدِ آدَمَ يَوْمَ القِيَامَةِ وَلاَ فَخْرَ، وَبِيَدِي لِوَاءُ الحَمْدِ وَلاَ فَخْرَ، وَمَا مِنْ نَبِيٍّ يَوْمَئِذٍ آدَمَ فَمَنْ سِوَاهُ إِلاَّ تَحْتَ لِوَائِي، وَأَنَا أَوَّلُ مَنْ تَنْشَقُّ عَنْهُ الأَرْضُ وَلاَ فَخْرَ، قَالَ: فَيَفْزَعُ النَّاسُ ثَلاَثَ فَزَعَاتٍ، فَيَأْتُونَ آدَمَ، فَيَقُولُونَ: أَنْتَ أَبُونَا آدَمُ فَاشْفَعْ لَنَا إِلَى رَبِّكَ، فَيَقُولُ: إِنِّي أَذْنَبْتُ ذَنْبًا أُهْبِطْتُ مِنْهُ إِلَى الأَرْضِ وَلَكِنْ ائْتُوا نُوحًا، فَيَأْتُونَ نُوحًا، فَيَقُولُ: إِنِّي دَعَوْتُ عَلَى أَهْلِ الأَرْضِ دَعْوَةً فَأُهْلِكُوا، وَلَكِنْ اذْهَبُوا إِلَى إِبْرَاهِيمَ، فَيَأْتُونَ إِبْرَاهِيمَ فَيَقُولُ: إِنِّي كَذَبْتُ ثَلاَثَ كَذِبَاتٍ، ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا مِنْهَا كَذِبَةٌ إِلاَّ مَا حَلَّ

3148 - अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "क़यामत के दिन मैं औलादे आदम का सरदार हूंगा इसमें फ़ख्र नहीं है, मेरे हाथ में हम्द का झंडा होगा लेकिन फ़ख्र नहीं है, आदम और बाक़ी तमाम नबी उस दिन मेरे झंडे के नीचे होंगे, और मैं वह पहला शख़्स हूँ जिस से ज़मीन फटेगी लेकिन फ़ख्र नहीं है।"

आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "लोग तीन दफा बहुत घबराएंगे फिर वह आदम (عليه السلام) के पास जाकर कहेंगे: आप हमारे बाप आदम हैं, आप अपने रब से हमारी सिफारिश कीजिए तो वह कहेंगे: मैंने एक गुनाह किया था जिसकी वजह से मुझे ज़मीन पर उतार दिया गया, तुम नूह (عليه السلام) के पास जाओ फिर नूह (عليه السلام) के पास आएंगे, तो वह कहेंगे मैंने ज़मीन वालों पर एक बद्दुआ की थी वह हलाक हो गए थे, तो तुम लोग इब्राहीम (عليه السلام) के पास जाओ तो वह लोग इब्राहीम (عليه السلام) के पास आएंगे तो वह कहेंगे: मैंने तीन झूठ बोले थे फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "उन में से जो भी झूठ था वह अल्लाह के दीन की ताईद के लिए ही था, बल्कि तुम मूसा (عليه السلام) के पास जाओ वह मूसा (عليه السلام) के पास जायेंगे, तो वह कहेंगे: मैंने एक

بِهَا عَنْ دِينِ اللَّهِ. وَلَكِنْ ائْتُوا مُوسَى، فَيَأْتُونَ مُوسَى، فَيَقُولُ: إِنِّي قَدْ قَتَلْتُ نَفْسًا، وَلَكِنْ ائْتُوا عِيسَى، فَيَأْتُونَ عِيسَى، فَيَقُولُ: إِنِّي عُبِدْتُ مِنْ دُونِ اللهِ، وَلَكِنْ ائْتُوا مُحَمَّدًا، قَالَ: فَيَأْتُونَنِي فَأَنْطَلِقُ مَعَهُمْ، قَالَ ابْنُ جُدْعَانَ: قَالَ أَنَسٌ: فَكَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: فَآخُذُ بِحَلْقَةِ بَابِ الجَنَّةِ فَأُقَعْقِعُهَا فَيُقَالُ: مَنْ هَذَا؟ فَيُقَالُ: مُحَمَّدٌ فَيَفْتَحُونَ لِي، وَيُرَحِّبُونَ بِي، فَيَقُولُونَ: مَرْحَبًا، فَأَخِرُّ سَاجِدًا، فَيُلْهِمُنِي اللَّهُ مِنَ الثَّنَاءِ وَالحَمْدِ، فَيُقَالُ لِي: ارْفَعْ رَأْسَكَ وَسَلْ تُعْطَ، وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ، وَقُلْ يُسْمَعْ لِقَوْلِكَ، وَهُوَ الْمَقَامُ الْمَحْمُودُ الَّذِي قَالَ اللَّهُ {عَسَى أَنْ يَبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَحْمُودًا} قَالَ سُفْيَانُ: لَيْسَ عَنْ أَنَسٍ، إِلاَّ هَذِهِ الكَلِمَةُ. فَآخُذُ بِحَلْقَةِ بَابِ الجَنَّةِ فَأُقَعْقِعُهَا.

जान को क़त्ल किया था तुम ईसा (عليه السلام) के पास जाओ, फिर वह ईसा (عليه السلام) के पास आयेंगे तो वह कहेंगे: अल्लाह को छोड़ कर मेरी इबादत की गई थी तुम मुहम्मद (ﷺ) के पास जाओ" आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "फिर वह मेरे पास आयेंगे तो मैं उनके साथ चल दूंगा।" इब्ने जुदआन कहते हैं अनस (رضي الله عنه) ने फ़रमाया, "गोया मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) को देख रहा हूँ, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "फिर मैं जन्नत के दरवाज़े का कुंडा (हल्क़ा) पकड़ कर उसे खटखटाउंगा, कहा जाएगा कौन है? कहा जाएगा: मुहम्मद (ﷺ), तो वह मेरे लिए खोल कर मुझे ख़ुश आमदेद कहेंगे वह कहेंगे मर्हबा तो मैं सज्दे में गिर जाउंगा" फिर अल्लाह तआला मुझे हम्दो सना के क़लिमात का इल्हाम करेगा, फिर मुझ से कहा जाएगा अपना सर उठाइए, मांगें आप को दिया जाएगा, सिफ़ारिश करें कुबूल होगी और बात कहें सुनी जाएगी, यही मकामे महमूद है जिस के बारे में अल्लाह तआला फ़र्माता है " क़रीब है कि आपका रब आप को मकामे महमूद पर फ़ाइज़ करे।" (आयत:79) सुफ़ियान कहते हैं: अनस (رضي الله عنه) से सिर्फ यही क़लिमा मर्वी है कि फिर मैं जन्नत के दरवाज़े का हल्क़ा पकड़ कर उसे खटखटाउंगा।

सहीह: अहमद:2/3. इब्ने माजह:4308. अस-सिलसिला अस-सहीहा:1571. सहीहुत्तर्गीब:3643.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह है। और बअ़ज़ ने बवास्ता अबू नज़रा इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) से लम्बी हदीस बयान की है।

19 - तफ़सीर सूरह कहफ़।

3149 - सईद बिन जुबैर (رحمه الله) बयान करते हैं कि मैंने अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) से कहा: नौफ़ बिकाली का कहना है कि बनी इस्राईल के मूसा, खिज़्र के साथ रहने वाले मूसा नहीं थे। उन्होंने फ़रमाया, अल्लाह के दुश्मन ने झूठ बोला है, मैंने उबय बिन काब (رضي الله عنه) से सुना कहते हैं: मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: " मूसा (عليه السلام) ख़ुत्बा देने के लिए इस्राइल में खड़े हुए तो उन से पूछा गया सब से बड़ा आलिम कौन है? वह कहने लगे: मैं ही सब से बड़ा आलिम हूँ, चुनाँचे अल्लाह तआला ने उन्हें डांटा कि इल्म की निस्बत उसकी तरफ़ क्यों नहीं की, फिर अल्लाह तआला ने उनकी तरफ़ वहि की मेरे बन्दों में से एक बन्दा दो समन्दरों के जमा होने की जगह पर है वह तुझ से बड़ा आलिम है, मूसा (عليه السلام) ने अर्ज़ की : ऐ मेरे रब! मैं उस तक कैसे पहुंचूं? तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया, "एक टोकरे में एक मछली रख लो, फिर जहां मछली गुम हो जाएगी वह वहीं होगा, वह चल दिये और उनके साथ उनके ख़ादिम यूशा बिन नून भी गए, मूसा (عليه السلام) ने एक टोकरे में एक मछली रखी, वह और उनके ख़ादिम चलते रहे यहाँ तक कि जब वह एक चट्टान के पास पहुंचे तो मूसा और उनके ख़ादिम सो गए, मछली टोकरे में उछलने लगी यहाँ तक कि टोकरे से बाहर निकल कर समन्दर में जा गिरी, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने वहाँ पानी का बहाव रोक दिया यहाँ तक कि वह एक ताक की

19 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الكَهْفِ

3149 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، قَالَ: قُلْتُ لِابْنِ عَبَّاسٍ: إِنَّ نَوْفًا البِكَالِيَّ يَزْعُمُ أَنَّ مُوسَى صَاحِبَ بَنِي إسرائيل لَيْسَ بِمُوسَى صَاحِبِ الخَضِرِ، قَالَ: كَذَبَ عَدُوُّ اللهِ، سَمِعْتُ أُبَيَّ بْنَ كَعْبٍ، يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: قَامَ مُوسَى خَطِيبًا فِي بني إسرائيل، فَسُئِلَ: أَيُّ النَّاسِ أَعْلَمُ؟ فَقَالَ: أَنَا أَعْلَمُ، فَعَتَبَ اللَّهُ عَلَيْهِ إِذْ لَمْ يَرُدَّ العِلْمَ إِلَيْهِ، فَأَوْحَى اللَّهُ إِلَيْهِ أَنَّ عَبْدًا مِنْ عِبَادِي بِمَجْمَعِ البَحْرَيْنِ هُوَ أَعْلَمُ مِنْكَ، قَالَ: أَيْ رَبِّ، فَكَيْفَ لِي بِهِ؟ فَقَالَ لَهُ: احْمِلْ حُوتًا فِي مِكْتَلٍ فَحَيْثُ تَفْقِدُ الحُوتَ فَهُوَ ثَمَّ، فَانْطَلَقَ وَانْطَلَقَ مَعَهُ فَتَاهُ وَهُوَ يُوشَعُ بْنُ نُونٍ فَجَعَلَ مُوسَى حُوتًا فِي مِكْتَلٍ، فَانْطَلَقَ هُوَ وَفَتَاهُ يَمْشِيَانِ حَتَّى إِذَا أَتَيَا الصَّخْرَةَ، فَرَقَدَ مُوسَى وَفَتَاهُ فَاضْطَرَبَ الحُوتُ فِي المِكْتَلِ حَتَّى خَرَجَ

مِنَ الْمِكْتَلِ فَسَقَطَ فِي الْبَحْرِ، قَالَ: وَأَمْسَكَ اللَّهُ عَنْهُ جِرْيَةَ الْمَاءِ، حَتَّى كَانَ مِثْلَ الطَّاقِ وَكَانَ لِلْحُوتِ سَرَبًا. وَكَانَ لِمُوسَى وَلِفَتَاهُ عَجَبًا، فَانْطَلَقَا بَقِيَّةَ يَوْمِهِمَا وَلَيْلَتِهِمَا وَنُسِّيَ صَاحِبُ مُوسَى أَنْ يُخْبِرَهُ، فَلَمَّا أَصْبَحَ مُوسَى {قَالَ لِفَتَاهُ آتِنَا غَدَاءَنَا لَقَدْ لَقِينَا مِنْ سَفَرِنَا هَذَا نَصَبًا} قَالَ: وَلَمْ يَنْصَبْ حَتَّى جَاوَزَ الْمَكَانَ الَّذِي أُمِرَ بِهِ {قَالَ أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ الحُوتَ وَمَا أَنْسَانِيهُ إِلاَّ الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ وَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ عَجَبًا} قَالَ مُوسَى {ذَلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ فَارْتَدَّا عَلَى آثَارِهِمَا قَصَصًا} قَالَ: فَكَانَا يَقُصَّانِ آثَارَهُمَا، قَالَ سُفْيَانُ: يَزْعُمُ نَاسٌ أَنَّ تِلْكَ الصَّخْرَةَ عِنْدَهَا عَيْنُ الحَيَاةِ وَلاَ يُصِيبُ مَاؤُهَا مَيِّتًا إِلاَّ عَاشَ، قَالَ: وَكَانَ الحُوتُ قَدْ أُكِلَ مِنْهُ، فَلَمَّا قُطِرَ عَلَيْهِ الْمَاءُ عَاشَ، قَالَ: فَقَصَّا آثَارَهُمَا حَتَّى أَتَيَا الصَّخْرَةَ، فَرَأَى رَجُلاً مُسَجًّى عَلَيْهِ بِثَوْبٍ، فَسَلَّمَ عَلَيْهِ مُوسَى، فَقَالَ: أَنَّى بِأَرْضِكَ السَّلاَمُ؟ قَالَ: أَنَا مُوسَى، قَالَ: مُوسَى بَنِي

तरह बन गया यह मछली के लिए तो रास्ता था लेकिन मूसा और उनके ख़ादिम के लिए ताज्जुबखेज़ चीज़ थी, फिर वह दोनों बकिया दिन और रात चलते रहे और मूसा का साथी उन्हें बताना भूल गया,चुनाँचे फिर जब सुबह हुई तो मूसा (عليه السلام) ने अपने ख़ादिम से कहा: हमारा दिन का खाना लाओ, बेशक हम ने इस सफ़र से बड़ी थकावट पाई है।" (आयत:62) आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "उन्हें थकावट महसूस न हुई यहाँ तक कि उस जगह से आगे निकल गए जहां का हुक्म दिया गया था उस खादिम ने कहा: आप ने देखा जब हम उस चट्टान के पास जा कर ठहरे थे तो बेशक मैं मछली भूल गया और मुझे वह नहीं भुलाई ,मगर शैतान ने कि मैं उसका ज़िक्र करूं और उस ने अपना रास्ता समन्दर में अजीब तरह से बना लिया।" (आयत:63) मूसा (عليه السلام) ने कहा: यही तो हम तलाश कर रहे थे चुनाँचे वह दोनों अपने क़दमों के निशानों पर पीछा करते हुए वापस लौटे" (आयत:64) आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "फिर वह दोनों अपने क़दमों के निशान तलाश करने लगे। " सुफ़ियान कहते हैं कि लोगों का ख्याल है कि उसी चट्टान के पास आबे हयात का चश्मा है, उस पानी का किसी मुर्दा पर लगे तो वह ज़िन्दा हो जाता है मजीद फ़रमाया, "और उस मछली से भी कुछ हिस्सा खा लिया गया था फिर जब उसका पानी क़तरा टपका तो वह ज़िंदा हो गई।" आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "फिर उन दोनों ने अपने क़दमों के निशान तलाश किए यहाँ तक कि चट्टान के पास आ गए, तो एक आदमी देखा जिस

إسرائيل؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: يَا مُوسَى إِنَّكَ عَلَى عِلْمٍ مِنْ عِلْمِ اللهِ عَلَّمَكَهُ اللَّهُ لاَ أَعْلَمُهُ، وَأَنَا عَلَى عِلْمٍ مِنْ عِلْمِ اللهِ عَلَّمَنِيهِ لاَ تَعْلَمُهُ، فَقَالَ مُوسَى: {هَلْ أَتَّبِعُكَ عَلَى أَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا قَالَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلَى مَا لَمْ تُحِطْ بِهِ خُبْرًا قَالَ سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ صَابِرًا وَلاَ أَعْصِي لَكَ أَمْرًا} قَالَ لَهُ الخَضِرُ: {فَإِنْ اتَّبَعْتَنِي فَلاَ تَسْأَلْنِي عَنْ شَيْءٍ حَتَّى أُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا} قَالَ: نَعَمْ، فَانْطَلَقَ الخَضِرُ وَمُوسَى يَمْشِيَانِ عَلَى سَاحِلِ البَحْرِ، فَمَرَّتْ بِهِمَا سَفِينَةٌ فَكَلَّمَاهُمْ أَنْ يَحْمِلُوهُمَا فَعَرَفُوا الخَضِرَ فَحَمَلُوهُمَا بِغَيْرِ نَوْلٍ فَعَمَدَ الخَضِرُ إِلَى لَوْحٍ مِنْ أَلْوَاحِ السَّفِينَةِ فَنَزَعَهُ، فَقَالَ لَهُ مُوسَى: قَوْمٌ حَمَلُونَا بِغَيْرِ نَوْلٍ فَعَمَدْتَ إِلَى سَفِينَتِهِمْ فَخَرَقْتَهَا {لِتُغْرِقَ أَهْلَهَا لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا إِمْرًا قَالَ أَلَمْ أَقُلْ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا قَالَ لاَ تُؤَاخِذْنِي بِمَا نَسِيتُ وَلاَ تُرْهِقْنِي مِنْ أَمْرِي عُسْرًا} ثُمَّ خَرَجَا مِنَ السَّفِينَةِ فَبَيْنَمَا هُمَا يَمْشِيَانِ عَلَى السَّاحِلِ

के ऊपर कपड़ा लिपटा हुआ था मूसा (عليه السلام) ने उसे सलाम कहा तो उस ने कहा: तुम्हारे इस मुल्क में सलाम (सलामती) कहाँ है? कहा मैं मूसा हूँ, उस ने कहा: बनी इस्राईल का मूसा? कहा हाँ, उस ने कहा: ऐ मूसा तुम उस इल्म पर हो जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है मैं उसे नहीं जानता, और मुझे अल्लाह की तरफ़ से वह इल्म है जो तुम नहीं जानते तो मूसा (عليه السلام) कहने लगे: क्या मैं तुम्हारे साथ चलूँ इस शर्त पर कि तुम्हें जो कुछ सिखाया गया है उस में से कुछ भलाई मुझे सिखा दो।" उस (खिज्र) ने कहा: " बेशक तु मेरे साथ हरगिज़ न सब्र कर सकेगा, और तु उस पर कैसे सब्र करेगा जिसे तूने पूरी तरह इल्म में नहीं लिया, उस (मूसा عليه السلام) ने कहा: अगर अल्लाह ने चाहा तो तू ज़रूर मुझे सब्र करने वाला पाएगा और मैं तेरे किसी हुक्म की नाफ़रमानी नहीं करूंगा" खिज्र ने उस से कहा: " फिर अगर तू मेरे पीछे चला है तो मुझ पर किसी चीज़ के बारे में मत पूछना, यहाँ तक कि मैं तेरे लिए उसका कुछ ज़िक्र शुरू करूं" (आयत:66-70) उन्होंने कहा ठीक है। फिर खिज्र और मूसा साहिले समन्दर पर चले जा रहे थे कि उनके पास एक कश्ती गुज़री, तो उन्होंने उन से बात की कि वह उन दोनों को बिठा लें, उन्होंने खिज्र को पहचान लिया और उन दोनों को किराए के बगैर ही सवार कर लिया, फिर खिज्र ने कश्ती की तख्तियों में से एक तख्ती की तरफ़ क़सद किया उसे उखाड़ दिया तो मूसा (عليه السلام) ने उन से कहा: इन लोगों ने बगैर किराया सवार किया तुमने उनकी कश्ती में सूराख कर दिया है।" ताकि उसके सवारों को गर्क़

وَإِذَا غُلَامٌ يَلْعَبُ مَعَ الغِلْمَانِ فَأَخَذَ الخَضِرُ بِرَأْسِهِ فَاقْتَلَعَهُ بِيَدِهِ، فَقَتَلَهُ، قَالَ لَهُ مُوسَى: {أَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةً بِغَيْرِ نَفْسٍ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا نُكْرًا قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا} قَالَ: وَهَذِهِ أَشَدُّ مِنَ الأُولَى {قَالَ إِنْ سَأَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَهَا فَلاَ تُصَاحِبْنِي قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَدُنِّي عُذْرًا فَانْطَلَقَا حَتَّى إِذَا أَتَيَا أَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطْعَمَا أَهْلَهَا فَأَبَوْا أَنْ يُضَيِّفُوهُمَا فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ أَنْ يَنْقَضَّ} يَقُولُ: مَائِلٌ، فَقَالَ الخَضِرُ بِيَدِهِ هَكَذَا {فَأَقَامَهُ} فَقَالَ لَهُ مُوسَى: قَوْمٌ أَتَيْنَاهُمْ فَلَمْ يُضَيِّفُونَا وَلَمْ يُطْعِمُونَا {لَوْ شِئْتَ لاَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ أَجْرًا قَالَ هَذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ سَأُنَبِّئُكَ بِتَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا} قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَرْحَمُ اللَّهُ مُوسَى لَوَدِدْنَا أَنَّهُ كَانَ صَبَرَ حَتَّى يَقُصَّ عَلَيْنَا مِنْ أَخْبَارِهِمَا. قَالَ: وَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الأُولَى كَانَتْ مِنْ مُوسَى نِسْيَانٌ. وَقَالَ: وَجَاءَ عُصْفُورٌ حَتَّى وَقَعَ عَلَى حَرْفِ السَّفِينَةِ ثُمَّ نَقَرَ فِي البَحْرِ،

कर दे बिलाशुब्हा तुम बहुत बुरे काम को आए हो" उसने कहा: क्या मैंने यह नहीं कहा था कि यक़ीनन तुम मेरे साथ हरगिज़ न सब्र कर सकेगा, मूसा(عليه السلام) ने कहा : मुझे इस पर न पकड़ो मैं भूल गया और मुझे मेरे मामले में किसी मुश्किल में न फंसा (आयत:71- 73) फिर वह दोनों कश्ती से निकल के साहिले समन्दर पर चल रहे थे कि अचानक बच्चों के साथ खेलता हुआ एक बच्चा देखा तो खिज्र ने उसका सर पकड़ कर उसे अपने हाथ के साथ मरोड़कर उसे मार डाला, तो मूसा(عليه السلام) उस से कहने लगे: क्या तूने एक बेगुनाह जान को किसी जान के बदले के बगैर क़त्ल कर दिया? बिलाशुब्हा तू एक बहुत बुरे काम को आया है" उस ने कहा: क्या मैंने तुझ से नहीं कहा था? कि तू मेरे साथ हरगिज़ सब्र न कर सकेगा" आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "यह काम (क़त्ल करना) पहले से भी ज़्यादा हैरान कुन था" मूसा (عليه السلام) ने कहा अगर मैं तुझ से इस के बाद किसी चीज़ के मुताल्लिक़ पूछूं तो मुझे साथ न रखना, यक़ीनन तू मेरी तरफ़ से पूरे उज्र को पहुँच चुका है, फिर वह दोनों चले, यहाँ तक कि जब वह एक बस्ती वालों के पास आए उन्होंने उसके रहने वालों से खाना तलब किया, तो उन्होंने उनकी मेहमान नवाजी करने से इन्कार कर दिया, फिर उन्होंने उस बस्ती में एक दीवार पाई जो चाहती थी कि गिर जाए, यानी झुकी हुई थी तो खिज्र ने अपने हाथ से उसे खड़ा कर दिया तो मूसा (عليه السلام) ने उस से कहा:हम इन लोगों के पास आये इन लोगों ने न हमारी मेहमान नवाजी की न हमें खाना

فَقَالَ لَهُ الخَضِرُ: مَا نَقَصَ عِلْمِي وَعِلْمُكَ مِنْ عِلْمِ اللهِ إِلاَّ مِثْلُ مَا نَقَصَ هَذَا العُصْفُورُ مِنَ البَحْرِ قَالَ سَعِيدُ بْنُ جُبَيْرٍ: وَكَانَ يَعْنِي ابْنَ عَبَّاسٍ، يَقْرَأُ: وَكَانَ أَمَامَهُمْ مَلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ صَالِحَةٍ غَصْبًا وَكَانَ يَقْرَأُ: وَأَمَّا الغُلاَمُ فَكَانَ كَافِرًا.

खिलाया "अगर तू चाहता तो ज़रूर इस पर कुछ उज्रत ले लेता, (खिज़्र ने) कहा: अब मेरे और तुम्हारे दर्मियान जुदाई है अन्क़रीब मैं तुझे इसकी असल हक़ीक़त बताउंगा जिस पर तू सब्र नहीं कर सका। (आयत:74- 78) रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला मूसा (عليه السلام) पर रहम करे हम तो चाहते थे कि वह सब्र करते और वह हम पर उन दोनों का किस्सा बयान करता" रावी कहता है: कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "पहली दफ़ा मूसा (عليه السلام) ने भूल कर बात की थी" और आप (ﷺ) ने फ़रमाया:" उस के पास एक चिड़िया आई यहाँ तक की वह कश्ती के किनारे पर बैठ गई, फिर उस ने समन्दर में चोंच भरी तो खिज़्र ने कहा:' मेरे और तेरे इल्म ने अल्लाह के इल्म से उतना ही कम किया है जितना इस चिड़िया ने समन्दर से पानी कम किया है।" सईद बिन जुबैर कहते हैं: इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) पढ़ा करते थे : وكان أمامهم ملك ياخذ كل سفينة صالحة غصبا और उनके आगे एक बादशाह था जो उम्दा कश्ती को हथिया लेता और वह و أما الغلام فكان كافرا और बच्चा काफ़िर था पढ़ते थे।

बुख़ारी:122. मुस्लिम:2380. अबू दाऊद:3984. अहमद:5/ 116.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह है और इसे अबू इस्हाक़ हम्दानी ने सईद बिन जुबैर से बवास्ता इब्ने अब्बास उबय बिन काब (رضي الله عنه) के ज़रिए नबी (ﷺ) से रिवायत किया है जबकि इसे ज़ोहरी ने उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उत्बा से बवास्ता इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) उबय बिन काब (رضي الله عنه) के ज़रिए नबी (ﷺ) से रिवायत किया है।

अबू मजाहिम, समरकंदी अली बिन मदीनी का कौल बयान करते हैं कि: मैंने सिर्फ इसीलिए एक हज किया कि सुफ़ियान से वह सुन सकूँ जो वह इस हदीस में बात बयान करते थे यहाँ तक कि मैंने उन से सुना

वह कहते थे: हमें अम्र बिन दीनार ने बयान किया हालांकि इससे पहले भी मैंने सुफ़ियान से सुना था इसमें उन्होंने इस चीज़ का ज़िक्र नहीं किया था।

3150 - सय्यदना उबय बिन काब (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिस लड़के को ख़िज़्र (عليه السلام) ने क़त्ल किया था, वह काफ़िर पैदा हुआ था।"[1]

मुस्लिम:2380. अबू दाऊद:4705. तयालिसी:538.

3150 - حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو قُتَيْبَةَ سَلْمُ بْنُ قُتَيْبَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الجَبَّارِ بْنُ الْعَبَّاسِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنْ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: الغُلَامُ الَّذِي قَتَلَهُ الخَضِرُ طُبِعَ يَوْمَ طُبِعَ كَافِرًا.

तौज़ीह: طبع यहाँ خلق और ولد। (पैदा किया गया) के माना में है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3151 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "(ख़िज़्र) को ख़िज़्र का नाम इसलिए दिया गया कि वह एक खुश्क ज़मीन पर बैठे तो वह उसके नीचे से सब्ज़े के साथ लहलहाने लगी।"

बुख़ारी:3402. अहमद:2/312.

3151 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: إِنَّمَا سُمِّيَ الْخَضِرَ لأَنَّهُ جَلَسَ عَلَى فَرْوَةٍ بَيْضَاءَ فَاهْتَزَّتْ تَحْتَهُ خَضْرَاءَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3152 - सय्यदना अबू दर्दा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने अल्लाह के फ़रमान "और उस दीवार के पीछे उन दोनों यतीम बच्चों का खजाना था।" (अल- कहफ़:72) के बारे में फ़रमाया, "सोना और चांदी थी।"

ज़ईफ़ जिद्दा: बुख़ारी फी तारीख़िही कबीर:8/3357.

3152 - حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ فُضَيْلٍ الجَزَرِيُّ، وَغَيْرُ وَاحِدٍ قَالُوا: حَدَّثَنَا صَفْوَانُ بْنُ صَالِحٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ يُوسُفَ الصَّنْعَانِيِّ، عَنْ مَكْحُولٍ، عَنْ أُمِّ الدَّرْدَاءِ، عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي قَوْلِهِ: {وَكَانَ تَحْتَهُ كَنْزٌ لَهُمَا} قَالَ: ذَهَبٌ وَفِضَّةٌ.

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं: हमें हसन बिन अली अल खल्लाल ने सफ़वान बिन सालेह से वह कहते हैं हमें वलीद बिन मुस्लिम ने यज़ीद बिन यूसुफ़ सनआनी से बवास्ता यज़ीद बिन यज़ीद बिन जाबिर, मक्हूल से इसी संमद के साथ ऐसे ही हदीस बयान की है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस ग़रीब है।

3153 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، وَغَيْرُ وَاحِدٍ الْمَعْنَى وَاحِدٌ وَاللَّفْظُ لِابْنِ بَشَّارٍ، قَالُوا: حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عَبْدِ الْمَلِكِ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي رَافِعٍ، عَنْ حَدِيثِ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي السَّدِّ قَالَ: يَحْفِرُونَهُ كُلَّ يَوْمٍ، حَتَّى إِذَا كَادُوا يَخْرِقُونَهُ قَالَ الَّذِي عَلَيْهِمْ: ارْجِعُوا فَسَتَخْرِقُونَهُ غَدًا، فَيُعِيدُهُ اللَّهُ كَأَشَدِّ مَا كَانَ، حَتَّى إِذَا بَلَغَ مُدَّتَهُمْ وَأَرَادَ اللَّهُ أَنْ يَبْعَثَهُمْ عَلَى النَّاسِ. قَالَ الَّذِي عَلَيْهِمْ: ارْجِعُوا فَسَتَخْرِقُونَهُ غَدًا إِنْ شَاءَ اللَّهُ وَاسْتَثْنَى، قَالَ: فَيَرْجِعُونَ فَيَجِدُونَهُ كَهَيْئَتِهِ حِينَ تَرَكُوهُ فَيَخْرِقُونَهُ، فَيَخْرُجُونَ عَلَى النَّاسِ، فَيَسْتَقُونَ الْمِيَاهَ، وَيَفِرُّ النَّاسُ مِنْهُمْ، فَيَرْمُونَ بِسِهَامِهِمْ فِي السَّمَاءِ فَتَرْجِعُ مُخَضَّبَةً بِالدِّمَاءِ، فَيَقُولُونَ: قَهَرْنَا مَنْ فِي الْأَرْضِ وَعَلَوْنَا مَنْ فِي السَّمَاءِ، قَسْوَةً وَعُلُوًّا، فَيَبْعَثُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ نَغَفًا فِي

3153 - . सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने दीवार (जो ज़ुलक़र्नैन ने बनाई थी उस) के बारे में फ़रमाया, "वह (याजूज व माजूज) उसे हर रोज़ खोदते हैं यहाँ तक कि वह उसे फाड़ने के क़रीब होते हैं तो उनका हाकिम कहता है: वापस चले जाओ कल इसे गिरा देंगे, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "फिर अल्लाह तआला उसे पहले से भी बड़ी बना देता है, यहाँ तक कि जब उनकी मुद्दत पूरी हो जाएगी और अल्लाह उन्हें लोगों पर भेजने का इरादा करेगा तो उनका हाकिम कहेगा, वापस लौट जाओ कल इंशा अल्लाह कर लोगे वह इंशा अल्लाह कहेगा, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "वह लौट जायेंगे फिर वह अगले रोज़ उसी हालत पर पाएंगे जिस पर छोड़ा होगा चुनाँचे वह उसे फ़ाड़ कर लोगों पर निकलेंगे तो तमाम पानी पी जायेंगे और लोग उन से डर कर भागेंगे फिर वह अपने तीर आसमान की तरफ़ छोड़ेंगे, वह खून आलूद हो कर वापस आयेंगे तो दिल की सख्ती की वजह से कहेंगे: हम ने ज़मीन वालों को ज़ेर किया और आसमान वालों पर भी चढ़ाई की, फिर अल्लाह तआला उनकी गर्दनों में एक कीड़ा पैदा कर देगा, तो वह हलाक हो जाएंगे" आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "उस ज़ात की क़सम जिस के हाथ में मुहम्मद

أَقْفَائِهِمْ فَيَهْلِكُونَ، فَوَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ إِنَّ دَوَابَّ الأَرْضِ تَسْمَنُ وَتَبْطَرُ وَتَشْكَرُ شَكْرًا مِنْ لُحُومِهِمْ.

(ﷺ) की जान है! यक़ीनन ज़मीन के जानवर उनका गोश्त खाकर मोटे हो जाएंगे और मटकते फिरेंगे, अल्लाह का बहुत शुक्र करेंगे।

सहीह: इब्ने माजह:4080. अहमद:2/510. हाकिम:4/288.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रहिमहुल्लाह) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इस अंदाज़ से सिर्फ इसी सनद के साथ ही जानते हैं।

3154 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ وَغَيْرُ وَاحِدٍ، قَالُوا: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَكْرٍ الْبُرْسَانِيُّ، عَنْ عَبْدِ الْحَمِيدِ بْنِ جَعْفَرٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي، عَنِ ابْنِ مِينَاءَ، عَنْ أَبِي سَعْدِ بْنِ أَبِي فَضَالَةَ الأَنْصَارِيِّ، وَكَانَ مِنَ الصَّحَابَةِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: إِذَا جَمَعَ اللَّهُ النَّاسَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لِيَوْمٍ لاَ رَيْبَ فِيهِ، نَادَى مُنَادٍ: مَنْ كَانَ أَشْرَكَ فِي عَمَلٍ عَمِلَهُ لِلَّهِ أَحَدًا فَلْيَطْلُبْ ثَوَابَهُ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللهِ فَإِنَّ اللَّهَ أَغْنَى الشُّرَكَاءِ عَنِ الشِّرْكِ.

3154 - सय्यदना अबू सईद बिन अबी फ़ज़ाला (रज़ियल्लाहु अन्हु) जिनका शुमार सहाबा में होता है बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: " जब अल्लाह तआला कयामत के दिन जिस में कोई शक नहीं है, लोगों को जमा करेगा तो एक ऐलान करने वाला आवाज़ देगा: जिसने किसी अमल में जो अल्लाह के लिए किया था किसी दुसरे को शरीक किया है, तो वह उसका सवाब भी गैरुल्लाह के पास तलाश करे अल्लाह तआला शिर्क से तमाम शरीकों से बढ़कर बेज़ार है।"

हसन: इब्ने माजह:4203. अहमद:3/466. इब्ने हिब्बान:6250.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रहिमहुल्लाह) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे मुहम्मद बिन बक्र के तरीक़ से ही जानते हैं।

20 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ مَرْيَمَ

20 - तफ़सीर सूरह मरियम।

3155 - حَدَّثَنَا أَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالاَ: حَدَّثَنَا ابْنُ إِدْرِيسَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ وَائِلٍ، عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ، قَالَ: بَعَثَنِي رَسُولُ

3155 - सय्यदना मुग़ीरा बिन शोबा (रज़ियल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे नज़रान की तरफ़ भेजा तो वहाँ के रहने वाले लोगों ने मुझ से कहा: क्या तुम ऐसे नहीं पढ़ते "ऐ हारून की बहन! (मरियम:28) हालांकि

اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى نَجْرَانَ، فَقَالُوا لِي: أَلَسْتُمْ تَقْرَءُونَ {يَا أُخْتَ هَارُونَ} وَقَدْ كَانَ بَيْنَ عِيسَى وَمُوسَى مَا كَانَ، فَلَمْ أَدْرِ مَا أُجِيبُهُمْ. فَرَجَعْتُ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَأَخْبَرْتُهُ، فَقَالَ: أَلاَ أَخْبَرْتَهُمْ أَنَّهُمْ كَانُوا يُسَمُّونَ بِأَنْبِيَائِهِمْ وَالصَّالِحِينَ قَبْلَهُمْ.

मूसा और ईसा (عليهما السلام) के दर्मियान कितना फ़ासला है? चुनाँचे मैं नहीं जानता था कि उन्हें क्या जवाब दूं, फिर नबी (ﷺ) की तरफ़ लौटा आपको यह बात बताई आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुमने उन्हें यह क्यों न बताया कि वह लोग अपने अंबिया और अपने से पहले सालिहीन के नामों पर नाम रखते थे।"

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है हम इसे इब्ने इदरीस की सनद से ही जानते हैं।

3156 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا النَّضْرُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ أَبُو الْمُغِيرَةِ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، قَالَ: قَرَأَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ {وَأَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الحَسْرَةِ} قَالَ: يُؤْتَى بِالمَوْتِ كَأَنَّهُ كَبْشٌ أَمْلَحُ حَتَّى يُوقَفَ عَلَى السُّورِ بَيْنَ الجَنَّةِ وَالنَّارِ، فَيُقَالُ: يَا أَهْلَ الجَنَّةِ فَيَشْرَئِبُّونَ، وَيُقَالُ: يَا أَهْلَ النَّارِ فَيَشْرَئِبُّونَ، فَيُقَالُ: هَلْ تَعْرِفُونَ هَذَا؟ فَيَقُولُونَ: نَعَمْ، هَذَا الْمَوْتُ، فَيُضْجَعُ فَيُذْبَحُ، فَلَوْلاَ أَنَّ اللَّهَ قَضَى لأَهْلِ الجَنَّةِ الحَيَاةَ وَالبَقَاءَ، لَمَاتُوا فَرَحًا، وَلَوْلاَ أَنَّ اللَّهَ قَضَى لأَهْلِ النَّارِ الحَيَاةَ فِيهَا وَالبَقَاءَ، لَمَاتُوا تَرَحًا.

3156 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने आयत "और उन्हें हश्र के दिन से डराइये" (आयत:39) पढ़ कर फ़रमाया, "मौत को एक चित्कबरे मेंढे की शक्ल में लाकर जन्नत और दोज़ख के दर्मियान एक दीवार पर खड़ा कर दिया जायेगा फिर कहा जाएगा: ऐ जन्नतियों! वे सर उठा कर देखेंगे और कहा जायेगा: ऐ दोज़खियो! तो वे भी सर उठा कर देखेंगे फिर कहा जाएगा क्या तुम इसे पहचानते हो? तो वे कहेंगे: हाँ यह तो मौत है, फिर उस मेंढे को लिटा कर ज़बह कर दिया जाएगा, अगर अल्लाह तआला ने जन्नतियों के लिए उस जन्नत में ज़िंदगी और हमेशगी का फैसला न किया होता तो वह खुशी से मर जाएँ और अगर अल्लाह ने जहन्नमियों के लिए उस में ज़िंदगी और हमेशगी का फैसला न किया हो तो गम से मर जाएँ।"

बुख़ारी:4730. मुस्लिम:2849. अहमद:2/423.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह है।

3157 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الحُسَيْنُ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، عَنْ قَتَادَةَ، فِي قَوْلِهِ: {وَرَفَعْنَاهُ مَكَانًا عَلِيًّا}، قَالَ: حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، أَنَّ نَبِيَّ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَمَّا عُرِجَ بِي رَأَيْتُ إِدْرِيسَ فِي السَّمَاءِ الرَّابِعَةِ.

3157 - क़तादा (ﷺ) फ़रमाने बारी तआला: "और हम ने उस इदरीस (ﷺ) को बलंद जगह बिठाया " (आयत:57) के बारे में बयान करते हैं हमें अनस बिन मालिक (ﷺ) ने बताया कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब मुझे मेराज कराया गया मैंने इदरीस (ﷺ) को चौथे आसमान में देखा था।"

मुस्लिम:162. अहमद:3/260. अबू याला:2914.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह है। और इस बारे में अबू सईद (ﷺ) भी नबी (ﷺ) से रिवायत करते हैं।

नीज़ सईद बिन अबी अरूबा, हम्माम और दीगर लोगों ने भी क़तादा से बवास्ता अनस बिन मालिक (ﷺ), मालिक बिन सासा (ﷺ) से नबी (ﷺ) की मेराज वाली हदीस मुकम्मल की है और मेरे मुताबिक यह हदीस इस हदीस का इख़्तिसार है।

3158 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَعْلَى بْنُ عُبَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ ذَرٍّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لِجِبْرِيلَ: مَا يَمْنَعُكَ أَنْ تَزُورَنَا أَكْثَرَ مِمَّا تَزُورُنَا؟ قَالَ: فَنَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةَ {وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلاَّ بِأَمْرِ رَبِّكَ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا} إِلَى آخِرِ الآيَةِ.

3158 - अब्दुल्लाह बिन अब्बास (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जिब्रील (ﷺ) से कहा: "जितना तुम हम से मिलते हो इससे भी ज़्यादा मिलने से तुम्हें क्या चीज़ रोकती है? तो यह आयत नाज़िल हुई "और हम आपके रब के हुक्म से ही उतरते हैं जो कुछ हमारे आगे और हमारे पीछे है वह उसी का है।" (आयत:64)

बुख़ारी:3218. अहमद: 231. हाकिम:2/611.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन ग़रीब है। हमें हुसैन बिन हारिस ने बवास्ता वकीअ उमर बिन ज़िर्र से इसी तरह हदीस रिवायत की है।

3159 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنِ السُّدِّيِّ، قَالَ: سَأَلْتُ مُرَّةَ الهَمْدَانِيَّ، عَنْ قَوْلِ

3159 - सुद्दी कहते हैं मैंने मुर्रा हम्दानी से अल्लाह तआला के फ़रमान: " और तुम में से जो भी है उस जहन्नम पर वारिद होने वाला है।" (आयत:71) के बारे में पूछा,तो उन्होंने मुझे

اللهِ عَزَّ وَجَلَّ: {وَإِنْ مِنْكُمْ إِلاَّ وَارِدُهَا} فَحَدَّثَنِي أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ مَسْعُودٍ، حَدَّثَهُمْ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَرِدُ النَّاسُ النَّارَ ثُمَّ يَصْدُرُونَ مِنْهَا بِأَعْمَالِهِمْ، فَأَوَّلُهُمْ كَلَمْحِ البَرْقِ، ثُمَّ كَالرِّيحِ، ثُمَّ كَحُضْرِ الفَرَسِ، ثُمَّ كَالرَّاكِبِ فِي رَحْلِهِ، ثُمَّ كَشَدِّ الرَّجُلِ، ثُمَّ كَمَشْيِهِ.

बताया कि सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) ने उन्हें बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "लोग जहन्नम पर वारिद होंगे फिर अपने आमाल के मुताबिक़ वहाँ से गुज़र जायेंगे, उन में पहला बिजली की चमक की तरह, फिर हवा की तरह, फिर घोड़े के दौड़ने की तरह फिर ऊँट सवार की तरह, फिर आदमी के दौड़ने की तरह और फिर उस की आम चाल की तरह गुजरेंगे।"

सहीह: अहमद:1/433. हाकिम:2/375. दारमी:2813. अस-सिलसिला अस-सहीहा: 311.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन है इसे शोबा ने भी सुद्दी से रिवायत किया है।जो कि मर्फ़ू नहीं है।

3160 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ السُّدِّيِّ، عَنْ مُرَّةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، {وَإِنْ مِنْكُمْ إِلاَّ وَارِدُهَا} قَالَ: يَرِدُونَهَا ثُمَّ يَصْدُرُونَ بِأَعْمَالِهِمْ.

3160 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) " और तुम में से हर कोई उस पर वारिद होने वाला है।" के बारे में फ़रमाते हैं: लोग उस पर वारिद होंगे फिर वहाँ से आमाल के मुताबिक़ आगे गुज़र जाएंगे।

सहीह: मौकूफ़ मर्फ़ू के हुक्म में है। तबरी फ़ी तफ़्सीर:16/111. सहीहुत्तर्गीब:3630.

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं: हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने, उन्हें अब्दुर्रहमान बिन महदी ने बवास्ता शोबा, सुद्दी से इसी तरह हदीस बयान की है। अब्दुर्रहमान कहते हैं: मैंने शोबा से कहा कि इस्राईल ने मुझे सुद्दी से बवास्ता मुर्रा, अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) से नबी (ﷺ) की हदीस बयान की है, तो शोबा कहने लगे: मैंने भी सुद्दी से मर्फ़ू ही सुनी है लेकिन मैं इसे जान बूझकर छोड़ता हूँ।

3161 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ العَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ سُهَيْلِ بْنِ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى

3161 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब अल्लाह तआला किसी बन्दे से मोहब्बत करता है तो जिब्रील को आवाज़ देता है कि मैं फुलां आदमी से मोहब्बत करता हूँ तुम भी उस से

اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِذَا أَحَبَّ اللَّهُ عَبْدًا نَادَى جِبْرِيلَ: إِنِّي قَدْ أَحْبَبْتُ فُلاَنًا فَأَحِبَّهُ، قَالَ: فَيُنَادِي فِي السَّمَاءِ، ثُمَّ تَنْزِلُ لَهُ الْمَحَبَّةُ فِي أَهْلِ الأَرْضِ، فَذَلِكَ قَوْلُ اللهِ: {إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَنُ وُدًّا}، وَإِذَا أَبْغَضَ اللَّهُ عَبْدًا نَادَى جِبْرِيلَ: إِنِّي قَدْ أَبْغَضْتُ فُلاَنًا، فَيُنَادِي فِي السَّمَاءِ ثُمَّ تَنْزِلُ لَهُ البَغْضَاءُ فِي الأَرْضِ.

मोहब्बत करो, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "फिर वह आसमान में ऐलान करता है फिर उस शख़्स के लिए ज़मीन में मोहब्बत उतार दी जाती है, यही अल्लाह का फ़रमान है, " वह लोग जो ईमान लाये और अच्छे आमाल किए रहमान उनके लिए मोहब्बत पैदा कर देगा।" (आयत: 96) और जब अल्लाह तआला किसी बन्दे से नफ़रत करता है तो जिब्रील को आवाज़ देकर कहता है कि मुझे फुलां शख़्स से नफ़रत है तो वह आसमान में ऐलान कर देता है फिर उस के लिए ज़मीन में नफरत उतार दी जाती है।"

बुख़ारी:3209.मुस्लिम:2637. अहमद:2/ 267.मालिक:2006

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह है और अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन दीनार से उनके बाप के ज़रिए भी अबू सालेह बवास्ता अबू हुरैरा (رضي الله عنه), नबी (ﷺ) से इसी तरह हदीस मर्वी है।

3162 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي الضُّحَى، عَنْ مَسْرُوقٍ، قَالَ: سَمِعْتُ خَبَّابَ بْنَ الأَرَتِّ، يَقُولُ: جِئْتُ العَاصَ بْنَ وَائِلٍ السَّهْمِيَّ أَتَقَاضَاهُ حَقًّا لِي عِنْدَهُ، فَقَالَ: لاَ أُعْطِيكَ حَتَّى تَكْفُرَ بِمُحَمَّدٍ فَقُلْتُ: لاَ، حَتَّى تَمُوتَ ثُمَّ تُبْعَثَ، قَالَ: وَإِنِّي لَمَيِّتٌ ثُمَّ مَبْعُوثٌ فَقُلْتُ: نَعَمْ. فَقَالَ: إِنَّ لِي هُنَاكَ مَالاً وَوَلَدًا فَأَقْضِيكَ. فَنَزَلَتْ: {أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ بِآيَاتِنَا وَقَالَ لأُوتَيَنَّ مَالاً وَوَلَدًا} الآيَةَ.

3162 - सय्यदना खब्बाब बिन अरत (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैं आस बिन वाइल के पास अपना हक़ मांगने गया तो वह कहने लगा: जब तक तुम मुहम्मद के साथ कुफ्र न करो मैं तुम्हें नहीं दूंगा, मैंने कहा: नहीं, यहाँ तक कि तू मर जाए फिर तुम्हें उठाया जाए। वह कहने लगा: क्या मरने के बाद मुझे दोबारा उठाया जाएगा? मैंने कहा: हाँ , तो उस ने कहा: वहाँ मेरे पास माल और औलाद होगी तो मैं तुम्हें दे दूंगा, चुनाँचे यह आयत नाज़िल हुई "क्या तूने उस शख़्स को देखा जिसने हमारी आयात का इन्कार किया और कहा मुझे ज़रूर माल और औलाद दी जाएगी।" (आयत: 77)

बुख़ारी:2091. मुस्लिम:2795. अहमद:5/ 110.

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं: हमें हन्नाद ने बवास्ता अबू मुआविया, आमश से इसी तरह की हदीस बयान की है। इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह है।

21 - तफ़सीर सूरह ताहा।

21 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ طه

3163 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) बयान करते हैं जब रसूलुल्लाह (ﷺ) खैबर से लौटे तो आप रात भर चलते रहे यहाँ तक कि आप को नींद आने लगी, आप ने पड़ाव किया फिर फ़रमाया, "ऐ बिलाल! आज रात तुम हमारे लिए जागते रहना।" बिलाल ने नमाज़ पढ़ी और अपनी सवारी की तरफ़ टेक लगा कर फज्र की तरफ़ बैठ गए, फिर उन पर भी उनकी आँखें ग़ालिब आ गई वह भी सो गए उन में से कोई भी बेदार न हो सका, और सब से पहले नबी (ﷺ) बेदार हुए आप ने फ़रमाया, "ऐ बिलाल! (क्या बना?) तो बिलाल कहने लगे: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! आप पर मेरे मां बाप कुर्बान हों मेरी रूह को भी उस ने पकड़ लिया था जिस ने आपकी रूह को पकड़ा था। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जानवरों को हांक कर ले चलो, फिर आप ने ऊँट बिठाया वुज़ू किया, इक़ामत कहलवाई फिर वक़्त पर अदा की जाने वाली नमाज़ की तरह ठहर ठहर कर नमाज़ पढ़ाई, फिर आप ने यह आयत पढ़ी: "और मेरी याद के लिए नमाज़ कायम कर।" (आयत: 16)

मुस्लिम:680. अबू दाऊद:435. इब्ने माजह:697. निसाई:618. 620.

3163 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا النَّضْرُ بْنُ شُمَيْلٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا صَالِحُ بْنُ أَبِي الأَخْضَرِ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: لَمَّا قَفَلَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ خَيْبَرَ أَسْرَى لَيْلَةً حَتَّى أَدْرَكَهُ الكَرَى أَنَاخَ فَعَرَّسَ، ثُمَّ قَالَ: يَا بِلَالُ اكْلَأْ لَنَا اللَّيْلَةَ، قَالَ: فَصَلَّى بِلَالٌ، ثُمَّ تَسَانَدَ إِلَى رَاحِلَتِهِ مُسْتَقْبِلَ الفَجْرِ، فَغَلَبَتْهُ عَيْنَاهُ فَنَامَ، فَلَمْ يَسْتَيْقِظْ أَحَدٌ مِنْهُمْ، وَكَانَ أَوَّلَهُمْ اسْتِيقَاظًا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: أَيْ بِلَالُ، فَقَالَ بِلَالٌ: بِأَبِي أَنْتَ يَا رَسُولَ اللهِ، أَخَذَ بِنَفْسِي الَّذِي أَخَذَ بِنَفْسِكَ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: اقْتَادُوا، ثُمَّ أَنَاخَ فَتَوَضَّأَ فَأَقَامَ الصَّلَاةَ. ثُمَّ صَلَّى مِثْلَ صَلَاتِهِ لِلْوَقْتِ فِي تَمَكُّثٍ، ثُمَّ قَالَ: {وَأَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِي}.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस ग़ैर महफ़ूज़ है इसे कई हुफ्फाज़ ने जोहरी से बवास्ता सईद बिन मुसय्यब से रिवायत किया है कि नबी (ﷺ)....आखिर। और इसमें अबू हुरैरा

Sherkhan
9825 696 131

(رضی اللہ عنہ) का ज़िक्र नहीं है नीज़ सालेह बिन अबी अखज़र हदीस में ज़ईफ़ है उसे यह्या बिन सईद वगैरह ने हाफिजा की वजह से ज़ईफ कहा है।

22 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الأَنْبِيَاءِ

22 - तफ़सीर सूरह अंबिया।

3164 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ مُوسَى، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ لَهِيعَةَ، عَنْ دَرَّاجٍ، عَنْ أَبِي الهَيْثَمِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: الوَيْلُ وَادٍ فِي جَهَنَّمَ يَهْوِي فِيهِ الكَافِرُ أَرْبَعِينَ خَرِيفًا قَبْلَ أَنْ يَبْلُغَ قَعْرَهُ.

3164 - सय्यदना अबू सईद (رضی اللہ عنہ) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "वैल जहन्नम में एक वादी है जिस में काफिर चालीस साल तक उस के गढ़े में पहुँचने से पहले गिरता रहेगा।"

ज़ईफ़: तख़रीज के लिये देखिए हदीस नम्बर:2576. जईफुत्तर्गीब:2136.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं : यह हदीस ग़रीब है और हम इसे इब्ने लहीया की सनद से ही मर्फू जानते हैं।

3165 - حَدَّثَنَا مُجَاهِدُ بْنُ مُوسَى البَغْدَادِيُّ، وَالفَضْلُ بْنُ سَهْلٍ الأَعْرَجُ، وَغَيْرُ وَاحِدٍ قَالُوا: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ غَزْوَانَ أَبُو نُوحٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا لَيْثُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ رَجُلاً قَعَدَ بَيْنَ يَدَيِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّ لِي مَمْلُوكِينَ يُكَذِّبُونَنِي وَيَخُونُونَنِي وَيَعْصُونَنِي، وَأَشْتُمُهُمْ وَأَضْرِبُهُمْ فَكَيْفَ أَنَا مِنْهُمْ؟ قَالَ: يُحْسَبُ مَا خَانُوكَ وَعَصَوْكَ وَكَذَّبُوكَ وَعِقَابُكَ إِيَّاهُمْ، فَإِنْ كَانَ عِقَابُكَ إِيَّاهُمْ بِقَدْرِ ذُنُوبِهِمْ كَانَ كَفَافًا، لاَ لَكَ وَلاَ عَلَيْكَ، وَإِنْ كَانَ عِقَابُكَ

3165 - सय्यदा आयशा (رضی اللہ عنہا) से रिवायत है कि एक आदमी नबी (ﷺ) के सामने बैठ कर कहने लगा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मेरे कुछ गुलाम, हैं जो मुझे झूठलाते, मेरी ख़यानत करते और मेरी नाफ़रमानी करते हैं और मैं उन्हें गाली देता और मारता हूँ, तो मेरा उन से कैसे हिसाब होगा? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "उनका तेरी ख़यानत, नाफ़रमानी, तकज़ीब करना और तेरे सज़ा देने को शुमार किया जाएगा, अगर तुम्हारा सज़ा देना उनके गुनाहों के बराबर हुआ तो यह पूरा पूरा बदला होगा न तुम्हारे लिए कुछ होगा न ही तुम्हारे ज़िम्मे अगर तुम्हारा उन्हें सज़ा देना उनके गुनाहों से कम हुआ तो वह तुम्हारे लिए ज़ायद होगा लेकिन अगर तुम्हारा उन्हें सज़ा देना उन के जुर्म से ज़्यादा हुआ तो बाक़ी मांदा का तुम से हिसाब लिया

إِيَّاهُمْ دُونَ ذُنُوبِهِمْ كَانَ فَضْلاً لَكَ، وَإِنْ كَانَ عِقَابُكَ إِيَّاهُمْ فَوْقَ ذُنُوبِهِمْ اقْتُصَّ لَهُمْ مِنْكَ الفَضْلُ. قَالَ: فَتَنَحَّى الرَّجُلُ فَجَعَلَ يَبْكِي وَيَهْتِفُ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَمَا تَقْرَأُ كِتَابَ اللهِ {وَنَضَعُ الْمَوَازِينَ القِسْطَ لِيَوْمِ القِيَامَةِ فَلاَ تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَإِنْ كَانَ مِثْقَالَ} الآيَةَ. فَقَالَ الرَّجُلُ: وَاللَّهِ يَا رَسُولَ اللهِ مَا أَجِدُ لِي وَلَهُمْ شَيْئًا خَيْرًا مِنْ مُفَارَقَتِهِمْ، أُشْهِدُكَ أَنَّهُمْ أَحْرَارٌ كُلُّهُمْ

जाएगा।," रावी ने कहा: वह आदमी एक तरफ़ होकर रोने और दहाड़ें मारने लगा तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या तू किताबुल्लाह नहीं पढ़ता? " और हम क़यामत के दिन ऐसे तराजू रखेंगे जो ऐन इन्साफ के होंगे, फिर किसी शख़्स पर कुछ भी ज़ुल्म नहीं किया जाएगा" (आयत:47) तो वह आदमी कहने लगा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मैं अपने और उन के लिए उन्हें छोड़ देने से बेहतर कोई चीज़ नहीं पाता, मैं आप को गवाह बनाता हूँ कि वह सब आज़ाद हैं।

सहीहुल इस्नाद: अहमद:6/280. सहीहुत्तर्गीब:2290.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस ग़रीब है हम इसे अब्दुर्रहमान बिन ग़जवान के तरीक़ से ही जानते हैं नीज़ अहमद बिन हंबल (رحمه الله) ने भी अब्दुर्रहमान बिन ग़जवान से इस हदीस को रिवायत किया है।

3166 - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ يَحْيَى الأُمَوِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَمْ يَكْذِبْ إِبْرَاهِيمُ فِي شَيْءٍ قَطُّ إِلاَّ فِي ثَلاَثٍ: قَوْلِهِ: {إِنِّي سَقِيمٌ} وَلَمْ يَكُنْ سَقِيمًا، وَقَوْلُهُ: لِسَارَةَ أُخْتِي، وَقَوْلِهِ: {بَلْ فَعَلَهُ كَبِيرُهُمْ هَذَا}.

3166 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "इब्राहीम (عليه السلام) ने तीन चीजों के अलावा कभी भी किसी चीज़ में झूठ नहीं बोला: उनकी बात मैं बीमार हूँ" (अस्साफ़्फ़ात:89) हालांकि वह बीमार नहीं थे, उनका सारा को अपनी बहन कहना और यह कहना कि "यह बुतों को तोड़ने वाला काम उनके उस बड़े ने किया है।" (अंबिया:63)

वज़ाहत: यह हदीस एक और सनद से भी बवास्ता अबू हुरैरा (رضي الله عنه) नबी करीम (ﷺ) से मर्वी है इसे बवास्ता इब्ने इस्हाक़, अबू ज़िनाद से ग़रीब तसव्वुर किया जाता है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह है।

3167 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، وَوَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ، وَأَبُو دَاوُدَ، قَالُوا: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ النُّعْمَانِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: قَامَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالمَوْعِظَةِ فَقَالَ: يَا أَيُّهَا النَّاسُ، إِنَّكُمْ مَحْشُورُونَ إِلَى اللهِ عُرَاةً غُرْلاً، ثُمَّ قَرَأَ {كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ وَعْدًا عَلَيْنَا} إِلَى آخِرِ الآيَةِ. قَالَ: أَوَّلُ مَنْ يُكْسَى يَوْمَ القِيَامَةِ إِبْرَاهِيمُ، وَإِنَّهُ سَيُؤْتَى بِرِجَالٍ مِنْ أُمَّتِي فَيُؤْخَذُ بِهِمْ ذَاتَ الشِّمَالِ، فَأَقُولُ: رَبِّ أَصْحَابِي، فَيُقَالُ: إِنَّكَ لاَ تَدْرِي مَا أَحْدَثُوا بَعْدَكَ، فَأَقُولُ كَمَا قَالَ العَبْدُ الصَّالِحُ: {وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَا دُمْتُ فِيهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتَ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ وَأَنْتَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ إِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ وَإِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ} إِلَى آخِرِ الآيَةِ، فَيُقَالُ: هَؤُلاَءِ لَمْ يَزَالُوا مُرْتَدِّينَ عَلَى أَعْقَابِهِمْ مُنْذُ فَارَقْتَهُمْ.

3167 - अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) वअज़ करने के लिए खड़े हुए तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ लोगो! तुम अल्लाह की तरफ़ नंगे बदन और बग़ैर ख़तना इकट्ठे किए जाओगे, फिर आप(ﷺ) ने आयत पढ़ी: " जैसे हम ने पहली मर्तबा पैदा किया उसी तरह लौटाएंगे।" (आयत: 104) आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "क़यामत के दिन सब से पहले इब्राहीम (عليه السلام) को लिबास दिया जाएगा, और मेरी उम्मत के कुछ लोगों को लाया जाएगा फिर उन्हें बाएं जानिब से पकड़ लिया जाएगा, तो मैं कहूंगा: ऐ मेरे रब! यह मेरे उम्मती हैं, तो कहा जाएगा: आप नहीं जानते कि इन्होंने आप के बाद क्या नए काम किए, तो मैं ऐसे ही कहूंगा जैसे नेक बन्दे ईसा (عليه السلام) ने कहा था "और मैं उन पर गवाह था जब तक मैं उन में रहा फिर जब तूने मुझे उठा लिया तो तूही उन पर निगरां था और तू हर चीज़ का गवाह है अगर उन्हें अज़ाब दे तो बेशक यह तेरे बन्दे हैं और अगर तू इन्हें बख्श दे तो बेशक तूही सब पर ग़ालिब, कमाल हिकमत वाला है। (अल- माइदा: 117- 118) तो जवाब में कहा जाएगा : जब से इन्हें आप(ﷺ) ने छोड़ा है यह अपनी एड़ियों के बल फिरते रहे।

सहीह: तख़रीज के देखिए हदीस नम्बर:2423.

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं: हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने मुहम्मद बिन जाफ़र से बवास्ता शोबा, मुग़ीरा बिन नौमान से ऐसे ही रिवायत किया है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह है। इसे सुफ़ियान सौरी ने भी मुग़ीरा बिन नौमान से इसी तरह रिवायत किया है।

23 - तफ़सीर सूरह हज।

3168 - सय्यदना इमरान बिन हुसैन (رضي الله عنه) से रिवायत है कि जब आयात "ऐ लोगो! अपने रब से डरो, बेशक क़यामत का ज़लज़ला बहुत बड़ी चीज़ है, से लेकर "लेकिन अल्लाह का अज़ाब सख़्त होगा" (हज: 1- 2) नाज़िल हुई,तो उस वक़्त आप सफ़र में थे नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या तुम जानते हो कि यह कौन सा दिन होगा? लोगों ने कहा : अल्लाह और उसके रसूल ही बेहतर जानते हैं। आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "यह वह दिन होगा जिस दिन अल्लाह तआला आदम (عليه السلام) से कहेंगे जहन्नम का हिस्सा निकालो, वह कहेंगे ऐ मेरे रब! जहन्नम का हिस्सा कितना है? अल्लाह फ़रमाएगा नौ सौ निन्नानवे (999) जहन्नम में और एक जन्नत में" रावी कहते हैं : लोगों ने रोना शुरू कर दिया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह की कुर्बत तलाश करो और म्यानारवी तलाश करो जो भी नबुव्वत गुजरी है उस से पहले जाहिलियत थी। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "यह तादाद जाहिलियत के लोगों से ली जाएगी अगर पूरी हो गई तो ठीक वर्ना मुनाफिकीन से मुकम्मल होगी और तुम्हारी और दूसरी उम्मतों की मिसाल जानवर के पाँव में सियाह तिल या ऊँट के पहलू में एक तिल की तरह है" फिर आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "मुझे उम्मीद है कि तुम अहले जन्नत का चौथा हिस्सा होगे" तो सहाबा ने अल्लाहु अकबर कहा। फिर

23 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الحَجِّ

3168 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ ابْنِ جُدْعَانَ، عَنِ الحَسَنِ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا نَزَلَتْ {يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمْ إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ}، إِلَى قَوْلِهِ: {وَلَكِنَّ عَذَابَ اللهِ شَدِيدٌ}، قَالَ: أُنْزِلَتْ عَلَيْهِ هَذِهِ الآيَةُ وَهُوَ فِي سَفَرٍ، فَقَالَ: أَتَدْرُونَ أَيُّ يَوْمٍ ذَلِكَ؟ فَقَالُوا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، قَالَ: ذَلِكَ يَوْمَ يَقُولُ اللَّهُ لِآدَمَ: ابْعَثْ بَعْثَ النَّارِ، فَقَالَ: يَا رَبِّ وَمَا بَعْثُ النَّارِ؟ قَالَ: تِسْعُ مِائَةٍ وَتِسْعَةٌ وَتِسْعُونَ إِلَى النَّارِ وَوَاحِدٌ إِلَى الجَنَّةِ، قَالَ: فَأَنْشَأَ الْمُسْلِمُونَ يَبْكُونَ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: قَارِبُوا وَسَدِّدُوا، فَإِنَّهَا لَمْ تَكُنْ نُبُوَّةٌ قَطُّ إِلاَّ كَانَ بَيْنَ يَدَيْهَا جَاهِلِيَّةٌ، قَالَ: فَيُؤْخَذُ العَدَدُ مِنَ الجَاهِلِيَّةِ فَإِنْ تَمَّتْ وَإِلاَّ كَمُلَتْ مِنَ الْمُنَافِقِينَ وَمَا مَثَلُكُمْ وَالأُمَمِ إِلاَّ كَمَثَلِ الرَّقْمَةِ فِي ذِرَاعِ الدَّابَّةِ أَوْ كَالشَّامَةِ فِي جَنْبِ البَعِيرِ، ثُمَّ قَالَ: إِنِّي لأَرْجُو أَنْ تَكُونُوا رُبُعَ أَهْلِ الجَنَّةِ فَكَبَّرُوا، ثُمَّ قَالَ:

إِنِّي لأَرْجُو أَنْ تَكُونُوا ثُلُثَ أَهْلِ الجَنَّةِ فَكَبَّرُوا، ثُمَّ قَالَ: إِنِّي لأَرْجُو أَنْ تَكُونُوا نِصْفَ أَهْلِ الجَنَّةِ فَكَبَّرُوا قَالَ: وَلاَ أَدْرِي؟ قَالَ: الثُّلُثَيْنِ أَمْ لاَ؟.

आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "मुझे उम्मीद है कि तुम अहले जन्नत का निस्फ़ होगे" तो लोगों ने अल्लाहु अकबर कहा। रावी कहते हैं: मुझे इल्म नहीं कि आप ने दो तिहाई का ज़िक्र किया था या नहीं।

ज़ईफुल इस्नाद:अहमद:4/432. हाकिम:1/28. हुमैदी:831. तयालिसी:835.

तौज़ीह: أرقمة : चौपाये की कोहनी के अन्दर पैदा होने वाला सियाह दाग (अल-मोजमुल वसीत:प.434)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह है। नीज़ कई और तुरूक़ (सनदों) से बवास्ता इमरान बिन हुसैन (رضي الله عنه) नबी (ﷺ) से हदीस मर्वी है।

3169 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ أَبِي عَبْدِ اللهِ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنِ الحَسَنِ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ، قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سَفَرٍ فَتَفَاوَتَ بَيْنَ أَصْحَابِهِ فِي السَّيْرِ فَرَفَعَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَوْتَهُ بِهَاتَيْنِ الآيَتَيْنِ {يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمْ إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ، إِلَى قَوْلِهِ: {وَلَكِنَّ عَذَابَ اللهِ شَدِيدٌ} فَلَمَّا سَمِعَ ذَلِكَ أَصْحَابُهُ حَثُّوا الْمَطِيَّ وَعَرَفُوا أَنَّهُ عِنْدَ قَوْلٍ يَقُولُهُ، فَقَالَ: هَلْ تَدْرُونَ أَيُّ يَوْمٍ ذَلِكَ؟ قَالُوا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، قَالَ: ذَلِكَ يَوْمٌ يُنَادِي اللَّهُ فِيهِ آدَمَ فَيُنَادِيهِ رَبُّهُ فَيَقُولُ: يَا آدَمُ ابْعَثْ بَعْثَ النَّارِ، فَيَقُولُ: أَيْ رَبِّ، وَمَا

3169 - सय्यदना इमरान बिन हुसैन (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि हम नबी (ﷺ) के साथ सफ़र पर थे आप के सहाबा चलने में आगे पीछे हो गए थे फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बलंद आवाज़ से यह दो आयतें पढ़ीं: "ऐ लोगो! अल्लाह से डरो बेशक क़यामत का ज़लज़ला बहुत बड़ी चीज़ है, से लेकर, लेकिन अल्लाह का अज़ाब सख़्त होगा तक।(1-2) जब आप के सहाबा ने सुना तो उन्होंने अपनी सवारियों को खूब दौड़ाया और समझ गए कि आप कुछ फ़रमाने वाले हैं, आप (ﷺ) ने फ़रमाया " क्या तुम जानते हो कि यह कौनसा दिन होगा?" उन्होंने कहा: अल्लाह और उसके रसूल ही बेहतर जानते हैं, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "यह वह दिन है जिसमें अल्लाह तआला आदम (عليه السلام) को आवाज़ देकर कहेंगे: ऐ आदम जहन्नम का हिस्सा निकालो, तो वह कहेंगे: ऐ मेरे रब जहन्नम का हिस्सा कितना है? तो अल्लाह

بَعْثُ النَّارِ؟ فَيَقُولُ: مِنْ كُلِّ أَلْفٍ تِسْعُ مِائَةٍ وَتِسْعَةٌ وَتِسْعُونَ إِلَى النَّارِ وَوَاحِدٌ فِي الجَنَّةِ فَيَئِسَ القَوْمُ، حَتَّى مَا أَبْدَوْا بِضَاحِكَةٍ، فَلَمَّا رَأَى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الَّذِي بِأَصْحَابِهِ قَالَ: اعْمَلُوا وَأَبْشِرُوا فَوَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ إِنَّكُمْ لَمَعَ خَلِيقَتَيْنِ مَا كَانَتَا مَعَ شَيْءٍ إِلاَّ كَثَّرَتَاهُ، يَأْجُوجُ وَمَأْجُوجُ، وَمَنْ مَاتَ مِنْ بَنِي آدَمَ وَبَنِي إِبْلِيسَ قَالَ: فَسُرِّيَ عَنِ القَوْمِ بَعْضُ الَّذِي يَجِدُونَ، فَقَالَ: اعْمَلُوا وَأَبْشِرُوا فَوَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ مَا أَنْتُمْ فِي النَّاسِ إِلاَّ كَالشَّامَةِ فِي جَنْبِ البَعِيرِ أَوْ كَالرَّقْمَةِ فِي ذِرَاعِ الدَّابَّةِ.

तआला फ़रमाएगा एक हज़ार में नौ सौ निन्नानवे जहन्नम में, और एक जन्नत में।" तो लोग नाउम्मीद हो गए यहाँ तक कि यक़ीन हो गया अब कोई हँसेगा भी नहीं, तब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने सहाबा की हालत देख कर फ़रमाया, "अमल करते रहो और खुश रहो उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है! तुम्हारे साथ दो क़िस्म की मख़्लूक़ ऐसी हैं जो जिस चीज़ के भी साथ हों उसे ज़्यादा कर देती हैं: (एक) याजूज व माजूज और दुसरे बनू आदम और इब्लीस की औलाद से जो भी कुफ्र पर मर गया।" रावी कहते हैं: लोगों से उस परेशानी की कैफ़ियत दूर हो गई तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "अमल करते रहो और खुश रहो, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है! तुम लोगों (के मुक़ाबले) में ऊँट के पहलू में एक दाग या चौपाए की टांग में एक तिल की तरह हो।"

सहीह: तख़रीज इस से पहली हदीस में गुज़र चुकी है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह है।

3170 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ وَغَيْرُ وَاحِدٍ، قَالُوا: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ صَالِحٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي اللَّيْثُ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ خَالِدٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّمَا سُمِّيَ البَيْتَ العَتِيقَ لأَنَّهُ لَمْ يَظْهَرْ عَلَيْهِ جَبَّارٌ.

3170 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन जुबैर (رضي الله عنه) रिवायत करते है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "बैतुल्लाह का बैतूल अतीक़ नाम इसलिए रखा गया है कि उस पर कोई भी सरकश ग़ालिब नहीं आ सका।"

ज़ईफ़: हाकिम:2/389. बैहक़ी: 1/125. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफ़ा:3222.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन ग़रीब है और यह हदीस बवास्ता जोहरी नबी (ﷺ) से मुर्सल भी मर्वी है।

हमें कुतैबा ने उन्हें लैस ने अक़ील से बवास्ता ज़ोहरी, नबी (ﷺ) से इसी तरह की हदीस बयान की है।

3171 - अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि जब नबी (ﷺ) को मक्का से निकाला गया तो अबू बक्र (رضي الله عنه) ने कहा: उन्होंने अपने नबी को निकाला है, यह ज़रूर हलाक होंगे तो अल्लाह तआला ने यह आयत उतार दी: "उन लोगों को जिनसे लड़ाई की जाती है किताल की इजाज़त दे दी गई है इसलिए कि उन पर ज़ुल्म किया गया है और बेशक अल्लाह तआला उनकी मदद करने पर पूरी तरह क़ादिर है।" (आयत:39) तो अबू बक्र ने कहा: मैं जानता था कि अन्क़रीब किताल होगा।

3171 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، وَإِسْحَاقُ بْنُ يُوسُفَ الأَزْرَقُ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ مُسْلِمٍ البَطِينِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: لَمَّا أُخْرِجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ مَكَّةَ، قَالَ أَبُو بَكْرٍ: أَخْرَجُوا نَبِيَّهُمْ لَيَهْلِكُنَّ فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى {أُذِنَ لِلَّذِينَ يُقَاتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظُلِمُوا وَإِنَّ اللَّهَ عَلَى نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ} الآيَةَ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: لَقَدْ عَلِمْتُ أَنَّهُ سَيَكُونُ قِتَالٌ.

ज़ईफ़ुल इस्नाद:निसाई:3087. अहमद:1/216. हाकिम:2/66. इब्ने हिब्बान:4710.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन है इसे अब्दुर्रहमान बिन महदी वग़ैरह ने भी सुफ़ियान से बवास्ता आमश, मुस्लिम बतीन के ज़रिए सईद बिन जुबैर से मुर्सल रिवायत किया है इसमें इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) का ज़िक्र नहीं है।

हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने अबू अहमद ज़ुबैरी से उन्हें सुफ़ियान ने आमश से बवास्ता मुस्लिम बतीन, सईद बिन जुबैर से मुर्सल हदीस बयान की है इसमें इब्ने अब्बास का ज़िक्र नहीं है।

3172 - सईद बिन जुबैर (رحمه الله) कहते हैं जब नबी (ﷺ) को मक्का से निकाला गया तो एक आदमी ने कहा: इन लोगों ने अपने नबी को निकाला है तो यह आयत नाजिल हुई: " जिन लोगों से लड़ाई की जाती है उन्हें किताल की इजाज़त दी गई है इसलिए कि उन पर ज़ुल्म

3172 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ الزُّبَيْرِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ مُسْلِمٍ الْبَطِينِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، قَالَ: لَمَّا أُخْرِجَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم مِنْ مَكَّةَ قَالَ رَجُلٌ: أَخْرَجُوا نَبِيَّهُمْ، فَنَزَلَتْ: {أُذِنَ

لِلَّذِينَ يُقَاتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظُلِمُوا، وَإِنَّ اللَّهَ عَلَى نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ} النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم وَأَصْحَابُهُ.

किया गया और अल्लाह उनकी नुसरत (मदद) पर खूब क़ादिर है वह लोग जिन्हें उनके घरों से निकाला गया" इस से मुराद नबी (ﷺ) और आप के सहाबा हैं।

तख़रीज करने वाले ने इसकी तख़रीज नक़ल नहीं की।

24 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الْمُؤْمِنُونَ

24 - तफ़सीर सूरह मूमिनून।

3173 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، وَغَيْرُ وَاحِدٍ الْمَعْنَى وَاحِدٌ، قَالُوا: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ يُونُسَ بْنِ سُلَيْمٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدٍ الْقَارِيِّ، قَالَ: سَمِعْتُ عُمَرَ بْنَ الخَطَّابِ، يَقُولُ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ الوَحْيُ سُمِعَ عِنْدَ وَجْهِهِ كَدَوِيِّ النَّحْلِ فَأُنْزِلَ عَلَيْهِ يَوْمًا فَمَكَثْنَا سَاعَةً فَسُرِّيَ عَنْهُ فَاسْتَقْبَلَ القِبْلَةَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ وَقَالَ: اللَّهُمَّ زِدْنَا وَلاَ تَنْقُصْنَا، وَأَكْرِمْنَا وَلاَ تُهِنَّا، وَأَعْطِنَا وَلاَ تَحْرِمْنَا، وَآثِرْنَا وَلاَ تُؤْثِرْ عَلَيْنَا، وَارْضِنَا وَارْضَ عَنَّا، ثُمَّ قَالَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أُنْزِلَ عَلَيَّ عَشْرُ آيَاتٍ، مَنْ أَقَامَهُنَّ دَخَلَ الجَنَّةَ، ثُمَّ قَرَأَ: {قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ} حَتَّى خَتَمَ عَشْرَ آيَاتٍ.

3173 - सय्यदना उमर बिन खत्ताब (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) पर जब वहि नाज़िल होती तो आप के चेहरे के नज़दीक शहद की मक्खियों की भनभनाहट की तरह आवाज़ सुनी जाती चुनाँचे एक दिन आप (ﷺ) पर वहि नाज़िल हुई हम थोड़ी देर ठहरे आप से उस कैफ़ियत को ख़त्म किया गया तो आप ने किब्ला की तरफ़ अपना मुंह कर के अपने हाथ उठा कर कहा: " ऐ अल्लाह हमें बढ़ा, हम में कमी न करना, हमें इज़्ज़त दे हमें रुस्वा न करना, हमें अता कर हमें महरूम न करना, हमें तर्जीह दे हमारे ऊपर किसी को तर्जीह न देना और हमें राज़ी करके हम पर राज़ी हो जा, फिर आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "मुझ पर दस आयात नाजिल हुई हैं जिसने उन्हें क़ायम किया वह जन्नत में दाख़िल हो गया, फिर आप(ﷺ) ने "तहक़ीक़ फलाह पा गए ईमान वाले" से लेकर दस आयात के इख़्तिताम तक तिलावत की। (1- 10)

ज़ईफ़: अहमद: 1/34. निसाई: 1348. अब्दुर्रज़्ज़ाक़:6038. हाकिम:2/392.अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:1242.

वज़ाहतः अबू ईसा कहते हैं हमें मुहम्मद बिन अबान ने अब्दुर्रज्जाक से उन्होंने यूनुस बिन सुलैम से बवास्ता यूनुस बिन यज़ीद, ज़ोहरी से इसी सनद के साथ ऐसी ही हदीस बयान की है। (ज़ईफ़ भी)

इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं : यह हदीस पहली हदीस से ज़्यादा सहीह है। मैंने इस्हाक़ बिन मंसूर से सुना वह फ़रमा रहे थे कि अहमद बिन हंबल, अली बिन मदीनी और इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने भी अब्दुर्रज्जाक से यूनुस बिन सुलैम के ज़रिए बवास्ता यूनुस बिन यज़ीद, ज़ोहरी से इस हदीस को रिवायत किया है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं : जिसने अब्दुर्रज्जाक़ से शुरू में सुना था वह तो इसमें यूनुस बिन यज़ीद का ज़िक्र करते हैं, और बअ़ज़ इसमें यूनुस बिन यज़ीद का ज़िक्र नहीं करते, लेकिन जिस ने यूनुस बिन यज़ीद का ज़िक्र किया है वह सहीह है और अब्दुर्रज़्ज़ाक़ भी बअ़ज़ दफ़ा इस हदीस में यूनुस बिन यज़ीद का जिक्र करते हैं और बअ़ज़ दफ़ा नहीं, और जब वह इसमें यूनुस का ज़िक्र न करें तो वह मुर्सल होगी।

3174 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ الرُّبَيِّعَ بِنْتَ النَّضْرِ أَتَتِ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَكَانَ ابْنُهَا حَارِثَةُ بْنُ سُرَاقَةَ أُصِيبَ يَوْمَ بَدْرٍ، أَصَابَهُ سَهْمُ غَرَبٍ، فَأَتَتْ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ: أَخْبِرْنِي عَنْ حَارِثَةَ لَئِنْ كَانَ أَصَابَ خَيْرًا احْتَسَبْتُ وَصَبَرْتُ، وَإِنْ لَمْ يُصِبِ الخَيْرَ اجْتَهَدْتُ فِي الدُّعَاءِ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَا أُمَّ حَارِثَةَ إِنَّهَا جِنَانٌ فِي جَنَّةٍ، وَإِنَّ ابْنَكِ أَصَابَ الْفِرْدَوْسَ الأَعْلَى وَالْفِرْدَوْسُ رَبْوَةُ الْجَنَّةِ وَأَوْسَطُهَا وَأَفْضَلُهَا.

3174 - अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रूबैअ बिन्ते नज़र (رضي الله عنها) नबी(ﷺ) के पास आई उनका बेटा हारिसा बिन्ते सुराका बद्र के दिन एक नागहानी तीर लगने की वजह से शहीद हो गया था। वह रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आकर कहने लगीं: आप मुझे हारिसा के बारे में बताइए कि अगर उसे ख़ैर मिली है तो मैं सवाब की उम्मीद रखकर सब्र करूंगी और अगर उसे ख़ैर नहीं मिली है तो मैं उस के लिए दुआ करने में खूब मेहनत करूंगी, तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ उम्मे हारिसा! जन्नत में कई जन्नतें हैं और तुम्हारा बेटा फ़िरदौसे आला में पहुंचा है, और फ़िरदौस की जन्नत बलंद ज़मीन, दर्मियानी और अफज़ल जगह है।"

बुख़ारी:2809. अहमद:3/310. बैहक़ी:9/167. अस-सिलसिला अस-सहीहा:1811.

वज़ाहतः इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं : अनस (رضي الله عنه) के तरीक़ से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3175 - नबी (ﷺ) की जौज़ा मोहतरमा सय्यदा आयशा (رضی اللہ عنہا) बयान करती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से इस आयत : "और वह लोग जिन्होंने कुछ दिया इस हाल में देते हैं कि उन के दिल डरने वाले होते हैं।" (आयत:60) के बारे में पूछा, आयशा (رضی اللہ عنہا) ने कहा: क्या यह शराब पीने वाले और चोरी करने वाले लोग हैं? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ सिद्दीक़ की बेटी! नहीं! बल्कि यह वह लोग हैं जो रोज़े रखते हैं, नमाज़ें पढ़ते हैं और सदक़ा करते हैं और उन्हें डर होता है कि कहीं उन से कुबूल न किया जाए, यही लोग भलाइयों में जल्दी करते हैं और यही उनकी तरफ़ आगे निकलने वाले हैं।"

सहीह:इब्ने माजह:4189. अस-सिलसिला अस-सहीहा: 162. अहमद:6/159. हाकिम:2/393.

3175 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ مِغْوَلٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سَعِيدِ بْنِ وَهْبٍ الهَمْدَانِيِّ، أَنَّ عَائِشَةَ، زَوْجَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَتْ: سَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ هَذِهِ الآيَةِ: {وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوْا وَقُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ} قَالَتْ عَائِشَةُ: أَهُمُ الَّذِينَ يَشْرَبُونَ الخَمْرَ وَيَسْرِقُونَ؟ قَالَ: لاَ يَا بِنْتَ الصِّدِّيقِ، وَلَكِنَّهُمُ الَّذِينَ يَصُومُونَ وَيُصَلُّونَ وَيَتَصَدَّقُونَ، وَهُمْ يَخَافُونَ أَنْ لاَ تُقْبَلَ مِنْهُمْ {أُولَئِكَ يُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَهُمْ لَهَا سَابِقُونَ}.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं : यह हदीस अब्दुर्रहमान बिन सईद से भी बवास्ता अबू हाजिम, अबू हुरैरा (رضی اللہ عنہ) के ज़रिए नबी (ﷺ) से ऐसे ही मर्वी है।

3176 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (رضی اللہ عنہ) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने "और वह इसमें तेवर चढ़ाने वाले होंगे।" (आयत: 104) के बारे में फ़रमाया, "आग उसे झुलसा देगी, ऊपर वाला होंट सिकुड़ कर उसके सर के दर्मियान तक जा पहुंचेगा और नीचे वाला होंट नाफ तक पहुँच जाएगा।"

ज़ईफ़: तख़रीज के देखिए हदीस नम्बर:2587.

3176 - حَدَّثَنَا سُوَيْدٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ يَزِيدَ أَبِي شُجَاعٍ، عَنْ أَبِي السَّمْحِ، عَنْ أَبِي الهَيْثَمِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: {وَهُمْ فِيهَا كَالِحُونَ} قَالَ: تَشْوِيهِ النَّارُ فَتَقَلَّصُ شَفَتُهُ العَالِيَةُ حَتَّى تَبْلُغَ وَسَطَ رَأْسِهِ، وَتَسْتَرْخِي شَفَتُهُ السُّفْلَى حَتَّى تَضْرِبَ سُرَّتَهُ.

25 - तफ़सीर सूरह नूर।

25 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ النُّورِ

3177 - अम्र बिन शोऐब अपने बाप से वह अपने दादा (अब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ) से रिवायत करते हैं कि एक आदमी था जिसे मर्सद बिन अबू मर्सद ग़नवी कहा जाता था और यह आदमी मक्का से क़ैदी उठा कर मदीना लाता था, रावी कहता है, मक्का में एक फ़ाहिशा औरत थी जिसे अनाक़ कहा जाता था यह उसकी आशना थी, और उस आदमी ने मक्का के कैदियों में से एक आदमी के साथ वादा किया था कि उसे उठा लायेगा, मर्सद कहता है कि मैं आया, यहाँ तक कि चांदनी रात में मक्का की दीवारों में से एक दीवार के साए में पहुंचा, अनाक़ आई उसने दीवार के साथ मेरा साया देख लिया जब वह मुझ तक पहुंची तो मुझे पहचान गई, कहने लगी मर्सद हो? मैंने कहा: मर्सद ही हूँ? वह कहने लगी: खुश आमदेद आओ रात हमारे पास बसर करो, मैंने कहा: ऐ अनाक़! अल्लाह तआला ने ज़िना को हराम किया है। वह कहने लगी: ऐ ख़ेमों वालो! यह आदमी तुम्हारे कैदी उठाता है, कहते हैं फिर आठ दस आदमी मेरे पीछे लग गए और मैं खन्दमा (एक पहाड़ी) की तरफ़ चल पडा फिर मैं एक ग़ार या खोह में पहुँच कर उस में दाख़िल हो गया, चुनाँचे वह आए यहाँ तक कि मेरे सर के ऊपर खड़े हो कर उन्होंने पेशाब किया उनका पेशाब मेरे सर पर आ रहा था और अल्लाह ने उन्हें मुझ से अंधा कर दिया, कहते हैं: फिर वह वापस चले गए और मैं भी अपने साथी

3177 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ الأَخْنَسِ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، قَالَ: كَانَ رَجُلٌ يُقَالُ لَهُ: مَرْثَدُ بْنُ أَبِي مَرْثَدٍ، وَكَانَ رَجُلاً يَحْمِلُ الأَسْرَى مِنْ مَكَّةَ حَتَّى يَأْتِيَ بِهِمُ الْمَدِينَةَ، قَالَ: وَكَانَتْ امْرَأَةٌ بَغِيٌّ بِمَكَّةَ يُقَالُ لَهَا: عَنَاقُ وَكَانَتْ صَدِيقَةً لَهُ، وَإِنَّهُ كَانَ وَعَدَ رَجُلاً مِنْ أُسَارَى مَكَّةَ يَحْمِلُهُ، قَالَ: فَجِئْتُ حَتَّى انْتَهَيْتُ إِلَى ظِلِّ حَائِطٍ مِنْ حَوَائِطِ مَكَّةَ فِي لَيْلَةٍ مُقْمِرَةٍ، قَالَ: فَجَاءَتْ عَنَاقُ فَأَبْصَرَتْ سَوَادَ ظِلِّي بِجَنْبِ الحَائِطِ فَلَمَّا انْتَهَتْ إِلَيَّ عَرَفَتْ، فَقَالَتْ: مَرْثَدٌ؟ فَقُلْتُ: مَرْثَدٌ. فَقَالَتْ: مَرْحَبًا وَأَهْلاً هَلُمَّ فَبِتْ عِنْدَنَا اللَّيْلَةَ. قَالَ: قُلْتُ: يَا عَنَاقُ حَرَّمَ اللَّهُ الزِّنَا، قَالَتْ: يَا أَهْلَ الخِيَامِ، هَذَا الرَّجُلُ يَحْمِلُ أُسَرَاءَكُمْ، قَالَ: فَتَبِعَنِي ثَمَانِيَةٌ وَسَلَكْتُ الخَنْدَمَةَ فَانْتَهَيْتُ إِلَى كَهْفٍ أَوْ غَارٍ فَدَخَلْتُ، فَجَاءُوا حَتَّى قَامُوا عَلَى رَأْسِي فَبَالُوا فَظَلَّ بَوْلُهُمْ عَلَى رَأْسِي وَعَمَّاهُمُ اللَّهُ

عَنِّي، قَالَ: ثُمَّ رَجَعُوا وَرَجَعْتُ إِلَى صَاحِبِي فَحَمَلْتُهُ وَكَانَ رَجُلاً ثَقِيلاً حَتَّى انْتَهَيْتُ إِلَى الإِذْخِرِ، فَفَكَكْتُ عَنْهُ أَكْبُلَهُ فَجَعَلْتُ أَحْمِلُهُ وَيُعْيِينِي حَتَّى قَدِمْتُ الْمَدِينَةَ، فَأَتَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، أَنْكِحُ عَنَاقًا؟ فَأَمْسَكَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيَّ شَيْئًا حَتَّى نَزَلَتْ الزَّانِي لاَ يَنْكِحُ إِلاَّ زَانِيَةً أَوْ مُشْرِكَةً وَالزَّانِيَةُ لاَ يَنْكِحُهَا إِلاَّ زَانٍ أَوْ مُشْرِكٌ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَا مَرْثَدُ الزَّانِي لاَ يَنْكِحُ إِلاَّ زَانِيَةً أَوْ مُشْرِكَةً وَالزَّانِيَةُ لاَ يَنْكِحُهَا إِلاَّ زَانٍ أَوْ مُشْرِكٌ، فَلاَ تَنْكِحْهَا.

की तरफ़ आया उसे उठा लिया और वह भारी आदमी था, यहाँ तक कि मैं इज़्खिर तक पहुंचा फिर मैंने उसकी जंजीरें तोड़ीं मैं उसे उठाता था और वह भी मेरी मदद करता था यहाँ तक कि मैं मदीना आ गया, फिर मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मैं अनाक़ से निकाह कर लूं? दो मर्तबा यही कहा: लेकिन अल्लाह के रसूल (ﷺ) ख़ामोश रहे और मुझे कोई जवाब न दिया यहाँ तक कि कुरआन नाज़िल हुआ: "ज़ानी मर्द निकाह न करे मगर ज़ानिया या मुश्रिक औरत से ही और ज़ानिया से ज़ानी या मुश्रिक ही निकाह करे।" (आयत:3) तो अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ मर्सद! ज़ानी, ज़ानिया या मुशरिक औरत से ही निकाह करे और ज़ानिया औरत भी ज़ानी या मुश्रिक मर्द से ही निकाह करे, तुम उस से निकाह न करो।"

हसनुल इस्नाद:अबू दाऊद:2051. निसाई:3230. हाकिम:2/ 166.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन ग़रीब है हम इसे इसी तरीक़ से ही जानते हैं।

3178 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ أَبِي سُلَيْمَانَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، قَالَ: سُئِلْتُ عَنِ الْمُتَلاَعِنَيْنِ فِي إِمَارَةِ مُصْعَبِ بْنِ الزُّبَيْرِ أَيُفَرَّقُ بَيْنَهُمَا فَمَا دَرَيْتُ مَا أَقُولُ، فَقُمْتُ مِنْ مَكَانِي إِلَى مَنْزِلِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ، فَاسْتَأْذَنْتُ

3178 - सईद बिन जुबैर (رحمه الله) कहते हैं: मुस्अब बिन जुबैर की इमारत में मुझ से पूछा गया: क्या लिआन करने वालों के दर्मियान अलाहिदगी (जुदाई) कर दी जाएगी? मुझे इल्म नहीं था कि मैं क्या जवाब दूं, चुनाँचे मैं उसी वक़्त अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) के घर की तरफ़ गया उन के पास जाने की इजाज़त मांगी, तो मुझ से कहा गया: वह कैलूला कर रहे

عَلَيْهِ، فَقِيلَ لِي إِنَّهُ قَائِلٌ فَسَمِعَ كَلَامِي فَقَالَ لِيَ: ابْنَ جُبَيْرٍ؟ ادْخُلْ، مَا جَاءَ بِكَ إِلاَّ حَاجَةٌ، قَالَ: فَدَخَلْتُ فَإِذَا هُوَ مُفْتَرِشٌ بَرْدَعَةَ رَحْلٍ لَهُ، فَقُلْتُ: يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ، الْمُتَلاَعِنَانِ أَيُفَرَّقُ بَيْنَهُمَا؟ فَقَالَ: سُبْحَانَ اللهِ نَعَمْ، إِنَّ أَوَّلَ مَنْ سَأَلَ عَنْ ذَلِكَ فُلاَنُ ابْنُ فُلاَنٍ، أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَرَأَيْتَ لَوْ أَنَّ أَحَدَنَا رَأَى امْرَأَتَهُ عَلَى فَاحِشَةٍ كَيْفَ يَصْنَعُ؟ إِنْ تَكَلَّمَ تَكَلَّمَ بِأَمْرٍ عَظِيمٍ، وَإِنْ سَكَتَ سَكَتَ عَلَى أَمْرٍ عَظِيمٍ، قَالَ: فَسَكَتَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمْ يُجِبْهُ، فَلَمَّا كَانَ بَعْدَ ذَلِكَ أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: إِنَّ الَّذِي سَأَلْتُكَ عَنْهُ قَدْ ابْتُلِيتُ بِهِ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ هَذِهِ الآيَاتِ فِي سُورَةِ النُّورِ {وَالَّذِينَ يَرْمُونَ أَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ شُهَدَاءُ إِلاَّ أَنْفُسُهُمْ} حَتَّى خَتَمَ الآيَاتِ قَالَ: فَدَعَا الرَّجُلَ فَتَلاَهُنَّ عَلَيْهِ وَوَعَظَهُ، وَذَكَّرَهُ وَأَخْبَرَهُ: أَنَّ عَذَابَ الدُّنْيَا أَهْوَنُ مِنْ عَذَابِ الآخِرَةِ، فَقَالَ: لاَ، وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ مَا كَذَبْتُ عَلَيْهَا، ثُمَّ ثَنَّى بِالْمَرْأَةِ وَوَعَظَهَا وَذَكَّرَهَا، وَأَخْبَرَهَا: أَنَّ عَذَابَ الدُّنْيَا أَهْوَنُ مِنْ

हैं, उन्होंने मेरी बात सुन ली कहने लगे: इब्ने जुबैर हो? आ जाओ तुम किसी काम से ही आए होगे, कहते हैं: मैं अन्दर गया तो देखा वह अपने नीचे कजावे वाली चादर बिछाए हुए थे। मैंने कहा: ऐ अबू अब्दुर्रहमान! लिआन करने वालों के दर्मियान अलाहिदगी करा दी जाएगी? उन्होंने तअज्जुब से कहा सुब्हान अल्लाह! हाँ, इस बारे में सब से पहले फुलां बिन फुलां ने सवाल किया था वह नबी (ﷺ) के पास आकर कहने लगा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! आप यह बताइए अगर हम में से कोई शख़्स अपनी बीवी को बेहयाई (ज़िना) पर पाए तो क्या करे? अगर वह बात करता है तो यह बहुत बड़ी बात है और अगर ख़ामोश रहता है तो यह भी बहुत बड़ी बात है। रावी कहते हैं: नबी (ﷺ) ख़ामोश हो गए आप ने कोई जवाब न दिया फिर उस ने अगले दिन नबी (ﷺ) के पास आकर कहने लगा: जिस बारे में मैंने आप से पूछा था वह मामला मेरे साथ पेश आ गया है तो अल्लाह तआला ने सूरह नूर की यह आयात नाज़िल फ़रमाई: " और वह लोग जो अपनी बीवियों पर तोहमत लगाएं और उनके पास गवाह न हों मगर ख़ुद ही तो उन में से हर एक की शहादत अल्लाह की क़सम के साथ चार शहादतें हैं।" (आयत:6- 9) इख़्तितामे आयत तक। फिर आप (ﷺ) ने उस आदमी को बुला कर यह पढ़ कर सुनाई, उसे वाज़ो नसीहत की और उसे बताया कि दुनिया का अज़ाब आख़िरत के अज़ाब से आसान है। उस ने कहा:

عَذَابِ الآخِرَةِ، فَقَالَتْ: لاَ، وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالحَقِّ مَا صَدَقَ، فَبَدَأَ بِالرَّجُلِ فَشَهِدَ أَرْبَعَ شَهَادَاتٍ بِاللَّهِ إِنَّهُ لَمِنَ الصَّادِقِينَ، وَالخَامِسَةَ أَنَّ لَعْنَةَ اللهِ عَلَيْهِ إِنْ كَانَ مِنَ الكَاذِبِينَ، ثُمَّ ثَنَّى بِالمَرْأَةِ فَشَهِدَتْ أَرْبَعَ شَهَادَاتٍ بِاللَّهِ إِنَّهُ لَمِنَ الكَاذِبِينَ، وَالخَامِسَةَ أَنَّ غَضَبَ اللهِ عَلَيْهَا إِنْ كَانَ مِنَ الصَّادِقِينَ، ثُمَّ فَرَّقَ بَيْنَهُمَا.

उस ज़ात की क़सम! जिसने आप (ﷺ) को हक़ के साथ भेजा है! मैंने उस पर झूठ नहीं बोला, फिर आप (ﷺ) औरत की तरफ़ मुतवज्जह हुए उसे वाज़ो नसीहत की और उसे बताया कि दुनिया का अज़ाब आख़िरत के अज़ाब से आसान है। वह कहने लगी नहीं उस ज़ात की क़सम जिस ने आप(ﷺ) को हक़ के साथ भेजा है! उस ने सच नहीं बोला, फिर आप ने मर्द से इब्तिदा की तो उस ने अल्लाह के नाम की चार क़समें उठाई कि वह सच्चों में से है और पांचवी दफ़ा कहा कि अगर वह झूठा हो तो उस पर अल्लाह की लानत हो। फिर आप (ﷺ) औरत की तरफ़ मुतवज्जह हुए तो उस ने भी अल्लाह के नाम की चार क़समें उठाई कि उसका शौहर झूठों में से है और पांचवी मर्तबा कहा: अगर वह सच्चा हो तो मुझ पर अल्लाह की ग़ज़ब नाज़िल हो चुनाँचे आप(ﷺ) ने उन दोनों के दर्मियान अलाहिदगी (जुदाई) करा दी।

सहीह: तख़रीज के देखिए हदीस नम्बर: 1202 मुलाहजा फ़रमाएं।

वज़ाहत: इस बारे में सहल बिन साद (رضي الله عنه) से भी मर्वी है इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : यह हदीस हसन सहीह है।

3179 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ حَسَّانَ قَالَ: حَدَّثَنِي عِكْرِمَةُ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ هِلاَلَ بْنَ أُمَيَّةَ، قَذَفَ امْرَأَتَهُ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِشَرِيكِ ابْنِ السَّحْمَاءِ فَقَالَ

3179 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि हिलाल बिन उमय्या ने नबी (ﷺ) के पास अपनी बीवी पर शरीक बिन सहमा के साथ ज़िना करने का इल्ज़ाम लगाया, तो अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़रमाया, "दलील (सबूत) दो वर्ना तुम्हारी पीठ पर हद लगेगी।" हिलाल ने कहा: ऐ

رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الْبَيِّنَةَ وَإِلاَّ حَدٌّ فِي ظَهْرِكَ، قَالَ: فَقَالَ هِلاَلٌ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِذَا رَأَى أَحَدُنَا رَجُلاً عَلَى امْرَأَتِهِ أَيَلْتَمِسُ الْبَيِّنَةَ؟ فَجَعَلَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: الْبَيِّنَةَ وَإِلاَّ فَحَدٌّ فِي ظَهْرِكَ، قَالَ: فَقَالَ هِلاَلٌ: وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ إِنِّي لَصَادِقٌ، وَلَيَنْزِلَنَّ فِي أَمْرِي مَا يُبَرِّئُ ظَهْرِي مِنَ الْحَدِّ، فَنَزَلَ {وَالَّذِينَ يَرْمُونَ أَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ شُهَدَاءُ إِلاَّ أَنْفُسُهُمْ}، فَقَرَأَ حَتَّى بَلَغَ، {وَالْخَامِسَةَ أَنَّ غَضَبَ اللهِ عَلَيْهَا إِنْ كَانَ مِنَ الصَّادِقِينَ} قَالَ: فَانْصَرَفَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَرْسَلَ إِلَيْهِمَا فَجَاءَا، فَقَامَ هِلاَلُ بْنُ أُمَيَّةَ فَشَهِدَ وَالنَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ أَنَّ أَحَدَكُمَا كَاذِبٌ، فَهَلْ مِنْكُمَا تَائِبٌ؟ ثُمَّ قَامَتْ فَشَهِدَتْ، فَلَمَّا كَانَتْ عِنْدَ الْخَامِسَةِ {أَنَّ غَضَبَ اللهِ عَلَيْهَا إِنْ كَانَ مِنَ الصَّادِقِينَ} قَالُوا لَهَا: إِنَّهَا مُوجِبَةٌ، فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: فَتَلَكَّأَتْ وَنَكَسَتْ حَتَّى ظَنَنَّا أَنْ سَتَرْجِعُ، فَقَالَتْ: لاَ أَفْضَحُ قَوْمِي سَائِرَ الْيَوْمِ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَبْصِرُوهَا، فَإِنْ

अल्लाह के रसूल (ﷺ)! जब हममें से कोई अपनी बीवी पर किसी आदमी को देखे तो क्या वह सबूत तलाश करने चला जाए? रसूलुल्लाह (ﷺ) यही फ़रमा रहे थे। "सबूत दो वर्ना तुम्हारी पीठ पर हद लगेगी" हिलाल कहने लगे: उस ज़ात की क़सम जिस ने आप(ﷺ) को हक़ देकर भेजा है! यक़ीनन मैं सच्चा हूँ और मेरे मामले में ऐसा हुक्म ज़रूर नाजिल होगा जो मेरी पुश्त को हद से निजात दिलाएगा, चुनाँचे यह हुक्म नाजिल हुआ "और वह लोग जो अपनी बीवियों पर ज़िना की तोहमत लगाते हैं फिर उनकी अपनी जानों के अलावा कोई गवाह नहीं होता, तो उसकी गवाही यह है कि अल्लाह के नाम के साथ चार क़समें उठाए कि वह सच्चा है" आप पढ़ते- पढ़ते " और पांचवीं मर्तबा (औरत यह कहे कि) अगर वह सच्चा है तो मुझ पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल हो" तक पहुंचे रावी कहते हैं: रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फिर उन दोनों को पैग़ाम भेजा वह दोनों आए तो हिलाल बिन उमय्या ने खड़े हो कर गवाहियां दीं और नबी (ﷺ) फ़रमा रहे थे: "अल्लाह तआला खूब जानता है कि तुम दोनों में से एक झूठा है, क्या तुम दोनों में से कोई तौबा करने वाला है?" फिर वह औरत खड़ी होकर गवाही देने लगी, जब पांचवीं पर पहुंची कि अगर वह शौहर सच्चा हो तो उस औरत पर अल्लाह का ग़ज़ब हो" लोगों ने कहा: यह (क़सम ग़ज़बे इलाही को) वाजिब करने वाली है। फिर वह औरत ठहरी और पीछे हटी, यहाँ तक कि हमने समझा शायद यह

جَاءَتْ بِهِ أَكْحَلَ العَيْنَيْنِ سَابِغَ الأَلْيَتَيْنِ خَدَلَّجَ السَّاقَيْنِ فَهُوَ لِشَرِيكِ ابْنِ السَّحْمَاءِ، فَجَاءَتْ بِهِ كَذَلِكَ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَوْلاَ مَا مَضَى مِنْ كِتَابِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ لَكَانَ لَنَا وَلَهَا شَأْنٌ.

इक़रार कर लेगी, फिर वह कहने लगी मैं हमेशा के लिए रुस्वा अपनी कौम को रुस्वा नहीं कर सकती तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "इसे देखते रहना अगर यह काली आँखों वाला, बड़े सुरीन वाला और मोटी रानों वाला बच्चा जन्म दे तो शरीक बिन सहमा का होगा।" फिर उस ने ऐसा ही बच्चा जना तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "अगर किताबुल्लाह के मुताबिक फैसला न हो चुका होता तो हमारा और इस औरत का एक अजीब मालमा होता (यानी उसे हद लगाई जाती)।"

बुख़ारी:4747. अबू दाऊद:2254. इब्ने माजह:2067. अहमद:1/238. अल-इर्वा:2089.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं : हिशाम बिन हस्सान के इस तरीक़ से यह हदीस हसन ग़रीब है।

अब्बाद बिन मंसूर ने भी इस हदीस को इकिरमा से बवास्ता इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) नबी (ﷺ) से इसी तरह रिवायत किया है जबकि अय्यूब ने इसे इकिरमा से मुर्सल रिवायत किया है इसमें इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) का ज़िक्र नहीं है।

3180 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ لَمَّا ذُكِرَ مِنْ شَأْنِي الَّذِي ذُكِرَ وَمَا عَلِمْتُ بِهِ، قَامَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيَّ خَطِيبًا فَتَشَهَّدَ وَحَمِدَ اللَّهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ ثُمَّ قَالَ: أَمَّا بَعْدُ: أَشِيرُوا عَلَيَّ فِي أُنَاسٍ أَبَنُوا أَهْلِي وَاللَّهِ مَا عَلِمْتُ عَلَى

3180 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) फ़रमाती हैं: जब मेरे बारे में चर्चे हो रहे थे मैं उसे नहीं जानती थी, रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरे मामले में खुत्बा देने के लिए खड़े हुए, आप ने ख़ुत्बा पढ़ा अल्लाह की हम्दो सना की जैसे उस को लायक़ है, फिर फ़रमाया, "अम्मा बअद! मुझे उन लोगों के बारे में मशवरा दो जिन्होंने मेरी बीवी पर तोहमत लगाई है। अल्लाह की क़सम! मैंने कभी भी अपनी बीवी में बुराई नहीं देखी, और जिसके साथ इल्ज़ाम लगाया गया है अल्लाह की क़सम! मैंने उस में भी कभी बुराई नहीं देखी न ही वह कभी मेरे घर में दाख़िल हुआ है मगर उस

أَهْلِي مِنْ سُوءٍ قَطُّ وَأَبَنُوا بِمَنْ وَاللَّهِ مَا عَلِمْتُ عَلَيْهِ مِنْ سُوءٍ قَطُّ وَلاَ دَخَلَ بَيْتِي قَطُّ إِلاَّ وَأَنَا حَاضِرٌ وَلاَ غِبْتُ فِي سَفَرٍ إِلاَّ غَابَ مَعِي، فَقَامَ سَعْدُ بْنُ مُعَاذٍ فَقَالَ: ائْذَنْ لِي يَا رَسُولَ اللهِ أَنْ أَضْرِبَ أَعْنَاقَهُمْ، وَقَامَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي الخَزْرَجِ وَكَانَتْ أُمُّ حَسَّانَ بْنِ ثَابِتٍ مِنْ رَهْطِ ذَلِكَ الرَّجُلِ، فَقَالَ: كَذَبْتَ، أَمَا وَاللَّهِ أَنْ لَوْ كَانُوا مِنَ الأَوْسِ مَا أَحْبَبْتَ أَنْ تُضْرَبَ أَعْنَاقُهُمْ حَتَّى كَادَ أَنْ يَكُونَ بَيْنَ الأَوْسِ وَالخَزْرَجِ شَرٌّ فِي الْمَسْجِدِ وَمَا عَلِمْتُ بِهِ، فَلَمَّا كَانَ مَسَاءُ ذَلِكَ الْيَوْمِ خَرَجْتُ لِبَعْضِ حَاجَتِي وَمَعِي أُمُّ مِسْطَحٍ فَعَثَرَتْ، فَقَالَتْ: تَعِسَ مِسْطَحٌ، فَقُلْتُ لَهَا: أَيْ أُمُّ تَسُبِّينَ ابْنَكِ؟ فَسَكَتَتْ، ثُمَّ عَثَرَتِ الثَّانِيَةَ فَقَالَتْ: تَعِسَ مِسْطَحٌ، فَقُلْتُ لَهَا: أَيْ أُمُّ تَسُبِّينَ ابْنَكِ؟ فَسَكَتَتْ، ثُمَّ عَثَرَتِ الثَّالِثَةَ فَقَالَتْ: تَعِسَ مِسْطَحٌ فَانْتَهَرْتُهَا، فَقُلْتُ لَهَا: أَيْ أُمُّ تَسُبِّينَ ابْنَكِ؟ فَقَالَتْ: وَاللَّهِ مَا أَسُبُّهُ إِلاَّ فِيكِ، فَقُلْتُ: فِي أَيِّ شَيْءٍ؟ قَالَتْ: فَبَقَرَتْ لِي الحَدِيثَ،

वक़्त ही जब मैं मौजूद होता हूँ और मैं जिस सफ़र पर भी गया वह मेरे साथ होता है।" तो साद बिन मुआज़ (رضي الله عنه) खड़े हुए कहने लगे: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! आप मुझे इजाज़त दीजिए हम उनकी गर्दनें उतार देते हैं, और खज्रज का एक आदमी खड़ा हुआ क्योंकि हस्सान बिन साबित की वालिदा का ताल्लुक़ उस आदमी के कबीले से था वह कहने लगा: तुम ने झूठ बोला अल्लाह की क़सम! अगर यह लोग औस के होते तो तुमने इस बात को पसंद नहीं करना था कि उनकी गर्दनें उतारी जाएँ। मामला यह बन गया कि हो सकता था कि मस्जिद में ही औस और खज्रज के दर्मियान लड़ाई शुरू हो जाती। जब कि मैं इस मामले को नहीं जानती थी, चुनाँचे जब उस दिन की शाम हुई तो मैं अपने किसी हाजत से बाहर निकली मेरे साथ उम्मे मिस्तह भी थीं वह गिरने लगीं तो कहने लगीं: मिस्तह हलाक हो जाए। मैंने उन से कहा: मां जी! आप अपने बेटे को गाली दे रही हैं तो वह ख़ामोश हो गई, फिर दूसरी मर्तबा गिरीं तो कहने लगी मिस्तह हलाक हो जाए! मैंने फिर उन से कहा: अम्मा जान! आप अपने बेटे को गाली दे रही हैं वह खामोश रहीं, फिर तीसरी मर्तबा गिरीं तो कहा: मिस्तह हलाक हो जाए। फिर मैंने उन्हें झिड़का मैंने कहा: अम्मा जान! आप अपने बेटे को गाली देती हैं। वह कहने लगीं: अल्लाह की क़सम! मैं उसे तुम्हारी वजह से ही गाली दे रही हूँ। मैंने कहा: मेरे किस मामले में? फ़रमाती हैं फिर उन्होंने मुझे सारा वाक़िया सुनाया, मैंने कहा क्या ये हो चुका है? कहने

قُلْتُ: وَقَدْ كَانَ هَذَا؟ قَالَتْ: نَعَمْ، وَاللَّهِ لَقَدْ رَجَعْتُ إِلَى بَيْتِي وَكَأَنَّ الَّذِي خَرَجْتُ لَهُ لَمْ أَخْرُجْ. لاَ أَجِدُ مِنْهُ قَلِيلاً وَلاَ كَثِيرًا، وَوُعِكْتُ، فَقُلْتُ لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَرْسِلْنِي إِلَى بَيْتِ أَبِي، فَأَرْسَلَ مَعِي الْغُلاَمَ، فَدَخَلْتُ الدَّارَ، فَوَجَدْتُ أُمَّ رُومَانَ فِي السُّفْلِ وَأَبُو بَكْرٍ فَوْقَ الْبَيْتِ يَقْرَأُ، فَقَالَتْ أُمِّي: مَا جَاءَ بِكِ يَا بُنَيَّةُ؟ قَالَتْ: فَأَخْبَرْتُهَا، وَذَكَرْتُ لَهَا الْحَدِيثَ، فَإِذَا هُوَ لَمْ يَبْلُغْ مِنْهَا مَا بَلَغَ مِنِّي، قَالَتْ: يَا بُنَيَّةُ خَفِّفِي عَلَيْكِ الشَّأْنَ، فَإِنَّهُ وَاللَّهِ لَقَلَّمَا كَانَتْ امْرَأَةٌ حَسْنَاءُ عِنْدَ رَجُلٍ يُحِبُّهَا، لَهَا ضَرَائِرُ إِلاَّ حَسَدْنَهَا وَقِيلَ فِيهَا، فَإِذَا هِيَ لَمْ يَبْلُغْ مِنْهَا مَا بَلَغَ مِنِّي، قَالَتْ: قُلْتُ: وَقَدْ عَلِمَ بِهِ أَبِي؟ قَالَتْ: نَعَمْ، قُلْتُ: وَرَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَتْ: نَعَمْ، وَاسْتَعْبَرْتُ وَبَكَيْتُ، فَسَمِعَ أَبُو بَكْرٍ صَوْتِي وَهُوَ فَوْقَ الْبَيْتِ يَقْرَأُ فَنَزَلَ فَقَالَ لِأُمِّي: مَا شَأْنُهَا؟ قَالَتْ: بَلَغَهَا الَّذِي ذُكِرَ مِنْ شَأْنِهَا، فَفَاضَتْ عَيْنَاهُ، فَقَالَ: أَقْسَمْتُ

लगीं हाँ अल्लाह की क़सम! मैं अपने घर वापस आ गई गोया मैं जिस काम के लिए गई थी वह तो किया ही नहीं न ही मुझे उसकी थोड़ी या ज़्यादा हाजत महसूस हो रही थी और मुझे बुखार भी हो गया तो मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से कहा: आप मुझे मेरे वालिद के घर भेज दें तो आप ने मेरे साथ एक गुलाम को भेज दिया फिर घर में दाख़िल हूई तो उम्मे रूमान को घर के निचले और अबू बक्र (رضي الله عنه) को घर के ऊपर वाले हिस्से में कुरआन पढ़ते पाया। मेरी मां ने कहा ऐ बेटी कैसे आना हुआ? कहती हैं मैंने उन्हें सारी बात बताई तो देखा जो बात मुझे पता चली थी उन्हें भी पहुँच चुकी थी। उन्होंने कहा कि ऐ बेटी! इस वाक़िया को हल्का समझ क्योंकि अल्लाह की क़सम! कम ही ऐसा होता है कि कोई औरत किसी मर्द के निकाह में हो जो खूबसूरत भी हो उसकी सौतनें भी हों और वह हसद न करें और उस के बारे में बातें न हों गर्ज़ उन्हें इतनी तक्लीफ़ महसूस नहीं हुई जितनी मुझे हो रही थी, कहती हैं कि मैंने पूछा कि क्या मेरे अब्बा जान को इस बात का इल्म है? उन्होंने कहा: हाँ, मैंने कहा: और रसूलुल्लाह (ﷺ) को भी? कहने लगीं: हाँ, मैं ग़मज़दा हो कर रोने लगी तो अबू बक्र ने मेरी आवाज़ सुन ली जो कि घर के ऊपर कुरआन पढ़ रहे थे वह नीचे उतरे और मेरी मां से पूछा इसे क्या हुआ? वह कहने लगीं उसे उस बात का पता चल गया है जो उस के बारे में हो रही है, तो उनकी आँखों से आंसू बहने लगे : फिर कहने लगे: बेटी मैं अल्लाह की क़सम देता हूँ कि तुम अपने घर

عَلَيْكِ يَا بُنَيَّةُ إِلاَّ رَجَعْتِ إِلَى بَيْتِكِ، فَرَجَعْتُ، وَلَقَدْ جَاءَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى بَيْتِي فَسَأَلَ عَنِّي خَادِمَتِي فَقَالَتْ: لاَ وَاللَّهِ مَا عَلِمْتُ عَلَيْهَا عَيْبًا إِلاَّ أَنَّهَا كَانَتْ تَرْقُدُ حَتَّى تَدْخُلَ الشَّاةُ فَتَأْكُلَ خَمِيرَتَهَا أَوْ عَجِينَتَهَا، وَانْتَهَرَهَا بَعْضُ أَصْحَابِهِ فَقَالَ: أَصْدِقِي رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى أَسْقَطُوا لَهَا بِهِ، فَقَالَتْ: سُبْحَانَ اللهِ وَاللَّهِ مَا عَلِمْتُ عَلَيْهَا إِلاَّ مَا يَعْلَمُ الصَّائِغُ عَلَى تِبْرِ الذَّهَبِ الأَحْمَرِ، فَبَلَغَ الأَمْرُ ذَلِكَ الرَّجُلَ الَّذِي قِيلَ لَهُ، فَقَالَ: سُبْحَانَ اللهِ، وَاللَّهِ مَا كَشَفْتُ كَنَفَ أُنْثَى قَطُّ، قَالَتْ عَائِشَةُ: فَقُتِلَ شَهِيدًا فِي سَبِيلِ اللهِ، قَالَتْ: وَأَصْبَحَ أَبَوَايَ عِنْدِي فَلَمْ يَزَالاَ حَتَّى دَخَلَ عَلَيَّ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَدْ صَلَّى الْعَصْرَ، ثُمَّ دَخَلَ وَقَدْ اكْتَنَفَ أَبَوَايَ عَنْ يَمِينِي وَعَنْ شِمَالِي، فَتَشَهَّدَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَحَمِدَ اللَّهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ، ثُمَّ قَالَ: أَمَّا بَعْدُ يَا

चली जाओ चुनांचे मैं वापस आ गई, और रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरे घर तशरीफ़ लाये मेरे बारे में मेरी खादिमा से पूछा तो वह कहने लगी: नहीं अल्लाह की क़सम! मैं उन में कोई ऐब नहीं जानती, हाँ यह ज़रूर है कि वह सो जाती हैं यहाँ तक कि बकरी आकर उनका गूंधा हुआ आटा खा जाती है, और आप के बअज़ सहाबा ने उसे डांटा था कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से सच बात करो, यहाँ तक कि उसे सख़्त सुस्त भी कहा वह कहने लगी: सुब्हान अल्लाह! अल्लाह की क़सम! मैं तो उन्हें इस तरह जानती हूँ जैसे सोनार को ख़ालिस सुर्ख़ रंग के सोने की पहचान होती है, फिर यह बात उस आदमी तक पहुँच गई जिस के बारे में की गई थी (यानी सफ़वान बिन मुअत्तल(رضي الله عنه) तक तो वह कहने लगे: सुब्हान अल्लाह अल्लाह की क़सम! मैंने कभी भी किसी औरत का सतर नहीं खोला। आयशा फ़रमाती हैं फिर वह अल्लाह के रास्ते में शहीद हुए, कहती हैं: सुबह के वक़्त मेरे मां बाप भी मेरे पास आ गए वह मेरे पास ही रहे यहाँ तक कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरे पास तशरीफ़ लाए आप अस्र की नमाज़ पढ़ चुके थे फिर आए मेरे अब्बू और अम्मी दायें बाएँ बैठे हुए थे कि नबी (ﷺ) ने ख़ुत्बा पढ़ा अल्लाह की हम्दो सना की जिस तरह उसे लायक़ है फिर आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "अम्मा बअद! ऐ आयशा! अगर तूने कोई गुनाह या ज़ुल्म किया है तो अल्लाह से तौबा करो क्योंकि अल्लाह अपने बन्दों की तौबा क़ुबूल करता है।" कहती हैं कि अंसार की एक औरत

عَائِشَةُ، إِنْ كُنْتِ قَارَفْتِ سُوءًا أَوْ ظَلَمْتِ فَتُوبِي إِلَى اللهِ، فَإِنَّ اللَّهَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ، قَالَتْ: وَقَدْ جَاءَتْ امْرَأَةٌ مِنَ الأَنْصَارِ وَهِيَ جَالِسَةٌ بِالبَابِ، فَقُلْتُ: أَلاَ تَسْتَحْيِي مِنْ هَذِهِ الْمَرْأَةِ أَنْ تَذْكُرَ شَيْئًا، فَوَعَظَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَالتَفَتُّ إِلَى أَبِي فَقُلْتُ: أَجِبْهُ، قَالَ: فَمَاذَا أَقُولُ؟ فَالتَفَتُّ إِلَى أُمِّي فَقُلْتُ: أَجِيبِيهِ، قَالَتْ: أَقُولُ مَاذَا؟ قَالَتْ: فَلَمَّا لَمْ يُجِيبَا تَشَهَّدْتُ فَحَمِدْتُ اللَّهَ وَأَثْنَيْتُ عَلَيْهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ، ثُمَّ قُلْتُ: أَمَا وَاللَّهِ لَئِنْ قُلْتُ لَكُمْ إِنِّي لَمْ أَفْعَلْ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنِّي لَصَادِقَةٌ مَا ذَاكَ بِنَافِعِي عِنْدَكُمْ لِي لَقَدْ تَكَلَّمْتُمْ وَأُشْرِبَتْ قُلُوبُكُمْ، وَلَئِنْ قُلْتُ إِنِّي قَدْ فَعَلْتُ وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَنِّي لَمْ أَفْعَلْ لَتَقُولُنَّ إِنَّهَا قَدْ بَاءَتْ بِهِ عَلَى نَفْسِهَا، وَإِنِّي وَاللَّهِ مَا أَجِدُ لِي وَلَكُمْ مَثَلاً. قَالَتْ: وَالتَمَسْتُ اسْمَ يَعْقُوبَ فَلَمْ أَقْدِرْ عَلَيْهِ إِلاَّ أَبَا يُوسُفَ حِينَ قَالَ: {فَصَبْرٌ جَمِيلٌ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَى مَا تَصِفُونَ} قَالَتْ: وَأُنْزِلَ عَلَى رَسُولِ اللهِ

भी आई थी और वह दरवाज़े पर बैठी हुई थी, मैंने कहा: आप(ﷺ) उस के सामने यह तजकिरा करने से शर्माते नहीं हैं, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने वअज़ किया तो मैंने अपनी वालिद की तरफ़ देख कर कहा: आप जवाब दीजिए उन्होंने कहा: मैं क्या कहूं? फिर मैंने अपनी मां की तरफ़ देखा मैंने कहा: आप जवाब दीजिए वह भी कहने लगीं: मैं क्या कहूं फ़रमाती है: जब उन दोनों ने जवाब न दिया तो मैंने ख़ुत्बा पढ़ कर अल्लाह की हम्दो सना की जैसे उसको लायक़ है फिर मैंने कहा: अल्लाह की क़सम! अगर मैं तुम लोगों से यह कहूं कि मैंने यह काम नहीं किया, और अल्लाह गवाह है कि मैं सच्ची हूँ लेकिन तुम्हारे पास यह चीज़ मुझे नफ़ा नहीं देगी, यक़ीनन तुम लोगों ने बात की है और तुम्हारे दिलों में बैठ चुकी है और अगर मैं यह कहूं कि मैंने यह काम किया है हालांकि अल्लाह जानता है कि मैंने नहीं किया तो तुम ज़रूर कहोगे उस ने अपने आप पर इक़रार कर लिया है। अल्लाह की क़सम मैं अपने और तुम्हारे लिए अबू यूसुफ़ की मिसाल ही पाती हूँ। फ़रमाती हैं मैं याकूब (عليه السلام) का नाम सोचती रही लेकिन मुझे पता न चल सका। जब उन्होंने कहा था: " सब्र ही बेहतर है और तुम्हारी बयान कर्दा बातों पर अल्लाह से ही मदद का सवाल है।" (यूसुफ़: 18) आयशा कहती हैं : रसूलुल्लाह (ﷺ) पर उसी वक़्त वहि नाज़िल हो गई, हम ख़ामोश हो गए फिर वह ख़त्म हुई तो मैंने आप (ﷺ) के चेहरे पर ख़ुशी की चमक देखी और आप(ﷺ) अपनी पेशानी साफ़ कर

صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ سَاعَتِهِ، فَسَكَتْنَا، فَرُفِعَ عَنْهُ وَإِنِّي لأَتَبَيَّنُ السُّرُورَ فِي وَجْهِهِ وَهُوَ يَمْسَحُ جَبِينَهُ وَيَقُولُ: أَبْشِرِي يَا عَائِشَةُ، فَقَدْ أَنْزَلَ اللَّهُ بَرَاءَتَكِ قَالَتْ: وَكُنْتُ أَشَدَّ مَا كُنْتُ غَضَبًا، فَقَالَ لِي أَبَوَايَ، قُومِي إِلَيْهِ، فَقُلْتُ: لاَ وَاللَّهِ لاَ أَقُومُ إِلَيْهِ وَلاَ أَحْمَدُهُ وَلاَ أَحْمَدُكُمَا، وَلَكِنْ أَحْمَدُ اللَّهَ الَّذِي أَنْزَلَ بَرَاءَتِي، لَقَدْ سَمِعْتُمُوهُ فَمَا أَنْكَرْتُمُوهُ وَلاَ غَيَّرْتُمُوهُ، وَكَانَتْ عَائِشَةُ تَقُولُ: أَمَّا زَيْنَبُ بِنْتُ جَحْشٍ فَعَصَمَهَا اللَّهُ بِدِينِهَا فَلَمْ تَقُلْ إِلاَّ خَيْرًا، وَأَمَّا أُخْتُهَا حَمْنَةُ فَهَلَكَتْ فِيمَنْ هَلَكَ، وَكَانَ الَّذِي يَتَكَلَّمُ فِيهِ مِسْطَحٌ وَحَسَّانُ بْنُ ثَابِتٍ وَالْمُنَافِقُ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ، وَهُوَ الَّذِي كَانَ يَسْتَوْشِيهِ وَيَجْمَعُهُ، وَهُوَ الَّذِي تَوَلَّى كِبْرَهُ مِنْهُمْ هُوَ وَحَمْنَةُ، قَالَتْ: فَحَلَفَ أَبُو بَكْرٍ أَنْ لاَ يَنْفَعَ مِسْطَحًا بِنَافِعَةٍ أَبَدًا، فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى هَذِهِ الآيَةَ وَلاَ يَأْتَلِ أُولُو الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ إِلَى آخِرِ الآيَةِ، يَعْنِي أَبَا بَكْرٍ، {أَنْ يُؤْتُوا أُولِي الْقُرْبَى

रहे थे, आप फ़रमाने लगे: ऐ आयशा! ख़ुश हो जाओ अल्लाह तआला ने तुम्हारी बराअत नाज़िल कर दी है।" मैं बहुत ज़्यादा गुस्से में थी कि मेरे मां बाप ने मुझे कहा: " उन (नबी (ﷺ)) की तरफ़ खड़ी हो। मैंने कहा: नहीं अल्लाह की क़सम! मैं उनकी तरफ़ खड़ी नहीं हुंगी और न उनका शुक्रिया अदा करूंगी और न ही आप दोनों का शुक्रिया अदा करूंगी, बल्कि मैं अल्लाह का शुक्र अदा करूंगी जिस ने मेरी बराअत नाज़िल फ़रमाई है। यक़ीनन तुम लोगों ने उसे सुना फिर उसका इन्कार किया और न ही तब्दील किया। और आयशा (رضي الله عنها) फ़रमाती थीं कि ज़ैनब बिन्ते जहश को अल्लाह तआला ने उनके दीन की वजह से उन्हें बचा लिया उन्होंने अच्छी बात ही कही थी, लेकिन उनकी बहन हम्ना हलाक होने वालों में हलाक हुई और इस बारे में बातें करने वालों में हस्सान बिन साबित, मिस्तह और मुनाफ़िक़ अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल था वह इस बात का तजकिरा शुरू करता और इसे फैलाता था और यही है जो इसका बड़ा बोझ उठाने वाला था और उन में हम्ना भी थीं।

फिर अबू बक्र (رضي الله عنه) ने क़सम उठाई कि कभी भी मिस्तह को कोई फ़ायदा नहीं देंगे, तो अल्लाह तआला ने यह आयत उतार दी "तुम में साहिबे फ़ज़ीलत और मालदार क़समें न उठाएं।" यानी अबू बक्र "कि वह क़राबतदारों, मिस्कीनों और अल्लाह के रास्ते में हिज्रत करने वालों को नहीं देंगे।" यानी मिस्तह को यहाँ से लेकर क्या

وَالمَسَاكِينَ وَالمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ}، يَعْنِي مِسْطَحًا، إِلَى قَوْلِهِ {أَلاَ تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ} قَالَ أَبُو بَكْرٍ: بَلَى وَاللَّهِ يَا رَبَّنَا، إِنَّا لَنُحِبُّ أَنْ تَغْفِرَ لَنَا، وَعَادَ لَهُ بِمَا كَانَ يَصْنَعُ.

तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें बख्श दे और अल्लाह बख्शने वाला मेहरबान है।" (आयत: 22) तक तो अबू बक्र ने कहा: क्यों नहीं अल्लाह की क़सम! ऐ हमारे रब हम चाहते हैं कि तू हमें बख्श दे। चुनांचे जो पहले देते थे वही देने लग गए।

बुख़ारी:4141. मुस्लिम:2770. अबू दाऊद:4008. अहमद:6/59.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: हिशाम बिन उर्वा के इस तरीक़ से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। नीज़ यूनुस बिन यज़ीद, मामर और दीगर रावियों ने भी बवास्ता ज़ोहरी, उर्वा बिन ज़ुबैर, सईद बिन मुसय्यब, अल्क़मा बिन वक़्क़ास लैसी और अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह से आयशा (رضي الله عنها) की इस हदीस को हिशाम बिन उर्वा की हदीस से भी लम्बा बयान किया है।

3181 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ، عَنْ عَمْرَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: لَمَّا نَزَلَ عُذْرِي قَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى المِنْبَرِ، فَذَكَرَ ذَلِكَ وَتَلاَ القُرْآنَ، فَلَمَّا نَزَلَ، أَمَرَ بِرَجُلَيْنِ وَامْرَأَةٍ فَضُرِبُوا حَدَّهُمْ.

3181 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) फ़रमाती हैं कि जब मेरा उज़्र नाज़िल हुआ तो रसूलुल्लाह (ﷺ) मिम्बर पर खड़े हुए फिर आप ने इसका तज़किरा किया और क़ुरआन की तिलावत की फिर जब नीचे उतरे तो दो मर्दों और एक औरत के बारे में हुक्म दिया उन्हें हद लगाई गई।

हसन: आबू दाऊद:4474. इब्ने माजह:2567. अहमद:6/35.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।हम इसे मुहम्मद बिन इस्हाक़ के तरीक़ से ही जानते हैं।

26 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الفُرْقَانِ

26 - तफ़सीर सूरह फुरकान।

3182 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ وَاصِلٍ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُرَحْبِيلَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ

3182 - सय्यदना अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैं ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! सब से बड़ा गुनाह कौन सा है? आपने फ़रमाया, "यह कि तू अल्लाह के साथ शरीक बनाए हालांकि उस ने

اللهِ، أَيُّ الذَّنْبِ أَعْظَمُ؟ قَالَ: أَنْ تَجْعَلَ لِلَّهِ نِدًّا وَهُوَ خَلَقَكَ، قَالَ: قُلْتُ: ثُمَّ مَاذَا؟ قَالَ: أَنْ تَقْتُلَ وَلَدَكَ خَشْيَةَ أَنْ يَطْعَمَ مَعَكَ، قَالَ: قُلْتُ: ثُمَّ مَاذَا؟ قَالَ: أَنْ تَزْنِيَ بِحَلِيلَةِ جَارِكَ.

तुम्हें पैदा किया है।" मैंने कहा: फिर कौन सा? आप ने फ़रमाया, "यह कि तू इस डर से अपनी औलाद को क़त्ल करे कि वह तेरे साथ खाएगी।" मैंने कहा: फिर कौन सा? आप ने फ़रमाया, "यह कि तू अपने हमसाये की बीवी से ज़िना करे।"

बुख़ारी:4477.मुस्लिम:86. अबू दाऊद:2310. निसाई:1013, 1017.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हमें मुहम्मद बिन बश्शार बुन्दार ने अब्दुर्रहमान बिन महदी से (वह कहते हैं) हमें सुफ़ियान ने मंसूर और आमश से, उन्हें अबू वाइल ने अम्र बिन शुरहबील से बवास्ता अब्दुल्लाह नबी (ﷺ) से इस जैसी हदीस बयान की है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3183 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ الرَّبِيعِ أَبُو زَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ وَاصِلٍ الأَحْدَبِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: سَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَيُّ الذَّنْبِ أَعْظَمُ؟ قَالَ: أَنْ تَجْعَلَ لِلَّهِ نِدًّا وَهُوَ خَلَقَكَ، وَأَنْ تَقْتُلَ وَلَدَكَ مِنْ أَجْلِ أَنْ يَأْكُلَ مَعَكَ أَوْ مِنْ طَعَامِكَ، وَأَنْ تَزْنِيَ بِحَلِيلَةِ جَارِكَ. قَالَ: وَتَلاَ هَذِهِ الآيَةَ {وَالَّذِينَ لاَ يَدْعُونَ مَعَ اللهِ إِلَهًا آخَرَ وَلاَ يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلاَّ بِالحَقِّ وَلاَ يَزْنُونَ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ يَلْقَ أَثَامًا يُضَاعَفْ لَهُ العَذَابُ يَوْمَ القِيَامَةِ وَيَخْلُدْ فِيهِ مُهَانًا}.

3183 - सय्यदना अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से दर्याफ़्त किया कि कौन सा गुनाह सब से बड़ा है? आप ने फ़रमाया,"यह कि तू अल्लाह के साथ शरीक ठहराए हालांकि उसने तुम्हें पैदा किया है, यह कि तू इस वजह से अपनी औलाद को क़त्ल करे कि वह तेरे साथ खायेंगे और यह कि तू अपने हमसाये की बीवी से ज़िना करे।" रावी कहते हैं: और आप(ﷺ) ने इस आयत की तिलावत की "और वह लोग जो अल्लाह के साथ किसी दुसरे को नहीं पुकारते और न किसी जान को क़त्ल करते हैं जिसे अल्लाह ने हराम किया है मगर हक़ के साथ और न ज़िना करते हैं और जो यह करेगा वह सख़्त गुनाह को मिलेगा, उसके लिए क़यामत के दिन अज़ाब दुगुना किया जाएगा और वह इसमें हमेशा ज़िल्लत के साथ रहेगा।"

बुख़ारी:4761. अहमद:1/380. इब्ने हिब्बान:4414.
सहीहुत्तर्गीब: 2403.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: सुफ़ियान की मंसूर और आमश से रिवायतकर्दा हदीस शोबा की हदीस से ज़्यादा सहीह है जो कि वासिल से मर्वी है क्योंकि उसकी सनद में एक आदमी का इज़ाफ़ा है।

हमें मुहम्मद बिन मुसन्ना ने मुहम्मद बिन जाफ़र से वह कहते हैं हमें शोबा ने वासिल से बवास्ता अबू वाइल, अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) से नबी (ﷺ) की ऐसी ही हदीस बयान की है।

नीज़ शोबा ने भी वासिल से बवास्ता अबू वाइल अब्दुल्लाह(رضي الله عنه) से ऐसे ही रिवायत की है लेकिन इसमें अम्र बिन शुरहबील का ज़िक्र नहीं है।

27 - तफ़सीर सूरह शोरा।

27 بَاب وَمِنْ سُورَةِ الشُّعَرَاءِ

3184 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि जब यह आयत: " और अपने क़राबत दारों को डराईए" (आयत: 214) नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ सफ़िय्या बिन्ते अब्दुल मुत्तलिब! ऐ फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद! ऐ बनी अब्दुल मुत्तलिब! मैं तुम्हारे लिए अल्लाह की तरफ़ से किसी चीज़ का मालिक नहीं हूँ मेरे माल में जो तुम चाहो मुझ से मांग लो।"

सहीह: तख़रीज के देखिए हदीस नम्बर:2310.

3184 - حَدَّثَنَا أَبُو الأَشْعَثِ أَحْمَدُ بْنُ الْمِقْدَامِ الْعِجْلِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الطُّفَاوِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: لَمَّا نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةَ {وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الأَقْرَبِينَ} قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: يَا صَفِيَّةُ بِنْتَ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، يَا فَاطِمَةُ بِنْتَ مُحَمَّدٍ، يَا بَنِي عَبْدِ الْمُطَّلِبِ إِنِّي لاَ أَمْلِكُ لَكُمْ مِنَ اللهِ شَيْئًا، سَلُونِي مِنْ مَالِي مَا شِئْتُمْ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। वकीअ और दीगर रावियों ने भी इसी हदीस को हिशाम बिन उर्वा से उनके बाप के ज़रिए सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) से ऐसे ही मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान की हदीस की तरह रिवायत किया है और बअ़ज़ ने हिशाम बिन उर्वा से बवास्ता उर्वा नबी (ﷺ) से मुर्सल रिवायत किया है इसमें आयशा (رضي الله عنها) का ज़िक्र नहीं है। नीज़ इस बारे में अली और इब्ने अब्बास (رضي الله عنهما) से भी हदीस मर्वी है।

3185 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنهما) बयान करते हैं कि जब यह आयत " और अपने रिश्तादारों को डराएँ" नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कुरैश के सब खासो-

3185 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَكَرِيَّا بْنُ عَدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَمْرٍو الرَّقِّيُّ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ

مُوسَى بْنِ طَلْحَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ {وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الأَقْرَبِينَ} جَمَعَ رَسُولُ اللهِ ﷺ قُرَيْشًا فَخَصَّ وَعَمَّ فَقَالَ: يَا مَعْشَرَ قُرَيْشٍ أَنْقِذُوا أَنْفُسَكُمْ مِنَ النَّارِ فَإِنِّي لاَ أَمْلِكُ لَكُمْ مِنَ اللهِ ضَرًّا وَلاَ نَفْعًا، يَا مَعْشَرَ بَنِي عَبْدِ مَنَافٍ أَنْقِذُوا أَنْفُسَكُمْ مِنَ النَّارِ فَإِنِّي لاَ أَمْلِكُ لَكُمْ مِنَ اللهِ ضَرًّا وَلاَ نَفْعًا، يَا مَعْشَرَ بَنِي قُصَيٍّ أَنْقِذُوا أَنْفُسَكُمْ مِنَ النَّارِ فَإِنِّي لاَ أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلاَ نَفْعًا، يَا مَعْشَرَ بَنِي عَبْدِ الْمُطَّلِبِ أَنْقِذُوا أَنْفُسَكُمْ مِنَ النَّارِ فَإِنِّي لاَ أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلاَ نَفْعًا، يَا فَاطِمَةُ بِنْتَ مُحَمَّدٍ أَنْقِذِي نَفْسَكِ مِنَ النَّارِ فَإِنِّي لاَ أَمْلِكُ لَكِ ضَرًّا وَلاَ نَفْعًا، إِنَّ لَكِ رَحِمًا سَأَبُلُّهَا بِبِلاَلِهَا.

आम को जमा करके फ़रमाया, "ऐ कुरैश के लोगो! अपने आप को जहन्नम से छुड़ा लो मैं तुम्हारे लिए किसी नफ़ा व नुकसान का मालिक नहीं हूँ, ऐ बनू कुसै के लोगो! अपने आप को जहन्नम से छुड़ा लो मैं तुम्हारे लिए नफ़ा व नुकसान का मालिक नहीं हूँ, ऐ बनू अब्दुल मुत्तलिब के लोगो! अपने आप को जहन्नम से छुड़ा लो मैं तुम्हारे लिए नफ़ा व नुकसान का मालिक नहीं हूँ, ऐ फातिमा बिन्ते मुहम्मद! अपने आप को जहन्नम से छुड़ा लो मैं तुम्हारे लिए नफ़ा व नुकसान का इख़्तियार नहीं रखता, हाँ तुम्हारे लिए क़राबत का हक़ है मैं उसे निभाता रहूंगा।"

बुख़ारी:2753. मुस्लिम:204. अहमद:2/333.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है यह मूसा बिन तल्हा के तरीक़ से ही मारूफ है।

हमें अली बिन हुज्र ने भी शोऐब बिन सफ़वान के ज़रिए अब्दुल मलिक बिन उमैर से बवास्ता मूसा बिन तल्हा, अबू हुरैरा (رضی اللہ عنہ) से नबी (ﷺ) की ऐसी ही हदीस बयान की है।

3186 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي زِيَادٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو زَيْدٍ، عَنْ عَوْفٍ، عَنْ قَسَامَةَ بْنِ زُهَيْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الأَشْعَرِيُّ، قَالَ: لَمَّا نَزَلَ {وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الأَقْرَبِينَ} وَضَعَ رَسُولُ اللهِ ﷺ أُصْبُعَيْهِ فِي أُذُنَيْهِ فَرَفَعَ مِنْ صَوْتِهِ فَقَالَ: يَا بَنِي عَبْدِ مَنَافٍ يَا صَبَاحَاهُ.

3186 - सय्यदना अबू मूसा अशअरी (رضی اللہ عنہ) बयान करते हैं कि जब आयत: "अपने रिश्तेदारों को डराईए" नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने दोनों कानों में उंगलियाँ रख कर बलंद आवाज़ से फ़रमाया, "ऐ बनू अब्दे मुनाफ़! या सबाहाह!"[1]

हसन सहीह: इब्ने हिब्बान:6551. अबू अवाना:1/94.

तौजीह: (1) यह जुम्ला अरब के यहाँ लोगों को जमा करने के लिए बोला जाता था, यह आवाज़ सुनकर लोग इकट्ठा हो जाते थे।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: सय्यदना अबू मूसा अशअरी (رضي الله عنه) के तरीक़ से यह हदीस ग़रीब है। बअज़ ने इसे बवास्ता क़सामा बिन ज़ुहैर नबी (ﷺ) से मुर्सल रिवायत किया है और यह ज़्यादा सहीह है, इसमें अबू मूसा का ज़िक्र नहीं है मैंने मुहम्मद बिन इस्माईल से इसका तज़किरा किया तो वह इसे अबू मूसा की हदीस से नहीं जानते थे।

28 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ النَّمْلِ

3187 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، عَنْ حَمَّادِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ أَوْسِ بْنِ خَالِدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: تَخْرُجُ الدَّابَّةُ مَعَهَا خَاتَمُ سُلَيْمَانَ وَعَصَا مُوسَى فَتَجْلُو وَجْهَ الْمُؤْمِنِ وَتَخْتِمُ أَنْفَ الكَافِرِ بِالخَاتَمِ، حَتَّى إِنَّ أَهْلَ الخُوَانِ لَيَجْتَمِعُونَ فَيَقُولُ: هَاهَا يَا مُؤْمِنُ، وَيُقَالُ: هَاهَا يَا كَافِرُ، وَيَقُولُ: هَذَا يَا كَافِرُ وَهَذَا يَا مُؤْمِنُ.

28 - तफ़सीर सूरह नम्ल।

3187 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "एक जानवर निकलेगा उस के पास सुलैमान (عليه السلام) की अंगूठी और मूसा (عليه السلام) का असा भी होगा, वह मोमिन के चेहरे को रोशन भी कर देगा और काफ़िर की नाक पर अंगूठी के साथ मोहर भी लगा देगा, यहाँ तक कि दस्तरख़्वान वाले जमा होंगे तो यह कहेगा ऐ मोमिन! और यह कहेगा: ऐ काफ़िर!"

ज़ईफ़: इब्ने माजह:4066. अहमद:2/295. हाकिम:4/485. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:1108.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। और यह हदीस एक और सनद से भी बवास्ता अबू हुरैरा (رضي الله عنه) नबी (ﷺ) से ज़मीन के जानवर के बारे में मर्वी है। नीज़ इस बारे में अबू उमामा और हुज़ैफा बिन उसैद (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

29 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ القَصَصِ

3188 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ كَيْسَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ الأَشْجَعِيُّ، هُوَ كُوفِيٌّ

29 - तफ़सीर सूरह क़सस।

3188 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने चचा अबू तालिब से फ़रमाया, "لا إله إلا الله कह दो मैं तुम्हारे लिए क़यामत के दिन गवाही दे दूंगा। तो

اسْمُهُ: سَلْمَانُ مَوْلَى عَزَّةَ الأَشْجَعِيَّةِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لِعَمِّهِ: قُلْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ أَشْهَدُ لَكَ بِهَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَقَالَ: لَوْلاَ أَنْ تُعَيِّرَنِي بِهَا قُرَيْشٌ أَنَّ مَا يَحْمِلُهُ عَلَيْهِ الْجَزَعُ، لأَقْرَرْتُ بِهَا عَيْنَكَ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ {إِنَّكَ لاَ تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ}.

उस ने कहा: अगर कुरैशी मुझे इस बात पर आर न दिलाएं कि उस ने मौत की घबराहट की वजह से कहा है तो मैं उसके साथ तुम्हारी आँख ठंडी कर देता।" फिर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी " आप जिसे चाहें हिदायत नहीं दे सकते बल्कि अल्लाह जिसे चाहे हिदायत दे देता है।" (आयत: 56)

मुस्लिम:25. अहमद:2/434. इब्ने हिब्बान:6270.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।हम इसे यज़ीद बिन कैसान की सनद से ही जानते हैं।

30 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الْعَنْكَبُوتِ

30 - तफ़सीर सूरह अन्कबूत।

3189 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالاَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، قَالَ: سَمِعْتُ مُصْعَبَ بْنَ سَعْدٍ، يُحَدِّثُ، عَنْ أَبِيهِ سَعْدٍ، قَالَ: أُنْزِلَتْ فِيَّ أَرْبَعُ آيَاتٍ، فَذَكَرَ قِصَّةً، فَقَالَتْ أُمُّ سَعْدٍ: أَلَيْسَ قَدْ أَمَرَ اللَّهُ بِالْبِرِّ، وَاللَّهِ لاَ أَطْعَمُ طَعَامًا وَلاَ أَشْرَبُ شَرَابًا حَتَّى أَمُوتَ أَوْ تَكْفُرَ، قَالَ: فَكَانُوا إِذَا أَرَادُوا أَنْ يُطْعِمُوهَا شَجَرُوا فَاهَا فَنَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةَ {وَوَصَّيْنَا الإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا} الآيَةَ.

3189 - सय्यदना साद (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मेरे बारे में चार आयात नाज़िल हुईं: फिर उन्होंने एक किस्सा ज़िक्र किया, कि उम्मे साद ने कहा: क्या अल्लाह ने मां बाप के साथ नेकी का हुक्म नहीं दिया? अल्लाह की क़सम! मैं खाना खाऊँगी और न कोई मशरूब पियूंगी यहाँ तक कि मर जाऊं या तू काफ़िर हो जाए। कहते हैं: जब उन्हें खाना खिलाना चाहते तो उनका मुंह खोल कर उस में डालते फिर यह आयत नाज़िल हुई " हम ने इंसान को वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक का हुक्म दिया और अगर वह तुझे मेरे साथ शिर्क करने का हुक्म दें।" (जिसका तुझे कोई इल्म न हो फिर उनकी बात नहीं माननी) (आयत:8)

तख़रीज के लिये देखिए हदीस नम्बर:2079.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3190 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، وَعَبْدُ اللهِ بْنُ بَكْرٍ السَّهْمِيُّ، عَنْ حَاتِمِ بْنِ أَبِي صَغِيرَةَ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أُمِّ هَانِئٍ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِي قَوْلِهِ تَعَالَى: {وَتَأْتُونَ فِي نَادِيكُمُ الْمُنْكَرَ} قَالَ: كَانُوا يَخْذِفُونَ أَهْلَ الأَرْضِ وَيَسْخَرُونَ مِنْهُمْ.

3190 - सय्यदा उम्मे हानी (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि नबी ने फ़रमाने बारी तआला "और तुम अपनी मजलिसों में बुरा काम करते हो।" (आयत: 29) के बारे में फ़रमाया, "यह लोग ज़मीन वालों पर कंकरियाँ फेंकते और उन्हें मज़ाक़ करते थे।"

ज़ईफ़ुल इस्नाद जिद्दा:अहमद:6/341. हाकिम:2/409. तबरानी:24/1000.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है हम इसे हातिम बिन अबी सगीरा के तरीक़ से ही सिमाक से जानते हैं।

31 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الرُّومِ

31 - तफ़सीर सूरह रूम।

3191 - حَدَّثَنَا أَبُو مُوسَى مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ ابْنُ عَثْمَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْجُمَحِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ شِهَابٍ الزُّهْرِيُّ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ لأَبِي بَكْرٍ فِي مُنَاحَبَةِ {الم غُلِبَتِ الرُّومُ} أَلاَ احْتَطْتَ يَا أَبَا بَكْرٍ، فَإِنَّ الْبِضْعَ مَا بَيْنَ الثَّلَاثِ إِلَى تِسْعٍ.

3191 - अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अबू बक्र (رضي الله عنه) से {الم غُلِبَتِ الرُّومُ} के बारे में शर्त लगाने की वजह से फ़रमाया, "अबू बक्र तुमने एहतियात क्यों नहीं की! بِضْعَ तीन से नौ तक होता है।"

ज़ईफ़: तबरी:17/21. तहावी:2990. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:3354.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है जो कि ज़ोहरी से बवास्ता उबैदुल्लाह, इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) से मर्वी है।

3192 - حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ الْجَهْضَمِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ أَبِيهِ،

3192 - सय्यदना अबू सईद (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि जब बद्र का दिन था तो उधर रूमी फ़ारिस पर ग़ालिब आ गए, ईमान वालों को यह

عَنْ سُلَيْمَانَ الأَعْمَشِ، عَنْ عَطِيَّةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، قَالَ: لَمَّا كَانَ يَوْمُ بَدْرٍ ظَهَرَتِ الرُّومُ عَلَى فَارِسَ فَأَعْجَبَ ذَلِكَ الْمُؤْمِنِينَ فَنَزَلَتْ: {الم غُلِبَتِ الرُّومُ}، إِلَى قَوْلِهِ: {يَفْرَحُ الْمُؤْمِنُونَ بِنَصْرِ اللَّهِ} قَالَ: فَفَرِحَ الْمُؤْمِنُونَ بِظُهُورِ الرُّومِ عَلَى فَارِسَ.

बहुत अच्छा लगा तो आयात " الم रूमी ग़ालिब हुए" से लेकर ईमान वाले अल्लाह की मदद से खुश हो गए" (1- 5) तक नाज़िल हुई फ़रमाते हैं: मोमिन रूम के फ़ारिस पर गलबा की वजह से खुश हुए थे।

सहीह लिगैरिही: तख़रीज के लिये देखिए हदीस नम्बर:2935.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस ग़रीब है नस्त्र बिन अली ने غُلِبَتِ الرُّومُ (रूमी ग़ालिब हुए) पढ़ा है।

3193 - حَدَّثَنَا الْحُسَيْنُ بْنُ حُرَيْثٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرٍو، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ الْفَزَارِيِّ، عَنْ سُفْيَانَ الثَّوْرِيِّ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ أَبِي عَمْرَةَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، فِي قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: {الم غُلِبَتِ الرُّومُ فِي أَدْنَى الأَرْضِ} قَالَ: غُلِبَتْ وَغَلَبَتْ، كَانَ الْمُشْرِكُونَ يُحِبُّونَ أَنْ يَظْهَرَ أَهْلُ فَارِسَ عَلَى الرُّومِ لأَنَّهُمْ وَإِيَّاهُمْ أَهْلُ أَوْثَانٍ، وَكَانَ الْمُسْلِمُونَ يُحِبُّونَ أَنْ يَظْهَرَ الرُّومُ عَلَى فَارِسَ لأَنَّهُمْ أَهْلُ كِتَابٍ، فَذَكَرُوهُ لأَبِي بَكْرٍ فَذَكَرَهُ أَبُو بَكْرٍ لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: أَمَا إِنَّهُمْ سَيَغْلِبُونَ، فَذَكَرَهُ أَبُو بَكْرٍ لَهُمْ، فَقَالُوا: اجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ أَجَلاً، فَإِنْ ظَهَرْنَا

3193 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) अल्लाह तआला के फ़रमान "{ الم غُلِبَتِ الرُّومُ فِي أَدْنَى الأَرْضِ{ रूमी मग्लूब हुए सब से क़रीब ज़मीन में" के बारे में फ़रमाते हैं: غُلِبَتْ मग्लूब हुए और غَلَبَتْ ग़ालिब हुए दोनों तरह ही दुरुस्त है कहते हैं कि मुशिरकीने अरब चाहते थे कि फ़ारिस वाले ग़ालिब आ जाएं क्योंकि यह और वह बुत परस्त थे, और मुसलमान यह चाहते थे कि रूमी फ़ारिस वालों पर ग़ालिब आ जाएँ इसलिए कि वह अहले किताब थे तो मुसलमानों ने अबु बक्र (رضي الله عنه) से इसका ज़िक्र किया, अबू बक्र (رضي الله عنه) ने इसका रसूल (صلى الله عليه وسلم) से किया तो आप ने फ़रमाया, "वह तो अन्क़रीब ग़ालिब आ जाएंगे।" फिर अबू बक्र (رضي الله عنه) ने इसका तजकिरा लोगों से किया तो वह कहने लगे: हमारे और अपने दर्मियान कोई मुद्दत तै करो, फिर अगर हम (फ़ारिस) ग़ालिब आ गए तो हमारे लिए इतना

كَانَ لَنَا كَذَا وَكَذَا، وَإِنْ ظَهَرْتُمْ كَانَ لَكُمْ كَذَا وَكَذَا، فَجَعَلَ أَجَلاً خَمْسَ سِنِينَ، فَلَمْ يَظْهَرُوا، فَذَكَرَ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: أَلاَ جَعَلْتَهُ إِلَى دُونَ، قَالَ: أُرَاهُ الْعَشْرَ، قَالَ سَعِيدٌ: وَالْبِضْعُ مَا دُونَ الْعَشْرِ، قَالَ: ثُمَّ ظَهَرَتِ الرُّومُ بَعْدُ. قَالَ: فَذَلِكَ قَوْلُهُ تَعَالَى: {الم غُلِبَتِ الرُّومُ}، إِلَى قَوْلِهِ: {يَفْرَحُ الْمُؤْمِنُونَ بِنَصْرِ اللهِ يَنْصُرُ مَنْ يَشَاءُ} قَالَ سُفْيَانُ: سَمِعْتُ أَنَّهُمْ ظَهَرُوا عَلَيْهِمْ يَوْمَ بَدْرٍ.

कुछ इनाम होगा और अगर तुम (अहले रूम) ग़ालिब आ गए तो तुम्हें इतना मिलेगा चुनांचे उन्होंने पांच साल की मुद्दत मुक़र्रर की लेकिन वह ग़ालिब न आ सके, उन्होंने नबी (ﷺ) से ज़िक्र किया तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "तुमने इस से ज़्यादा क्यों न कहा: " दस तक क्यों न कहा।" सईद कहते हैं: بِضْعُ दस तक बोला जाता है, रावी कहते हैं फिर इसके बाद रूम वाले ग़ालिब आ गए यही अल्लाह का फ़रमान है " الم रूमी मग्लूब हुए" से लेकर उस दिन मोमिन अल्लाह की मदद के साथ खुश होंगे वह जिसकी चाहे मदद करता है।" सुफ़ियान कहते हैं मैंने सुना है कि (रूमी) बद्र के दिन ही उन फारसियों पर ग़ालिब आए थे।

सहीह: अहमद: 1/276. हाकिम: 2/410. तबरानी: 12377. इस हदीस को अल्लामा अल्बानी ने अस-सिल्सिलतुल अहादीस अज़-ज़ईफ़ा में हदीस नम्बर 2254 के ज़ेल में ज़िक्र किया है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है हम इसे बवास्ता सुफ़ियान सौरी ही हबीब बिन अबी उम्रा से जानते हैं।

3194 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي أُوَيْسٍ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي الزِّنَادِ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ نِيَارِ بْنِ مُكْرَمٍ الأَسْلَمِيِّ، قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ {الم غُلِبَتِ الرُّومُ فِي أَدْنَى الأَرْضِ وَهُمْ مِنْ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُونَ فِي

3194 - सय्यदना नियार बिन मुक्रम असलमी (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं: जब आयात: " الم रूमी मग्लूब हुए सब से क़रीब ज़मीन में और वह अपने मग्लूब होने के बाद ग़ालिब आएंगे चन्द सालों में" नाज़िल हुई तो जिस दिन यह आयात नाज़िल हुई उस वक़्त फ़ारसी रूम वालों पर ग़ालिब थे और मुसलमान रूम का उन पर ग़लबा चाहते थे इसलिए कि यह और वह अहले

بِضْعِ سِنِينَ} فَكَانَتْ فَارِسُ يَوْمَ نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ قَاهِرِينَ لِلرُّومِ، وَكَانَ الْمُسْلِمُونَ يُحِبُّونَ ظُهُورَ الرُّومِ عَلَيْهِمْ لأَنَّهُمْ وَإِيَّاهُمْ أَهْلُ كِتَابٍ، وَفِي ذَلِكَ قَوْلُ اللهِ تَعَالَى: {وَيَوْمَئِذٍ يَفْرَحُ الْمُؤْمِنُونَ بِنَصْرِ اللهِ يَنْصُرُ مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ} فَكَانَتْ قُرَيْشٌ تُحِبُّ ظُهُورَ فَارِسَ لأَنَّهُمْ وَإِيَّاهُمْ لَيْسُوا بِأَهْلِ كِتَابٍ وَلاَ إِيمَانٍ بِبَعْثٍ، فَلَمَّا أَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى هَذِهِ الآيَةَ، خَرَجَ أَبُو بَكْرٍ الصِّدِّيقُ يَصِيحُ فِي نَوَاحِي مَكَّةَ {الم غُلِبَتِ الرُّومُ فِي أَدْنَى الأَرْضِ وَهُمْ مِنْ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُونَ فِي بِضْعِ سِنِينَ} قَالَ نَاسٌ مِنْ قُرَيْشٍ لأَبِي بَكْرٍ: فَذَلِكَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ، زَعَمَ صَاحِبُكَ أَنَّ الرُّومَ سَتَغْلِبُ فَارِسَ فِي بِضْعِ سِنِينَ، أَفَلاَ نُرَاهِنُكَ عَلَى ذَلِكَ، قَالَ: بَلَى، وَذَلِكَ قَبْلَ تَحْرِيمِ الرِّهَانِ، فَارْتَهَنَ أَبُو بَكْرٍ وَالْمُشْرِكُونَ وَتَوَاضَعُوا الرِّهَانَ، وَقَالُوا لأَبِي بَكْرٍ: كَمْ تَجْعَلُ الْبِضْعُ ثَلاَثُ سِنِينَ إِلَى تِسْعِ سِنِينَ، فَسَمِّ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ وَسَطًا تَنْتَهِي إِلَيْهِ، قَالَ: فَسَمَّوْا بَيْنَهُمْ سِتَّ سِنِينَ، قَالَ: فَمَضَتِ

किताब थे और अल्लाह तआला का यह फ़रमान इसी बारे में है " उस दिन मोमिन ख़ुश होंगे अल्लाह की मदद से वह जिसकी चाहता है मदद करता है और वही सब पर ग़ालिब निहायत रहम वाला है।" और कुरैशी यह चाहते थे कि फ़ारिस के लोग ग़ालिब आयें इसलिए कि वह अहले किताब नहीं थे और न ही उनका आख़िरत पर ईमान था, फिर जब अल्लाह तआला ने यह आयात नाज़िल की तो अबू बक्र सिद्दीक़ (رضي الله عنه) मक्का के अतराफ में आवाज़ लगाने लगे: الم रूमी मग्लूब हो गए, सबसे क़रीब ज़मीन में और वह अपने मग़लूब होने के बाद अन्क़रीब ग़ालिब आयेंगे, चन्द सालों में" तो कुरैश के कुछ लोगों ने अबू बक्र (رضي الله عنه) से कहा: यह हमारे और तुम्हारे दर्मियान शर्त है तुम्हारे साथी का ख़याल है कि रूमी चन्द सालों में फ़ारिस पर ग़ालिब आ जायेंगे, क्या हम इस बात पर शर्त न लगा लें। उन्होंने कहा: क्यों नहीं? और यह शर्त की हुर्मत से पहले का वाक़िया है। तो अबू बक्र (رضي الله عنه) और मुश्रिकीन ने शर्त लगा ली और शर्त की चीजें रखवा दीं, उन्होंने अबू बक्र (رضي الله عنه) से कहा: तुम بِضْع को तीन से नौ तक बोलते हो हमें एक का नाम बता दो, रावी कहते हैं: तो उन्होंने छः साल का नाम मुक़र्रर कर लिया, फिर छः साल गुज़र गए लेकिन वह ग़ालिब न आए तो मुश्रिकीन ने अबू बक्र (رضي الله عنه) का माले शर्त ले लिया, फिर जब सातवाँ साल आया रूमी

السِّتُّ سِنِينَ قَبْلَ أَنْ يَظْهَرُوا، فَأَخَذَ الْمُشْرِكُونَ رَهْنَ أَبِي بَكْرٍ، فَلَمَّا دَخَلَتِ السَّنَةُ السَّابِعَةُ ظَهَرَتِ الرُّومُ عَلَى فَارِسَ، فَعَابَ الْمُسْلِمُونَ عَلَى أَبِي بَكْرٍ تَسْمِيَةَ سِتِّ سِنِينَ، لأَنَّ اللَّهَ تَعَالَى قَالَ فِي بِضْعِ سِنِينَ، قَالَ: وَأَسْلَمَ عِنْدَ ذَلِكَ نَاسٌ كَثِيرٌ.

फारसियों पर ग़ालिब आ गए, तो मुसलमानों ने छः साल का ज़िक्र करने पर अबू बक्र (رضي الله عنه) पर ऐबजोई की, इसलिए कि अल्लाह तआला ने " चन्द सालों में" कहा था। रावी कहते हैं: उस वक़्त बहुत लोगों ने इस्लाम कुबूल कर लिया।

हसन: इब्ने खुज़ैमा: 166, 167. बैहक़ी: 1/374. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफ़ा: हदीस नम्बर 3354.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: सय्यदना नियार बिन मुकरम असलमी (رضي الله عنه) की सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है, हम इसे अब्दुर्रहमान बिन अबू ज़िनाद के तरीक़ से ही जानते हैं।

32 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ لُقْمَانَ

32 - तफ़सीर सूरह लुक़मान।

3195 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا بَكْرُ بْنُ مُضَرَ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ زَحْرٍ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ يَزِيدَ، عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي أُمَامَةَ، عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لاَ تَبِيعُوا الْقَيْنَاتِ وَلاَ تَشْتَرُوهُنَّ وَلاَ تُعَلِّمُوهُنَّ، وَلاَ خَيْرَ فِي تِجَارَةٍ فِيهِنَّ وَثَمَنُهُنَّ حَرَامٌ، وَفِي مِثْلِ ذَلِكَ أُنْزِلَتْ عَلَيْهِ هَذِهِ الآيَةَ {وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَشْتَرِي لَهْوَ الْحَدِيثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ} إِلَى آخِرِ الآيَةِ.

3195 - सय्यदना अबू उमामा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "गाना गाने वाली लौंडियों को न बेचो, न उन्हें खरीदो और न ही उन्हें गाना सिखाओ, उनकी तिजारत में बर्कत नहीं है और उनकी कीमत भी हराम है ऐसी ही चीज़ों के मुताल्लिक़ आप पर यह आयत नाज़िल हुई है। " और लोगों में से बअज़ वह हैं जो गाफ़िल करने वाली बात ख़रीदते हैं ताकी जाने बगैर अल्लाह के रास्ते से गुमराह कर दें।"

हसन: तख़रीज के लिये देखिए हदीस नम्बर: 1282.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। यह बवास्ता क़ासिम ही अबू उमामा (رضي الله عنه) से मर्वी है, क़ासिम सिक़ह् रावी हैं जबकि अली बिन यज़ीद हदीस में ज़ईफ़ है यह बात मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी ने कही है।

33 - तफ़सीर सूरह सज्दा।

33 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ السَّجْدَةِ

3196 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي زِيَادٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأُوَيْسِيُّ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ بِلاَلٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ: أَنَّ هَذِهِ الآيَةَ {تَتَجَافَى جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ} نَزَلَتْ فِي انْتِظَارِ هَذِهِ الصَّلاَةِ الَّتِي تُدْعَى العَتَمَةَ.

3196 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) आयत " उनके पहलू बिस्तरों से अलाहिदा (अलग) रहते हैं" (आयत: 16) के बारे में फ़रमाते हैं: यह उस नमाज़ के इन्तिज़ार की फ़ज़ीलत में नाज़िल हुई है जिसे अतमा (इशा) कहा जाता है।

सहीह: अबू दाऊद: 1321. सहीहुत्तर्गीब: 444. तबरी: 21/ 101.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है, हम इसे सिर्फ इसी सनद से जानते हैं।

3197 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، يَبْلُغُ بِهِ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: أَعْدَدْتُ لِعِبَادِيَ الصَّالِحِينَ مَا لاَ عَيْنٌ رَأَتْ، وَلاَ أُذُنٌ سَمِعَتْ، وَلاَ خَطَرَ عَلَى قَلْبِ بَشَرٍ، وَتَصْدِيقُ ذَلِكَ فِي كِتَابِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ {فَلاَ تَعْلَمُ نَفْسٌ مَا أُخْفِيَ لَهُمْ مِنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ}.

3197 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) नबी (ﷺ) से रिवायत करते हैं कि आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: " मैंने अपने नेक बन्दों के लिए कुछ तैयार किया है जिसे किसी आँख ने न देखा है, न किसी कान ने सुना है, और न ही किसी इंसान के दिल में इस का तसव्वुर आया है।" और उसकी तस्दीक़ अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की किताब में है " पस कोई शख़्स नहीं जानता कि उनके लिए आँखों की ठंडक के सामान से क्या कुछ छिपा रखा गया है, यह उस अमल की जज़ा है जो वह किया करते थे।" (आयत: 17)

बुख़ारी: 3244. मुस्लिम: 2824. इब्ने माजह: 4328.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3198 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مُطَرِّفِ بْنِ طَرِيفٍ، وَعَبْدِ الْمَلِكِ وَهُوَ ابْنُ أَبْجَرَ، سَمِعَا الشَّعْبِيَّ، يَقُولُ: سَمِعْتُ الْمُغِيرَةَ بْنَ شُعْبَةَ، عَلَى الْمِنْبَرِ يَرْفَعُهُ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: إِنَّ مُوسَى سَأَلَ رَبَّهُ فَقَالَ: أَيْ رَبِّ أَيُّ أَهْلِ الجَنَّةِ أَدْنَى مَنْزِلَةً؟ قَالَ: رَجُلٌ يَأْتِي بَعْدَمَا يَدْخُلُ أَهْلُ الجَنَّةِ الجَنَّةَ فَيُقَالُ لَهُ: ادْخُلِ الجَنَّةَ، فَيَقُولُ: كَيْفَ أَدْخُلُ وَقَدْ نَزَلُوا مَنَازِلَهُمْ وَأَخَذُوا أَخَذَاتِهِمْ. قَالَ: فَيُقَالُ لَهُ أَتَرْضَى أَنْ يَكُونَ لَكَ مَا كَانَ لِمَلِكٍ مِنْ مُلُوكِ الدُّنْيَا؟ فَيَقُولُ: نَعَمْ، أَيْ رَبِّ قَدْ رَضِيتُ. فَيُقَالُ لَهُ: فَإِنَّ لَكَ هَذَا وَمِثْلَهُ وَمِثْلَهُ وَمِثْلَهُ، فَيَقُولُ: قَدْ رَضِيتُ أَيْ رَبِّ، فَيُقَالُ لَهُ: فَإِنَّ لَكَ هَذَا وَعَشْرَةَ أَمْثَالِهِ، فَيَقُولُ: رَضِيتُ أَيْ رَبِّ، فَيُقَالُ لَهُ: فَإِنَّ لَكَ مَعَ هَذَا مَا اشْتَهَتْ نَفْسُكَ وَلَذَّتْ عَيْنُكَ.

3198 - शाबी (رحمه الله) कहते हैं मैंने मुग़ीरा बिन शोबा (رضي الله عنه) से सुना वह मिम्बर पर बयान कर रहे थे कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "मूसा (عليه السلام) ने अपने रब से सवाल किया "ऐ मेरे रब! सब से कम मर्तबे वाला जन्नती कौन है?" अल्लाह तआला ने फ़रमाया, "वह आदमी जो अहले जन्नत के जन्नत में दाख़िल हो जाने के बाद आएगा तो उस से कहा जाएगा, दाख़िल हो जा।" वह कहेगा: मैं कैसे अन्दर जाऊं जब कि लोग अपने ठिकानों पर उतर चुके हैं और अपनी जगह हासिल कर चुके हैं? फ़रमाया, उस से कहा जाएगा क्या तू राज़ी हो जाएगा अगर तुझे वह जन्नत मिले जो दुनिया के बादशाहों में से एक बादशाह के पास था? वह कहेगा: हाँ, ऐ मेरे परवरदिगार! मैं राजी हूँ, फिर उस से कहा जाएगा तुम्हारे लिए यह भी और इस से तीन गुना और भी। वह कहेगा: ऐ मेरे परवरदिगार! मैं राज़ी हूँ, फिर उस से कहा जायेगा तुम्हारे लिए यह भी है और इसके साथ दस गुना और भी वह कहेगा: ऐ मेरे रब! मैं राज़ी हूँ फिर उस से कहा जाएगा: इस के साथ साथ तुम्हारे लिए वह सब है जो जो तुम्हारा दिल चाहेगा और जिस से तुम्हारी आँखों को लज्ज़त मिलेगी।"

मुस्लिम: 189. हुमैदी: 761. इब्ने हिब्बान: 6216.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और बअ़ज़ ने इस हदीस को बवास्ता शाबी, मुग़ीरा (رضي الله عنه) से रिवायत किया है जो कि मर्फ़ू नहीं है लेकिन मर्फ़ू ज़्यादा सहीह है।

34 - तफ़सीर सूरह अहज़ाब।

34 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الأَحْزَابِ

3199 - क़ाबूस बिन अबी ज़ब्यान से रिवायत है कि उनके बाप कहते हैं: हम ने इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) से कहा: "आप यह बताइए कि अल्लाह अज्ज़ व जल्ल के फ़रमान "अल्लाह तआला ने किसी आदमी के सीने में दो दिल नहीं बनाए" (आयत:4) से क्या मुराद है? उन्होंने फ़रमाया, "अल्लाह के नबी (ﷺ) एक दिन नमाज़ पढ़ाने के लिए खड़े हुए तो आप से कुछ सह्व हो गया, जो मुनाफ़िक़ आप के साथ नमाज़ पढ़ रहे थे वह कहने लगे: क्या तुम देखते नहीं कि उनके दो दिल हैं एक दिल तुम्हारे साथ है और एक उनके साथ है। चुनांचे अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई "अल्लाह तआला अपने किसी आदमी के सीने में दो दिल नहीं बनाए।"

3199 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا صَاعِدُ الحَرَّانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا قَابُوسُ بْنُ أَبِي ظَبْيَانَ، أَنَّ أَبَاهُ، حَدَّثَهُ قَالَ: قُلْنَا لِابْنِ عَبَّاسٍ: أَرَأَيْتَ قَوْلَ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ {مَا جَعَلَ اللَّهُ لِرَجُلٍ مِنْ قَلْبَيْنِ فِي جَوْفِهِ} مَا عَنَى بِذَلِكَ؟ قَالَ: قَامَ نَبِيُّ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمًا يُصَلِّي فَخَطَرَ خَطْرَةً، فَقَالَ الْمُنَافِقُونَ الَّذِينَ يُصَلُّونَ مَعَهُ: أَلَا تَرَى أَنَّ لَهُ قَلْبَيْنِ، قَلْبًا مَعَكُمْ وَقَلْبًا مَعَهُمْ فَأَنْزَلَ اللَّهُ {مَا جَعَلَ اللَّهُ لِرَجُلٍ مِنْ قَلْبَيْنِ فِي جَوْفِهِ}.

ज़ईफुल इस्नाद:अहमद:1/267. इब्ने खुज़ैमा:865. तबरानी:12610.

वज़ाहत: हमें अब्द बिन हुमैद ने भी बवास्ता अहमद बिन यूनुस, ज़ुहैर से ऐसी ही हदीस बयान की है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।

3200 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) बयान करते हैं: मेरे चचा अनस बिन नज़र जिनके नाम पर मेरा नाम है उन्होंने कहा: वह रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ बद्र में शरीक न हो सके थे इस बात का उन्हें बहुत रंज था कहने लगे: रसूलुल्लाह (ﷺ) जिस पहले मारका में शरीक हुए मैं उससे ग़ायब था, अल्लाह की क़सम! अगर अल्लाह ने मुझे रसूलुल्लाह

3200 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ الْمُغِيرَةِ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: قَالَ عَمِّي أَنَسُ بْنُ النَّضْرِ، سُمِّيتُ بِهِ، لَمْ يَشْهَدْ بَدْرًا مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَبُرَ عَلَيْهِ، فَقَالَ: أَوَّلُ مَشْهَدٍ قَدْ شَهِدَهُ

رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غِبْتُ عَنْهُ، أَمَا وَاللَّهِ لَئِنْ أَرَانِي اللَّهُ مَشْهَدًا مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيَرَيَنَّ اللَّهُ مَا أَصْنَعُ، قَالَ: فَهَابَ أَنْ يَقُولَ غَيْرَهَا، فَشَهِدَ مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ أُحُدٍ مِنَ العَامِ القَابِلِ فَاسْتَقْبَلَهُ سَعْدُ بْنُ مُعَاذٍ، فَقَالَ: يَا أَبَا عَمْرٍو أَيْنَ؟ قَالَ: وَاهًا لِرِيحِ الجَنَّةِ أَجِدُهَا دُونَ أُحُدٍ، فَقَاتَلَ حَتَّى قُتِلَ، فَوُجِدَ فِي جَسَدِهِ بِضْعٌ وَثَمَانُونَ مِنْ بَيْنِ ضَرْبَةٍ وَطَعْنَةٍ وَرَمْيَةٍ، فَقَالَتْ عَمَّتِي الرُّبَيِّعُ بِنْتُ النَّضْرِ: فَمَا عَرَفْتُ أَخِي إِلاَّ بِبَنَانِهِ. وَنَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةَ {رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللَّهَ عَلَيْهِ فَمِنْهُمْ مَنْ قَضَى نَحْبَهُ وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْتَظِرُ وَمَا بَدَّلُوا تَبْدِيلاً}.

(ﷺ) के साथ कोई मारका दिखाया तो आप ज़रूर देखेंगे कि मैं क्या करता हूँ। रावी कहते हैं: वह इसके अलावा कोई और बात कहने से भी डरे, चुनांचे वह अगले साल रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ उहुद में शरीक हुए तो आगे से उन्हें साद बिन मुआज़ मिले वह कहने लगे: ऐ अबु अम्र! कहाँ जा रहे हो? कहा: वाह उहुद के पीछे मुझे जन्नत की खुशबू आ रही है। फिर उन्होंने लड़ाई की हत्ता कि शहीद हो गए तो उनके जिस्म में तलवार, नेज़े और तीर के अस्सी से ऊपर ज़ख्म थे, मेरी फूफी रूबैअ बिन्ते नज़र कहती हैं: मैंने अपने भाई को सिर्फ उँगलियों के पोरों से पहचाना था और यह आयत नाज़िल हुई " कुछ मर्द ऐसे है। जिन्होंने वह बात सच कर दिखाई जिस पर उन्होंने अल्लाह से अहद किया, फिर उन में से कोई अपना वादा पूरा कर चुका है और कोई इन्तिज़ार कर रहा है और उन्होंने कुछ भी तब्दीली नहीं की।"

बुख़ारी:2805. मुस्लिम:1903. अहमद:3/ 194.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3201 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا حُمَيْدٌ الطَّوِيلُ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ عَمَّهُ غَابَ عَنْ قِتَالِ بَدْرٍ فَقَالَ: غِبْتُ عَنْ أَوَّلِ قِتَالٍ قَاتَلَهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمُشْرِكِينَ لَئِنِ اللَّهُ أَشْهَدَنِي قِتَالاً لِلْمُشْرِكِينَ لَيَرَيَنَّ اللَّهُ

3201 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि उनके चचा बद्र की लड़ाई से ग़ायब थे, वह कहने लगे: मैं उस पहली लड़ाई से गैर हाज़िर था जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुश्रिकीन से की थी, अगर अल्लाह ने मुझे काफ़िरों के साथ किसी लड़ाई में शरीक होने का मौक़ा दिया तो अल्लाह ज़रूर देखेगा मैं क्या करता हूँ, चुनांचे जब उहुद का दिन था तो

كَيْفَ أَصْنَعُ، فَلَمَّا كَانَ يَوْمُ أُحُدٍ انْكَشَفَ الْمُسْلِمُونَ، فَقَالَ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَبْرَأُ إِلَيْكَ مِمَّا جَاءَ بِهِ هَؤُلَاءِ، يَعْنِي الْمُشْرِكِينَ، وَأَعْتَذِرُ إِلَيْكَ مِمَّا صَنَعَ هَؤُلَاءِ، يَعْنِي أَصْحَابَهُ، ثُمَّ تَقَدَّمَ فَلَقِيَهُ سَعْدٌ فَقَالَ: يَا أَخِي، مَا فَعَلْتَ أَنَا مَعَكَ، فَلَمْ أَسْتَطِعْ أَنْ أَصْنَعَ مَا صَنَعَ، فَوُجِدَ فِيهِ بِضْعٌ وَثَمَانُونَ بَيْنَ ضَرْبَةٍ بِسَيْفٍ وَطَعْنَةٍ بِرُمْحٍ وَرَمْيَةٍ بِسَهْمٍ، فَكُنَّا نَقُولُ فِيهِ وَفِي أَصْحَابِهِ نَزَلَتْ {فَمِنْهُمْ مَنْ قَضَى نَحْبَهُ وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْتَظِرُ}. قَالَ يَزِيدُ يَعْنِي هَذِهِ الآيَةَ.

मुसलमान इधर उधर बिखर गए वह कहने लगे: ऐ अल्लाह मैं उस चीज़ से तेरी पनाह माँगता हूँ जो यह मुश्रिकीन ले कर आए हैं और मैं तेरी तरफ़ उस चीज़ की माजूरी ज़ाहिर करता हूँ जो उन लोगों यानी सहाबा ने किया है, फिर वह आगे बढ़े तो उन्हें साद मिले, उन्होंने कहा: ऐ मेरे भाई तुमने क्या किया मैं तुम्हारे साथ हूँ, मगर मुझ से वह न हो सका जो उन्होंने किया, उन्होंने उनके जिस्म में अस्सी से ऊपर तलवार, नेज़े और तीर के ज़ख़्म पाए। हम कहा करते थे: यह आयत "उन में से कुछ ने वादा पूरा कर दिया है और कुछ इन्तिज़ार में हैं" उन के और उनके साथियों के बारे में नाज़िल हुई है। यज़ीद कहते हैं: यानी यह आयत।

बुख़ारी:2805. अहमद:3/201. अब्द बिन हुमैद:1396.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और उन (सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه)) के चचा का नाम अनस बिन नज़र (رضي الله عنه) था।

3202 - حَدَّثَنَا عَبْدُ الْقُدُّوسِ بْنُ مُحَمَّدٍ الْعَطَّارُ الْبَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَاصِمٍ، عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ يَحْيَى بْنِ طَلْحَةَ، عَنْ مُوسَى بْنِ طَلْحَةَ، قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى مُعَاوِيَةَ، فَقَالَ: أَلاَ أُبَشِّرُكَ؟ قُلْتُ: بَلَى، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: طَلْحَةُ مِمَّنْ قَضَى نَحْبَهُ

3202 - मूसा बिन तल्हा कहते हैं: मैं मुआविया (رضي الله عنه) के पास गया तो उन्होंने फ़रमाया, "क्या मैं तुम्हें ख़ुशी की बात न बताऊँ? मैंने कहा: ज़रूर। उन्होंने फ़रमाया, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना था: "तल्हा उन लोगों में से है जिन्होंने अपना अहद पूरा कर दिया है।"

हसन:इब्ने माजह:126. तबरानी:19/739. अस-सिलसिला अस-सहीहा:125.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है हम इसे इसी तरीक़ से ही मुआविया (رضي الله عنه) से जानते हैं और यह हदीस बवास्ता मूसा बिन तल्हा उन के बाप से भी मर्वी है।

3203 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ بُكَيْرٍ، عَنْ طَلْحَةَ بْنِ يَحْيَى، عَنْ مُوسَى، وَعِيسَى، ابْنَيْ طَلْحَةَ عَنْ أَبِيهِمَا طَلْحَةَ، أَنَّ أَصْحَابَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالُوا لأَعْرَابِيٍّ جَاهِلٍ: سَلْهُ عَمَّنْ قَضَى نَحْبَهُ مَنْ هُوَ؟ وَكَانُوا لاَ يَجْتَرِئُونَ عَلَى مَسْأَلَتِهِ يُوَقِّرُونَهُ وَيَهَابُونَهُ، فَسَأَلَهُ الأَعْرَابِيُّ فَأَعْرَضَ عَنْهُ، ثُمَّ سَأَلَهُ فَأَعْرَضَ عَنْهُ، ثُمَّ سَأَلَهُ فَأَعْرَضَ عَنْهُ، ثُمَّ إِنِّي اطَّلَعْتُ مِنْ بَابِ الْمَسْجِدِ وَعَلَيَّ ثِيَابٌ خُضْرٌ، فَلَمَّا رَآنِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: أَيْنَ السَّائِلُ عَمَّنْ قَضَى نَحْبَهُ؟ قَالَ الأَعْرَابِيُّ: أَنَا يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: هَذَا مِمَّنْ قَضَى نَحْبَهُ.

3203 - सय्यदना तल्हा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के सहाबा ने जाहिल बदवी से कहा: तुम (आप (ﷺ) से वादा पूरा करने वालों के बारे में पूछो कि वह कौन हैं? और सहाबा किराम आप(ﷺ) की तौक़ीर और आप की डर की वजह से बात पूछने की जुर्अत नहीं करते थे, उस आराबी ने आप(ﷺ) से सवाल किया तो आप(ﷺ) ने अपना चेहरा फेर लिया, उस ने फिर पूछा तो आप(ﷺ) ने मुंह फेर लिया, फिर पूछा आप(ﷺ) ने फिर चेहरा फेर लिया, फिर मैंने मस्जिद के दरवाज़े से झांका मुझ पर सब्ज़ कपड़े थे जब नबी (ﷺ) ने मुझे देखा तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "वादा पूरा करने वाले के बारे में पूछने वाला कहाँ है? वह आराबी कहने लगा: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ) मैं हूँ, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "यह (तल्हा) वादा पूरा करने वालों में से है।"

हसन सहीह: बज़्ज़ार:943. अबू याला:663. तबरी:21/ 147. अस-सिलसिला अस-सहीहा: 1/ 247.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है हम इसे यूनुस बिन बुकैर की सनद से ही जानते हैं।

3204 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ، عَنْ يُونُسَ بْنِ يَزِيدَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: لَمَّا أُمِرَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ

3204 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) को अपनी बीवियों को इख़्तियार देने का हुक्म दिया गया, तो आप(ﷺ) ने मुझ से इब्तिदा की, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ आयशा! मैं तुम से एक बात का ज़िक्र करने लगा हूँ तुम अपने

وَسَلَّمَ بِتَخْيِيرِ أَزْوَاجِهِ بَدَأَ بِي فَقَالَ: يَا عَائِشَةُ، إِنِّي ذَاكِرٌ لَكِ أَمْرًا فَلاَ عَلَيْكِ أَنْ لاَ تَسْتَعْجِلِي حَتَّى تَسْتَأْمِرِي أَبَوَيْكِ، قَالَتْ: وَقَدْ عَلِمَ أَنَّ أَبَوَايَ لَمْ يَكُونَا لِيَأْمُرَانِي بِفِرَاقِهِ، قَالَتْ: ثُمَّ قَالَ: إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى يَقُولُ: {يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لأَزْوَاجِكَ إِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا فَتَعَالَيْنَ}، حَتَّى بَلَغَ، {لِلْمُحْسِنَاتِ مِنْكُنَّ أَجْرًا عَظِيمًا}. فَقُلْتُ: فِي أَيِّ هَذَا أَسْتَأْمِرُ أَبَوَيَّ؟ فَإِنِّي أُرِيدُ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالدَّارَ الآخِرَةَ. وَفَعَلَ أَزْوَاجُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِثْلَ مَا فَعَلْتُ.

वालिदैन के मशवरे से पहले जल्दी न करना। यक़ीनन आप(ﷺ) जानते थे मुझे मेरे मां बाप आप से अलाहिदा (अलग) होने का हुक्म नहीं देंगे। कहती हैं: फिर आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला फ़रमाता है ऐ नबी! अपनी बीवियों से कह दो कि अगर तुम दुनिया की ज़िंदगी और उसकी जीनत चाहती हो तो आओ" यहाँ से लेकर "अल्लाह ने तुम में से नेकी करने वालों के लिए अज्र तैयार कर रखा है।" (आयत:29) तक पढ़ा। मैंने कहा मैं इस बारे में अपने मां बाप से मशवरा करूं? मैं तो अल्लाह, उसके रसूल और आख़िरत के घर को ही चाहती हूँ, और नबी (ﷺ) की बाकी अज़्वाज ने भी वह कहा जो मैंने कहा था।

बुख़ारी:4786.मुस्लिम:1475. इब्ने माजह:2053. निसाई:3439.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रहमतुल्लाह) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और ज़ोहरी से बवास्ता उर्वा भी आयशा (रज़ि.) से ऐसे ही मर्वी है।

3205 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سُلَيْمَانَ بْنِ الأَصْبَهَانِيِّ، عَنْ يَحْيَى بْنِ عُبَيْدٍ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي رَبَاحٍ، عَنْ عُمَرَ بْنِ أَبِي سَلَمَةَ، رَبِيبِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ {إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ البَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا} فِي بَيْتِ أُمِّ سَلَمَةَ، فَدَعَا فَاطِمَةَ وَحَسَنًا

3205 - सय्यदना उमर बिन अबी सलमा (रज़ि.) जो नबी (ﷺ) की परवरिश में थे बयान करते हैं: जब उम्मे सलमा (रज़ि.) के घर में नबी (ﷺ) पर यह आयत: "अल्लाह तो यही चाहता है कि तुम से गन्दगी को दूर कर दे ऐ घर वालो! और तुम्हें खूब पाक कर दे।" (आयत:33) नाज़िल हुई, तो आप(ﷺ) ने फातिमा और हसन व हुसैन (रज़ि.) को बुलाया उन पर एक चादर डाल दी और अली (रज़ि.) आप की पुश्त के पीछे थे उन पर भी

وَحُسَيْنًا فَجَلَّلَهُمْ بِكِسَاءٍ، وَعَلِيٌّ خَلْفَ ظَهْرِهِ فَجَلَّلَهُ بِكِسَاءٍ ثُمَّ قَالَ: اللَّهُمَّ هَؤُلَاءِ أَهْلُ بَيْتِي فَأَذْهِبْ عَنْهُمُ الرِّجْسَ وَطَهِّرْهُمْ تَطْهِيرًا. قَالَتْ أُمُّ سَلَمَةَ: وَأَنَا مَعَهُمْ يَا نَبِيَّ اللهِ، قَالَ: أَنْتِ عَلَى مَكَانِكِ وَأَنْتِ عَلَى خَيْرٍ.

चादर डाली, फिर कहा: "ऐ अल्लाह यह मेरे घर वाले हैं इन से निजासत गुनाह ले जा और इन्हें अच्छी तरह पाक कर दे, उम्मे सलमा (﵂) कहने लगीं: ऐ अल्लाह के नबी(ﷺ)! मैं भी उनके साथ हूँ? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम अपनी जगह पर हो और तुम भी भलाई पर ही हो।"

सहीह: तबरी:8/22. यह हदीस 3787 में ज़िक्र होगी।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: बवास्ता अता, उमर बिन अबी सलमा से मर्वी यह हदीस इस तरीक़ से ग़रीब है।

3206 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَفَّانُ بْنُ مُسْلِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَمُرُّ بِبَابِ فَاطِمَةَ سِتَّةَ أَشْهُرٍ إِذَا خَرَجَ إِلَى صَلَاةِ الفَجْرِ يَقُولُ: الصَّلَاةَ يَا أَهْلَ البَيْتِ {إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ البَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا}.

3206 - सय्यदना अनस बिन मालिक (﵁) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की छ महीने तक यह आदत रही कि जब आप फ़ज्र की नमाज़ के लिए फ़ातिमा (﵂) के दरवाज़े के पास से गुज़रते तो कहते: "ऐ अहले बैत नमाज़ का वक़्त है" अल्लाह तो यही चाहता है कि तुम से निजासत गुनाह ले जाए ऐ घर वालो! और तुम्हें खूब पाक कर दे।"

ज़ईफ़: अहमद: 3/259. तयालिसी:2059. अबू याला:3978.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस इस सनद से हसन ग़रीब है हम इसे हम्माद बिन सलमा के तरीक़ से ही जानते हैं नीज़ इस बारे में अबू हमरा, माकिल बिन यसार और उम्मे सलमा (﵃) से भी हदीस मर्वी है।

3207 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا دَاوُدُ بْنُ الزِّبْرِقَانِ، عَنْ دَاوُدَ بْنِ أَبِي هِنْدٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: لَوْ كَانَ

3207 - सय्यदा आयशा (﵂) फ़रमाती हैं: अगर रसूलुल्लाह (ﷺ) वहि की किसी चीज़ को छिपाने वाले होते तो इस आयत को छिपाते "और जब आप(ﷺ) उस शख़्स से कह रहे थे जिस पर अल्लाह ने इनाम किया"

यानी इस्लाम के साथ" और आप ने भी एहसान किया" यानी आजादी के साथ, और आप ने उसे आज़ाद किया" कि तुम अपनी बीवी को अपने पास रखो और अल्लाह से डरो और जो बात आप अपने दिल में छिपाते थे अल्लाह उसको ज़ाहिर करने वाला नहीं है और आप लोगों से डरते थे हालांकि अल्लाह ज़्यादा हक़दार है कि आप उस से डरें।" से लेकर " और अल्लाह का काम होकर रहता है।" तक (अल-अहज़ाब:37) और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जब उन (ज़ैनब बिन्ते जहश رضي الله عنها) से निकाह किया तो लोग कहने लगे: आप(ﷺ) ने अपने बेटे की बीवी से शादी कर ली है। चुनांचे अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई " मुहम्मद (ﷺ) तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं बल्कि वह अल्लाह के रसूल और आख़री नबी हैं।" (अल-अहज़ाब:40) और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें अपना मुंह बोला बेटा कहा था जब वह छोटे थे फिर आप(ﷺ) के पास ही रहे यहाँ तक कि एक आदमी बन गए उन्हें ज़ैद बिन मुहम्मद कहा जाता था। तो अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी "उन्हें उनके बापों की निस्बत से पुकारो, यह अल्लाह के यहाँ ज़्यादा इन्साफ की बात है, अगर तुम उनके बाप के बारे में न जानो तो वह दीन में तुम्हारे भाई और तुम्हारे दोस्त हैं।" (आयत:5) यानी फुलां जो फुलां शख़्स का दोस्त है और फुलां जो फुलां का भाई है (इस तरह कहो) {هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللهِ}

رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَاتِمًا شَيْئًا مِنَ الوَحْيِ لَكَتَمَ هَذِهِ الآيَةَ {وَإِذْ تَقُولُ لِلَّذِي أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَأَنْعَمْتَ عَلَيْهِ} بِالْعِتْقِ فَأَعْتَقْتَهُ، {أَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللَّهَ وَتُخْفِي فِي نَفْسِكَ مَا اللَّهُ مُبْدِيهِ وَتَخْشَى النَّاسَ وَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَاهُ}، إِلَى قَوْلِهِ: {وَكَانَ أَمْرُ اللهِ مَفْعُولاً} وَإِنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا تَزَوَّجَهَا قَالُوا: تَزَوَّجَ حَلِيلَةَ ابْنِهِ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى {مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِنْ رِجَالِكُمْ وَلَكِنْ رَسُولَ اللهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ} وَكَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَبَنَّاهُ وَهُوَ صَغِيرٌ فَلَبِثَ حَتَّى صَارَ رَجُلاً يُقَالُ لَهُ: زَيْدُ بْنُ مُحَمَّدٍ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ: {ادْعُوهُمْ لِآبَائِهِمْ هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللهِ فَإِنْ لَمْ تَعْلَمُوا آبَاءَهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ وَمَوَالِيكُمْ} فُلاَنٌ مَوْلَى فُلاَنٍ، وَفُلاَنٌ أَخُو فُلاَنٍ {هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ} يَعْنِي أَعْدَلُ عِنْدَ اللَّهِ.

का मतलब है कि अल्लाह के यहाँ ज़्यादा अदल व इन्साफ वाली बात है।

ज़ईफुल इस्नाद जिद्दा: अहमद:6/241/ मजीद बाद में आने वाली हदीस मुलाहज़ा फ़रमाएं।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस दाऊद बिन अबी हिन्द से बवास्ता शाबी, मसरूक से भी मर्वी है कि सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) फ़रमाती हैं: अगर नबी (ﷺ) वहि की किसी बात को छिपाने वाले होते तो इस आयत को छिपाते " और जब आप उस आदमी से कह रहे थे (कि) जिस पर अल्लाह ने एहसान किया और आप ने भी एहसान किया।" यह हदीस तिवालत के साथ मर्वी नहीं है। हमें यह हदीस अब्दुल्लाह बिन वज़्ज़ाह कूफी ने बवास्ता अब्दुल्लाह बिन इदरीस, दाऊद बिन अबी हिन्द से बयान की है।

3208 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ دَاوُدَ بْنِ أَبِي هِنْدٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: لَوْ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَاتِمًا شَيْئًا مِنَ الوَحْيِ لَكَتَمَ هَذِهِ الآيَةَ {وَإِذْ تَقُولُ لِلَّذِي أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَأَنْعَمْتَ عَلَيْهِ} الآيَةَ.

3208 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) फ़रमाती हैं: नबी (ﷺ) अगर वहि की किसी बात को छिपाने वाले होते तो इस आयत को छिपाते "और जब आप उस आदमी से कह रहे थे जिस पर अल्लाह ने इनाम किया और आप ने भी इनाम किया।"

मुस्लिम:177. तबरी:24/111. बुख़ारी दुसरे तरीक़ से।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3209 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، عَنْ سَالِمٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: مَا كُنَّا نَدْعُو زَيْدَ بْنَ حَارِثَةَ إِلاَّ زَيْدَ ابْنَ مُحَمَّدٍ حَتَّى نَزَلَ القُرْآنُ: {ادْعُوهُمْ لِآبَائِهِمْ هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ}.

3209 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) बयान करते हैं: हम ज़ैद बिन हारिसा को ज़ैद बिन मुहम्मद ही कहा करते थे यहाँ तक कि कुरआन नाज़िल हुआ " उन्हें उनके बाप की निस्बत से पुकारो यह अल्लाह के यहाँ ज़्यादा इंसाफ वाली बात है।"

बुख़ारी:4782. मुस्लिम:2425. अहमद:2/77.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3210 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ قَزَعَةَ البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَسْلَمَةُ بْنُ عَلْقَمَةَ، عَنْ دَاوُدَ بْنِ أَبِي هِنْدٍ، عَنْ عَامِرٍ الشَّعْبِيِّ، فِي قَوْلِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ: {مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِنْ رِجَالِكُمْ} قَالَ: مَا كَانَ لِيَعِيشَ لَهُ فِيكُمْ وَلَدٌ ذَكَرٌ.

3210 - आमिर शाबी (رحمه الله) अल्लाह अज्ज़ व जल्ल के फ़रमान "मुहम्मद (ﷺ) तुम मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं" (आयत:40) के बारे में फ़रमाते हैं। ऐसा नहीं है कि तुम्हारे अन्दर उनका कोई लड़का ज़िन्दा रहे।

ज़ईफ़ मकतू: इस पर तख़रीज ज़िक्र नहीं कीई गई।

3211 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ كَثِيرٍ، عَنْ حُصَيْنٍ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنْ أُمِّ عُمَارَةَ الأَنْصَارِيَّةِ، أَنَّهَا أَتَتِ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ: مَا أَرَى كُلَّ شَيْءٍ إِلاَّ لِلرِّجَالِ وَمَا أَرَى النِّسَاءَ يُذْكَرْنَ بِشَيْءٍ؟ فَنَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةَ {إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ} الآيَةَ.

3211 - सय्यदा उम्मे उमारा अन्सारिया (رضي الله عنها) से रिवायत है कि उन्होंने नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया मेरे ख़याल में हर चीज़ मर्दों के लिए ही है और मैं नहीं देखती कि औरतों का भी किसी चीज़ के बारे में ज़िक्र हुआ हो, चुनांचे यह आयत नाज़िल हुई " बेशक इस्लाम लाने वाले मर्द और इस्लाम लाने वाली औरतें ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरतें।" (आयत:35)

सहीहुल इस्नाद: तबरानी:25/51.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है हम इसे इसी तरीक़ से ही जानते हैं।

3212 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدَةَ الضَّبِّيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ {وَتُخْفِي فِي نَفْسِكَ مَا اللَّهُ مُبْدِيهِ وَتَخْشَى النَّاسَ} فِي شَأْنِ زَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ، جَاءَ زَيْدٌ يَشْكُو فَهَمَّ بِطَلاَقِهَا فَاسْتَأْمَرَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: {أَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللَّهَ}.

3212 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि जब ज़ैनब बिन्ते जहश (رضي الله عنها) के बारे में यह आयत नाज़िल हुई "और आप जो अपने दिल में छिपाएं अल्लाह इसे ज़ाहिर करने वाला नहीं है।" तो ज़ैद (رضي الله عنه) शिकायत करने आए, फिर उन्होंने उनको तलाक़ देने का इरादा किया तो नबी (ﷺ) से मशवरा किया तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "अपनी बीवी को अपने पास रखो और अल्लाह से डरो।" (आयत:37)

बुख़ारी:4787. अहमद:3/149. हाकिम:2/417.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3213 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الفَضْلِ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ فِي زَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ {فَلَمَّا قَضَى زَيْدٌ مِنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنَاكَهَا} قَالَ: فَكَانَتْ تَفْخَرُ عَلَى أَزْوَاجِ النَّبِيِّ ﷺ تَقُولُ: زَوَّجَكُنَّ أَهْلُكُنَّ وَزَوَّجَنِي اللَّهُ مِنْ فَوْقِ سَبْعِ سَمَاوَاتٍ.

3213 - सय्यदना अनस (رضی الله عنه) बयान करते हैं कि जब ज़ैनब बिन्ते जहश (رضی الله عنها) के बारे में यह आयत "जब ज़ैद ने उस से अपनी हाजत को पूरा कर लिया तो हमने उसका निकाह आप से कर दिया।" नाज़िल हुई, तो ज़ैनब नबी (ﷺ) की दूसरी बीवियों पर फ़ख़्र करती थीं, कहती थीं: तुम्हारी शादियाँ तुम्हारे घर वालों ने की जबकि मेरी शादी अल्लाह तआला ने सात आसमानों के ऊपर से की है।

बुख़ारी:7420. बैहक़ी:7/57.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3214 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنِ السُّدِّيِّ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أُمِّ هَانِئٍ بِنْتِ أَبِي طَالِبٍ، قَالَتْ: خَطَبَنِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاعْتَذَرْتُ إِلَيْهِ فَعَذَرَنِي، ثُمَّ أَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: {إِنَّا أَحْلَلْنَا لَكَ أَزْوَاجَكَ اللاَّتِي آتَيْتَ أُجُورَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ مِمَّا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَيْكَ وَبَنَاتِ عَمِّكَ وَبَنَاتِ عَمَّاتِكَ وَبَنَاتِ خَالِكَ وَبَنَاتِ خَالاَتِكَ اللاَّتِي هَاجَرْنَ مَعَكَ وَامْرَأَةً مُؤْمِنَةً إِنْ وَهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ} الآيَةَ قَالَتْ: فَلَمْ أَكُنْ أَحِلُّ لَهُ لأَنِّي لَمْ أُهَاجِرْ، كُنْتُ مِنَ الطُّلَقَاءِ.

3214 - सय्यदा उम्मे हानी बिन्ते अबी तालिब (رضی الله عنها) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे निकाह का पैगाम भेजा तो मैंने अपना उज़्र पेश किया, आप(ﷺ) ने मेरा उज़्र कुबूल किया, फिर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी "ऐ नबी! बेशक हमने तेरे लिए तेरी बीवियां हलाल कर दीं जिनका तूने महर दिया है और वह औरतें जिनका मालिक तेरा दायाँ हाथ बना है, उस ग़नीमत में से जो अल्लाह तुझ पर लौटा कर लाया है और तेरे चचा की बेटियाँ, तेरी फूफियों की बेटियाँ, तेरे मामूं की बेटियाँ, तेरी खालाओं की बेटियाँ, जिन्होंने तेरे साथ हिजरत की हैं और अगर कोई मोमिना औरत अपने आप को नबी के लिए हिबा कर दे।" (आयत:50) कहती हैं: मैं आप(ﷺ) के लिए हलाल नहीं थी इसलिए कि मैंने हिजरत नहीं की थी, मैं तो फ़तहे मक्का के मौक़ा पर आज़ादी पाने वालों में से थी।

ज़ईफ़ुल इस्नाद जिद्दा: हाकिम:2/420. बैहक़ी:7/54. तबरानी:24/1007.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। हम इसे सुद्दी के इसी तरीक़ से ही जानते हैं।

3215 - حَدَّثَنَا عَبْدٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا رَوْحٌ، عَنْ عَبْدِ الحَمِيدِ بْنِ بَهْرَامَ، عَنْ شَهْرِ بْنِ حَوْشَبٍ، قَالَ: قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: نُهِيَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ أَصْنَافِ النِّسَاءِ إِلاَّ مَا كَانَ مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ الْمُهَاجِرَاتِ قَالَ: {لاَ يَحِلُّ لَكَ النِّسَاءُ مِنْ بَعْدُ وَلاَ أَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ أَزْوَاجٍ وَلَوْ أَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ إِلاَّ مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ} , فَأَحَلَّ اللَّهُ فَتَيَاتِكُمُ الْمُؤْمِنَاتِ {وَامْرَأَةً مُؤْمِنَةً إِنْ وَهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ}، وَحَرَّمَ كُلَّ ذَاتِ دِينٍ غَيْرِ الإِسْلاَمِ، ثُمَّ قَالَ: {وَمَنْ يَكْفُرْ بِالإِيمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهُ وَهُوَ فِي الآخِرَةِ مِنَ الخَاسِرِينَ} وَقَالَ: {يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَحْلَلْنَا لَكَ أَزْوَاجَكَ اللاَّتِي آتَيْتَ أُجُورَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ مِمَّا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَيْكَ} إِلَى قَوْلِهِ: {خَالِصَةً لَكَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ} وَحَرَّمَ مَا سِوَى ذَلِكَ مِنْ أَصْنَافِ النِّسَاءِ.

3215 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को औरतों की तमाम अक्साम (क़िस्में) मना कर दी गई सिवाए उनके जो मोमिनात हिजरत करने वालिया थीं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, "आप के लिए इसके बाद की औरतें हलाल नहीं और न ही यह कि आप उनकी जगह और औरतें ले आयें ख़्वाह उनका हुस्न आप को अच्छा ही लगे मगर वह जिनका मालिक आप का दायाँ हाथ बना (आयत:52) और ''अल्लाह ने तुम्हारी जो उन मोमिना औरतें हलाल की, और अगर कोई ईमान वाली औरत अपने आप को नबी के लिए हिबा कर दे और हर वह औरत हराम है जो दीने इस्लाम के अलावा कोई और दीन वाली हो।'' फिर फ़रमाया, "जो ईमान के साथ कुफ़्र करे यक़ीनन उस के आमाल बर्बाद हो गए और आख़िरत में नुकसान उठाने वालों में से होगा।" (अल-माइदा:5) और फ़रमाया, "ऐ नबी हम ने तेरे लिए वह बीवियां हलाल कर दीं जिनका तूने महर दिया है और वह औरतें जिनका मालिक तेरा दायाँ हाथ बना हुआ है उस ग़नीमत में से जो अल्लाह तुझ पर लौटा कर लाया है। (आयत:50) और इस के अलावा बाक़ी हर क़िस्म की औरतें हराम कर दीं।

ज़ईफुल इस्नाद: अहमद: 1/318. तबरानी: 13013.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है। हम इसे अब्दुल हमीद बिन बहराम के तरीक़ से ही जानते हैं मैंने अहमद बिन हसन से सुना वह ज़िक्र कर रहे थे कि इमाम अहमद बिन हंबल फ़रमाते हैं: अब्दुल हमीद बिन बहराम की शहर बिन हौशब से रिवायतकर्दा हदीस में कोई नक्स नहीं है।

3216 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ عَطَاءٍ، قَالَ: قَالَتْ عَائِشَةُ، مَا مَاتَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى أُحِلَّ لَهُ النِّسَاءُ.

3216 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) फ़रमाती हैं: रसूलुल्लाह (ﷺ) ने वफ़ात नहीं पाई यहाँ तक कि आप के लिए सभी औरतें हलाल हो गई।

सहीहुल इस्नाद:निसाई:3206. अहमद:6/41.हुमैदी:235. बैहक़ी:7/54.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3217 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ: حَدَّثَنَا أَشْهَلُ بْنُ حَاتِمٍ، قَالَ: ابْنُ عَوْنٍ، حَدَّثَنَاهُ عَنْ عَمْرِو بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَتَى بَابَ امْرَأَةٍ عَرَّسَ بِهَا فَإِذَا عِنْدَهَا قَوْمٌ فَانْطَلَقَ فَقَضَى حَاجَتَهُ فَاحْتُبِسَ، ثُمَّ رَجَعَ وَعِنْدَهَا قَوْمٌ فَانْطَلَقَ فَقَضَى حَاجَتَهُ فَرَجَعَ وَقَدْ خَرَجُوا قَالَ: فَدَخَلَ وَأَرْخَى بَيْنِي وَبَيْنَهُ سِتْرًا قَالَ: فَذَكَرْتُهُ لأَبِي طَلْحَةَ، قَالَ: فَقَالَ: لَئِنْ كَانَ كَمَا تَقُولُ لَيَنْزِلَنَّ فِي هَذَا شَيْءٌ قَالَ: فَنَزَلَتْ آيَةُ الْحِجَابِ.

3217 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि मैं नबी (ﷺ) के साथ था, आप(ﷺ) अपनी बीवी के दरवाज़े पर तशरीफ़ लाये जिन से आप(ﷺ) ने शादी की थी, तो उनके पास लोगों को देखा फिर आप(ﷺ) चले गए अपना काम किया, आप(ﷺ) को वहीं रूकना पड़ा, फिर वापस आए उनके पास लोग थे फिर चले गए अपना काम किया वापस लौटे तो वह लोग जा चुके थे। रावी कहते हैं: आप अन्दर तशरीफ़ ले गए और मेरे और अपने दर्मियान पर्दा गिरा दिया। कहते हैं: मैंने अबू तल्हा से इसका ज़िक्र किया तो उन्होंने फ़रमाया, "अगर मामला ऐसा ही है जैसा तुम कह रहे हो तो इस बारे में ज़रूर कोई चीज़ नाज़िल हुई है कहते हैं: फिर पर्दे की आयत नाज़िल हुई।

तबरी:22/38.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है और अम्र बिन सईद को असला भी कहा जाता था।

3218 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ سُلَيْمَانَ الضُّبَعِيُّ، عَنِ الْجَعْدِ أَبِي عُثْمَانَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: تَزَوَّجَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَدَخَلَ بِأَهْلِهِ، قَالَ: فَصَنَعَتْ أُمِّي أُمُّ سُلَيْمٍ حَيْسًا فَجَعَلَتْهُ فِي تَوْرٍ فَقَالَتْ: يَا أَنَسُ، اذْهَبْ بِهَذَا إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْ لَهُ: بَعَثَتْ بِهَذَا إِلَيْكَ أُمِّي وَهِيَ تُقْرِئُكَ السَّلاَمَ وَتَقُولُ: إِنَّ هَذَا لَكَ مِنَّا قَلِيلٌ يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ: فَذَهَبْتُ بِهِ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ: إِنَّ أُمِّي تُقْرِئُكَ السَّلاَمَ وَتَقُولُ: إِنَّ هَذَا مِنَّا لَكَ قَلِيلٌ، فَقَالَ: ضَعْهُ، ثُمَّ قَالَ: اذْهَبْ فَادْعُ لِي فُلاَنًا وَفُلاَنًا وَفُلاَنًا وَمَنْ لَقِيتَ، فَسَمَّى رِجَالاً، قَالَ: فَدَعَوْتُ مَنْ سَمَّى وَمَنْ لَقِيتُ، قَالَ: قُلْتُ لأَنَسٍ: عَدَدُ كَمْ كَانُوا؟ قَالَ: زُهَاءَ ثَلاَثِ مِائَةٍ قَالَ: وَقَالَ لِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَا أَنَسُ هَاتِ بِ التَّوْرِ قَالَ: فَدَخَلُوا حَتَّى امْتَلأَتِ الصُّفَّةُ وَالحُجْرَةُ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لِيَتَحَلَّقْ عَشَرَةٌ عَشَرَةٌ وَلْيَأْكُلْ كُلُّ إِنْسَانٍ مِمَّا يَلِيهِ، قَالَ: فَأَكَلُوا

3218 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने शादी की फिर अपनी बीवी के पास गए, कहते हैं: मेरी मां उम्मे सुलैम ने हैस (एक क़िस्म का खाना जो हलवे की तरह होता है) तैयार किया फिर उसे एक बर्तन में रख कर फ़रमाने लगीं: ऐ अनस! इसे नबी (ﷺ) के पास ले जा कर अर्ज़ करना कि मेरी मां ने आपकी तरफ़ यह खाना भेजा है, वह आप(ﷺ) को सलाम भी अर्ज़ कर रही थीं और वह कह रही थीं कि ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! यह हमारी तरफ़ से आप के लिए हकीर सा तोहफ़ा है। कहते हैं: मैं इसे लेकर रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास गया मैंने अर्ज़ की मेरी वालिदा आप को सलाम कहती थीं ओर कहती थीं कि हमारी तरफ़ से आप(ﷺ) के लिए थोड़ा सा खाना है। तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "इसे रख दो।" फिर फ़रमाया, "जाओ और फुलां, फुलां, फुलां और जो तुझे मिले उसे मेरे पास बुला कर लाओ।" आप(ﷺ) ने कुछ आदमियों के नाम लिए वह कहते हैं: आप(ﷺ) ने जिनका नाम ; लिया था मैंने उन्हें बुलाया और मुझे जो भी मिला उसे बुला लाया अबू उस्मान कहते हैं: मैंने अनस से पूछा कितने लोग थे? उन्होंने फ़रमाया, तीन सौ के क़रीब, अनस कहते हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझ से फ़रमाया, "अनस वह बर्तन लेकर आओ।" कहते हैं कि फिर लोग अन्दर आए यहाँ तक कि सुफ्फ़ा और हुजरा भर गया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "दस दस

حَتَّى شَبِعُوا، قَالَ: فَخَرَجَتْ طَائِفَةٌ وَدَخَلَتْ طَائِفَةٌ حَتَّى أَكَلُوا كُلُّهُمْ، قَالَ: فَقَالَ لِي: يَا أَنَسُ ارْفَعْ قَالَ: فَرَفَعْتُ فَمَا أَدْرِي حِينَ وَضَعْتُ كَانَ أَكْثَرَ أَمْ حِينَ رَفَعْتُ، قَالَ: وَجَلَسَ طَوَائِفُ مِنْهُمْ يَتَحَدَّثُونَ فِي بَيْتِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَرَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَالِسٌ وَزَوْجَتُهُ مُوَلِّيَةٌ وَجْهَهَا إِلَى الحَائِطِ، فَثَقُلُوا عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَخَرَجَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَلَّمَ عَلَى نِسَائِهِ ثُمَّ رَجَعَ، فَلَمَّا رَأَوْا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ رَجَعَ ظَنُّوا أَنَّهُمْ قَدْ ثَقُلُوا عَلَيْهِ، فَابْتَدَرُوا الْبَابَ فَخَرَجُوا كُلُّهُمْ، وَجَاءَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى أَرْخَى السِّتْرَ وَدَخَلَ وَأَنَا جَالِسٌ فِي الحُجْرَةِ فَلَمْ يَلْبَثْ إِلاَّ يَسِيرًا حَتَّى خَرَجَ عَلَيَّ وَأُنْزِلَتْ هَذِهِ الآيَاتُ، فَخَرَجَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَرَأَهُنَّ عَلَى النَّاسِ {يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ إِلاَّ أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَى طَعَامٍ غَيْرَ نَاظِرِينَ إِنَاهُ وَلَكِنْ إِذَا دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا فَإِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوا وَلاَ

आदमी हल्क़ा बना लें और हर आदमी अपने सामने से खाए।" रावी कहते हैं: उन्होंने सैर हो कर खाया, फिर एक जमाअत और दाख़िल हुई यहाँ तक कि सब ने खा लिया, फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझ से फ़रमाया, "ऐ अनस! उठा लो।" कहते हैं: मैंने उठाया तो मैं नहीं जानता कि खाना रखते वक़्त ज़्यादा था या उठाते वक़्त? कहते हैं उन में से कुछ गिरोह रसूलुल्लाह (ﷺ) के घर में बैठ कर बातें करने लगे रसूलुल्लाह (ﷺ) बैठे हुए थे और आप(ﷺ) की बीवी अपना चेहरा दीवार की तरफ़ किए हुई थीं, चुनांचे फिर रसूलुल्लाह(ﷺ) को उनका बैठना गिराँ गुजरा तो रसूलुल्लाह (ﷺ) बाहर चले गए अपनी बीवियों को सलाम कहा फिर वापस आए जब उन्होंने देखा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) वापस तशरीफ़ ला चुके हैं और उनका बैठना आप(ﷺ) को गिराँ गुजरा है तो वह जल्दी से दरवाज़े की तरफ़ लपके और सभी चले गए, रसूलुल्लाह (ﷺ) आए यहाँ तक कि पर्दा लटकाया और अन्दर तशरीफ़ ले गए और यह आयात नाज़िल हुई चुनांचे रसूलुल्लाह (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाये और लोगों को पढ़कर सुनाई "ऐ ईमान वालो! नबी के घरों में मत दाख़िल हो मगर यह की तुम्हें खाने की तरफ़ इजाज़त दी जाए इस हाल में कि उस के पकने का इन्तिज़ार करने वाले न हो और लेकिन जब तुम्हें बुलाया जाए तो दाख़िल हो जाओ और जब खा चुको तो मुन्तशिर हो जाओ और न

مُسْتَأْنِسِينَ لِحَدِيثٍ إِنَّ ذَلِكُمْ كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ} إِلَى آخِرِ الآيَةِ. قَالَ الجَعْدُ، قَالَ أَنَسٌ: أَنَا أَحْدَثُ النَّاسِ عَهْدًا بِهَذِهِ الآيَاتِ وَحُجِبْنَ نِسَاءُ رَسُولِ اللهِ ﷺ.

बैठे रहो इस हाल में कि बात में दिल लगाने वाले हो बेशक यह बात हमेशा से नबी को तक्लीफ़ देती है।" (आयत; 53) जाद बयान करते हैं कि सय्यदना अनस (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं: इन आयात के बारे में मुझे सब लोगों से पहले इल्म हुआ और नबी (ﷺ) की अज़्वाजे मुतह्हरात को पर्दा करवा दिया गया।

बुखारी:5163. मुअल्लक़न. मुस्लिम:1428. निसाई:3387.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और जाद, उस्मान के बेटे हैं उन्हें इब्ने दीनार भी कहा जाता है उनकी कुनियत अबू उस्मान थी। बस्रा के रहने वाले और मुहद्दिसीन के नजदीक सिक़ह् रावी थे उन से यूनुस बिन उबैद, शोबा और हम्माद बिन ज़ैद ने रिवायत की है।

3219 - حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ بْنِ مُجَالِدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ بَيَانٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: بَنَى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِامْرَأَةٍ مِنْ نِسَائِهِ فَأَرْسَلَنِي فَدَعَوْتُ قَوْمًا إِلَى الطَّعَامِ فَلَمَّا أَكَلُوا وَخَرَجُوا قَامَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُنْطَلِقًا قِبَلَ بَيْتِ عَائِشَةَ فَرَأَى رَجُلَيْنِ جَالِسَيْنِ، فَانْصَرَفَ رَاجِعًا، فَقَامَ الرَّجُلَانِ فَخَرَجَا فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ {يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ إِلاَّ أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَى طَعَامٍ غَيْرَ نَاظِرِينَ إِنَاهُ} وَفِي الحَدِيثِ قِصَّةٌ.

3219 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपनी बीवियों में से किसी के साथ ज़फ़ाफ़ (पहली दफ़ा खल्वते सहीहा करना) किया फिर मुझे भेजा मैंने लोगों को खाने की दावत दी, फिर जब उन्होंने खाना खा लिया और निकल गए तो रसूलुल्लाह (ﷺ) सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) के घर की तरफ़ जाने के लिए खड़े हुए तो आप (ﷺ) ने दो आदमियों को बैठे हुए देखा फिर आप वापस आ गए चुनांचे वह आदमी उठे और बाहर चले गए तो अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई "ऐ ईमान वालो! नबी के घरों में दाख़िल मत हो मगर यह कि तुम्हें खाने की दावत दी जाए और इस हाल में कि उसके पकने का इन्तिज़ार करने वाले न हो।" और इस हदीस में भी एक किस्सा है।

बुखारी:5170. अहमद:3/238.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: बयान के तरीक़ से यह हदीस हसन ग़रीब है और साबित ने अनस (رضي الله عنه) से एक लम्बी हदीस रिवायत की है।

3220 - सय्यदना अबू मसऊद अंसारी (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हमारे पास तशरीफ़ लाए और हम साद बिन उबादा की मजलिस में थे तो बशीर बिन साद ने आप(ﷺ) से कहा: अल्लाह तआला ने हमें आप पर दरूद पढ़ने का हुक्म दिया है, हम आप पर दरूद कैसे पढ़ें, रावी कहते हैं: रसूलुल्लाह (ﷺ) ख़ामोश हो गए यहाँ तक कि हम ने आरज़ू की काश आप(ﷺ) से सवाल न करता, फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम कहो: ऐ अल्लाह रहमत भेज मुहम्मद (ﷺ) और आले मुहम्मद पर जिस तरह तूने रहमत भेजी थी इब्राहीम (अलैहि०) और आले इब्राहीम पर और बरकत नाज़िल फ़रमा मुहम्मद (ﷺ) पर जिस तरह तूने बरकत नाज़िल की थी इब्राहीम (अलैहि०) और आले इब्राहीम पर तमाम जहानों में बेशक तू तारीफ़ किया गया साहिबे बुज़ुर्गी है। और सलाम जिस तरह तुम्हें सिखाया गया है वैसे ही पढ़ो।"

3220 - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مُوسَى الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ نُعَيْمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ الْمُجْمِرِ، أَنَّ مُحَمَّدَ بْنَ عَبْدِ اللهِ بْنِ زَيْدٍ الأَنْصَارِيَّ،، وَعَبْدَ اللهِ بْنَ زَيْدٍ الَّذِي كَانَ أُرِيَ النِّدَاءَ بِالصَّلاَةِ، أَخْبَرَهُ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الأَنْصَارِيِّ، أَنَّهُ قَالَ: أَتَانَا رَسُولُ اللهِ ﷺ وَنَحْنُ فِي مَجْلِسِ سَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ فَقَالَ لَهُ بَشِيرُ بْنُ سَعْدٍ: أَمَرَنَا اللَّهُ أَنْ نُصَلِّيَ عَلَيْكَ فَكَيْفَ نُصَلِّي عَلَيْكَ؟ قَالَ: فَسَكَتَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حَتَّى تَمَنَّيْنَا أَنَّهُ لَمْ يَسْأَلْهُ، ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: قُولُوا: اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ، وَبَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ فِي العَالَمِينَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ، وَالسَّلاَمُ كَمَا قَدْ عُلِّمْتُمْ.

सहीह:मुस्लिम:405. अबू दाऊद:980. निसाई:1286. अहमद:4/118.

वज़ाहत: इस बारे में अली, अबू हुमैद, काब बिन उज्रा, तल्हा बिन उबैदुल्लाह, अबू सईद, ज़ैद बिन ख़ारिजा या जारिया और बुरैदा (رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है नीज़ यह हदीस हसन सहीह है।

3221 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "मूसा (عليه السلام) एक बहुत ही बा हया और बा पर्दा आदमी थे

3221 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، عَنْ عَوْفٍ، عَنِ الحَسَنِ،

وَمُحَمَّدٍ، وَخِلَاسٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَنَّ مُوسَى عَلَيْهِ السَّلَامُ كَانَ رَجُلاً حَيِيًّا سَتِيرًا مَا يُرَى مِنْ جِلْدِهِ شَيْءٌ اسْتِحْيَاءً مِنْهُ فَآذَاهُ مَنْ آذَاهُ مِنْ بني إسرائيل فَقَالُوا: مَا يَسْتَتِرُ هَذَا التَّسَتُّرَ إِلاَّ مِنْ عَيْبٍ بِجِلْدِهِ إِمَّا بَرَصٌ وَإِمَّا أُدْرَةٌ وَإِمَّا آفَةٌ، وَإِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ أَرَادَ أَنْ يُبَرِّئَهُ مِمَّا قَالُوا، وَإِنَّ مُوسَى خَلاَ يَوْمًا وَحْدَهُ فَوَضَعَ ثِيَابَهُ عَلَى حَجَرٍ ثُمَّ اغْتَسَلَ فَلَمَّا فَرَغَ أَقْبَلَ إِلَى ثِيَابِهِ لِيَأْخُذَهَا وَإِنَّ الحَجَرَ عَدَا بِثَوْبِهِ فَأَخَذَ مُوسَى عَصَاهُ فَطَلَبَ الحَجَرَ فَجَعَلَ يَقُولُ: ثَوْبِي حَجَرُ ثَوْبِي حَجَرُ، حَتَّى انْتَهَى إِلَى مَلَإٍ مِنْ بني إسرائيل فَرَأَوْهُ عُرْيَانًا أَحْسَنَ النَّاسِ خَلْقًا، وَأَبْرَأَهُ مِمَّا كَانُوا يَقُولُونَ قَالَ: وَقَامَ الحَجَرُ فَأَخَذَ ثَوْبَهُ وَلَبِسَهُ وَطَفِقَ بِالحَجَرِ ضَرْبًا بِعَصَاهُ، فَوَاللَّهِ إِنَّ بِالحَجَرِ لَنَدَبًا مِنْ أَثَرِ عَصَاهُ ثَلَاثًا أَوْ أَرْبَعًا أَوْ خَمْسًا. فَذَلِكَ قَوْلُهُ تَعَالَى: {يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تَكُونُوا كَالَّذِينَ آذَوْا مُوسَى فَبَرَّأَهُ اللَّهُ مِمَّا قَالُوا وَكَانَ عِنْدَ اللهِ وَجِيهًا}.

उनकी हया की वजह से उनका बदन देखा नहीं जाता था, चुनांचे बनू इस्राईल में से तक्लीफ़ देने वालों ने उन्हें तकलीफ़ दी, कहने लगे: यह अपने जिस्म के किसी ऐब की वजह से ही इतना छिपता है या तो बरस है या खुस्यतैन[1] फूले हुए हैं या फिर कोई और बीमारी है, अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने उन्हें उन लोगों की बातों से बरी करना चाहा, और मूसा (عليه السلام) एक जगह अकेले थे उन्होंने अपने कपड़े एक पत्थर पर रखे, फिर गुस्ल करने लगे जब फ़ारिग हुए तो अपने कपड़े को लेने गए तो पत्थर उनके कपड़े को लेकर भागा फिर मूसा (عليه السلام) ने अपना असा पकड़ कर पत्थर का पीछा किया वह कहते थे ऐ पत्थर! मेरे कपड़े, ऐ पत्थर! मेरे कपड़े, यहाँ तक कि वह बनू इस्राईल के सरदारों तक जा पहुंचे, तो उन्होंने उन्हें बगैर लिबास देख लिया, वह तमाम लोगों में सब से ज़्यादा ख़ूबसूरत थे और उनकी बातों से बहुत दूर थे, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "पत्थर रुक गया तो उन्होंने अपने कपड़े लेकर जेबतन किए और पत्थर को अपने असा से मारने लगे, अल्लाह की क़सम! पत्थर पर उनके मारने की वजह से तीन ,चार या पांच निशान पड़ गए, यही अल्लाह तआला का फ़रमान है " ऐ ईमान वालो! तुम उन लोगों की तरह न बनो जिन्होंने मूसा (عليه السلام) को तक्लीफ़ दी फिर अल्लाह ने उन्हें उन लोगों की बातों से बरी कर दिया और अल्लाह के यहाँ वह क़ाबिले इज्ज़त थे।" (69)

बुखारी:3404. मुस्लिम:339. अहमद:2/514. एक दुसरे तरीक़ से.

तौज़ीह: أدرة : ख़ुसिया का फूलना, फूला हुआ ख़ुसिया। (अल-मोजमुल वसीत:प।21)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और कई तुरूक़ (सनदों) से बवास्ता अबू हुरैरा (رضي الله عنه) नबी करीम (ﷺ) से हदीस मर्वी है। नीज़ इस बारे में अनस (رضي الله عنه) भी नबी (ﷺ) से रिवायत करते हैं।

35 - तफ़सीर सूरह सबा।

35 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ سَبَإٍ

3222 - सय्यदना फ़र्वा बिन मुसैक मुरादी (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैंने नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! क्या मैं उस शख़्स से लड़ाई न करूं जो इस्लाम से मुंह फेरे, उस शख़्स के साथ मिलकर जिस ने उन में से इस्लाम कुबूल किया है। तो आप (ﷺ) ने मुझे उनके साथ लड़ने की इजाज़त दे दी और मुझे अमीर बना दिया फिर जब मैं आप(ﷺ) के पास से चला गया तो आप(ﷺ) ने मेरे बारे में दर्याफ़्त किया: कि गुतैफ़ी ने क्या किया?" तो आप(ﷺ) को बताया गया मैं चला गया हूँ, फिर आप(ﷺ) ने मेरे पीछे एक आदमी रवाना करके मुझे वापस बुला लिया, मैं आप(ﷺ) के पास पहुंचा तो आप अपने सहाबा की एक जमाअत में थे, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "लोगों को दावत दो फिर उन में से जो मुसलमान हो जाए उसे कुबूल करो और जो इस्लाम न लाये तुम (उसके बारे में) जल्दी न करना यहाँ तक कि मैं कोई हुक्म भेज दूं।" रावी कहते हैं कि फिर सबा के बारे में कुरआन में नाज़िल हुआ तो एक आदमी ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! सबा कोई जगह है या औरत? आप ने फ़रमाया, "न

3222 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالاَ: أَخْبَرَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنِ الحَسَنِ بْنِ الحَكَمِ النَّخَعِيِّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو سَبْرَةَ النَّخَعِيُّ، عَنْ فَرْوَةَ بْنِ مُسَيْكٍ الْمُرَادِيِّ، قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ أَلاَ أُقَاتِلُ مَنْ أَدْبَرَ مِنْ قَوْمِي بِمَنْ أَقْبَلَ مِنْهُمْ؟ فَأَذِنَ لِي فِي قِتَالِهِمْ وَأَمَّرَنِي، فَلَمَّا خَرَجْتُ مِنْ عِنْدِهِ سَأَلَ عَنِّي، مَا فَعَلَ الغُطَيْفِيُّ؟ فَأُخْبِرَ أَنِّي قَدْ سِرْتُ، قَالَ: فَأَرْسَلَ فِي أَثَرِي فَرَدَّنِي فَأَتَيْتُهُ وَهُوَ فِي نَفَرٍ مِنْ أَصْحَابِهِ، فَقَالَ: ادْعُ القَوْمَ فَمَنْ أَسْلَمَ مِنْهُمْ فَاقْبَلْ مِنْهُ، وَمَنْ لَمْ يُسْلِمْ فَلاَ تَعْجَلْ حَتَّى أُحْدِثَ إِلَيْكَ قَالَ: وَأُنْزِلَ فِي سَبَإٍ مَا أُنْزِلَ، فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللهِ، وَمَا سَبَأٌ، أَرْضٌ أَوْ امْرَأَةٌ؟ قَالَ: لَيْسَ بِأَرْضٍ وَلاَ امْرَأَةٍ، وَلَكِنَّهُ رَجُلٌ وَلَدَ عَشْرَةً مِنَ

ज़मीन थी और न ही औरत बल्की अरब का एक आदमी था जिस के दस बेटे पैदा हुए, उन में से छ यमन चले गए और उन में से चार शाम में, जो लोग शाम गए वह लख्म, जुज़ाम, गस्सान और आमिला बने और जो लोग यमन गए थे वह उज़्द, अशअरी, हिम्यर, किन्दा, मज़्हिज और अनमार कहलाए।" तो उस आदमी ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! अम्मार कौन हैं? आप ने फर्माया: " खस्अम और बजीला हैं।"

हसन सहीह:अबू दावूद:3988. अबू याला:6852. तबरानी: 18/836.

الْعَرَبِ فَتَيَامَنَ مِنْهُمْ سِتَّةٌ، وَتَشَاءَمَ مِنْهُمْ أَرْبَعَةٌ. فَأَمَّا الَّذِينَ تَشَاءَمُوا فَلَخْمٌ، وَجُذَامُ، وَغَسَّانُ، وَعَامِلَةُ، وَأَمَّا الَّذِينَ تَيَامَنُوا: فَالأَزْدُ، وَالأَشْعَرِيُّونَ، وَحِمْيَرٌ، وَمَذْحِجٌ، وَأَنْمَارٌ، وَكِنْدَةُ. فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللهِ، وَمَا أَنْمَارٌ؟ قَالَ: الَّذِينَ مِنْهُمْ خَثْعَمُ، وَبَجِيلَةُ.

वज़ाहत: यह हदीस बवास्ता इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) भी नबी करीम (ﷺ) से मर्वी है। इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब हसन है।

3223 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब अल्लाह तआला आसमान में किसी काम का फैसला करता है तो फ़रिश्ते उसकी बात के लिए आजिज़ी दिखाते हुए अपने परों को मारते हैं गोया कि वह एक चट्टान पर ज़ंजीर हो, फिर जब उनके दिलों से घबराहट ख़त्म की जाती है तो वह कहते हैं: तुम्हारे रब ने क्या कहा है? दुसरे कहते हैं: हक़ बात कही है और वह बहुत बलंद और बड़ा है, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "शयातीन एक दुसरे के ऊपर होते हैं।"

बुखारी:4701. अबू दाऊद:3989. इब्ने माजा:194. हुमैदी:1151.

3223 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِذَا قَضَى اللَّهُ فِي السَّمَاءِ أَمْرًا ضَرَبَتِ الْمَلَائِكَةُ بِأَجْنِحَتِهَا خُضْعَانًا لِقَوْلِهِ كَأَنَّهَا سِلْسِلَةٌ عَلَى صَفْوَانٍ فَ {إِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوبِهِمْ قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ؟ قَالُوا الحَقَّ وَهُوَ العَلِيُّ الكَبِيرُ} قَالَ: وَالشَّيَاطِينُ بَعْضُهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3224 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ)

3224 - حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ الجَهْضَمِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ،

عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: بَيْنَمَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَالِسٌ فِي نَفَرٍ مِنْ أَصْحَابِهِ إِذْ رُمِيَ بِنَجْمٍ فَاسْتَنَارَ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا كُنْتُمْ تَقُولُونَ لِمِثْلِ هَذَا فِي الجَاهِلِيَّةِ إِذَا رَأَيْتُمُوهُ؟ قَالُوا: كُنَّا نَقُولُ: يَمُوتُ عَظِيمٌ أَوْ يُولَدُ عَظِيمٌ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: فَإِنَّهُ لاَ يُرْمَى بِهِ لِمَوْتِ أَحَدٍ وَلاَ لِحَيَاتِهِ وَلَكِنَّ رَبَّنَا عَزَّ وَجَلَّ إِذَا قَضَى أَمْرًا سَبَّحَ لَهُ حَمَلَةُ العَرْشِ ثُمَّ سَبَّحَ أَهْلُ السَّمَاءِ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ حَتَّى يَبْلُغَ التَّسْبِيحُ إِلَى هَذِهِ السَّمَاءِ، ثُمَّ سَأَلَ أَهْلُ السَّمَاءِ السَّادِسَةِ أَهْلَ السَّمَاءِ السَّابِعَةِ: مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ؟ قَالَ: فَيُخْبِرُونَهُمْ ثُمَّ يَسْتَخْبِرُ أَهْلُ كُلِّ سَمَاءٍ حَتَّى يَبْلُغَ الخَبَرُ أَهْلَ السَّمَاءِ الدُّنْيَا وَتَخْتَطِفُ الشَّيَاطِينُ السَّمْعَ فَيَرْمُونَ فَيَقْذِفُونَهُ إِلَى أَوْلِيَائِهِمْ فَمَا جَاءُوا بِهِ عَلَى وَجْهِهِ فَهُوَ حَقٌّ، وَلَكِنَّهُمْ يُحَرِّفُونَهُ وَيَزِيدُونَ.

अपने सहाबा की एक जमाअत में बैठे हुए थे कि अचानक एक सितारा टूटा तो रोशनी हो गई, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जाहिलियत के दौर में तुम इस तरह के मौक़ा पर क्या कहा करते थे जब तुम उसे देखते?" उन्होंने कहा: हम यह कहते थे कि कोई बड़ा शख़्स मरा है या कोई बड़ा पैदा हुआ है, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "यह किसी शख़्स की मौत या ज़िंदगी की वजह से नहीं टूटते जब कि हमारा रब तबारक व तआला जब किसी काम का फ़ैसला करता है तो अर्श उठाने वाले फ़रिश्ते उसकी तस्बीह करते हैं, यहाँ तक कि यह तस्बीह आसमाने दुनिया तक पहुँच जाती है, फिर छठे आसमान वाले सातवें आसमान वाले से पूछते हैं: तुम्हारे रब ने क्या कहा है? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "वह उन्हें ख़बर देते हैं फिर हर आसमान वाले यह बात पूछते हैं यहाँ तक कि वह ख़बर आसमाने दुनिया तक पहुँच जाती है और शयातीन सुनी हुई बात को चुराते हैं तो उन्हें मारा जाता है फिर वह इस बात को अपने दोस्तों तक पहुंचा देते हैं, फिर जिसको इस तरह पहुंचाते हैं वह तो सच्ची होती है लेकिन वह इसे बदल कर और इज़ाफ़ा करके बताते हैं।"

सहीह:अहमद: 1/ 218. अब्द बिन हुमैद:683.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। नीज़ यह हदीस ज़ोहरी से बवास्ता अली बिन हुसैन, इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) से इसी तरह मर्वी है कि अंसार के कुछ लोग कहते हैं हम नबी (ﷺ) के पास थे। फिर इसी मफ़हूम की हदीस ज़िक्र की। हमें यह हदीस हुसैन बिन हुरैस ने बवास्ता वलीद बिन मुस्लिम औज़ाई से बयान की है।

36 - तफ़सीर सूरह मलाइका (फ़ातिर)

36 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الْمَلَائِكَةِ

3225 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने इस आयत "फिर हम ने इस किताब के वारिस वह बन्दे बनाए जिन्हें हम ने चुन लिया, उन में से कोई अपने आप पर ज़ुल्म करने वाला है, उन में से कोई म्यानारू है और उन में से कोई अल्लाह के हुक्म से नेकियों में आगे निकल जाने वाला है" (32) के बारे में फ़रमाया, "यह सब एक ही मर्तबे में हैं और सभी जन्नत में होंगे।"

सहीह: अहमद: 3/78. तयालिसी:2236.

3225 - حَدَّثَنَا أَبُو مُوسَى مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالاَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الوَلِيدِ بْنِ عَيْزَارٍ، أَنَّهُ سَمِعَ رَجُلاً، مِنْ ثَقِيفٍ يُحَدِّثُ عَنْ رَجُلٍ، مِنْ كِنَانَةَ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ فِي هَذِهِ الآيَةِ: {ثُمَّ أَوْرَثْنَا الكِتَابَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِنَفْسِهِ وَمِنْهُمْ مُقْتَصِدٌ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ بِالخَيْرَاتِ} قَالَ: هَؤُلاَءِ كُلُّهُمْ بِمَنْزِلَةٍ وَاحِدَةٍ، وَكُلُّهُمْ فِي الجَنَّةِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब हसन है और हम इसे सिर्फ इसी सनद से ही जानते हैं।

37 - तफ़सीर सूरह यासीन।

37 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ يس

3226 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि बनू सलमा के घर मदीना के एक किनारे में थे, तो उन्होंने मस्जिद के क़रीब मुन्तकिल होने का इरादा किया तो यह आयत नाज़िल हुई " हम ही मुर्दों को ज़िंदा करेंगे और हम उनके आमाल और क़दमों के निशान लिखते हैं।" (आयत: 12) रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया:" तुम्हारे चलने के क़दम भी लिखे जाते हैं सो तुम वहाँ से मुन्तकिल न होना।"

सहीह: हाकिम:2/428. तबरी:22/154. अस-सिलसिला अस-सहीहा:3500.

3226 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ وَزِيرٍ الوَاسِطِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ يُوسُفَ الأَزْرَقُ، عَنْ سُفْيَانَ الثَّوْرِيِّ، عَنْ أَبِي سُفْيَانَ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، قَالَ: كَانَتْ بَنُو سَلِمَةَ فِي نَاحِيَةِ الْمَدِينَةِ فَأَرَادُوا النُّقْلَةَ إِلَى قُرْبِ الْمَسْجِدِ فَنَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةَ: {إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي الْمَوْتَى وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ} فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: إِنَّ آثَارَكُمْ تُكْتَبُ فَلاَ تَنْتَقِلُوا.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: सौरी के तरीक़ से यह हदीस हसन ग़रीब है और अबू सुफ़ियान, तरीफ़ सादी ही हैं।

3227 - सय्यदना अबू ज़र (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि जब सूरज गुरूब हो रहा था तो मैं मस्जिद में दाख़िल हुआ, नबी (ﷺ) तशरीफ़ फ़रमा थे तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ अबू ज़र! क्या तुम जानते हो कि यह कहाँ जाता है? मैंने अर्ज़ की अल्लाह और उसके रसूल ही जानते हैं आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "यह जाता है फिर सज्दा करने की इजाज़त माँगता है, उसे इजाज़त दी जाती है और गोया उस से कहा जाएगा जहां से आया है उधर से ही तुलू हो जा तो यह मग़रिब की जानिब से ही तुलू हो जाएगा।" कहते हैं: फिर आप ने यह आयत पढ़ी " यही उसके ठहरने की जगह है।" और यह अब्दुल्लाह की किरअत में है।

3227 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، قَالَ: دَخَلْتُ الْمَسْجِدَ حِينَ غَابَتِ الشَّمْسُ وَالنَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَالِسٌ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَا أَبَا ذَرٍّ، أَتَدْرِي أَيْنَ تَذْهَبُ هَذِهِ؟ قَالَ: قُلْتُ: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، قَالَ: فَإِنَّهَا تَذْهَبُ فَتَسْتَأْذِنُ فِي السُّجُودِ فَيُؤْذَنُ لَهَا، وَكَأَنَّهَا قَدْ قِيلَ لَهَا: اطْلُعِي مِنْ حَيْثُ جِئْتِ فَتَطْلُعُ مِنْ مَغْرِبِهَا، قَالَ: ثُمَّ قَرَأَ وَذَلِكَ مُسْتَقَرٌّ لَهَا قَالَ: وَذَلِكَ فِي قِرَاءَةِ عَبْدِ اللَّهِ.

सहीह: तख़रीज के लिए देखें: हदीस नम्बर 2186.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

38 - तफ़सीर सूरह साफ़्फ़ात

38 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الصَّافَّاتِ

3228 - अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "नहीं है कोई दावत देने वाला जिसने किसी भी चीज़ की तरफ़ दावत दी मगर क़यामत के दिन उसे खड़ा किया जाएगा, वह उसे पकड़े हुए होगा, उस से अलाहिदा (अलग) नहीं होगा ख़्वाह एक आदमी ने एक आदमी को ही (बुराई की तरफ़) दावत दी हो, फिर आप

3228 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدَةَ الضَّبِّيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا لَيْثُ بْنُ أَبِي سُلَيْمٍ، عَنْ بِشْرٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا مِنْ دَاعٍ دَعَا إِلَى شَيْءٍ إِلاَّ كَانَ مَوْقُوفًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ لاَزِمًا لَهُ لاَ يُفَارِقُهُ، وَإِنْ

دَعَا رَجُلٌ رَجُلاً ثُمَّ قَرَأَ قَوْلَ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ: {وَقِفُوهُمْ إِنَّهُمْ مَسْئُولُونَ مَا لَكُمْ لاَ تَنَاصَرُونَ}.

(ﷺ) ने अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का फ़रमान पढ़ा "उन्हें खड़ा करो उन से पूछ गछ होगी, तुम्हें क्या है एक दुसरे की मदद क्यों नहीं करते।" (आयत:23- 24).

ज़ईफ़: दारमी: 522. इब्ने माजा:205. ज़ईफुत्तर्गीब:43. एक दुसरे तरीक़ से.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है।

3229 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا الوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، عَنْ زُهَيْرِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ رَجُلٍ، عَنْ أَبِي العَالِيَةِ، عَنْ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ، قَالَ: سَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: {وَأَرْسَلْنَاهُ إِلَى مِائَةِ أَلْفٍ أَوْ يَزِيدُونَ} قَالَ: عِشْرُونَ أَلْفًا.

3229 - उबय बिन काब (رضي الله عنه) बयान करते हैं: मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अल्लाह तआला के फ़रमान "और हम ने उसे एक लाख या उस से भी ज़्यादा लोगों की तरफ़ भेजा।" (आयत:47) के बारे में सवाल किया तो आप ने फ़रमाया, "(ऊपर वाले) बीस हज़ार थे।"

ज़ईफुल इस्नाद:तबरी:23/ 104.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है।

3230 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ ابْنُ عَثْمَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ بَشِيرٍ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنِ الحَسَنِ، عَنْ سَمُرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: {وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهُ هُمُ البَاقِينَ} قَالَ: حَامٌ، وَسَامٌ، وَيَافِثُ بِالثَّاءِ.

3230 - सय्यदना समुरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने अल्लाह तआला के फ़रमान "और हम ने उनकी औलाद को बाकी रखा" (आयत:77)के बारे में फ़रमाया, "(वह) हाम, साम और याफिस थे।"

ज़ईफुल इस्नाद: अस- सिलसिला अज़-ज़ईफा: 3683.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: याफ़ित और याफ़िस ت और ث दोनों के साथ आता है यफ़िस भी कहा गया है।

नीज़ यह हदीस हसन ग़रीब है हम इसे सईद बिन बशीर की सनद से ही जानते हैं।

3231 - حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ مُعَاذٍ العَقَدِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي عَرُوبَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنِ الحَسَنِ، عَنْ سَمُرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: سَامُ أَبُو العَرَبِ، وَحَامُ أَبُو الحَبَشِ، وَيَافِثُ أَبُو الرُّومِ.

3231 - सय्यदना समुरह (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "साम अरब का बाप, हाम हब्शियों का बाप और याफ़िस रूम का बाप है।"

ज़ईफ़: अहमद: 5/9,10. तबरानी:6871. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:3683.

39 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ ص

39 - तफ़सीर सूरह साद।

3232 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ الْمَعْنَى وَاحِدٌ، قَالاَ: حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ يَحْيَى، قَالَ عَبْدٌ: هُوَ ابْنُ عَبَّادٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: مَرِضَ أَبُو طَالِبٍ فَجَاءَتْهُ قُرَيْشٌ، وَجَاءَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعِنْدَ أَبِي طَالِبٍ مَجْلِسُ رَجُلٍ، فَقَامَ أَبُو جَهْلٍ كَيْ يَمْنَعَهُ قَالَ: وَشَكَوْهُ إِلَى أَبِي طَالِبٍ، فَقَالَ: يَا ابْنَ أَخِي مَا تُرِيدُ مِنْ قَوْمِكَ؟ قَالَ: إِنِّي أُرِيدُ مِنْهُمْ كَلِمَةً وَاحِدَةً تَدِينُ لَهُمْ بِهَا العَرَبُ، وَتُؤَدِّي إِلَيْهِمُ العَجَمُ الجِزْيَةَ. قَالَ: كَلِمَةً وَاحِدَةً؟ قَالَ: كَلِمَةً وَاحِدَةً قَالَ: يَا عَمِّ يَقُولُوا: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ فَقَالُوا: إِلَهًا وَاحِدًا مَا سَمِعْنَا بِهَذَا فِي الْمِلَّةِ الآخِرَةِ إِنْ هَذَا إِلاَّ اخْتِلاَقٌ. قَالَ: فَنَزَلَ فِيهِمُ القُرْآنُ: {ص وَالقُرْآنِ ذِي الذِّكْرِ

3232 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि अबू तालिब बीमार हुआ तो कुरैशी उस के पास आए, नबी (ﷺ) भी उसके पास गए और अबू तालिब के पास एक आदमी के बैठने की जगह थी, चुनांचे अबू जहल उठा ताकि आप को वहाँ बैठने से मना करे, कहते हैं: लोगों ने अबू तालिब से आप (ﷺ) की शिकायत की तो उसने कहा: "ऐ मेरे भतीजे! तुम अपनी कौम से क्या चाहते हो? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैं उन से एक ही कलिमा चाहता हूँ जिसकी वजह से अरब उनके रिआया बन जायेंगे और अजम के लोग उन्हें जिज्या देंगे उसने कहा: एक ही कलिमा! आप ने फ़रमाया, "हाँ एक ही कलिमा।" फिर आप ने फ़रमाया, "ऐ चचा तुम सब لا إله إلا الله कह दो।" तो वह कहने लगे सिर्फ एक ही माबूद ?" हम ने यह बात आख़िरी मिल्लत में नहीं सुनी यह तो महज़ बनाई हुई बात है।" रावी कहते हैं: फिर उनके बारे में कुरआन नाज़िल हुआ ص नसीहत वाले

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي عِزَّةٍ وَشِقَاقٍ}، إِلَى قَوْلِهِ: {مَا سَمِعْنَا بِهَذَا فِي الْمِلَّةِ الآخِرَةِ إِنْ هَذَا إِلاَّ اخْتِلاَقٌ}.

कुर्आन की क़सम, बल्कि वह लोग जिन्होंने कुफ्र किया तकब्बुर और मुखालिफ़त में (पड़े हुए) हैं" से लेकर " हम ने यह बात आख़िरी मिल्लत में नहीं सुनी यह तो महज़ बनाई हुई बात है।" (आयत: 1- 7)

ज़ईफुल इस्नाद:अहमद:1/227. हाकिम:2/432.इब्ने अबी शैबा:3/359.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। हमें बुन्दार ने वह कहते हैं: हमें यह्या बिन सईद ने सुफ़ियान से उन्होंने आमश से इस हदीस जैसी हदीस बयान की है और उन्होंने यह्या बिन अब्बाद की बजाये यह्या बिन उमारा कहा है।

3233 - حَدَّثَنَا سَلَمَةُ بْنُ شَبِيبٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالاَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَتَانِي اللَّيْلَةَ رَبِّي تَبَارَكَ وَتَعَالَى فِي أَحْسَنِ صُورَةٍ،، قَالَ أَحْسَبُهُ فِي الْمَنَامِ، فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ هَلْ تَدْرِي فِيمَ يَخْتَصِمُ الْمَلأُ الأَعْلَى؟ قَالَ: قُلْتُ: لاَ، قَالَ: فَوَضَعَ يَدَهُ بَيْنَ كَتِفَيَّ حَتَّى وَجَدْتُ بَرْدَهَا بَيْنَ ثَدْيَيَّ أَوْ قَالَ: فِي نَحْرِي، فَعَلِمْتُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الأَرْضِ، قَالَ: يَا مُحَمَّدُ، هَلْ تَدْرِي فِيمَ يَخْتَصِمُ الْمَلأُ الأَعْلَى؟ قُلْتُ: نَعَمْ، فِي الكَفَّارَاتِ، وَالكَفَّارَاتُ الْمُكْثُ فِي الْمَسَاجِدِ بَعْدَ الصَّلاَةِ، وَالْمَشْيُ عَلَى الأَقْدَامِ إِلَى

3233 - अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "आज रात मेरा बाबरकत और बलंद व बरतर परवरदिगार बहुत ही खूबसूरत शक्ल में ख़्वाब में मेरे पास आया। फिर उस ने कहा: ऐ मुहम्मद! क्या आप जानते हैं कि ऊंचे मर्तबे वाले फ़रिश्ते किस चीज़ में झगड़ते हैं? मैंने कहा नहीं, आप (ﷺ) फ़रमाते हैं, अल्लाह ने अपने दोनों हाथ मेरे दोनों कन्धों के दर्मियान रखा यहाँ तक कि मैंने उस की ठंडक अपनी छाती के दर्मियान पाई। या यह फ़रमाया, कि अपने गले में तो मैं हर उस चीज़ को जान गया जो आसमानों और ज़मीन में है। उस ने कहा: ऐ मुहम्मद! क्या आप जानते हैं कि आलमे बाला के फ़रिश्ते किस चीज़ में झगड़ते हैं? मैंने कहा: हाँ, (गुनाहों का) कफ्फ़ारा बनने वाली चीज़ों में, और कफ्फ़ारा बनने वाली चीजें यह हैं: नमाज़ के बाद मस्जिद में ठहरना, जमाअत के लिए अपने

الْجَمَاعَاتِ، وَإِسْبَاغُ الْوُضُوءِ فِي الْمَكَارِهِ، وَمَنْ فَعَلَ ذَلِكَ عَاشَ بِخَيْرٍ وَمَاتَ بِخَيْرٍ، وَكَانَ مِنْ خَطِيئَتِهِ كَيَوْمِ وَلَدَتْهُ أُمُّهُ، وَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ، إِذَا صَلَّيْتَ فَقُلْ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ فِعْلَ الخَيْرَاتِ، وَتَرْكَ الْمُنْكَرَاتِ، وَحُبَّ الْمَسَاكِينِ، وَإِذَا أَرَدْتَ بِعِبَادِكَ فِتْنَةً فَاقْبِضْنِي إِلَيْكَ غَيْرَ مَفْتُونٍ، قَالَ: وَالدَّرَجَاتُ إِفْشَاءُ السَّلَامِ، وَإِطْعَامُ الطَّعَامِ، وَالصَّلَاةُ بِاللَّيْلِ وَالنَّاسُ نِيَامٌ.

पाँव पर चल कर जाना और तक्लीफ़ों में वुज़ू को अच्छी तरह पूरा करना, जिस ने यह काम किए वह भलाई के साथ ज़िंदा रहा, भलाई के साथ मरा और वह अपने गुनाहों से उस दिन की तरह साफ़ हो गया जिस दिन उसकी मां ने उसे जन्म दिया था नीज़ अल्लाह तआला ने फ़रमाया, "ऐ मुहम्मद! जब आप नमाज़ पढ़ें तो कहें: ऐ अल्लाह! मैं तुझ से भलाई के काम करने, बुराइयां छोड़ने और मसाकीन से मोहब्बत करने का सवाल करता हूँ और तू जब अपने बन्दों को आजमाना चाहे तो मुझे बगैर फ़ित्ना अपनी तरफ़ उठा लेना। फ़रमाया, "दरजात यह हैं:) सलाम को फैलाना, खाना खिलाना और रात को जब लोग सो रहे हों उस वक़्त नमाज़ पढ़ना।"

सहीह: अबू याला:2608.इब्ने अबी आसिम:469. सहीहुत्तर्गीब:302.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: मुहद्दिसीन ने इस हदीस की सनद में अबू किलाबा और इब्ने अब्बास (رضي الله) के दर्मियान एक आदमी का इज़ाफ़ा भी किया है उसे क़तादा ने अबू किलाबा से ख़ालिद बिन लज्लाज, इब्ने अब्बास (رضي الله) से रिवायत किया है।

3234 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي قِلَابَةَ، عَنْ خَالِدِ بْنِ اللَّجْلَاجِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: أَتَانِي رَبِّي فِي أَحْسَنِ صُورَةٍ، فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ، قُلْتُ: لَبَّيْكَ رَبِّي

3234 - सय्यदना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास (رضي الله) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया; "मेरे पास मेरा रब बहुत ही ख़ूबसूरत शक्ल में आया उसने कहा: "ऐ मुहम्मद! मैंने कहा: मेरे रब मैं हाज़िर हूँ और खुश्बख्ती तेरी तरफ़ से ही है, तो उस ने कहा: आलमे बाला के फ़रिश्ते किस बारे में झगड़ते हैं? मैंने कहा: ऐ मेरे परवरदिगार! मैं नहीं जानता तो उस ने अपना हाथ मेरे कंधे के दर्मियान रखा यहाँ तक

وَسَعْدَيْكَ، قَالَ: فِيمَ يَخْتَصِمُ الْمَلأُ الأَعْلَى؟ قُلْتُ: رَبِّ لاَ أَدْرِي، فَوَضَعَ يَدَهُ بَيْنَ كَتِفَيَّ فَوَجَدْتُ بَرْدَهَا بَيْنَ ثَدْيَيَّ فَعَلِمْتُ مَا بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالمَغْرِبِ، فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ، فَقُلْتُ: لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ، قَالَ: فِيمَ يَخْتَصِمُ الْمَلأُ الأَعْلَى؟ قُلْتُ: فِي الدَّرَجَاتِ وَالكَفَّارَاتِ، وَفِي نَقْلِ الأَقْدَامِ إِلَى الجَمَاعَاتِ، وَإِسْبَاغِ الوُضُوءِ فِي الْمَكْرُوهَاتِ، وَانْتِظَارِ الصَّلاَةِ بَعْدَ الصَّلاَةِ، وَمَنْ يُحَافِظْ عَلَيْهِنَّ عَاشَ بِخَيْرٍ وَمَاتَ بِخَيْرٍ، وَكَانَ مِنْ ذُنُوبِهِ كَيَوْمِ وَلَدَتْهُ أُمُّهُ.

कि मैंने उस की ठंडक अपनी छाती के दर्मियान महसूस की फिर मश्रिक़ और मग्रिब के दर्मियान हर चीज़ को जान गया, उस ने कहा: ऐ मुहम्मद! मैंने कहा: मेरे रब मैं हाज़िर हूँ और ख़ुश्बख़्ती तेरी तरफ़ से ही है, उस ने कहा: आलमे बाला के फ़रिश्ते किस चीज़ के बारे में झगड़ते हैं? मैंने कहा: दर्जात, कफ्फ़ारा बनने वाली चीजों, जमाअत की तरफ़ पाँव उठा कर जाने, नापसंदीदगी के बावजूद मुकम्मल वुज़ू करने और एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ के इन्तिज़ार करने के बारे में और जो शख़्स इन बातों का ख़याल रखे वह अच्छे तरीक़े से ज़िंदगी बसर करेगा और भलाई पर ही फौत होगा और वह अपने गुनाहों से उस दिन की तरह (पाक व साफ़) हो जाएगा जिस दिन उसकी मां ने उसे जन्म दिया था।"

सहीह: अबू याला:2608.इब्ने अबी आसिम:469. सहीहुत्तर्गीब:302.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है।

नीज़ इस बारे में मुआज़ बिन जबल (رضي الله عنه) और अब्दुर्रहमान बिन आईश भी नबी (ﷺ) से रिवायत करते हैं।

और सय्यदना मुआज़ बिन जबल (رضي الله عنه) से नबी (ﷺ) की यह हदीस मुकम्मल मर्वी है और इसमें है कि आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "मुझे ऊंघ आई फिर मैं नींद में ओझल हो गया तो मैंने अपने रब को बहुत ही खूबसूरत शक्ल में देखा उस ने फ़रमाया, "आलमे बाला के फ़रिश्ते किस बारे में झगड़ते हैं?"

3235 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هَانِئٍ أَبُو هَانِئٍ اليَشْكُرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا جَهْضَمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، عَنْ يَحْيَى بْنِ

3235 - सय्यदना मुआज़ बिन जबल (رضي الله عنه) बयान करते हैं: एक सुबह नमाज़े फ़ज्र से रसूलुल्लाह (ﷺ) रुके रहे यहाँ तक कि क़रीब था हम सूरज की आँख देखते, चुनाँचे तो आप

أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ سَلَّامٍ، عَنْ أَبِي سَلَّامٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَائِشٍ الحَضْرَمِيِّ، أَنَّهُ حَدَّثَهُ عَنْ مَالِكِ بْنِ يَخَامِرَ السَّكْسَكِيِّ، عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ قَالَ: احْتُبِسَ عَنَّا رَسُولُ اللهِ ﷺ ذَاتَ غَدَاةٍ مِنْ صَلَاةِ الصُّبْحِ حَتَّى كِدْنَا نَتَرَاءَى عَيْنَ الشَّمْسِ، فَخَرَجَ سَرِيعًا فَثُوِّبَ بِالصَّلَاةِ، فَصَلَّى رَسُولُ اللهِ ﷺ وَتَجَوَّزَ فِي صَلَاتِهِ، فَلَمَّا سَلَّمَ دَعَا بِصَوْتِهِ فَقَالَ لَنَا: عَلَى مَصَافِّكُمْ كَمَا أَنْتُمْ ثُمَّ انْفَتَلَ إِلَيْنَا فَقَالَ: أَمَا إِنِّي سَأُحَدِّثُكُمْ مَا حَبَسَنِي عَنْكُمُ الغَدَاةَ: أَنِّي قُمْتُ مِنَ اللَّيْلِ فَتَوَضَّأْتُ فَصَلَّيْتُ مَا قُدِّرَ لِي فَنَعَسْتُ فِي صَلَاتِي فَاسْتَثْقَلْتُ، فَإِذَا أَنَا بِرَبِّي تَبَارَكَ وَتَعَالَى فِي أَحْسَنِ صُورَةٍ، فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ قُلْتُ: لَبَّيْكَ رَبِّ، قَالَ: فِيمَ يَخْتَصِمُ الْمَلَأُ الأَعْلَى؟ قُلْتُ: لَا أَدْرِي رَبِّ، قَالَهَا ثَلَاثًا قَالَ: فَرَأَيْتُهُ وَضَعَ كَفَّهُ بَيْنَ كَتِفَيَّ حَتَّى وَجَدْتُ بَرْدَ أَنَامِلِهِ بَيْنَ ثَدْيَيَّ، فَتَجَلَّى لِي كُلُّ شَيْءٍ وَعَرَفْتُ، فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ، قُلْتُ: لَبَّيْكَ رَبِّ، قَالَ: فِيمَ يَخْتَصِمُ الْمَلَأُ الأَعْلَى؟ قُلْتُ: فِي الكَفَّارَاتِ، قَالَ: مَا هُنَّ؟ قُلْتُ: مَشْيُ الأَقْدَامِ إِلَى الجَمَاعَاتِ، وَالجُلُوسُ فِي الْمَسَاجِدِ بَعْدَ الصَّلَوَاتِ، وَإِسْبَاغُ الوُضُوءِ

जल्दी से निकले फिर नमाज़ की इक़ामत हुई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हल्की नमाज़ पढ़ाई फिर जब सलाम फेरा तो आप(ﷺ) ने बलंद आवाज़ से पुकारा, आप(ﷺ) ने हम से फ़रमाया, "अपनी सफ़ों पर ऐसे ही रहो जैसे हो।" फिर हमारी तरफ़ मुतवज्जह हो कर फ़रमाया, "मैं तुम्हें बताता हूँ कि आज सुबह मुझे तुम से किस चीज़ ने रोके रखा मैं रात के वक़्त उठा वुज़ू किया, फिर जो मेरे नसीब में थी नमाज़ पढ़ी, फिर नमाज़ में ही ऊंघ आने लगी तो मैं बोझल हो गया, फिर अचानक मैंने अपने रब तबारक व तआला को बहुत खूबसूरत शक्ल में देखा उस ने फ़रमाया ऐ मुहम्मद! आलमे बाला के फ़रिश्ते किस बारे में झगड़ते हैं? मैंने कहा: ऐ मेरे परवरदिगार! मैं नहीं जानता, उस ने यह बात तीन मर्तबा कही: आप ने फ़रमाया, "फिर मैंने देखा कि उस ने अपना हाथ मेरे दोनों कन्धों के दर्मियान रखा, मैंने उसके पोरों की ठंडक अपनी छाती के दर्मियान महसूस की फिर मेरे लिए हर चीज़ ज़ाहिर कर दी गई जिनको मैं जान गया। फिर फ़रमाया, "ऐ मुहम्मद! मैंने कहा: ऐ मेरे रब! मैं हाज़िर हूँ, फ़रमाया, आलमे बाला के फ़रिश्ते किस बारे में झगड़ते हैं? मैंने कहा: कफ्फ़ारा बनने वाले कामों के बारे में। फ़रमाया, "वह क्या काम हैं?" मैंने कहा: अपने क़दमों पर चलकर जमाअत में जाना, नमाज़ के बाद मस्जिदों में बैठना, और नापसंदीदगी के बावजूद वुज़ू पूरा करना, कहा: फिर किस चीज़ में? मैंने कहा:

فِي الْمَكْرُوهَاتِ، قَالَ: ثُمَّ فِيمَ؟ قُلْتُ: إِطْعَامُ الطَّعَامِ، وَلِينُ الكَلَامِ، وَالصَّلَاةُ بِاللَّيْلِ وَالنَّاسُ نِيَامٌ. قَالَ: سَلْ. قُلْتُ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ فِعْلَ الخَيْرَاتِ، وَتَرْكَ الْمُنْكَرَاتِ، وَحُبَّ الْمَسَاكِينِ، وَأَنْ تَغْفِرَ لِي وَتَرْحَمَنِي، وَإِذَا أَرَدْتَ فِتْنَةً فِي قَوْمٍ فَتَوَفَّنِي غَيْرَ مَفْتُونٍ، وَأَسْأَلُكَ حُبَّكَ وَحُبَّ مَنْ يُحِبُّكَ، وَحُبَّ عَمَلٍ يُقَرِّبُ إِلَى حُبِّكَ، قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: إِنَّهَا حَقٌّ فَادْرُسُوهَا ثُمَّ تَعَلَّمُوهَا.

खाना खाने, नर्म गुफ्तगू, और जब रात के वक़्त लोग सो रहे हों तो नमाज़ पढ़ने में। फ़रमाया, "सवाल करें और कहें, ऐ अल्लाह! मैं तुझ से भलाई करने, मुन्करात छोड़ने और मसाकीन से मोहब्बत करने का सवाल करता हूँ जो तेरी मोहब्बत के क़रीब कर दे। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "यह ख्वाब हक़ है इस के अल्फ़ाज़ ख़ुद भी सीखो फिर दूसरों को भी पढ़ाओ।"

सहीह: अहमद:5/243. इब्ने खुजैमा:प।218. हाकिम:1/521.एक दुसरे तरीक़ से। हिदायतुर्रूवात:693.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।मैंने मुहम्मद बिन इस्माईल से इस हदीस के बारे में पुछा तो उन्होंने फ़रमाया, "यह हदीस हसन सहीह है और कहा: यह हदीस वलीद बिन मुस्लिम की अब्दुर्रहमान बिन यज़ीद बिन जाबिर से बवास्ता खालिद बिन लज्लाज, अब्दुर्रहमान बिन आइश से बयानकर्दा हदीस से ज़्यादा सहीह है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "फिर पूरी हदीस ज़िक्र की और यह ग़ैर महफ़ूज़ है। वलीद ने अपनी हदीस में यही ज़िक्र किया है कि अब्दुर्रहमान बिन आइश कहते हैं मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना। बशीर बिन बक्र ने भी अब्दुर्रहमान बिन यज़ीद बिन जाबिर से इस हदीस को इसी सनद से बवास्ता अब्दुर्रहमान बिन आइश नबी (ﷺ) से रिवायत किया है और यह ज़्यादा सहीह है। नीज़ अब्दुर्रहमान बिन आइश ने नबी (ﷺ) से सिमा नहीं किया।

40 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الزُّمَرِ

40 - तफ़सीर सूरह ज़ुमर।

3236 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ عَلْقَمَةَ، عَنْ يَحْيَى بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ حَاطِبٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ {ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ القِيَامَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ} قَالَ

3236 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन जुबैर (رضي الله عنه) अपने बाप से रिवायत करते हैं कि जब आयत "फिर तुम अपने रब के पास क़यामत के दिन झगड़ा करोगे" (आयत:31) नाज़िल हुई, तो जुबैर ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! क्या हमारे दर्मियान दोबारा झगड़ा होगा जब कि इस से पहले दुनिया में भी हो

الزُّبَيْرُ: يَا رَسُولَ اللهِ أَتُكَرَّرُ عَلَيْنَا الخُصُومَةُ بَعْدَ الَّذِي كَانَ بَيْنَنَا فِي الدُّنْيَا؟ قَالَ: نَعَمْ، فَقَالَ: إِنَّ الأَمْرَ إِذًا لَشَدِيدٌ.

चुका हो? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "हाँ," फिर फ़रमाया, "उस वक़्त मामला बहुत सख़्त होगा।

हसन: अहमद:1/164. हुमैदी:60. बज़्ज़ार:964. हाकिम:2/435. अस-सिलसिला अस-सहीहा:340.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3237 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَبَّانُ بْنُ هِلاَلٍ، وَسُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، وحَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ، قَالُوا: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ شَهْرِ بْنِ حَوْشَبٍ، عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ يَزِيدَ، قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقْرَأُ {يَا عِبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَى أَنْفُسِهِمْ لاَ تَقْنَطُوا مِنْ رَحْمَةِ اللهِ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا} وَلاَ يُبَالِي.

3237 - अस्मा बिन्ते यज़ीद (رضي الله عنها) बयान करती हैं मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को यह पढ़ते हुए सुना "ऐ मेरे वह बन्दों! जिन्होंने अपनी जानों पर जुल्म किया है तुम अल्लाह की रहमत से ना उम्मीद मत होना अल्लाह तमाम गुनाहों को माफ़ कर देगा और वह परवाह नहीं करेगा।"

ज़ईफुल इस्नाद:अहमद:6/454. हाकिम:2/249.अब्द बिन हुमैद:1577.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है हम इसे बवास्ता साबित ही शहर बिन हौशब से जानते हैं और शहर बिन हौसब उम्मे सलमा अन्सारिया (رضي الله عنها) से रिवायत करते हैं और उम्मे सलमा अन्सारिया अस्मा बिन्ते यज़ीद (رضي الله عنها) ही हैं।

3238 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَنْصُورٌ، وَسُلَيْمَانُ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَبِيدَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: جَاءَ يَهُودِيٌّ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ السَّمَاوَاتِ عَلَى إِصْبَعٍ وَالأَرَضِينَ عَلَى إِصْبَعٍ وَالجِبَالَ عَلَى

3238 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) बयान करते हैं: एक यहूदी नबी (ﷺ) के पास आकर कहने लगा: ऐ मुहम्मद! अल्लाह तआला आसमानों को एक उंगली पर पहाड़ों को एक उंगली पर, ज़मीनों को एक उंगली पर और तमाम मख़्लूकात को एक उंगली पर रखेगा, फिर फ़रमाएगा: मैं ही बादशाह हूँ।

रावी कहते हैं: नबी (ﷺ) मुसकुराए यहाँ तक कि आप की दाढ़ें ज़ाहिर हो गईं। आप ने

إِصْبَعٍ، وَالخَلَائِقَ عَلَى إِصْبَعٍ ثُمَّ يَقُولُ: أَنَا الْمَلِكُ. قَالَ: فَضَحِكَ النَّبِيُّ ﷺ حَتَّى بَدَتْ نَوَاجِذُهُ، قَالَ: {وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ}.

फ़रमाया, "लेकिन उन्होंने अल्लाह की क़द्र ऐसे नहीं की जैसे उसकी क़द्र का हक़ था।" (आयत:67)

बुख़ारी:811. मुस्लिम:2786. अहमद:1/429.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3239 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا فُضَيْلُ بْنُ عِيَاضٍ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَبِيدَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: فَضَحِكَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَعَجُّبًا وَتَصْدِيقًا.

3239 - सय्यदना अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) ताज्जुब और तस्दीक़ की वजह से मुस्कुराए।

तख़रीज इस से पहली हदीस में गुज़र चुकी है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3240 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّلْتِ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو كُدَيْنَةَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ السَّائِبِ، عَنْ أَبِي الضُّحَى، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: مَرَّ يَهُودِيٌّ بِالنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَا يَهُودِيُّ حَدِّثْنَا فَقَالَ: كَيْفَ تَقُولُ يَا أَبَا الْقَاسِمِ إِذَا وَضَعَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ عَلَى ذِهْ، وَالأَرْضَ عَلَى ذِهْ، وَالْمَاءَ عَلَى ذِهْ، وَالْجِبَالَ عَلَى ذِهْ، وَسَائِرَ الْخَلْقِ عَلَى ذِهْ، وَأَشَارَ أَبُو جَعْفَرٍ مُحَمَّدُ بْنُ الصَّلْتِ بِخِنْصَرِهِ أَوَّلاً، ثُمَّ تَابَعَ حَتَّى بَلَغَ الإِبْهَامَ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ {وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ}.

3240 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि एक यहूदी, नबी(ﷺ) के पास से गुज़रा तो नबी (ﷺ) ने उससे फ़रमाया, "ऐ यहूदी! कुछ बयान करो।" तो उसने कहा: ऐ अबुल क़ासिम! आप क्या कहते हैं कि जब अल्लाह तआला आसमान को इस उंगली पर, ज़मीन को इस पर, पानी को इस पर, पहाड़ को इस पर, और तमाम मख़्लूकात को इस पर रखेगा और अबू जाफ़र मुहम्मद बिन सल्त ने सबसे पहले अपनी छंगुलियाँ से इशारा करते करते अंगूठे तक जा पहुंचे, फिर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी।" उन्होंने अल्लाह की क़द्र वैसे नहीं की जैसे हक़ था।"

ज़ईफ़: अहमद:1/251. तबरानी:4686. ज़िलालुल जन्ना:545.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है हम इसे सिर्फ इसी सनद के साथ ही इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) से जानते हैं और अबू कुदैना का नाम यह्या बिन मोहल्लब है। नीज़ मैंने मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी को देखा उन्होंने इस हदीस को बवास्ता हसन बिन शुजा, मुहम्मद बिन सल्त से रिवायत किया था।

3241 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ عَنْبَسَةَ بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ أَبِي عَمْرَةَ، عَنْ مُجَاهِدٍ، قَالَ: قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: أَتَدْرِي مَا سَعَةُ جَهَنَّمَ؟ قُلْتُ: لَا، قَالَ: أَجَلْ، وَاللَّهِ مَا تَدْرِي. حَدَّثَتْنِي عَائِشَةُ، أَنَّهَا سَأَلَتْ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ قَوْلِهِ: {وَالأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ القِيَامَةِ وَالسَّمَاوَاتُ مَطْوِيَّاتٌ بِيَمِينِهِ} قَالَتْ: قُلْتُ: فَأَيْنَ النَّاسُ يَوْمَئِذٍ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: عَلَى جِسْرِ جَهَنَّمَ وَفِي الحَدِيثِ قِصَّةٌ.

3241 - मुजाहिद (رحمه الله) कहते हैं: अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) ने फ़रमाया, "क्या तुम जानते हो कि जहन्नम कितनी वसीअ (बड़ा) है? मैंने कहा: नहीं, उन्होंने कहा: हाँ! अल्लाह की क़सम तुम नहीं जानते, मुझे सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) ने बताया कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से फ़रमाने बारी तआला "क़यामत के दिन तमाम ज़मीन उसकी मुट्ठी में होगी और आसमान उसके दायें हाथ में लिपटे होंगे।" के बारे में सवाल किया मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! उस दिन लोग कहाँ होंगे? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "जहन्नम के पुल पर।"

सहीहुल इस्नाद:अहमद:6/116. निसाई:11453. हाकिम:2/436. अस-सिलसिला अस-सहीहा:561.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस हदीस में एक क़िस्सा है। नीज़ इस सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3242 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ دَاوُدَ بْنِ أَبِي هِنْدٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّهَا قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ {وَالأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ القِيَامَةِ وَالسَّمَاوَاتُ مَطْوِيَّاتٌ بِيَمِينِهِ} فَأَيْنَ الْمُؤْمِنُونَ يَوْمَئِذٍ؟ قَالَ: عَلَى الصِّرَاطِ يَا عَائِشَةُ.

3242 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) से रिवायत है कि उन्होंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! और सारी ज़मीन क़यामत के दिन उसकी मुट्ठी में होगी और आसमान उसके दायें हाथ में लिपटे होंगे।" तो उस दिन मोमिन कहाँ होंगे? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ आयशा! सिरात (पुल) पर।"

सहीह: तख़रीज के लिए देखें: हदीस नम्बर 3121.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3243 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مُطَرِّفٍ، عَنْ عَطِيَّةَ العَوْفِيِّ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كَيْفَ أَنْعَمُ وَقَدِ التَقَمَ صَاحِبُ القَرْنِ القَرْنَ وَحَنَى جَبْهَتَهُ وَأَصْغَى سَمْعَهُ يَنْتَظِرُ أَنْ يُؤْمَرَ أَنْ يَنْفُخَ فَيَنْفُخَ قَالَ الْمُسْلِمُونَ: فَكَيْفَ نَقُولُ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: قُولُوا حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الوَكِيلُ تَوَكَّلْنَا عَلَى اللهِ رَبِّنَا وَرُبَّمَا قَالَ سُفْيَانُ: عَلَى اللهِ تَوَكَّلْنَا.

3243 - अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैं किस तरह आराम करूं? जबकि कर्न वाले ने कर्न के साथ मुंह लगा लिया है, अपनी पेशानी को झुकाए और अपनी कान को लटकाए इन्तिज़ार कर रहा है कि कब उसे फूँक मारने का हुक्म हो और वह फूँक मारे।" " मुसलमानों ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! हम क्या कहें? आप ने फ़रमाया, "तुम कहो: हमें अल्लाह ही काफी है और वह बेहतरीन कारसाज़ है हमने अपने रब अल्लाह पर तवक्कुल किया।"और बअज़ दफ़ा सुफ़ियान कहते हैं:"कि हमने अल्लाह पर तवक्कुल किया।"

सहीह: तख़रीज के लिए देखें: हदीस नम्बर 2431.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है। इसे आमश ने भी बवास्ता अतिय्या, अबू सईद (رضي الله عنه) से इसी तरह रिवायत किया है।

3244 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ التَّيْمِيُّ، عَنْ أَسْلَمَ العِجْلِيِّ، عَنْ بِشْرِ بْنِ شَغَافٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ أَعْرَابِيٌّ: يَا رَسُولَ اللهِ مَا الصُّورُ؟ قَالَ: قَرْنٌ يُنْفَخُ فِيهِ.

3244 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि एक आराबी आकर अर्ज़ करने लगा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! सूर क्या है? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "एक कर्न (सींग) है जिस में फूँक मारी जाएगी।"

सहीह: तख़रीज के लिए देखें: हदीस नम्बर 2430.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) ने कहा: यह हदीस हसन है हम इसे सुलैमान अत्तैमी के तरीक़ से ही जानते हैं।

3245 - सय्यदना अबू हुरैरा (﵁) बयान करते हैं कि एक यहूदी ने मदीना के बाज़ार में कहा: उस ज़ात की क़सम जिस ने मूसा को तमाम इंसानों पर पसंद किया, कहते हैं: अंसार में से एक आदमी ने अपना हाथ उठा कर उसके चेहरे पर तमांचा मार दिया, कहा: तू इस तरह कहता है? जब कि हमारे दर्मियान अल्लाह के नबी मौजूद हैं, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "सूर फूंका जाएगा तो ज़मीन और आसमानों वाले बेहोश हो जाएंगे मगर जिसे अल्लाह ने चाहा फिर दूसरी मर्तबा फूंक मारी जाएगी तो अचानक वह खड़े हो कर देखेंगे।" (आयत:68) फिर सब से पहले मैं अपना सर उठाउंगा तो देखूंगा कि मूसा (ﷺ) अर्श के पायों में से एक पाया पकड़े हुए होंगे, मैं नहीं जानता कि उन्होंने मुझ से पहले सर उठाया होगा या अल्लाह ने उन्हें उस से मुस्तस्ना (अलग) रखा होगा, नीज़ जिसने यह कहा कि मैं यूनुस बिन मत्ता (ﷺ) से बेहतर हूँ यक़ीनन उस ने झूठ बोला।"

3245 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ سُلَيْمَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرٍو، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ يَهُودِيٌّ بِسُوقِ الْمَدِينَةِ: لاَ وَالَّذِي اصْطَفَى مُوسَى عَلَى البَشَرِ، قَالَ: فَرَفَعَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ يَدَهُ فَصَكَّ بِهَا وَجْهَهُ، قَالَ: تَقُولُ هَذَا وَفِينَا نَبِيُّ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: {وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الأَرْضِ إِلاَّ مَنْ شَاءَ اللَّهُ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرَى فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ} فَأَكُونُ أَوَّلَ مَنْ رَفَعَ رَأْسَهُ، فَإِذَا مُوسَى آخِذٌ بِقَائِمَةٍ مِنْ قَوَائِمِ العَرْشِ، فَلاَ أَدْرِي أَرَفَعَ رَأْسَهُ قَبْلِي، أَمْ كَانَ مِمَّنْ اسْتَثْنَى اللَّهُ؟ وَمَنْ قَالَ: أَنَا خَيْرٌ مِنْ يُونُسَ بْنِ مَتَّى فَقَدْ كَذَبَ.

बुख़ारी:2411. मुस्लिम:2373. अबू दाऊद:4671. इब्ने माजह:4274.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3246 - सय्यदना अबू सईद और सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "एक ऐलान करने वाला जन्नत में ऐलान करेगा तुम्हारे लिए यह ख़ुशख़बरी है कि तुम ज़िन्दा रहोगे कभी नहीं मरोगे, तुम्हारे लिए यह है कि तंदुरुस्त रहोगे कभी बीमार नहीं होगे,

3246 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ وَغَيْرُ وَاحِدٍ، قَالُوا: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا الثَّوْرِيُّ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو إِسْحَاقَ، أَنَّ الأَغَرَّ أَبَا مُسْلِمٍ، حَدَّثَهُ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، وَأَبِي

هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: يُنَادِي مُنَادٍ: إِنَّ لَكُمْ أَنْ تَحْيَوْا فَلَا تَمُوتُوا أَبَدًا، وَإِنَّ لَكُمْ أَنْ تَصِحُّوا فَلَا تَسْقَمُوا أَبَدًا، وَإِنَّ لَكُمْ أَنْ تَشِبُّوا فَلَا تَهْرَمُوا أَبَدًا، وَإِنَّ لَكُمْ أَنْ تَنْعَمُوا فَلَا تَبْأَسُوا أَبَدًا، فَذَلِكَ قَوْلُهُ تَعَالَى: {وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ}.

तुम्हारे लिए यह है कि तुम जवान रहोगे कभी बूढ़े नहीं होगे और तुम्हारे लिए यह खुशखबरी भी है कि तुम नेमतों में रहोगे कभी तुम से छीनी नहीं जाएंगी। यही अल्लाह तआला का फ़रमान है "यही वह जन्नत है जिस के तुम वारिस बनाए गए हो उन आमाल के बदले जो तुम किया करते थे।" (अज़्- ज़ुखरुफ़: 72)

मुस्लिम:2837. अहमद:2/319.दारमी:2827.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इब्ने मुबारक और दीगर रुवात ने भी इस हदीस को सौरी से रिवायत किया है और मर्फू नहीं है।

41 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الْمُؤْمِنِ

41 - तफ़सीर सूरह मोमिन (ग़ाफ़िर)।

3247 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مَنْصُورٍ، وَالأَعْمَشِ، عَنْ ذَرٍّ، عَنْ يُسَيْعٍ الحَضْرَمِيِّ، عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ، قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: الدُّعَاءُ هُوَ العِبَادَةُ ثُمَّ قَرَأَ {وَقَالَ رَبُّكُمْ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ}.

3247 - नौमान बिन बशीर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि मैंने नबी (ﷺ) से सुना आप फ़रमा रहे थे: "दुआ ही इबादत है।" फिर आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "और तुम्हारे रब ने कहा मुझे पुकारो मैं तुम्हारी पुकार सुनूंगा, वह लोग जो मेरी इबादत से तकब्बुर करते हैं यक़ीनन अन्क़रीब वह ज़लील हो कर जहन्नम में दाख़िल होंगे।" (आयत:60)

सहीह: तख़रीज के लिए देखें: हदीस नम्बर 2669.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

42 - तफ़सीर सूरह हा मीम सज्दा।

42 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ السَّجْدَةِ

3248 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि बैतुल्लाह के पास तीन आदमियों की तकरार हुई, दो कुरैशी और एक सक्फी था। या दो सक्फी और एक कुरैशी था। उन के दिलों में समझ बूझ कम और पेटों में चर्बी ज़्यादा थी, उन में से एक ने कहा: तुम्हारा क्या ख़याल है कि अल्लाह तआला हमारी बातें सुनता है? तो दुसरे ने कहा: अगर हम ऊंची कहें तो सुनता है और अगर मख़्फ़ी करें तो नहीं सुनता, और तीसरा कहने लगा: अगर वह हमारी ऊंची बातों को सुन सकता है तो वह हमारी मख़्फ़ी बातों को भी सुन सकता है। चुनाँचे अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई: "और तुम उस से पर्दा नहीं करते थे कि तुम्हारे ख़िलाफ़ तुम्हारे कान गवाही देंगे, न तुम्हारी आँखें और न ही तुम्हारे जिस्म।" (आयत: 22)

3248 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنْ أَبِي مَعْمَرٍ، عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ: اخْتَصَمَ عِنْدَ الْبَيْتِ ثَلاَثَةُ نَفَرٍ قُرَشِيَّانِ وَثَقَفِيٌّ، أَوْ ثَقَفِيَّانِ وَقُرَشِيٌّ، قَلِيلٌ فِقْهُ قُلُوبِهِمْ كَثِيرٌ شَحْمُ بُطُونِهِمْ، فَقَالَ أَحَدُهُمْ: أَتَرَوْنَ أَنَّ اللَّهَ يَسْمَعُ مَا نَقُولُ؟ فَقَالَ الآخَرُ: يَسْمَعُ إِنْ جَهَرْنَا وَلاَ يَسْمَعُ إِنْ أَخْفَيْنَا، وَقَالَ الآخَرُ: إِنْ كَانَ يَسْمَعُ إِذَا جَهَرْنَا فَهُوَ يَسْمَعُ إِذَا أَخْفَيْنَا. فَأَنْزَلَ اللَّهُ {وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُونَ أَنْ يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلاَ أَبْصَارُكُمْ وَلاَ جُلُودُكُمْ}.

बुख़ारी:4816. मुस्लिम:2775.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3249 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) बयान करते हैं: मैं काबा के पर्दे में छिपा हुआ था कि तीन आदमी आए उनके पेटों की चर्बी ज़्यादा और दिलों में समझ बूझ कम थी, एक कुरैशी और दो उसके सक्फी दामाद थे या एक सक्फी और दो उसके कुरैशी दामाद थे, फिर उन्होंने ऐसी बातें की जो मैं समझ न सका, फिर उन में से एक ने कहा

3249 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ عُمَارَةَ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ، قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللهِ: كُنْتُ مُسْتَتِرًا بِأَسْتَارِ الكَعْبَةِ فَجَاءَ ثَلاَثَةُ نَفَرٍ كَثِيرٌ شُحُومُ بُطُونِهِمْ، قَلِيلٌ فِقْهُ قُلُوبِهِمْ، قُرَشِيٌّ وَخَتَنَاهُ ثَقَفِيَّانِ أَوْ ثَقَفِيٌّ

وَخَتَنَاهُ قُرَشِيَّانِ، فَتَكَلَّمُوا بِكَلَامٍ لَمْ أَفْهَمْهُ، فَقَالَ أَحَدُهُمْ: أَتَرَوْنَ أَنَّ اللَّهَ يَسْمَعُ كَلَامَنَا هَذَا؟ فَقَالَ الآخَرُ: إِنَّا إِذَا رَفَعْنَا أَصْوَاتَنَا سَمِعَهُ، وَإِذَا لَمْ نَرْفَعْ أَصْوَاتَنَا لَمْ يَسْمَعْهُ. فَقَالَ الآخَرُ: إِنْ سَمِعَ مِنْهُ شَيْئًا سَمِعَهُ كُلَّهُ، فَقَالَ عَبْدُ اللهِ: فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ {وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُونَ أَنْ يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلاَ أَبْصَارُكُمْ وَلاَ جُلُودُكُمْ}، إِلَى قَوْلِهِ: {فَأَصْبَحْتُمْ مِنَ الخَاسِرِينَ}.

तुम्हारा क्या ख्याल है कि अल्लाह तआला हमारी इस बात को सुनता है? तो दुसरे ने कहा जब हम अपनी आवाज़ें बलंद करें तो वह उसे सुनता। और जब हम अपनी आवाज़ें बलंद न करें तो वह उसे नहीं सुनता। तीसरा कहने लगा: अगर वह कुछ बातें सुन सकता है तो सब बातें भी सुन सकता है। अब्दुल्लाह कहते हैं: मैंने इसका ज़िक्र नबी (ﷺ) से किया तो अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी " और तुम उस से पर्दा नहीं करते थे कि तुम्हारे ख़िलाफ़ तुम्हारे कान, तुम्हारी आँखें और तुम्हारे चमड़े गवाही नहीं देंगे" से लेकर " सो तुम ख़सारा उठाने वालों में से हो गए।" तक (आयत: 22- 23)

सहीह: अहमद: 1/ 381. अबू याला: 5204.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

हमें महमूद बिन गैलान ने वह कहते हैं हमें वकीअ ने सुफ़ियान से उन्होंने आमश से उन्हें उमारा बिन उमैर ने बवास्ता वहब बिन रबीया, अब्दुल्लाह से इसी तरह रिवायत की है।

3250 - حَدَّثَنَا أَبُو حَفْصٍ عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ الفَلَّاسُ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو قُتَيْبَةَ سَلْمُ بْنُ قُتَيْبَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُهَيْلُ بْنُ أَبِي حَزْمٍ القُطَعِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا ثَابِتٌ البُنَانِيُّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَرَأَ: {إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا} قَالَ: قَدْ قَالَ النَّاسُ ثُمَّ كَفَرَ أَكْثَرُهُمْ، فَمَنْ مَاتَ عَلَيْهَا فَهُوَ مِمَّنْ اسْتَقَامَ.

3250 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने यह आयत पढ़ी: " बेशक वह लोग जिन्होंने कहा कि हमारा रब अल्लाह है और डट गए।" (आयत: 30) आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "लोगों ने यह बात कही फिर उन में से अक्सर ने कुफ्र किया, तो जो शख़्स इस कलिमे पर फौत हुआ तो उसका शुमार डट जाने वालों में से है।"

ज़ईफुल इस्नाद: निसाई: 11470. तबरी: 24/ 114. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा: 4052.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे इसी तरीक़ से ही जानते हैं मैंने अबू ज़ुर्आ से सुना वह कह रहे थे कि अफ़्फ़ान ने अम्र बिन अली से एक हदीस रिवायत की है।

नीज़ इस आयत की तफ़्सीर में अबू बक्र और उमर (رضي الله عنهما) भी नबी (ﷺ) से इस्तिक़ामत का माना रिवायत करते हैं।

43 - तफ़सीर सूरह शूरा।

43 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ حم عسق

3251 - ताऊस (رحمه الله) बयान करते हैं कि अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنهما) से इस आयत " कह दीजिए मैं तुमसे इस पर कोई उजरत नहीं माँगता मगर रिश्तेदारी की वजह से दोस्ती।" (23) के बारे में पूछा गया तो सईद बिन जुबैर ने कहा: कि आले मुहम्मद की क़राबत है। तो इब्ने अब्बास (رضي الله عنهما) ने फ़रमाया, क्या तुम जानते हो कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की कुरैश के हर घराने में क़राबतदारी थी तो अल्लाह तआला ने यही फ़रमाया, " कि मगर तुम मेरी अपने साथ रिश्तेदारी को कायम रखो।

3251 - حَدَّثَنَا بُنْدَارٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ مَيْسَرَةَ، قَالَ: سَمِعْتُ طَاوُوسًا، قَالَ: سُئِلَ ابْنُ عَبَّاسٍ، عَنْ هَذِهِ الآيَةِ، {قُلْ لاَ أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِلاَّ الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبَى} فَقَالَ سَعِيدُ بْنُ جُبَيْرٍ: قُرْبَى آلِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: أَعَلِمْتَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمْ يَكُنْ بَطْنٌ مِنْ قُرَيْشٍ إِلاَّ كَانَ لَهُ فِيهِمْ قَرَابَةٌ فَقَالَ: إِلاَّ أَنْ تَصِلُوا مَا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ مِنَ الْقَرَابَةِ.

बुख़ारी:3497. अहमद: 1/ 229.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और कई तुरूक़ (सनदों) से इब्ने अब्बास (رضي الله عنهما) से मर्वी है।

3252 - उबैदुल्लाह बिन वाज़े (رحمه الله) कहते हैं मुझे बनू मुर्रा के एक शख़्स ने बताया कि मैं कूफा आया तो मुझे बिलाल बिन अबी बुर्दा के बारे में बताया गया मैंने कहा: इसमें तो इब्रत है, फिर मैं उसके पास गया तो वह अपने ही उस घर में क़ैद था जिसे उस ने ख़ुद बनाया था। रावी कहते हैं: सज़ा और मार की वजह से उसकी हर चीज़ तब्दील हो चुकी थी और देखा कि वह एक ऊनी कपड़े में था। मैंने कहा: बिला शुब्हा! तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं, मैंने

3252 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَاصِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ الْوَازِعِ، قَالَ: حَدَّثَنِي شَيْخٌ مِنْ بَنِي مُرَّةَ قَالَ: قَدِمْتُ الكُوفَةَ فَأُخْبِرْتُ عَنْ بِلاَلِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ، فَقُلْتُ: إِنَّ فِيهِ لَمُعْتَبَرًا فَأَتَيْتُهُ وَهُوَ مَحْبُوسٌ فِي دَارِهِ الَّتِي قَدْ كَانَ بَنَى قَالَ: وَإِذَا كُلُّ شَيْءٍ مِنْهُ قَدْ تَغَيَّرَ مِنَ العَذَابِ

وَالضَّرْبِ، وَإِذَا هُوَ فِي قُشَاشٍ فَقُلْتُ: الحَمْدُ لِلَّهِ يَا بِلاَلُ، لَقَدْ رَأَيْتُكَ وَأَنْتَ تَمُرُّ بِنَا وَتُمْسِكُ بِأَنْفِكَ مِنْ غَيْرِ غُبَارٍ، وَأَنْتَ فِي حَالِكَ هَذِهِ اليَوْمَ. فَقَالَ: مِمَّنْ أَنْتَ؟ فَقُلْتُ: مِنْ بَنِي مُرَّةَ بْنِ عَبَّادٍ فَقَالَ: أَلاَ أُحَدِّثُكَ حَدِيثًا عَسَى اللَّهُ أَنْ يَنْفَعَكَ بِهِ؟ قُلْتُ: هَاتِ. قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي أَبُو بُرْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ أَبِي مُوسَى، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لاَ يُصِيبُ عَبْدًا نَكْبَةٌ فَمَا فَوْقَهَا أَوْ دُونَهَا إِلاَّ بِذَنْبٍ، وَمَا يَعْفُو اللَّهُ عَنْهُ أَكْثَرُ، وَقَرَأَ {وَمَا أَصَابَكُمْ مِنْ مُصِيبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُو عَنْ كَثِيرٍ}.

तुम्हें देखा था कि तुम हमारे पास से गुज़रते तो गर्दो गुबार न होने के बावजूद तुम अपनी नाक को ढाँप लेते थे और आज तुम इस हालत में हो। उस ने कहा: तुम्हारा ताल्लुक़ किन लोगों से है? मैंने कहा: बनू मुर्रा बिन अब्बाद से। तो उस ने कहा: क्या मैं एक हदीस न सुनाऊँ शायद अल्लाह तआला उसकी वजह से तुझे नफ़ा दे? मैंने कहा: लाओ, उस ने कहा: मुझे अबू बुर्दा ने अपने बाप सय्यदना अबू मूसा (رضي الله عنه) की तरफ़ से हदीस सुनाई कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "बन्दे को कोई चोट या उस से ज़्यादा या कम तक्लीफ़ गुनाह की वजह से ही पहुंचती है और उसकी वजह से जो अल्लाह तआला माफ़ कर देता है वह बहुत ज़्यादा नफ़ा वाला मामला है और आप (ﷺ) ने यह आयत पढ़ी "तुम्हें जो भी मुसीबत पहुंचती है वह तुम्हारे हाथों की कमाई की वजह से है और अल्लाह बहुत ज़्यादा गुनाहों को माफ़ कर देता है।" (आयत: 30)

ज़ईफ़ुल इस्नाद: अब्द बिन हुमैद:7/355. हिदायतुर्रूवात:1503.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है हम इसे सिर्फ़ इसी सनद से जानते हैं।

44 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الزُّخْرُفِ

44 - तफ़्सीर सूरह ज़ुख़ुफ़।

3253 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ، وَيَعْلَى بْنُ عُبَيْدٍ، عَنْ حَجَّاجِ بْنِ دِينَارٍ، عَنْ أَبِي غَالِبٍ، عَنْ أَبِي أُمَامَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ

3253 - सय्यदना अबू उमामा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "कोई कौम हिदायत पाने के बाद गुमराह नहीं हुई मगर उन्हें झगड़ा दिया गया, फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इस आयत की तिलावत

وَسَلَّمَ: مَا ضَلَّ قَوْمٌ بَعْدَ هُدًى كَانُوا عَلَيْهِ إِلاَّ أُوتُوا الجَدَلَ، ثُمَّ تَلاَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَذِهِ الآيَةَ: {مَا ضَرَبُوهُ لَكَ إِلاَّ جَدَلاً بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُونَ}.

की **"उन्होंने आप के लिए यह मिसाल सिर्फ़ झगड़ने के लिए ही बयान की है बल्कि यह झगड़ालू लोग हैं।" (आयत: 58)**

हसन: इब्ने माजह:48. अहमद:5/252. हाकिम:2/448.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है हम इसे हज्जाज बिन दीनार के तरीक़ से ही जानते हैं और हज्जाज सिक़ह व मुकारिबुल हदीस रावी है नीज़ अबू ग़ालिब का नाम हज़व्वर है।

45 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الدُّخَانِ

45 - तफ़सीर सूरह दुखान।

3254 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الجُدِّيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الأَعْمَشِ، وَمَنْصُورٍ، سَمِعَا أَبَا الضُّحَى، يُحَدِّثُ عَنْ مَسْرُوقٍ، قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى عَبْدِ اللهِ، فَقَالَ: إِنَّ قَاصًّا يَقُصُّ يَقُولُ: إِنَّهُ يَخْرُجُ مِنَ الأَرْضِ الدُّخَانُ فَيَأْخُذُ بِمَسَامِعِ الكُفَّارِ وَيَأْخُذُ الْمُؤْمِنَ كَهَيْئَةِ الزُّكَامِ، قَالَ: فَغَضِبَ وَكَانَ مُتَّكِئًا فَجَلَسَ ثُمَّ قَالَ: إِذَا سُئِلَ أَحَدُكُمْ عَمَّا يَعْلَمُ فَلْيَقُلْ بِهِ، قَالَ مَنْصُورٌ: فَلْيُخْبِرْ بِهِ، وَإِذَا سُئِلَ عَمَّا لاَ يَعْلَمُ فَلْيَقُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ، فَإِنَّ مِنْ عِلْمِ الرَّجُلِ إِذَا سُئِلَ عَمَّا لاَ يَعْلَمُ أَنْ يَقُولَ: اللَّهُ أَعْلَمُ، فَإِنَّ اللَّهَ تَعَالَى قَالَ لِنَبِيِّهِ {قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ

3254 - मसरूक बयान करते हैं कि एक आदमी अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) के पास आकर कहने लगा: यक़ीनन एक बयान करने वाला बयान कर रहा था कि ज़मीन से एक धुवां निकलेगा फिर वह कुफ़्फ़ार की समाअतों (सुनने की ताकत) को पकड़ लेगा जब कि मोमिन को ज़ुकाम की कैफ़ियत महसूस होगी, रावी कहते हैं: उन्हें गुस्सा आया वह टेक लगाए हुए थे, फिर बैठ गए। फिर फ़रमाया, जब तुममें से किसी शख़्स को इस बात के बारे में पूछा जाए जिसका उसे इल्म हो तो वह बात करे। मंसूर ने कहा है कि उसे बताना चाहिए, और जब उस चीज़ के बारे में पूछा जाए जिसे वह नहीं जानता तो उसे यह कहना चाहिए कि अल्लाह ही बेहतर जानता है। आदमी के इल्म की एक अलामत यह भी है कि जब उस से नामालूम चीज़ के बारे में सवाल हो तो वह कह दे। अल्लाह ही बेहतर जानता है बेशक अल्लाह ने अपने नबी से भी कहा है

الْمُتَكَلِّفِينَ} إِنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا رَأَى قُرَيْشًا اسْتَعْصَوْا عَلَيْهِ قَالَ: اللَّهُمَّ أَعِنِّي عَلَيْهِمْ بِسَبْعٍ كَسَبْعِ يُوسُفَ، فَأَخَذَتْهُمْ سَنَةٌ فَأَحْصَتْ كُلَّ شَيْءٍ حَتَّى أَكَلُوا الْجُلُودَ وَالْمَيْتَةَ، وَقَالَ أَحَدُهُمَا: الْعِظَامَ، قَالَ: وَجَعَلَ يَخْرُجُ مِنَ الأَرْضِ كَهَيْئَةِ الدُّخَانِ، فَأَتَاهُ أَبُو سُفْيَانَ فَقَالَ: إِنَّ قَوْمَكَ قَدْ هَلَكُوا فَادْعُ اللَّهَ لَهُمْ قَالَ: فَهَذَا لِقَوْلِهِ {يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُبِينٍ يَغْشَى النَّاسَ هَذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ} قَالَ مَنْصُورٌ: هَذَا لِقَوْلِهِ: {رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُونَ} فَهَلْ يُكْشَفُ عَذَابُ الآخِرَةِ؟ قَالَ: مَضَى الْبَطْشَةُ، وَاللِّزَامُ، وَالدُّخَانُ وَقَالَ أَحَدُهُمَا: الْقَمَرُ، وَقَالَ الآخَرُ: الرُّومُ.

"कह दीजिए मैं इस पर तुम से किसी उज्रत का सवाल नहीं करता और न ही मैं तकल्लुफ उठाने वालों में से हूँ।" (आयत:86) रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जब देखा कि कुरैश ने आप की नाफ़रमानी की है तो आप(ﷺ) ने कहा: "ऐ अल्लाह इनके ख़िलाफ़ मेरी मदद यूसुफ़ (عليه السلام) के दौर की क़हतसाली जैसे क़हतसाली के साथ फ़रमा।" तो उन्हें क़हतसाली ने आ लिया जिसने हर चीज़ को ख़त्म कर दिया यहाँ तक कि उन्होंने चमड़े और मुर्दार खाए, एक रावी ने हड्डियां कहा है। कहते हैं और ज़मीन से धुंए की मानिंद कोई चीज़ निकलने लगी, चुनाँचे अबू सुफ़ियान आप(ﷺ) के पास आकर कहने लगा: आप की कौम हलाक हो चुकी है आप (ﷺ) अल्लाह से उनके लिए दुआ कीजिए। यही अल्लाह का फ़रमान है "जिस दिन आसमान वाज़ेह धुंए के साथ आएगा जो लोगों को ढाँप लेगा यह दर्दनाक अज़ाब है। (आयत: 10-11)

मंसूर कहते हैं: इस आयत से यही मुराद है। "ऐ हमारे रब हम से अज़ाब को हटा ले हम ईमान लाते हैं।" (12) तो क्या आख़िरत का अज़ाब भी हटा लिया जाएगा? यक़ीनन, बत्शा, लिज़ाम, और दुख़ान (अज़ाब) गुज़र चुका है। एक रावी ने चान्द और दुसरे ने रूम (की आयत का मिस्दाक़) भी ज़िक्र किया है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: लिज़ाम से मुराद बद्र का दिन है और यह हदीस हसन सहीह है।

3255 - حَدَّثَنَا الْحُسَيْنُ بْنُ حُرَيْثٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ مُوسَى بْنِ عُبَيْدَةَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبَانَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ

3255 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "हर मोमिन के लिए दो दरवाज़े हैं, एक दरवाज़े से आमाल ऊपर चढ़ते हैं और एक

رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا مِنْ مُؤْمِنٍ إِلاَّ وَلَهُ بَابَانِ، بَابٌ يَصْعَدُ مِنْهُ عَمَلُهُ، وَبَابٌ يَنْزِلُ مِنْهُ رِزْقُهُ، فَإِذَا مَاتَ بَكَيَا عَلَيْهِ، فَذَلِكَ قَوْلُهُ عَزَّ وَجَلَّ {فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَالأَرْضُ وَمَا كَانُوا مُنْظَرِينَ}.

दरवाज़े से रिज्क नीचे उतरता है, फिर जब वह मर जाता है तो वह दोनों उस पर रोते हैं। यही अल्लाह अज्ज़ व जल्ल का फ़रमान है ''फिर न उन पर आसमान व ज़मीन रोये और न ही उन्हें मोहलत मिली।''

ज़ईफ़: अबू याला:4133. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:4491.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है हम इसे सिर्फ़ इसी सनद से ही मर्फू जानते हैं। नीज़ मूसा बिन उबैदा और यज़ीद बिन अबान रकाशी दोनों को हदीस में ज़ईफ़ कहा गया है।

46 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الأَحْقَافِ

46 - तफ़सीर सूरह अह्काफ़।

3256 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ سَعِيدٍ الكِنْدِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُحَيَّاةَ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنِ ابْنِ أَخِي عَبْدِ اللهِ بْنِ سَلاَمٍ، قَالَ: لَمَّا أُرِيدَ عُثْمَانُ جَاءَ عَبْدُ اللهِ بْنُ سَلاَمٍ، فَقَالَ لَهُ عُثْمَانُ: مَا جَاءَ بِكَ؟ قَالَ: جِئْتُ فِي نُصْرَتِكَ، قَالَ: اخْرُجْ إِلَى النَّاسِ فَاطْرُدْهُمْ عَنِّي فَإِنَّكَ خَارِجٌ خَيْرٌ لِي مِنْكَ دَاخِلٌ، فَخَرَجَ عَبْدُ اللهِ، إِلَى النَّاسِ فَقَالَ: أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّهُ كَانَ اسْمِي فِي الجَاهِلِيَّةِ فُلاَنٌ فَسَمَّانِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَبْدَ اللهِ وَنَزَلَتْ فِيَّ: {وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَى مِثْلِهِ فَآمَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ إِنَّ اللَّهَ لاَ يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ}

3256 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन सलाम (رضي الله عنه) के भतीजे से रिवायत है कि जब लोगों ने सय्यदना उस्मान (رضي الله عنه) को शहीद करने का इरादा किया तो अब्दुल्लाह बिन सलाम आए उस्मान (رضي الله عنه) ने उन से कहा: आप कैसे आए हैं? उन्होंने कहा: मैं आप की मदद के लिए आया हूँ, फ़र्माया: तुम लोगों की तरफ़ जाओ उन्हें मुझ से हटाओ, इसलिए कि आप का बाहर होना मेरे लिये आप के अन्दर दाख़िल होने से बेहतर है। रावी कहते हैं: अब्दुल्लाह बिन सलाम लोगों की तरफ़ निकले फ़रमाया, "ऐ लोगो! जाहिलियत में मेरा फुलां नाम था फिर अल्लाह के रसूल ने मेरा नाम अब्दुल्लाह रखा और मेरे बारे में किताबुल्लाह की कई आयात नाज़िल हुई, मेरे बारे में यह आयत नाज़िल हुई "और बनी इस्राईल में से एक शहादत देने वाले ने इस जैसे कुरआन की शहादत दी फिर वह ईमान ले आया और तुमने

وَنَزَلَتْ فِيَّ {قُلْ كَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَمَنْ عِنْدَهُ عِلْمُ الكِتَابِ} إِنَّ لِلَّهِ سَيْفًا مَغْمُودًا عَنْكُمْ وَإِنَّ الْمَلَائِكَةَ قَدْ جَاوَرَتْكُمْ فِي بَلَدِكُمْ هَذَا الَّذِي نَزَلَ فِيهِ نَبِيُّكُمْ، فَاللَّهَ اللَّهَ فِي هَذَا الرَّجُلِ أَنْ تَقْتُلُوهُ، فَوَاللَّهِ إِنْ قَتَلْتُمُوهُ لَتَطْرُدُنَّ جِيرَانَكُمُ الْمَلَائِكَةَ، وَلَتَسُلُّنَّ سَيْفَ اللهِ الْمَغْمُودَ عَنْكُمْ فَلاَ يُغْمَدُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ، قَالَ: فَقَالُوا: اقْتُلُوا الْيَهُودِيَّ وَاقْتُلُوا عُثْمَانَ.

तकब्बुर किया बेशक अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता।" (10) और मेरे बारे में यह आयत भी नाज़िल हुई "कह दीजिए मेरे और तुम्हारे दर्मियान अल्लाह ही गवाह काफी है और वह शख़्स जिसके पास किताबें (तौरात) का इल्म है।" (राद:43) यक़ीनन अल्लाह तआला की एक तलवार तुम से छिपी हुई है और फ़रिश्ते तुम्हारे साथ रहे हैं तुम्हारे इस शहर में जिस में तुम्हारे नबी (ﷺ) आए थे, चुनांचे उस आदमी को क़त्ल करने से अल्लाह से डरो, अल्लाह से डरो, अल्लाह की क़सम! अगर तुमने उसे क़त्ल कर दिया तो तुम अपने साथ रहने वाले फरिश्तों को भगा दोगे और अल्लाह की बंद तलवार को खींचोगे तो वह क़यामत तक बंद नहीं होगी। रावी कहते हैं: उन लोगों ने कहा: इस यहूदी को क़त्ल करो और उस्मान को भी क़त्ल कर दो।

ज़ईफुल इस्नाद: इब्ने माजह:3734.अहमद:5/451. अब्द बिन हुमैद:498.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है, इसे शोऐब बिन सफ़वान ने भी अब्दुल मलिक बिन उमैर से मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन सलाम के बेटे के ज़रिए उनके दादा अब्दुल्लाह बिन सलाम से रिवायत किया है।

3257 - حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الأَسْوَدِ أَبُو عَمْرٍو الْبَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَبِيعَةَ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا رَأَى مَخِيلَةً أَقْبَلَ وَأَدْبَرَ، فَإِذَا

3257 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि नबी (ﷺ) जब कोई बादल देखते तो कभी घर में आते और कभी बाहर जाते, फिर जब बारिश हो जाती तो आप की यह कैफ़ियत ख़त्म हो जाती। कहती हैं: मैंने आप(ﷺ) से दर्याफ़्त किया तो आप ने फ़रमाया, "मैं नहीं जानता कि हो सकता है यह ऐसे हो जैसे

مطَرَتْ سُرِّيَ عَنْهُ قَالَتْ: فَقُلْتُ لَهُ، فَقَالَ: وَمَا أَدْرِي لَعَلَّهُ كَمَا قَالَ اللَّهُ تَعَالَى {فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُسْتَقْبِلَ أَوْدِيَتِهِمْ قَالُوا هَذَا عَارِضٌ مُمْطِرُنَا}.

अल्लाह तआला ने फ़रमाया है "जब उन्होंने अपनी वादियों की तरफ़ आता हुआ बादल देखा तो कहने लगे यह बादल हमें बारिश देगा।" (आयत: 24)

बुख़ारी:4829. मुस्लिम:899. अबू दाऊद:5098. इब्ने माजह:3891.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।

3258 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ دَاوُدَ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ عَلْقَمَةَ، قَالَ: قُلْتُ لِابْنِ مَسْعُودٍ: هَلْ صَحِبَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيْلَةَ الجِنِّ مِنْكُمْ أَحَدٌ؟ قَالَ: مَا صَحِبَهُ مِنَّا أَحَدٌ وَلَكِنْ قَدْ افْتَقَدْنَاهُ ذَاتَ لَيْلَةٍ وَهُوَ بِمَكَّةَ، فَقُلْنَا اغْتِيلَ أَوْ اسْتُطِيرَ مَا فُعِلَ بِهِ؟ فَبِتْنَا بِشَرِّ لَيْلَةٍ بَاتَ بِهَا قَوْمٌ، حَتَّى إِذَا أَصْبَحْنَا أَوْ كَانَ فِي وَجْهِ الصُّبْحِ، إِذَا نَحْنُ بِهِ يَجِيءُ مِنْ قِبَلِ حِرَاءَ، قَالَ: فَذَكَرُوا لَهُ الَّذِي كَانُوا فِيهِ، فَقَالَ: أَتَانِي دَاعِي الجِنِّ، فَأَتَيْتُهُمْ فَقَرَأْتُ عَلَيْهِمْ قَالَ: فَانْطَلَقَ فَأَرَانَا آثَارَهُمْ وَآثَارَ نِيرَانِهِمْ، قَالَ الشَّعْبِيُّ، وَسَأَلُوهُ الزَّادَ وَكَانُوا مِنْ جِنِّ الجَزِيرَةِ، فَقَالَ: كُلُّ عَظْمٍ يُذْكَرُ اسْمُ اللهِ عَلَيْهِ يَقَعُ فِي أَيْدِيكُمْ

3258 – अल्क़मा (رحمه الله) बयान करते हैं कि मैंने अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) से पूछा कि जिन्नों वाली रात तुममें से कोई शख़्स नबी(ﷺ) के साथ था? उन्होंने फ़रमाया, "हम में से कोई भी आप(ﷺ) के साथ नहीं था, लेकिन हम ने एक रात आप को गुम पाया और आप मक्का में थे, हम ने आपस में कहा आप(ﷺ) को पकड़ लिया गया है या उड़ा लिया गया है आप(ﷺ) के साथ क्या हुआ? हम लोगों ने बहुत ही परेशानी में रात बसर की, यहाँ तक कि जब सुबह हुई या सुबह के क़रीब, अचानक हम ने आप(ﷺ) को देखा आप हिरा की तरफ़ से आ रहे हैं, कहते हैं लोगों ने आप से अपनी हालत बयान की तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "मेरे पास जिन्नात का दाई आया था फिर मैं उनके पास गया उन्हें कुरआन सुनाया।" रावी कहते हैं: फिर आप(ﷺ) चले आपने हमें उनके क़दमों और उनकी आग के निशान दिखाए। शाबी कहते हैं: उन जिन्नात ने आप(ﷺ) से राशन का सवाल किया, वह जज़ीरा के जिन्नात में से थे। तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "हर हड्डी जिस पर

أَوْفَرَ مَا كَانَ لَحْمًا، وَكُلُّ بَعْرَةٍ أَوْ رَوْثَةٍ عَلَفٌ لِدَوَابِّكُمْ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: فَلَا تَسْتَنْجُوا بِهِمَا فَإِنَّهُمَا زَادُ إِخْوَانِكُمْ مِنَ الْجِنِّ.

अल्लाह का नाम न लिया गया हो वह तुम्हारे हाथों में आकर पहले से ज़्यादा गोश्त वाली हो जाएगी, और हर मेंगनी या लीद तुम्हारे जानवरों का चारा है।" फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम इन दोनों चीजों के साथ इस्तिंजा न किया करो यह तुम्हारे जिन्न भाईयों का राशन है।"

मुस्लिम:450.अबू दाऊद:85. अहमद:6/ 167.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

47 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ مُحَمَّدٍ ﷺ

47 - तफ़सीर सूरह मुहम्मद।

3259 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، {وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ} فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنِّي لَأَسْتَغْفِرُ اللَّهَ فِي الْيَوْمِ سَبْعِينَ مَرَّةً.

3259 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि आयत: "और अपनी गलती की माफ़ी मांग और मोमिन मर्दों और औरतों के लिए भी।" (आयत:19) के बारे में नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैं एक दिन में अल्लाह से सत्तर मर्तबा बख्शिश तलब करता हूँ।"

बुख़ारी:6307. इब्ने माजह:3815. अहमद:2/ 282.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। नीज़ अबू हुरैरा से यह भी मर्वी है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैं एक दिन में सौ मर्तबा अल्लाह से बख्शिश माँगता हूँ।" इसे मुहम्मद बिन अम्र ने बवास्ता अबू सलमा, सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत किया है।

3260 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا شَيْخٌ، مِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ عَنِ الْعَلَاءِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: تَلَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمًا هَذِهِ الْآيَةَ {وَإِنْ

3260 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक दिन यह आयत पढ़ी "और अगर तुम फिर जाओगे तो वह तुम्हारी जगह तुम्हारे सिवा और लोगों को ले आयेगा फिर वह तुम्हारी तरह नहीं होंगे।" (आयत:38) सहाबा ने अर्ज़ किया हमारी जगह कौन लोग आएंगे? रावी कहते हैं:

تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ثُمَّ لاَ يَكُونُوا أَمْثَالَكُمْ} قَالُوا: وَمَنْ يُسْتَبْدَلُ بِنَا؟ قَالَ: فَضَرَبَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى مَنْكِبِ سَلْمَانَ ثُمَّ قَالَ: هَذَا وَقَوْمُهُ هَذَا وَقَوْمُهُ.

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सलमान फारसी के कंधे पर हाथ मार कर फ़रमाया, "यह और इसकी कौम।"

सहीह: इब्ने हिब्बान:7123. बैहक़ी:6/334. अस-सिलसिला अस-सहीहा:1017.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है इसकी सनद में क़लाम है। इस हदीस को अब्दुल्लाह बिन जाफ़र ने भी अला बिन अब्दुर्रहमान से रिवायत किया है।

3261 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ جَعْفَرِ بْنِ نَجِيحٍ، عَنِ الْعَلاَءِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّهُ قَالَ: قَالَ نَاسٌ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ ﷺ: يَا رَسُولَ اللهِ، مَنْ هَؤُلاَءِ الَّذِينَ ذَكَرَ اللَّهُ إِنْ تَوَلَّيْنَا اسْتُبْدِلُوا بِنَا ثُمَّ لاَ يَكُونُوا أَمْثَالَنَا؟ قَالَ: وَكَانَ سَلْمَانُ بِجَنْبِ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ: فَضَرَبَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَخِذَ سَلْمَانَ قَالَ: هَذَا وَأَصْحَابُهُ، وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوْ كَانَ الإِيمَانُ مَنُوطًا بِالثُّرَيَّا لَتَنَاوَلَهُ رِجَالٌ مِنْ فَارِسَ.

3261 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के सहाबा में से कुछ लोगों ने दर्याफ़्त किया: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! यह कौन लोग हैं जिनका ज़िक्र अल्लाह ने किया है कि अगर हम फिर गए तो हमारी जगह उन्हें लाया जाएगा फिर वह हमारे जैसे नहीं होंगे? रावी कहते हैं: सलमान फ़ारसी रसूलुल्लाह (ﷺ) के पहलू में बैठे थे, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सलमान की रान पर हाथ मार कर फ़रमाया, "यह और इसके साथी, उस ज़ात की क़सम जिस के हाथ में मेरी जान है! अगर ईमान सुरय्या के साथ भी बंधा होता तो फ़ारस के कुछ लोग इसे हासिल कर लेते।"

सहीह: तख़रीज के लिए पिछली हदीस देखें।

तौज़ीह: ثريا : सौर (बैल) की शक्ल में सितारों का झुरमुट। (अल-मोजमुल वसीत:प।113)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: अब्दुल्लाह बिन जाफ़र बिन नजीह, अली बिन मदीनी के वालिद हैं, अली बिन हुज्र ने अब्दुल्लाह बिन जाफ़र से बहुत कुछ रिवायत किया है और हमें अली ने यह हदीस इस्माईल बिन जाफ़र के ज़रिए, अब्दुल्लाह बिन जाफ़र बिन नजीह से रिवायत की है।

नीज़ हमें बिश्र बिन मुआज़ ने बवास्ता अब्दुल्लाह बिन जाफ़र, अला से इस तरह हदीस बयान की है। लेकिन इसमें है कि معلق بالثريا सुरय्या के साथ लटका होता।

48 - तफ़सीर सूरह फ़तह।

48 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الفَتْحِ

3262 - सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि हम नबी (ﷺ) के साथ आप के किसी सफ़र में थे कि मैंने नबी (ﷺ) से कोई बात की, आप ख़ामोश रहे, मैंने फिर आप से बात की लेकिन आप खामोश रहे, फिर अपनी सवारी को हरकत देकर दूर हो गया, तो मैंने कहा: इब्ने ख़त्ताब तुम पर तुम्हारी मां रोए तुमने तीन बार सवाल करके रसूलुल्लाह (ﷺ) को तंग किया, हर मर्तबा वह तुझ से बात नहीं करते रहे तू इस लायक़ है कि तेरे बारे में क़ुरआन उतरे, कहते हैं: थोड़ी ही देर गुजरी थी कि मैंने एक आवाज़ देने वाले को सुना वह मुझे बुला रहा था, चुनांचे मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास गया तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ इब्ने ख़त्ताब! इस रात मेरे ऊपर एक ऐसी सूरत नाज़िल हुई है मैं नहीं चाहता कि इस के बदले मुझे हर वह चीज़ मिले जिस पर सूरज तुलू होता है। (वह है) " बेशक हम ने आप को बहुत वाज़ेह फ़तह अता फ़रमाई है।" (आयत: 1)

3262 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ ابْنُ عَثْمَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: سَمِعْتُ عُمَرَ بْنَ الخَطَّابِ يَقُولُ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي بَعْضِ أَسْفَارِهِ، فَكَلَّمْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَكَتَ، ثُمَّ كَلَّمْتُهُ فَسَكَتَ، فَحَرَّكْتُ رَاحِلَتِي فَتَنَحَّيْتُ وَقُلْتُ: ثَكِلَتْكَ أُمُّكَ يَا ابْنَ الخَطَّابِ، نَزَرْتَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ كُلُّ ذَلِكَ لَا يُكَلِّمُكَ، مَا أَخْلَقَكَ بِأَنْ يَنْزِلَ فِيكَ قُرْآنٌ قَالَ: فَمَا نَشِبْتُ أَنْ سَمِعْتُ صَارِخًا يَصْرُخُ بِي، قَالَ: فَجِئْتُ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا ابْنَ الخَطَّابِ لَقَدْ أُنْزِلَ عَلَيَّ هَذِهِ اللَّيْلَةَ سُورَةٌ مَا أُحِبُّ أَنَّ لِي بِهَا مَا طَلَعَتْ عَلَيْهِ الشَّمْسُ {إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا}.

बुखारी:4177. मालिक:272. अहमद:1/31.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है और बअ़ज़ ने इसे इमाम मालिक से मुर्सल रिवायत किया है।

3263 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं कि नबी (ﷺ) पर यह आयत "ताकि अल्लाह आप के अगले पिछले गुनाह माफ़ फ़रमा दे।" (आयत:2) हुदैबिया में

3263 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ قَالَ: أُنْزِلَتْ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ {لِيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ} مَرْجِعَهُ مِنَ الحُدَيْبِيَةِ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَقَدْ نَزَلَتْ عَلَيَّ آيَةٌ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا عَلَى الأَرْضِ، ثُمَّ قَرَأَهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَيْهِمْ، فَقَالُوا: هَنِيئًا مَرِيئًا يَا نَبِيَّ اللهِ، لَقَدْ بَيَّنَ اللَّهُ لَكَ مَاذَا يُفْعَلُ بِكَ، فَمَاذَا يُفْعَلُ بِنَا، فَنَزَلَتْ عَلَيْهِ {لِيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الأَنْهَارُ}، حَتَّى بَلَغَ، {فَوْزًا عَظِيمًا}.

वापस आते हुए उतरी थी, नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "मुझ पर एक आयत उतरी है जो मुझे ज़मीन के ऊपर मौजूद हर चीज़ से महबूब है।" चुनांचे नबी (ﷺ) ने वह लोगों को पढ़ कर सुनाई तो वह कहने लगे: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मुबारक हो अल्लाह ने वाज़ेह कर दिया है कि आप के साथ क्या होगा, फिर हमारे साथ क्या किया जाएगा? तो यह आयत नाज़िल हुई "ताकि वह मोमिन मर्दों और मोमिना औरतों को ऐसे बागात में दाख़िल करे जिन के नीचे नहरें चलती हैं" यहाँ तक कि "यह बहुत बड़ी कामयाबी है।" तक पहुंचे। (आयत: 5)

बुख़ारी:4172. मुस्लिम:1786. अहमद:3/ 122.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और इस बारे में मुजम्मा बिन हारिसा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

3264 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ: أَنَّ ثَمَانِينَ هَبَطُوا عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَصْحَابِهِ مِنْ جَبَلِ التَّنْعِيمِ عِنْدَ صَلاَةِ الصُّبْحِ، وَهُمْ يُرِيدُونَ أَنْ يَقْتُلُوهُ، فَأُخِذُوا أَخْذًا، فَأَعْتَقَهُمْ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ: {وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ} الآيَةَ.

3264 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि सुबह की नमाज़ के वक़्त जबले तनईम से अस्सी आदमी रसूलुल्लाह (ﷺ) और आप के सहाबा पर उतरे और आप को क़त्ल करना चाहते थे। चुनांचे उन्हें पकड़ लिया गया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें आज़ाद कर दिया, फिर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई "वही है जिस ने उनके हाथों को तुम से और तुम्हारे हाथों को उन से रोक दिया।" (आयत: 24)

मुस्लिम: 1808. अबू दाऊद:2688. अहमद:3/ 122. इब्ने अबी शैबा: 14/ 492.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3265 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ قَزَعَةَ البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ حَبِيبٍ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ ثُوَيْرٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ الطُّفَيْلِ بْنِ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: {وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَى} قَالَ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ.

3265 - सय्यदना उबय बिन काब (رضي الله عنه) नबी करीम (ﷺ) से "और उन्हें तक़्वा की बात पर कायम रखा।" (आयत:26) के बारे में रिवायत करते हैं कि आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "यह لا إله إلا الله है।"

सहीह: अब्दुल्लाह बिन अहमद:5/ 138.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है हम इसे सिर्फ़ हसन बिन क़ज़आ के तरीक़ से ही मर्फ़ू जानते हैं और मैंने अबू ज़ुर्आ से इस हदीस के बारे में पूछा तो वह भी इस तरीक़ से मर्फ़ू जानते थे।

49 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الحُجُرَاتِ

49 - तफ़सीर सूरह हुजुरात।

3266 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ: حَدَّثَنَا مُؤَمَّلُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا نَافِعُ بْنُ عُمَرَ بْنِ جَمِيلٍ الجُمَحِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ، قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ الزُّبَيْرِ: أَنَّ الأَقْرَعَ بْنَ حَابِسٍ، قَدِمَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: يَا رَسُولَ اللهِ اسْتَعْمِلْهُ عَلَى قَوْمِهِ، فَقَالَ عُمَرُ: لاَ تَسْتَعْمِلْهُ يَا رَسُولَ اللهِ، فَتَكَلَّمَا عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى ارْتَفَعَتْ أَصْوَاتُهُمَا، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ لِعُمَرَ: مَا أَرَدْتَ إِلاَّ خِلاَفِي، فَقَالَ عُمَرُ: مَا أَرَدْتُ خِلاَفَكَ قَالَ: فَنَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةَ: {يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تَرْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ} قَالَ: فَكَانَ عُمَرُ بْنُ الخَطَّابِ، بَعْدَ

3266 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि अक़्रा बिन हाबिस नबी (ﷺ) के पास आए तो अबू बक्र (رضي الله عنه) ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! उन्हें उनकी कौम पर आमिल बना दें। उमर कहने लगे: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! उन्हें आमिल न बनाएं। चुनांचे वह दोनों नबी (ﷺ) के पास बातें करने लगे यहाँ तक कि उनकी आवाज़ें बलंद हो गई, अबू बक्र (رضي الله عنه) ने उमर (رضي الله عنه) से कहा: आप तो मेरी मुख़ालिफ़त ही चाहते हैं, उमर कहने लगे: मैंने आप की मुख़ालिफ़त का इरादा नहीं किया। रावी कहते हैं: फिर यह आयत नाज़िल हुई "ऐ ईमान वालो! अपनी आवाजों को नबी की आवाज़ पर बलंद न करो।" (आयत:2) रावी कहते हैं कि इसके बाद उमर (رضي الله عنه) जब नबी (ﷺ) के पास बात करते तो उनकी बात सुनाई नहीं देती थी यहाँ

ذَلِكَ إِذَا تَكَلَّمَ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمْ يُسْمِعْ كَلَامَهُ حَتَّى يَسْتَفْهِمَهُ. قَالَ: وَمَا ذَكَرَ ابْنُ الزُّبَيْرِ جَدَّهُ، يَعْنِي أَبَا بَكْرٍ.

तक कि उसे उन से समझना पड़ता (इब्ने अबी मुलैका) कहते हैं इब्ने जुबैर ने अपने नाना अबू बक्र (ﷺ) का ज़िक्र नहीं किया।

बुख़ारी:4367. अहमद:4/4. अबू याला:6816.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब हसन है और बअज़ ने इसे इब्ने अबी मुलैका से मुर्सल रिवायत किया है इसमें अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर का ज़िक्र नहीं किया।

3267 - حَدَّثَنَا أَبُو عَمَّارٍ الحُسَيْنُ بْنُ حُرَيْثٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الفَضْلُ بْنُ مُوسَى، عَنِ الحُسَيْنِ بْنِ وَاقِدٍ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ البَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ، فِي قَوْلِهِ تَعَالَى: {إِنَّ الَّذِينَ يُنَادُونَكَ مِنْ وَرَاءِ الحُجُرَاتِ أَكْثَرُهُمْ لاَ يَعْقِلُونَ} قَالَ: قَامَ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ حَمْدِي زَيْنٌ وَإِنَّ ذَمِّي شَيْنٌ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ذَاكَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ.

3267 - सय्यदना बराअ बिन आज़िब (ﷺ) अल्लाह तआला के फ़रमान "वह लोग जो हुज्रों के पीछे से आपको आवाज़ देते हैं उन में अक्सर अक्ल वाले नहीं हैं।" (आयत:4) की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि एक आदमी खड़ा हो कर कहने लगा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मेरी तारीफ़ करना बाइसे इज़्ज़त और मेरा मज़म्मत करना बाइसे ज़िल्लत है। तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "यह शान तो अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की ही है।"

सहीह: निसाई:5/115. तबरी:26/121.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

3268 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ إِسْحَاقَ الجَوْهَرِيُّ البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو زَيْدٍ، صَاحِبُ الهَرَوِيِّ عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ دَاوُدَ بْنِ أَبِي هِنْدٍ، قَالَ: سَمِعْتُ الشَّعْبِيَّ، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي جَبِيرَةَ بْنِ الضَّحَّاكِ، قَالَ: كَانَ الرَّجُلُ مِنَّا يَكُونُ لَهُ الاِسْمَانِ وَالثَّلَاثَةُ، فَيُدْعَى بِبَعْضِهَا فَعَسَى أَنْ يَكْرَهَ، قَالَ: فَنَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةَ: {وَلاَ تَنَابَزُوا بِالأَلْقَابِ}.

3268 - सय्यदना अबू जबीरा बिन ज़ह्हाक (ﷺ) रिवायत करते हैं कि हम में से एक आदमी के दो-दो या तीन-तीन नाम होते थे फिर उसे किसी एक के साथ बुलाया जाता तो उसे बुरा लगता। कहते हैं: फिर यह आयत नाज़िल हुई "एक दुसरे को बुरे नामों के साथ मत पुकारो।" (आयत: 11)

सहीह:अबू दाऊद:4962. इब्ने माजह:3741. अहमद:4/260.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और अबू ज़ैद सईद बिन रूबैअ, हार्वी के साथी और बस्रा के रहने वाले सिक़ह् रावी हैं (अबू ईसा कहते हैं) हमें अबू सलमा यह्या बिन ख़लफ़ ने उन्हें बिश्र बिन मुफ़ज़्ज़ल ने दाऊद बिन अबी हिन्द से बवास्ता शाबी, अबू जबीरा बिन ज़ह्हाक से ऐसी ही हदीस बयान की है और अबू जुबीरा बिन ज़ह्हाक, साबित बिन ज़ह्हाक बिन ख़लीफ़ा अंसारी के भाई हैं।

3269 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ، عَنِ الْمُسْتَمِرِّ بْنِ الرَّيَّانِ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، قَالَ: قَرَأَ أَبُو سَعِيدٍ الْخُدْرِيُّ: {وَاعْلَمُوا أَنَّ فِيكُمْ رَسُولَ اللهِ لَوْ يُطِيعُكُمْ فِي كَثِيرٍ مِنَ الأَمْرِ لَعَنِتُّمْ} قَالَ: هَذَا نَبِيُّكُمْ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُوحَى إِلَيْهِ، وَخِيَارُ أَئِمَّتِكُمْ لَوْ أَطَاعَهُمْ فِي كَثِيرٍ مِنَ الأَمْرِ لَعَنِتُوا، فَكَيْفَ بِكُمُ الْيَوْمَ؟

3269 - अबू नज़रा (رحمه الله) से रिवायत है कि सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी ने आयत "और जान लो कि तुम्हारे दर्मियान अल्लाह के रसूल मौजूद हैं अगर वह बहुत कामों में तुम्हारी बात मानें तो तुम मुश्किल में पड़ जाओगे।" (आयत:7) पढ़ कर फ़रमाया, "यह तुम्हारे नबी (ﷺ) हैं जिनकी तरफ़ वहि की जाती थी और तुम्हारे बेहतरीन अइम्मा हैं। अगर आप (ﷺ) दीन में लोगों की बात मानते तो वह मशक्क़त में पड़ जाते तो आज तुम्हारे साथ मामला क्या है?

सहीहुल इस्नाद: अब्द बिन हुमैद:7/559.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब हसन सहीह है। अली बिन मदीनी फ़रमाते हैं मैंने यह्या बिन सईद क़त्तान से मुस्तमिर बिन रय्यान के बारे में पूछा तो उन्होंने फ़रमाया, ''सिक़ह् रावी है।''

3270 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَطَبَ النَّاسَ يَوْمَ فَتْحِ مَكَّةَ، فَقَالَ: يَا أَيُّهَا النَّاسُ، إِنَّ اللَّهَ قَدْ أَذْهَبَ عَنْكُمْ عُبِّيَّةَ

3270 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़तहे मक्का के दिन ख़ुत्बा देते हुए इरशाद फ़रमाया, "ऐ लोगो! अल्लाह तआला ने तुम से जाहिलियत का फ़ख्र और बाप दादा के साथ बड़ा बनना ख़त्म कर दिया है, चुनाँचे अब लोग दो तरह के हैं, एक अल्लाह के यहाँ नेक, परहेजगार और साहिबे इज़्ज़त आदमी और दूसरा अल्लाह के नजदीक फ़ाजिर,

الجَاهِلِيَّةِ وَتَعَاظُمَهَا بِآبَائِهَا، فَالنَّاسُ رَجُلَانِ: بَرٌّ تَقِيٌّ كَرِيمٌ عَلَى اللهِ، وَفَاجِرٌ شَقِيٌّ هَيِّنٌ عَلَى اللهِ، وَالنَّاسُ بَنُو آدَمَ، وَخَلَقَ اللَّهُ آدَمَ مِنْ تُرَابٍ، قَالَ اللَّهُ: {يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِنْ ذَكَرٍ وَأُنْثَى وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللهِ أَتْقَاكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ}.

बदबख़्त और ज़लील शख़्स, लोग आदम के बेटे हैं और अल्लाह ने आदम को मिट्टी से पैदा किया और हम ने तुम्हें कौमें और कबीले बना दिया ताकि तुम एक दुसरे को पहचानो, बेशक तुम में सब से इज़्ज़त वाला अल्लाह के नजदीक वह है जो तुम में सब से ज़्यादा तक़्वा वाला है, बेशक अल्लाह सब कुछ जानने वाला और पूरी ख़बर रखने वाला है।" (आयत: 13)

अब्द बिन हुमैद:795. इब्ने खुज़ैमा:2781. अस-सिलसिला अस-सहीहा:2700. सहीह: इब्ने माजह:4219 अल-इर्वा:1870. अहमद:5/10. हाकिम:2/163.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। हम इसे बवास्ता अब्दुल्लाह बिन दीनार, इब्ने उमर (رضي الله عنه) से सिर्फ़ इसी सनद से जानते हैं और अब्दुल्लाह बिन जाफ़र ज़ईफ़ है उसे यह्या बिन मईन वग़ैरह ने ज़ईफ़ कहा है और अब्दुल्लाह बिन जाफ़र अली बिन मदीनी के वालिद हैं।

नीज़ इस बारे में अबू हुरैरा और अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी हैं।

3271 - حَدَّثَنَا الفَضْلُ بْنُ سَهْلٍ الأَعْرَجُ البَغْدَادِيُّ وَغَيْرُ وَاحِدٍ، قَالُوا: حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ سَلَّامِ بْنِ أَبِي مُطِيعٍ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنِ الحَسَنِ، عَنْ سَمُرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: الحَسَبُ الْمَالُ، وَالكَرَمُ التَّقْوَى.

3271 - सय्यदना समुरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "हसब (से मुराद) माल और करम (से मुराद) तक़्वा है।"

इब्ने माजह:4219, अल इर्वा:1870, अहमद: 5/10, हाकिम 2/163

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस समुरा (رضي الله عنه) के तरीक़ से हसन ग़रीब सहीह है। हम इसे सलाम बिन अबू मुतीअ के तरीक़ से ही जानते हैं।

50 - तफ़सीर सूरह क़ाफ़।

50 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ ق

3272 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، عَنْ قَتَادَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، أَنَّ نَبِيَّ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: لاَ تَزَالُ جَهَنَّمُ تَقُولُ: هَلْ مِنْ مَزِيدٍ، حَتَّى يَضَعَ فِيهَا رَبُّ العِزَّةِ قَدَمَهُ فَتَقُولُ: قَطْ قَطْ وَعِزَّتِكَ، وَيُزْوَى بَعْضُهَا إِلَى بَعْضٍ.

3272 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि अल्लाह के नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जहन्नम هَلْ مِنْ مَزِيدٍ (क्या और भी हैं) कहती रहेगी यहाँ तक कि रब्बुल इज़्ज़त उस में अपना पाँव रखेंगे तो वह कहेगी: तेरी इज़्ज़त की क़सम! बस- बस और इसका एक हिस्सा दुसरे के साथ मिलकर बंद हो जाएगा।"

बुख़ारी:4848. मुस्लिम:2848.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है और इस बारे में अबू हुरैरा (رضي الله عنه) भी नबी (ﷺ) से रिवायत करते हैं।

51 - तफ़सीर सूरह ज़ारियात।

51 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الذَّارِيَاتِ

3273 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ سَلاَّمٍ، عَنْ عَاصِمِ بْنِ أَبِي النَّجُودِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ رَجُلٍ، مِنْ رَبِيعَةَ قَالَ: قَدِمْتُ الْمَدِينَةَ فَدَخَلْتُ عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرْتُ عِنْدَهُ وَافِدَ عَادٍ، فَقُلْتُ: أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِثْلَ وَافِدِ عَادٍ، قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: وَمَا وَافِدُ عَادٍ؟ قَالَ: فَقُلْتُ: عَلَى الْخَبِيرِ بِهَا سَقَطْتَ، إِنَّ عَادًا لَمَّا أُقْحِطَتْ بَعَثَتْ قَيْلاً فَنَزَلَ عَلَى بَكْرِ بْنِ

3273 – क़बील- ए- रबीया के एक आदमी से रिवायत है कि मैं मदीना आया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हो कर आप के पास कौमे आद के एलची का ज़िक्र किया, मैंने कहा: मैं पनाह माँगता हूँ कि कौमे आद के एलची जैसा बनूँ, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "कौमे आद के एलची से क्या मुराद है? मैंने कहा: आप ने एक जानने वाले से पूछा है। कौमे आद जब क़हत में घिरी तो उन्होंने कैल नामी एक आदमी को भेजा, वह बक्र बिन मुआविया के पास उतरा तो उस ने उसे शराब पिलाई और दो लौंडियाँ गाने के लिए उसके सामने पेश कीं फिर वह (कैल) मह्रा के पहाड़ों की तरफ़ निकला तो उस ने कहा: ऐ

مُعَاوِيَةَ فَسَقَاهُ الخَمْرَ وَغَنَّتْهُ الجَرَادَتَانِ، ثُمَّ خَرَجَ يُرِيدُ جِبَالَ مَهْرَةَ فَقَالَ: اللَّهُمَّ إِنِّي لَمْ آتِكَ لِمَرِيضٍ فَأُدَاوِيَهُ وَلاَ لأَسِيرٍ فَأُفَادِيَهُ، فَاسْقِ عَبْدَكَ مَا كُنْتَ مُسْقِيَهُ، وَاسْقِ مَعَهُ بَكْرَ بْنَ مُعَاوِيَةَ، يَشْكُرُ لَهُ الخَمْرَ الَّتِي سَقَاهُ، فَرُفِعَ لَهُ سَحَابَاتٌ، فَقِيلَ لَهُ: اخْتَرْ إِحْدَاهُنَّ، فَاخْتَارَ السَّوْدَاءَ مِنْهُنَّ، فَقِيلَ لَهُ: خُذْهَا رَمَادًا رِمْدِدًا، لاَ تَذَرُ مِنْ عَادٍ أَحَدًا، وَذُكِرَ أَنَّهُ لَمْ يُرْسَلْ عَلَيْهِمْ مِنَ الرِّيحِ إِلاَّ قَدْرُ هَذِهِ الحَلْقَةِ، يَعْنِي حَلْقَةَ الخَاتَمِ، ثُمَّ قَرَأَ: {إِذْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيحَ العَقِيمَ مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ أَتَتْ عَلَيْهِ إِلاَّ جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيمِ} الآيَةَ.

अल्लाह मैं तेरे पास किसी बीमार की दवा के लिए नहीं आया और न ही किसी क़ैदी की रिहाई के लिए आया हूँ, तू अपने बन्दे को वह पिला जो तू उसे पिलाने वाला है और उसके साथ बक्र बिन मुआविया को भी पिला यह उसकी पिलाई हुई शराब के शुक्रिए के तौर पर था। फिर उसके लिये बादल नुमूदार हुए तो उससे कहा गया: इनमें से एक को चुन लो तो उसने उनमें से स्याह रंग का (बादल) मुन्तख़ब किया, उससे कहा गया: जली हुई राख को पकड़, जो क़ौमे आद के किसी फ़र्द को नहीं छोड़ेगी और उसने बताया कि उन लोगों पर सिर्फ़ इस हल्के यानी अंगूठी के हल्के, जितनी हवा छोड़ी गई थी, फिर ये आयत पढ़ी "जब हमने उन पर बान्झ हवा छोड़ी, वो जिस पर से गुज़रती थी उसे रेज़ा-रेज़ा कर देती थी।" (आयत:41:41)

हसन: इस पर तख़रीज ज़िक्र नहीं की गई। अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा: तहते हदीस:1228.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: कई रावियों ने इस हदीस को सलाम अबू मुन्ज़िर से बवास्ता आसिम बिन अबू नजूद, अबू वाइल के ज़रिए हारिस बिन हस्सान से रिवायत किया है और उन्हें हारिस बिन यज़ीद भी कहा जाता है।

3274 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ حُبَابٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَلاَّمُ بْنُ سُلَيْمَانَ النَّحْوِيُّ أَبُو الْمُنْذِرِ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ أَبِي النَّجُودِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنِ الحَارِثِ بْنَ يَزِيدَ البَكْرِيِّ، قَالَ: قَدِمْتُ الْمَدِينَةَ

3274 - सय्यदना हारिस बिन यज़ीद अल बक्री (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैं मदीना में आया मस्जिद में गया तो देखा वह लोगों से भरी हुई थी और सियाह झंडे लहरा रहे थे, और देखा कि बिलाल, रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने तलवार लटकाए हुए थे मैंने दर्याफ़्त किया कि लोगों को क्या हुआ है? उन्होंने

فَدَخَلْتُ الْمَسْجِدَ فَإِذَا هُوَ غَاصٌّ بِالنَّاسِ، وَإِذَا رَايَاتٌ سُودٌ تَخْفُقُ، وَإِذَا بِلَالٌ مُتَقَلِّدٌ السَّيْفَ بَيْنَ يَدَيْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قُلْتُ: مَا شَأْنُ النَّاسِ؟ قَالُوا: يُرِيدُ أَنْ يَبْعَثَ عَمْرَو بْنَ العَاصِ وَجْهًا

बताया कि आप (ﷺ) अम्र बिन आस (رضي الله عنه) को किसी सिम्त रवाना करना चाहते हैं, फिर सुफ़ियान बिन उयय्ना की बयान कर्दा हदीस के माना मफ़हूम की लम्बी हदीस ज़िक्र की।

हसन:इब्ने माजह्:2816. अहमद:3/48.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: उन्हें हारिस बिन हस्सान भी कहा जाता है।

52 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الطُّورِ

52 - तफ़सीर सूरह तूर।

3275 - حَدَّثَنَا أَبُو هِشَامٍ الرِّفَاعِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، عَنْ رِشْدِينَ بْنِ كُرَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِدْبَارُ النُّجُومِ الرَّكْعَتَانِ قَبْلَ الفَجْرِ، وَإِدْبَارُ السُّجُودِ الرَّكْعَتَانِ بَعْدَ الْمَغْرِبِ.

3275 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "और सितारों के जाने के बाद" (आयत:49) (से मुराद) फज्र से पहले दो रकअतें " और सज्दे के बाद के औक़ात" (क़ाफ़:40) (से मुराद) मगरिब के बाद की दो रकअतें हैं।"

ज़ईफ़:इब्ने अदी फ़िल कामिल:3/1008. ज़ईफ़ जामे:248.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। हम इसे बवास्ता मुहम्मद बिन फुज़ैल ही रिश्दीन बिन काब के तरीक़ से जानते हैं और मैंने मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी से कुरैब के दोनों बेटों मुहम्मद और रिश्दीन के बारे में पूछा कि उनमें से कौन ज़्यादा सिक़ह है? उन्होंने फ़रमाया, "वह दोनों क़रीब-क़रीब हैं लेकिन मेरे नज़दीक मुहम्मद ज़्यादा राजेह है और मैंने अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान से भी यही सवाल किया तो उन्होंने फ़रमाया, "यह दोनों क़रीब-क़रीब हैं जबकि मेरे नज़दीक इन में रिश्दीन बिन कुरैब ज़्यादा राजेह है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: मेरे नज़दीक अबू मुहम्मद (अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान) का कौल ज़्यादा सहीह है और रिश्दीन बिन कुरैब मुहम्मद से ज़्यादा राजेह और बड़े हैं और रिश्दीन ने इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) का ज़माना पाया और उन्हें देखा भी था।

53 - तफ़सीर सूरह नज्म।

53 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ وَالنَّجْمِ

3276 - अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) बयान करते हैं: जब रसूलुल्लाह (ﷺ) (मेराज की रात) सिद्रतुल मुन्तहा पहुंचे। यह वह जगह है जहां ज़मीन से ऊपर चढ़ने वाली चीज़ और ऊपर से उतरने वाली चीज़ की इन्तिहा होती है। तो यहाँ पर अल्लाह तआला ने तीन चीजें अता फ़रमाई जो आप(ﷺ) से पहले किसी नबी को नहीं दी गई, आप(ﷺ) पर पांच नमाज़ें फ़र्ज़ की गई, आपको सूरह बक़रा की आख़िरी आयात मिलीं और आपकी उम्मत के कबीरा गुनाहों को माफ़ किया गया जब तक वह अल्लाह के साथ किसी को शरीक न बनाएं, अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) आयत: "जब उस बैरी को ढाँप रहा था जो ढाँप रहा था" (आयत: 16) के बारे में फ़रमाते हैं सिदरा (बैरी) छठे आसमान में है, सुफ़ियान का कहना है कि उसे सोने के परवाने पतिंगे ढाँप रहे थे और सुफ़ियान ने अपने हाथ से इशारा करके उसे हिलाया (कि इस तरह उड़ रहे थे) और मालिक बिन मिग़वल के अलावा बाकी राविय़ों ने यह अल्फ़ाज़ नकल किए हैं कि यहीं पर मख़्लूक़ की इंतिहा होती है इस से ऊपर क्या है उन्हें इसका इल्म नहीं है।

3276 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مَالِكِ بْنِ مِغْوَلٍ، عَنْ طَلْحَةَ بْنِ مُصَرِّفٍ، عَنْ مُرَّةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ: لَمَّا بَلَغَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سِدْرَةَ الْمُنْتَهَى، قَالَ: انْتَهَى إِلَيْهَا مَا يَعْرُجُ مِنَ الأَرْضِ وَمَا يَنْزِلُ مِنْ فَوْقٍ. قَالَ: فَأَعْطَاهُ اللَّهُ عِنْدَهَا ثَلاَثًا لَمْ يُعْطِهِنَّ نَبِيًّا كَانَ قَبْلَهُ، فُرِضَتْ عَلَيْهِ الصَّلاَةُ خَمْسًا، وَأُعْطِيَ خَوَاتِيمَ سُورَةِ البَقَرَةِ وَغُفِرَ لأُمَّتِهِ الْمُقْحِمَاتُ مَا لَمْ يُشْرِكُوا بِاللَّهِ شَيْئًا. قَالَ ابْنُ مَسْعُودٍ: {إِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشَى} قَالَ: السِّدْرَةُ فِي السَّمَاءِ السَّادِسَةِ، قَالَ سُفْيَانُ: فَرَاشٌ مِنْ ذَهَبٍ، وَأَشَارَ سُفْيَانُ بِيَدِهِ فَأَرْعَدَهَا، وقَالَ غَيْرُ مَالِكِ بْنِ مِغْوَلٍ: إِلَيْهَا يَنْتَهِي عِلْمُ الخَلْقِ لاَ عِلْمَ لَهُمْ بِمَا فَوْقَ ذَلِكَ.

मुस्लिम:173. निसाई:451. अहमद: 1/387.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3277 - शैबानी (رحمه الله) कहते हैं कि मैं ज़िर्र बिन हुबैश से अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के फ़रमान "फिर वह दो कमानों के फ़ासले पर हो गया बल्कि इस से भी क़रीब" (आयत:9) के बारे में पूछा तो उन्होंने फ़रमाया, "मुझे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) ने बताया कि नबी (ﷺ) ने जिब्रील को (उनकी असली हालत में) देखा था उनके छ सौ पर थे।

3277 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبَّادُ بْنُ العَوَّامِ، قَالَ: حَدَّثَنَا الشَّيْبَانِيُّ، قَالَ: سَأَلْتُ زِرَّ بْنَ حُبَيْشٍ، عَنْ قَوْلِهِ عَزَّ وَجَلَّ: {فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَى} فَقَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ مَسْعُودٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأَى جِبْرِيلَ وَلَهُ سِتُّ مِائَةِ جَنَاحٍ.

बुख़ारी:3232. मुस्लिम:174.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3278 - शाबी (رحمه الله) बयान करते हैं कि अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) अरफ़ा में काब से मिले थे तो उन से किसी चीज़ के बारे में सवाल किया उन्होंने अल्लाहु अकबर कहा, यहाँ तक कि पहाड़ों ने उन्हें जवाब दिया, (यानी गूँज उठे) तो अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) ने कहा: हम बनू हाशिम हैं, काब कहने लगे: अल्लाह तआला ने अपनी रूयत (दीदार) और अपने कलाम को मुहम्मद (ﷺ) और मूसा (عليه السلام) के दर्मियान तक्सीम किया, मूसा (عليه السلام) ने दो मर्तबा क़लाम की और मुहम्मद (ﷺ) ने दो मर्तबा दीदार किया, मस्रूक कहते हैं: फिर मैं सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) के पास गया तो मैंने कहा: क्या मुहम्मद (ﷺ) ने अपने रब को देखा था? वह कहने लगीं: तुमने ऐसी बात कही है जिससे मेरे रोंगटे खड़े हो गए हैं। मैंने कहा: आप ताम्मुल फ़रमाएं, फिर मैंने यह आयत पढ़ी " यक़ीनन उन्होंने अपने रब की बड़ी-बड़ी निशानियाँ

3278 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مُجَالِدٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، قَالَ: لَقِيَ ابْنُ عَبَّاسٍ كَعْبًا بِعَرَفَةَ فَسَأَلَهُ عَنْ شَيْءٍ فَكَبَّرَ حَتَّى جَاوَبَتْهُ الجِبَالُ، فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: إِنَّا بَنُو هَاشِمٍ، فَقَالَ كَعْبٌ: إِنَّ اللَّهَ قَسَمَ رُؤْيَتَهُ وَكَلَامَهُ بَيْنَ مُحَمَّدٍ وَمُوسَى، فَكَلَّمَ مُوسَى مَرَّتَيْنِ، وَرَآهُ مُحَمَّدٌ مَرَّتَيْنِ. قَالَ مَسْرُوقٌ: فَدَخَلْتُ عَلَى عَائِشَةَ، فَقُلْتُ: هَلْ رَأَى مُحَمَّدٌ رَبَّهُ؟ فَقَالَتْ: لَقَدْ تَكَلَّمْتَ بِشَيْءٍ قَفَّ لَهُ شَعْرِي، قُلْتُ: رُوَيْدًا ثُمَّ قَرَأْتُ {لَقَدْ رَأَى مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الكُبْرَى}، قَالَتْ: أَيْنَ يُذْهَبُ بِكَ؟ إِنَّمَا هُوَ جِبْرِيلُ، مَنْ أَخْبَرَكَ أَنَّ مُحَمَّدًا رَأَى رَبَّهُ، أَوْ

كَتَمَ شَيْئًا مِمَّا أُمِرَ بِهِ، أَوْ يَعْلَمُ الخَمْسَ الَّتِي قَالَ اللَّهُ تَعَالَى {إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ الغَيْثَ} فَقَدْ أَعْظَمَ الفِرْيَةَ، وَلَكِنَّهُ رَأَى جِبْرِيلَ، لَمْ يَرَهُ فِي صُورَتِهِ إِلاَّ مَرَّتَيْنِ: مَرَّةً عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهَى، وَمَرَّةً فِي جِيَادٍ لَهُ سِتُّ مِائَةِ جَنَاحٍ قَدْ سَدَّ الأُفُقَ.

देखीं।" (18) वह फ़रमाने लगीं तुम्हारी अक्ल कहाँ चली गई? वह तो जिब्रील (عليه السلام) थे, जो शख़्स तुम्हें यह बात कहे कि मुहम्मद (ﷺ) ने अपने रब को देखा है या उन्होंने अहकामात में से कुछ छिपाया है या उन पांच चीजों को जानते हैं जिन के बारे में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं" बेशक अल्लाह के पास ही क़यामत का इल्म है और वह बारिश उतारता है।" (लुकमान: 34) तो उस ने बहुत बड़ा झूठ बोला बल्कि आप (ﷺ) ने जिब्रील को उनकी असल सूरत में दो मर्तबा देखा है, एक मर्तबा सिद्रतुल मुन्तहा के पास और एक मर्तबा जियाद(1) जगह पर। उन के छः सौ पर थे। उन्होंने आसमान के किनारे को भरा हुआ था,

ज़ईफुल इस्नाद: तख़रीज के लिए :3068 मुलाहजा फ़रमाएं।

तौज़ीह: (1) मक्का के निचली जानिब एक जगह है जिसे जियाद कहा जाता है उस वक़्त वहाँ आबादी नहीं थी लेकिन अब वहाँ आबादी हो चुकी है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: दाऊद बिन हिन्द ने भी शाबी से बवास्ता मसरूक सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) से नबी (ﷺ) की ऐसी ही हदीस रिवायत की है और दाऊद की हदीस मुजालिद की रिवायत से छोटी है।

3279 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ نَبْهَانَ بْنِ صَفْوَانَ الثَّقَفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ كَثِيرٍ العَنْبَرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَلْمُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنِ الحَكَمِ بْنِ أَبَانَ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: رَأَى مُحَمَّدٌ رَبَّهُ، قُلْتُ: أَلَيْسَ اللَّهُ يَقُولُ: {لاَ تُدْرِكُهُ الأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ

3279 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) ने फ़रमाया, "मुहम्मद (ﷺ) ने अपने रब को देखा है इक्रिमा बयान करते हैं कि मैंने कहा: क्या अल्लाह तआला नहीं फ़र्माते हैं कि उसे निगाहें नहीं पा सकती और वह निगाहों को पाता है।" (अन्आम: 103) उन्होंने फ़रमाया, तुझ पर अफ़सोस यह तो तब है जब वह अपने उस नूर के साथ ज़ाहिर हो जो उसका हक़ीक़ी

الأَبْصَارُ} قَالَ: وَيْحَكَ، ذَاكَ إِذَا تَجَلَّى بِنُورِهِ الَّذِي هُوَ نُورُهُ، وَقَدْ رَأَى مُحَمَّدٌ رَبَّهُ مَرَّتَيْنِ.

नूर है, जबकि मुहम्मद (ﷺ) ने अपने रब को दो मर्तबा देखा है।

ज़ईफ़:निसाई:11537. तबरानी:11619 हिदायतुर्रूवात: 5586.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रहमतुल्लाह) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है।

3280 - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ الأُمَوِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرٍو، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، فِي قَوْلِ اللهِ: {وَلَقَدْ رَآهُ نَزْلَةً أُخْرَى عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهَى} {فَأَوْحَى إِلَى عَبْدِهِ مَا أَوْحَى} {فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَى} قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: قَدْ رَآهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

3280 - अबू सलमा रिवायत करते हैं कि सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने अल्लाह तआला के फ़रमान "यक़ीनन उस ने उसे एक और जगह पर देखा, सिद्रतुल मुन्तहा के पास।" (13- 14) फिर उस ने अपने बन्दे की तरफ़ जो चाहा वहि किया।" (आयत: 10) " तो फिर हो गया वह दो कमानों के फ़ासिले पर या उस से भी क़रीब।" (9) के बारे में फ़रमाया, "यक़ीनन नबी (ﷺ) ने उस रब को देखा है।

हसन सहीह:इब्ने हिब्बान: 57. तबरानी:10727. अज-ज़िलाल:191/439.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रहमतुल्लाह) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।

3281 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، وَابْنُ أَبِي رِزْمَةَ، وَأَبُو نُعَيْمٍ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ سِمَاكٍ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، {مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَى} قَالَ: رَآهُ بِقَلْبِهِ.

3281 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) (फ़रमाने इलाही) दिल ने झूठ नहीं बोला जो उस ने देखा।" (आयत: 11) के बारे में फ़रमाते हैं: आप ने उस अल्लाह को अपने दिल से देखा था।

मुस्लिम:176. तबरानी:12941.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रहमतुल्लाह) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।

3282 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، وَيَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ

3282 - अब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ कहते हैं मैंने सय्यदना अबू ज़र से कहा: काश मैं नबी (ﷺ) को पा लेता तो आप से एक बात पूछता।

उन्होंने कहा: तुम आप से क्या सवाल करते? मैंने कहा: मैं आप से यह पूछता: क्या मुहम्मद (ﷺ) ने अपने रब को देखा है? तो उन्होंने फ़रमाया, मैंने पूछा था तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "वह अल्लाह तो नूर है मैं उसे कैसे देखता?"

إِبْرَاهِيمَ التُّسْتَرِيِّ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ شَقِيقٍ، قَالَ: قُلْتُ لأَبِي ذَرٍّ: لَوْ أَدْرَكْتُ النَّبِيَّ ﷺ لَسَأَلْتُهُ، فَقَالَ: عَمَّا كُنْتَ تَسْأَلُهُ، قُلْتُ: أَسْأَلُهُ هَلْ رَأَى مُحَمَّدٌ رَبَّهُ؟ فَقَالَ: قَدْ سَأَلْتُهُ فَقَالَ: نُورٌ، أَنَّى أَرَاهُ ".

मुस्लिम: 178. अहमद: 5/ 147.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।

3283 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) आयत "दिल ने झूठ नहीं बोला जो उस ने देखा।" (आयत: 11) के बारे में फ़रमाते हैं रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जिब्रील (عليه السلام) को खूबसूरत रेशमी जोड़े में देखा उस ने ज़मीन व आसमान के दर्मियान (वाली जगह) को भरा हुआ था।

3283 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، وَابْنُ أَبِي رِزْمَةَ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ، {مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَى} قَالَ: رَأَى رَسُولُ اللهِ ﷺ جِبْرِيلَ فِي حُلَّةٍ مِنْ رَفْرَفٍ قَدْ مَلأَ مَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ

बुख़ारी: 3232. मुस्लिम: 174. अहमद: 1/ 394.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3284 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) आयत "वह लोग जो बड़े गुनाहों और बेहयाइयों से बचते हैं मगर सगीरा गुनाह (हो जाते हैं)" (आयत: 32) की तफ़्सीर में रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, ''ऐ अल्लाह अगर तू बख्शता है तो सब गुनाह बख्श दे तेरा कौन सा बन्दा है जो गुनाह न करता हो।''

3284 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عُثْمَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، عَنْ زَكَرِيَّا بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، {الَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبَائِرَ الإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ إِلاَّ اللَّمَمَ} قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنْ تَغْفِرِ اللَّهُمَّ تَغْفِرْ جَمًّا، وَأَيُّ عَبْدٍ لَكَ لاَ أَلَمَّا.

सहीह: हाकिम: 2/ 469. हिदायतुर्रूवात: 2288.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है हम इसे सिर्फ ज़करिया बिन इस्हाक़ के तरीक़ से ही जानते हैं।

54 - तफ़सीर सूरह क़मर।

54 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ القَمَرِ

3285 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (ﷺ) रिवायत करते हैं कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ मिना में थे तो चाँद दो टुकड़ों में फट गया, एक टुकड़ा पहाड़ के पीछे और एक अगली तरफ़ हो गया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हम से फ़रमाया, "गवाह हो जाओ।" यानी "क़यामत आ गई और चाँद फट गया।" (आयत: 1)

बुख़ारी:3636. मुस्लिम:2800.

3285 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِي مَعْمَرٍ، عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: بَيْنَمَا نَحْنُ مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمِنًى فَانْشَقَّ القَمَرُ فَلْقَتَيْنِ: فَلْقَةٌ مِنْ وَرَاءِ الجَبَلِ، وَفَلْقَةٌ دُونَهُ، فَقَالَ لَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: اشْهَدُوا، يَعْنِي، {اقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ القَمَرُ}.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3286 - सय्यदना अनस (ﷺ) बयान करते हैं कि अहले मक्का ने नबी (ﷺ) से किसी निशानी (मोजिज़े) का मुतालबा किया तो मक्का में दो दफ़ा चाँद दो टुकड़े हुआ, फिर यह आयात नाज़िल हुई "क़यामत बहुत क़रीब आ गई और चाँद फट गया, और अगर वह कोई निशानी देखते हैं तो मुंह फेर लेते हैं और कहते हैं: "यह एक जादू है जो गुज़र जाने वाला है।" (आयत: 1- 2) यानी चला जाने वाला।

बुख़ारी:3637. मुस्लिम:2802. अहमद:1/413.

3286 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: سَأَلَ أَهْلُ مَكَّةَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ آيَةً، فَانْشَقَّ القَمَرُ بِمَكَّةَ مَرَّتَيْنِ، فَنَزَلَتْ {اقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ القَمَرُ}، إِلَى قَوْلِهِ: {سِحْرٌ مُسْتَمِرٌّ} يَقُولُ: ذَاهِبٌ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3287 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (ﷺ) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के दौर में चाँद फटा तो नबी (ﷺ) ने हम से फ़रमाया, "गवाह हो जाओ।"

3287 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ ابْنِ أَبِي نَجِيحٍ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنْ أَبِي مَعْمَرٍ، عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ:

انْشَقَّ الْقَمَرُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ لَنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: اشْهَدُوا.

तख़रीज के लिए देखें: हदीस नम्बर 3285.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3288 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: انْفَلَقَ الْقَمَرُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: اشْهَدُوا.

3288 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के दौर में चाँद टूट गया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "गवाह हो जाओ।"

सहीह: तख़रीज के लिए देखें: हदीस नम्बर 2182.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3289 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ كَثِيرٍ، عَنْ حُصَيْنٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: انْشَقَّ الْقَمَرُ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى صَارَ فِرْقَتَيْنِ: عَلَى هَذَا الْجَبَلِ، وَعَلَى هَذَا الْجَبَلِ، فَقَالُوا: سَحَرَنَا مُحَمَّدٌ فَقَالَ بَعْضُهُمْ: لَئِنْ كَانَ سَحَرَنَا فَمَا يَسْتَطِيعُ أَنْ يَسْحَرَ النَّاسَ كُلَّهُمْ.

3289 - सय्यदना जुबैर बिन मुतइम (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के दौर में चाँद फट कर दो टुकड़े हो गया एक उस पहाड़ पर एक इस पहाड़ पर, तो लोग कहने लगे: मुहम्मद (ﷺ) ने हम पर जादू कर दिया है तो उन में से किसी ने कहा: अगर उस ने हम पर जादू किया है लेकिन वह सब लोगों पर जादू करने की सलाहियत नहीं रखता।

सहीहुल इस्नाद:अहमद:4/81. इब्ने हिब्बान:6497. हाकिम:2/472.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: बाज़ ने इस हदीस को हुसैन से बवास्ता जुबैर बिन मुहम्मद उनके बाप के ज़रिए उनके दादा सय्यदना जुबैर बिन मुतइम (رضي الله عنه) से इसी तरह रिवायत किया है।

3290 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، وَأَبُو بَكْرٍ بُنْدَارٌ، قَالاَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ زِيَادِ بْنِ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبَّادِ بْنِ جَعْفَرٍ الْمَخْزُومِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: جَاءَ مُشْرِكُو قُرَيْشٍ يُخَاصِمُونَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْقَدَرِ فَنَزَلَتْ {يَوْمَ يُسْحَبُونَ فِي النَّارِ عَلَى وُجُوهِهِمْ ذُوقُوا مَسَّ سَقَرَ إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ}.

3290 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि कुरैश के मुश्रिकीन आकर रसूलुल्लाह (ﷺ) से तक़्दीर के मसले में झगड़ा करने लगे तो यह आयात नाज़िल हुई ''जिस दिन वह अपने चेहरों के बल घसीटे जाएंगे और कहा जाएगा आग का छूना चखो बेशक हर चीज़ को हम ने एक अंदाज़े से पैदा किया है।'' (आयत: 48- 49)

सहीह: तख़रीज के लिए देखें: हदीस नम्बर 2157.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

55 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الرَّحْمَنِ

55 - तफ़सीर सूरह रहमान।

3291 - حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ وَاقِدٍ أَبُو مُسْلِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، عَنْ زُهَيْرِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرٍ قَالَ: خَرَجَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى أَصْحَابِهِ، فَقَرَأَ عَلَيْهِمْ سُورَةَ الرَّحْمَنِ مِنْ أَوَّلِهَا إِلَى آخِرِهَا فَسَكَتُوا، فَقَالَ: لَقَدْ قَرَأْتُهَا عَلَى الجِنِّ لَيْلَةَ الجِنِّ فَكَانُوا أَحْسَنَ مَرْدُودًا مِنْكُمْ، كُنْتُ كُلَّمَا أَتَيْتُ عَلَى قَوْلِهِ {فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ} قَالُوا: لاَ بِشَيْءٍ مِنْ نِعَمِكَ رَبَّنَا نُكَذِّبُ فَلَكَ الحَمْدُ.

3291 - सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने सहाबा के पास तशरीफ़ लाये फिर आप (ﷺ) ने उन्हें सूरह रहमान शुरू से आखिर तक पढ़ कर सुनाई तो वह ख़ामोश रहे, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैंने जिन्नों की रात इसे जिन्नों पर पढ़ा था तो वह तुम से अच्छा जवाब देते थे। मैं जब इस आयत पर पहुंचता "तुम अपने रब की कौन- कौन सी नेअ्मत को झुठलाओगे। (आयत: 13) तो वह (जवाब देते हुए) कहते: ऐ हमारे रब हम तेरी किसी नेअ्मत को नहीं झुठलाते तमाम तारीफ़ें तेरे लिए ही हैं।

हसन: हाकिम: 2/473. बैहक़ी: 2/232. अस-सिलसिला अस- सहीहा: 2150.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे बवास्ता वलीद बिन मुस्लिम ही ज़ुहैर बिन मुहम्मद से जानते हैं।

इमाम अहमद बिन हंबल (رحمه الله) फ़रमाते हैं: शायद यह ज़ुहैर बिन मुहम्मद वह हैं जो शाम में थे यह वह नहीं हैं जिन से इराक़ में रिवायत की जाती है शायद वह और आदमी है। लोगों ने नाम को आगे पीछे कर दिया है इसलिए उस से मुन्कर अहादीस रिवायत करते हैं।

मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: अहले शाम ज़ुहैर बिन मुहम्मद से मुन्कर अहादीस रिवायत करते हैं जबकि अहले इराक़ उन से सेहत के क़रीब-क़रीब अहादीस रिवायत करते हैं।

56 - तफ़सीर सूरह वाक़िया।

56 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الوَاقِعَةِ

3292 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: मैंने अपने नेक बन्दों के लिए वह कुछ तैयार किया है जो किसी आँख ने देखा नहीं, किसी कान ने सुना नहीं और न ही किसी इन्सान के दिल पर उसका ख़याल गुजरा है। अगर चाहो तो यह आयत पढ़ो: "कोई जान नहीं जानती कि उनके लिए आँखें ठंडी करने का क्या सामान छिपा कर रखा गया है, यह उनके आमाल की जज़ा है।" (सज्दा: 17) और जन्नत में एक दरख़्त है कि ऊँट सवार सौ साल तक भी उसके साए में चले तो उसे उबूर नहीं कर सकता, अगर चाहो तो तुम पढ़ो ''और ऐसे साए जो खूब फैले हुए हैं।'' (वाक़िया: 30) जन्नत की एक कोड़े के बराबर की जगह दुनिया और उसके तमाम चीजों से बेहतर है, अगर चाहो तो यह आयत पढ़ो "फिर जो शख़्स आग से दूर कर दिया गया तो यक़ीनन वह क़ामयाब हो गया और दुनिया की ज़िंदगी तो धोके के सामान के सिवा कुछ भी नहीं।" (आले- इमरान: 185)

3292 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ سُلَيْمَانَ، وَعَبْدُ الرَّحِيمِ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَقُولُ اللَّهُ: أَعْدَدْتُ لِعِبَادِيَ الصَّالِحِينَ مَا لاَ عَيْنٌ رَأَتْ، وَلاَ أُذُنٌ سَمِعَتْ، وَلاَ خَطَرَ عَلَى قَلْبِ بَشَرٍ، فَاقْرَءُوا إِنْ شِئْتُمْ: {فَلاَ تَعْلَمُ نَفْسٌ مَا أُخْفِيَ لَهُمْ مِنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ} وَفِي الجَنَّةِ شَجَرَةٌ يَسِيرُ الرَّاكِبُ فِي ظِلِّهَا مِائَةَ عَامٍ لاَ يَقْطَعُهَا، وَاقْرَءُوا إِنْ شِئْتُمْ، {وَظِلٍّ مَمْدُودٍ} وَمَوْضِعُ سَوْطٍ فِي الجَنَّةِ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا، وَاقْرَءُوا إِنْ شِئْتُمْ: {فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ وَمَا الحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلاَّ مَتَاعُ الغُرُورِ}.

हसन सहीह: तख़रीज के लिए देखें: हदीस नम्बर (3013)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3293 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "बेशक जन्नत में एक दरख़्त है कि ऊँट सवार उसके साए में सौ साल चल कर भी उसे उबूर (पार) नहीं कर सकेगा, अगर चाहते हो तो पढ़ो "और ऐसे साए जो खूब फैले हुए होंगे और ऐसा पानी जो गिराया जा रहा होगा।" (आयात: 30- 31)

3293 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: إِنَّ فِي الجَنَّةِ لَشَجَرَةً يَسِيرُ الرَّاكِبُ فِي ظِلِّهَا مِائَةَ عَامٍ لاَ يَقْطَعُهَا، وَاقْرَءُوا إِنْ شِئْتُمْ: {وَظِلٍّ مَمْدُودٍ وَمَاءٍ مَسْكُوبٍ}.

बुख़ारी:3251. अहमद:3/ 110.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और इस बारे में अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

3294 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) नबी करीम (ﷺ) से अल्लाह का फ़रमान "और ऊंचे बिस्तरों में।" (आयत: 34) के बारे में रिवायत करते हैं कि आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "उनकी बलंदी आसमानों ज़मीन के दर्मियानी फ़ासले की तरह होगी और उन दोनों के दर्मियान पांच सौ साल की मसाफ़त है।"

3294 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا رِشْدِينُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ الحَارِثِ، عَنْ دَرَّاجٍ، عَنْ أَبِي الهَيْثَمِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي قَوْلِهِ: {وَفُرُشٍ مَرْفُوعَةٍ} قَالَ: ارْتِفَاعُهَا كَمَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ، وَمَسِيرَةُ مَا بَيْنَهُمَا خَمْسُ مِائَةِ عَامٍ.

ज़ईफ़: तख़रीज के लिए देखें: हदीस नम्बर 2540.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। हम इसे रिश्दीन के तरीक़ से ही जानते हैं। बअज़ उलमा कहते हैं: इस हदीस में ज़मीनो आसमान जितनी बलंदी का मतलब यह है कि ऊंचे बिस्तरों की बलन्दिये दर्जात के लिहाज़ से और दर्जात ऐसे हैं कि हर दो दर्जों के दर्मियान आसमान से ज़मीन जितना फ़ासला है।

3295 - सय्यदना अली (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने आयत: "और तुम अपना हिस्सा यह ठहराते हो कि बेशक तुम झुठलाते हो।" (आयत:82) की तफ़सीर में

3295 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الحُسَيْنُ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ، عَنْ عَبْدِ الأَعْلَى، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ،

عَنْ عَلِيٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: {وَتَجْعَلُونَ رِزْقَكُمْ أَنَّكُمْ تُكَذِّبُونَ} قَالَ: شُكْرُكُمْ، تَقُولُونَ مُطِرْنَا بِنَوْءِ كَذَا وَكَذَا وَبِنَجْمِ كَذَا وَكَذَا.

फ़रमाया, (हिस्से से मुराद) तुम्हारा शुक्र है, तुम कहते हो: हमें फुलां सितारे की वजह से बारिश दी गई और फुलां-फुलां सितारे की वजह से।"

ज़ईफ़ुल इस्नाद: अहमद:1/89. खराइती फ़ी मसाविल अख्लाक़:784.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है। हम इसे इस्राईल के तरीक़ से ही मर्फ़ू जानते हैं नीज़ सुफ़ियान सौरी ने भी अब्दुल आला से बवास्ता अबू अब्दुर्रहमान सुलमी, सय्यदना अली (رضي الله عنه) से इसी सनद के साथ ऐसी ही हदीस रिवायत की है लेकिन वह मर्फ़ू नहीं है।

3296 - حَدَّثَنَا أَبُو عَمَّارٍ الحُسَيْنُ بْنُ حُرَيْثٍ الخُزَاعِيُّ الْمَرْوَزِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ مُوسَى بْنِ عُبَيْدَةَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبَانَ، عَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي قَوْلِهِ: {إِنَّا أَنْشَأْنَاهُنَّ إِنْشَاءً} قَالَ: إِنَّ مِنَ الْمُنْشَآتِ اللاَّئِي كُنَّ فِي الدُّنْيَا عَجَائِزَ عُمْشًا رُمْصًا.

3296 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (صلى الله عليه وسلم) ने फ़रमाने इलाही "बिलाशुब्हा हम ने उन (बिस्तरों वाली औरतों) को पैदा किया नए सिरे से पैदा करना।" (आयत:35) के बारे में फ़रमाया, "नई पैदाइश वाली औरतों में से वह हैं हैं जो दुनिया में बूढ़ी, चुन्धी[1] और आशूबे चश्म[2] में मुब्तला थीं।"

ज़ईफ़ुल इस्नाद:हन्नाद फ़ी ज़ुहद:21. तबरी:27/185.

तौज़ीह: عمشا : आँखों से पानी जारी रहने की वजह से नज़र कमज़ोर या चुंधिया जाना, चुन्धाहट, ज़ोफे बसर। (अल-कामूसुल वहीद, प:1126)

رمصت العين رمصا : رُمْصًا: आँख के गोशा में सफ़ेद मैल आना, आशूबे चश्म की वजह से आँख से सफ़ेद मैल निकलना। (अल-मोजमुल वसीत:प।441)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे मूसा बिन उबैदा के तरीक़ से ही मर्फ़ू जानते हैं, जबकि मूसा बिन उबैदा और यज़ीद बिन अबान रकाशी दोनों ही हदीस में ज़ईफ़ हैं।

3297 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ هِشَامٍ، عَنْ شَيْبَانَ، عَنْ أَبِي

3297 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) से रिवायत है कि अबू बक्र (رضي الله عنه) ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (صلى الله عليه وسلم)! आप

إِسْحَاقَ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: قَالَ أَبُو بَكْرٍ: يَا رَسُولَ اللهِ قَدْ شِبْتَ، قَالَ: شَيَّبَتْنِي هُودٌ، وَالوَاقِعَةُ، وَالمُرْسَلاَتُ، وَعَمَّ يَتَسَاءَلُونَ، وَ {إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ}.

बूढ़े हो गए हैं, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "मुझे सूरह हूद, वाक़िया, अल-मुर्सलात, अम्मा यतसाअलून और इज़श्शम्सु कुव्विरत ने बूढ़ा कर दिया है।"

सहीह: हाकिम: 2/343. इब्ने अबी शैबा:10/553. अस-सिलसिला अस-सहीहा:955.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे इसी सनद से ही जानते हैं और अली बिन सालेह ने भी इस हदीस को बवास्ता अबू इस्हाक़, अबू जुहैफ़ा से इसी तरह रिवायत की है। नीज़ बवास्ता अबू इस्हाक मैसरा से इसमें से कुछ मुर्सल मर्वी है और अबू बक्र बिन अयाश ने भी अबू इस्हाक से बवास्ता इक्रिमा, नबी (ﷺ) से शैबान की अबू इस्हाक से मर्वी हदीस जैसी हदीस रिवायत की है। लेकिन इसमें इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) का ज़िक्र नहीं है हमें यह हदीस हाशिम बिन वलीद हर्वी ने अबू बक्र बिन अयाश से बयान की है।

57 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الحَدِيدِ

57 - तफ़सीर सूरह हदीद।

3298 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، وَغَيْرُ وَاحِدٍ، وَالمَعْنَى وَاحِدٌ، قَالُوا: حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ قَتَادَةَ، قَالَ: حَدَّثَ الحَسَنُ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: بَيْنَمَا نَبِيُّ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَالِسٌ وَأَصْحَابُهُ إِذْ أَتَى عَلَيْهِمْ سَحَابٌ، فَقَالَ نَبِيُّ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: هَلْ تَدْرُونَ مَا هَذَا؟ فَقَالُوا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: هَذَا العَنَانُ هَذِهِ رَوَايَا الأَرْضِ يَسُوقُهُ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى إِلَى قَوْمٍ لاَ

3298 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) और आप के सहाबा बैठे हुए थे कि अचानक उनके ऊपर एक बादल आ गया, तो अल्लाह के नबी (ﷺ) ने फ़रमाया "क्या तुम जानते हो कि यह क्या है?" उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह और उसके रसूल बेहतर जानते हैं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "यह बादल हैं ज़मीन को सैराब करने वाले हैं अल्लाह तबारक व तआला उन्हें उस कौम की तरफ़ चलाता है जो उसका शुक्र अदा नहीं करते और न ही उसे पुकारते हैं।" फिर आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे ऊपर क्या है?" उन्होंने अर्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल ही बेहतर जानते हैं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "यह

يَشْكُرُونَهُ وَلاَ يَدْعُونَهُ ثُمَّ قَالَ: هَلْ تَدْرُونَ مَا فَوْقَكُمْ؟ قَالُوا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: فَإِنَّهَا الرَّقِيعُ، سَقْفٌ مَحْفُوظٌ، وَمَوْجٌ مَكْفُوفٌ، ثُمَّ قَالَ: هَلْ تَدْرُونَ كَمْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهَا؟ قَالُوا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهَا مَسِيرَةُ خَمْسِ مِائَةِ سَنَةٍ. ثُمَّ قَالَ: هَلْ تَدْرُونَ مَا فَوْقَ ذَلِكَ؟ قَالُوا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: فَإِنَّ فَوْقَ ذَلِكَ سَمَاءَيْنِ، مَا بَيْنَهُمَا مَسِيرَةُ خَمْسِمِائَةِ عَامٍ حَتَّى عَدَّ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ، مَا بَيْنَ كُلِّ سَمَاءَيْنِ مَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ، ثُمَّ قَالَ: هَلْ تَدْرُونَ مَا فَوْقَ ذَلِكَ؟ قَالُوا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: فَإِنَّ فَوْقَ ذَلِكَ الْعَرْشَ وَبَيْنَهُ وَبَيْنَ السَّمَاءِ بُعْدُ مَا بَيْنَ السَّمَاءَيْنِ. ثُمَّ قَالَ: هَلْ تَدْرُونَ مَا الَّذِي تَحْتَكُمْ؟ قَالُوا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: فَإِنَّهَا الأَرْضُ. ثُمَّ قَالَ: هَلْ تَدْرُونَ مَا الَّذِي تَحْتَ ذَلِكَ؟ قَالُوا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: فَإِنَّ تَحْتَهَا أَرْضًا أُخْرَى، بَيْنَهُمَا مَسِيرَةُ خَمْسِ مِائَةِ سَنَةٍ حَتَّى عَدَّ سَبْعَ أَرَضِينَ، بَيْنَ كُلِّ أَرْضَيْنِ مَسِيرَةُ

रक़ी[2] है, महफ़ूज़ छत और रोकी गई मौज (लहर)।" फिर आप ने फ़रमाया, "क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे और इस छत के दर्मियान कितना फ़ासिला है?" उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह और उसके रसूल बेहतर जानते हैं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम्हारे और उसके दर्मियान पांच सौ साल की मसाफ़त है।" फिर आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या तुम जानते हो कि इसके ऊपर क्या है?" उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह और उसके रसूल बेहतर जानते हैं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "फिर उसके ऊपर दो आसमान हैं उनके दर्मियान भी पांच सौ साल की मसाफ़त है।" यहाँ तक कि आप ने सात आसमान शुमार किए, "हर दो आसमान के दर्मियान ज़मीन व आसमान जितना फासला है।" फिर आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या तुम जानते हो कि उसके ऊपर क्या है?" उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह और उसके रसूल बेहतर जानते हैं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "उस से ऊपर अर्श है उसके और ऊपर आसमान के दर्मियान उतनी ही दूरी है जितनी दो आसमान के दर्मियान है।" फिर आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे नीचे क्या है?" उन्होंने अर्ज़ की : अल्लाह और उसके रसूल बेहतर जानते हैं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "यह ज़मीन है।" फिर आप ने फ़रमाया, "क्या तुम जानते हो कि इसके नीचे क्या है?" उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह और उसके रसूल बेहतर जानते हैं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया,

خَمْسِ مِائَةِ سَنَةٍ. ثُمَّ قَالَ: وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لَوْ أَنَّكُمْ دَلَّيْتُمْ بِحَبْلٍ إِلَى الأَرْضِ السُّفْلَى لَهَبَطَ عَلَى اللَّهِ. ثُمَّ قَرَأَ {هُوَ الأَوَّلُ وَالآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالبَاطِنُ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ}.

"इसके नीचे एक और ज़मीन है दोनों के दर्मियान पांच सौ साल की मसाफ़त है।" यहाँ तक कि आप ने सात ज़मीन शुमार कीं। "हर दो ज़मीनों के दर्मियान पांच सौ साल की मसाफ़त है।" फिर आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "उस ज़ात की क़सम! जिस के हाथ में मुहम्मद (ﷺ) की जान है! अगर तुम किसी आदमी को एक रस्सी से निचली ज़मीन की तरफ़ उतारो तो वह अल्लाह पर ही उतरेगा।" फिर आप(ﷺ) ने यह आयत पढ़ी "वही अव्वल, आखिर, ज़ाहिर, और बातिन है और वह हर चीज़ को खूब जानने वाला है।" (आयत:3)

ज़ईफ़: अहमद:2/370. इब्ने अबी आसिम फ़ीस्-सुन्ना:578. ज़िलालुल जन्ना:578.

तौज़ीह: روايا : رواية की जमा है पानी उठाने वाले ऊँट, बादलों को पानी वाले ऊंटों के साथ तशबीह दी गई है क्योंकि यह बादल भी पानी उठाकर सैराब करते हैं।

رقيع आसमान को कहा जाता है (अल-कामूसुल वहीद,प.658)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रह.) फ़रमाते हैं: यह हदीस इस सनद से ग़रीब है। नीज़ अय्यूब, यूनुस बिन उबैद और अली बिन मदीनी से मर्वी है कि हसन बसरी ने अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से सिमा (सुनना) नहीं किया और बअ़्ज़ उलमा ने इस हदीस की वज़ाहत करते हुए कहा है कि वह अल्लाह के इल्म, कुदरत और उसकी सल्तनत पर ही गिरेगा और अल्लाह का इल्म, कुदरत और उसकी सल्तनत हर जगह है जब कि वह खुद अर्श पर है। जैसा कि उसने अपनी किताब में बयान किया है।

58 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الْمُجَادَلَةِ

58 - तफ़सीर सूरह मुजादला।

3299 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، وَالحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الحُلْوَانِيُّ، الْمَعْنَى وَاحِدٌ، قَالاَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْحَاقَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ عَطَاءٍ،

3299 - सय्यदना सलमा बिन सखर अंसारी (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैं एक ऐसा आदमी था कि औरतों के साथ जिमा (हमबिस्तरी) करने की कुव्वत जिस क़दर मुझे दी गई थी उतनी किसी दुसरे को नहीं मिली होगी, चुनांचे

عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ سَلَمَةَ بْنِ صَخْرٍ الأَنْصَارِيِّ، قَالَ: كُنْتُ رَجُلاً قَدْ أُوتِيتُ مِنْ جِمَاعِ النِّسَاءِ مَا لَمْ يُؤْتَ غَيْرِي، فَلَمَّا دَخَلَ رَمَضَانُ تَظَاهَرْتُ مِنْ امْرَأَتِي حَتَّى يَنْسَلِخَ رَمَضَانُ فَرَقًا مِنْ أَنْ أُصِيبَ مِنْهَا فِي لَيْلَتِي فَأَتَتَابَعَ فِي ذَلِكَ إِلَى أَنْ يُدْرِكَنِي النَّهَارُ وَأَنَا لاَ أَقْدِرُ أَنْ أَنْزِعَ، فَبَيْنَمَا هِيَ تَخْدُمُنِي ذَاتَ لَيْلَةٍ إِذْ تَكَشَّفَ لِي مِنْهَا شَيْءٌ فَوَثَبْتُ عَلَيْهَا، فَلَمَّا أَصْبَحْتُ غَدَوْتُ عَلَى قَوْمِي فَأَخْبَرْتُهُمْ خَبَرِي فَقُلْتُ: انْطَلِقُوا مَعِي إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأُخْبِرَهُ بِأَمْرِي، فَقَالُوا: لاَ وَاللَّهِ لاَ نَفْعَلُ، نَتَخَوَّفُ أَنْ يَنْزِلَ فِينَا قُرْآنٌ أَوْ يَقُولَ فِينَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَقَالَةً يَبْقَى عَلَيْنَا عَارُهَا، وَلَكِنْ اذْهَبْ أَنْتَ فَاصْنَعْ مَا بَدَا لَكَ. قَالَ: فَخَرَجْتُ فَأَتَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرْتُهُ خَبَرِي، فَقَالَ: أَنْتَ بِذَاكَ؟ قُلْتُ: أَنَا بِذَاكَ. قَالَ: أَنْتَ بِذَاكَ؟ قُلْتُ: أَنَا بِذَاكَ. قَالَ: أَنْتَ بِذَاكَ؟ قُلْتُ: أَنَا بِذَاكَ، وَهَا أَنَا ذَا فَأَمْضِ فِيَّ حُكْمَ اللهِ فَإِنِّي صَابِرٌ لِذَلِكَ. قَالَ: أَعْتِقْ رَقَبَةً. قَالَ: فَضَرَبْتُ صَفْحَةَ عُنُقِي بِيَدِي، فَقُلْتُ: لاَ

फिर जब रमज़ान आया तो मैं ने रमज़ान के गुज़र जाने तक इस डर से अपनी बीवियों से ज़िहार[1] कर लिया कि मैं कहीं उस से रात को जिमा (हमबिस्तरी) शुरू कर बैठूं फिर यह जारी रहे यहाँ तक कि दिन आजाए और मैं उसे छोड़ने की ताक़त नहीं रखूंगा। फिर वह एक रात मेरी ख़िदमत कर रही थी कि अचानक उसकी कोई चीज़ ज़ाहिर हुई तो मैं उस पर कूद पड़ा, फिर जब सुबह हुई तो मैंने सुबह सवेरे ही अपनी कौम के लोगों के पास जाकर उन्हें अपना वाक़िया सुनाया मैंने कहा: तुम लोग मेरे साथ रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास चलो मैं आप को अपना माजरा सुनाऊंगा, उन लोगों ने कहा: नहीं, बल्कि अल्लाह की क़सम! तू ऐसा मत कर, हमें डर है कि कहीं हमारे बारे में कुरआन न नाज़िल हो जाए, या रसूलुल्लाह (ﷺ) हमारे बारे में कोई ऐसी बात न इर्शाद फ़रमा दें जिसका आर हमारे ऊपर बाकी रहे, तुम जाओ और जो तुम्हें बेहतर लगे करो। रावी कहते हैं: फिर मैं निकल कर रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, आप को अपना क़िस्सा सुनाया तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुमने यह काम किया है? मैंने अर्ज़ किया जी मैंने ये काम किया है। आप ने फ़रमाया, "तुम ने यह काम किया है?" मैंने अर्ज़ की मैंने ही यह काम किया है। आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "तुमने यह कुछ किया? मैंने अर्ज़ किया जी मैंने ही यह काम किया है और मैं हाज़िर हूँ आप मेरे बारे में अल्लाह का फैसला इर्शाद फ़रमाएं मैं उस पर

وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالحَقِّ مَا أَصْبَحْتُ أَمْلِكُ غَيْرَهَا. قَالَ: فَصُمْ شَهْرَيْنِ. قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ وَهَلْ أَصَابَنِي مَا أَصَابَنِي إِلاَّ فِي الصِّيَامِ. قَالَ: فَأَطْعِمْ سِتِّينَ مِسْكِينًا: قُلْتُ: وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالحَقِّ لَقَدْ بِتْنَا لَيْلَتَنَا هَذِهِ وَحْشَى، مَا لَنَا عَشَاءٌ. قَالَ: اذْهَبْ إِلَى صَاحِبِ صَدَقَةِ بَنِي زُرَيْقٍ، فَقُلْ لَهُ فَلْيَدْفَعْهَا إِلَيْكَ فَأَطْعِمْ عَنْكَ مِنْهَا وَسْقًا سِتِّينَ مِسْكِينًا، ثُمَّ اسْتَعِنْ بِسَائِرِهِ عَلَيْكَ وَعَلَى عِيَالِكَ قَالَ: فَرَجَعْتُ إِلَى قَوْمِي، فَقُلْتُ: وَجَدْتُ عِنْدَكُمُ الضِّيقَ وَسُوءَ الرَّأْيِ، وَوَجَدْتُ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ السَّعَةَ وَالبَرَكَةَ، أَمَرَ لِي بِصَدَقَتِكُمْ فَادْفَعُوهَا إِلَيَّ فَدَفَعُوهَا إِلَيَّ.

सब्र करूंगा, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "एक गुलाम की गर्दन आज़ाद कर।" कहते हैं: मैंने अपना हाथ अपनी गर्दन पर मार कर कहा: उस ज़ात की क़सम जिसने आप को हक़ के साथ भेजा है मैं इसके अलावा किसी गर्दन का मालिक नहीं बना हूँ। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "फिर दो महीनों के रोज़े रखो।" मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! यह परेशानी जो मुझे आई है रोज़े में ही तो आई है। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "फिर साठ मिस्कीनों को खाना खिलाओ।" मैंने अर्ज़ किया उस ज़ात की क़सम! जिस ने आप को हक़ के साथ भेजा है हम ने यह रात भूके गुज़ारी है हमारे पास रात का खाना नहीं था। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "बनू ज़ुरैक़ के सदक़ा के आमिल के पास जा कर उस से कहो कि वह सदक़ा का माल तुम्हें दे दे, फिर अपनी तरफ़ से उस में एक वसक़ (साठ साअ) साठ मिस्कीनों को खिला देना, फिर बाकी सारे माल को अपने और अपनी बीवी पर ख़र्च कर देना।" रावी कहते हैं: मैंने अपनी कौम के पास वापस आकर कहा: मैंने तुम्हारे पास तंगी और बुरी सोच पाई जब कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास मुझे आसानी और बर्कत मिली, आप(ﷺ) ने मेरे लिए तुम्हारे सदकात का हुक्म दिया है सो तुम मुझे दो, तो उन्होंने मेरे हवाले कर दिया।

सहीह: तख़रीज के लिए देखें: हदीस नम्बर 1198.

तौज़ीह: ज़िहार: अपनी बीवी को अपने ऊपर अपनी मां या अपनी बहन की तरह हराम क़रार देना ज़िहार कहलाता है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।
इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: मेरे मुताबिक सलमान बिन यसार ने सलमा बिन सखर (رضي الله عنه) से सिमा नहीं किया।

उन्हें सलमा बिन सखर भी कहा जाता है और सलमान बिन सखर भी, नीज़ इस मसला में औस बिन सामित (رضي الله عنه) की बीवी खौला बिन्ते सालबा (رضي الله عنها) से भी हदीस मर्वी है।

3300 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ الأَشْجَعِيُّ، عَنْ سُفْيَانَ الثَّوْرِيِّ، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ الْمُغِيرَةِ الثَّقَفِيِّ، عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي الجَعْدِ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ عَلْقَمَةَ الأَنْمَارِيِّ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ، قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ: {يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُولَ فَقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوَاكُمْ صَدَقَةً} قَالَ لِي النَّبِيُّ ﷺ مَا تَرَى؟ دِينَارٌ؟ قُلْتُ: لاَ يُطِيقُونَهُ، قَالَ: فَنِصْفُ دِينَارٍ؟، قُلْتُ: لاَ يُطِيقُونَهُ. قَالَ: فَكَمْ؟ قُلْتُ: شَعِيرَةٌ. قَالَ: إِنَّكَ لَزَهِيدٌ. قَالَ: فَنَزَلَتْ {أَأَشْفَقْتُمْ أَنْ تُقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوَاكُمْ صَدَقَاتٍ} الآيَةَ. قَالَ: فَبِي خَفَّفَ اللَّهُ عَنْ هَذِهِ الأُمَّةِ.

3300 - सय्यदना अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि जब आयत "ऐ ईमान वालो! जब तुम रसूलुल्लाह (ﷺ) से सरगोशी करो तो अपनी सरगोशी से पहले सदक़ा कर लिया करो।" (आयत: 12) नाज़िल हुई तो नबी (ﷺ) ने मुझ से फ़रमाया, "तुम्हारी क्या राय है? एक दीनार (सदक़ा होना चाहिए)?" मैंने अर्ज़ किया लोग उसकी ताक़त नहीं रखेंगे। फ़रमाया, "आधा दीनार?" मैंने कहा: कि उसकी भी ताक़त नहीं रखेंगे। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "फिर कितना?" मैंने अर्ज़ किया एक जौ (बराबर सोना) आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम तो बहुत कमी करने वाले हो।" कहते हैं: फिर यह आयत नाज़िल हुई "क्या तुम अपनी सरगोशियों से पहले सदक़ा करने से डरते हो।" (आयत: 13) (अली رضي الله عنه) कहते हैं मेरी वजह से अल्लाह तआला ने इस उम्मत पर तख़्फ़ीफ़ कर दी।

ज़ईफ़ुल इस्नाद: इब्ने अबी शैबा: 12/81,82. अब्द बिन हुमैद: 90. निसाई फी ख़साइसे अली: 152.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है हम इसे सिर्फ इसी सनद से ही जानते हैं और जौ से मुराद जौ के बराबर सोना है नीज़ अबू जाद का नाम राफ़े है।

3301 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ:

3301 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) बयान करते हैं एक यहूदी ने नबी (ﷺ) और

حَدَّثَنَا يُونُسُ، عَنْ شَيْبَانَ، عَنْ قَتَادَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، أَنَّ يَهُودِيًّا أَتَى عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَصْحَابِهِ فَقَالَ: السَّامُ عَلَيْكُمْ، فَرَدَّ عَلَيْهِ الْقَوْمُ، فَقَالَ نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: هَلْ تَدْرُونَ مَا قَالَ هَذَا؟ قَالُوا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، سَلَّمَ يَا نَبِيَّ اللَّهِ. قَالَ: لاَ وَلَكِنَّهُ قَالَ كَذَا وَكَذَا، رُدُّوهُ عَلَيَّ، فَرَدُّوهُ قَالَ: قُلْتَ: السَّامُ عَلَيْكُمْ؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ نَبِيُّ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عِنْدَ ذَلِكَ: إِذَا سَلَّمَ عَلَيْكُمْ أَحَدٌ مِنْ أَهْلِ الكِتَابِ فَقُولُوا: عَلَيْكَ مَا قُلْتَ، قَالَ: {وَإِذَا جَاءُوكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللَّهُ}.

आप के सहाबा के पास आकर अस्सामू अलैकुम कहा: (तुम्हें मौत आए) तो लोगों ने उसका जवाब दिया, फिर नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम्हें मालूम है कि उस ने क्या कहा था?" सहाबा ने अर्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल ही बेहतर जानते हैं, लेकिन ऐ अल्लाह के नबी (हमारे ख़याल में तो) उस ने सलाम कहा है। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "नहीं बल्कि उस ने इस तरह कहा था उसे मेरे पास लाओ।" वह उसे लाये तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुमने अस्सामू अलैकुम कहा था? उस ने कहा: जी हाँ" तब अल्लाह के नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब अहले किताब में से कोई शख़्स तुम्हें सलाम कहे तो तुम (जवाब देते हुए सिर्फ़) अलैका (तुझ पर भी) ही कहो।" यानी जो तुमने कहा वही तुझ पर भी हो। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, "और जब तेरे पास आते हैं तो (उन लफ़्ज़ों के साथ) तुझे सलाम कहते हैं जिनके साथ अल्लाह ने तुझे सलाम नहीं कहा।" (आयत:8)

बुख़ारी:6258. मुस्लिम:2163. अबू दाऊद:5207. इब्ने माजह:3697. अहमद:3/ 140.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रहमहुल्लाह) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

59 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الْحَشْرِ

59 - तफ़सीर सूरह हश्र।

3302 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: حَرَّقَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَخْلَ بَنِي النَّضِيرِ

3302 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बनू नजीर की बुवैरा नामी खुजूर को जला और कटवा दिया तो अल्लाह तआला ने यह

وَقَطَّعَ، وَهِيَ البُوَيْرَةُ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ {مَا قَطَعْتُمْ مِنْ لِينَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوهَا قَائِمَةً عَلَى أُصُولِهَا فَبِإِذْنِ اللهِ وَلِيُخْزِيَ الفَاسِقِينَ}.

आयत उतारी " जो भी खुजूर का दरख़्त तुमने काटा, या उसे उसकी जड़ों पर खड़ा छोड़ा तो वह अल्लाह की इजाज़त से था, ताकि वह नाफर्मानों को ज़लील करे।" (आयत:5)

सहीह: तख़रीज के लिए देखें: हदीस नम्बर 1552.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3303 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدٍ الزَّعْفَرَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَفَّانُ بْنُ مُسْلِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غِيَاثٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَبِيبُ بْنُ أَبِي عَمْرَةَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، فِي قَوْلِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ: {مَا قَطَعْتُمْ مِنْ لِينَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوهَا قَائِمَةً عَلَى أُصُولِهَا} قَالَ: اللِّينَةُ النَّخْلَةُ، وَلِيُخْزِيَ الفَاسِقِينَ قَالَ: اسْتَنْزَلُوهُمْ مِنْ حُصُونِهِمْ، قَالَ: أُمِرُوا بِقَطْعِ النَّخْلِ فَحَكَّ فِي صُدُورِهِمْ. فَقَالَ المُسْلِمُونَ: قَدْ قَطَعْنَا بَعْضًا وَتَرَكْنَا بَعْضًا، فَلَنَسْأَلَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَلْ لَنَا فِيمَا قَطَعْنَا مِنْ أَجْرٍ؟ وَهَلْ عَلَيْنَا فِيمَا تَرَكْنَا مِنْ وِزْرٍ؟ فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: {مَا قَطَعْتُمْ مِنْ لِينَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوهَا قَائِمَةً عَلَى أُصُولِهَا} " الآيَةَ.

3303 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) अल्लाह अज्ज़ व जल्ल के फ़रमान "जो भी खुजूर का दरख़्त तुमने काटा या उसे उसकी जड़ों पर खड़ा छोड़ दिया।" के बारे में फ़रमाते हैं: " لينة से मुराद खुजूर का दरख़्त है और " ताकि वह नाफ़र्मानों को रुस्वा करे" की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं: मुसलमानों ने उन्हें उनके क़िलों से उतार दिया और जब खुजूरें काटने का हुक्म दिया गया तो उनके दिलों में खटका सा था, मुसलमानों ने कहा: हम ने कुछ काटे हैं और कुछ छोड़ दिए हैं हम रसूलुल्लाह (ﷺ) से ज़रूर पूछेंगे कि क्या जो हम ने काटा है उस में हमारे लिए अज्र है, और क्या जिसे हम ने छोड़ा है उस में गुनाह है? तो अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई " जो भी खुजूर का दरख़्त तुमने काटा या उसे उसकी जड़ों पर खड़ा छोड़ दिया।" (आयत:5)

सहीहुल इस्नाद:निसाई:11574. तबरानी फ़िल औसत: 591.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। और बअ़ज़ ने इस हदीस को हफ्स बिन ग़ियास से बवास्ता हबीब बिन अबी उम्रा, सईद बिन जुबैर से मुर्सल रिवायत किया है उस में अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) का ज़िक्र नहीं किया।

यह हदीस हमें अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान ने हारून बिन मुआविया से उन्होंने हफ्स बिन ग़ियास से

बवास्ता हबीब बिन अबी उम्रा, सईद बिन जुबैर के ज़रिए नबी (ﷺ) से मुर्सल बयान की है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (رحمه الله) ने यह हदीस मुझ से सुनी थी।

3304 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ فُضَيْلِ بْنِ غَزْوَانَ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: أَنَّ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ بَاتَ بِهِ ضَيْفٌ فَلَمْ يَكُنْ عِنْدَهُ إِلاَّ قُوتُهُ وَقُوتُ صِبْيَانِهِ، فَقَالَ لاِمْرَأَتِهِ: نَوِّمِي الصِّبْيَةَ، وَأَطْفِئِي السِّرَاجَ، وَقَرِّبِي لِلضَّيْفِ مَا عِنْدَكِ، فَنَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةَ: {وَيُؤْثِرُونَ عَلَى أَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ}.

3304 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि अंसार के एक आदमी (अबू तल्हा رضي الله عنه) के पास एक मेहमान रात में ठहरा तो उसके पास सिर्फ अपना और अपने बच्चों का खाना था, चुनांचे उस ने अपनी बीवी से कहा: बच्चों को सुला दो, चिराग़ बुझा दो और जो कुछ तुम्हारे पास है वह मेहमान के पास रख दो। फिर यह आयत नाज़िल हुई "और वह अपने आप पर दूसरों को तर्जीह देते हैं ख़्वाह उन्हें सख़्त हाजत हो।" (आयत:9)

बुख़ारी:3798. मुस्लिम:2054.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

60 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الْمُمْتَحِنَةِ

60 - तफ़सीर सूरह मुम्तहिना।

3305 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنِ الْحَسَنِ بْنِ مُحَمَّدٍ هُوَ ابْنُ الْحَنَفِيَّةِ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ أَبِي رَافِعٍ، قَالَ: سَمِعْتُ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ يَقُولُ: بَعَثَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَا وَالزُّبَيْرَ وَالْمِقْدَادَ بْنَ الأَسْوَدِ فَقَالَ: انْطَلِقُوا حَتَّى تَأْتُوا رَوْضَةَ خَاخٍ فَإِنَّ بِهَا ظَعِينَةً مَعَهَا كِتَابٌ، فَخُذُوهُ مِنْهَا فَأْتُونِي بِهِ، فَخَرَجْنَا تَتَعَادَى بِنَا خَيْلُنَا حَتَّى

3305 - सय्यदना अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं: मुझे, जुबैर और मिक़्दाद बिन अस्वद को रसूलुल्लाह (ﷺ) ने रवाना किया आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम लोग जाओ यहाँ तक कि रौज़े खाख पहुँचो वहाँ पर एक ऊँट सवार औरत होगी उस के पास एक ख़त होगा उस से वह लेकर मेरे पास आओ।" चुनांचे हम अपने घोड़े दौडाते हुए निकले यहाँ तक कि हम रौज़े खाख पहुंचे अचानक हम ने एक ऊँट सवार औरत देखी, हम ने कहा: ख़त निकालो वह कहने लगी: मेरे पास कोई ख़त नहीं है। हम ने कहा: तुम ख़त ज़रूर निकालो

أَتَيْنَا الرَّوْضَةَ، فَإِذَا نَحْنُ بِالظَّعِينَةِ فَقُلْنَا: أَخْرِجِي الكِتَابَ، فَقَالَتْ: مَا مَعِي مِنْ كِتَابٍ، قُلْنَا: لَتُخْرِجِنَّ الكِتَابَ أَوْ لَتُلْقِيِنَّ الثِّيَابَ، قَالَ: فَأَخْرَجَتْهُ مِنْ عِقَاصِهَا قَالَ: فَأَتَيْنَا بِهِ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَإِذَا هُوَ مِنْ حَاطِبِ بْنِ أَبِي بَلْتَعَةَ إِلَى أُنَاسٍ مِنَ الْمُشْرِكِينَ بِمَكَّةَ يُخْبِرُهُمْ بِبَعْضِ أَمْرِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: مَا هَذَا يَا حَاطِبُ؟ قَالَ: لاَ تَعْجَلْ عَلَيَّ يَا رَسُولَ اللهِ، إِنِّي كُنْتُ امْرَأً مُلْصَقًا فِي قُرَيْشٍ وَلَمْ أَكُنْ مِنْ أَنْفُسِهَا، وَكَانَ مَنْ مَعَكَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ لَهُمْ قَرَابَاتٌ يَحْمُونَ بِهَا أَهْلِيهِمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِمَكَّةَ، فَأَحْبَبْتُ إِذْ فَاتَنِي ذَلِكَ مِنْ نَسَبٍ فِيهِمْ أَنْ أَتَّخِذَ فِيهِمْ يَدًا يَحْمُونَ بِهَا قَرَابَتِي، وَمَا فَعَلْتُ ذَلِكَ كُفْرًا وَارْتِدَادًا عَنْ دِينِي وَلاَ رِضًا بِالكُفْرِ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: صَدَقَ، فَقَالَ عُمَرُ بْنُ الخَطَّابِ. دَعْنِي يَا رَسُولَ اللهِ أَضْرِبْ عُنُقَ هَذَا الْمُنَافِقِ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّهُ قَدْ شَهِدَ بَدْرًا، فَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ اللَّهَ اطَّلَعَ عَلَى أَهْلِ بَدْرٍ، فَقَالَ: اعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ فَقَدْ غَفَرْتُ لَكُمْ. قَالَ: وَفِيهِ أُنْزِلَتْ هَذِهِ

वर्ना अपने कपड़े उतारो।" रावी कहते हैं: फिर उसने अपने बालों की चोटी से वह ख़त निकाला, हम उसे लेकर रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास पहुंचे तो देखा वह ख़त हातिम बिन अबी बल्ता (رضي الله عنه) की तरफ़ से मक्का के मुश्रिकीन लोगों की तरफ़ था। उन्होंने नबी (ﷺ) के बअ़ज़ कामों की उन्हें ख़बर दी थी। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ हातिब यह क्या है? कहने लगे: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मुझ पर जल्दी में कोई फ़ैसला न करना, मैं कुरैश में मिला हुआ एक शख़्स था मैं उनके खानदान से नहीं हूँ जबकि आप के साथ जितने भी मुहाजिरीन हैं उनकी रिश्तेदारियाँ हैं जिनकी वजह से वह लोग मक्का में अपने अहल और अमवाल को बचाते हैं, मैंने चाहा जब मेरे पास नसब से यह चीज़ नहीं है तो मैं उन पर एहसान कर दूं जिसकी वजह से वह मेरी क़राबत का ख़याल रखें और मैंने यह काम कुफ़्र, दीन से इर्तिदाद और इस्लाम के बाद कुफ़्र पर राज़ी होते हुए नहीं किया। तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "इस ने सच बोला है।" उमर बिन ख़त्ताब (رضي الله عنه) कहने लगे: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मुझे छोड़िए मैं इस मुनाफ़िक़ की गर्दन उतारता हूँ, तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "यह बद्र में शरीक हुआ था तुझे क्या पता यक़ीनन अल्लाह तआला ने अहले बद्र को माफ़ फ़रमा दिया है और फ़रमाया है :जो चाहो काम करो मैंने तुम्हें बख्श दिया है।" रावी कहते हैं: इसी मामले में यह सूरत नाज़िल हुई

السُّورَةُ {يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَاءَ تُلْقُونَ إِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ} السُّورَةَ. قَالَ عَمْرٌو: وَقَدْ رَأَيْتُ ابْنَ أَبِي رَافِعٍ وَكَانَ كَاتِبًا لِعَلِيٍّ.

थी "ऐ ईमान वालो! मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त मत बनाओ तुम उनकी तरफ़ मोहब्बत का हाथ बढ़ाते हो।" (आयत: 11) अम्र बिन दीनार कहते हैं कि मैंने देखा कि उबैदुल्लाह इब्ने अबी राफे, सय्यदना अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) के कातिब थे।

बुख़ारी:3007. मुस्लिम:2494. अबू दाऊद:2650.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। नीज़ इस बारे में उमर और जाबिर बिन अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

बहुत से रावियों ने सुफ़ियान बिन उयय्ना से इस हदीस को ऐसे ही रिवायत किया है और ऐसे अल्फ़ाज़ ज़िक्र किए हैं कि उन्होंने कहा: तुम ख़त ज़रूर निकालोगी या तुम अपने कपड़े उतारो। और बवास्ता अबू अब्दुर्रहमान बिन यह्या अस्सुलमी भी अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) से इसी तरह मर्वी है जबकि बअ़ज़ ने ज़िक्र किया है कि उन्होंने कहा तुम ख़त निकालो या हम तुझे नंगा कर देंगे।

3306 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: مَا كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَمْتَحِنُ إِلاَّ بِالآيَةِ الَّتِي قَالَ اللَّهُ {إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعْنَكَ} الآيَةَ قَالَ مَعْمَرٌ: فَأَخْبَرَنِي ابْنُ طَاوُوسٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: مَا مَسَّتْ يَدُ رَسُولِ اللهِ ﷺ يَدَ امْرَأَةٍ إِلاَّ امْرَأَةً يَمْلِكُهَا.

3306 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि अल्लाह के रसूल (ﷺ) इसी आयत के साथ ही औरतों का इम्तिहान लेते थे जिस में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है ''ऐ नबी! जब आप के पास मोमिना औरतें आकर बैअत करें।'' (आयत: 12)

बुख़ारी:4891. मुस्लिम:1866. अबू दाऊद:2941. इब्ने माजह:3306.

मामर कहते हैं: मुझे इब्ने ताऊस ने अपने बाप से यह बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के हाथ ने किसी भी औरत का हाथ नहीं छुआ सिवाए उस औरत के जिस के आप मालिक थे।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3307 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ

3307 - सय्यदा उम्मे सलमा अंन्सारिया (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि ख़्वातीन में से एक

الشَّيْبَانِيُّ، قَالَ: سَمِعْتُ شَهْرَ بْنَ حَوْشَبٍ، قَالَ: حَدَّثَتْنَا أُمُّ سَلَمَةَ الأَنْصَارِيَّةُ، قَالَتْ: قَالَتْ امْرَأَةٌ مِنَ النِّسْوَةِ: مَا هَذَا الْمَعْرُوفُ الَّذِي لاَ يَنْبَغِي لَنَا أَنْ نَعْصِيَكَ فِيهِ؟ قَالَ: لاَ تَنُحْنَ، قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ بَنِي فُلاَنٍ قَدْ أَسْعَدُونِي عَلَى عَمِّي وَلاَ بُدَّ لِي مِنْ قَضَائِهِمْ، فَأَبَى عَلَيَّ، فَعَاتَبْتُهُ مِرَارًا، فَأَذِنَ لِي فِي قَضَائِهِنَّ، فَلَمْ أَنُحْ بَعْدَ قَضَائِهِنَّ وَلاَ غَيْرِهِ حَتَّى السَّاعَةَ، وَلَمْ يَبْقَ مِنَ النِّسْوَةِ امْرَأَةٌ إِلاَّ وَقَدْ نَاحَتْ غَيْرِي.

औरत ने अर्ज़ किया यह मारूफ़ क्या चीज़ है? जिसमें आप (ﷺ) की नाफ़रमानी करना हमारे लिए दुरुस्त नहीं है। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम नौहा न करना।" मैंने अर्ज़ किया: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! बनू फुलां ने मेरे चचा के मरने पर मेरी मदद की थी, मुझ पर उनका बदला चुकाना ज़रूरी है। तो आप ने इन्कार कर दिया फिर मैंने कई मर्तबा आप से इस्रार किया तो आप ने मुझे उनका बदला चुकाने की इजाज़त दे दी फिर उनके बदले के बाद मैंने आज तक किसी पर नौहा नहीं किया और इन औरतों में से मेरे अलावा हर औरत ने नौहा किया है।

हसन: इब्ने माजह:1579. अहमद:6/320.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है और इस बारे में सय्यदा उम्मे अतिय्या (رضي الله عنها) से भी हदीस मर्वी है।

अब्द बिन हुमैद कहते हैं: उम्मे सलमा अन्सारिया, सय्यदा अस्मा बिन्ते यज़ीद बिन सकन ही हैं।

3308 - حَدَّثَنَا سَلَمَةُ بْنُ شَبِيبٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ الْفِرْيَابِيُّ، حَدَّثَنَا قَيْسُ بْنُ الرَّبِيعِ، عَنِ الأَغَرِّ بْنِ الصَّبَّاحِ، عَنْ خَلِيفَةَ بْنِ حُصَيْنٍ، عَنْ أَبِي نَصْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ فِي قَوْلِهِ تَعَالَى: {إِذَا جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ مُهَاجِرَاتٍ فَامْتَحِنُوهُنَّ}، قَالَ: كَانَتْ الْمَرْأَةُ إِذَا جَاءَتِ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم لِتُسْلِمَ حَلَّفَهَا بِاللَّهِ مَا خَرَجْتُ مِنْ بُغْضِ زَوْجِي مَا خَرَجْتُ إِلاَّ حُبًّا لِلَّهِ وَلِرَسُولِهِ.

3308 - अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) अल्लाह अज्ज़ व जल्ल के फ़रमान: "जब तुम्हारे पास हिजरत करने वाली मोमिना औरतें आयें तो उनका इम्तिहान लो" (आयत: 10) की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं: कोई भी औरत जब नबी (ﷺ) के पास मुसलमान होने के लिए आती तो आप उस से अल्लाह के नाम की क़सम लेते कि वह अपने खाविंद की नाचाक़ी की वजह से नहीं आई वह तो सिर्फ अल्लाह और उसके रसूल की मोहब्बत की खातिर निकली है।

इस पर तख़रीज ज़िक्र नहीं की गई।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है।

61 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الصَّفِّ

61 - तफ़सीर सूरह सफ़।

3309 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، عَنِ الأَوْزَاعِيِّ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ سَلاَمٍ، قَالَ: قَعَدْنَا نَفَرٌ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَتَذَاكَرْنَا، فَقُلْنَا: لَوْ نَعْلَمُ أَيَّ الأَعْمَالِ أَحَبَّ إِلَى اللهِ لَعَمِلْنَاهُ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى {سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الأَرْضِ وَهُوَ العَزِيزُ الحَكِيمُ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ مَا لاَ تَفْعَلُونَ}، قَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ سَلاَمٍ: فَقَرَأَهَا عَلَيْنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ أَبُو سَلَمَةَ: فَقَرَأَهَا عَلَيْنَا ابْنُ سَلاَمٍ قَالَ يَحْيَى: فَقَرَأَهَا عَلَيْنَا أَبُو سَلَمَةَ قَالَ ابْنُ كَثِيرٍ: فَقَرَأَهَا عَلَيْنَا الأَوْزَاعِيُّ قَالَ عَبْدُ اللهِ: فَقَرَأَهَا عَلَيْنَا ابْنُ كَثِيرٍ.

3309 - अब्दुल्लाह बिन सलाम (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के कुछ सहाबा बैठे आपस में मुज़ाकरा कर रहे थे, हम ने कहा: अगर हम जान लें कि कौन सा अमल अल्लाह को सब से ज़्यादा महबूब है? तो हम वह काम करें। चुनांचे अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई: "अल्लाह का पाक होना हर उस चीज़ ने बयान किया जो आसमान और ज़मीन में है, और वही सब पर ग़ालिब कमाल हिक्मत वाला है। ऐ ईमान वालो! जो तुम करते नहीं वह कहते क्यों हो? (आयत: 1- 2) अब्दुल्लाह बिन सलाम कहते हैं: फिर हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पढ़कर सुनाई, यह्या कहते हैं हमें अबू सलमा ने पढ़ कर सुनाई, इब्ने कसीर कहते हैं हमें औज़ाई ने पढ़ कर सुनाई अब्दुल्लाह कहते हैं हमें इब्ने कसीर ने पढ़ कर सुनाई।

सहीहुल इस्नाद:अहमद:5/452. दारमी:2395. हाकिम:2/69.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: औज़ाई से इस हदीस की सनद में मुहम्मद बिन अबी कसीर पर इख़्तिलाफ़ है।

इब्ने मुबारक ने औज़ाई से बवास्ता यह्या बिन अबी कसीर, हिलाल बिन अबी मैमूना से अता बिन यसार के ज़रिए अब्दुल्लाह बिन सलाम या अबू सलमा के ज़रिए अब्दुल्लाह बिन सलाम (رضي الله عنه) से रिवायत की है।

जब कि वलीद बिन मस्लमा ने इस हदीस को औज़ाई से मुहम्मद बिन कसीर की तरह रिवायत किया है।

62 - तफ़सीर सूरह जुमा।

62 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الْجُمُعَةِ

3310 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي ثَوْرُ بْنُ زَيْدٍ الدِّيْلِيُّ، عَنْ أَبِي الغَيْثِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: كُنَّا عِنْدَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ أُنْزِلَتْ سُورَةُ الجُمُعَةِ فَتَلاَهَا، فَلَمَّا بَلَغَ {وَآخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ} قَالَ لَهُ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللهِ مَنْ هَؤُلاَءِ الَّذِينَ لَمْ يَلْحَقُوا بِنَا؟ فَلَمْ يُكَلِّمْهُ، قَالَ: وَسَلْمَانُ فِينَا قَالَ: فَوَضَعَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدَهُ عَلَى سَلْمَانَ فَقَالَ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوْ كَانَ الإِيمَانُ بِالثُّرَيَّا لَتَنَاوَلَهُ رِجَالٌ مِنْ هَؤُلاَءِ.

3310 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि जब सूरह जुमा नाज़िल हुई तो हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास थे आप(ﷺ) ने उसकी तिलावत फ़रमाई फिर जब आप "और उन में से कुछ और लोगों में भी (आप को भेजा है) जो अभी तक उन से नहीं मिले।" (आयत:3) पर पहुंचे तो एक आदमी ने आप(ﷺ) से अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! यह कौन लोग हैं जो हम से मिले नहीं तो आप(ﷺ) ने उस शख़्स से बात न की, और सलमान फ़ारसी हमारे अन्दर मौजूद थे। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपना हाथ सलमान पर रख कर फ़रमाया, "उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है! अगर ईमान सुरय्या (सितारों के झुरमुट) तक भी पहुँच जाए तो इन लोगों में से कुछ अफराद हासिल कर लेंगे।"

बुख़ारी:4897. मुस्लिम:2546.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है और अब्दुल्लाह बिन जाफ़र, अली बिन मदीनी के वालिद हैं इन्हें यह्या बिन मईन ने ज़ईफ़ कहा है नीज़ अबू हुरैरा (رضي الله عنه) की नबी (ﷺ) से रिवायत की गई यह हदीस इस के अलावा एक और सनद से भी मर्वी है।

अबू गैस का नाम सालिम है अब्दुल्लाह बिन मुतीअ के आज़ादकर्दा थे, मदीना के रहने वाले सिक़ह् रावी हैं और सौर बिन ज़ैद मदीना के रहने वाले थे जब कि सौर बिन यज़ीद शाम के रहने वाले थे।

3311 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا حُصَيْنٌ، عَنْ أَبِي سُفْيَانَ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: بَيْنَمَا النَّبِيُّ صَلَّى

3311 - सय्यदना जाबिर (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) जुमा के दिन खड़े हुए ख़ुत्बा इर्शाद फ़रमा रहे थे कि उसी दौरान मदीना का (गल्ले वाला) काफ़िला आ गया, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) के सहाबा उसकी तरफ़ दौड़

اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَخْطُبُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ قَائِمًا إِذْ قَدِمَتْ عِيرُ الْمَدِينَةِ فَابْتَدَرَهَا أَصْحَابُ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى لَمْ يَبْقَ مِنْهُمْ إِلاَّ اثْنَا عَشَرَ رَجُلاً فِيهِمْ أَبُو بَكْرٍ، وَعُمَرُ، وَنَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ {وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ لَهْوًا انْفَضُّوا إِلَيْهَا وَتَرَكُوكَ قَائِمًا}.

पड़े, यहाँ तक कि उन में से सिर्फ 12 आदमी बाकी रह गए जिनमें अबू बक्र और उमर (رضي الله) भी थे तो यह आयत नाज़िल हुई "और जब वह कोई तिजारत या तमाशा देखते हैं तो उठ कर उस तरफ़ चले जाते हैं।" (आयत: 11)

बुख़ारी:4499. मुस्लिम:863.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

अबू ईसा कहते हैं) हमें अहमद बिन मुनीअ ने (वह कहते हैं) हमें हुशैम ने हुसैन से बवास्ता सालिम बिन अबी जाद जाबिर (رضي الله) से नबी (ﷺ) की ऐसी ही हदीस बयान की है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस भी हसन सहीह है।

63 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ الْمُنَافِقِينَ

63 - तफ़सीर सूरह मुनाफ़िक़ीन।

3312 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ، قَالَ: كُنْتُ مَعَ عَمِّي فَسَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ أُبَيٍّ ابْنَ سَلُولَ، يَقُولُ لأَصْحَابِهِ: {لاَ تُنْفِقُوا عَلَى مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ حَتَّى يَنْفَضُّوا} وَ {لَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الأَعَزُّ مِنْهَا الأَذَلَّ} فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِعَمِّي، فَذَكَرَ ذَلِكَ عَمِّي لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَدَعَانِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَحَدَّثْتُهُ، فَأَرْسَلَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، إِلَى عَبْدِ اللهِ بْنِ أُبَيٍّ

3312 - सय्यदना ज़ैद बिन अरक़म (رضي الله) बयान करते हैं: मैं अपने चचा के साथ था कि मैंने सुना अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल अपने साथियों से कह रहा था "उन लोगों पर ख़र्च न करो जो अल्लाह के रसूल के पास हैं यहाँ तक कि वह मुन्तशिर हो जाएँ।" (आयात:7) यक़ीनन अगर हम वापस मदीना आ गए तो जो ज़्यादा इज्ज़त वाला है वह ज़लील को निकाल देगा।" (आयत:8) मैंने यह बात अपने चचा से ज़िक्र की फिर मेरे चचा ने नबी (ﷺ) से इसका तजकिरा किया तो नबी (ﷺ) ने मुझे बलाया मैंने आप को बात बता दी। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल और उसके साथियों को

وَأَصْحَابِهِ، فَحَلَفُوا مَا قَالُوا، فَكَذَّبَنِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَصَدَّقَهُ، فَأَصَابَنِي شَيْءٌ لَمْ يُصِبْنِي شَيْءٌ قَطُّ مِثْلُهُ، فَجَلَسْتُ فِي البَيْتِ، فَقَالَ عَمِّي: مَا أَرَدْتَ إِلاَّ أَنْ كَذَّبَكَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَقَتَكَ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى {إِذَا جَاءَكَ الْمُنَافِقُونَ} فَبَعَثَ إِلَيَّ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَرَأَهَا، ثُمَّ قَالَ: إِنَّ اللَّهَ قَدْ صَدَّقَكَ.

बुलाया तो उन्होंने क़समें उठा लीं कि हम ने नहीं कहा। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे झूठा और उसे सच्चा जान लिया, मुझे इतना गम लाहिक़ हुआ कि इस क़दर पहले कभी नहीं हुआ था, मैं अपने घर में बैठ गया तो मेरे चचा ने कहा तुमने यही चाहा था कि रसूलुल्लाह (ﷺ) तुझे झुठला दें और तुझ पर नाराज़ हों, चुनांचे अल्लाह तआला ने यह सूरत "जब मुनाफ़िक़ आप के पास आते हैं" नाज़िल फ़रमा दी तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मेरी तरफ़ पैगाम भेजा (मैं आया) तो आप(ﷺ) ने उसे पढ़ कर फ़रमाया, "बेशक अल्लाह तआला ने तुम्हारी तस्दीक़ कर दी है।"

बुख़ारी:4900. मुस्लिम:2772.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3313 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنِ السُّدِّيِّ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الأَزْدِيِّ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ أَرْقَمَ، قَالَ: غَزَوْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَكَانَ مَعَنَا أُنَاسٌ مِنَ الأَعْرَابِ فَكُنَّا نَبْتَدِرُ الْمَاءَ، وَكَانَ الأَعْرَابُ يَسْبِقُونَا إِلَيْهِ، فَسَبَقَ أَعْرَابِيٌّ أَصْحَابَهُ، فَيَسْبِقُ الأَعْرَابِيُّ فَيَمْلأُ الحَوْضَ وَيَجْعَلُ حَوْلَهُ حِجَارَةً وَيَجْعَلُ النِّطْعَ عَلَيْهِ حَتَّى يَجِيءَ أَصْحَابُهُ. قَالَ: فَأَتَى رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ أَعْرَابِيًّا فَأَرْخَى زِمَامَ نَاقَتِهِ لِتَشْرَبَ

3313 - ज़ैद बिन अरक़म (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि हम ने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ मिल कर जंग की और हमारे साथ कुछ बदवी लोग भी थे फिर हम लोग पानी की तरफ़ दौड़े और बदवी हम से पहले वहाँ पहुँच गए तो एक आराबी अपने साथियों से पहले पहुँच गया, वह आराबी पहले आकर हौज़ भरता और इसके इर्द गिर्द पत्थर रख कर उस पर एक चमड़ा डाल देता ताकि उसके साथी आजाएं। रावी कहते हैं: फिर अंसार में से एक आदमी उस आराबी के पास गया तो उस ने अपनी ऊंटनी की महार छोड़ दी ताकि वह पानी पी ले उस आराबी ने उसका इन्कार किया तो अंसारी ने पानी की रुकावट तोड़ दी, आराबी ने एक

فَأَبَى أَنْ يَدَعَهُ فَانْتَزَعَ قِبَاضَ الْمَاءِ، فَرَفَعَ الأَعْرَابِيُّ خَشَبَةً فَضَرَبَ بِهَا رَأْسَ الأَنْصَارِيِّ فَشَجَّهُ، فَأَتَى عَبْدَ اللهِ بْنَ أُبَيٍّ رَأْسَ الْمُنَافِقِينَ فَأَخْبَرَهُ وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِهِ، فَغَضِبَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ، ثُمَّ قَالَ: {لاَ تُنْفِقُوا عَلَى مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ حَتَّى يَنْفَضُّوا}، يَعْنِي الأَعْرَابَ، وَكَانُوا يَحْضُرُونَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عِنْدَ الطَّعَامِ، فَقَالَ عَبْدُ اللهِ: إِذَا انْفَضُّوا مِنْ عِنْدِ مُحَمَّدٍ فَأْتُوا مُحَمَّدًا بِالطَّعَامِ، فَلْيَأْكُلْ هُوَ وَمَنْ عِنْدَهُ، ثُمَّ قَالَ لأَصْحَابِهِ: {لَئِنْ رَجَعْتُمْ إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الأَعَزُّ مِنْهَا الأَذَلَّ}، قَالَ زَيْدٌ: وَأَنَا رِدْفُ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: فَسَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ أُبَيٍّ، فَأَخْبَرْتُ عَمِّي، فَانْطَلَقَ فَأَخْبَرَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَرْسَلَ إِلَيْهِ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَحَلَفَ وَجَحَدَ، قَالَ: فَصَدَّقَهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَكَذَّبَنِي، قَالَ: فَجَاءَ عَمِّي إِلَيَّ، فَقَالَ: مَا أَرَدْتَ إِلاَّ أَنْ مَقَتَكَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَكَذَّبَكَ وَالْمُسْلِمُونَ. قَالَ: فَوَقَعَ عَلَيَّ مِنَ الهَمِّ مَا لَمْ يَقَعْ عَلَى

लकड़ी उठा कर अंसारी के सर पर मार कर उसे ज़ख्मी कर दिया, फिर वह अंसारी मुनाफ़िकों के सरदार अब्दुल्लाह बिन ऊबय के पास आया उसे वाक़िया बताया और वह उसके साथियों में से था, अब्दुल्लाह बिन उबय गुस्से में आ गया कहने लगा: जो लोग अल्लाह के रसूल के पास हैं उन पर ख़र्च न करो यहाँ तक कि वह उनके पास से चले जाएँ यानी आराबी। जब कि वह रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास खाने के वक़्त आ जाते थे। फिर अब्दुल्लाह ने कहा: जब वह मुहम्मद (ﷺ) के पास से मुन्तशिर हो जाएँ तो मुहम्मद (ﷺ) के पास खाना लेकर जाना ताकि वह और उनके साथ वाले खा लें। फिर अपने साथियों से कहने लगा: अगर हम मदीना लौटे तो ज़्यादा इज्ज़त वाला ज़लील को निकाल दे, ज़ैद कहते हैं: मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के पीछे सवारी पर था कि मैंने अब्दुल्लाह बिन उबय (की बात) को सुन लिया फिर मैंने अपने चचा को बताया तो उन्होंने जाकर रसूलुल्लाह (ﷺ) को ख़बर दी, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसकी तरफ़ पैगाम भेजा तो उसने क़सम उठा ली और इन्कार कर दिया। रावी कहते हैं: रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसे सच्चा और मुझे झूठा समझ लिया, फिर मेरे चचा मेरे पास आकर कहने लगे: तुमने यही चाहा था कि अल्लाह के रसूल तुझ से नाराज़ हों और आप और मुसलमान तुझे झूठा कह दें। कहते हैं कि मुझे इतना गम हुआ कि किसी को भी उतना नहीं हुआ होगा। कहते हैं: फिर मैं सफ़र

أَحَدٍ. قَالَ: فَبَيْنَمَا أَنَا أَسِيرُ مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سَفَرٍ قَدْ خَفَقْتُ بِرَأْسِي مِنَ الهَمِّ، إِذْ أَتَانِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَعَرَكَ أُذُنِي وَضَحِكَ فِي وَجْهِي، فَمَا كَانَ يَسُرُّنِي أَنَّ لِي بِهَا الخُلْدَ فِي الدُّنْيَا، ثُمَّ إِنَّ أَبَا بَكْرٍ لَحِقَنِي فَقَالَ: مَا قَالَ لَكَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قُلْتُ: مَا قَالَ لِي شَيْئًا، إِلاَّ أَنَّهُ عَرَكَ أُذُنِي وَضَحِكَ فِي وَجْهِي. فَقَالَ: أَبْشِرْ، ثُمَّ لَحِقَنِي عُمَرُ، فَقُلْتُ لَهُ مِثْلَ قَوْلِي لأَبِي بَكْرٍ فَلَمَّا أَصْبَحْنَا قَرَأَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سُورَةَ الْمُنَافِقِينَ.

में रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ चल रहा था मैंने परेशानी से अपना सर झुकाया हुआ था कि अचानक रसूलुल्लाह(ﷺ) मेरे पास तशरीफ़ लाये। आप (ﷺ) ने मेरा कान मरोड़ा और मुस्कुरा दिए, मुझे यह भी अच्छा नहीं लगता कि इसके बदले मुझे दुनिया में हमेशा की ज़िंदगी मिलती, फिर अबू बक्र मुझे मिले तो कहने लगे: रसूलुल्लाह (ﷺ) ने तुझ से क्या कहा था? मैंने कहा: आप ने मुझ से कुछ नहीं कहा: बस आप ने मेरा कान मरोड़ा और मुस्कुरा दिए तो उन्होंने कहा: खुश हो जाओ, फिर मुझे उमर मिले तो मैंने उन से भी वही कहा: जो मैंने अबू बक्र से कहा था, फिर जब सुबह हुई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सूरह मुनाफिकून पढ़ी।

सहीहुल इस्नाद:हाकिम:2/488. तबरानी:5041. अस-सिलसिला अस-सहीहा:3155.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3314 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الحَكَمِ بْنِ عُتَيْبَةَ، قَالَ: سَمِعْتُ مُحَمَّدَ بْنَ كَعْبٍ القُرَظِيَّ، مُنْذُ أَرْبَعِينَ سَنَةً يُحَدِّثُ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ، أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ أُبَيٍّ، قَالَ فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ: {لَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الأَعَزُّ مِنْهَا الأَذَلَّ} قَالَ: فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَذَكَرْتُ ذَلِكَ

3314 - सय्यदना ज़ैद बिन अरक़म (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि अब्दुल्लाह बिन उबय ने गज्व-ए-तबूक में कहा "अगर हम मदीना वापस गए तो ज़्यादा इज्ज़त वाला, ज़लील को ज़रूर निकाल देगा।" (आयत:8) कहते हैं: मैंने नबी (ﷺ) के पास जाकर इसका ज़िक्र किया तो उस ने क़सम दे दी कि मैंने नहीं कहा, मुझे मेरी कौम ने मलामत की कहने लगे: तुने इससे क्या चाहा था फिर मैं घर आया और ग़मज़दा व परेशान हो कर सो गया, चुनांचे नबी (ﷺ) मेरे पास तशरीफ़ लाये, या मैं आप

لَهُ، فَحَلَفَ مَا قَالَهُ، فَلاَمَنِي قَوْمِي وَقَالُوا: مَا أَرَدْتَ إِلَى هَذِهِ، فَأَتَيْتُ الْبَيْتَ وَنِمْتُ كَئِيبًا حَزِينًا، فَأَتَانِي النَّبِيُّ ﷺ أَوْ أَتَيْتُهُ، فَقَالَ: إِنَّ اللَّهَ قَدْ صَدَّقَكَ قَالَ: فَنَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةَ: {هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لاَ تُنْفِقُوا عَلَى مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ حَتَّى يَنْفَضُّوا}.

की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने तुम्हारी तस्दीक़ कर दी है।" कहते हैं: यह आयत नाज़िल हुई थी " यह वही लोग हैं जो कहते हैं कि उन लोगों पर ख़र्च न करो जो अल्लाह के रसूल के पास हैं यहाँ तक कि वह मुन्तशिर हो जाएँ।" (आयत:7)

सहीह: अहमद: 4/368. बुख़ारी:4902.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3315 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ يَقُولُ: كُنَّا فِي غَزَاةٍ، قَالَ سُفْيَانُ: يَرَوْنَ أَنَّهَا غَزْوَةُ بَنِي الْمُصْطَلِقِ فَكَسَعَ رَجُلٌ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ، فَقَالَ الْمُهَاجِرِيُّ: يَا لِلْمُهَاجِرِينَ وَقَالَ الأَنْصَارِيُّ: يَا لِلأَنْصَارِ، فَسَمِعَ ذَلِكَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: مَا بَالُ دَعْوَى الجَاهِلِيَّةِ؟ قَالُوا: رَجُلٌ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ كَسَعَ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: دَعُوهَا فَإِنَّهَا مُنْتِنَةٌ، فَسَمِعَ ذَلِكَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ ابْنُ سَلُولَ، فَقَالَ: أَوَقَدْ فَعَلُوهَا؟ وَاللَّهِ {لَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الأَعَزُّ مِنْهَا الأَذَلَّ}، فَقَالَ عُمَرُ: يَا رَسُولَ اللهِ، دَعْنِي أَضْرِبْ عُنُقَ هَذَا

3315 - सय्यदना जाबिर (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि हम एक गज्वा में थे। सुफ़ियान कहते हैं: लोगों का ख़याल है कि वह गज्वा बनी मुस्तलिक़ था। कि मुहाजिरीन में से एक आदमी ने एक अंसारी आदमी के सुरीन पर हाथ मारा, तो मुहाजिर कहने लगा: ऐ मुहाजिरो! और अंसारी ने कहा: ऐ अंसार के लोगो! यह बात नबी (ﷺ) ने सुनी तो फ़रमाया, "यह जाहिलियत की पुकार कैसी है?" लोगों ने कहा: मुहाजिरीन में से एक आदमी ने एक अंसार के सुरीन के पर हाथ मारा है। तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "इस काम को छोड़ दो यह बुरा काम है।" फिर अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल ने यह बात सुनी, तो कहने लगा: क्या उन लोगों ने यह काम किया है? अल्लाह की क़सम! अगर हम मदीना वापस लौटे तो ज़्यादा इज्ज़त वाला ज़लील को निकाल देगा।" उमर (رضي الله عنه) ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! आप मुझे छोड़ें मैं इस मुनाफ़िक़ की गर्दन उतारता हूँ, नबी (ﷺ)

الْمُنَافِقِ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: دَعْهُ لاَ يَتَحَدَّثُ النَّاسُ أَنَّ مُحَمَّدًا يَقْتُلُ أَصْحَابَهُ وَقَالَ غَيْرُ عَمْرٍو، فَقَالَ: لَهُ ابْنُهُ عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ: وَاللَّهِ لاَ تَنْقَلِبُ حَتَّى تُقِرَّ أَنَّكَ الذَّلِيلُ، وَرَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْعَزِيزُ، فَفَعَلَ.

ने फ़रमाया, "इसे छोड़ दो कहीं लोग यह बातें न करें कि मुहम्मद (ﷺ) अपने ही साथियों को क़त्ल करते हैं।" अम्र के अलावा बाकी रावी कहते हैं: कि इस मुनाफ़िक़ के बेटे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने उससे कहा: अल्लाह की क़सम! तू वापस नहीं जा सकता जब तक तू इक़रार न कर ले कि तू ज़लील और अल्लाह के रसूल इज्ज़त वाले हैं तो उस ने ऐसे ही किया।

बुख़ारी:3518. मुस्लिम:2584.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3316 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْنٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا أَبُو جَنَابٍ الكَلْبِيُّ، عَنِ الضَّحَّاكِ بْنِ مُزَاحِمٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: مَنْ كَانَ لَهُ مَالٌ يُبَلِّغُهُ حَجَّ بَيْتِ رَبِّهِ، أَوْ يَجِبُ عَلَيْهِ فِيهِ زَكَاةٌ، فَلَمْ يَفْعَلْ، يَسْأَلِ الرَّجْعَةَ عِنْدَ الْمَوْتِ، فَقَالَ رَجُلٌ: يَا ابْنَ عَبَّاسٍ، اتَّقِ اللَّهَ، فَإِنَّمَا يَسْأَلُ الرَّجْعَةَ الْكُفَّارُ؟ فَقَالَ: سَأَتْلُو عَلَيْكَ بِذَلِكَ قُرْآنًا: {يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ وَلاَ أَوْلاَدُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللهِ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُمُ الخَاسِرُونَ. وَأَنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُولَ رَبِّ لَوْلاَ أَخَّرْتَنِي إِلَى أَجَلٍ قَرِيبٍ فَأَصَّدَّقَ}، إِلَى قَوْلِهِ: {وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ} قَالَ: فَمَا

3316 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं: जिस के पास इतना माल हो जो उसे उसके रब के घर के हज तक पहुंचाता हो या उस में ज़कात वाजिब हो फिर वह यह काम न करे तो वह मौत के वक़्त लौटने का सवाल करेगा। एक आदमी ने कहा: ऐ इब्ने अब्बास! अल्लाह से डरो दुनिया में लौटने का सवाल तो काफ़िर करेंगे। तो उन्होंने फ़रमाया, इस बारे में मैं कुरआन की तिलावत करता हूँ "ऐ ईमान वालो! तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह की याद से गाफ़िल न कर दें और जो ऐसा करते हैं वही लोग ख़सारा उठाने वाले हैं और उस में ख़र्च करो जो हम ने तुम्हें दिया है इस से पहले कि तुम में से किसी को मौत आ जाए तो वह कहे ऐ मेरे रब तूने मुझे क़रीब मुद्दत तक मोहलत क्यों न दी कि मैं सदक़ा करता।" से लेकर " और अल्लाह तआला तुम्हारे आमाल से पूरी तरह बा ख़बर है।" तक (आयत:9- 11) उस ने कहा:

يُوجِبُ الزَّكَاةَ؟ قَالَ: إِذَا بَلَغَ الْمَالُ مِائَتَيْنِ فَصَاعِدًا. قَالَ: فَمَا يُوجِبُ الحَجَّ؟ قَالَ: الزَّادُ وَالبَعِيرُ.

ज़कात कब वाजिब होती है? फ़रमाया, जब माल दो सौ दिरहम या इस से ऊपर हो जाए, कहा: हज को क्या चीज़ वाजिब करती है? फ़रमाया, "रास्ते का ख़र्च और ऊँट।

ज़ईफ़ुल इस्नाद:तबरी फित् तफ़्सीर: 28/118. ज़ईफ़ जामे:5803.

वज़ाहत: (अबू ईसा कहते हैं) हमें अब्द बिन हुमैद ने (वह कहते हैं) हमें अब्दुर्रज्ज़ाक ने सौरी से उन्होंने यह्या बिन अबू हय्या से बवास्ता ज़ह्हाक, सय्यदना इब्ने अब्बास (रज़ि०) से उन्होंने नबी (ﷺ) से ऐसी ही हदीस बयान की है। नीज़ सुफ़ियान बिन उयय्ना और दीगर रावियों ने इस हदीस को अबू जनाब से बवास्ता ज़ह्हाक, इब्ने अब्बास (रज़ि०) का कौल रिवायत किया है वह मर्फ़ू नहीं है और यह अब्दुर्रज्ज़ाक की रिवायत से ज़्यादा सहीह है नीज़ अबू जनाब क़साब का नाम यह्या बिन अबू हय्या ही है यह हदीस में क़वी नहीं है।

64 بَاب وَمِنْ سُورَةِ التَّغَابُنِ

64 - तफ़सीर सूरह तग़ाबुन।

3317 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ، قَالَ: حَدَّثَنَا سِمَاكُ بْنُ حَرْبٍ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، وَسَأَلَهُ، رَجُلٌ عَنْ هَذِهِ الآيَةِ: {يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَكُمْ فَاحْذَرُوهُمْ} قَالَ: هَؤُلَاءِ رِجَالٌ أَسْلَمُوا مِنْ أَهْلِ مَكَّةَ وَأَرَادُوا أَنْ يَأْتُوا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَبَى أَزْوَاجُهُمْ وَأَوْلَادُهُمْ أَنْ يَدَعُوهُمْ أَنْ يَأْتُوا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَلَمَّا أَتَوْا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

3317 - इक्रिमा (रह०) रिवायत करते हैं कि एक शख़्स ने इब्ने अब्बास (रज़ि०) से इस आयत "ऐ ईमान वालो! बेशक तुम्हारी बीवियों और तुम्हारे बच्चों में से बअज़ तुम्हारे दुश्मन हैं सो तुम उनसे होशियार रहो।" (आयत: 14) के मुताल्लिक़ सवाल किया तो उन्होंने फ़रमाया, "यह अहले मक्का के कुछ आदमी थे जिन्होंने इस्लाम कुबूल किया और नबी (ﷺ) के पास आने का इरादा किया तो उनकी बीवियों और औलाद ने उन्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आने से रोका फिर जब वह रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आए तो उन्होंने देखा कि लोग तो दीन की बातें समझ चुके हैं, उन्होंने उनको सज़ा देने का इरादा किया तो अल्लाह तआला ने यह आयत

رَأَوُا النَّاسَ قَدْ فَقِهُوا فِي الدِّينِ هَمُّوا أَنْ يُعَاقِبُوهُمْ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ: {يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَكُمْ فَاحْذَرُوهُمْ} الآيَةَ.

नाज़िल फ़रमा दी ''ऐ ईमान वालो! बेशक तुमारी बीवियों और औलाद में से बअ़ज़ तुम्हारे दुश्मन हैं सो तुम उन से होशियार रहना।''

हसन: हाकिम:2/490. तबरानी:11720.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

65 بَابٌ وَمِنْ سُورَةِ التَّحْرِيمِ

65 - तफ़सीर सूरह तह्रीम।

3318 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي ثَوْرٍ، قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ يَقُولُ: لَمْ أَزَلْ حَرِيصًا أَنْ أَسْأَلَ عُمَرَ عَنِ الْمَرْأَتَيْنِ مِنْ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّتَيْنِ قَالَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ: {إِنْ تَتُوبَا إِلَى اللهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا} حَتَّى حَجَّ عُمَرُ، وَحَجَجْتُ مَعَهُ، فَصَبَبْتُ عَلَيْهِ مِنَ الإِدَاوَةِ فَتَوَضَّأَ، فَقُلْتُ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ، مَنِ الْمَرْأَتَانِ مِنْ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّتَانِ قَالَ اللَّهُ: {إِنْ تَتُوبَا إِلَى اللهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا} فَقَالَ لِي: وَاعَجَبًا لَكَ يَا ابْنَ عَبَّاسٍ قَالَ الزُّهْرِيُّ: وَكَرِهَ

3318 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैं हमेशा से इस बात का हरीस (ख़्वाहिशमंद) था कि मैं उमर (رضي الله عنه) से नबी (ﷺ) की अज़्वाजे मुतह्हरात में से उन दो औरतों के बारे में सवाल करूं जिन के मुताल्लिक़ अल्लाह तआला ने फ़रमाया है "अगर तुम दोनों अल्लाह की तरफ़ तौबा करो तो बेहतर है क्योंकि यक़ीनन तुम्हारे दिल हक़ से हट गए हैं।" (आयत:4) यहाँ तक कि उमर (رضي الله عنه) ने हज किया, मैंने एक बर्तन से उनके हाथों पर पानी बहाया, उन्होंने वुज़ू किया: फिर मैंने कहा: ऐ अमीरुल मोमिनीन नबी (ﷺ) की अज़्वाजे मुतह्हरात में से वह दो औरतें कौन थीं जिन के बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है "अगर तुम अल्लाह की तरफ़ तौबा करो तो बेहतर है क्योंकि यक़ीनन तुम्हारे दिल हक़ से हट गए हैं? तो उन्होंने मुझ से फ़रमाया, "ऐ इब्ने अब्बास तुम पर तअज्जुब है। ज़ोहरी फ़रमाते हैं: अल्लाह की क़सम! उन्हें इब्ने अब्बास का सवाल करना बुरा लगा लेकिन फिर भी इसे

وَاللَّهِ مَا سَأَلَهُ عَنْهُ وَلَمْ يَكْتُمْهُ: فَقَالَ: هِيَ عَائِشَةُ، وَحَفْصَةُ، قَالَ: ثُمَّ أَنْشَأَ يُحَدِّثُنِي الحَدِيثَ فَقَالَ: كُنَّا مَعْشَرَ قُرَيْشٍ نَغْلِبُ النِّسَاءَ، فَلَمَّا قَدِمْنَا الْمَدِينَةَ وَجَدْنَا قَوْمًا تَغْلِبُهُمْ نِسَاؤُهُمْ، فَطَفِقَ نِسَاؤُنَا يَتَعَلَّمْنَ مِنْ نِسَائِهِمْ، فَتَغَضَّبْتُ يَوْمًا عَلَى امْرَأَتِي، فَإِذَا هِيَ تُرَاجِعُنِي، فَأَنْكَرْتُ أَنْ تُرَاجِعَنِي، فَقَالَتْ: مَا تُنْكِرُ مِنْ ذَلِكَ؟ فَوَاللَّهِ إِنَّ أَزْوَاجَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيُرَاجِعْنَهُ، وَتَهْجُرُهُ إِحْدَاهُنَّ اليَوْمَ إِلَى اللَّيْلِ. قَالَ: قُلْتُ فِي نَفْسِي: قَدْ خَابَتْ مَنْ فَعَلَتْ ذَلِكَ مِنْهُنَّ وَخَسِرَتْ قَالَ: وَكَانَ مَنْزِلِي بِالعَوَالِي فِي بَنِي أُمَيَّةَ، وَكَانَ لِي جَارٌ مِنَ الأَنْصَارِ، كُنَّا نَتَنَاوَبُ النُّزُولَ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: فَيَنْزِلُ يَوْمًا فَيَأْتِينِي بِخَبَرِ الوَحْيِ وَغَيْرِهِ، وَأَنْزِلُ يَوْمًا فَآتِيهِ بِمِثْلِ ذَلِكَ. قَالَ: فَكُنَّا نُحَدَّثُ أَنَّ غَسَّانَ تُنْعِلُ الخَيْلَ لِتَغْزُوَنَا. قَالَ: فَجَاءَنِي يَوْمًا عِشَاءً فَضَرَبَ عَلَيَّ الْبَابَ، فَخَرَجْتُ إِلَيْهِ، فَقَالَ: حَدَثَ أَمْرٌ عَظِيمٌ. قُلْتُ: أَجَاءَتْ غَسَّانُ

छिपाया नहीं। वह मुझ से फ़रमाने लगे: वह आयशा और हफ़्सा थीं। रावी कहते हैं: फिर वह मुझे सारी बात सुनाने लगे फ़रमाया, हम कुरैशी लोग औरतों पर ग़ालिब थे फिर जब हम मदीना में आए तो हम ने ऐसी कौम को पाया जिन पर उनकी औरतें ग़ालिब थीं तो हमारी औरतों ने भी उनकी औरतों से सीखना शुरू कर दिया, चुनांचे एक दिन मैं अपनी बीवी पर गुस्सा हुआ तो वह मुझे जवाब देने लगी उस ने कहा: आप को यह बुरा क्यों लगता है अल्लाह की क़सम! नबी (ﷺ) की बीवियां भी आप (ﷺ) को जवाब देती हैं और उन में से कोई तो सारा दिन रात तक आप को छोड़े रखती है। उमर कहते हैं: मैंने अपने दिल में कहा उनमें से जिस ने भी यह काम किया है वह महरूम हो गई और उस ने नुक़सान उठाया। कहते हैं: मेरा घर मदीना की बलंद जानिब बनू उमय्या के महल्ले में था, और एक अंसारी मेरा पड़ोसी था, हम बारी- बारी रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास जाते थे, एक दिन वह नीचे जाता और वहि वग़ैरह की ख़बर मेरे पास लाता और एक दिन मैं नीचे जाता तो मैं भी ऐसे ही उसके पास आता, कहते हैं: हमें यह बात बताई जा रही थी कि गस्सान के लोग हमारे साथ जंग करने के लिए अपने घोड़ों को नाल (लोहे की खुरियाँ) लगा रहे हैं, फिर वह (अंसारी) एक दिन रात के वक़्त मेरे पास आया तो उस ने मेरा दरवाज़ा खटखटाया मैं उसकी तरफ़ गया वह कहने लगा: बहुत बड़ा हादसा हो गया है मैंने कहा: क्या गस्सान के लोग आ गए

قَالَ: أَعْظَمُ مِنْ ذَلِكَ، طَلَّقَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نِسَاءَهُ. قَالَ: قُلْتُ فِي نَفْسِي: خَابَتْ حَفْصَةُ وَخَسِرَتْ، قَدْ كُنْتُ أَظُنُّ هَذَا كَائِنًا، قَالَ: فَلَمَّا صَلَّيْتُ الصُّبْحَ شَدَدْتُ عَلَيَّ ثِيَابِي، ثُمَّ انْطَلَقْتُ حَتَّى دَخَلْتُ عَلَى حَفْصَةَ، فَإِذَا هِيَ تَبْكِي، فَقُلْتُ: أَطَلَّقَكُنَّ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَتْ: لاَ أَدْرِي، هُوَ ذَا مُعْتَزِلٌ فِي هَذِهِ الْمَشْرَبَةِ قَالَ: فَانْطَلَقْتُ فَأَتَيْتُ غُلاَمًا أَسْوَدَ، فَقُلْتُ: اسْتَأْذِنْ لِعُمَرَ، قَالَ: فَدَخَلَ ثُمَّ خَرَجَ إِلَيَّ، قَالَ: قَدْ ذَكَرْتُكَ لَهُ فَلَمْ يَقُلْ شَيْئًا. قَالَ: فَانْطَلَقْتُ إِلَى الْمَسْجِدِ، فَإِذَا حَوْلَ الْمِنْبَرِ نَفَرٌ يَبْكُونَ، فَجَلَسْتُ إِلَيْهِمْ، ثُمَّ غَلَبَنِي مَا أَجِدُ فَأَتَيْتُ الْغُلاَمَ فَقُلْتُ: اسْتَأْذِنْ لِعُمَرَ، فَدَخَلَ، ثُمَّ خَرَجَ إِلَيَّ، قَالَ: قَدْ ذَكَرْتُكَ لَهُ فَلَمْ يَقُلْ شَيْئًا، قَالَ: فَانْطَلَقْتُ إِلَى الْمَسْجِدِ أَيْضًا فَجَلَسْتُ، ثُمَّ غَلَبَنِي مَا أَجِدُ، فَأَتَيْتُ الْغُلاَمَ، فَقُلْتُ: اسْتَأْذِنْ لِعُمَرَ، فَدَخَلَ، ثُمَّ خَرَجَ إِلَيَّ فَقَالَ: ذَكَرْتُكَ لَهُ فَلَمْ يَقُلْ شَيْئًا. قَالَ: فَوَلَّيْتُ مُنْطَلِقًا،

हैं? उस ने कहा: इस से भी बड़ा है, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपनी बीवियों को तलाक़ दे दी है, मैंने अपने दिल में कहा हफ़्सा महरूम हो गई और उसने नुकसान उठाया मुझे यक़ीन था कि यह काम होने वाला है। कहते हैं: फिर जब मैंने सुबह की नमाज़ पढ़ी फिर अपने ऊपर कपड़े समेट कर चल पड़ा यहाँ तक कि मैं हफ़्सा के पास पहुंचा, देखा वह रो रही थी, मैंने कहा: क्या अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने तुम सब को तलाक़ दे दी है? वह कहने लगीं: मैं नहीं जानती, वह उस बाला खाने में अलाहिदा (अलग) हो गए हैं। कहते हैं: मैं चला फिर एक सियाह फाम गुलाम के पास आया। मैंने कहा: उमर के लिए इजाज़त तलब करो, वह अन्दर गया फिर मेरे पास आकर कहने लगा: मैंने आप (ﷺ) से तुम्हारा ज़िक्र किया था लेकिन आप (ﷺ) ने कोई जवाब नहीं दिया। कहते हैं मैं मस्जिद की तरफ़ चल दिया, देखा कि मिम्बर के इर्द गिर्द भी कुछ लोग बैठे रो रहे हैं मैं भी उन के पास बैठ गया फिर मुझ पर वही फ़िक्र ग़ालिब हुई तो मैं गुलाम के पास आया। मैंने कहा: उमर के लिए इजाज़त मांगो वह अन्दर गया फिर मेरे पास आकर कहने लगा: मैंने आप (ﷺ) से तुम्हारा ज़िक्र किया लेकिन आप ने कुछ नहीं कहा: मैं फिर मस्जिद की तरफ़ चला गया (वहाँ) बैठा फिर मुझ पर वही फ़िक्र ग़ालिब हुई तो मैं गुलाम के पास गया: मैंने कहा: उमर के लिए इजाज़त मांगो वह अन्दर गया फिर आकर कहने लगा: मैंने कहा लेकिन

فَإِذَا الغُلَامُ يَدْعُونِي، فَقَالَ: ادْخُلْ فَقَدْ أُذِنَ لَكَ، قَالَ: فَدَخَلْتُ، فَإِذَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُتَّكِئٌ عَلَى رَمْلِ حَصِيرٍ، فَرَأَيْتُ أَثَرَهُ فِي جَنْبِهِ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، أَطَلَّقْتَ نِسَاءَكَ؟ قَالَ: لاَ. قُلْتُ: اللَّهُ أَكْبَرُ، لَقَدْ رَأَيْتُنَا يَا رَسُولَ اللهِ وَكُنَّا مَعْشَرَ قُرَيْشٍ نَغْلِبُ النِّسَاءَ، فَلَمَّا قَدِمْنَا الْمَدِينَةَ وَجَدْنَا قَوْمًا تَغْلِبُهُمْ نِسَاؤُهُمْ، فَطَفِقَ نِسَاؤُنَا يَتَعَلَّمْنَ مِنْ نِسَائِهِمْ، فَتَغَضَّبْتُ يَوْمًا عَلَى امْرَأَتِي، فَإِذَا هِيَ تُرَاجِعُنِي، فَأَنْكَرْتُ ذَلِكَ، فَقَالَتْ: مَا تُنْكِرُ؟ فَوَاللَّهِ إِنَّ أَزْوَاجَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيُرَاجِعْنَهُ وَتَهْجُرُهُ إِحْدَاهُنَّ الْيَوْمَ إِلَى اللَّيْلِ، قَالَ: فَقُلْتُ لِحَفْصَةَ: أَتُرَاجِعِينَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَتْ: نَعَمْ، وَتَهْجُرُهُ إِحْدَانَا الْيَوْمَ إِلَى اللَّيْلِ، فَقُلْتُ: قَدْ خَابَتْ مَنْ فَعَلَتْ ذَلِكَ مِنْكُنَّ وَخَسِرَتْ، أَتَأْمَنُ إِحْدَاكُنَّ أَنْ يَغْضَبَ اللَّهُ عَلَيْهَا لِغَضَبِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَإِذَا هِيَ قَدْ هَلَكَتْ؟ فَتَبَسَّمَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ

आप ने कुछ नहीं फ़रमाया, “मैं वापसी के लिए मुड़ा तो वह गुलाम मुझे बुलाने लगा उस ने कहा: आप आ जाएं आप (ﷺ) ने आप के लिए इजाज़त दे दी है। मैं अन्दर गया तो देखा नबी (ﷺ) एक चटाई पर तकिया लगाए हुए थे, मैंने उस के निशान आप के पहलुओं पर देखे, फिर मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! क्या आप ने अपनी बीवी को तलाक़ दे दी है? आप ने फ़रमाया, “नहीं”. मैंने कहा: अल्लाहु अकबर, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! काश आप हमें देखते हम कुरैशी लोग औरतों पर ग़ालिब थे फिर जब हम मदीना में आए तो हम ने ऐसी कौम को पाया जिन पर उनकी औरतें ग़ालिब हैं तो हमारी औरतों ने भी उनकी औरतों की आदात सीखना शुरू कर दीं मैं एक दिन अपनी बीवी पर गुस्सा हुआ तो वह मुझे जवाब देने लगी मैंने इस बात को बुरा माना तो वह कहने लगी: आप क्यों बुरा मानते हैं अल्लाह की क़सम! नबी (ﷺ) की बीवियां भी उन्हें जवाब दे लेती हैं और उन में से कोई तो दिन भर रात तक उन्हें छोड़े रखती है। फिर मैंने हफ़्सा से कहा: क्या तुम रसूलुल्लाह (ﷺ) को जवाब देती हो? उस ने कहा: हाँ, और हम में से कोई तो सारा दिन रात तक आप को छोड़े रखती है, तो मैंने कहा: तुम में से जिस ने यह काम किया वह महरूम हो गई, और उस ने नुक़सान उठाया, क्या तुम इस बात से बेख़ौफ़ हो गई हो कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की नाराज़गी की वजह से अल्लाह भी उस पर नाराज़ हो जाएगा, फिर तो

وَسَلَّمَ. قَالَ: فَقُلْتُ لِحَفْصَةَ: لاَ تُرَاجِعِي رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَلاَ تَسْأَلِيهِ شَيْئًا، وَسَلِينِي مَا بَدَا لَكِ، وَلاَ يَغُرَّنَّكِ إِنْ كَانَتْ صَاحِبَتُكِ أَوْسَمَ مِنْكِ، وَأَحَبَّ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. قَالَ: فَتَبَسَّمَ أُخْرَى، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، أَسْتَأْنِسُ؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: فَرَفَعْتُ رَأْسِي فَمَا رَأَيْتُ فِي الْبَيْتِ إِلاَّ أُهُبَةً ثَلاَثَةً. قَالَ: فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ، ادْعُ اللّٰهَ أَنْ يُوَسِّعَ عَلَى أُمَّتِكَ، فَقَدْ وَسَّعَ عَلَى فَارِسَ وَالرُّومِ وَهُمْ لاَ يَعْبُدُونَهُ، فَاسْتَوَى جَالِسًا، فَقَالَ: أَفِي شَكٍّ أَنْتَ يَا ابْنَ الْخَطَّابِ؟ أُولَئِكَ قَوْمٌ عُجِّلَتْ لَهُمْ طَيِّبَاتُهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا. قَالَ: وَكَانَ أَقْسَمَ أَنْ لاَ يَدْخُلَ عَلَى نِسَائِهِ شَهْرًا، فَعَاتَبَهُ اللّٰهُ فِي ذَلِكَ وَجَعَلَ لَهُ كَفَّارَةَ الْيَمِينِ.

قَالَ الزُّهْرِيُّ، فَأَخْبَرَنِي عُرْوَةُ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: فَلَمَّا مَضَتْ تِسْعٌ وَعِشْرُونَ دَخَلَ عَلَيَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَدَأَ بِي قَالَ: يَا عَائِشَةُ، إِنِّي

यक़ीनन वह हलाक हो जाएगी? तो नबी (ﷺ) मुस्कुरा दिए, मजीद कहा: फिर मैंने हफ़्सा से कहा: रसूलुल्लाह (ﷺ) को जवाब न दिया कर और न ही उन से किसी चीज़ का सवाल करना, जो तुम्हें जरूरत हो मुझ से मांग लेना और तुम्हें यह भी बात धोके में न रखे कि तुम्हारी हम जोली आयशा तुम से ज़्यादा खूबसूरत और रसूलुल्लाह (ﷺ) को प्यारी है, कहते हैं: आप (ﷺ) दूसरी बार मुस्कुराए। मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मैं आपका दिल बहलाऊँ? आप ने फ़रमाया,हाँ, फिर मैंने अपना सर उठाया तो घर में मुझे तीन चमड़ों के अलावा कुछ नज़र न आया, मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! आप अल्लाह से दुआ कीजिए कि वह आप की उम्मत पर वुस्अत पैदा कर दे उस ने फ़ारस और रूम पर भी तो वुस्अत की है हालांकि वह उसकी इबादत भी नहीं करते। तो आप (ﷺ) सीधे हो कर बैठ गए, फिर फ़रमाया, "ऐ इब्ने ख़त्ताब! क्या तुम्हें शक है यह लोग वह हैं जिनकी रोज़ियाँ इन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में ही दे दी गई हैं।" कहते हैं: आप ने क़सम उठाई थी कि एक महीना अपनी बीवियों के पास नहीं जाएंगे सो इस पर अल्लाह तआला ने एताब किया फिर क़सम का कफ़्फ़ारा मुक़र्रर किया। जोहरी कहते हैं कि मुझे उर्वा ने बताया कि सय्यदा आयशा (رضی اللہ عنہا) फ़रमाती हैं: जब उन्तीस दिन गुज़रे तो नबी (ﷺ) मेरे पास तशरीफ़ लाये मुझ से इब्तिदा की आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ आयशा! मैं

ذَاكِرٌ لَكِ شَيْئًا فَلاَ تَعْجَلِي حَتَّى تَسْتَأْمِرِي أَبَوَيْكِ قَالَتْ: ثُمَّ قَرَأَ هَذِهِ الآيَةَ: {يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لأَزْوَاجِكَ} الآيَةَ. قَالَتْ: عَلِمَ وَاللَّهِ أَنَّ أَبَوَيَّ لَمْ يَكُونَا يَأْمُرَانِي بِفِرَاقِهِ، قَالَتْ: فَقُلْتُ: أَفِي هَذَا أَسْتَأْمِرُ أَبَوَيَّ؟ فَإِنِّي أُرِيدُ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالدَّارَ الآخِرَةَ. قَالَ مَعْمَرٌ، فَأَخْبَرَنِي أَيُّوبُ، أَنَّ عَائِشَةَ، قَالَتْ لَهُ: يَا رَسُولَ اللهِ، لاَ تُخْبِرْ أَزْوَاجَكَ أَنِّي اخْتَرْتُكَ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّمَا بَعَثَنِي اللَّهُ مُبَلِّغًا وَلَمْ يَبْعَثْنِي مُتَعَنِّتًا.

तुम से एक बात ज़िक्र करने लगा हूँ तुम अपने मां बाप के मशवरे के बगैर जल्दी (में फैसला) न करना।" कहती हैं: फिर आप(ﷺ) ने यह आयत पढ़ी " ऐ नबी! अपनी बीवियों से कह दीजिए" (अल- अहज़ाब:28) फ़रमाती हैं: अल्लाह की क़सम! आप जानते थे कि मेरे मां बाप आप से जुदा होने का मशवरा नहीं देंगे, मैंने अर्ज़ किया क्या इस बारे में अपने वालिदैन से मशवरा करूं? मैं तो अल्लाह, उस के रसूल और आख़िरत के घर की ही ख़्वाहिश मन्द हूँ, मामर कहते हैं: मुझे अय्यूब ने बताया कि आयशा (رضي الله عنها) ने आप (ﷺ) से कहा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! आप अपनी बीवियों को न बताना कि मैंने आप को पसंद किया है तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने मुझे बात पहुंचाने वाला बना कर भेजा है न कि मशक्क़त में डालने वाला बना कर।"

तख़रीज के लिए देखें: हदीस नम्बर 2461.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है जो कि कई तुरूक़ (सनदों) से इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) से मर्वी है।

66 بَاب وَمِنْ سُورَةِ ن

66 - तफ़सीर सूरह नून वल क़लम।

3319 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ الطَّيَالِسِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الوَاحِدِ بْنُ سُلَيْمٍ، قَالَ: قَدِمْتُ مَكَّةَ فَلَقِيتُ عَطَاءَ بْنَ أَبِي رَبَاحٍ فَقُلْتُ: يَا أَبَا مُحَمَّدٍ إِنَّ نَاسًا عِنْدَنَا يَقُولُونَ فِي القَدَرِ، فَقَالَ عَطَاءٌ:

3319 - अब्दुल वाहिद बिन सुलैम कहते हैं कि मैं मक्का में आया तो मेरी मुलाक़ात अता बिन अबी रबाह से हुई, मैंने कहा: ऐ मुहम्मद! हमारे पास कुछ लोग तक़दीर के बारे में बात करते हैं तो अता ने कहा: मेरी मुलाक़ात वलीद बिन उबादा बिन सामित से हुई थी तो उन्होंने फ़रमाया, "मुझे मेरे बाप ने बयान किया कि

لَقِيتُ الْوَلِيدَ بْنَ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ، قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: إِنَّ أَوَّلَ مَا خَلَقَ اللَّهُ الْقَلَمَ، فَقَالَ لَهُ: اكْتُبْ، فَجَرَى بِمَا هُوَ كَائِنٌ إِلَى الأَبَدِ.

मैंने आप (रसूल (ﷺ) को सुना आप फ़रमा रहे थे: "बेशक अल्लाह ने सब से पहले कलम को पैदा किया फिर उस से कहा: लिख, तो वह हमेशा तक होने वाले कामों को लिखने लग गया।"

सहीह: तख़रीज के लिए देखें: हदीस नम्बर 2155.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रहिमहुल्लाह) फ़रमाते हैं: इस हदीस में एक किस्सा भी है यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है और इस बारे में इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) से भी हदीस मर्वी है।

67 بَابٌ وَمِنْ سُورَةِ الحَاقَّةِ

67 - तफ़सीर सूरह हाक्क़ा।

3320 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ أَبِي قَيْسٍ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَيْرَةَ، عَنِ الأَحْنَفِ بْنِ قَيْسٍ، عَنِ الْعَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ قَالَ: زَعَمَ أَنَّهُ كَانَ جَالِسًا فِي الْبَطْحَاءِ فِي عِصَابَةٍ، وَرَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَالِسٌ فِيهِمْ، إِذْ مَرَّتْ عَلَيْهِمْ سَحَابَةٌ فَنَظَرُوا إِلَيْهَا، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: هَلْ تَدْرُونَ مَا اسْمُ هَذِهِ؟ قَالُوا: نَعَمْ، هَذَا السَّحَابُ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: وَالْمُزْنُ؟ قَالُوا: وَالْمُزْنُ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: وَالْعَنَانُ؟ قَالُوا: وَالْعَنَانُ ثُمَّ قَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ

3320 - सय्यदना अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब (रज़ियल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि वह एक जमाअत में मक्का की कंकरीली जगह (बत्हा) में बैठे हुए थे और रसूलुल्लाह (ﷺ) भी उन में बैठे थे कि अचानक उन के ऊपर से एक बादल गुज़रा, लोग उसकी तरफ़ देखने लगे तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या तुम जानते हो कि इसका नाम क्या है? लोगों ने अर्ज़ किया जी हाँ यह बादल है? अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़रमाया, "मुज़्न भी?" अर्ज़ किया मुज़्न भी, रसूलुल्लाह ?(ﷺ) ने फ़रमाया, "और अनान भी" अर्ज़ किया अनान भी (कहा जाता है) फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन से फ़रमाया, "क्या तुम जानते हो कि आसमान और ज़मीन के दर्मियान कितनी दूरी है?" लोगों ने अर्ज़ किया नहीं, अल्लाह की क़सम! हम नहीं जानते। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "इन दोनों के दर्मियान, इकहत्तर,

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: هَلْ تَدْرُونَ كَمْ بُعْدُ مَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ؟ قَالُوا: لاَ، وَاللَّهِ مَا نَدْرِي، قَالَ: فَإِنَّ بُعْدَ مَا بَيْنَهُمَا إِمَّا وَاحِدَةٌ، وَإِمَّا اثْنَتَانِ، أَوْ ثَلاَثٌ وَسَبْعُونَ سَنَةً، وَالسَّمَاءُ الَّتِي فَوْقَهَا كَذَلِكَ، حَتَّى عَدَّدَهُنَّ سَبْعَ سَمَوَاتٍ كَذَلِكَ، ثُمَّ قَالَ: فَوْقَ السَّمَاءِ السَّابِعَةِ بَحْرٌ بَيْنَ أَعْلاَهُ وَأَسْفَلِهِ كَمَا بَيْنَ السَّمَاءِ إِلَى السَّمَاءِ، وَفَوْقَ ذَلِكَ ثَمَانِيَةُ أَوْعَالٍ بَيْنَ أَظْلاَفِهِنَّ وَرُكَبِهِنَّ مِثْلُ مَا بَيْنَ سَمَاءٍ إِلَى سَمَاءٍ، ثُمَّ فَوْقَ ظُهُورِهِنَّ الْعَرْشُ، بَيْنَ أَسْفَلِهِ وَأَعْلاَهُ مِثْلُ مَا بَيْنَ سَمَاءٍ إِلَى سَمَاءٍ، وَاللَّهُ فَوْقَ ذَلِكَ.

बहत्तर या तिहत्तर साल की दूरी है और उस से ऊपर वाला आसमान भी इसी तरह है।" यहाँ तक कि आप ने इसी तरह सात आसमान गिने, फिर फ़रमाया, "सातवें आसमान के ऊपर समन्दर है उसके ऊपर और नीचे वाले हिस्से के दर्मियान एक आसमान से दुसरे आसमान जितना फ़ासला है उसके ऊपर आठ पहाड़ी बकरे हैं जिनके खुरों और घुटनों के दर्मियान आसमान से आसमान जितना फासला है फिर उनकी पुश्तों (पीठों) के ऊपर अर्श है, जिस के निचले और ऊपर वाले हिस्से के दर्मियान आसमान से आसमान जितना फ़ासला है और अल्लाह तआला उस (अर्श) के ऊपर है।"

ज़ईफ़: अबू दाऊद:4723. इब्ने माजह:193. अहमद:1/206.

तौज़ीह: اوعال : وعل की जमा है। पहाड़ी बकरा लेकिन शायद इस से मुराद फ़रिश्ते हैं जो ऐसी सूरत में हों। (वल्लाहु तआला आलम)

वज़ाहत: अब्द बिन हुमैद कहते हैं मैंने यह्या बिन मईन से सुना वह कह रहे थे कि अब्दुर्रहमान बिन साद हज करने क्यों नहीं जाते कि लोग भी उन से यह हदीस सुन लें।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है और वलीद बिन अबी सौर ने भी सिमाक से इसी तरह मर्फ़ू रिवायत की है जब कि शरीक ने सिमाक से इस हदीस का कुछ हिस्सा मौक़ूफ़ रिवायत किया है उसे मर्फ़ू ज़िक्र नहीं किया।

नीज़ अब्दुर्रहमान अर्राज़ी हैं जो कि अब्दुल्लाह बिन साद के बेटे थे।

3321 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ سَعْدٍ الرَّازِيُّ وَهُوَ الدَّشْتَكِيُّ، أَنَّ أَبَاهُ، أَخْبَرَهُ، أَنَّ

3321 - अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन साद अर्राज़ी रिवायत करते हैं कि उन के बाप ने बयान किया कि उनके बाप (साद) (رحمه الله) ने बताया: मैंने बुखारा में एक शख़्स को खच्चर

أَبَاهُ أَخْبَرَهُ قَالَ: رَأَيْتُ رَجُلاً بِبُخَارَى عَلَى بَغْلَةٍ، وَعَلَيْهِ عِمَامَةٌ سَوْدَاءُ، يَقُولُ: كَسَانِيهَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

पर (सवार) देखा उस (के सर पर) सियाह पगड़ी थी और वह कह रहा था, यह मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पहनाई थी।

ज़ईफ़ुल इस्नाद:अबू दाऊद:4038.

68 بَاب وَمِنْ سُورَةِ سَأَلَ سَائِلٌ

68 - तफ़सीर सूरह मआरिज।

3322 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا رِشْدِينُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ الحَارِثِ، عَنْ دَرَّاجٍ أَبِي السَّمْحِ، عَنْ أَبِي الهَيْثَمِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي قَوْلِهِ: {كَالمُهْلِ} قَالَ: كَعَكَرِ الزَّيْتِ، فَإِذَا قَرَّبَهُ إِلَى وَجْهِهِ سَقَطَتْ فَرْوَةُ وَجْهِهِ فِيهِ.

3322 - सय्यदना अबू सईद (رضی اللہ عنہ) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने अल्लाह तआला के फ़रमान "{8} {كَالمُهْلِ} की तफ़सीर में फ़रमाया, "तेल की तलछट की तरह, जब वह उसे अपने चेहरे के क़रीब करेगा तो उसके चेहरे की जिल्द उस में गिर जाएगी।"

ज़ईफ़: तख़रीज के लिए देखें: हदीस नम्बर 2581.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है हम इसे रिश्दीन के तरीक़ से ही जानते हैं।

69 بَاب وَمِنْ سُورَةِ الجِنِّ

69 - तफ़सीर सूरह जिन्न।

3323 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو الوَلِيدِ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ أَبِي بِشْرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: مَا قَرَأَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى الجِنِّ وَلاَ رَآهُمْ، انْطَلَقَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي طَائِفَةٍ مِنْ أَصْحَابِهِ عَامِدِينَ إِلَى سُوقِ عُكَاظٍ، وَقَدْ حِيلَ بَيْنَ الشَّيَاطِينِ وَبَيْنَ خَبَرِ السَّمَاءِ، وَأُرْسِلَتْ عَلَيْهِمُ الشُّهُبُ،

3323 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضی اللہ عنہ) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जिन्नों के ऊपर न कुरआन पढ़ा और न ही उन्हें देखा था, रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने सहाबा की एक जमात में उकाज़ के बाज़ार की तरफ़ चले, जब कि शयातीन और आसमान की ख़बर के दर्मियान कोई चीज़ हायल कर दी गई थी और उन पर शोले मारे गए थे, चुनाँचे शयातीन अपनी कौम के पास वापस गए तो कौम के लोग कहने लगे: तुम्हें क्या हुआ?

فَرَجَعَتِ الشَّيَاطِينُ إِلَى قَوْمِهِمْ، فَقَالُوا: مَا لَكُمْ؟ قَالُوا: حِيلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَ خَبَرِ السَّمَاءِ، وَأُرْسِلَتْ عَلَيْنَا الشُّهُبُ فَقَالُوا: مَا حَالَ بَيْنَنَا وَبَيْنَ خَبَرِ السَّمَاءِ إِلاَّ أَمْرٌ حَدَثَ، فَاضْرِبُوا مَشَارِقَ الأَرْضِ وَمَغَارِبَهَا، فَانْظُرُوا مَا هَذَا الَّذِي حَالَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ خَبَرِ السَّمَاءِ؟ قَالَ: فَانْطَلَقُوا يَضْرِبُونَ مَشَارِقَ الأَرْضِ وَمَغَارِبَهَا، يَبْتَغُونَ مَا هَذَا الَّذِي حَالَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ خَبَرِ السَّمَاءِ، فَانْصَرَفَ أُولَئِكَ النَّفَرُ الَّذِينَ تَوَجَّهُوا نَحْوَ تِهَامَةَ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ وَهُوَ بِنَخْلَةَ عَامِدًا إِلَى سُوقِ عُكَاظٍ، وَهُوَ يُصَلِّي بِأَصْحَابِهِ صَلاَةَ الفَجْرِ، فَلَمَّا سَمِعُوا القُرْآنَ اسْتَمَعُوا لَهُ، فَقَالُوا: هَذَا وَاللَّهِ الَّذِي حَالَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ خَبَرِ السَّمَاءِ. قَالَ: فَهُنَالِكَ رَجَعُوا إِلَى قَوْمِهِمْ، فَقَالُوا: يَا قَوْمَنَا {إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا عَجَبًا يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ وَلَنْ نُشْرِكَ بِرَبِّنَا أَحَدًا} فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى عَلَى نَبِيِّهِ: {قُلْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِنَ الجِنِّ} وَإِنَّمَا أُوحِيَ إِلَيْهِ قَوْلُ الجِنِّ. وَبِهَذَا الإِسْنَادِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَوْلُ الجِنِّ لِقَوْمِهِمْ: {لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللهِ يَدْعُوهُ كَادُوا يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا} قَالَ: لَمَّا رَأَوْهُ يُصَلِّي وَأَصْحَابُهُ يُصَلُّونَ

उन्होंने कहा: हमारे और आसमान की ख़बर के दर्मियान कोई रुकावट आ चुकी है और हमारे ऊपर शोले छोड़े गए हैं, तो वह कहने लगे: हमारे और आसमान की ख़बर के दर्मियान कोई नई चीज़ रुकावट बनी है सो तुम ज़मीन की मश्रिकों और इसकी मग्रिबों में फैल जाओ देखो वह क्या चीज़ है जो हमारे और ख़बर के दर्मियान हाइल हुई है? कहते हैं: फिर वह चले फिर ज़मीन की मश्रिक़ व मग्रिब में तलाश करने लगे कि वह कौन सी चीज़ है जो उनके और ख़बरे आसमान के दर्मियान हायल हुई है। चुनांचे वह लोग जो तिहामा की तरफ़ आए थे रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास पहुंचे, उकाज़ के बाज़ार की तरफ़ जाते हुए वादिए नख्ला में अपने सहाबा को फज्र की नमाज़ पढ़ा रहे थे, जब उन्होंने क़ुरआन सुना तो कान लगा कर कहने लगे: अल्लाह की क़सम! यही चीज़ तुम्हारे और आसमान की ख़बर के दर्मियान हायल हुई है। रावी कहते हैं: फिर वह उसी वक़्त अपनी कौम के पास जाकर कहने लगे: ऐ हमारी कौम! " बिलाशुब्हा हम ने एक अजीब क़ुरआन सुना है, जो सीधी राह की तरफ़ ले जाता है हम तो उस पर ईमान ले आए और अब हम अपने रब के साथ किसी को कभी शरीक नहीं करेंगे।" (आयत: 1- 2) चुनांचे अल्लाह तआला ने अपने नबी (ﷺ) पर यह सूरत नाज़िल फ़रमाई "कह दीजिए मेरी तरफ़ वहि की गई है कि बेशक जिन्नों की एक जमाअत ने कान लगा कर सुना।" आप की तरफ़ तो सिर्फ

بِصَلَاتِهِ وَيَسْجُدُونَ بِسُجُودِهِ، قَالَ: تَعَجَّبُوا مِنْ طَوَاعِيَةِ أَصْحَابِهِ لَهُ قَالُوا لِقَوْمِهِمْ: {لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللهِ يَدْعُوهُ كَادُوا يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا}.

जिन्नों की बात वहि की गई थी।
बुख़ारी:773. मुस्लिम:449.

रावी कहता है: इसी सनद से इब्ने अब्बास (رضی اللہ) से मर्वी है कि यह भी जिन्नों ने ही अपनी कौम से कहा था "जब अल्लाह का बन्दा उसे पुकारने के लिए खड़ा हुआ तो वह क़रीब थे कि उस पर तह बतह जमा हो जाएँ।" फ़रमाते हैं: जब उन्होंने देखा कि आप (ﷺ) नमाज़ पढ़ रहे हैं और आपके सहाबा भी आप के साथ नमाज़ पढ़ रहे थे और आप के सज्दे पर सज्दा करते थे तो उन्होंने आप के सहाबा की इताअत पर तअज्जुब किया (और) अपनी कौम से कहा: जब अल्लाह का बन्दा उसे पुकारने खड़ा हुआ तो वह सहाबा क़रीब थे कि उस पर तह बतह जमा हो जाते।" (आयत:19)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3324 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ الجِنُّ يَصْعَدُونَ إِلَى السَّمَاءِ يَسْتَمِعُونَ الوَحْيَ، فَإِذَا سَمِعُوا الكَلِمَةَ زَادُوا فِيهَا تِسْعًا، فَأَمَّا الكَلِمَةُ فَتَكُونُ حَقًّا، وَأَمَّا مَا زَادُوهُ فَيَكُونُ بَاطِلاً، فَلَمَّا بُعِثَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُنِعُوا مَقَاعِدَهُمْ، فَذَكَرُوا ذَلِكَ لِإِبْلِيسَ، وَلَمْ تَكُنِ النُّجُومُ يُرْمَى بِهَا قَبْلَ ذَلِكَ، فَقَالَ لَهُمْ إِبْلِيسُ: مَا هَذَا إِلاَّ مِنْ أَمْرٍ قَدْ حَدَثَ فِي الأَرْضِ، فَبَعَثَ جُنُودَهُ فَوَجَدُوا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ

3324 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضی اللہ) फ़रमाते हैं: जिन्नात आसमान की तरफ़ चढ़ कर वहि की बातों पर कान लगा कर सुनते थे, फिर जब कोई बात सुन लेते तो उस में नौ बातों का इज़ाफ़ा कर देते, वह बात तो सहीह साबित हो जाती और उनका इज़ाफ़ा बातिल होता, चुनांचे जब रसूलुल्लाह (ﷺ) को नबुव्वत मिली तो उनकी मजलिस छीन गई, उन्होंने इब्लीस से इसका ज़िक्र किया। और इससे पहले उन पर सितारों की मार नहीं पड़ती थी तो इब्लीस ने उन से कहा: यह सिर्फ ज़मीन में कोई रूनूमा होने वाली चीज़ ही हो सकती है फिर उस ने अपने लश्कर भेजे तो उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को दो पहाड़ों के दर्मियान खड़े नमाज़ पढ़ते हुए पाया। शायद उन्होंने मक्का का कहा था फिर वह उस से मिले तो उसे उसकी ख़बर दी वह कहने लगा: यही

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَائِمًا يُصَلِّي بَيْنَ جَبَلَيْنِ أُرَاهُ قَالَ: بِمَكَّةَ، فَلَقُوهُ فَأَخْبَرُوهُ، فَقَالَ: هَذَا الْحَدَثُ الَّذِي حَدَثَ فِي الأَرْضِ.

नई चीज़ ज़मीन में रूनुमा हुई है।

सहीह: अहमद: 1/274. तबरानी: 12431.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

70 بَاب وَمِنْ سُورَةِ الْمُدَّثِّرِ

70 - तफ़सीर सूरह मुदस्सिर।

3325 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يُحَدِّثُ عَنْ فَتْرَةِ الوَحْيِ، فَقَالَ فِي حَدِيثِهِ: بَيْنَمَا أَنَا أَمْشِي سَمِعْتُ صَوْتًا مِنَ السَّمَاءِ فَرَفَعْتُ رَأْسِي، فَإِذَا الْمَلَكُ الَّذِي جَاءَنِي بِحِرَاءَ جَالِسٌ عَلَى كُرْسِيٍّ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ فَجُثِثْتُ مِنْهُ رُعْبًا، فَرَجَعْتُ فَقُلْتُ: زَمِّلُونِي زَمِّلُونِي، فَدَثَّرُونِي، فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ: {يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ قُمْ فَأَنْذِرْ}، إِلَى قَوْلِهِ: {وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ} قَبْلَ أَنْ تُفْرَضَ الصَّلَاةُ.

3325 - सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आप वहि के मौकूफ़ होने के बारे में बयान फ़रमा रहे थे, आप ने अपनी हदीस में फ़रमाया, "मैं चल रहा था कि मैंने आसमान से एक आवाज़ सुनी, चुनांचे मैंने अपना सर उठाया तो देखा वही फ़रिश्ता जो हिरा में मेरे पास आया था आसमानों ज़मीन के दर्मियान कुर्सी पर बैठा हुआ था, मैं उस से डर गया फिर मैं वापस घर आया तो मैंने कहा: मुझे कम्बल में लपेट दो मुझे कम्बल में लपेट दो, तो उन्होंने मुझे चादर में लपेट लिया फिर अल्लाह तआला ने यह आयात "ऐ चादर ओढ़ने वाले! खड़ा हो कर डरा" से लेकर " और नापाकी को दूर कर" (आयत: 1- 5) तक नाज़िल फ़रमाई, नमाज़ फ़र्ज़ होने से पहले (नाज़िल हुई थीं)।

बुख़ारी:4. मुस्लिम:161.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और इसे यह्या बिन अबी कसीर ने भी बवास्ता अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ऐसे ही जाबिर (رضي الله عنه) से रिवायत किया है, और सलमा का नाम अब्दुल्लाह था।

3326 - हद्दसना अब्दु ...

3326 - सय्यदना अबू सईद (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "सऊद आग का एक पहाड़ है जिस पर काफिर सत्तर साल तक चढ़ता रहेगा फिर हमेशा उसी तरह ही गिरता रहेगा।"

ज़ईफ़: तख़रीज के लिए देखें: हदीस नम्बर 2576.

3326 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ مُوسَى، عَنِ ابْنِ لَهِيعَةَ، عَنْ دَرَّاجٍ، عَنْ أَبِي الهَيْثَمِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: الصَّعُودُ جَبَلٌ مِنْ نَارٍ يَتَصَعَّدُ فِيهِ الكَافِرُ سَبْعِينَ خَرِيفًا، ثُمَّ يَهْوِي بِهِ كَذَلِكَ أَبَدًا.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है हम इसे इब्ने लहीया के तरीक़ से ही मर्फ़ू जानते हैं नीज़ इसका कुछ हिस्सा बवास्ता अतिय्या, अबू सईद (رضي الله عنه) के कौल की सूरत में मौकूफ़न भी मर्वी है।

3327 - सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि यहूदियों के कुछ लोगों ने नबी (ﷺ) के कुछ सहाबा से कहा: क्या तुम्हारे नबी जानते हैं कि जहन्नम के दारोगे कितने हैं? उन्होंने कहा: हम नहीं जानते हम अपने नबी से पूछेंगे। चुनांचे उनमें से एक नबी (ﷺ) के पास आकर कहने लगा: ऐ मुहम्मद(ﷺ)! आज आपके सहाबा मग्लूब हुए?" उस ने कहा: यहूदियों ने उन से पूछा था कि तुम्हारे नबी जहन्नम के दारोगों की तादाद जानते हैं? आप ने फ़रमाया, "तो उन्होंने क्या कहा?" वह कहने लगा: उन लोगों ने कहा: हम नहीं जानते हम अपने नबी से पूछेंगे। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या वह लोग भी मग्लूब होते हैं जिन से वह बात पूछी जाए जिसका उन्हें इल्म न हो और वह कह दे हम नहीं जानते हम अपने नबी से पूछेंगे, बल्कि उन (यहूदी) लोगों ने तो अपने नबी से सवाल करते हुए कहा था

3327 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مُجَالِدٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: قَالَ نَاسٌ مِنَ اليَهُودِ لِأُنَاسٍ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: هَلْ يَعْلَمُ نَبِيُّكُمْ كَمْ عَدَدُ خَزَنَةِ جَهَنَّمَ؟ قَالُوا: لاَ نَدْرِي حَتَّى نَسْأَلَهُ، فَجَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ، غُلِبَ أَصْحَابُكَ اليَوْمَ. قَالَ: وَبِمَ غُلِبُوا؟ قَالَ: سَأَلَهُمْ يَهُودُ: هَلْ يَعْلَمُ نَبِيُّكُمْ كَمْ عَدَدُ خَزَنَةِ جَهَنَّمَ؟ قَالَ: فَمَا قَالُوا؟ قَالَ: قَالُوا: لاَ نَدْرِي حَتَّى نَسْأَلَ نَبِيَّنَا. قَالَ: أَفَغُلِبَ قَوْمٌ سُئِلُوا عَمَّا لاَ يَعْلَمُونَ؟ فَقَالُوا: لاَ نَعْلَمُ حَتَّى نَسْأَلَ نَبِيَّنَا، لَكِنَّهُمْ قَدْ سَأَلُوا نَبِيَّهُمْ، فَقَالُوا: أَرِنَا اللَّهَ جَهْرَةً، عَلَيَّ بِأَعْدَاءِ

اللهِ، إِنِّي سَائِلُهُمْ عَنْ تُرْبَةِ الجَنَّةِ وَهِيَ الدَّرْمَكُ. فَلَمَّا جَاءُوا قَالُوا: يَا أَبَا القَاسِمِ، كَمْ عَدَدُ خَزَنَةِ جَهَنَّمَ؟ قَالَ: هَكَذَا وَهَكَذَا فِي مَرَّةٍ عَشَرَةٌ، وَفِي مَرَّةٍ تِسْعَةٌ، قَالُوا: نَعَمْ، قَالَ لَهُمُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا تُرْبَةُ الجَنَّةِ؟ قَالَ: فَسَكَتُوا هُنَيْهَةً، ثُمَّ قَالُوا: خُبْزَةٌ يَا أَبَا القَاسِمِ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الخُبْزُ مِنَ الدَّرْمَكِ.

कि हमें ज़ाहिरन अल्लाह दिखाओ। अल्लाह के दुश्मनों को मेरे पास लाओ मैं उन से जन्नत की मिट्टी के बारे में पूछता हूँ जो कि मैदा है।" फिर जब वह आए तो कहने लगे: ऐ अबुल क़ासिम! जहन्नम के दारोगे कितने हैं?" आप ने इशारे से फ़रमाया, "इतने और इतने।" एक मर्तबा दस और एक मर्तबा नौ वह कहने लगे: जी हाँ। नबी (ﷺ) ने उन से फ़रमाया, "जन्नत की मिट्टी क्या है?" रावी कहते हैं वह थोड़ी देर ख़ामोश रहे फिर कहने लगे: ऐ अबुल क़ासिम क्या वह रोटी है? नबी (ﷺ) ने फ़रमाया:" मैदे की रोटी है।"

ज़ईफ़: अहमद:3/361. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:3348.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस हदीस को हम सिर्फ मुजालिद के तरीक़ से ही जानते हैं।

3328 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ الصَّبَّاحِ البَزَّارُ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ حُبَابٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا سُهَيْلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ القُطَعِيُّ، وَهُوَ أَخُو حَزْمِ بْنِ أَبِي حَزْمٍ القُطَعِيُّ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَالَ فِي هَذِهِ الآيَةِ: {هُوَ أَهْلُ التَّقْوَى وَأَهْلُ الْمَغْفِرَةِ} قَالَ: قَالَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ: أَنَا أَهْلٌ أَنْ أُتَّقَى، فَمَنْ اتَّقَانِي فَلَمْ يَجْعَلْ مَعِي إِلَهًا، فَأَنَا أَهْلٌ أَنْ أَغْفِرَ لَهُ.

3328 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इस आयत "वही लायक़ है कि उस से डरा जाए और वही बख़्शिश करने के लायक़ है" (आयत:56) की तफ़्सीर में फ़रमाया, "अल्लाह तबारक व तआला फ़रमाते हैं: मैं इस लायक़ हूँ कि मुझ से डरा जाए पस जो शख़्स मुझ से डरे फिर वह मेरे साथ किसी को माबूद न बनाए तो मैं इस लायक़ हूँ कि उसे बख़्श दूं।"

ज़ईफ़: इब्ने माजह:4299. अहमद:3/142. दारमी:2727.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है नीज़ सुहैल इस हदीस में क़वी नहीं है और साबित से रिवायत करने में सुहैल अकेला है।

71 - तफ़सीर सूरह क़यामा।

71 بَاب وَمِنْ سُورَةِ الْقِيَامَةِ

3329 - अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) पर जब कुरआन नाज़िल होता तो आप उसे याद करने के इरादे से अपनी ज़बान को हरकत देते थे, चुनांचे अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमा दी " आप अपनी ज़बान को हरकत न दें ताकि आप इसे जल्द याद कर लें" (आयत: 16) रावी कहते हैं: फिर आप अपने होटों को हरकत देते थे और सुफ़ियान ने भी (हदीस बयान करते वक़्त) अपने होंट हिलाए।

3329 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ مُوسَى بْنِ أَبِي عَائِشَةَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِذَا نَزَلَ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ يُحَرِّكُ بِهِ لِسَانَهُ يُرِيدُ أَنْ يَحْفَظَهُ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى: {لَا تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ} قَالَ: فَكَانَ يُحَرِّكُ بِهِ شَفَتَيْهِ، وَحَرَّكَ سُفْيَانُ شَفَتَيْهِ.

बुख़ारी:5. मुस्लिम:448. निसाई:935.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

अली बिन मदीनी कहते हैं: यह्या बिन सईद अल-क़त्तान का कहना है कि सुफ़ियान सौरी, मूसा बिन अबी आयशा की अच्छे अल्फ़ाज़ में तारीफ़ किया करते थे।

3330 - इब्ने उमर (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "सब से कम मर्तबे वाला जन्नती वह होगा जो अपने बाग़ात, बीवियों, ख़ादिमों और पलन्गों को देखेगा कि उनकी मसाफ़त एक हज़ार साल की है और अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के नज़दीक सब से ज़्यादा इज़्ज़त वाला वह होगा जो सुबह शाम उसका दीदार करेगा फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने यह आयत पढ़ी " कुछ चेहरे उस दिन हश्शाश बश्शाश होंगे, अपने रब को देख रहे होंगे। (आयत: 22- 23)

3330 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي شَبَابَةُ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ ثُوَيْرٍ، قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ أَدْنَى أَهْلِ الْجَنَّةِ مَنْزِلَةً لَمَنْ يَنْظُرُ إِلَى جِنَانِهِ وَأَزْوَاجِهِ وَخَدَمِهِ وَسُرُرِهِ مَسِيرَةَ أَلْفِ سَنَةٍ، وَأَكْرَمُهُمْ عَلَى اللهِ مَنْ يَنْظُرُ إِلَى وَجْهِهِ غُدْوَةً وَعَشِيَّةً، ثُمَّ قَرَأَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: {وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَاضِرَةٌ إِلَى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ}.

ज़ईफ़: तख़रीज के लिए देखें: हदीस नम्बर 2553.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है इसे बहुत से रावियों ने इस्राईल से इसी तरह मर्फ़ू रिवायत किया है।

जबकि अब्दुल मलिक बिन अबजर ने सुवैर से इब्ने उमर (رضي الله) का कौल रिवायत किया है वह मर्फ़ू नहीं है और अश्जई ने भी सुफ़ियान से बवास्ता सुवैर मुजाहिद से इब्ने उमर (رضي الله) का कौल रिवायत किया है वह मर्फ़ू नहीं है नीज़ सौरी के अलावा हम किसी को नहीं जानते जिस ने इसमें मुजाहिद का ज़िक्र किया हो।

यह हदीस हमें अबू कुरैब ने बवास्ता अब्दुल्लाह अश्जई, सुफ़ियान से बयान की है। सुवैर की कुनियत अबू जहम है जबकि अबू फ़ाख़्ता का नाम सईद बिन अलाक़ा था।

72 - तफ़सीर सूरह अबस।

72 بَاب وَمِنْ سُورَةِ عَبَسَ

3331 - सय्यदा आयशा (رضي الله) फ़रमाती हैं: सूरह "{عَبَسَ وَتَوَلَّى} नाबीना सहाबी इब्ने उम्मे मक्तूम (رضي الله) के बारे में नाज़िल हुई थी, वह रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आकर कहने लगे: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मेरी रहनुमाई कीजिए जब कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास मुश्रिकीन के बड़े लोगों में से एक आदमी (बैठा हुआ) था, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) उस से मुंह फेरने लगे और दुसरे शख़्स पर मुतवज्जह होते थे और आप फ़रमा रहे थे। "क्या मेरी बात में तुम्हें कोई बुराई नज़र आ रही है?" वह कहता: नहीं, तो इस बारे में यह नाज़िल हुई थी।

सहीहुल इस्नाद: हाकिम:2/514. अबू याला:4848. इब्ने हिब्बान:535.

3331 - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ الأُمَوِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، قَالَ: هَذَا مَا عَرَضْنَا عَلَى هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: أُنْزِلَ: {عَبَسَ وَتَوَلَّى} فِي ابْنِ أُمِّ مَكْتُومٍ الأَعْمَى، أَتَى رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَجَعَلَ يَقُولُ: يَا رَسُولَ اللهِ أَرْشِدْنِي، وَعِنْدَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلٌ مِنْ عُظَمَاءِ الْمُشْرِكِينَ، فَجَعَلَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُعْرِضُ عَنْهُ وَيُقْبِلُ عَلَى الآخَرِ، وَيَقُولُ: أَتَرَى بِمَا أَقُولُ بَأْسًا؟ فَيَقُولُ: لاَ، فَفِي هَذَا أُنْزِلَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है और बअज़ ने इस हदीस को बवास्ता हिशाम बिन उर्वा उनके बाप से रिवायत किया है, वह कहते हैं "{عَبَسَ وَتَوَلَّى} इब्ने उम्मे मक्तूम के बारे में उतरी थी और इसमें आयशा (رضي الله) का ज़िक्र नहीं किया।

3332 - सय्यदना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास (ﷺ) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम नंगे पाँव, नंगे बदन और बग़ैर ख़तना के जमा किए जाओगे।" तो एक औरत कहने लगी: क्या हम एक दुसरे का सतर देखेंगे? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ फुलां औरत "उस दिन उन में से हर एक शख़्स की ऐसी हालत होगी जो उसे (दूसरों से) बेपरवाह कर देगी।" (37)

हसन सहीह: तख़रीज के लिए देखें: हदीस नम्बर 2423.

3332 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الفَضْلِ، قَالَ: حَدَّثَنَا ثَابِتُ بْنُ يَزِيدَ، عَنْ هِلَالِ بْنِ خَبَّابٍ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنْ ابْنَ عَبَّاسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: تُحْشَرُونَ حُفَاةً عُرَاةً غُرْلاً، فَقَالَتْ امْرَأَةٌ: أَيُبْصِرُ أَوْ يَرَى بَعْضُنَا عَوْرَةَ بَعْضٍ؟ قَالَ: يَا فُلَانَةُ {لِكُلِّ امْرِئٍ مِنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ}.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है जो कई तुरूक़ (सनदों) से इब्ने अब्बास (ﷺ) से मर्वी है, इसे सईद बिन जुबैर ने भी इब्ने अब्बास (ﷺ) से इसी तरह रिवायत किया है। नीज़ इस बारे में सय्यदा आयशा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

73 - तफ़सीर सूरह तक्वीर।

73 بَاب وَمِنْ سُورَةِ إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ

3333 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (ﷺ) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो शख़्स यह चाहे कि वह क़यामत को ऐसे देखे जैसे आँख देखती है, तो उसे चाहिए कि वह : {إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ}، {إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ}، وَ {إِذَا السَّمَاءُ انْشَقَّتْ} पढ़े।"

सहीह: अहमद:2/27. हाकिम:2/515. अस-सिलसिला अस-सहीहा:1081.

3333 - حَدَّثَنَا عَبَّاسُ بْنُ عَبْدِ العَظِيمِ العَنْبَرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ بَحِيرٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ وَهُوَ ابْنُ يَزِيدَ الصَّنْعَانِيُّ، قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَنْظُرَ إِلَى يَوْمِ القِيَامَةِ كَأَنَّهُ رَأْيُ عَيْنٍ فَلْيَقْرَأْ: {إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ}، وَ {إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ}، وَ {إِذَا السَّمَاءُ انْشَقَّتْ}.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है और हिशाम बिन यूसुफ़ वग़ैरह ने भी इस हदीस को इसी सनद से रिवायत किया है कि आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिसे यह अच्छा लगे

कि वह क़यामत के दिन को आँखों से देखे तो वह {إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ}، وَ{إِذَا السَّمَاءُ انْشَقَّتْ}، पढ़े, {إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ} का ज़िक्र नहीं किया।

74 بَابٌ وَمِنْ سُورَةِ وَيْلٌ لِلْمُطَفِّفِينَ

74 - तफ़सीर सूरह मुतफ़्फ़िफ़ीन

3334 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ عَجْلَانَ، عَنِ الْقَعْقَاعِ بْنِ حَكِيمٍ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ الْعَبْدَ إِذَا أَخْطَأَ خَطِيئَةً نُكِتَتْ فِي قَلْبِهِ نُكْتَةٌ سَوْدَاءُ، فَإِذَا هُوَ نَزَعَ وَاسْتَغْفَرَ وَتَابَ سُقِلَ قَلْبُهُ، وَإِنْ عَادَ زِيدَ فِيهَا حَتَّى تَعْلُوَ قَلْبَهُ، وَهُوَ الرَّانُ الَّذِي ذَكَرَ اللَّهُ {كَلَّا بَلْ رَانَ عَلَى قُلُوبِهِمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ}.

3334 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "बन्दा जब एक गुनाह करता है तो उसके दिल में एक सियाह निशान लगा दिया जाता है, फिर जब वह उस गुनाह से हट कर तौबा और इस्तिगफ़ार करता है तो उसका दिल साफ़ (क्लीन) कर दिया जाता है, और अगर दोबारा गुनाह करता है तो उस सियाही में इज़ाफ़ा कर दिया जाता है यहाँ तक कि वह सियाही उस के दिल पर चढ़ जाती है और यही वह रान (ज़ंग) है जिसका ज़िक्र अल्लाह ने किया है "हरगिज़ नहीं बल्कि ज़ंग बनकर छा गया है उन के दिलों पर जो वह कमाते थे।" (आयत: 14)

हसन: इब्ने माजह्:4224. सहीहुत्तर्गीब: 1620. अहमद:2/297. हाकिम:2/517.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3335 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ دُرُسْتَ الْبَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: حَمَّادٌ: هُوَ عِنْدَنَا مَرْفُوعٌ، {يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ} قَالَ: يَقُومُونَ فِي الرَّشْحِ إِلَى أَنْصَافِ آذَانِهِمْ.

3335 - नाफ़े कहते हैं सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) ने फ़रमाया, "हम्माद ने कहा है कि हमारे नजदीक यह मर्फ़ू है। " जिस दिन लोग रब्बुल आलमीन के सामने खड़े होंगे।" (आयत: 6) आप (ﷺ) फ़रमाते हैं: वह निस्फ़ कानों तक पसीनों में खड़े होंगे।

बुख़ारी:4938. मुस्लिम:2862. इब्ने माजह्:4278.

3336 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ عَوْنٍ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: {يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ العَالَمِينَ} قَالَ: يَقُومُ أَحَدُهُمْ فِي الرَّشْحِ إِلَى أَنْصَافِ أُذُنَيْهِ.

3336 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضی اللہ) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने (आयत) " जिस दिन लोग रब्बुल आलमीन के सामने खड़े होंगे" की तफ़्सीर में फ़रमाया, "आदमी अपने निस्फ़ कानों तक पसीनों में खड़ा होगा।"

सहीह: इस की तख़रीज पिछली हदीस में गुज़र चुकी है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और इस बारे में अबू हुरैरा (رضی اللہ) से भी हदीस मर्वी है।

75 بَاب وَمِنْ سُورَةِ إِذَا السَّمَاءُ انْشَقَّتْ

75 - तफ़्सीर सूरह इन्शिकाक।

3337 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ الأَسْوَدِ، عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: مَنْ نُوقِشَ الحِسَابَ هَلَكَ، قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّ اللَّهَ يَقُولُ: {فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ}، إِلَى قَوْلِهِ: {يَسِيرًا} قَالَ: ذَلِكِ العَرْضُ.

3337 - सय्यदा आयशा (رضی اللہ) बयान करती हैं कि मैंने नबी (ﷺ) से सुना, आप फ़रमा रहे थे, " जिससे हिसाब में झगड़ा हुआ वह हलाक हो गया, मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! अल्लाह तबारक व तआला तो फ़रमाते हैं: " वह शख़्स जिसका आमाल नामा उस के दायें हाथ में दिया गया, सो अन्क़रीब उस से आसान हिसाब लिया जाएगा।" (7- 8) आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "वह तो सिर्फ पेशी करना है।"

सहीह: तख़रीज के लिए देखें: हदीस नम्बर 2426.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

(अबू ईसा कहते हैं) हमें सुवैद बिन नसर ने बवास्ता अब्दुल्लाह बिन मुबारक, उस्मान बिन अस्वद से इसी सनद के साथ ऐसी ही हदीस बयान की है। नीज़ हमें मुहम्मद बिन अबान वग़ैरह ने भी अब्दुल वह्हाब सक़्फी से, उन्हें अय्यूब ने इब्ने अबी मुलैका से बवास्ता आयशा (رضی اللہ) नबी (ﷺ) से ऐसी ही हदीस बयान की है।

3338 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिस से हिसाब लिया गया वह अज़ाब में गिरफ़्तार हो गया।"

हसन सहीह:इब्ने अदी फ़िल कामिल:5/ 1828.ज़िलालुल जन्ना:885.

3338 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ الهَمْدَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ أَبِي بَكْرٍ، عَنْ هَمَّامٍ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ حُوسِبَ عُذِّبَ.

वज़ाहत: (इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) कहते है) क़तादा के ज़रिए अनस (رضي الله عنه) से मर्वी यह हदीस ग़रीब है, हम इसे क़तादा से बवास्ता अनस (رضي الله عنه) नबी करीम (ﷺ) से सिर्फ़ इसी सनद से जानते हैं।

76 - तफ़सीर सूरह बुरूज।

76 بَاب وَمِنْ سُورَةِ البُرُوجِ

3339 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "यौमे मौऊद, क़यामत का दिन है, यौमे मशहूद अरफ़ा का दिन और शाहिद से मुराद जुमा का दिन है।" आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "इस से अफ़ज़ल किसी और दिन पर सूरज तुलू होता है और न ही गुरूब इसमें एक ऐसी घड़ी है कि मोमिन अल्लाह से भलाई की दुआ करते हुए पा ले तो अल्लाह तआला उसकी दुआ कुबूल करते हैं और किसी चीज़ से पनाह मांगे तो अल्लाह तआला उसे उस से पनाह देते हैं।"

हसन: बैहक़ी: 3/ 170. तबरानी फ़िल औसत:1091. अस-सिलसिला अस-सहीहा:1502. हिदायतुर्रूवात :1311.

3339 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، وَعُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ مُوسَى بْنِ عُبَيْدَةَ، عَنْ أَيُّوبَ بْنِ خَالِدٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْن رَافِعٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: اليَوْمُ الْمَوْعُودُ يَوْمُ القِيَامَةِ، وَاليَوْمُ الْمَشْهُودُ يَوْمُ عَرَفَةَ، وَالشَّاهِدُ يَوْمُ الجُمُعَةِ، وَمَا طَلَعَتِ الشَّمْسُ وَلاَ غَرَبَتْ عَلَى يَوْمٍ أَفْضَلَ مِنْهُ، فِيهِ سَاعَةٌ لاَ يُوَافِقُهَا عَبْدٌ مُؤْمِنٌ يَدْعُو اللَّهَ بِخَيْرٍ إِلاَّ اسْتَجَابَ اللَّهُ لَهُ، وَلاَ يَسْتَعِيذُ مِنْ شَيْءٍ إِلاَّ أَعَاذَهُ اللَّهُ مِنْهُ

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है हम इसे मूसा बिन उबैदा के तरीक़ से ही जानते हैं और मूसा बिन उबैदा हदीस में ज़ईफ़ है। इसे यह्या बिन सईद वग़ैरह ने इसके हाफ़िज़े की वजह से ज़ईफ़ कहा है। नीज़ शोबा, सुफ़ियान सौरी और दीगर अइम्म-ए-हदीस ने भी मूसा बिन उबैदा से रिवायत की है।

(अबू ईसा कहते हैं) हमें अली बिन हुज्र ने, उन्होंने कहा: हमें कुर्रा बिन तमाम असदी ने भी मूसा बिन उबैदा से इसी सनद के साथ ऐसी ही हदीस बयान की है।

मूसा बिन उबैदा रबज़ी की कुनियत अबू अब्दुल अज़ीज़ है। इसके हाफ़िज़े की वजह से यह्या बिन सईद अल-क़त्तान और दीगर मुहद्दिसीन ने इस पर जरह की है।

3340 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، الْمَعْنَى وَاحِدٌ، قَالاَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ ثَابِتٍ الْبُنَانِيِّ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنْ صُهَيْبٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا صَلَّى الْعَصْرَ هَمَسَ، وَالْهَمْسُ فِي قَوْلِ بَعْضِهِمْ تَحَرُّكُ شَفَتَيْهِ كَأَنَّهُ يَتَكَلَّمُ، فَقِيلَ لَهُ: إِنَّكَ يَا رَسُولَ اللهِ إِذَا صَلَّيْتَ الْعَصْرَ هَمَسْتَ؟ قَالَ: إِنَّ نَبِيًّا مِنَ الأَنْبِيَاءِ كَانَ أُعْجِبَ بِأُمَّتِهِ فَقَالَ: مَنْ يَقُومُ لِهَؤُلاَءِ؟ فَأَوْحَى اللَّهُ إِلَيْهِ أَنْ خَيِّرْهُمْ بَيْنَ أَنْ أَنْتَقِمَ مِنْهُمْ وَبَيْنَ أَنْ أُسَلِّطَ عَلَيْهِمْ عَدُوَّهُمْ، فَاخْتَارُوا النِّقْمَةَ، فَسَلَّطَ عَلَيْهِمُ الْمَوْتَ، فَمَاتَ مِنْهُمْ فِي يَوْمٍ سَبْعُونَ أَلْفًا.

- قَالَ: وَكَانَ إِذَا حَدَّثَ بِهَذَا الْحَدِيثِ حَدَّثَ بِهَذَا الْحَدِيثِ الآخَرِ، قَالَ: 3340م- كَانَ مَلِكٌ مِنَ الْمُلُوكِ، وَكَانَ لِذَلِكَ الْمَلِكِ كَاهِنٌ يَكْهَنُ لَهُ، فَقَالَ الكَاهِنُ: انْظُرُوا

3340 - सय्यदना सुहैब (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब अस्र की नमाज़ पढ़ लेते तो हम्स करते। बअज़ के मुताबिक़ हम्स अपने होंटों को हरकत देना है। गोया कि बात कर रहा हो। आप से अर्ज़ किया गया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! जब आप अस्र पढ़ लेते हैं तो आप अपने होंटों को हरकत देते हैं, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "अंबिया में से एक नबी को अपनी उम्मत की वजह से फ़ख्र हुआ, तो उस ने कहा: उन के (मुकाबले के) लिए कौन खड़ा हो सकता है? चुनांचे अल्लाह तआला ने उस नबी की तरफ़ वहि की, कि आप उन्हें इख़्तियार दें कि मैं उन से इंतिकाम लूं या उन पर उनके दुश्मन को मुसल्लत कर दूं, तो उन्होंने इंतिकाम को पसंद किया, फिर अल्लाह तआला ने उन पर मौत को मुसल्लत कर दिया तो एक दिन में उन के सत्तर हज़ार मर गए।" रावी कहते हैं: जब आप यह हदीस बयान करते तो एक और हदीस भी बयान करते थे। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "बादशाहों में से एक बादशाह था और उस बादशाह का एक काहिन (नुजूमी) भी था, जो उस के लिए कहानत किया करता था, फिर (एक दफा) काहिन ने कहा: मेरे लिए एक समझदार होशियार लड़का देखो ताकि मैं उसे अपना इल्म सिखा दूं, मुझे डर है कि मैं मर गया तो लोगों से यह इल्म ख़त्म हो जाएगा, और तुम्हारे अन्दर कोई भी इसे नहीं जानता होगा,

لِي غُلاَمًا فَهِمًا، أَوْ قَالَ: فَطِنًا، لَقِنًا، فَأُعَلِّمَهُ عِلْمِي هَذَا، فَإِنِّي أَخَافُ أَنْ أَمُوتَ فَيَنْقَطِعَ مِنْكُمْ هَذَا العِلْمُ، وَلاَ يَكُونَ فِيكُمْ مَنْ يَعْلَمُهُ. قَالَ: فَنَظَرُوا لَهُ عَلَى مَا وَصَفَ، فَأَمَرُوهُ أَنْ يَحْضُرَ ذَلِكَ الكَاهِنَ، وَأَنْ يَخْتَلِفَ إِلَيْهِ، فَجَعَلَ يَخْتَلِفُ، إِلَيْهِ وَكَانَ عَلَى طَرِيقِ الغُلاَمِ رَاهِبٌ فِي صَوْمَعَةٍ، قَالَ مَعْمَرٌ: أَحْسِبُ أَنَّ أَصْحَابَ الصَّوَامِعِ كَانُوا يَوْمَئِذٍ مُسْلِمِينَ، قَالَ: فَجَعَلَ الغُلاَمُ يَسْأَلُ ذَلِكَ الرَّاهِبَ كُلَّمَا مَرَّ بِهِ، فَلَمْ يَزَلْ بِهِ حَتَّى أَخْبَرَهُ، فَقَالَ: إِنَّمَا أَعْبُدُ اللَّهَ. قَالَ: فَجَعَلَ الغُلاَمُ يَمْكُثُ عِنْدَ الرَّاهِبِ وَيُبْطِئُ عَنِ الكَاهِنِ، فَأَرْسَلَ الكَاهِنُ إِلَى أَهْلِ الغُلاَمِ إِنَّهُ لاَ يَكَادُ يَحْضُرُنِي، فَأَخْبَرَ الغُلاَمُ الرَّاهِبَ بِذَلِكَ، فَقَالَ لَهُ الرَّاهِبُ: إِذَا قَالَ لَكَ الكَاهِنُ: أَيْنَ كُنْتَ؟ فَقُلْ: عِنْدَ أَهْلِي، وَإِذَا قَالَ لَكَ أَهْلُكَ: أَيْنَ كُنْتَ؟ فَأَخْبِرْهُمْ أَنَّكَ كُنْتَ عِنْدَ الكَاهِنِ. قَالَ: فَبَيْنَمَا الغُلاَمُ عَلَى ذَلِكَ إِذْ مَرَّ بِجَمَاعَةٍ مِنَ النَّاسِ كَثِيرٍ قَدْ حَبَسَتْهُمْ دَابَّةٌ، فَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّ تِلْكَ الدَّابَّةَ كَانَتْ

आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "उन्होंने उसकी तज्वीज़ के मुताबिक़ (एक लड़का) देख कर उसे हुक्म दिया कि काहिन की ख़िदमत में हाज़िर हुआ करे और हर रोज़ उसके पास जाए, वह लड़का उसके पास जाने लगा और लड़के के रास्ते पर एक राहिब भी अपने इबादत खाने में होता था।" मामर कहते हैं: मेरा ख़याल है कि उन दिनों यह गिर्जों वाले मुसलमान थे। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "फिर यह लड़का जब भी उस राहिब के पास से गुज़रता तो उस से (बातें) पूछता, फिर वह ऐसे ही करता रहा यहाँ तक कि उस राहिब ने उस लड़के को बताया कि मैं अल्लाह की इबादत करता हूँ, आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "वह लड़का राहिब के पास ठहरा रहता और काहिन के पास देर से जाता, उस काहिन ने लड़के के घर वालों को पैग़ाम भेजा कि लगता है यह अब मेरे पास नहीं आयेगा, लड़के ने राहिब से यह बात बताई तो राहिब ने उस से कहा, जब काहिन तुझ से पूछे कि तुम कहाँ थे? तो तुम कहना कि अपने घर वालों के पास था। और जब घर वाले तुझ से पूछें कि तुम कहाँ थे तो तुम बताना कि तुम काहिन के पास थे। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "वह लड़का इसी तरीक़े पर काम कर रहा था कि अचानक वह लोगों की जमाअत के पास से गुज़रा जिन्हें एक जानवर ने रोका हुआ था। बअज़ के बक़ौल यह जानवर शेर था। आप ने फ़रमाया, उस लड़के ने एक पत्थर पकड़ कर कहा: ऐ अल्लाह! अगर राहिब की बात सच है तो मैं तुझ से सवाल

أَسَدًا. قَالَ: فَأَخَذَ الغُلاَمُ حَجَرًا فَقَالَ: اللَّهُمَّ إِنْ كَانَ مَا يَقُولُ الرَّاهِبُ حَقًّا فَأَسْأَلُكَ أَنْ أَقْتُلَهَا. قَالَ: ثُمَّ رَمَى فَقَتَلَ الدَّابَّةَ. فَقَالَ النَّاسُ: مَنْ قَتَلَهَا؟ قَالُوا: الغُلاَمُ، فَفَزِعَ النَّاسُ وَقَالُوا: لَقَدْ عَلِمَ هَذَا الغُلاَمُ عِلْمًا لَمْ يَعْلَمْهُ أَحَدٌ. قَالَ: فَسَمِعَ بِهِ أَعْمَى، فَقَالَ لَهُ: إِنْ أَنْتَ رَدَدْتَ بَصَرِي فَلَكَ كَذَا وَكَذَا. قَالَ: لاَ أُرِيدُ مِنْكَ هَذَا، وَلَكِنْ أَرَأَيْتَ إِنْ رَجَعَ إِلَيْكَ بَصَرُكَ، أَتُؤْمِنُ بِالَّذِي رَدَّهُ عَلَيْكَ؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: فَدَعَا اللَّهَ فَرَدَّ عَلَيْهِ بَصَرَهُ، فَآمَنَ الأَعْمَى، فَبَلَغَ الْمَلِكَ أَمْرُهُمْ، فَبَعَثَ إِلَيْهِمْ، فَأُتِيَ بِهِمْ، فَقَالَ: لأَقْتُلَنَّ كُلَّ وَاحِدٍ مِنْكُمْ قِتْلَةً لاَ أَقْتُلُ بِهَا صَاحِبَهُ، فَأَمَرَ بِالرَّاهِبِ وَالرَّجُلِ الَّذِي كَانَ أَعْمَى فَوَضَعَ الْمِنْشَارَ عَلَى مَفْرِقِ أَحَدِهِمَا فَقَتَلَهُ، وَقَتَلَ الآخَرَ بِقِتْلَةٍ أُخْرَى. ثُمَّ أَمَرَ بِالغُلاَمِ، فَقَالَ: انْطَلِقُوا بِهِ إِلَى جَبَلِ كَذَا وَكَذَا فَأَلْقُوهُ مِنْ رَأْسِهِ، فَانْطَلَقُوا بِهِ إِلَى ذَلِكَ الجَبَلِ، فَلَمَّا انْتَهَوْا إِلَى ذَلِكَ الْمَكَانِ الَّذِي أَرَادُوا أَنْ يُلْقُوهُ مِنْهُ جَعَلُوا يَتَهَافَتُونَ مِنْ ذَلِكَ

करता हूँ कि तू इसे मार दे, आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "उस ने पत्थर फेंका तो वह जानवर मर गया, लोग कहने लगे: इसे किसने मारा है? लोगों ने कहा: उस लड़के ने फिर लोग ख़ौफ़ज़दा हो गए कहने लगे: उस लड़के ने ऐसा इल्म सीख लिया है जिसे और कोई नहीं जनता, आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "उस के मुताल्लिक़ एक अंधे ने सुना तो उसने उस लड़के से कहा: अगर तू मेरी बीनाई वापस ले आए तो तुझे यह कुछ दूंगा, उस लड़के ने उस अंधे से कहा: मैं तुम से यह नहीं चाहता लेकिन यह बता कि अगर तेरी बीनाई वापस आ जाए तो क्या उस ज़ात पर ईमान ले आओगे जिस ने उसे तुम पर वापस किया? वह कहने लगा, हाँ आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "फिर उस ने अल्लाह से दुआ की तो अल्लाह ने उसकी बीनाई वापस कर दी और नाबीना ईमान ले आया, फिर उनका यह मामला बादशाह तक पहुंचा तो उसने उस लड़के, राहिब और नाबीने की तरफ़ आदमी भेज कर उन्हें बुलवाया। कहने लगा: मैं तुम में से हर एक को उस तरीक़े से क़त्ल करूंगा जिस तरीके से उसके साथी को क़त्ल नहीं करूंगा, फिर उस ने राहिब और नाबीने शख़्स के बारे में हुक्म दिया उन में से एक के सिर के दर्मियान आरा रख कर उसे क़त्ल किया और दूसरे को एक और तरीक़े से क़त्ल किया। फिर लड़के बारे में हुक्म देते हुए कहने लगा: इसे फुलां पहाड़ तक ले जा कर उसकी चोटी से गिरा देना। वह लोग उसे उस पहाड़ तक ले गए, फिर जब उस

الْجَبَلِ وَيَتَرَدَّوْنَ، حَتَّى لَمْ يَبْقَ مِنْهُمْ إِلاَّ الْغُلاَمُ. قَالَ: ثُمَّ رَجَعَ، فَأَمَرَ بِهِ الْمَلِكُ أَنْ يَنْطَلِقُوا بِهِ إِلَى الْبَحْرِ فَيُلْقُونَهُ فِيهِ، فَانْطُلِقَ بِهِ إِلَى الْبَحْرِ، فَغَرَّقَ اللَّهُ الَّذِينَ كَانُوا مَعَهُ وَأَنْجَاهُ، فَقَالَ الْغُلاَمُ لِلْمَلِكِ: إِنَّكَ لاَ تَقْتُلُنِي حَتَّى تَصْلُبَنِي وَتَرْمِيَنِي وَتَقُولَ إِذَا رَمَيْتَنِي: بِسْمِ اللهِ رَبِّ هَذَا الْغُلاَمِ. قَالَ فَأَمَرَ بِهِ، فَصُلِبَ، ثُمَّ رَمَاهُ، فَقَالَ: بِسْمِ اللهِ رَبِّ هَذَا الْغُلاَمِ. قَالَ: فَوَضَعَ الْغُلاَمُ يَدَهُ عَلَى صُدْغِهِ حِينَ رُمِيَ، ثُمَّ مَاتَ، فَقَالَ أُنَاسٌ: لَقَدْ عَلِمَ هَذَا الْغُلاَمُ عِلْمًا مَا عَلِمَهُ أَحَدٌ، فَإِنَّا نُؤْمِنُ بِرَبِّ هَذَا الْغُلاَمِ. قَالَ: فَقِيلَ لِلْمَلِكِ أَجَزِعْتَ أَنْ خَالَفَكَ ثَلاَثَةٌ، فَهَذَا الْعَالَمُ كُلُّهُمْ قَدْ خَالَفُوكَ. قَالَ: فَخَدَّ أُخْدُودًا ثُمَّ أَلْقَى فِيهَا الْحَطَبَ وَالنَّارَ، ثُمَّ جَمَعَ النَّاسَ. فَقَالَ: مَنْ رَجَعَ عَنْ دِينِهِ تَرَكْنَاهُ، وَمَنْ لَمْ يَرْجِعْ أَلْقَيْنَاهُ فِي هَذِهِ النَّارِ، فَجَعَلَ يُلْقِيهِمْ فِي تِلْكَ الأُخْدُودِ. قَالَ: يَقُولُ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى فِيهِ: {قُتِلَ أَصْحَابُ الأُخْدُودِ النَّارِ ذَاتِ الْوَقُودِ} حَتَّى

जगह पहुंचे जहां से उसे नीचे गिराना चाहते थे तो वह ख़ुद ही वहाँ से गिरने और लुढ़कने लगे यहाँ तक कि उन में से उस लड़के के अलावा कोई न बच सका, आप(ﷺ) ने फ़रमाया, फिर वह लड़का वापस आया तो बादशाह ने हुक्म दिया कि इसे समन्दर में ले जाकर गिरा दो, फिर उसे समन्दर की तरफ़ ले जाया गया तो अल्लाह तआला ने उसके साथ वालों को गर्क़ कर दिया और उसे निजात दे दी, फिर लड़के ने बादशाह से कहा: तुम मुझे उस वक़्त तक नहीं मार सकते जब तक मुझे सूली पर लटका कर तीर न मारो और जब भी तुम तीर मारो तो यह कहना " उस लड़के के रब के नाम से" आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "फिर उस बादशाह ने हुक्म दिया तो उस लड़के को सूली पर लटकाया गया फिर उसने उसे तीर मारते हुए कहा "उस लड़के के रब के नाम से" आप ने फ़रमाया, "जब उसे तीर लगा तो उस लड़के ने अपना हाथ अपनी कनपट्टी पर रख लिया और वह मर गया, तो लोगों ने कहा: यह लड़का ऐसा इल्म जानता था जो और कोई भी नहीं जानता, हम भी उस लड़के के रब पर ईमान लाते हैं, फिर बादशाह से कहा गया: तू तीन आदमियों की मुख़ालिफ़त से घबराता था, यह तो सारा आलम तेरा मुख़ालिफ़ हो गया है, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "फिर उस ने खाइयां खुदवा कर, उस में लकड़ियाँ और आग डलवा कर लोगों को जमा करके कहने लगा: जो शख़्स अपने दीन से वापस आ जाएगा, हम उसे छोड़ देंगे और जो

بَلَغَ {الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ} قَالَ: فَأَمَّا الْغُلَامُ فَإِنَّهُ دُفِنَ قَالَ: فَيُذْكَرُ أَنَّهُ أُخْرِجَ فِي زَمَنِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ وَإِصْبَعُهُ عَلَى صُدْغِهِ كَمَا وَضَعَهَا حِينَ قُتِلَ.

दीन नहीं छोड़ेगा हम उसे इस आग में फेंक देंगे। फिर वह उन्हें उन खाइयों में फेंकने लगा, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तबारक व तआला इसी के मुताल्लिक़ फ़रमाते हैं: "खाइयों वाले मारे गए जो सरासर आग थी, बहुत ईंधन वाली।" से लेकर। " जो सब पे ग़ालिब, हिकमत वाला है।" तक (आयत:4-8) आप ने फ़रमाया, "फिर लड़के को दफ़न कर दिया गया। रावी कहते हैं: बयान किया जाता है कि उसे उमर बिन ख़त्ताब (رضي الله عنه) के दौरे ख़िलाफ़त में निकाला गया और उसकी उंगली वैसे ही उसकी कनपट्टी पर थी, जिस तरह उस ने क़त्ल होने के वक़्त रखी थी।

मुस्लिम:3005. अहमद:6/ 16. इब्ने हिब्बान:873.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

77 بَاب وَمِنْ سُورَةِ الْغَاشِيَةِ

77 - तफ़सीर सूरह ग़ाशिया

3341 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أُمِرْتُ أَنْ أُقَاتِلَ النَّاسَ حَتَّى يَقُولُوا: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ، فَإِذَا قَالُوهَا عَصَمُوا مِنِّي دِمَاءَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ إِلاَّ بِحَقِّهَا وَحِسَابُهُمْ عَلَى اللهِ، ثُمَّ قَرَأَ: {إِنَّمَا أَنْتَ مُذَكِّرٌ لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ}.

3341 - सय्यदना जाबिर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं लोगों से लड़ाई करूं यहाँ तक कि वह لا إله إلا الله न कह दें, जब उसे कह देंगे तो उन्होंने मुझ से अपने खून और माल बचा लिए सिवाए उस कलिमे के हक़ के, और उनका हिसाब अल्लाह पर है। फिर आप ने यह आयात पढ़ीं, आप तो सिर्फ नसीहत करने वाले हैं, आप उन पर दारोगा नहीं हैं।" (आयत:21- 22)

सहीह:मुस्लिम; 21 इब्ने माजह:3928. अहमद:3/ 295.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

78 - तफ़सीर सूरह फज्र।

78 بَاب وَمِنْ سُورَةِ الفَجْرِ

3342 - सय्यदना इमरान बिन हुसैन (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) से शफ़आ (जोड़े) के बारे में पूछा गया। तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "यह नमाज़ है, जिन में बअज़ जोड़ा और बअज़ वित्र (ताक़) हैं।"

ज़ईफ़ुल इस्नाद: अहमद:4/437. हाकिम:2/522.

3342 - حَدَّثَنَا أَبُو حَفْصٍ عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، وَأَبُو دَاوُدَ، قَالاَ: حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ عِصَامٍ، عَنْ رَجُلٍ، مِنْ أَهْلِ البَصْرَةِ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ سُئِلَ عَنِ الشَّفْعِ وَالوَتْرِ، فَقَالَ: هِيَ الصَّلاَةُ بَعْضُهَا شَفْعٌ وَبَعْضُهَا وِتْرٌ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है: हम इसे क़तादा के तरीक़ से ही जानते हैं और खालिद बिन कैस हम्दानी ने भी इसे क़तादा से ऐसे ही रिवायत किया है।

79 - तफ़सीर सूरह शम्स।

79 بَاب وَمِنْ سُورَةِ وَالشَّمْسِ وَضُحَاهَا

3343 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन ज़म्आ (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैंने एक दिन नबी (ﷺ) से सुना, आप ऊंटनी और उसके क़ातिल का ज़िक्र कर रहे थे, फ़रमाया, "जब बदबख्त उठा।" (आयत: 12) उस (ऊंटनी को क़त्ल करने) के लिए एक शरीर, ग़ालिब और अपने क़बीले में अबू ज़म्आ की तरह ज़ोरआवर शख़्स उठा। फिर मैंने आप(ﷺ) से सुना, आप(ﷺ) ने औरतों का तजकिरा करते हुए फ़रमाया, "किस मक़सद के लिए तुम में से कोई शख़्स अपनी बीवी को गुलाम की तरह कोड़े मारे और शायद कि उसी दिन के आख़िर में वह उसके साथ लेटे।" रावी कहते हैं: फिर

3343 - حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ إِسْحَاقَ الهَمْدَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ زَمْعَةَ، قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمًا يَذْكُرُ النَّاقَةَ وَالَّذِي عَقَرَهَا فَقَالَ: {إِذْ انْبَعَثَ أَشْقَاهَا} انْبَعَثَ لَهَا رَجُلٌ عَارِمٌ عَزِيزٌ مَنِيعٌ فِي رَهْطِهِ مِثْلُ أَبِي زَمْعَةَ ثُمَّ سَمِعْتُهُ يَذْكُرُ النِّسَاءَ فَقَالَ: إِلاَمَ يَعْمِدُ أَحَدُكُمْ، فَيَجْلِدُ امْرَأَتَهُ جَلْدَ الْعَبْدِ وَلَعَلَّهُ أَنْ يُضَاجِعَهَا مِنْ آخِرِ يَوْمِهِ

قَالَ: ثُمَّ وَعَظَهُمْ فِي ضَحِكِهِمْ مِنَ الضَّرْطَةِ فَقَالَ: إِلاَمَ يَضْحَكُ أَحَدُكُمْ مِمَّا يَفْعَلُ.

आप (ﷺ) ने उन्हें हवा खारिज़ होने की वजह से हंसने पर तंबीह फ़रमाई। आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "कोई शख़्स उस काम पर क्यों हंसता है, जो वह ख़ुद करता है।"

बुख़ारी:4942. मुस्लिम:2855.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

80 بَاب وَمِنْ سُورَةِ وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَى

80 - तफ़सीर सूरह लैल।

3344 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَائِدَةُ بْنُ قُدَامَةَ، عَنْ مَنْصُورِ بْنِ الْمُعْتَمِرِ، عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَيْدَةَ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ السُّلَمِيِّ، عَنْ عَلِيٍّ: قَالَ: كُنَّا فِي جَنَازَةٍ فِي الْبَقِيعِ، فَأَتَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَجَلَسَ وَجَلَسْنَا مَعَهُ وَمَعَهُ عُودٌ يَنْكُتُ بِهِ فِي الأَرْضِ، فَرَفَعَ رَأْسَهُ إِلَى السَّمَاءِ فَقَالَ: مَا مِنْ نَفْسٍ مَنْفُوسَةٍ إِلاَّ قَدْ كُتِبَ مَدْخَلُهَا، فَقَالَ الْقَوْمُ: يَا رَسُولَ اللهِ، أَفَلاَ نَتَّكِلُ عَلَى كِتَابِنَا، فَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ السَّعَادَةِ، فَهُوَ يَعْمَلُ لِلسَّعَادَةِ، وَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الشَّقَاءِ، فَإِنَّهُ يَعْمَلُ لِلشَّقَاءِ؟ قَالَ: بَلْ اعْمَلُوا فَكُلٌّ مُيَسَّرٌ، أَمَّا مَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ السَّعَادَةِ فَإِنَّهُ مُيَسَّرٌ لِعَمَلِ السَّعَادَةِ، وَأَمَّا مَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الشَّقَاءِ فَإِنَّهُ مُيَسَّرٌ لِعَمَلِ الشَّقَاءِ، ثُمَّ قَرَأَ:

3344 - सय्यदना अली (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि हम बक़ी में एक जनाज़े में शरीक थे कि नबी (ﷺ) भी आकर बैठ गए, हम भी आप(ﷺ) के साथ आकर बैठ गए और आप(ﷺ) के पास एक छड़ी थी जिस के साथ आप(ﷺ) ज़मीन को कुरेदने लगे, फिर आप(ﷺ) ने अपना सर आसमान की तरफ़ उठा कर फ़रमाया, "कोई ज़ी रूह जान ऐसी नहीं जिसका (जन्नती या दोज़खी) ठिकाना लिखा न गया हो।" तो लोगों ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ) क्या फिर हम अपनी तक़्दीर पर भरोसा न कर लें जो शख़्स सआदत मंदी का अहल होगा, वह सआदत वाले आमाल कर लेगा और जो बदबख़्ती का अहल होगा वह बदबख़्ती वाले आमाल कर लेगा? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "बल्कि तुम अमल करो हर एक के लिए आसानी की गई है, जो शख़्स सआदत वालों में से है उसे सआदत वाले अमल की तरफ़ आसानी दी जाती है और जो शख़्स बदबख़्ती वालों में से है उसे बदबख़्ती के आमाल की तरफ़ आसानी दी

{فَأَمَّا مَنْ أَعْطَى وَاتَّقَى وَصَدَّقَ بِالحُسْنَى فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْيُسْرَى وَأَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنَى وَكَذَّبَ بِالحُسْنَى فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْعُسْرَى}.

जाती है।" फिर आप(ﷺ) ने यह आयात पढ़ीं " पस वह शख़्स जिस ने अल्लाह के रास्ते में दिया, नाफ़रमानी से बचा और उसने सब से अच्छी बात को सच माना, तो यक़ीनन हम उसे आसान रास्ते के लिए सहूलत देंगे, और लेकिन जिस ने बुख्ल किया, बेपरवाह रहा, और उसने सबसे अच्छी बात को झुठलाया तो यक़ीनन हम उसे मुश्किल रास्ते के लिए सहूलत देंगे।" (आयत:5- 10)

बुख़ारी:1362. मुस्लिम:2647. अबू दाऊद:4694. इब्ने माजह:78.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

81 بَاب وَمِنْ سُورَةِ وَالضُّحَى

81 – तफ़सीर सूरह ज़ुहा।

3345 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الأَسْوَدِ بْنِ قَيْسٍ، عَنْ جُنْدَبٍ البَجَلِيِّ، قَالَ: كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي غَارٍ، فَدَمِيَتْ إِصْبَعُهُ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. هَلْ أَنْتِ إِلاَّ إِصْبَعٌ دَمِيتِ ... وَفِي سَبِيلِ اللهِ مَا لَقِيتِ

قَالَ: وَأَبْطَأَ عَلَيْهِ جِبْرِيلُ، فَقَالَ الْمُشْرِكُونَ: قَدْ وُدِّعَ مُحَمَّدٌ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: {مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَى}.

3345 - सय्यदना जुन्दुब बजली (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैं नबी (ﷺ) के साथ एक ग़ार में था कि आप(ﷺ) की उंगली से खून निकल आया तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "तू एक उंगली ही है जो खून आलूद हुई है और जो सदमा भी तुझे पहुंचा है वह अल्लाह के रास्ते में ही है। रावी कहते हैं: जिब्रील (عليه السلام) ने आने में देर कर दी तो मुश्रिकीन कहने लगे: मुहम्मद (ﷺ) को छोड़ दिया गया है तो अल्लाह तबारक व तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई: " न तेरे रब ने तुझे छोड़ा है और न वह नाराज़ हुआ है।" (आयत:3)

बुख़ारी:1125. मुस्लिम:1796. अहमद:4/312.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। इसे शोबा और सौरी ने भी अस्वद बिन कैस से रिवायत किया है।

82 - तफ़सीर सूरह इन्शिराह

82 بَاب وَمِنْ سُورَةِ أَلَمْ نَشْرَحْ

3346 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، وَابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي عَرُوبَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ مَالِكِ بْنِ صَعْصَعَةَ، رَجُلٌ مِنْ قَوْمِهِ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: بَيْنَمَا أَنَا عِنْدَ البَيْتِ بَيْنَ النَّائِمِ وَاليَقْظَانِ، إِذْ سَمِعْتُ قَائِلاً يَقُولُ: أَحَدُ بَيْنَ الثَّلاثَةِ، فَأُتِيتُ بِطَسْتٍ مِنْ ذَهَبٍ فِيهَا مَاءُ زَمْزَمَ، فَشَرَحَ صَدْرِي إِلَى كَذَا وَكَذَا، قَالَ قَتَادَةُ: قُلْتُ لأَنَسِ بْنِ مَالِكٍ: مَا يَعْنِي؟، قَالَ: إِلَى أَسْفَلِ بَطْنِي، فَاسْتُخْرِجَ قَلْبِي، فَغُسِلَ قَلْبِي بِمَاءِ زَمْزَمَ، ثُمَّ أُعِيدَ مَكَانَهُ، ثُمَّ حُشِيَ إِيمَانًا وَحِكْمَةً وَفِي الحَدِيثِ قِصَّةٌ طَوِيلَةٌ.

3346 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) अपनी कौम के एक आदमी मालिक बिन सासा (رضي الله عنه) से रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैं बैतुल्लाह के पास सोने और जागने के दर्मियानी हालत में था कि अचानक मैंने एक कहने वाले को सुना जो कह रहा था एक शख़्स तीन लोगों के दर्मियान है। फिर मेरे पास सोने की एक प्लेट लाई गई जिसमें ज़मज़म का पानी था, फिर मेरे सीने को यहाँ से यहाँ तक खोला गया।" क़तादा कहते हैं: मैंने अनस (رضي الله عنه) से कहा: इस से क्या मुराद है? उन्होंने फ़रमाया, "पेट के निचले हिस्से तक। आप ने फ़रमाया, "फिर मेरा दिल निकाला गया, चुनांचे उस ने मेरे दिल को ज़मज़म के पानी से धो कर उसे उसकी जगह रख दिया फिर ईमान व हिकमत से भर दिया गया।" और इस हदीस में एक लंबा किस्सा भी है।

बुख़ारी:3207. मुस्लिम:164. निसाई:448.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है इसे हिशाम दस्तवाई और हम्माम ने भी क़तादा से रिवायत किया है। नीज़ इस बारे में अबू ज़र (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

83 - तफ़सीर सूरह तीन।

83 بَاب وَمِنْ سُورَةِ التِّينِ

3347 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أُمَيَّةَ، قَالَ: سَمِعْتُ رَجُلاً بَدَوِيًّا أَعْرَابِيًّا، يَقُولُ: سَمِعْتُ

3347 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हुए फ़रमाते हैं: जिसने सूरह وَالتِّينِ وَالزَّيْتُونِ पढ़ी, फिर जब आयत: " क्या अल्लाह सब हाकिमों से बड़ा हाकिम नहीं है।" (आयत:8) पढ़े तो उसे चाहिए कि वह

أَبَا هُرَيْرَةَ يَرْوِيهِ يَقُولُ: مَنْ قَرَأَ سُورَةَ: وَالتِّينِ وَالزَّيْتُونِ فَقَرَأَ: {أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَحْكَمِ الحَاكِمِينَ} فَلْيَقُلْ: بَلَى وَأَنَا عَلَى ذَلِكَ مِنَ الشَّاهِدِينَ.

पढ़े "क्यों नहीं और मैं इस बात पर गवाह हूँ।"

ज़ईफ़: अबू दाऊद:887. अहमद:2/249. हुमैदी:995.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस इसी सनद के साथ नामालूम आराबी के ज़रिए सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से मर्वी है।

84 بَاب وَمِنْ سُورَةِ اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ

84 - तफ़सीर सूरह अलक़।

3348 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ عَبْدِ الكَرِيمِ الجَزَرِيِّ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: {سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ} قَالَ: قَالَ أَبُو جَهْلٍ، لَئِنْ رَأَيْتُ مُحَمَّدًا يُصَلِّي لَأَطَأَنَّ عَلَى عُنُقِهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَوْ فَعَلَ لَأَخَذَتْهُ الْمَلَائِكَةُ عِيَانًا.

3348 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) आयत: "हम अन्क़रीब जहन्नम के फ़रिश्तों को बुला लेंगे।" (आयत: 18) की तफ़सीर में फ़रमाते हैं: अबू जहल ने कहा: अगर मैं मुहम्मद (ﷺ) को नमाज़ पढ़ते देख लूं तो ज़रूर उसकी गर्दन रौंद डालूँगा। नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "अगर वह ऐसा करता तो फ़रिश्ते उसे सब के सामने पकड़ लेते।"

सहीह: बुख़ारी:4958. अहमद:1/248.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है।

3349 - حَدَّثَنَا أَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو خَالِدٍ الأَحْمَرُ، عَنْ دَاوُدَ بْنِ أَبِي هِنْدٍ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي فَجَاءَ أَبُو جَهْلٍ فَقَالَ: أَلَمْ أَنْهَكَ عَنْ هَذَا؟ أَلَمْ أَنْهَكَ عَنْ هَذَا؟ أَلَمْ أَنْهَكَ عَنْ هَذَا؟ فَانْصَرَفَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

3349 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) नमाज़ पढ़ रहे थे कि अबू जहल आकर कहने लगा: क्या मैंने तुम्हें इस काम से रोका नहीं था? क्या मैंने तुम्हें इस काम से रोका नहीं था? क्या मैंने तुम्हें इस काम से रोका नहीं था? फिर नबी (ﷺ) ने नमाज़ मुकम्मल कर ली तो आप(ﷺ) ने उसे झिड़का, अबू जहल कहने लगा: तुम अच्छी तरह जानते हो कि यहाँ मुझ

فَزَبَرَهُ، فَقَالَ أَبُو جَهْلٍ: إِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا بِهَا نَادٍ أَكْثَرُ مِنِّي، فَأَنْزَلَ اللَّهُ: {فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ} فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: وَاللَّهِ لَوْ دَعَا نَادِيَهُ لَأَخَذَتْهُ زَبَانِيَةُ اللَّهِ.

से ज़्यादा हमनशीं किसी के नहीं हैं। तो अल्लाह तबारक व तआला ने यह आयात नाज़िल फ़रमा दीं: "वह अपनी मजलिस को बुला ले, हम अन्क़रीब जहन्नम के फ़रिश्तों को बुला लेंगे।" (आयत: 17- 18) इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं: अल्लाह की क़सम! अगर वह अपनी मजलिस को बुला लेता तो अल्लाह के फ़रिश्ते यक़ीनन उसे पकड़ लेते।

सहीहुल इस्नाद: इस से पहली हदीस के तहत तख़रीज गुज़र चुकी है। अस- सिलसिला अस- सहीहा:275.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है। और इस बारे में अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। (अबू हुरैरा رضي الله عنه) से मर्वी रिवायत सहीह मुस्लिम, ह: 2297 में है। (अबू सुफ़ियान)

85 بَاب وَمِنْ سُورَةِ لَيْلَةِ الْقَدْرِ

85 - तफ़सीर सूरह क़द्र।

3350 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ الطَّيَالِسِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْقَاسِمُ بْنُ الْفَضْلِ الْحُدَّانِيُّ، عَنْ يُوسُفَ بْنِ سَعْدٍ، قَالَ: قَامَ رَجُلٌ إِلَى الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ، بَعْدَ مَا بَايَعَ مُعَاوِيَةَ، فَقَالَ: سَوَّدْتَ وُجُوهَ الْمُؤْمِنِينَ، أَوْ يَا مُسَوِّدَ وُجُوهِ الْمُؤْمِنِينَ فَقَالَ: لَا تُؤَنِّبْنِي رَحِمَكَ اللَّهُ، فَإِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أُرِيَ بَنِي أُمَيَّةَ عَلَى مِنْبَرِهِ فَسَاءَهُ ذَلِكَ، فَنَزَلَتْ: {إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ} يَا مُحَمَّدُ، يَعْنِي نَهْرًا فِي الْجَنَّةِ،

3350 - यूसुफ़ बिन साद से रिवायत है कि हसन बिन अली (رضي الله عنه) के मुआविया (رضي الله عنه) के हाथ पर बैअत करने के बाद एक आदमी उनके सामने खड़ा हो कर कहने लगा: आप ने मोमिनों के चेहरे को सियाह कर दिया है, या यह कहा: कि ऐ मोमिनों के चेहरे को सियाह करने वाले! तो उन्होंने फ़रमाया, "मुझे इल्ज़ाम न दे, अल्लाह तुझ पर रहम फ़रमाए, नबी (ﷺ) को बनी उमय्या अपने मिम्बर पर नज़र आए, तो यह आप (ﷺ) को बुरा लगा, चुनाँचे यह सूरत नाज़िल हुई: "बेशक हम ने आप को कौसर अता फ़रमाई।" यानी ऐ मुहम्मद! (ﷺ) यह जन्नत में एक नहर है और यह भी नाज़िल हुई: " हम ने इसे क़द्र की रात

وَنَزَلَتْ: {إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ شَهْرٍ} يَمْلِكُهَا بَعْدَكَ بَنُو أُمَيَّةَ يَا مُحَمَّدُ قَالَ الْقَاسِمُ، فَعَدَدْنَاهَا فَإِذَا هِيَ أَلْفُ شَهْرٍ لاَ تَزِيدُ يَوْمًا وَلاَ تَنْقُصُ.

नाज़िल किया, और आप क्या जानें लैलतुल क़द्र क्या है? लैलतुल क़द्र एक हज़ार महीनों से बेहतर है।" (आयत: 1- 3) ऐ मुहम्मद (ﷺ)! आप (ﷺ) के बाद बनू उमय्या हाकिम बन जाएंगे। कासिम कहते हैं: फिर हम ने इसे शुमार किया तो वह हज़ार महीने ही बनते थे एक दिन भी ज़्यादा या कम नहीं था।

ज़ईफुल इस्नाद मुज़्तरिब, मतन मुन्कर: हाकिम:3/ 170. तबरानी:2753.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। हम इसे सिर्फ कासिम बिन फ़ज़ल के तरीक़ से ही जानते हैं और कासिम बिन फ़ज़ल की यूसुफ़ बिन माज़िन से ली गई रिवायत में क़लाम किया गया है।

कासिम बिन फ़ज़ल हदानी सिक़ह् रावी हैं उन्हें यह्या बिन साद और अब्दुर्रहमान बिन महदी ने सिक़ह् कहा है। जब कि यूसुफ़ बिन साद मज्हूल है और इस हदीस को इन अल्फ़ाज़ से हम सिर्फ़ इसी तरीक़ से ही जानते हैं।

3351 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَبْدَةَ بْنِ أَبِي لُبَابَةَ، وَعَاصِمٍ هُوَ ابْنُ بَهْدَلَةَ، سَمِعَا زِرَّ بْنَ حُبَيْشٍ، يَقُولُ: قُلْتُ لأُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ، إِنَّ أَخَاكَ عَبْدَ اللهِ بْنَ مَسْعُودٍ يَقُولُ: مَنْ يَقُمِ الحَوْلَ يُصِبْ لَيْلَةَ القَدْرِ، فَقَالَ: يَغْفِرُ اللَّهُ لأَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ، لَقَدْ عَلِمَ أَنَّهَا فِي الْعَشْرِ الأَوَاخِرِ مِنْ رَمَضَانَ، وَأَنَّهَا لَيْلَةُ سَبْعٍ وَعِشْرِينَ، وَلَكِنَّهُ أَرَادَ أَنْ لاَ يَتَّكِلَ النَّاسُ، ثُمَّ حَلَفَ لاَ يَسْتَثْنِي أَنَّهَا لَيْلَةُ سَبْعٍ وَعِشْرِينَ، قَالَ: قُلْتُ لَهُ: بِأَيِّ شَيْءٍ تَقُولُ ذَلِكَ يَا أَبَا الْمُنْذِرِ؟ قَالَ: بِالآيَةِ

3351 - ज़िर्र बिन हुबैश (رحمه الله) 'जिनकी कुनियत अबू मरियम है' कहते हैं कि मैंने सय्यदना उबय बिन काब (رضي الله عنه) से कहा आपके भाई सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद कहते हैं: जो शख़्स पूरा साल कयाम करे, वह लैलतुल क़द्र को पा लेगा। तो उन्होंने कहा: अल्लाह तआला अबू अब्दुर्रहमान को बख्शे, यक़ीनन वह जानते हैं कि वह रमजान की आख़िरी दस रातों में है, और वह सत्ताइसवीं रात है, लेकिन उनका इरादा यह होगा कि कहीं लोग भरोसा न कर लें, फिर उन्होंने इंशा अल्लाह कहा बगैर क़सम उठाए कि वह सत्ताइसवीं रात है। रावी कहते हैं: मैंने उनसे कहा: ऐ अबू मून्ज़िर! आप यह कैसे कह सकते

الَّتِي أَخْبَرَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَوْ بِالعَلَامَةِ أَنَّ الشَّمْسَ تَطْلُعُ يَوْمَئِذٍ لاَ شُعَاعَ لَهَا.

हैं? उन्होंने फ़रमाया, "उस निशानी या अलामत की वजह से जो हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बताई थी कि "उस दिन सूरज निकलता है तो उसकी किरण (शुआ) नहीं होती।"

हसन सहीह: तख़रीज के लिए देखें: हदीस नम्बर 793.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

86 بَابٌ: وَمِنْ سُورَةِ لَمْ يَكُنْ

86 - तफ़सीर सूरह बय्यना।

3352 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الْمُخْتَارِ بْنِ فُلْفُلٍ، قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يَقُولُ: قَالَ رَجُلٌ لِلنَّبِيِّ ﷺ: يَا خَيْرَ البَرِيَّةِ، قَالَ: ذَلِكَ إِبْرَاهِيمُ.

3352 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضی اللہ عنہ) बयान करते हैं कि एक आदमी ने नबी (ﷺ) से कहा: ऐ कायनात के सबसे बेहतर इंसान! आप ने फ़रमाया, वह तो इब्राहीम (علیہ السلام) थे।"

मुस्लिम:2369. अबू दाऊद:4672. अहमद:3/ 178.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

87 بَاب وَمِنْ سُورَةِ إِذَا زُلْزِلَتِ الأَرْضُ

87 - तफ़सीर सूरह ज़िलज़ाल।

3353 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي أَيُّوبَ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي سُلَيْمَانَ، عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَرَأَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَذِهِ الآيَةَ: {يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا} قَالَ: أَتَدْرُونَ مَا أَخْبَارُهَا؟ قَالُوا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ:

3353 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضی اللہ عنہ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने यह आयत: "उस दिन वह अपनी ख़बरें बयान कर देगी।" (आयत:4) पढ़कर फ़रमाया, "क्या तुम जानते हो कि उसकी ख़बरें क्या हैं?" लोगों ने अर्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल ही बेहतर जानते हैं, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "उसकी ख़बरें यह हैं कि वह हर मर्द और औरत पर उन कामों की गवाही देगी जो उसने उसकी पुश्त (सतह) पर किए होंगे, वह कहेगी: उसने फुलां

فَإِنَّ أَخْبَارَهَا أَنْ تَشْهَدَ عَلَى كُلِّ عَبْدٍ أَوْ أَمَةٍ بِمَا عَمِلَ عَلَى ظَهْرِهَا، تَقُولُ: عَمِلَ يَوْمَ كَذَا كَذَا وَكَذَا، فَهَذِهِ أَخْبَارُهَا.

दिन, यह यह काम किया था, यही उसकी ख़बरें हैं।"

ज़ईफ़ुल इस्नाद: तख़रीज के लिए देखें: हदीस नम्बर 2429.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

88 بَاب وَمِنْ سُورَةِ أَلْهَاكُمُ التَّكَاثُرُ

88 - तफ़सीर सूरह तकासुर।

3354 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ مُطَرِّفِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ الشِّخِّيرِ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّهُ انْتَهَى إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يَقْرَأُ: أَلْهَاكُمُ التَّكَاثُرُ قَالَ: يَقُولُ ابْنُ آدَمَ: مَالِي مَالِي، وَهَلْ لَكَ مِنْ مَالِكَ إِلاَّ مَا تَصَدَّقْتَ فَأَمْضَيْتَ، أَوْ أَكَلْتَ فَأَفْنَيْتَ، أَوْ لَبِسْتَ فَأَبْلَيْتَ؟

3354 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन शिख़्ख़ीर (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि वह नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप सूरह أَلْهَاكُمُ التَّكَاثُرُ (तुम्हें एक दुसरे से ज़्यादा हासिल करने की हिर्स ने ग़ाफ़िल कर दिया है) पढ़ रहे थे, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "आदम का बेटा कहता है मेरा माल, मेरा माल। हालांकि तुम्हारा माल वही है जो तुम ने सदक़ा करके आगे पहुंचा दिया या खा कर तुम ने ख़त्म कर दिया या पहन कर बोसीदा कर दिया।"

सहीह: तख़रीज के लिए देखें: हदीस नम्बर 2442.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3355 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَكَّامُ بْنُ سَلْمٍ الرَّازِيُّ، عَنْ عَمْرِو بْنِ أَبِي قَيْسٍ، عَنِ الحَجَّاجِ، عَنِ الْمِنْهَالِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ زِرِّ بْنِ حُبَيْشٍ، عَنْ عَلِيٍّ قَالَ: مَا زِلْنَا نَشُكُّ فِي عَذَابِ القَبْرِ حَتَّى نَزَلَتْ: {أَلْهَاكُمُ التَّكَاثُرُ} قَالَ أَبُو كُرَيْبٍ، مَرَّةً عَنْ عَمْرِو بْنِ أَبِي قَيْسٍ، عَنِ ابْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنِ الْمِنْهَالِ بْنِ عَمْرٍو.

3355 - सय्यदना अली (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि हम अज़ाबे क़ब्र में शक करते रहे यहाँ तक कि सूरह أَلْهَاكُمُ التَّكَاثُرُ नाज़िल हुई।

ज़ईफ़ुल इस्नाद:तबरानी: फी तफ्सीरिही: 30/284. ज़िलालुल जन्ना:877.

वज़ाहत: अबू कुरैब ने एक दफा यह भी कहा है कि अम्र बिन अबी कैस (यह अर्राजी हैं और अम्र बिन कैस मलई कूफी हैं) ने बावास्ते इब्ने अबी लैला, मिन्हाल बिन अम्र से रिवायत की है। (यानी हज्जाज की जगह इब्ने अबी लैला का ज़िक्र किया है)
इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

3356 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ عَلْقَمَةَ، عَنْ يَحْيَى بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ حَاطِبٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ بْنِ الْعَوَّامِ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ: {ثُمَّ لَتُسْأَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ} قَالَ الزُّبَيْرُ: يَا رَسُولَ اللهِ، وَأَيُّ النَّعِيمِ نُسْأَلُ عَنْهُ، وَإِنَّمَا هُمَا الأَسْوَدَانِ التَّمْرُ وَالْمَاءُ؟ قَالَ: أَمَا إِنَّهُ سَيَكُونُ.

3356 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन जुबैर बिन अव्वाम (رضي الله عنه) अपने बाप से रिवायत करते हैं कि जब आयत: "फिर यक़ीनन उस दिन तुम्हें नेअ्मतों के बारे में ज़रूर पूछा जाएगा।" (आयत:8) नाज़िल हुई तो जुबैर ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! हम से किस नेअ्मत के बारे में सवाल किया जाएगा? जब कि यह तो दो सियाह चीज़ें पानी और खुजूर हैं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "यह तो अब हो कर रहेगा।"

हसनुल इस्नाद:इब्ने माजह:4158. अहमद:1/164. हुमैदी:61.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।

3357 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ عَيَّاشٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةَ: {ثُمَّ لَتُسْأَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ} قَالَ النَّاسُ: يَا رَسُولَ اللهِ، عَنْ أَيِّ النَّعِيمِ نُسْأَلُ؟ فَإِنَّمَا هُمَا الأَسْوَدَانِ وَالْعَدُوُّ حَاضِرٌ، وَسُيُوفُنَا عَلَى عَوَاتِقِنَا؟ قَالَ: إِنَّ ذَلِكَ سَيَكُونُ.

3357 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि जब यह आयत: "फिर यक़ीनन उस दिन तुम्हें नेअ्मतों के बारे में पूछा जाएगा।" नाज़िल हुई तो लोगों ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! हमें किस नेअ्मत के बारे में पूछा जाएगा यह तो सिर्फ दो सियाह चीजें (पानी और खुजूर) हैं, जब कि दुश्मन सामने और हमारी तलवारें हमारी गर्दनों पर हैं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "यक़ीनन यह (सवाल) तो अन्क़रीब होगा।"

हसन लिग़ैरिही: अबू याला:6636. दुसरे तरीक़ से।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इब्ने उयय्ना की मुहम्मद बिन अम्र से रिवायतकर्दा हदीस

मेरे नजदीक इस से ज़्यादा सहीह है क्योंकि सुफ़ियान बिन उयय्ना, अबू बक्र बिन अयाश से बड़े हाफ़िज़ और सहीह हदीस बयान करने वाले हैं।

3358 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شَبَابَةُ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ العَلَاءِ، عَنِ الضَّحَّاكِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَرْزَمٍ الأَشْعَرِيِّ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ أَوَّلَ مَا يُسْأَلُ عَنْهُ يَوْمَ القِيَامَةِ، يَعْنِي العَبْدَ مِنَ النَّعِيمِ، أَنْ يُقَالَ لَهُ: أَلَمْ نُصِحَّ لَكَ جِسْمَكَ، وَنُرْوِيكَ مِنَ الْمَاءِ البَارِدِ.

3358 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) बयान करते हैं कि आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "क़यामत के दिन बन्दे से नेअ्मतों में से सबसे पहला सवाल यह किया जाएगा कि (अल्लाह तआला की तरफ़ से) उसे कहा जाएगा: क्या हम ने तेरे जिस्म को तंदुरुस्त नहीं बनाया था और क्या हमने तुझे ठंडे पानी से सैर नहीं किया था?"

सहीह: हाकिम:4/138. इब्ने हिब्बान:7364. अस-सिलसिला अस-सहीहा: 539.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। और ज़ह्हाक, अब्दुर्रहमान बिन अज़्रब के बेटे हैं, जिन्हें अर्ज़म भी कहा जाता है और अर्ज़म ज़्यादा सहीह है।

89 بَاب وَمِنْ سُورَةِ الكَوْثَرِ

89 - तफ़सीर सूरह कौसर।

3359 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، فِي قَوْلِهِ تَعَالَى: {إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الكَوْثَرَ}: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: هُوَ نَهْرٌ فِي الجَنَّةِ قَالَ: فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: رَأَيْتُ نَهْرًا فِي الجَنَّةِ حَافَّتَاهُ قِبَابُ اللُّؤْلُؤِ. قُلْتُ: مَا هَذَا يَا جِبْرِيلُ؟ قَالَ: هَذَا الكَوْثَرُ الَّذِي أَعْطَاكَهُ اللَّهُ.

3359 - सय्यदना अनस (ﷺ) रिवायत करते हैं कि अल्लाह तआला का फ़रमान: " बिला शुब्हा हम ने आप को कौसर अता की।" की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "यह जन्नत में एक नहर है।" रावी कहते हैं:फिर नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैंने जन्नत में एक नहर देखी जिस के दोनों किनारे मोतियों के खेमे थे। मैंने कहा: जिब्रील! यह क्या है? उन्होंने कहा: यह (वह) कौसर है जो अल्लाह तआला ने आप को अता की है।"

बुख़ारी:4964. अबू दाऊद:4748. अहमद:3/164.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3360 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُرَيْجُ بْنُ النُّعْمَانِ، قَالَ: حَدَّثَنَا الحَكَمُ بْنُ عَبْدِ الْمَلِكِ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: بَيْنَا أَنَا أَسِيرُ فِي الجَنَّةِ، إِذْ عُرِضَ لِي نَهْرٌ حَافَّتَاهُ قِبَابُ اللُّؤْلُؤِ، قُلْتُ لِلْمَلَكِ: مَا هَذَا؟ قَالَ: هَذَا الكَوْثَرُ الَّذِي أَعْطَاكَهُ اللَّهُ، قَالَ: ثُمَّ ضَرَبَ بِيَدِهِ إِلَى طِينَةٍ فَاسْتَخْرَجَ مِسْكًا، ثُمَّ رُفِعَتْ لِي سِدْرَةُ الْمُنْتَهَى فَرَأَيْتُ عِنْدَهَا نُورًا عَظِيمًا.

3360 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैं जन्नत में चल रहा था कि अचानक मेरे सामने एक नहर आ गई जिसके किनारे मोतियों के ख़ेमे थे, मैंने फ़रिश्ते से कहा: यह क्या है? उस ने कहा: यह वह कौसर है जो अल्लाह तआला ने आप को अता की है।" आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "फिर उस ने अपना हाथ मिट्टी में मार कर कस्तूरी निकाली, फिर मेरे लिए सिद्रतुल मुन्तहा को बलंद किया गया तो मैंने उसके पास बहुत बड़ा नूर देखा।"

सहीह:इससे पहली हदीस के तहत तख़रीज गुज़र चुकी है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और कई तुरूक़ (सनदों) से अनस (رضي الله عنه) से मर्वी है।

3361 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ السَّائِبِ، عَنْ مُحَارِبِ بْنِ دِثَارٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الكَوْثَرُ نَهْرٌ فِي الجَنَّةِ، حَافَّتَاهُ مِنْ ذَهَبٍ، وَمَجْرَاهُ عَلَى الدُّرِّ وَاليَاقُوتِ، تُرْبَتُهُ أَطْيَبُ مِنَ الْمِسْكِ، وَمَاؤُهُ أَحْلَى مِنَ العَسَلِ، وَأَبْيَضُ مِنَ الثَّلْجِ.

3361 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "कौसर जन्नत में एक नहर है जिस के किनारे सोने के हैं और उसका पानी मोतियों और याकूत पर बहता है, उसकी मिट्टी कस्तूरी से भी ज़्यादा खुशबू दार है, उसका पानी शहद से ज़्यादा मीठा और बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ेद है।"

सहीह: इब्ने माजह:4334. अहमद:2/67. दारमी:2840.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

90 - तफ़सीर सूरह नस्र।

90 بَاب وَمِنْ سُورَةِ الْفَتْحِ

3362 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضی اللہ عنہ) रिवायत करते हैं कि उमर (رضی اللہ عنہ) नबी (ﷺ) के सहाबा की मौजूदगी में मुझ से पूछा करते थे, तो अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (رضی اللہ عنہ) ने कहा: आप उस से पूछते हैं हालांकि हमारे भी ऐसे ही बेटे हैं? रावी कहते हैं: उमर (رضی اللہ عنہ) ने उन से कहा: " तुम जानते हो कि मैं क्यों पूछता हूँ? चुनांचे उन से इस आयत: "जब अल्लाह की मदद और फतह आ जाए।" के बारे में पूछा तो मैंने कहा: यह रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात है जो आप को बाताई गई है और उन्होंने आखिर तक सूरत पढ़ी, फिर उमर (رضی اللہ عنہ) ने उन से कहा: अल्लाह की क़सम! इस बारे में मैं भी वही जानता हूँ जो तुम जानते हो।

3362 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ أَبِي بِشْرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: كَانَ عُمَرُ يَسْأَلُنِي مَعَ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ لَهُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ: أَتَسْأَلُهُ وَلَنَا بَنُونَ مِثْلُهُ؟ فَقَالَ لَهُ عُمَرُ: إِنَّهُ مِنْ حَيْثُ تَعْلَمُ، فَسَأَلَهُ عَنْ هَذِهِ الآيَةِ: {إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللهِ وَالْفَتْحُ} فَقُلْتُ: إِنَّمَا هُوَ أَجَلُ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَعْلَمَهُ إِيَّاهُ، وَقَرَأَ السُّورَةَ إِلَى آخِرِهَا، فَقَالَ لَهُ عُمَرُ: وَاللَّهِ مَا أَعْلَمُ مِنْهَا إِلاَّ مَا تَعْلَمُ.

बुख़ारी:3627. अहमद:1/337.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने बवास्ता मुहम्मद बिन जाफ़र, शोबा के ज़रिए अबुल बशर से इसी सनद के साथ ऐसे ही हदीस बयान की है लेकिन इसमें है कि अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने उनसे कहा, आप उस से पूछते हैं हालांकि हमारा भी ऐसा ही बेटा है। यह हदीस भी हसन सहीह है।

91 - तफ़सीर सूरह लहब।

91 بَاب وَمِنْ سُورَةِ تَبَّتْ

3363 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضی اللہ عنہ) बयान करते हैं कि एक दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सफ़ा पहाड़ी पर चढ़कर " या सबाहाह! " की आवाज़ दी तो क़ुरैशी आप के पास जमा हो गए, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैं सख़्त अज़ाब से पहले तुम्हें डराता हूँ, तुम

3363 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، وَأَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ قَالاَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: صَعِدَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى

यह बताओ कि अगर मैं तुम्हें यह ख़बर दूं कि दुश्मन शाम या सुबह को तुम्हारे ऊपर हमला करने वाला है, क्या तुम मुझे सच्चा समझोगे? तो अबू लहब कहने लगा: तूने इसीलिए हमें इकट्ठा किया था? तू हलाक हो जाए। तो अल्लाह तबारक व तआला ने यह सूरत नाज़िल फ़रमा दी: " अबू लहब के दोनों हाथ हलाक हो गए और वह ख़ुद हलाक हो गया।"
बुख़ारी:4070. मुस्लिम:208.

اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَاتَ يَوْمٍ عَلَى الصَّفَا فَنَادَى: يَا صَبَاحَاهُ، فَاجْتَمَعَتْ إِلَيْهِ قُرَيْشٌ، فَقَالَ: إِنِّي نَذِيرٌ لَكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيدٍ، أَرَأَيْتُمْ لَوْ أَنِّي أَخْبَرْتُكُمْ أَنَّ الْعَدُوَّ مُمَسِّيكُمْ أَوْ مُصَبِّحُكُمْ أَكُنْتُمْ تُصَدِّقُونِي؟ فَقَالَ أَبُو لَهَبٍ: أَلِهَذَا جَمَعْتَنَا؟ تَبًّا لَكَ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ: {تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ}.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

92 - तफ़सीर सूरह इख़्लास

92 بَابٌ وَمِنْ سُورَةِ الإِخْلاَصِ

3364 - सय्यदना उबय बिन काब (رضي الله عنه) से रिवायत है कि मुश्रिकीन ने रसूलुल्लाह (صلى الله عليه وسلم) से कहा: आप हमें अपने रब का नसब बताएं तो अल्लाह तआला ने यह सूरत नाज़िल फ़रमाई "कह दीजिए वह अल्लाह एक है, अल्लाह ही बे नियाज़ है।" समद वह होता है जिस ने न किसी को जना और न ही वह जना गया।" इसलिए कि जो चीज़ पैदा होती है उसे अन्क़रीब मौत आएगी और जिसे मौत आए उसके वारिस होते हैं, अल्लाह को न मौत आएगी, न ही कोई उसका वारिस बनेगा।" और न कोई उसके बराबर का है।" आप (صلى الله عليه وسلم) ने फ़रमाया, "उसके मुशाबेह और बराबर कोई नहीं और न ही उस जैसी कोई चीज़ है।"

हसन: (والصمد الذي) कौल के अलावा: अहमद:5/ 133.

3364 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو سَعْدٍ هُوَ الصَّغَانِيُّ، عَنْ أَبِي جَعْفَرٍ الرَّازِيِّ، عَنِ الرَّبِيعِ بْنِ أَنَسٍ، عَنْ أَبِي الْعَالِيَةِ، عَنْ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ، أَنَّ الْمُشْرِكِينَ قَالُوا لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: انْسُبْ لَنَا رَبَّكَ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ: {قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ اللَّهُ الصَّمَدُ} فَالصَّمَدُ: الَّذِي لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ، لأَنَّهُ لَيْسَ شَيْءٌ يُولَدُ إِلاَّ سَيَمُوتُ، وَلَيْسَ شَيْءٌ يَمُوتُ إِلاَّ سَيُورَثُ، وَإِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ لاَ يَمُوتُ وَلاَ يُورَثُ: {وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ} قَالَ: لَمْ يَكُنْ لَهُ شَبِيهٌ وَلاَ عِدْلٌ وَلَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ.

3365 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ أَبِي جَعْفَرٍ الرَّازِيِّ، عَنِ الرَّبِيعِ، عَنْ أَبِي العَالِيَةِ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَكَرَ آلِهَتَهُمْ فَقَالُوا: انْسُبْ لَنَا رَبَّكَ. قَالَ: فَأَتَاهُ جِبْرِيلُ بِهَذِهِ السُّورَةِ: {قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ}.

3365 - अबुल आलिया से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने उन (मुश्रिकों) के माबूदों (के बातिल होने) का तज़किरा किया तो कहने लगे: आप हमें अपने रब का नसब बताएं। रावी कहते हैं: फिर आप (ﷺ) के पास जिब्रील (عليه السلام) यह सूरत लेकर आए "कह दीजिए वह अल्लाह एक है।" फिर इसी तरह ज़िक्र किया और इसमें उबय बिन काब का ज़िक्र नहीं किया।

ज़ईफ़: तबरी फित् तफ़सीर:30/343. उकैली फी ज़ोफा:4/141. ज़िलालुल जन्ना:663.

वज़ाहत: यह हदीस अबू साद की रिवायत से ज़्यादा सहीह है। अबू साद का नाम मुहम्मद बिन मुयस्सर है, अबू जाफ़र राज़ी का नाम ईसा है और अबुल आलिया का नाम रूफ़ै था, यह एक गुलाम था उन्हें सबा की रहने वाली एक औरत ने आज़ाद किया था।

93 بَابٌ وَمِنْ سُورَةِ الْمُعَوِّذَتَيْنِ

93 - तफ़सीर सूरह फ़लक व सूरह नास।

3366 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ عَمْرٍو العَقَدِيُّ، عَنِ ابْنِ أَبِي ذِئْبٍ، عَنِ الحَارِثِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَظَرَ إِلَى القَمَرِ، فَقَالَ: يَا عَائِشَةُ اسْتَعِيذِي بِاللَّهِ مِنْ شَرِّ هَذَا، فَإِنَّ هَذَا هُوَ الغَاسِقُ إِذَا وَقَبَ.

3366 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने चाँद की तरफ़ देख कर फ़रमाया, "ऐ आयशा! उस के शर से अल्लाह की पनाह मांगो यही है जो छिप कर अन्धेरा करता है।"

हसन सहीह: अहमद: 6/61. हाकिम:2/540. तयालिसी:1486. अस-सिलसिला अस-सहीहा:372.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3367 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي

3367 - सय्यदना उक़्बा बिन आमिर जुहनी (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने मुझ पर कुछ

خَالِدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي قَيْسٌ وَهُوَ ابْنُ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ الجُهَنِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: قَدْ أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَيَّ آيَاتٍ لَمْ يُرَ مِثْلُهُنَّ: {قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ} إِلَى آخِرِ السُّورَةِ، وَ {قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الفَلَقِ} إِلَى آخِرِ السُّورَةِ.

ऐसी आयात नाज़िल की हैं उन जैसी देखी नहीं गई। {قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ} आखिर तक और {قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الفَلَقِ} ." आखिर तक।

सहीह: तख़रीज के लिए देखें: हदीस नम्बर 2902.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

94- بَابٌ فِي قِصَّةِ خَلْقِ آدَمَ وَبَدْءِ التَّسْلِيمِ وَالتَّشْمِيتِ وَجَحْدِهِ وَجَحْدِ ذُرِّيَّتِهِ.

94 - आदम (عليه السلام) की तख्लीक़, सलाम की इब्तिदा, छींक, उनके इंकार और उनकी औलाद के इंकार का वाक़िया।

3368 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا صَفْوَانُ بْنُ عِيسَى، قَالَ: حَدَّثَنَا الحَارِثُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي ذُبَابٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَمَّا خَلَقَ اللَّهُ آدَمَ وَنَفَخَ فِيهِ الرُّوحَ عَطَسَ فَقَالَ: الحَمْدُ لِلَّهِ، فَحَمِدَ اللَّهَ بِإِذْنِهِ، فَقَالَ لَهُ رَبُّهُ: رَحِمَكَ اللَّهُ يَا آدَمُ، اذْهَبْ إِلَى أُولَئِكَ الْمَلَائِكَةِ، إِلَى مَلَإٍ مِنْهُمْ جُلُوسٍ، فَقُلْ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ، قَالُوا: وَعَلَيْكَ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللهِ، ثُمَّ رَجَعَ إِلَى رَبِّهِ، فَقَالَ: إِنَّ هَذِهِ تَحِيَّتُكَ وَتَحِيَّةُ بَنِيكَ، بَيْنَهُمْ، فَقَالَ اللَّهُ لَهُ وَيَدَاهُ مَقْبُوضَتَانِ: اخْتَرْ أَيَّهُمَا شِئْتَ،

3368 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब अल्लाह तआला ने आदम (عليه السلام) को पैदा कर के उनमें रूह फूंकी तो उन्हें छींक आई, उन्होंने अल्हम्दुलिल्लाह कहा, उन्होंने अल्लाह के हुक्म से ही उसकी तारीफ़ की, तो उनके रब ने उनसे कहा: ऐ आदम (यर्हमुकल्लाह) अल्लाह तुझ पर रहम करे, उन फरिश्तों के पास जाओ जो सरदार बैठे हुए थे। फिर उन्हें अस्सलामु अलैकुम कहना, उन्होंने जवाब देते हुए कहा: व अलैकस्सलामु व रहमतुल्लाह, फिर वह अपने रब के पास आए तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया, यही तुम्हारा तोहफ़ा (सलाम) है और तुम्हारी औलाद का भी आपस में तोहफ़ा है। फिर अल्लाह तआला ने उनसे कहा: जब कि उस अल्लाह के दोनों हाथ बंद थे, इन दोनों में से एक का इन्तिखाब कर

قَالَ: اخْتَرْتُ يَمِينَ رَبِّي وَكِلْتَا يَدَيْ رَبِّي يَمِينٌ مُبَارَكَةٌ ثُمَّ بَسَطَهَا فَإِذَا فِيهَا آدَمُ وَذُرِّيَّتُهُ، فَقَالَ: أَيْ رَبِّ، مَا هَؤُلَاءِ؟ فَقَالَ: هَؤُلَاءِ ذُرِّيَّتُكَ، فَإِذَا كُلُّ إِنْسَانٍ مَكْتُوبٌ عُمْرُهُ بَيْنَ عَيْنَيْهِ، فَإِذَا فِيهِمْ رَجُلٌ أَضْوَؤُهُمْ، أَوْ مِنْ أَضْوَئِهِمْ - قَالَ: يَا رَبِّ مَنْ هَذَا؟ قَالَ: هَذَا ابْنُكَ دَاوُدُ قَدْ كَتَبْتُ لَهُ عُمْرَ أَرْبَعِينَ سَنَةً. قَالَ: يَا رَبِّ زِدْهُ فِي عُمْرِهِ. قَالَ: ذَاكَ الَّذِي كُتِبَ لَهُ. قَالَ: أَيْ رَبِّ، فَإِنِّي قَدْ جَعَلْتُ لَهُ مِنْ عُمْرِي سِتِّينَ سَنَةً. قَالَ: أَنْتَ وَذَاكَ، قَالَ: ثُمَّ أُسْكِنَ الْجَنَّةَ مَا شَاءَ اللَّهُ، ثُمَّ أُهْبِطَ مِنْهَا، فَكَانَ آدَمُ يَعُدُّ لِنَفْسِهِ، قَالَ: فَأَتَاهُ مَلَكُ الْمَوْتِ، فَقَالَ لَهُ آدَمُ: قَدْ عَجَّلْتَ، قَدْ كُتِبَ لِي أَلْفُ سَنَةٍ. قَالَ: بَلَى وَلَكِنَّكَ جَعَلْتَ لِابْنِكَ دَاوُدَ سِتِّينَ سَنَةً، فَجَحَدَ فَجَحَدَتْ ذُرِّيَّتُهُ، وَنَسِيَ فَنَسِيَتْ ذُرِّيَّتُهُ. قَالَ: فَمِنْ يَوْمِئِذٍ أُمِرَ بِالْكِتَابِ وَالشُّهُودِ.

लो, उन्होंने कहा: मैं अपने रब का दायाँ हाथ पसंद करता हूँ और मेरे रब के दोनों हाथ ही दायें बा बरकत हैं, चुनांचे अल्लाह तआला ने उसे खोला तो उस में आदम और उनकी औलाद थी, वह कहने लगे ऐ मेरे रब यह कौन हैं? फ़रमाया यह तुम्हारी औलाद है, अचानक देखा कि हर इंसान की दो आँखों के दर्मियान उसकी उमर लिखी हुई है उन में निहायत एक ख़ूबसूरत चेहरे वाला आदमी था, कहा: ऐ मेरे रब यह कौन है? फ़रमाया, यह तुम्हारा बेटा दाऊद है, मैंने उसकी उमर चालीस साल लिखी है, कहने लगे: ऐ मेरे रब! मैं अपनी उमर में से साठ साल उसे देता हूँ, फ़रमाया तुम और यह (सख़ावत)? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "फिर जितना अर्सा अल्लाह ने चाहा उन्हें जन्नत में ठहराया गया, फिर वहाँ से उतार दिया गया तो आदम (عليه السلام) अपनी उम्र गिना करते थे, चुनांचे मलकुल मौत उनके पास आया तो आदम (عليه السلام) ने उस से कहा: तुम जल्दी आ गए हो, मेरे लिए तो एक हज़ार साल लिखा गया था।उस फ़रिश्ते ने कहा: क्यों नहीं, लेकिन आप ने साठ साल अपने बेटे दाऊद (عليه السلام) को दे दिए थे। लेकिन उन्होंने इन्कार कर दिया, चुनांचे उन की औलाद ने भी इन्कार किया, और वह भूले तो उनकी औलाद भी भूली, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "फिर उसी दिन से तहरीर और गवाहों का हुक्म दे दिया गया।"

हसन सहीह: हाकिम:1/64. इब्ने हिब्बान:6167. अबू याला:6580.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है। और कई तुरूक़

(सनदों) से बवास्ता अबू हुरैरा (ﷺ) नबी (ﷺ) से मर्वी है जो कि ज़ैद बिन असलम अन अबी सालेह अन अबी हुरैरा अनिन नबी (ﷺ) का तरीक़ है।

95 - ज़मीन में पहाड़ पैदा करने की हिक्मत यह है कि यह हिलने से रुक जाए।

95- بَابٌ فِي حكمة خلق الجبال في الأرض لتقر بعد ميدها.

3369 - सय्यदना अनस बिन मालिक (ﷺ) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब अल्लाह तआला ने ज़मीन को बनाया तो वह हिलने लगी, फिर उस ने पहाड़ों को बना कर उस के ऊपर रखा तो वह थम गई। फरिश्तों ने पहाड़ों की मज़बूती की वजह से तअज्जुब करते हुए कहा: ऐ परवरदिगार! क्या पहाड़ों से सख़्त भी तेरी कोई मख़्लूक़ है? फ़रमाया, हाँ, लोहा। कहने लगे: ऐ परवरदिगार! क्या तेरी मख़्लूक़ में लोहे से सख़्त भी कोई चीज़ है? फ़र्माया: हाँ। आग तो उन्होंने कहा ऐ परवरदिगार क्या तेरी मख़्लूक़ में आग से भी ज़्यादा सख़्त कोई चीज़ है? फ़रमाया, हाँ, पानी है। उन्होंने कहा: ऐ परवरदिगार! क्या पानी से सख़्त भी कोई मख़्लूक़ है? फ़रमाया, हाँ, हवा है। उन्होंने कहा: ऐ परवरदिगार! क्या तेरी मख़्लूक़ में हवा से भी ज़्यादा सख़्त कोई चीज़ है? फ़रमाया, हाँ, आदम का बेटा जो अपने दायें (हाथ) से सदक़ा करता है तो उसे अपने बायें हाथ से भी पोशीदा रखता है।"

ज़ईफ़: अहमद: 3/124. अबू याला:4310. अब्द बिन हुमैद:1215. हिदायतुर्रूवात:1865.

3369 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: حَدَّثَنَا العَوَّامُ بْنُ حَوْشَبٍ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ أَبِي سُلَيْمَانَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَمَّا خَلَقَ اللَّهُ الأَرْضَ جَعَلَتْ تَمِيدُ، فَخَلَقَ الجِبَالَ، فَقَالَ بِهَا عَلَيْهَا فَاسْتَقَرَّتْ، فَعَجِبَتِ الْمَلَائِكَةُ مِنْ شِدَّةِ الجِبَالِ. قَالُوا: يَا رَبِّ هَلْ مِنْ خَلْقِكَ شَيْءٌ أَشَدُّ مِنَ الجِبَالِ؟ قَالَ: نَعَمْ الحَدِيدُ، قَالُوا: يَا رَبِّ فَهَلْ مِنْ خَلْقِكَ شَيْءٌ أَشَدُّ مِنَ الحَدِيدِ؟ قَالَ: نَعَمْ النَّارُ. فَقَالُوا: يَا رَبِّ فَهَلْ مِنْ خَلْقِكَ شَيْءٌ أَشَدُّ مِنَ النَّارِ؟ قَالَ: نَعَمْ الْمَاءُ. قَالُوا: يَا رَبِّ فَهَلْ مِنْ خَلْقِكَ شَيْءٌ أَشَدُّ مِنَ الْمَاءِ؟ قَالَ: نَعَمْ الرِّيحُ. قَالُوا: يَا رَبِّ فَهَلْ مِنْ خَلْقِكَ شَيْءٌ أَشَدُّ مِنَ الرِّيحِ؟ قَالَ: نَعَمْ ابْنُ آدَمَ، تَصَدَّقَ بِصَدَقَةٍ بِيَمِينِهِ يُخْفِيهَا مِنْ شِمَالِهِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है हम इसे सिर्फ़ इसी सनद से मर्फ़ू जानते हैं।

ख़ुलासा

- बगैर इल्म के अपनी राय से क़ुरआन की तफ़्सीर करना मज़्मूम (बुरा) अमल है।
- सूरह फातिहा को ही नमाज़ क़रार दिया गया है। नीज़ इसकी हर आयत पढ़ने पर अल्लाह तआला जवाब देते हैं।
- औलादे आदम के रंगों का इख़्तिलाफ़ मिट्टी की वजह से है।
- दुबुर में बीवी से सोहबत करना हराम है इसी तरह अय्यामे हैज़ में भी जिमा (हमबिस्तरी) करना मना है।
- जो लोग मुतशाबेह आयात के पीछे लगते हों उन से बचना ज़रूरी है।
- सूरह निसा में ख्वातीन के मसाइल उजागर किए गए हैं इसी लिए इसे निसा कहा गया है।
- अल्लाह तआला ने माजूरों से जिहाद की फर्ज़ियत उठा ली है।
- दीन को मुकम्मल कर दिया गया है लिहाज़ा इसमें किसी इज़ाफ़े की गुंजाइश नहीं है।
- तह्वीले क़िब्ला एक इम्तिहान था।
- मुश्रिकीन के मुंह बंद करने के लिए सूरह अन्आम का मुताला किया जाए।
- सूरह अन्फ़ाल और सूरह तौबा में जंगी चालों और जंग के तरीक़े के साथ माले ग़नीमत के तक़्सीम करने के मसाइल का भी बयान हुआ है।
- छोटे छोटे गुनाह नेकियाँ करने की वजह से मिटा दिए जाते हैं।
- यूसुफ़ (عليه السلام) के खानदान में लगातार चार पुश्तों तक नबी आते रहे हैं।
- मक़ामे महमूद से मुराद शफ़ाअत है।
- जब जान जाने का खदशा हो तो तारीज़न बात को फेर कर कहा जा सकता है जैसा कि इब्राहीम (عليه السلام) ने कहा था।
- सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) की फ़ज़ीलत के लिए यही काफ़ी है कि अल्लाह तआला ने उनकी पाक दामनी को क़ुरआन के अल्फ़ाज़ बना दिए हैं।
- निकाह के बाद हस्बे तौफ़ीक़ दावते वलीमा की जाए।
- सबा किसी औरत का नाम नहीं एक मर्द का नाम था।

- अक्सर बेशतर मुहद्दिसीन का फारसी होना हदीस में पेशीन गोई का मिस्दाक़ है।
- मेराज की रात नबी (ﷺ) ने अपने रब को नहीं देखा।
- चाँद का फट जाना क़यामत के क़रीब आ जाने की निशानी थी।
- बहुत कम लोगों की मौजूदगी में भी जुमा हो सकता है।
- अस्हाबुल उख्दूद मुसलमान थे और अल्लाह के यहाँ उनका दर्जा शोहदा का है।
- माल बढ़ाने की लालच इंसान को तबाह व बर्बाद कर देता है।
- कौसर जन्नत में एक नहर है जो रसूलुल्लाह (ﷺ) को अता की गई है।
- सूरह नस्र में रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात का इशारा है।
- पहाड़ों को इसलिए पैदा किया गया है कि ज़मीन की हरकत ख़त्म हो जाए।

मज़मून नम्बर 46

أَبْوَابُ الدَّعَوَاتِ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

नबी अकरम (ﷺ) से मर्वी दुआओं का बयान।

तआरुफ़

235 अहादीस और 149 अबवाब पर मुश्तमिल इस बयान में आएगा।

- दुआ का तरीक़ा।
- कुबूलियते दुआ की शराइत (शर्तें)।
- मस्नून दुआएं और उनके औक़ात (Time)।

1 - दुआ की फ़ज़ीलत।

1 بَاب مَا جَاءَ فِي فَضْلِ الدُّعَاءِ

3370 - अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला के यहाँ दुआ से बढ़कर कोई चीज़ बुज़ुर्गी वाली नहीं है।"

हसन: इब्ने माजह: 3329. सहीहुत्तर्गीब:1629. अहमद:2/362. बुख़ारी फ़ी अदबिल मुफ़रद:712.

3370 - حَدَّثَنَا عَبَّاسُ بْنُ عَبْدِ الْعَظِيمِ الْعَنْبَرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ الطَّيَالِسِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عِمْرَانُ الْقَطَّانُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي الْحَسَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَيْسَ شَيْءٌ أَكْرَمَ عَلَى اللهِ تَعَالَى مِنَ الدُّعَاءِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है हम इसे इमरान अल-क़त्तान के तरीक़ से ही मर्फ़ू जानते हैं।

इमरान अल-क़त्तान, दावर के बेटे हैं उनकी कुनियत अबू अव्वाम है। हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने भी बवास्ता अब्दुर्रहमान बिन महदी इमरान अल-क़त्तान से इसी सनद के साथ ऐसे ही रिवायत की है।

2 - दुआ इबादत का मग़ज़ है।

2 بَاب مِنْهُ الدُّعَاءُ مُخُّ العِبَادَةِ..

3371 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "दुआ इबादत का मग्ज़ है।"

ज़ईफ़ इस लफ़्ज़ के साथ: तबरानी फ़िल औसत:3220. ज़ईफुत्तर्गीब:1016.

3371 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا الوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، عَنِ ابْنِ لَهِيعَةَ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ أَبِي جَعْفَرٍ، عَنْ أَبَانَ بْنِ صَالِحٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: الدُّعَاءُ مُخُّ العِبَادَةِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस ग़रीब है हम इसे इब्ने लहीया की सनद से ही जानते हैं।

3372 - सय्यदना नौमान बिन बशीर (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "दुआ ही तो इबादत है।" फिर आप ने यह आयत पढ़ी "और तुम्हारे परवरदिगार ने कहा है कि मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी पुकार को कुबूल करूंगा, बेशक जो लोग मेरी इबादत से तकब्बुर करते हैं अन्क़रीब वह ज़लील हो कर जहन्नम में दाख़िल होंगे।" (गाफिर:60)

सहीह: अबू दाऊद:1479. इब्ने माजह:3828. अस-सिलसिला अस-सहीहा:2654.

3372 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَرْوَانُ بْنُ مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ ذَرٍّ، عَنْ يُسَيْعٍ، عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: الدُّعَاءُ هُوَ العِبَادَةُ ثُمَّ قَرَأَ: {وَقَالَ رَبُّكُمْ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ}.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है नीज़ इसे मंसूर और आमश ने भी ज़र से रिवायत किया है और हम इसे ज़र की सनद से ही जानते हैं।

ज़र बिन अब्दुल्लाह हम्दानी सिक़ह रावी हैं और उमर बिन ज़र के वालिद हैं।

3 - जो अल्लाह से माँगता नहीं अल्लाह उस पर नाराज़ हो जाता है।

3 بَاب مِنْهُ من لم يسال الله يغضب عليه.

3373 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो अल्लाह से नहीं माँगता तो अल्लाह उस पर

3373 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَاتِمُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ أَبِي الْمَلِيحِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ،

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: إِنَّهُ مَنْ لَمْ يَسْأَلِ اللَّهَ يَغْضَبْ عَلَيْهِ.

नाराज़ हो जाता है।"

हसन: इब्ने माजह:3827. अस-सिलसिला अस-सहीहा:2654. अहमद:2.442. हाकिम:1/491.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस हदीस को वकीअ ने भी कई रावियों के वास्ते से अबू मलीह से रिवायत किया है और हम इसे इसी सनद से ही जानते हैं।

अबू मलीह का नाम सबीह था। मैंने मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी से सुना वह यह बात करते थे कि उन्हें फारसी भी कहा जाता था। हमें इस्हाक़ बिन मंसूर ने वह कहते हैं हमें अबू आसिम ने उन्हें हुमैद बिन अबू मलीह ने अबू सालेह से बवास्ता अबू हुरैरा (رضي الله عنه) नबी (ﷺ) से ऐसी ही हदीस बयान की है।

4 - بَاب: منه كون الذِّكرِ خير أعمالكم وأزكاها عند مليككم.

4 - ज़िक्र तुम्हारा बेहतरीन अमल और तुम्हारे मालिक के यहाँ सब से पाकीज़ा चीज़ है।

3374 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا مَرْحُومُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ الْعَطَّارُ، حَدَّثَنَا أَبُو نَعَامَةَ السَّعْدِيُّ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ، عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ رضي الله عنه، قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي غَزَاةٍ، فَلَمَّا قَفَلْنَا أَشْرَفْنَا عَلَى الْمَدِينَةِ فَكَبَّرَ النَّاسُ تَكْبِيرَةً وَرَفَعُوا بِهَا أَصْوَاتَهُمْ ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: إِنَّ رَبَّكُمْ لَيْسَ بِأَصَمَّ وَلاَ غَائِبٍ، هُوَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ رُءُوسِ رِحَالِكُمْ، ثُمَّ قَالَ: يَا عَبْدَ اللهِ بْنَ قَيْسٍ، أَلاَ أُعَلِّمُكَ كَنْزًا مِنْ كُنُوزِ الْجَنَّةِ: لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ.

3374 - अबू मूसा अशअरी (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ एक जंग में थे, फिर जब हम लौटे तो मदीना को देखते ही लोगों ने बलंद आवाजों से अल्लाहु अकबर कहा: तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम्हारा रब बहरा और ग़ायब नहीं है वह तो तुम्हारे और तुम्हारी सवारियों के सरों के दर्मियान है।" फिर फ़रमाया: "ऐ अब्दुल्लाह बिन कैस! क्या मैं तुम्हें जन्नत के खजानों में से एक ख़ज़ाने के मुताल्लिक़ न बताऊँ (वह है) لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ।"

सहीह: अबू दाऊद: 1528.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। अबू उस्मान नहदी का नाम अब्दुर्रहमान बिन मुल्ल और अबू नुआमा का नाम अम्र बिन ईसा है। नीज़ " वह तुम्हारे और तुम्हारी सवारियों के सरों के दर्मियान है" से मुराद उसका इल्म और कुदरत है।

5 - ज़िक्र करने की फ़ज़ीलत।

5 بَاب مَا جَاءَ فِي فَضْلِ الذِّكْرِ

3375 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन बुस्र (رضي الله عنه) से रिवायत है कि एक आदमी ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! इस्लाम के अहकामात तो बहुत हैं चुनांचे आप मुझे कोई ऐसी चीज़ बताइए जिसे मैं मज़बूती से थाम लूं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम्हारी ज़बान हर वक़्त अल्लाह के ज़िक्र से तर रहे।"

सहीह: तख़रीज के लिए देखें: हदीस नम्बर 2429.

3375 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ حُبَابٍ، عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ صَالِحٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ قَيْسٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ بُسْرٍ، أَنَّ رَجُلاً قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ شَرَائِعَ الإِسْلاَمِ قَدْ كَثُرَتْ عَلَيَّ، فَأَخْبِرْنِي بِشَيْءٍ أَتَشَبَّثُ بِهِ، قَالَ: لاَ يَزَالُ لِسَانُكَ رَطْبًا مِنْ ذِكْرِ اللهِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस इस सनद से हसन ग़रीब है।

6 - कसरत से (ज़्यादा से ज़्यादा) अल्लाह का ज़िक्र करने वाला अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले से अफ़ज़ल है।

6 بَاب مِنْهُ فِي أن الذاكرين الله كثيرا أفضل من الغازي في سبيل الله.

3376 - सय्यदना अबू सईद (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा गया: क़यामत के दिन अल्लाह के यहाँ किस बन्दे के दर्जात अफ़ज़ल होंगे? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "कस्रत के साथ अल्लाह का ज़िक्र करने वाले मर्दों और औरतों के" रावी कहते हैं: मैंने अर्ज़ की: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! अल्लाह के रास्ते में जंग करने वाला? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "अगर वह कुफ़्फ़ार और मुश्रिकीन में अपनी तलवार चलाए हत्ता कि वह टूट जाए और ख़ुद खून आलूद हो जाए तो फिर भी कस्रत के साथ अल्लाह का ज़िक्र करने वाले मर्द और औरतें उस से अफ़ज़ल दर्जात में होंगे।"

ज़ईफ़: अहमद:3/75. अबू याला:1401. ज़ईफुत्तर्गीब:898

3376 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ لَهِيعَةَ، عَنْ دَرَّاجٍ، عَنْ أَبِي الْهَيْثَمِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سُئِلَ أَيُّ العِبَادِ أَفْضَلُ دَرَجَةً عِنْدَ اللهِ يَوْمَ القِيَامَةِ؟ قَالَ: الذَّاكِرُونَ اللَّهَ كَثِيرًا وَالذَّاكِرَاتُ. قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ وَمِنَ الغَازِي فِي سَبِيلِ اللهِ؟ قَالَ: لَوْ ضَرَبَ بِسَيْفِهِ فِي الكُفَّارِ وَالمُشْرِكِينَ حَتَّى يَنْكَسِرَ وَيَخْتَضِبَ دَمًا لَكَانَ الذَّاكِرُونَ اللَّهَ كَثِيرًا أَفْضَلَ مِنْهُ دَرَجَةً.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है हम इसे सिर्फ दराज की सनद से ही जानते हैं।

3377 - حَدَّثَنَا الحُسَيْنُ بْنُ حُرَيْثٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الفَضْلُ بْنُ مُوسَى، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ سَعِيدٍ هُوَ ابْنُ أَبِي هِنْدٍ، عَنْ زِيَادٍ، مَوْلَى ابْنِ عَيَّاشٍ عَنْ أَبِي بَحْرِيَّةَ، عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ، قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَلَا أُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرِ أَعْمَالِكُمْ، وَأَزْكَاهَا عِنْدَ مَلِيكِكُمْ، وَأَرْفَعِهَا فِي دَرَجَاتِكُمْ وَخَيْرٌ لَكُمْ مِنْ إِنْفَاقِ الذَّهَبِ وَالوَرِقِ، وَخَيْرٌ لَكُمْ مِنْ أَنْ تَلْقَوْا عَدُوَّكُمْ فَتَضْرِبُوا أَعْنَاقَهُمْ وَيَضْرِبُوا أَعْنَاقَكُمْ؟ قَالُوا: بَلَى. قَالَ: ذِكْرُ اللهِ تَعَالَى قَالَ مُعَاذُ بْنُ جَبَلٍ: مَا شَيْءٌ أَنْجَى مِنْ عَذَابِ اللهِ مِنْ ذِكْرِ اللَّهِ.

3377 - सय्यदना अबू दर्दा (رضی اللہ) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या मैं तुम्हें तुम्हारे सब से बेहतरीन, तुम्हारे मालिक के यहाँ पाकीज़ा तरीन और तुम्हारे दर्जात में सब से बलंद अमल के बारे में न बताऊँ? जो तुम्हारे लिए सोना और चांदी ख़र्च करने से बेहतर है और इस बात से भी बेहतर है कि तुम अपने दुश्मन से मिलो फिर तुम उनकी गर्दनें उतारो और वह तुम्हारी गर्दनें उतारें? लोगों ने अर्ज़ किया, क्यों नहीं ज़रूर, आप ने फ़रमाया, "वह अल्लाह तआला का ज़िक्र है।" सय्यदना मुआज़ बिन जबल (رضی اللہ) फ़रमाते हैं: अल्लाह के ज़िक्र से बढ़ कर कोई चीज़ अल्लाह के अज़ाब से निजात दिलाने वाली नहीं है।

सहीह: इब्ने माजह:3790. सहीहुत्तर्गीब: 1493. अहमद:5/ 195. हाकिम: 1/ 496.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: बाज़ ने इस हदीस को इसी सनद से अब्दुल्लाह बिन सईद से इसी तरह रिवायत किया है और बाज़ ने उन से मुर्सल रिवायत की है।

7 بَابُ مَا جَاءَ فِي القَوْمِ يَجْلِسُونَ فَيَذْكُرُونَ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ مَا لَهُمْ مِنَ الفَضْلِ

7 - जो लोग बैठ कर अल्लाह का ज़िक्र करें उनकी फ़ज़ीलत।

3378 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ الأَغَرِّ أَبِي مُسْلِمٍ، أَنَّهُ شَهِدَ عَلَى أَبِي هُرَيْرَةَ، وَأَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، أَنَّهُمَا شَهِدَا عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَالَ: مَا مِنْ قَوْمٍ يَذْكُرُونَ اللَّهَ إِلاَّ

3378 - सय्यदना अबू हुरैरा और अबू सईद ख़ुदरी (رضی اللہ) गवाही देते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो लोग अल्लाह का ज़िक्र करते हैं तो फ़रिश्ते उन्हें घेर लेते हैं, रहमत उन्हें ढाँप लेती है, उन पर सकीनत नाज़िल होती है और अल्लाह तआला उनका ज़िक्र फ़रिश्तों में करते हैं।"

मुस्लिम:2700. इब्ने माजह:3791. अहमद:3/ 33.

حَفَّتْ بِهِمُ الْمَلَائِكَةُ، وَغَشِيَتْهُمُ الرَّحْمَةُ، وَنَزَلَتْ عَلَيْهِمُ السَّكِينَةُ، وَذَكَرَهُمُ اللَّهُ فِيمَنْ عِنْدَهُ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3379 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَرْحُومُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ الْعَطَّارُ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو نَعَامَةَ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، قَالَ: خَرَجَ مُعَاوِيَةُ، إِلَى الْمَسْجِدِ فَقَالَ: مَا يُجْلِسُكُمْ؟ قَالُوا: جَلَسْنَا نَذْكُرُ اللَّهَ. قَالَ: آللَّهِ مَا أَجْلَسَكُمْ إِلاَّ ذَاكَ؟ قَالُوا: وَاللَّهِ مَا أَجْلَسَنَا إِلاَّ ذَاكَ. قَالَ: أَمَا إِنِّي لَمْ أَسْتَحْلِفْكُمْ تُهْمَةً لَكُمْ، وَمَا كَانَ أَحَدٌ بِمَنْزِلَتِي مِنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَقَلَّ حَدِيثًا عَنْهُ مِنِّي، إِنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَرَجَ عَلَى حَلْقَةٍ مِنْ أَصْحَابِهِ فَقَالَ: مَا يُجْلِسُكُمْ؟ قَالُوا: جَلَسْنَا نَذْكُرُ اللَّهَ وَنَحْمَدُهُ لِمَا هَدَانَا لِلإِسْلاَمِ وَمَنَّ عَلَيْنَا بِهِ، فَقَالَ: آللَّهِ مَا أَجْلَسَكُمْ إِلاَّ ذَاكَ؟ قَالُوا: آللَّهِ مَا أَجْلَسَنَا إِلاَّ ذَاكَ. قَالَ: أَمَا إِنِّي لَمْ أَسْتَحْلِفْكُمْ لِتُهْمَةٍ لَكُمْ، إِنَّهُ أَتَانِي جِبْرِيلُ وَأَخْبَرَنِي أَنَّ اللَّهَ يُبَاهِي بِكُمُ الْمَلاَئِكَةَ.

3379 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मुआविया (رضي الله عنه) मस्जिद में आए तो कहने लगे: तुम लोग किस लिए बैठे हो? उन्होंने कहा: हम बैठे अल्लाह का ज़िक्र कर रहे हैं: उन्होंने ने पूछा अल्लाह की क़सम! क्या इसीलिए बैठे हो? लोगों ने कहा: अल्लाह की क़सम! हम सिर्फ़ इसी लिए बैठे हैं। फ़रमाने लगे: मैंने इसलिए तुम से क़सम नहीं ली की तुम झूठ बोलते हो हालांकि मुझ से कम रसूलुल्लाह (ﷺ) की अहादीस रिवायत करने वाला और कोई नहीं है, रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने सहाबा के एक हल्क़े के पास तशरीफ़ लाये तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "कैसे बैठे हो?" अर्ज़ किया, हम बैठे अल्लाह का ज़िक्र कर रहे हैं और जो उस ने हमें इस्लाम की तरफ़ हिदायत देकर हम पर एहसान किया है उस पर उसका शुक्र अदा कर रहे हैं। तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या अल्लाह की क़सम! इसीलिए ही बैठे हो?" उन लोगों ने कहा:! अल्लाह की क़सम! हम इसी लिए ही बैठे हैं, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैं ने इसलिए तुम से क़सम नहीं ली कि तुम झूठे हो, वजह यह है कि जिब्रील ने मेरे पास आकर मुझे बताया कि अल्लाह तआला फ़रिश्तों पर तुम्हारे साथ फ़ख्र करता है।"[(1)]

मुस्लिम:2701. निसाई:5426. अहमद:4/92.

तौज़ीह: (1) इस हदीस से बअ़ज़ लोग इस्तिदलाल करते हुए कहते हैं कि ज़िक्र की मजलिसें व महफ़िलें कायम करना और जश्ने विलादते मुस्तफ़ा (ﷺ) मनाना दुरुस्त है, जब कि इस हदीस में कहीं भी इन बातों का ज़िक्र मौजूद नहीं। इस हदीस से ज़्यादा से ज़्यादा यही सबूत मिलता है कि दीनी उमूर पर बात करने के लिए मजलिस कायम की जा सकती है वल्लाहु आलम!

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है हम इसे सिर्फ इसी तरीक़ से ही जानते हैं। अबू नुआमा सादी का नाम अम्र बिन ईसा और अबू उस्मान नहदी का नाम अब्दुर्रहमान बिन मुल्ल है।

8- जिस मजलिस में ज़िक्रे इलाही न होता हो

8 بَابٌ فِي الْقَوْمِ يَجْلِسُونَ وَلَا يَذْكُرُونَ اللهَ

3380 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो लोग किसी मजलिस में बैठ कर अल्लाह का ज़िक्र नहीं करते और न ही अपने नबी पर दरूद पढ़ते हैं तो वह मजलिस उन पर बाइसे हसरत व नुक़सान होगी, फिर अगर अल्लाह चाहे तो उन्हें अज़ाब दे और अगर चाहे तो उन्हें बख्श दे।"

सहीह: अबू दाऊद:4855. सहीहुत्तर्गीब: 1512. अहमद:2/446.

3380 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ صَالِحٍ، مَوْلَى التَّوْأَمَةِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَا جَلَسَ قَوْمٌ مَجْلِسًا لَمْ يَذْكُرُوا اللَّهَ فِيهِ، وَلَمْ يُصَلُّوا عَلَى نَبِيِّهِمْ، إِلاَّ كَانَ عَلَيْهِمْ تِرَةً، فَإِنْ شَاءَ عَذَّبَهُمْ وَإِنْ شَاءَ غَفَرَ لَهُمْ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रहि०) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है, और कई तुरूक़ से बवास्ता अबू हुरैरा (رضي الله عنه) नबी (ﷺ) से मर्वी है

9 - मुसलमान की दुआ क़ुबूल की जाती है।

9 بَابُ مَا جَاءَ أَنَّ دَعْوَةَ الْمُسْلِمِ مُسْتَجَابَةٌ

3381 - सय्यदना जाबिर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "जो शख़्स कोई भी दुआ करता है तो अल्लाह तआला उसे उसके सवाल के मुताबिक़ दे देता है या उस से उस जैसी बुराई (तक्लीफ़) रोक लेता है जब तक वह किसी गुनाह या रिश्तेदारी को तोड़ने की दुआ नहीं करता।"

हसन: अहमद: 3/360. हिदायतुर्रूवात: 2176.

3381 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ لَهِيعَةَ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: مَا مِنْ أَحَدٍ يَدْعُو بِدُعَاءٍ إِلاَّ آتَاهُ اللَّهُ مَا سَأَلَ أَوْ كَفَّ عَنْهُ مِنَ السُّوءِ مِثْلَهُ، مَا لَمْ يَدْعُ بِإِثْمٍ أَوْ قَطِيعَةِ رَحِمٍ.

वज़ाहत: इस बारे में अबू सईद और उबादा बिन सामित (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

3382 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिसे यह बात अच्छी लगे कि सख़्तियों के वक़्त अल्लाह तआला उसकी दुआ कुबूल करे तो उसे चाहिए कि ख़ुशहाली[1] में कस्रत से दुआ करे।"

हसन: अबू याला:6396. अस-सिलसिला अस-सहीहा: 593.सहीहुत्तर्गीब:1628.

3382 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَرْزُوقٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ وَاقِدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَطِيَّةَ اللَّيْثِيُّ، عَنْ شَهْرِ بْنِ حَوْشَبٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَسْتَجِيبَ اللَّهُ لَهُ عِنْدَ الشَّدَائِدِ وَالكَرْبِ فَلْيُكْثِرِ الدُّعَاءَ فِي الرَّخَاءِ.

तौज़ीह: (1) الرَّخَاء : कुशादगी, आसूदगी, खुशहाली (अल-कामूसुल वहीद, प.611)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

3383 - सय्यदना जाबिर (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "बेहतरीन ज़िक्र لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ और बेहतरीन दुआ الحَمْدُ لِلَّهِ है।"

हसन: इब्ने माजह:3800. सहीहुत्तर्गीब:1526. हाकिम:1/498. इब्ने हिब्बान:846.

3383 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَبِيبِ بْنِ عَرَبِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ كَثِيرٍ الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: سَمِعْتُ طَلْحَةَ بْنَ خِرَاشٍ، قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ، يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: أَفْضَلُ الذِّكْرِ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ، وَأَفْضَلُ الدُّعَاءِ الحَمْدُ لِلَّهِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है हम इसे मूसा बिन इब्राहीम के तरीक़ से ही जानते हैं। नीज़ अली बिन मदीनी और दीगर मोहद्दिसीन ने भी इस हदीस को मूसा बिन इब्राहीम से ही रिवायत किया है।

3384 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हर वक़्त अल्लाह को याद करते थे।

मुस्लिम:373. अबू दाऊद:18. इब्ने माजह:302. इब्ने खुज़ैमा:207. अहमद:6/70.

3384 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ الْمُحَارِبِيُّ، قَالاَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ زَكَرِيَّا بْنِ أَبِي زَائِدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ خَالِدِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنِ البَهِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَذْكُرُ اللَّهَ عَلَى كُلِّ أَحْيَانِهِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे यहया बिन ज़करिया बिन अबी ज़ायदा की सनद से ही जानते हैं और बही का नाम अब्दुल्लाह था।

10 - दुआ करने वाला पहले अपने लिए दुआ करे।

10 بَابُ مَا جَاءَ أَنَّ الدَّاعِيَ يَبْدَأُ بِنَفْسِهِ

3385 - सय्यदना उबय बिन काब (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब किसी को याद करके उस के लिए दुआ करते तो पहले अपने लिए दुआ करते।

सहीह: अबू दाऊद: 3984. हिदायतुर्रूवात:2198. अहमद:5/121. इब्ने अबी शैबा:10/219, 220.

3385 - حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو قَطَنٍ، عَنْ حَمْزَةَ الزَّيَّاتِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنْ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا ذَكَرَ أَحَدًا فَدَعَا لَهُ بَدَأَ بِنَفْسِهِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है और कतन का नाम अम्र बिन हैसम है।

11 - दुआ के वक़्त हाथ उठाना।

11 بَابُ مَا جَاءَ فِي رَفْعِ الأَيْدِي عِنْدَ الدُّعَاءِ

3386 - सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब दुआ में हाथ उठाते तो उन्हें अपने चेहरे पर फेरने से पहले नीचे नहीं करते थे। मुहम्मद बिन मुसन्ना ने अपनी हदीस में कहा है कि आप उन्हें चेहरे पर फेरने तक वापस नहीं लाते थे।

ज़ईफ़: हाकिम: 1/536. अब्द बिन हुमैद:39. हिदायतुर्रूवात:2185.

3386 - حَدَّثَنَا أَبُو مُوسَى مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، وَإِبْرَاهِيمُ بْنُ يَعْقُوبَ، وَغَيْرُ وَاحِدٍ قَالُوا: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ عِيسَى الجُهَنِيُّ، عَنْ حَنْظَلَةَ بْنِ أَبِي سُفْيَانَ الجُمَحِيِّ، عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عُمَرَ بْنِ الخَطَّابِ، قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِذَا رَفَعَ يَدَيْهِ فِي الدُّعَاءِ، لَمْ يَحُطَّهُمَا حَتَّى يَمْسَحَ بِهِمَا وَجْهَهُ قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى فِي حَدِيثِهِ: لَمْ يَرُدَّهُمَا حَتَّى يَمْسَحَ بِهِمَا وَجْهَهُ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे हम्माद बिन ईसा के तरीक़ से ही जानते हैं जब कि वह इसे बयान करने में अकेले हैं और यह बहुत कम हदीस बयान करने

वाले हैं नीज़ इनमें से बहुत से लोगों ने रिवायत ली है।

हंज़ला बिन अबी सुफ़ियान जमही सिक़ह हैं उन्हें यहया बिन सईद अल- क़त्तान ने सिक़ह कहा है।

12 - दुआ में जल्द बाज़ी करने वाला।

12 بَاب مَا جَاءَ فِيمَنْ يَسْتَعْجِلُ فِي دُعَائِهِ

3387 - حَدَّثَنَا الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي عُبَيْدٍ، مَوْلَى ابْنِ أَزْهَرَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: يُسْتَجَابُ لأَحَدِكُمْ مَا لَمْ يَعْجَلْ، يَقُولُ: دَعَوْتُ فَلَمْ يُسْتَجَبْ لِي.

3387 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "आदमी की दुआ (उस वक़्त तक) कुबूल होती है जब तक वह जल्दी नहीं करता (उसकी जल्दी यह है कि) वह कहता है: मैंने दुआ की थी लेकिन (मेरी दुआ) कुबूल नहीं हुई।"

बुख़ारी:6340. मुस्लिम:2735. अबू दाऊद:1484. इब्ने माजह:3853.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और अबू उबैदा का नाम साद है जो कि अब्दुर्रहमान बिन अजहर के आज़ादकर्दा थे, यह भी कहा जाता है कि यह अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (رضي الله عنه) के आज़ादकर्दा थे और अब्दुर्रहमान बिन अज़हर, अब्दुर्रहमान बिन औफ़ के चचा के बेटे थे। नीज इस बारे में अनस (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

13 - सुबह और शाम की दुआएं।

13 بَاب مَا جَاءَ فِي الدُّعَاءِ إِذَا أَصْبَحَ وَإِذَا أَمْسَى

3388 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ وَهُوَ الطَّيَالِسِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي الزِّنَادِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبَانَ بْنِ عُثْمَانَ، قَالَ: سَمِعْتُ عُثْمَانَ بْنَ عَفَّانَ، يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا مِنْ عَبْدٍ يَقُولُ فِي صَبَاحِ كُلِّ يَوْمٍ وَمَسَاءِ كُلِّ لَيْلَةٍ: بِسْمِ اللهِ الَّذِي لاَ يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الأَرْضِ وَلاَ فِي السَّمَاءِ، وَهُوَ السَّمِيعُ العَلِيمُ

3388 - सय्यदना उस्मान बिन अफ़्फ़ान (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो शख़्स हर दिन की सुबह और हर रात की शाम को (यह कलिमात) उस अल्लाह के नाम से जिस नाम के साथ ज़मीन आसमान में कोई चीज़ नुकसान नहीं दे सकती और वह हर बात को सुनने वाला जानने वाला है" तीन दफ़ा कहे तो उसे कोई चीज़ नुकसान नहीं पहुंचाएगी।"

अबान को एक हिस्से में फालिज हुआ था तो

ثَلاثَ مَرَّاتٍ، فَيَضُرَّهُ شَيْءٌ وَكَانَ أَبَانُ، قَدْ أَصَابَهُ طَرَفُ فَالِجٍ، فَجَعَلَ الرَّجُلُ يَنْظُرُ إِلَيْهِ، فَقَالَ لَهُ أَبَانُ: مَا تَنْظُرُ؟ أَمَا إِنَّ الحَدِيثَ كَمَا حَدَّثْتُكَ، وَلَكِنِّي لَمْ أَقُلْهُ يَوْمَئِذٍ لِيُمْضِيَ اللَّهُ عَلَيَّ قَدَرَهُ.

एक आदमी उनकी तरफ़ देखने लगा, अबान ने उस से कहा: क्या देखते हो? सुनो! हदीस तो ऐसे ही है जैसे मैंने तुम्हें बयान की है, लेकिन उस दिन मैं उसे पढ़ नहीं सका था ताकि अल्लाह तआला मुझ पर अपनी तक़दीर जारी कर दे।

हसन सहीह: अबू दाऊद:5088. इब्ने माजह:3869. अहमद:1/62. हाकिम:1/514.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है।

3389 - حَدَّثَنَا أَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُقْبَةُ بْنُ خَالِدٍ، عَنْ أَبِي سَعْدٍ سَعِيدِ بْنِ الْمَرْزُبَانِ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ ثَوْبَانَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَنْ قَالَ حِينَ يُمْسِي: رَضِيتُ بِاللَّهِ رَبًّا، وَبِالإِسْلَامِ دِينًا، وَبِمُحَمَّدٍ نَبِيًّا، كَانَ حَقًّا عَلَى اللهِ أَنْ يُرْضِيَهُ.

3389 - सय्यदना सौबान (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिस शख़्स ने शाम के वक़्त यह कहा "मैं अल्लाह के रब होने इस्लाम के दीन होने और मुहम्मद (ﷺ) के नबी होने पर राजी हुआ।" तो अल्लाह पर हक़ है कि वह उसे राज़ी कर दे।"

ज़ईफ़: इस पर तख़रीज ज़िक्र नहीं की गई। अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा: 5020.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है।

3390 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الحَسَنِ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سُوَيْدٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَمْسَى قَالَ: أَمْسَيْنَا وَأَمْسَى الْمُلْكُ لِلَّهِ، وَالحَمْدُ لِلَّهِ وَلاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، أُرَاهُ قَالَ: لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، أَسْأَلُكَ

3390 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) शाम के वक़्त कहते थे " हम ने शाम की और अल्लाह के सारे मुल्क ने शाम की, और सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है, अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं।" रावी कहते हैं: मेरा ख़याल है कि फिर यह भी कहा था " उसकी बादशाहत है और उसी के लिए सब तारीफ़ है और वह हर चीज़ पर कामिल कुदरत रखता है, मैं तुझ से इस रात की बेहतरी का सवाल करता हूँ और उस रात की बेहतरी का जो उसके बाद है और मैं इस रात के

خَيْرَ مَا فِي هَذِهِ اللَّيْلَةِ وَخَيْرَ مَا بَعْدَهَا، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ هَذِهِ اللَّيْلَةِ وَشَرِّ مَا بَعْدَهَا، وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الكَسَلِ وَسُوءِ الكِبَرِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ النَّارِ وَعَذَابِ القَبْرِ وَإِذَا أَصْبَحَ قَالَ ذَلِكَ أَيْضًا: أَصْبَحْنَا وَأَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلَّهِ وَالحَمْدُ لِلَّهِ.

शर से तेरी पनाह में आता हूँ और इसके बाद आने वाली रात की शर से, (ऐ मेरे रब!) मैं काहिली और बुढ़ापे की खराबी से तेरी पनाह में आता हूँ।" और सुबह के वक़्त भी आप ऐसे ही कहते " हम ने सुबह की और अल्लाह के सारे मुल्क ने सुबह की और सब तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं।" (आगे इसी तरह आखिर तक)

मुस्लिम:2723. अबू दाऊद:5071. अहमद:1/440. इब्ने हिब्बान:963.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। इसे शोबा ने भी इसी सनद के साथ इब्ने मसऊद (رضي الله عنه) से रिवायत किया है लेकिन वह मर्फ़ू नहीं है।

3391 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا سُهَيْلُ بْنُ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُعَلِّمُ أَصْحَابَهُ يَقُولُ: إِذَا أَصْبَحَ أَحَدُكُمْ فَلْيَقُلْ: اللَّهُمَّ بِكَ أَصْبَحْنَا، وَبِكَ أَمْسَيْنَا، وَبِكَ نَحْيَا وَبِكَ نَمُوتُ وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ، وَإِذَا أَمْسَى فَلْيَقُلْ: اللَّهُمَّ بِكَ أَمْسَيْنَا وَبِكَ أَصْبَحْنَا وَبِكَ نَحْيَا وَبِكَ نَمُوتُ وَإِلَيْكَ النُّشُورُ.

3391 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने सहाबा को तालीम देते हुए फ़रमाते थे "कि जब तुम में से कोई शख़्स सुबह करे तो यह कहना चाहिए "ऐ अल्लाह तेरी ही हिफ़ाज़त में हम ने सुबह की और तेरी हिफ़ाज़त में हम ने शाम की, तेरे ही नाम पर हम ज़िंदा होते हैं और तेरे ही नाम पर हम मरते हैं और तेरी ही तरफ़ उठकर जाना है, और जब शाम करे तो कहे " तेरी ही हिफ़ाज़त में हम ने शाम की और तेरी हिफ़ाज़त में सुबह की, तेरे ही नाम से हम ज़िंदा होते हैं और तेरे ही नाम के साथ हम मरते हैं और तेरी ही तरफ़ लौटना है।

सहीह: अबू दाऊद:5068. इब्ने माजह:3868. अस-सिलसिला अस-सहीहा: 263. अहमद:2/354. इब्ने हिब्बान:964.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।

14- दुआ: ऐ अल्लाह गैब व हाज़िर के जानने वाले ज़मीन व आसमानों को बनाने वाले

14 بَاب مِنْهُ: اللَّهُمَّ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ، فَاطِرَ السَّمٰوَاتِ وَالأَرْضِ..

3392 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि अबू बक्र (رضي الله عنه) ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मुझे किसी चीज़ का हुक्म दें जिसे मैं सुबहो-शाम पढ़ूं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम कहो "ऐ अल्लाह! गैब और हाज़िर के जानने वाले! आसमानों और ज़मीन को पैदा करने वाले! हर चीज़ के रब और उसके मालिक! मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। मैं तेरी पनाह में आता हूँ अपने नफ़्स के शर से और शैतान के शर और उसके शिर्क से।" आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "इसे सुबह, शाम और जब तुम अपने बिस्तर पर जाओ तो पढ़ो।"

सहीह: अबू दाऊद:5067. अस-सिलसिला अस-सहीहा:2753. अहमद:1/9,10. दारमी:2692. तयालिसी:2582

3392 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ يَعْلَى بْنِ عَطَاءٍ، قَالَ: سَمِعْتُ عَمْرَو بْنَ عَاصِمٍ الثَّقَفِيَّ، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ أَبُو بَكْرٍ: يَا رَسُولَ اللهِ مُرْنِي بِشَيْءٍ أَقُولُهُ إِذَا أَصْبَحْتُ وَإِذَا أَمْسَيْتُ؟ قَالَ: قُلْ: اللَّهُمَّ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ، فَاطِرَ السَّمٰوَاتِ وَالأَرْضِ، رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَمَلِيكَهُ، أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِي وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرْكِهِ، قَالَ: قُلْهُ إِذَا أَصْبَحْتَ، وَإِذَا أَمْسَيْتَ، وَإِذَا أَخَذْتَ مَضْجَعَكَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

15 - सय्यदुल इस्तिग़फ़ार।

15 بَاب مِنْهُ دعاء سيد الاستغفار.

3393 - सय्यदना शद्दाद बिन औस (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने उन से फ़रमाया, "क्या मैं तुम्हे सय्यदुल इस्तिग़फ़ार न बताऊँ?" ऐ अल्लाह तू ही मेरा रब है तेरे सिवा कोई माबूद नहीं तूने मुझे पैदा फ़रमाया और मैं तेरा बन्दा हूँ और मैं अपनी ताक़त के मुताबिक़ तेरे अहद

3393 - حَدَّثَنَا الْحُسَيْنُ بْنُ حُرَيْثٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ كَثِيرِ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ رَبِيعَةَ، عَنْ شَدَّادِ بْنِ أَوْسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ

لَهُ: أَلاَ أَدُلُّكَ عَلَى سَيِّدِ الاِسْتِغْفَارِ: اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي، لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ، خَلَقْتَنِي وَأَنَا عَبْدُكَ، وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، وَأَبُوءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ، وَأَعْتَرِفُ بِذُنُوبِي، فَاغْفِرْ لِي ذُنُوبِي إِنَّهُ لاَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلاَّ أَنْتَ، لاَ يَقُولُهَا أَحَدُكُمْ حِينَ يُمْسِي فَيَأْتِي عَلَيْهِ قَدَرٌ قَبْلَ أَنْ يُصْبِحَ إِلاَّ وَجَبَتْ لَهُ الجَنَّةُ، وَلاَ يَقُولُهَا حِينَ يُصْبِحُ فَيَأْتِي عَلَيْهِ قَدَرٌ قَبْلَ أَنْ يُمْسِيَ إِلاَّ وَجَبَتْ لَهُ الجَنَّةُ.

और वादे पर (कायम) हूँ, मैं तुझ से उस चीज़ के शर (बुराई) से पनाह माँगता हूँ जिस का मैंने इर्तिकाब किया, मैं तेरे सामने तेरे इनाम का इक़रार करता हूँ जो मुझ पर हुआ और मैं अपने गुनाह का एतराफ़ करता हूँ, लिहाज़ा तू मुझे माफ़ कर दे, हक़ीक़त यह है कि तेरे सिवा कोई गुनाहों को माफ़ नहीं कर सकता।" तुम में से कोई शख़्स अगर इसे शाम के वक़्त पढ़े फिर वह सुबह से पहले फौत हो जाए तो वह शख़्स जन्नत में जाएगा और जो शख़्स सुबह के वक़्त यह दुआ पढ़े फिर शाम से पहले फौत हो जाए तो वह भी जन्नत में जाएगा।"

बुख़ारी:6306. निसाई:5522. अस-सिलसिला अस-सहीहा:1747.

वज़ाहत: इस बारे में अबू हुरैरा, इब्ने उमर, इब्ने मसऊद, इब्ने अब्ज़ा और बुरैदा (رضی اللہ) से भी हदीस मर्वी हैं। इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है और अब्दुल अज़ीज़ बिन अबी हाज़िम, इब्ने अबी हाज़िम जाहिद ही हैं। नीज़ यह हदीस एक और सनद से भी शद्दाद बिन औस (رضی اللہ) से मर्वी है।

16 بَابُ مَا جَاءَ فِي الدُّعَاءِ إِذَا أَوَى إِلَى فِرَاشِهِ

16 - सोते वक़्त की दुआ।

3394 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ الهَمْدَانِيِّ، عَنِ البَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَهُ: أَلاَ أُعَلِّمُكَ كَلِمَاتٍ تَقُولُهَا إِذَا أَوَيْتَ إِلَى فِرَاشِكَ، فَإِنْ مِتَّ مِنْ لَيْلَتِكَ مِتَّ عَلَى الفِطْرَةِ، وَإِنْ أَصْبَحْتَ أَصْبَحْتَ وَقَدْ

3394 - सय्यदना बराअ बिन आज़िब (رضی اللہ) से रिवायत है कि नबी (صلی اللہ علیہ وسلم) ने उन से फ़रमाया, "क्या मैं तुम्हें ऐसे कलिमात न सिखाऊँ जो तुम अपने बिस्तर पर जाते वक़्त पढ़ो, अगर उसी रात तुम फौत हो गए तो तुम फ़ित्रते इस्लाम पर फौत होगे और अगर सुबह करोगे तो तुझे भलाई मिलेगी? तुम कहो "ऐ अल्लाह मैंने अपना नफ़्स तेरे ताबे कर दिया, अपना चेहरा तेरी तरफ़ मुतवजह कर दिया और अपना मामला तुझे

أَصَبْتَ خَيْرًا، تَقُولُ: اللَّهُمَّ أَسْلَمْتُ نَفْسِي إِلَيْكَ، وَوَجَّهْتُ وَجْهِي إِلَيْكَ، وَفَوَّضْتُ أَمْرِي إِلَيْكَ، رَغْبَةً وَرَهْبَةً إِلَيْكَ، وَأَلْجَأْتُ ظَهْرِي إِلَيْكَ، لاَ مَلْجَأَ وَلاَ مَنْجَى مِنْكَ إِلاَّ إِلَيْكَ، آمَنْتُ بِكِتَابِكَ الَّذِي أَنْزَلْتَ وَبِنَبِيِّكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ قَالَ الْبَرَاءُ: فَقُلْتُ: وَبِرَسُولِكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ، قَالَ: فَطَعَنَ بِيَدِهِ فِي صَدْرِي، ثُمَّ قَالَ: وَبِنَبِيِّكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ.

सौंप दिया सवाब में रग़बत करते हुए और तेरे अज़ाब से डरते हुए और मैंने अपनी पुश्त तेरी तरफ़ झुका दी तेरी बारगाह के सिवा कोई न पनाहगाह है न निजात की जगह, मैं तेरी उस किताब पर ईमान लाया जो तूने नाज़िल की और उस नबी पर भी जिसे तूने भेजा।"
बराअ कहते हैं: फिर मैंने दुआ सुनाते हुए कहा: और तेरे रसूल के साथ ईमान लाया जिसे तूने हमारी तरफ़ भेजा, तो आप (ﷺ) ने अपना हाथ मेरे सीने पर मार कर फ़रमाया, "(यह कहो) तेरे नबी के साथ जिसे तूने भेजा।"

बुख़ारी:7488. मुस्लिम:2710. अबू दाऊद:5046. इब्ने माजह:3876.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। और इस बारे में राफे बिन ख़दीज (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। नीज़ यह हदीस कई तुरूक़ से बराअ (رضي الله عنه) से मर्वी है। इसे मंसूर बिन मोतमिर ने भी साद बिन उबैदा से बवास्ता बराअ (رضي الله عنه), नबी अकरम (ﷺ) से रिवायत किया है लेकिन इसमें है कि "जब तुम बा वुज़ू अपने बिस्तर पर जाओ।"

3395 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ إِسْحَاقَ، ابْنِ أَخِي رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ، عَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِذَا اضْطَجَعَ أَحَدُكُمْ عَلَى جَنْبِهِ الأَيْمَنِ ثُمَّ قَالَ: اللَّهُمَّ أَسْلَمْتُ نَفْسِي إِلَيْكَ، وَوَجَّهْتُ وَجْهِي إِلَيْكَ، وَأَلْجَأْتُ ظَهْرِي إِلَيْكَ، وَفَوَّضْتُ أَمْرِي إِلَيْكَ، لاَ مَلْجَأَ مِنْكَ

3395 - सय्यदना राफ़े बिन ख़दीज (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब तुम में से कोई शख़्स दायें करवट पर लेट कर यह दुआ पढ़े " ऐ अल्लाह! मैंने अपना नफ़्स तेरे ताबे कर दिया और अपना चेहरा तेरी तरफ़ मुतवज्जह किया और अपनी पुश्त तेरी तरफ़ झुकाई और अपना मामला तुझे सौंप दिया, तेरी बारगाह के सिवा कोई पनाहगाह है न निजात की जगह, मैं तेरी किताब और तेरे रसूल पर ईमान लाता हूँ" फिर अगर उसी रात उसे मौत आ गई तो जन्नत में दाख़िल होगा।"

إلاَّ إِلَيْكَ، أُومِنُ بِكِتَابِكَ وَبِرَسُولِكَ، فَإِنْ مَاتَ مِنْ لَيْلَتِهِ دَخَلَ الجَنَّةَ.

ज़ईफ़ुल इस्नाद, ((و قوله : وبرسولك) पिछली वाली हदीस के मुख़ालिफ़ है। तबराअनी:4420. निसाई फ़ी अमलिल यौम वल लैला:771. ज़ईफ़ुत्तर्गीब:342.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: सय्यदना राफ़े बिन ख़दीज (رضي الله عنه) से मर्वी यह हदीस इस सनद से हसन ग़रीब है।

3396 - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَفَّانُ بْنُ مُسْلِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا أَوَى إِلَى فِرَاشِهِ قَالَ: الحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَكَفَانَا وَآوَانَا، فَكَمْ مِمَّنْ لاَ كَافِيَ لَهُ وَلاَ مُؤْوِيَ.

3396 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब अपने बिस्तर पर जाते तो यह दुआ पढ़ते "हर क़िस्म की तारीफ़ उस अल्लाह के लिए है जिस ने हमें खिलाया, पिलाया, हमें काफी हो गया और हमें ठिकाना दिया (वर्ना) कितने ही ऐसे लोग हैं जिनकी न कोई किफ़ायत करने वाला है और न ठिकाना देने वाला।"

मुस्लिम:2715. अबू दाऊद:5053. अहमद:3/ 153.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है।

17 بَاب مِنْهُ دعاء: أَسْتَغْفِرُ اللهَ الَّذِي لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ الحَيَّ القَيُّومَ.

17 - दुआ: मैं उस अल्लाह से बख़्शिश माँगता हूँ जिस के सिवा कोई माबूद नहीं जो ज़िंदा कायम रहने वाला है।

3397 - حَدَّثَنَا صَالِحُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الوَصَّافِيِّ، عَنْ عَطِيَّةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ قَالَ حِينَ يَأْوِي إِلَى فِرَاشِهِ: أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ الَّذِي لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ الحَيَّ القَيُّومَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ، ثَلاَثَ مَرَّاتٍ، غَفَرَ اللَّهُ ذُنُوبَهُ وَإِنْ كَانَتْ مِثْلَ زَبَدِ البَحْرِ، وَإِنْ كَانَتْ عَدَدَ وَرَقِ

3397 - सय्यदना अबू सईद (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिस ने अपने बिस्तर पर जाते वक़्त तीन मर्तबा "मैं अज़्मत वाले अल्लाह से बख़्शिश माँगता हूँ जिस के सिवा कोई माबूद नहीं जो ज़िंदा कायम रहने वाला है और मैं उसकी तरफ़ रुजू करता हूँ" कहा, तो अल्लाह तआला उस के गुनाह बख़्श देगा अगरचे वह समन्दर के झाग की तरह या दरख़्तों के पत्तों की तादाद में, टीलों की रेत (के

الشَّجَرِ، وَإِنْ كَانَتْ عَدَدَ رَمْلِ عَالِجٍ، وَإِنْ كَانَتْ عَدَدَ أَيَّامِ الدُّنْيَا.

ज़र्रात) की तादाद में और ख़्वाह दुनिया के दिनों की तादाद में भी हों।"

ज़ईफ़: अहमद: 3/10. अबू याला:1339. अल-कलिमुत्तय्यब:39.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है हम, इसे उबैदुल्लाह बिन वलीद वसाफ़ी के तरीक़ से ही जानते हैं।

18 بَابٌ مِنْهُ دعاء اللَّهُمَّ قِنِ عَذَابَكَ يَوْمَ تَجْمَعُ عِبَادَكَ.

18 - दुआ: ऐ अल्लाह जिस दिन तू अपने बन्दों को जमा करेगा मुझे अपने अज़ाब से बचाना।

3398 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ رِبْعِيِّ بْنِ حِرَاشٍ، عَنْ حُذَيْفَةَ بْنِ الْيَمَانِ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَنَامَ وَضَعَ يَدَهُ تَحْتَ رَأْسِهِ، ثُمَّ قَالَ: اللَّهُمَّ قِنِي عَذَابَكَ يَوْمَ تَجْمَعُ، أَوْ تَبْعَثُ، عِبَادَكَ.

3398 - सय्यदना हुज़ैफ़ा बिन यमान (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) जब सोना चाहते तो अपना हाथ अपने सर के नीचे रख कर कहते: "ऐ अल्लाह मुझे उस दिन अपने अज़ाब से बचाना जिस दिन तू अपने बन्दों को जमा करेगा या तू अपने बन्दों को उठाएगा।"

सहीह: अहमद:5/382. हुमैदी:444. अस-सिलसिला अस-सहीहा:2754.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3399 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ يُوسُفَ بْنِ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ، قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَوَسَّدُ يَمِينَهُ عِنْدَ الْمَنَامِ، ثُمَّ يَقُولُ: رَبِّ قِنِي عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ.

3399 - बराअ बिन आज़िब (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सोते वक़्त अपना दायाँ हाथ (अपने दायें रुख़सार के) नीचे रख कर कहते: "ऐ अल्लाह मुझे (उस दिन) अपने अज़ाब से बचाना जिस दिन तू अपने बन्दों को उठाएगा।"

सहीह: निसाई फ़ी अमलिल यौम वल लैला:758. अस-सिलसिला अस-सहीहा:2703.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है सौरी ने इस हदीस को

बवास्ता अबू इस्हाक़, बराअ (رضي الله عنه) से रिवायत करते वक़्त उन दोनों में से किसी का ज़िक्र नहीं किया। जब कि शोबा ने उसे अबू इस्हाक़ से, अबू उबैदा और एक दूसरे आदमी के ज़रिए बराअ (رضي الله عنه) से रिवायत किया है। जब कि इस्राईल ने इसे अबू इस्हाक़ से बवास्ता अब्दुल्लाह बिन यज़ीद बराअ (رضي الله عنه) से रिवायत किया है और अबू इस्हाक़ ने बवास्ता अबू उबैदा, अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) से नबी (ﷺ) की ऐसी ही हदीस बयान की है।

19 بَاب مِنْهُ دعاء: اللَّهُمَّ رَبَّ السَّمَوَاتِ، وَرَبَّ الأَرَضِينَ..الخ.

3400 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْنٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَأْمُرُنَا إِذَا أَخَذَ أَحَدُنَا مَضْجَعَهُ أَنْ يَقُولَ: اللَّهُمَّ رَبَّ السَّمَوَاتِ، وَرَبَّ الأَرَضِينَ، وَرَبَّنَا وَرَبَّ كُلِّ شَيْءٍ، فَالِقَ الْحَبِّ وَالنَّوَى، وَمُنْزِلَ التَّوْرَاةِ وَالإِنْجِيلِ وَالقُرْآنِ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ ذِي شَرٍّ أَنْتَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهِ، أَنْتَ الأَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَكَ شَيْءٌ، وَأَنْتَ الآخِرُ فَلَيْسَ بَعْدَكَ شَيْءٌ، وَالظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَكَ شَيْءٌ، وَالبَاطِنُ فَلَيْسَ دُونَكَ شَيْءٌ، اقْضِ عَنِّي الدَّيْنَ وَأَغْنِنِي مِنَ الفَقْرِ.

19 - दुआ: ऐ अल्लाह! आसमानों और ज़मीनों के रब... आख़िर तक।

3400 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं: रसूलुल्लाह (ﷺ) हमें हुक्म दिया करते थे कि जब हम में से कोई शख़्स अपने लेटने की जगह पर जाए तो वह कहे: "ऐ अल्लाह! आसमानों और ज़मीनों के रब! ऐ हमारे रब! ऐ हमारे और हर चीज़ के रब! ऐ दाने और गुठलियों के फाड़ने वाले! ऐ तौरात व इंजील और कुरआन को नाज़िल करने वाले! मैं तुझ से हर उस शर वाली चीज़ के शर से पनाह माँगता हूँ जिसकी पेशानी को तू पकड़े हुए है, तू ही अव्वल है पस तुझ से पहले कोई चीज़ नहीं, और तू ग़ालिब है पस तेरे ऊपर कोई चीज़ नहीं, और तू ही बातिन है पस तुझ से पोशीदा कोई चीज़ नहीं, मुझ से मेरा क़र्ज़ अदा कर दे और मुझे फक्र से निकाल कर गनी कर दे।"

मुस्लिम: 2713. अबू दाऊद:5051. इब्ने माजह:3831. अहमद:2/381.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

20 - दुआ: ऐ मेरे रब मैं तेरे नाम के साथ ही अपना पहलू बिस्तर पर रखता हूँ।

20 بَاب مِنْهُ دعاء: بِاسْمِكَ رَبِّي وَضَعْتُ جَنْبِي.

3401 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब तुम में से कोई शख़्स अपने बिस्तर से उठे और फिर दोबारा उसकी तरफ़ आए तो उसे अपनी चादर के दामन से तीन मर्तबा झाड़े, क्योंकि वह नहीं जानता कि उस (के जाने) के बाद उस पर क्या चीज़ आ गई है, फिर जब लेटे तो यह दुआ पढ़े "ऐ मेरे रब! तेरे ही नाम के साथ मैंने अपना पहलू (बिस्तर पर) रखा और तेरे ही नाम के साथ उठाउंगा, लिहाज़ा अगर तू मेरी रूह रोक ले तो उस पर रहम फ़रमाना और अगर तू उसे छोड़ दे तो उसकी ऐसे हिफाज़त फ़रमाना जैसे तू अपने नेक बन्दों की हिफाज़त फ़रमाता है।" और जब बेदार हो तो कहे: "हर क़िस्म की तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है जिस ने मुझे जिस्मानी आफ़ियत दी, मेरे ऊपर मेरी रूह लौटा दी और मुझे अपनी याद की इजाज़त दी।"

बुख़ारी:6320. मुस्लिम:2714. अबू दाऊद:5050. इब्ने माजह:3874.

3401 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ ابْنِ عَجْلَانَ، عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِذَا قَامَ أَحَدُكُمْ عَنْ فِرَاشِهِ ثُمَّ رَجَعَ إِلَيْهِ فَلْيَنْفُضْهُ بِصَنِفَةِ إِزَارِهِ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، فَإِنَّهُ لَا يَدْرِي مَا خَلَفَهُ عَلَيْهِ بَعْدُ، فَإِذَا اضْطَجَعَ فَلْيَقُلْ: بِاسْمِكَ رَبِّي وَضَعْتُ جَنْبِي، وَبِكَ أَرْفَعُهُ، فَإِنْ أَمْسَكْتَ نَفْسِي فَارْحَمْهَا، وَإِنْ أَرْسَلْتَهَا فَاحْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهِ عِبَادَكَ الصَّالِحِينَ، فَإِذَا اسْتَيْقَظَ فَلْيَقُلْ: الحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي عَافَانِي فِي جَسَدِي، وَرَدَّ عَلَيَّ رُوحِي وَأَذِنَ لِي بِذِكْرِهِ.

वज़ाहत: इस बारे में जाबिर और आयशा (رضي الله عنها) से भी हदीस मर्वी है। नीज़ अबू हुरैरा (رضي الله عنه) की हदीस हसन है और बअ़ज़ ने इस हदीस को रिवायत करते हुए कहा है कि वह अपनी चादर के बाहर वाले हिस्से से झाड़े।

21 - सोते वक़्त क़ुरआन पढ़ने वाला।

21 بَاب مَا جَاءَ فِيمَنْ يَقْرَأُ الْقُرْآنَ عِنْدَ الْمَنَامِ

3402 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) हर रात जब अपने बिस्तर पर

3402 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْمُفَضَّلُ بْنُ فَضَالَةَ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ،

عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ إِذَا أَوَى إِلَى فِرَاشِهِ كُلَّ لَيْلَةٍ، جَمَعَ كَفَّيْهِ ثُمَّ نَفَثَ فِيهِمَا، فَقَرَأَ فِيهِمَا: قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ، وَقُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الفَلَقِ، وَقُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ثُمَّ يَمْسَحُ بِهِمَا مَا اسْتَطَاعَ مِنْ جَسَدِهِ، يَبْدَأُ بِهِمَا عَلَى رَأْسِهِ وَوَجْهِهِ، وَمَا أَقْبَلَ مِنْ جَسَدِهِ يَفْعَلُ ذَلِكَ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ.

जाते तो अपनी हथेलियों को मिला कर उन में قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ، وَقُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الفَلَقِ، وَقُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ .. पढ़ कर फूँक मारते, फिर जहां तक मुम्किन होता अपने जिस्म पर फेरते अपने सर, चेहरे और जिस्म के सामने वाले हिस्से से शुरू करते, यह काम आप तीन मर्तबा करते।

बुख़ारी:5017. अबू दाऊद:5056. इब्ने माजह:3875. अहमद:6/116.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है।

22 بَابٌ مِنْهُ فِي قراءة سور: الكافرون. والسجدة والملك والزمر وبني إسرائيل والمسبحات.

22 - सूरह काफ़िरून, सज्दा, मुल्क, बनी इस्राईल और मुसब्बिहात सूरतें पढ़ना।

3403 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ رَجُلٍ، عَنْ فَرْوَةَ بْنِ نَوْفَلٍ، أَنَّهُ أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ عَلِّمْنِي شَيْئًا أَقُولُهُ إِذَا أَوَيْتُ إِلَى فِرَاشِي، قَالَ: اقْرَأْ: قُلْ يَا أَيُّهَا الكَافِرُونَ فَإِنَّهَا بَرَاءَةٌ مِنَ الشِّرْكِ قَالَ شُعْبَةُ: أَحْيَانًا يَقُولُ مَرَّةً وَأَحْيَانًا لَا يَقُولُهَا.

3403 - सय्यदना फर्वा बिन नोफ़ल (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि उन्होंने नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! आप मुझे कोई ऐसी चीज़ सिखाइए जिसे मैं अपने बिस्तर पर जाते वक़्त पढ़ूं। आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम قُلْ يَا أَيُّهَا الكَافِرُونَ पढ़ो" बिलाशुब्हा (ये सूरत)शिर्क से निजात दिलाती है।" शोबा कहते हैं: (अबू इस्हाक़) कभी यह कहते थे कि (आप ने फ़रमाया) एक मर्तबा पढ़ो और कभी यह नहीं कहते थे।

सहीह: अबू दाऊद:5055. सहीहुत्तर्गीब:605. अबू याला:1596. निसाई: 804.

वज़ाहत: (अबू ईसा कहते हैं:) हमें मूसा बिन हिज़ाम ने (वह कहते हैं) हमें यहया बिन आदम ने इस्राईल से, उन्हें अबू इस्हाक़ ने बवास्ता फ़र्वा बिन नोफ़ल, उन के बाप से रिवायत की है कि वह नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए फिर इसी मफ़हूम की हदीस बयान की और यह ज़्यादा सहीह है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: ज़ुहैर ने भी इस हदीस को अबू इस्हाक़ से बवास्ता फर्वा बिन नोफ़ल उन के बाप के ज़रिए नबी (ﷺ) से इसी तरह रिवायत किया है और शोबा की रिवायत से ज़्यादा दुरुस्त और सहीह है।

नीज़ अबू इस्हाक़ के शागिर्दों ने उन से रिवायत करते वक़्त इज़्तिराब किया है। यह हदीस एक और तरीक़ से भी मर्वी है इसे अब्दुर्रहमान बिन नोफ़ल ने भी अपने बाप के ज़रिए नबी (ﷺ) से रिवायत किया है और अब्दुर्रहमान, फ़र्वा बिन नोफ़ल के भाई हैं।

3404 - حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ يُونُسَ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْمُحَارِبِيُّ، عَنْ لَيْثٍ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ لاَ يَنَامُ حَتَّى يَقْرَأَ بِتَنْزِيلُ السَّجْدَةِ، وَبِتَبَارَكَ.

3404 - सय्यदना जाबिर (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) सूरह तंजील, सज्दा और सूरह मुल्क पढ़े बगैर सोते नहीं थे।

सहीह: तख़रीज के लिए देखिए 2892.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: सुफ़ियान सौरी और दीगर मोहद्दिसीन ने भी इस हदीस को लैस से अबू ज़ुबैर के ज़रिए बवास्ता जाबिर (رضي الله عنه) नबी करीम (ﷺ) से इसी तरह रिवायत किया है। जबकि ज़ुहैर ने यह हदीस अबू ज़ुबैर से इसी तरह रिवायत की है कि मैंने उन से कहा: क्या आप ने जाबिर से सुनी है? तो उन्होंने कहा: मैंने जाबिर से खुद नहीं सुनी बल्कि मैंने सफ़वान या इब्ने सफ़वान से सुनी है। नीज़ शबाबा ने मुग़ीरा बिन मुस्लिम से बवास्ता अबू ज़ुबैर, जाबिर (رضي الله عنه) से लैस की (बयानकर्दा) हदीस जैसी रिवायत की है।

3405 - حَدَّثَنَا صَالِحُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَبِي لُبَابَةَ، قَالَ: قَالَتْ عَائِشَةُ، كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لاَ يَنَامُ حَتَّى يَقْرَأَ الزُّمَرَ، وَبَنِي إِسْرَائِيلَ.

3405 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि नबी (ﷺ) सूरह ज़ुमर और बनी इस्राईल पढ़े बगैर नहीं सोते थे।

सहीह: तख़रीज के लिए देखिए 2892.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: मुझे इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी ने बताया कि यह अबू लुबाबा जो हैं उनका नाम मरवान है जो कि अब्दुर्रहमान बिन ज़ियाद के आज़ादकर्दा थे। उन्होंने आयशा (رضي الله عنها) से सिमा (सुनना) किया और उन से हम्माद बिन सलमा ने सिमा (सुनना) किया है।

3406 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا بَقِيَّةُ بْنُ الوَلِيدِ، عَنْ بَحِيرِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ خَالِدِ

3406 - सय्यदना इर्बाज़ बिन सारिया (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) मुसब्बिहात[1] सूरतें पढ़े बगैर नहीं सोते थे और आप(ﷺ)

بْنِ مَعْدَانَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بِلَالٍ، عَنِ الْعِرْبَاضِ بْنِ سَارِيَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ لَا يَنَامُ حَتَّى يَقْرَأَ الْمُسَبِّحَاتِ، وَيَقُولُ: فِيهَا آيَةٌ خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ آيَةٍ.

फ़रमाते: "इन सूरतों में एक आयत है जो कि एक हज़ार आयात से बेहतर है।"

हसन: तख़रीज के लिए देखिए 2921.

तौज़ीह: जो सूरते سبح : يسبح से शुरू होती हैं।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

23 بَاب مِنْهُ دعاء: اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الثَّبَاتَ فِي الأَمْرِ.

23 - दुआ: ऐ अल्लाह मैं हर काम में तुझ से साबित कदमी का सवाल करता हूँ।

3407 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ الزُّبَيْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الْجُرَيْرِيِّ، عَنْ أَبِي الْعَلَاءِ بْنِ الشِّخِّيرِ، عَنْ رَجُلٍ مِنْ بَنِي حَنْظَلَةَ، قَالَ: صَحِبْتُ شَدَّادَ بْنَ أَوْسٍ فِي سَفَرٍ، فَقَالَ: أَلَا أُعَلِّمُكَ مَا كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُعَلِّمُنَا أَنْ نَقُولَ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الثَّبَاتَ فِي الأَمْرِ، وَأَسْأَلُكَ عَزِيمَةَ الرُّشْدِ، وَأَسْأَلُكَ شُكْرَ نِعْمَتِكَ، وَحُسْنَ عِبَادَتِكَ، وَأَسْأَلُكَ لِسَانًا صَادِقًا، وَقَلْبًا سَلِيمًا، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا تَعْلَمُ، وَأَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا تَعْلَمُ، وَأَسْتَغْفِرُكَ مِمَّا تَعْلَمُ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ. قَالَ: وَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَأْخُذُ مَضْجَعَهُ، يَقْرَأُ سُورَةً مِنْ كِتَابِ اللهِ، إِلَّا وَكَّلَ

3407 - बनू हंज़ला के एक आदमी से रिवायत है कि मैं एक सफ़र में शद्दाद बिन औस (ﷺ) के साथ था तो उन्होंने कहा: क्या मैं तुम्हें वह दुआ न सिखाऊँ जो अल्लाह के रसूल (ﷺ) हमें सिखाया करते थे? तुम यह कहो "ऐ अल्लाह मैं तुझ से हर काम में साबित कदमी और हिदायत की पुख़्तगी का सवाल करता हूँ, और मैं तुझ से तेरी नेअ्मत के शुक्र और तेरी अच्छी इबादत करने का सवाल करता हूँ, और मैं तुझ से सच्ची ज़बान और फ़र्माबर्दार दिल माँगता हूँ और मैं उस चीज़ की बुराई से तेरी पनाह माँगता हूँ जो तू जानता है और मैं तुझ से ह भलाई माँगता हूँ जो तू जानता है और मैं तुझ से उन गुनाहों की बख़्शिश माँगता हूँ जो तू जानता है, बेशक तू ही गैबों को अच्छी तरह जानने वाला है।" रावी कहते हैं: रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो शख़्स अपनी बिस्तर पर पहुँच कर किताबुल्लाह की कोई सूरत पढ़े तो

اللَّهُ بِهِ مَلَكًا، فَلَا يَقْرَبُهُ شَيْءٌ يُؤْذِيهِ حَتَّى يَهُبَّ مَتَى هَبَّ.

अल्लाह तआला एक फ़रिश्ते को (उस की हिफ़ाज़त पर) मुक़र्रर कर देता है फिर कोई चीज़ तक्लीफ़ देने के लिए उस के क़रीब नहीं आती हत्ता कि जब चाहे उठे।"

ज़ईफ़: निसाई: 1304. अहमद:4/125. इब्ने हिब्बान:1974.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस हदीस को हम सिर्फ इसी तरीक़ से जानते हैं। जुरैरी सईद बिन इयास अबू मसऊद जुरैरी हैं, और अबू अला का नाम यज़ीद बिन अब्दुल्लाह बिन शिख्खीर है। (ज़ईफ़)

24 بَابُ مَا جَاءَ فِي التَّسْبِيحِ وَالتَّكْبِيرِ وَالتَّحْمِيدِ عِنْدَ الْمَنَامِ

24-सोते वक़्त सुब्हान अल्लाह, अल्हम्दुलिल्लाह और अल्लाहु अकबर कहना

3408 - حَدَّثَنَا أَبُو الْخَطَّابِ زِيَادُ بْنُ يَحْيَى الْبَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَزْهَرُ السَّمَّانُ، عَنِ ابْنِ عَوْنٍ، عَنِ ابْنِ سِيرِينَ، عَنْ عَبِيدَةَ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ: شَكَتْ إِلَيَّ فَاطِمَةُ مَجْلَ يَدَيْهَا مِنَ الطَّحِينِ، فَقُلْتُ: لَوْ أَتَيْتِ أَبَاكِ فَسَأَلْتِهِ خَادِمًا، فَقَالَ: أَلَا أَدُلُّكُمَا عَلَى مَا هُوَ خَيْرٌ لَكُمَا مِنَ الْخَادِمِ؟ إِذَا أَخَذْتُمَا مَضْجَعَكُمَا تَقُولَانِ ثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ، وَثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ، وَأَرْبَعًا وَثَلَاثِينَ مِنْ تَحْمِيدٍ وَتَسْبِيحٍ وَتَكْبِيرٍ وَفِي الْحَدِيثِ قِصَّةٌ.

هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ مِنْ حَدِيثِ ابْنِ عَوْنٍ.

3408 - सय्यदना अली (رضي الله عنه) से रिवायत है कि फातिमा (رضي الله عنها) ने चक्की पीसने की वजह से अपने हाथों के आबले की मुझ से शिकायत की तो मैंने कहा: अगर तुम अपने वालिद के पास जाकर उन से ख़ादिम मांगो (तो बेहतर होगा), चुनांचे आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या मैं तुम दोनों को ऐसा काम ना बताऊँ जो तुम्हारे लिए ख़ादिम से बेहतर है? जब तुम अपने लेटने की जगह जाओ तो तैंतीस-तैंतीस मर्तबा अल्हम्दुलिल्लाह और सुबहानल्लाह और चौंतीस मर्तबा अल्लाहु अकबर कहा करो।" इस हदीस में एक किस्सा भी है।(1)

इब्ने हिब्बान:6922. बज़्ज़ार:548.

तौज़ीह: बुख़ारी: 3113. व मुस्लिम: 2723.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इब्ने औन की सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है। नीज़ यह हदीस एक और सनद से भी अली (رضي الله عنه) से मर्वी है।

3409 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى، قَالَ: حَدَّثَنَا أَزْهَرُ السَّمَّانُ، عَنِ ابْنِ عَوْنٍ، عَنْ مُحَمَّدٍ، عَنْ عَبِيدَةَ، عَنْ عَلِيٍّ قَالَ: جَاءَتْ فَاطِمَةُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَشْكُو مَجْلَ يَدَيْهَا، فَأَمَرَهَا بِالتَّسْبِيحِ وَالتَّكْبِيرِ وَالتَّحْمِيدِ.

3409 - सय्यदना अली (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि फातिमा (رضي الله عنها) नबी (ﷺ) के पास जाकर अपने हाथों के आबलों[1] की शिकायत करने लगीं तो आप ने उन्हें सुब्हानअल्लाह, अल्लाहु अकबर और अल्हम्दुलिल्लाह पढ़ने का हुक्म दिया।

सहीह: तख़रीज के लिए देखिए पिछली हदीस।

तौज़ीह: مجل : مجلة की जमा है इस से मुराद है काम करने की वजह से हाथों पर पड़ने वाला आबला या छाला इसकी जमा مجل और مجال आती है। (अल-कामूसुल वहीद:पृ.1525).

25 بَاب مِنْهُ فِي فَضْلِ التَّسْبِيحِ وَالتَّحْمِيدِ وَالتَّكْبِيرِ فِي دُبُرِ الصَّلَوَاتِ وَعِنْدَ النَّوْمِ.

25 - नमाज़ों के बाद और सोते वक़्त सुब्हान अल्लाह, अल्हम्दुलिल्लाह और अल्लाहु अकबर कहने की फ़ज़ीलत।

3410 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ ابْنُ عُلَيَّةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَطَاءُ بْنُ السَّائِبِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: خَلَّتَانِ لاَ يُحْصِيهِمَا رَجُلٌ مُسْلِمٌ إِلاَّ دَخَلَ الْجَنَّةَ، أَلاَ وَهُمَا يَسِيرٌ، وَمَنْ يَعْمَلُ بِهِمَا قَلِيلٌ: يُسَبِّحُ اللَّهَ فِي دُبُرِ كُلِّ صَلاَةٍ عَشْرًا، وَيَحْمَدُهُ عَشْرًا، وَيُكَبِّرُهُ عَشْرًا، قَالَ: فَأَنَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعْقِدُهَا بِيَدِهِ، قَالَ: فَتِلْكَ خَمْسُونَ، وَمِائَةٌ بِاللِّسَانِ، وَأَلْفٌ وَخَمْسُ مِائَةٍ فِي

3410 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "दो आदतें ऐसी हैं जिन पर कोई मुसलमान हमेशगी कर ले तो वह जन्नत में दाख़िल होगा और सुनो! वह बहुत आसान हैं जबकि उन पर अमल करने वाले थोड़े हैं, हर नमाज़ के बाद दस दफ़ा सुबहान अल्लाह, दस दफ़ा अल्हम्दुलिल्लाह और दस दफ़ा अल्लाहु अकबर कहे।" रावी कहते हैं: मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा आप उन्हें अपने हाथ पर गिन रहे थे आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "तो यह (पाँचों नमाज़ों में) ज़बान पर एक सौ पच्चास और क़यामत के दिन तराजू में एक हज़ार पांच सौ होंगी, और जब तुम अपनी लेटने की जगह पर आओ तो सौ मर्तबा सुब्हान अल्लाह,

الْمِيزَانِ، وَإِذَا أَخَذْتَ مَضْجَعَكَ تُسَبِّحُهُ وَتُكَبِّرُهُ وَتَحْمَدُهُ مِائَةً، فَتِلْكَ مِائَةٌ بِاللِّسَانِ، وَأَلْفٌ فِي الْمِيزَانِ، فَأَيُّكُمْ يَعْمَلُ فِي الْيَوْمِ وَاللَّيْلَةِ أَلْفَيْنِ وَخَمْسَمِائَةِ سَيِّئَةٍ؟ قَالُوا: فَكَيْفَ لاَ نُحْصِيهَا؟ قَالَ: يَأْتِي أَحَدَكُمُ الشَّيْطَانُ وَهُوَ فِي صَلاَتِهِ، فَيَقُولُ: اذْكُرْ كَذَا، اذْكُرْ كَذَا، حَتَّى يَنْفَتِلَ، فَلَعَلَّهُ أَلاَّ يَفْعَلَ، وَيَأْتِيهِ وَهُوَ فِي مَضْجَعِهِ، فَلاَ يَزَالُ يُنَوِّمُهُ حَتَّى يَنَامَ.

अल्हम्दुलिल्लाह और अल्लाहु अकबर कहो तो यह ज़बान पर एक सौ लेकिन तराजू में एक हज़ार होंगी, पस तुम में से कौन है जो दिन और रात में दो हज़ार पांच सौ बुराइयां करता होगा।" सहाबा ने अर्ज़ किया, हम उसे कैसे नहीं पढ़ सकते? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम में से एक शख़्स के पास नमाज़ ,में शैतान आकर कहता है फुलां काम याद कर, फुलां याद कर हत्ता कि वह नमाज़ मुकम्मल करता है तो शैतान उसे यह काम करने नहीं देता और आदमी के पास उस के बिस्तर पर आकर उसे सुलाता रहता है हत्ता कि वह सो जाता है।"

सहीह: अबू दाऊद:5065. इब्ने माजह:926. निसाई:1348. अहमद:2/ 160.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। नीज़ शोबा और सौरी ने भी इस हदीस को अता बिन साइब से रिवायत किया है और आमश ने अता बिन साइब से इस हदीस को इख़्तिसार के साथ रिवायत किया है।

नीज़ इस बारे में ज़ैद बिन साबित, अनस और इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

3411 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، قَالَ: حَدَّثَنَا عَثَّامُ بْنُ عَلِيٍّ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ السَّائِبِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَعْقِدُ التَّسْبِيحَ.

3411 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा आप तस्बीहात को (उँगलियों पर) गिनते थे।

सहीह: अबू दाऊद: 1502.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: आमश के तरीक़ से यह हदीस हसन ग़रीब है।

3412 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ بْنِ سَمُرَةَ الأَحْمَسِيُّ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَسْبَاطُ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ قَيْسٍ الْمُلاَئِيُّ،

3412 - सय्यदना काब बिन उज्रा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "(नमाज़ के) बाद में कहे जाने वाले कुछ ऐसे अज्कार हैं जिन्हें पढ़ने वाला महरूम नहीं होता,

عَنِ الحَكَمِ بْنِ عُتَيْبَةَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مُعَقِّبَاتٌ لاَ يَخِيبُ قَائِلُهُنَّ، تُسَبِّحُ اللَّهَ فِي دُبُرِ كُلِّ صَلاَةٍ ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ، وَتَحْمَدُهُ ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ، وَتُكَبِّرُهُ أَرْبَعًا وَثَلاَثِينَ.

तुम हर नमाज़ के बाद तैंतीस मर्तबा सुब्हान अल्लाह, तैंतीस मर्तबा अल्हम्दुलिल्लाह और चौंतीस मर्तबा अल्लाहु अकबर कहा करो।"

मुस्लिम: 596, निसाई: 1349.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है और अम्र बिन कैस मलई सिक़ह हाफ़िज़ हैं। शोबा ने भी इस हदीस को हकम से रिवायत किया है जो कि मर्फ़ू नहीं है। जबकि मंसूर बिन मोतमिर ने इसे हकम से मर्फ़ू रिवायत किया है।

3413 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ خَلَفٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ هِشَامِ بْنِ حَسَّانَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ، عَنْ كَثِيرِ بْنِ أَفْلَحَ، عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، قَالَ: أُمِرْنَا أَنْ نُسَبِّحَ دُبُرَ كُلِّ صَلاَةٍ ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ، وَنَحْمَدَهُ ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ، وَنُكَبِّرَهُ أَرْبَعًا وَثَلاَثِينَ، قَالَ: فَرَأَى رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ فِي الْمَنَامِ، فَقَالَ: أَمَرَكُمْ رَسُولُ اللهِ صلى الله عليه وسلم أَنْ تُسَبِّحُوا فِي دُبُرِ كُلِّ صَلاَةٍ ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ، وَتَحْمَدُوا اللَّهَ ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ، وَتُكَبِّرُوا أَرْبَعًا وَثَلاَثِينَ، قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: فَاجْعَلُوا خَمْسًا وَعِشْرِينَ، وَاجْعَلُوا التَّهْلِيلَ مَعَهُنَّ، فَغَدَا عَلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَحَدَّثَهُ، فَقَالَ: افْعَلُوا.

3413 - सय्यदना ज़ैद बिन साबित (رضي الله عنه) बयान करते हैं हमें हुक्म दिया गया था कि हम हर नमाज़ के बाद तैंतीस मर्तबा सुब्हान अल्लाह और तैंतीस मर्तबा अल्हम्दुलिल्लाह और चौंतीस दफ़ा अल्लाहु अकबर कहें, फ़रमाते हैं फिर एक अंसारी शख़्स ने ख़्वाब में देखा तो उस (में नज़र आने वाले) शख़्स ने कहा " क्या तुम्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हुक्म दिया है कि तुम हर नमाज़ के बाद तैंतीस मर्तबा सुब्हान अल्लाह, तैंतीस दफ़ा अल्हम्दुलिल्लाह और चौंतीस मर्तबा अल्लाहु अकबर कहो, उस ने कहा हाँ, वह कहने लगा: तुम इन्हें पच्चीस-पच्चीस मर्तबा कर लो और उन के साथ لا إله الا الله भी शामिल कर लो, फिर सुबह के वक़्त उस ने नबी (ﷺ) को आकर बताया तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, ऐसे कर लो।"

सहीह: मोहक़्क़िक़ ने इस पर तख़रीज ज़िक्र नहीं की लेकिन यह हदीस निसाई में भी है। हदीस नम्बर: 1351.

26 - रात को आँख खुल जाने पर पढ़ी जाने वाली दुआ।

26 بَاب مَا جَاءَ فِي الدُّعَاءِ إِذَا انْتَبَهَ مِنَ اللَّيْلِ

3414 - उबादा बिन सामित (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो शख़्स रात के वक़्त बेदार होने पर यह कहे "अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, उसकी बादशाहत है, उसी के लिए हर तारीफ़ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है, और अल्लाह पाक है, तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और अल्लाह बहुत बड़ा है, गुनाह से बचने की हिम्मत और नेकी करने की ताक़त अल्लाह ही की तौफ़ीक़ के साथ है, फिर कहे ऐ मेरे रब मुझे बख़्श दे" या यह फ़रमाया, कि "फिर दुआ करे तो उसकी दुआ कुबूल की जाती है फिर अगर पुख़्ता अज़्म करके वुज़ू करे फिर नमाज़ पढ़े तो उसकी नमाज़ कुबूल की जाती है।"

बुख़ारी:1154. अबू दाऊद:5060. इब्ने माजह:3878. अहमद:5/313.

3414 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ العَزِيزِ بْنِ أَبِي رِزْمَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا الوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي عُمَيْرُ بْنُ هَانِئٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي جُنَادَةُ بْنُ أَبِي أُمَيَّةَ قَالَ: حَدَّثَنِي عُبَادَةُ بْنُ الصَّامِتِ، عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ تَعَارَّ مِنَ اللَّيْلِ، فَقَالَ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، وَسُبْحَانَ اللهِ، وَالحَمْدُ لِلَّهِ، وَلاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ، وَاللَّهُ أَكْبَرُ، وَلاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ، ثُمَّ قَالَ: رَبِّ اغْفِرْ لِي، أَوْ قَالَ: ثُمَّ دَعَا، اسْتُجِيبَ لَهُ، فَإِنْ عَزَمَ وَتَوَضَّأَ، ثُمَّ صَلَّى قُبِلَتْ صَلاَتُهُ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3415 - मस्लमा बिन अम्र से रिवायत है कि उमैर बिन हानी (رحمه الله) हर रोज़ एक हज़ार रकअत नमाज़ पढ़ते और एक लाख तस्बीह करते थे।

ज़ईफुल इस्नाद मकतूअ इस पर तख़रीज नहीं की गई।

3415 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَسْلَمَةُ بْنُ عَمْرٍو، قَالَ: كَانَ عُمَيْرُ بْنُ هَانِئٍ، يُصَلِّي كُلَّ يَوْمٍ أَلْفَ سَجْدَةٍ، وَيُسَبِّحُ مِائَةَ أَلْفِ تَسْبِيحَةٍ.

27 - दुआ: अल्लाह ने उसकी सुन ली जिस ने उसकी तारीफ़ की।

27 بَاب مِنْهُ دعاء: سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ.

3416 - सय्यदना रबीया बिन काब असलमी (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैं रात को नबी (ﷺ) के दरवाज़े के पास सोता था फिर मैं आप को वुज़ू का पानी देता तो मैं रात को बहुत देर तक सुनता रहता आप (ﷺ) फ़रमाते थे "अल्लाह ने उस शख़्स की सुन ली जिस ने उसकी तारीफ़ की।" और मैं काफी रात नक सुनता आप(ﷺ) कहते थे "तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो तमाम जहानों का परवर दिगार है।"

सहीह: इब्ने माजह:3879.निसाई:1619. अहमद:4/57.

3416 - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا النَّضْرُ بْنُ شُمَيْلٍ، وَوَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ، وَأَبُو عَامِرٍ العَقَدِيُّ، وَعَبْدُ الصَّمَدِ بْنُ عَبْدِ الوَارِثِ، قَالُوا: حَدَّثَنَا هِشَامٌ الدَّسْتُوَائِيُّ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، قَالَ: حَدَّثَنِي رَبِيعَةُ بْنُ كَعْبٍ الأَسْلَمِيُّ، قَالَ: كُنْتُ أَبِيتُ عِنْدَ بَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأُعْطِيهِ وَضُوءَهُ، فَأَسْمَعُهُ الهَوِيَّ مِنَ اللَّيْلِ يَقُولُ: سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ، وَأَسْمَعُهُ الهَوِيَّ مِنَ اللَّيْلِ يَقُولُ: الحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ العَالَمِينَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

28 - दुआ: तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए है जिसने मेरी जान को ज़िंदा किया।

28 بَاب مِنْهُ دعاء: الحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَحْيَا نَفْسِي.

3417 - सय्यदना हुज़ैफ़ा बिन यमान (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब सोने का इरादा करते तो आप कहते: "ऐ अल्लाह तेरे नाम के साथ ही मैं मरता हूँ और ज़िंदा होता हूँ" और जब बेदार होते तो कहते "हर क़िस्म की तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है जिस ने मेरी जान को मरने के बाद ज़िंदा किया और उसी की तरफ़ उठ कर जाना है।"

बुख़ारी:6312. अबू दाऊद:5049. इब्ने माजह:3880. अहमद:5/385.

3417 - حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ بْنِ مُجَالِدِ بْنِ سَعِيدٍ الهَمْدَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ رِبْعِيٍّ، عَنْ حُذَيْفَةَ بْنِ اليَمَانِ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَنَامَ، قَالَ: اللَّهُمَّ بِاسْمِكَ أَمُوتُ وَأَحْيَا وَإِذَا اسْتَيْقَظَ، قَالَ: الحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَحْيَا نَفْسِي بَعْدَ مَا أَمَاتَهَا وَإِلَيْهِ النُّشُورُ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

29-रात को नमाज़ के लिए खड़े होते वक़्त की दुआ

29 بَاب مَا جَاءَ مَا يَقُولُ إِذَا قَامَ مِنَ اللَّيْلِ إِلَى الصَّلَاةِ

3418 - अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब आधी रात को नमाज़ के लिए उठते तो यह कहा करते थे "ऐ अल्लाह हर क़िस्म की तारीफ़ तेरे लिए ही है तू आसमानों और ज़मीन का नूर है, हर क़िस्म की तारीफ़ तेरे लिए ही है तू आसमानों और ज़मीन को क़ायम करने वाला है और हर क़िस्म की तारीफ़ तेरे लिए ही है तू आसमानों-ज़मीन और जो कुछ उन में है सब का परवरदिगार है, तू हक़ ज़ात है, तेरा वादा सच्चा है तेरी मुलाक़ात बरहक़ है, जन्नत बरहक़ है, जहन्नम बरहक़ है और क़यामत भी बरहक़ है, ऐ अल्लाह! तेरे लिए ही मैं ताबे हुआ, तुझी पर ईमान लाया, तुझी पर मैंने भरोसा किया, तेरी ही तरफ़ मैंने रुजू किया, तेरी ही मदद के साथ मैंने (तेरे दुश्मनों से) मुकाबला किया और तेरी ही तरफ़ मैं फैसला लेकर आया, पस तू मुझे माफ़ फ़रमा दे जो कुछ मैंने पहले किया और जो कुछ मैंने बाद में किया, जो कुछ मैंने पोशीदा किया और जो कुछ सरेआम किया तू ही मेरा माबूद है तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।"

बुख़ारी:1120.मुस्लिम:769. अबू दाऊद:771. इब्ने माजह:1355. निसाई:1619.

3418 - حَدَّثَنَا الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ طَاوُسٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ مِنْ جَوْفِ اللَّيْلِ، يَقُولُ: اللَّهُمَّ لَكَ الحَمْدُ، أَنْتَ نُورُ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ، وَلَكَ الحَمْدُ، أَنْتَ قَيَّامُ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ، وَلَكَ الحَمْدُ، أَنْتَ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ، أَنْتَ الحَقُّ، وَوَعْدُكَ الحَقُّ، وَلِقَاؤُكَ حَقٌّ، وَالجَنَّةُ حَقٌّ، وَالنَّارُ حَقٌّ، وَالسَّاعَةُ حَقٌّ، اللَّهُمَّ لَكَ أَسْلَمْتُ، وَبِكَ آمَنْتُ، وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ، وَإِلَيْكَ أَنَبْتُ، وَبِكَ خَاصَمْتُ، وَإِلَيْكَ حَاكَمْتُ، فَاغْفِرْ لِي مَا قَدَّمْتُ وَمَا أَخَّرْتُ، وَمَا أَسْرَرْتُ وَمَا أَعْلَنْتُ، إِنَّكَ إِلَهِي لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और कई तुरूक़ से बवास्ता इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) नबी करीम (ﷺ) से मर्वी है।

30 - दुआ: ऐ अल्लाह मैं तेरी रहमत का सवाल करता हूँ।।

30 بَاب مِنْهُ دعاء: اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ رَحْمَةً مِنْ عِنْدِكَ..

3419 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को एक रात नमाज़ से फ़ारिग होने के बाद सुना आप फ़रमा रहे थे: " ऐ अल्लाह मैं तुझ से तेरी रहमत का सवाल करता हूँ जिसके साथ तू मेरे दिल को हिदायत दे दे, मेरे काम को ठीक कर दे, मेरे मुतफ़र्रिक़ काम जमा कर दे, मेरे ग़ायब को उसके साथ दुरुस्त कर दे, मेरे मौजूद को इस से बलंद कर दे, इस के साथ मेरे आमाल को पाक कर दे, इस के साथ मुझे सीधी राह दिखला दे, वापस ले आ इसके साथ मेरे प्यारों को और इस के साथ मुझे हर बुराई से बचा, ऐ अल्लाह! मुझे ऐसा ईमान और यक़ीन अता फ़रमा जिस के बाद कुफ़्र न हो, ऐसी रहमत जिस के साथ मैं दुनिया और आख़िरत में तेरी करामत का शर्फ़ हासिल कर लूं। ऐ अल्लाह मैं तुझ से अता में क़ामयाबी का सवाल करता हूँ, एक रिवायत में है कि क़ज़ा में और शोहदा की मेहमान नवाज़ी, खुशबख़्त लोगों की ज़िंदगी और दुश्मनों पर मदद का सवाल करता हूँ, ऐ अल्लाह मैं अपनी ज़रुरत तेरे सामने रख रहा हूँ अगरचे मेरी अक़्ल थोड़ी और मेरे अमल कमज़ोर हैं, मैं तेरी रहमत का मोहताज हूँ, पस ऐ कामों का फैसला करने वाले! सीनों को शिफा देने वाले! मैं तुझ से

3419 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِمْرَانَ بْنِ أَبِي لَيْلَى قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي لَيْلَى، عَنْ دَاوُدَ بْنِ عَلِيٍّ هُوَ ابْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ لَيْلَةً حِينَ فَرَغَ مِنْ صَلَاتِهِ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ رَحْمَةً مِنْ عِنْدِكَ تَهْدِي بِهَا قَلْبِي، وَتَجْمَعُ بِهَا أَمْرِي، وَتَلُمُّ بِهَا شَعَثِي، وَتُصْلِحُ بِهَا غَائِبِي، وَتَرْفَعُ بِهَا شَاهِدِي، وَتُزَكِّي بِهَا عَمَلِي، وَتُلْهِمُنِي بِهَا رُشْدِي، وَتَرُدُّ بِهَا أُلْفَتِي، وَتَعْصِمُنِي بِهَا مِنْ كُلِّ سُوءٍ، اللَّهُمَّ أَعْطِنِي إِيمَانًا وَيَقِينًا لَيْسَ بَعْدَهُ كُفْرٌ، وَرَحْمَةً أَنَالُ بِهَا شَرَفَ كَرَامَتِكَ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الفَوْزَ فِي الْقَضَاءِ، وَنُزُلَ الشُّهَدَاءِ، وَعَيْشَ السُّعَدَاءِ، وَالنَّصْرَ عَلَى الأَعْدَاءِ، اللَّهُمَّ إِنِّي أُنْزِلُ بِكَ حَاجَتِي، وَإِنْ قَصُرَ رَأْيِي وَضَعُفَ عَمَلِي، افْتَقَرْتُ إِلَى رَحْمَتِكَ،

فَأَسْأَلُكَ يَا قَاضِيَ الأُمُورِ، وَيَا شَافِيَ الصُّدُورِ، كَمَا تُجِيرُ بَيْنَ الْبُحُورِ أَنْ تُجِيرَنِي مِنْ عَذَابِ السَّعِيرِ، وَمِنْ دَعْوَةِ الثُّبُورِ، وَمِنْ فِتْنَةِ الْقُبُورِ، اللَّهُمَّ مَا قَصُرَ عَنْهُ رَأْيِي، وَلَمْ تَبْلُغْهُ نِيَّتِي، وَلَمْ تَبْلُغْهُ مَسْأَلَتِي مِنْ خَيْرٍ وَعَدْتَهُ أَحَدًا مِنْ خَلْقِكَ، أَوْ خَيْرٍ أَنْتَ مُعْطِيهِ أَحَدًا مِنْ عِبَادِكَ، فَإِنِّي أَرْغَبُ إِلَيْكَ فِيهِ، وَأَسْأَلُكَهُ بِرَحْمَتِكَ رَبَّ الْعَالَمِينَ، اللَّهُمَّ ذَا الْحَبْلِ الشَّدِيدِ، وَالأَمْرِ الرَّشِيدِ، أَسْأَلُكَ الأَمْنَ يَوْمَ الْوَعِيدِ، وَالْجَنَّةَ يَوْمَ الْخُلُودِ، مَعَ الْمُقَرَّبِينَ الشُّهُودِ الرُّكَّعِ، السُّجُودِ الْمُوفِينَ بِالْعُهُودِ، إِنَّكَ رَحِيمٌ وَدُودٌ، وإِنَّكَ تَفْعَلُ مَا تُرِيدُ، اللَّهُمَّ اجْعَلْنَا هَادِينَ مُهْتَدِينَ، غَيْرَ ضَالِّينَ وَلاَ مُضِلِّينَ، سِلْمًا لأَوْلِيَائِكَ، وَعَدُوًّا لأَعْدَائِكَ، نُحِبُّ بِحُبِّكَ مَنْ أَحَبَّكَ، وَنُعَادِي بِعَدَاوَتِكَ مَنْ خَالَفَكَ، اللَّهُمَّ هَذَا الدُّعَاءُ وَعَلَيْكَ الإِجَابَةُ، وَهَذَا الْجُهْدُ وَعَلَيْكَ التُّكْلاَنُ، اللَّهُمَّ اجْعَلْ لِي نُورًا فِي قَلْبِي، وَنُورًا فِي قَبْرِي، وَنُورًا مِنْ بَيْنِ يَدَيَّ، وَنُورًا مِنْ خَلْفِي، وَنُورًا عَنْ يَمِينِي، وَنُورًا عَنْ شِمَالِي، وَنُورًا مِنْ فَوْقِي، وَنُورًا مِنْ تَحْتِي، وَنُورًا فِي

सवाल करता हूँ कि जिस तरह तू दरियाओं (समन्दरों) को मिलने से बचाता है मुझे भी दहकती अज़ाब से, बचा ले हलाकत की दुआ और क़ब्र के फ़ित्ने से बचा, ऐ अल्लाह जिस भलाई के (काम) से मेरी अक्ल थोड़ी हो, (यानी मेरी समझ में ना आए), न मेरी निय्यत उस तक पहुंची हो और न ही मेरा सवाल, जिसका तूने अपनी मख़्लूक़ में से किसी के लिए वादा किया है या ऐसी भलाई जो तू अपने बन्दों में से किसी को देने वाला है तो मैं इसमें रग़बत करता और ऐ रब्बुल आलमीन मैं वह तुझ से तेरी रहमत के साथ माँगता हूँ। ऐ अल्लाह मज़बूत रस्सी और भलाई के काम वाले! मैं तुझ से क़यामत के दिन अमन, हमेशा रहने के दिन ग़वाह और मुक़र्रब लोगों के साथ जन्नत का सवाल करता हूँ जो लोग बहुत ज़्यादा रुकू करने वाले बहुत ज़्यादा सज्दा करने वाले और अपने वादे को पूरा करने वाले हैं, तू मेहरबान और नर्मी करने वाला है और बिलाशुब्हा तू वही करता है जो तेरा इरादा हो, ऐ अल्लाह हमें रहनुमाई करने वाले हिदायत याफ्ता बना, जो न ख़ुद गुमराह हों और न गुमराह करने वाले, अपने दोस्तों के लिए बाइसे सलामती और अपने दुश्मनों के लिए दुश्मन बना, हम तेरी मोहब्बत की वजह से ही मोहब्बत करें और जो तेरी मुख़ालिफ़त करे उसके साथ तेरी दुश्मनी की वजह से ही दुश्मनी रखें, ऐ अल्लाह! यह दुआ है और इसे क़ुबूल करना तेरा ही काम है यह तो एक कोशिश है जब

سَمْعِي، وَنُورًا فِي بَصَرِي، وَنُورًا فِي شَعْرِي، وَنُورًا فِي بَشَرِي، وَنُورًا فِي لَحْمِي، وَنُورًا فِي دَمِي، وَنُورًا فِي عِظَامِي، اللَّهُمَّ أَعْظِمْ لِي نُورًا، وَأَعْطِنِي نُورًا، وَاجْعَلْ لِي نُورًا، سُبْحَانَ الَّذِي تَعَطَّفَ العِزَّ وَقَالَ بِهِ، سُبْحَانَ الَّذِي لَبِسَ الْمَجْدَ وَتَكَرَّمَ بِهِ، سُبْحَانَ الَّذِي لاَ يَنْبَغِي التَّسْبِيحُ إِلاَّ لَهُ، سُبْحَانَ ذِي الفَضْلِ وَالنِّعَمِ، سُبْحَانَ ذِي الْمَجْدِ وَالكَرَمِ، سُبْحَانَ ذِي الجَلاَلِ وَالإِكْرَامِ.

कि भरोसा तुझ पर ही है, ऐ अल्लाह मेरे दिल में नूर पैदा फ़रमा दे, मेरी क़ब्र में भी, मेरे आगे और मेरे पीछे भी, मेरे दायें और मेरे बाएं भी, मेरे ऊपर और मेरे नीचे भी, मेरे कानों और मेरी निगाह में भी, मेरे बालों और मेरे जिल्द में भी, मेरे गोश्त और मेरे खून में भी, ऐ अल्लाह मेरे नूर को खूब ज़्यादा कर, मुझे नूर अता कर और मेरे लिए (हर तरफ़) नूर कर दे, वह ज़ात पाक है जिसने इज़्ज़त की चादर ओढ़ी और उसे अपनी ज़ात के लिए ख़ास किया, वह ज़ात पाक है जिस ने बुज़ुर्गी का लिबास पहना और उसके साथ साहिबे इज़्ज़त बना, वह ज़ात पाक है जिसे तस्बीहात लायक़ हैं, फ़ज़्लो नेअ्मत वाला पाक है, इज़्ज़त व बुज़ुर्गी वाला पाक है, ज़ुल्जलाल वल इकराम पाक है।"

ज़ईफ़ुल इस्नाद: इब्ने खुज़ैमा:1119. तबरानी:10668 अस-सिलसिला अज़-ज़ईफ़ा:2916.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। इस तर्ज़ पर हम इसे इब्ने अबी लैला से सिर्फ़ इसी हदीस से ही जानते हैं। जब कि शोबा और सौरी ने भी सलमा बिन कुहैल से बवास्ता कुरैब, इब्ने अब्बास (رضي الله عنهما) से नबी (ﷺ) की इस हदीस का कुछ हिस्सा रिवायत किया है। लेकिन इस तरह तवालत के साथ (सविस्तार) रिवायत नहीं किया।

31 بَابُ مَا جَاءَ فِي الدُّعَاءِ عِنْدَ افْتِتَاحِ الصَّلاَةِ بِاللَّيْلِ

31 - नमाज़े तहज्जुद शुरू करते वक़्त की दुआ।

3420 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى، وَغَيْرُ وَاحِدٍ، قَالُوا: أَخْبَرَنَا عُمَرُ بْنُ يُونُسَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ بْنُ عَمَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو سَلَمَةَ، قَالَ: سَأَلْتُ عَائِشَةَ، بِأَيِّ شَيْءٍ

3420 - अबू सलमा रिवायत करते हैं कि मैंने सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) से सवाल किया कि नबी (ﷺ) अपनी रात की नमाज़ (तहज्जुद) को किस दुआ से शुरू करते थे? उन्होंने फ़रमाया, "जब आप रात को नमाज़ में खड़े

كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَفْتَتِحُ صَلَاتَهُ إِذَا قَامَ مِنَ اللَّيْلِ؟ قَالَتْ: كَانَ إِذَا قَامَ مِنَ اللَّيْلِ افْتَتَحَ صَلَاتَهُ، فَقَالَ: اللَّهُمَّ رَبَّ جِبْرِيلَ، وَمِيكَائِيلَ، وَإِسْرَافِيلَ، فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ، عَالِمَ الغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ، أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ، اهْدِنِي لِمَا اخْتُلِفَ فِيهِ مِنَ الحَقِّ بِإِذْنِكَ، إِنَّكَ عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ.

होते तो कहते " ऐ अल्लाह! जिब्रील, मीकाईल और इस्राफील के रब! आसमानों और ज़मीन को पैदा करने वाले! गैब और हाज़िर को जानने वाले! तू ही अपने बन्दों के दर्मियान उस चीज़ का फ़ैसला करता है जिस में यह इख़्तिलाफ़ करते हैं। हक़ की जिन बातों में इख़्तिलाफ़ किया गया है मुझे उसमें हिदायत दे दे बेशक तू सीधे रास्ते पर है।"

मुस्लिम:770. अबू दाऊद:767. इब्ने माजह:1357. निसाई:1625. अहमद:6/ 156.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

32 بَاب مِنْهُ دعاء: إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضَ.

32 - दुआ: मैंने यक्सू हो कर अपना चेहरा ज़मीनों आसमान को बनाने वाले की तरफ़ फेर दिया।

3421 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ أَبِي الشَّوَارِبِ، قَالَ: حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ الْمَاجِشُونِ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ أَبِي رَافِعٍ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا قَامَ فِي الصَّلَاةِ قَالَ: وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضَ حَنِيفًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ، إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ العَالَمِينَ، لَا شَرِيكَ لَهُ،

3421 - अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब नमाज़ में खड़े होते तो कहते: " मैंने यक्सू हो कर अपना चेहरा उस हस्ती की तरफ़ फेर दिया जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा फ़रमाया और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूँ। यक़ीनन मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानी मेरी ज़िंदगी और मेरी मौत अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए है, उसका कोई शरीक नहीं और मुझे इसी बात का हुक्म हुआ है और मैं फ़रमाबर्दारों में से हूँ। ऐ अल्लाह! तू ही बादशाह है! तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू मेरा रब है और मैं तेरा बन्दा हूँ, मैंने अपने आप पर ज़ुल्म किया और मैंने अपने गुनाहों का एतराफ़ किया, पस तू मेरे सब गुनाह माफ़ फ़रमा दे और वाक़िया यह है

وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ، اللَّهُمَّ أَنْتَ الْمَلِكُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ، أَنْتَ رَبِّي وَأَنَا عَبْدُكَ، ظَلَمْتُ نَفْسِي وَاعْتَرَفْتُ بِذَنْبِي، فَاغْفِرْ لِي ذُنُوبِي جَمِيعًا، إِنَّهُ لاَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلاَّ أَنْتَ، وَاهْدِنِي لأَحْسَنِ الأَخْلاَقِ، لاَ يَهْدِي لأَحْسَنِهَا إِلاَّ أَنْتَ، وَاصْرِفْ عَنِّي سَيِّئَهَا، لاَ يَصْرِفُ عَنِّي سَيِّئَهَا إِلاَّ أَنْتَ، آمَنْتُ بِكَ، تَبَارَكْتَ وَتَعَالَيْتَ، أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ، فَإِذَا رَكَعَ قَالَ: اللَّهُمَّ لَكَ رَكَعْتُ، وَبِكَ آمَنْتُ، وَلَكَ أَسْلَمْتُ، خَشَعَ لَكَ سَمْعِي وَبَصَرِي وَمُخِّي وَعَظْمِي وَعَصَبِي، فَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ قَالَ: اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الحَمْدُ مِلْءَ السَّمَوَاتِ وَالأَرَضِينَ وَمَا بَيْنَهُمَا، وَمِلْءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَيْءٍ، فَإِذَا سَجَدَ قَالَ: اللَّهُمَّ لَكَ سَجَدْتُ، وَبِكَ آمَنْتُ، وَلَكَ أَسْلَمْتُ، سَجَدَ وَجْهِيَ لِلَّذِي خَلَقَهُ فَصَوَّرَهُ، وَشَقَّ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ، تَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الخَالِقِينَ، ثُمَّ يَكُونُ آخِرَ مَا يَقُولُ بَيْنَ التَّشَهُّدِ وَالسَّلاَمِ، اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي مَا قَدَّمْتُ وَمَا أَخَّرْتُ، وَمَا أَسْرَرْتُ وَمَا

कि तेरे सिवा कोई गुनाह माफ़ नहीं कर सकता। और बेहतरीन अख्लाक़ की तरफ़ मेरी रहनुमाई फ़रमा तेरे सिवा कोई भी बेहतरीन अख्लाक़ की तरफ़ रहनुमाई नहीं कर सकता और मुझ से बुरे अख्लाक़ हटा दे कि तेरे सिवा कोई भी मुझ से बुरे अख्लाक़ नहीं हटा सकता, मैं तुझ पर ईमान लाया तू बहुत बा बरकत और बलंद है, मैं तुझ से माफ़ी माँगता हूँ और तेरे हुज़ूर तौबा करता हूँ।" फिर जब आप रुकू करते तो कहते: " ऐ अल्लाह मैं तेरे लिए झुका, तुझी पर ईमान लाया और मैं तेरा ही फ़रमांबरदार बना तेरे लिए ही इज्हारे आजिज़ी किया मेरे कानों ने, मेरी आँखों ने, मेरे दिमाग ने, मेरी हड्डियों और मेरे पुट्ठों ने, फिर जब रुकू से सर उठाते तो कहते: "ऐ अल्लाह! ऐ हमारे परवरदिगार! तेरे लिए ही हर क़िस्म की तारीफ़ है इतनी की जिस से आसमान, ज़मीनें और इन दोनों के दर्मियान भर जाए, और इस के बाद हर वह चीज़ भर जाए जिसे तू चाहे।" फिर जब सज्दा करते तो कहते: "ऐ अल्लाह मैंने तेरे लिए ही सज्दा किया, तुझी पर ईमान लाया और तेरा ही फ़रमांबर्दार हुआ मेरा चेहरा उस हस्ती के लिए सज्दा रेज़ हुआ जिस ने उसे पैदा किया, उसे शक्लो- सूरत दी और उसके कानों और आँखों के शिगाफ़ बनाए, बड़ा बा बरकत है अल्लाह जो बेहतरीन खालिक़ है।" फिर तशह्हुद और सलाम के दर्मियान सब से आखिर में कहते:' "ऐ अल्लाह! तू मुझे माफ़ कर दे जो कुछ मैंने पहले किया, और जो कुछ बाद में किया, जो कुछ मैंने छिप कर किया और जो कुछ मैंने सरे आम

أَعْلَنْتُ، وَمَا أَنْتَ أَعْلَمُ بِهِ مِنِّي، أَنْتَ الْمُقَدِّمُ، وَأَنْتَ الْمُؤَخِّرُ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ.

किया और जिसे तू मुझ से भी ज़्यादा जानता है तू ही आगे करने वाला और तू ही पीछे करने वाला है, तेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं।"

मुस्लिम:771. अबू दाऊद:760. इब्ने माजह्:1054. निसाई:897.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3422 - حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الْخَلاَّلُ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ الطَّيَالِسِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ، وَيُوسُفُ بْنُ الْمَاجِشُونِ، قَالَ عَبْدُ الْعَزِيزِ: حَدَّثَنِي عَمِّي، وَقَالَ يُوسُفُ: أَخْبَرَنِي أَبِي قَالَ: حَدَّثَنِي الأَعْرَجُ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ أَبِي رَافِعٍ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلاَةِ قَالَ: وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضَ حَنِيفًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ، إِنَّ صَلاَتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ، لاَ شَرِيكَ لَهُ وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ، اللَّهُمَّ أَنْتَ الْمَلِكُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ، أَنْتَ رَبِّي وَأَنَا عَبْدُكَ، ظَلَمْتُ نَفْسِي وَاعْتَرَفْتُ بِذَنْبِي، فَاغْفِرْ لِي ذَنْبِي جَمِيعًا إِنَّهُ لاَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلاَّ أَنْتَ، وَاهْدِنِي لأَحْسَنِ الأَخْلاَقِ، لاَ

3422 - सय्यदना अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (ﷺ) जब नमाज़ में खड़े होते तो कहते: " मैंने यक्सू होकर अपना चेहरा उस हस्ती की तरफ़ फेर दिया जिस ने आसमानों और ज़मीनों को पैदा फ़रमाया और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूँ, यक़ीनन मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानी, मेरी ज़िंदगी और मेरी मौत अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए है, उसका कोई शरीक नहीं और मुझे इसी बात का हुक्म हुआ है, कि मैं फ़रमांबर्दारों में से हूँ, ऐ अल्लाह तू ही बादशाह है तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू मेरा रब है, मैं तेरा बन्दा हूँ मैंने अपने आप पर ज़ुल्म किया और मैंने अपने गुनाहों का एतराफ़ किया, पस तू मेरे सब गुनाह माफ़ फ़रमा दे और बेहतरीन अख़्लाक़ की तरफ़ मेरी रहनुमाई फ़रमा, तेरे सिवा कोई भी बेहतरीन अख़्लाक़ की तरफ़ रहनुमाई नहीं कर सकता और मुझ से बुरे अख़्लाक़ हटा दे कि तेरे सिवा मुझ से कोई भी बुरे अख़्लाक़ नहीं हटा सकता, मैं हाज़िर हूँ और ताबे फ़रमान हूँ और तमाम तर भलाई तेरे हाथों में है और बुराई तेरी तरफ़ मंसूब नहीं हो सकती, मुझे तौफ़ीक़ तेरी ही वजह से है, इल्तिजा भी तेरी तरफ़ है तू बहुत बा बरकत और बलंद है मैं तुझ से माफ़ी माँगता हूँ और तेरी तरफ़

يَهْدِي لأَحْسَنِهَا إِلاَّ أَنْتَ، وَاصْرِفْ عَنِّي سَيِّئَهَا، لاَ يَصْرِفُ عَنِّي سَيِّئَهَا إِلاَّ أَنْتَ، لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ، وَالخَيْرُ كُلُّهُ فِي يَدَيْكَ، وَالشَّرُّ لَيْسَ إِلَيْكَ، أَنَا بِكَ وَإِلَيْكَ، تَبَارَكْتَ وَتَعَالَيْتَ، أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ، فَإِذَا رَكَعَ قَالَ: اللَّهُمَّ لَكَ رَكَعْتُ، وَبِكَ آمَنْتُ، وَلَكَ أَسْلَمْتُ، خَشَعَ لَكَ سَمْعِي وَبَصَرِي وَعِظَامِي وَعَصَبِي، فَإِذَا رَفَعَ قَالَ: اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الحَمْدُ مِلْءَ السَّمَاءِ، وَمِلْءَ الأَرْضِ، وَمِلْءَ مَا بَيْنَهُمَا، وَمِلْءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَيْءٍ بَعْدُ، فَإِذَا سَجَدَ قَالَ: اللَّهُمَّ لَكَ سَجَدْتُ، وَبِكَ آمَنْتُ، وَلَكَ أَسْلَمْتُ، سَجَدَ وَجْهِي لِلَّذِي خَلَقَهُ وَصَوَّرَهُ، وَشَقَّ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ، تَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الخَالِقِينَ، ثُمَّ يَقُولُ مِنْ آخِرِ مَا يَقُولُ بَيْنَ التَّشَهُّدِ وَالتَّسْلِيمِ: اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي مَا قَدَّمْتُ وَمَا أَخَّرْتُ، وَمَا أَسْرَرْتُ وَمَا أَعْلَنْتُ، وَمَا أَسْرَفْتُ وَمَا أَنْتَ أَعْلَمُ بِهِ مِنِّي، أَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَأَنْتَ الْمُؤَخِّرُ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ.

तौबा करता हूँ।" फिर जब रुकू करते तो कहते: "ऐ अल्लाह मैं तेरे लिए ही झुका, तुझी पर ईमान लाया और तेरा ही फ़रमांबरदार बना, मेरे कानों मेरी आँखों, मेरी हड्डियों और मेरे पुट्ठों ने तेरे लिए ही इज्हारे आजिज़ी किया।" और जब रुकू से उठते तो कहते: "ऐ अल्लाह ! ऐ हमारे परवरदिगार! तेरे लिए ही हर क़िस्म की तारीफ़ है इतनी कि जिस से आसमान भर जाए, और जो जिससे ज़मीन भर जाये और कुछ इन दोनों के दर्मियान है और उसके बाद हर वह चीज़ भर जाए जिसे तू चाहे।" फिर जब सज्दा करते तो कहते: "ऐ अल्लाह! मैंने तेरे लिए ही सज्दा किया, तुझी पर ईमान लाया और तेरा ही फ़रमांबरदार हुआ, मेरा चेहरा उस हस्ती के लिए सज्दा रेज़ हुआ जिस ने उसे पैदा किया, उसे शक्लो सूरत दी और उसके कानों और आँखों के शिगाफ़ बनाए सो अल्लाह तआला बड़ा बा बरकत है जो बेहतरीन पैदा करने वाला है। फिर जब तशह्हुद और सलाम के दर्मियान होते तो सब से आखिर में कहते: " ऐ अल्लाह! तू मुझे माफ़ करदे जो कुछ मैंने पहले किया और जो कुछ बाद में किया, जो कुछ मैंने छिप कर किया और जो कुछ मैंने सरे आम किया और जो मैंने ज़्यादती की और जिसे तू मुझ से भी ज़्यादा जानता है, तू ही (हर चीज़ को उसके मक़ाम तक) आगे करने वाला है और तू ही (उस से) पीछे करने वाला है। तेरे सिवा कोई माबूद नहीं है।"

सहीह: तख़रीज के लिए देखिए 266.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3423 - अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब फ़र्ज़ नमाज़ में खड़े होते तो अपने दोनों हाथ अपने कंधो के बराबर तक उठाते और आप (ﷺ) जब अपनी किरअत मुकम्मल कर के रुकू करने का इरादा करते और रुकू से सर उठाते वक़्त भी ऐसे ही (रफुउल यदैन) किया करते थे, और जब अपनी नमाज़ में बैठे होते तो अपने हाथ नहीं उठाते थे। फिर जब दो रकअतें पढ़ कर खड़े होते तो उसी तरह अपने दोनों हाथ उठाते फिर अल्लाहु अकबर कहते, और जब तक्बीरे तहरीमा के बाद नमाज़ शुरू करते तो यह दुआ पढ़ते "मैंने यक्सू हो कर अपना चेहरा उस हस्ती की तरफ़ फेर दिया जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा फ़रमाया और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूँ। यक़ीनन मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानी, मेरी ज़िंदगी और मेरी मौत अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए है, उसका कोई शरीक नहीं और मुझे इसी बात का हुक्म हुआ है और मैं अल्लाह के फ़रमांबरदारों में से हूँ, ऐ अल्लाह! तू ही बादशाह है, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू पाक है, तू मेरा रब है और मैं तेरा बन्दा हूँ,मैंने अपने आप पर ज़ुल्म किया और मैंने अपने गुनाहों का एतराफ़ किया, पस तू मेरे सब गुनाह माफ़ फ़रमा दे वाक़िया यह है कि तेरे सिवा कोई गुनाह माफ़ नहीं कर सकता, और मुझ से बुरे अख़्लाक़ हटा दे कि तेरे सिवा कोई भी मुझ से बुरे अख़्लाक़ नहीं हटा सकता मैं हाज़िर हूँ और मैं ताबे फ़रमान हूँ और मुझे तौफ़ीक़ तेरी ही वजह से है इल्तिजा

3423 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الخَلاَّلُ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ الهَاشِمِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي الزِّنَادِ، عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الفَضْلِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ أَبِي رَافِعٍ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ، عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كَانَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلاَةِ الْمَكْتُوبَةِ رَفَعَ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ، وَيَصْنَعُ ذَلِكَ إِذَا قَضَى قِرَاءَتَهُ وَأَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ، وَيَصْنَعُهُ إِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ، وَلاَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِي شَيْءٍ مِنْ صَلاَتِهِ وَهُوَ قَاعِدٌ، فَإِذَا قَامَ مِنْ سَجْدَتَيْنِ رَفَعَ يَدَيْهِ كَذَلِكَ فَكَبَّرَ، وَيَقُولُ حِينَ يَفْتَتِحُ الصَّلاَةَ بَعْدَ التَّكْبِيرِ: وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضَ حَنِيفًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ، إِنَّ صَلاَتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ العَالَمِينَ، لاَ شَرِيكَ لَهُ، وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ، اللَّهُمَّ أَنْتَ الْمَلِكُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ، سُبْحَانَكَ أَنْتَ رَبِّي، وَأَنَا عَبْدُكَ، ظَلَمْتُ نَفْسِي وَاعْتَرَفْتُ بِذَنْبِي، فَاغْفِرْ لِي ذَنْبِي جَمِيعًا، إِنَّهُ لاَ

يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلاَّ أَنْتَ، وَاهْدِنِي لأَحْسَنِ الأَخْلاَقِ، لاَ يَهْدِي لأَحْسَنِهَا إِلاَّ أَنْتَ، وَاصْرِفْ عَنِّي سَيِّئَهَا، لاَ يَصْرِفُ عَنِّي سَيِّئَهَا إِلاَّ أَنْتَ، لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ، أَنَا بِكَ وَإِلَيْكَ، وَلاَ مَنْجَا، وَلاَ مَلْجَأَ إِلاَّ إِلَيْكَ، أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ، ثُمَّ يَقْرَأُ، فَإِذَا رَكَعَ كَانَ كَلاَمُهُ فِي رُكُوعِهِ أَنْ يَقُولَ: اللَّهُمَّ لَكَ رَكَعْتُ، وَبِكَ آمَنْتُ، وَلَكَ أَسْلَمْتُ، وَأَنْتَ رَبِّي، خَشَعَ سَمْعِي وَبَصَرِي وَمُخِّي وَعَظْمِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ، فَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ قَالَ: سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ، ثُمَّ يُتْبِعُهَا: اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ مِلْءَ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ، وَمِلْءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَيْءٍ بَعْدُ، فَإِذَا سَجَدَ قَالَ فِي سُجُودِهِ: اللَّهُمَّ لَكَ سَجَدْتُ، وَبِكَ آمَنْتُ، وَلَكَ أَسْلَمْتُ، وَأَنْتَ رَبِّي، سَجَدَ وَجْهِي لِلَّذِي خَلَقَهُ وَشَقَّ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ، تَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ، وَيَقُولُ عِنْدَ انْصِرَافِهِ مِنَ الصَّلاَةِ: اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي مَا قَدَّمْتُ وَمَا أَخَّرْتُ، وَمَا أَسْرَرْتُ وَمَا أَعْلَنْتُ، وَأَنْتَ إِلَهِي لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ.

भी तेरी ही तरफ़ है तेरे सिवा कोई जाए निजात और पनाह की जगह नहीं है, मैं तुझ से बख़्शिश माँगता हूँ और तेरी तरफ़ ही तौबा करता हूँ।" फिर आप किरअत करते फिर जब आप रुकू करते तो रुकू में आप(ﷺ) की यह दुआ होती थी "ऐ अल्लाह मैं तेरे लिए ही झुका और तुझी पर ईमान लाया और मैं तेरा ही फ़रमांबरदार बना और तू ही मेरा रब है, मेरे कानों, आँखों, मेरे दिमाग़ और मेरी हड्डियों ने अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए ही इज़्हारे आजिज़ी किया।" फिर जब रुकू से सर उठाते तो कहते "अल्लाह ने सुन ली जिस ने उस की तारीफ़ की ऐ अल्लाह! "ऐ हमारे परवरदिगार! तेरे लिए ही हर क़िस्म की तारीफ़ है इतनी कि जिस से आसमानों ज़मीन भर जाए और उसके बाद हर वह चीज़ भर जाए जिसे तू चाहे।" फिर जब सज्दा करते तो कहते "ऐ अल्लाह मैंने तेरे लिए ही सज्दा किया, तुझी पर ईमान लाया और तेरा ही फ़रमांबरदार हुआ और तू ही मेरा रब है मेरा चेहरा उस हस्ती के लिए सज्दा रेज़ हुआ जिस ने उसे पैदा किया और उसकी शक्लो सूरत बनाई बड़ा बरकत है अल्लाह जो बेहतरीन पैदा करने वाला है।" और नमाज़ मुकम्मल करने के वक़्त यह कहते " ऐ अल्लाह! तू मुझे माफ़ कर दे जो मैंने पहले किया और जो मैंने बाद में किया जो कुछ मैंने छिप कर किया और जो कुछ मैंने सरे आम किया और तू ही मेरा माबूद है, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।"

हसन सहीह: तख़रीज के लिए देखिए 266.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। इमाम शाफ़ेई और हमारे साथियों का इसी पर अमल है। जबकि अहले कूफा के बअ़्ज़ उलमा कहते हैं कि यह नफ़ल नमाज़ में है इसे फ़र्ज़ नमाज़ में न पढ़े।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इमाम अहमद (رحمه الله) भी इसे कुछ ख़याल नहीं करते और मैंने अबू अब्दुल्लाह यानी मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी से सुना कह रहे थे कि सुलैमान बिन दाऊद हाशमी ने इस हदीस को ज़िक्र करने के बाद कहा यह (हदीस) हमारे नज़दीक ज़ोहरी की बवास्ता सालिम उनके बाप से रिवायतकर्दा हदीस की तरह ही है।

33 - सज्द-ए- तिलावत की दुआएं।

33 بَاب مَا يَقُولُ فِي سُجُودِ الْقُرْآنِ

3424 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) से रिवायत है कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मैंने आज रात ख़्वाब में देखा कि मैं एक दरख़्त के पीछे नमाज़ पढ़ रहा हूँ, फिर मैंने सज्दा किया तो मेरे सज्दे की वजह से दरख़्त ने भी सज्दा किया, मैंने उसे सुना तो वह दरख़्त कह रहा था : ऐ अल्लाह! मेरे लिए इस सज्दे के एवज़ अपने यहाँ अज्र लिख दे और इसकी वजह से मुझ से गुनाहों का बोझ उतार दे, इसे मेरे लिए अपने यहाँ ज़खीरा बना दे और इस सज्दे को मेरी तरफ़ से कुबूल फ़रमा जैसे तूने यह सज्दा अपने बन्दे दाऊद (عليه السلام) की तरफ़ से कुबूल किया था।

हसन: तख़रीज के लिए देखिए 579.

3424 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَزِيدَ بْنِ خُنَيْسٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ أَبِي يَزِيدَ، قَالَ: قَالَ لِي ابْنُ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ أَبِي يَزِيدَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، رَأَيْتُنِي اللَّيْلَةَ وَأَنَا نَائِمٌ كَأَنِّي كُنْتُ أُصَلِّي خَلْفَ شَجَرَةٍ، فَسَجَدْتُ فَسَجَدَتِ الشَّجَرَةُ لِسُجُودِي، فَسَمِعْتُهَا وَهِيَ تَقُولُ: اللَّهُمَّ اكْتُبْ لِي بِهَا عِنْدَكَ أَجْرًا، وَضَعْ عَنِّي بِهَا وِزْرًا، وَاجْعَلْهَا لِي عِنْدَكَ ذُخْرًا، وَتَقَبَّلْهَا مِنِّي كَمَا تَقَبَّلْتَهَا مِنْ عَبْدِكَ دَاوُدَ. قَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ: قَالَ لِي جَدُّكَ: قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ، فَقَرَأَ النَّبِيُّ ﷺ سَجْدَةً ثُمَّ سَجَدَ. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: فَسَمِعْتُهُ وَهُوَ يَقُولُ مِثْلَ مَا أَخْبَرَهُ الرَّجُلُ عَنْ قَوْلِ الشَّجَرَةِ.

इब्ने जुरैज कहते हैं: मुझे तुम्हारे दादा ने बताया कि इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) कहते हैं: फिर नबी (ﷺ) ने आयते सज्दा की किरअत पर सज्दा किया, इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं: मैंने आप को सुना आप

वही दुआ पढ़ रहे थे जो उस आदमी ने दरख़्त की तरफ़ से बताई थी।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है हम इसे सिर्फ इसी सनद से जानते हैं और इस बारे में अबू सईद (رضی اللہ عنہ) से भी हदीस मर्वी है।

3425 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الوَهَّابِ الثَّقَفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا خَالِدٌ الحَذَّاءُ، عَنْ أَبِي العَالِيَةِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ فِي سُجُودِ القُرْآنِ بِاللَّيْلِ: سَجَدَ وَجْهِي لِلَّذِي خَلَقَهُ، وَشَقَّ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ بِحَوْلِهِ وَقُوَّتِهِ.

3425 - सय्यदा आयशा (رضی اللہ عنہا) बयान करती हैं कि नबी (صلی اللہ علیہ وسلم) रात के वक़्त क़ुरआन के सज्दों में यह कहा करते थे " मेरे चेहरे ने उस ज़ात को सज्दा किया जिस ने उसे पैदा फ़रमाया और उस ने अपनी ताक़त और कुव्वत से उस के कान और आँख के सूराख बनाए।"(1)

सहीह: तख़रीज के लिए देखिए 580.

तौज़ीह: (1) इमाम हाकिम ने इसे आगे فتبارك الله أحسن الخالقين के अल्फ़ाज़ भी रिवायत किए हैं। देखिये (अल-मुस्तदरक हाकिम, हदीस:802)

34 بَابُ مَا يَقُولُ إِذَا خَرَجَ مِنْ بَيْتِهِ

34 - घर से निकलने की दुआ।

3426 - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ الأُمَوِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ قَالَ، يَعْنِي، إِذَا خَرَجَ مِنْ بَيْتِهِ: بِسْمِ اللهِ، تَوَكَّلْتُ عَلَى اللهِ، لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ، يُقَالُ لَهُ: كُفِيتَ، وَوُقِيتَ، وَتَنَحَّى عَنْهُ الشَّيْطَانُ.

3426 - अनस बिन मालिक (رضی اللہ عنہ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (صلی اللہ علیہ وسلم) ने फ़रमाया, "जिस शख़्स ने अपने घर से निकलते वक़्त कहा (मैं इस घर से) अल्लाह के नाम के साथ (निकल रहा हूँ) मैंने अल्लाह पर भरोसा किया और गुनाह से बचने की तौफ़ीक़ है न नेकी करने की ताक़त मगर अल्लाह ही की तौफ़ीक़ से।" तो उस से कहा जाता है कि तुझे काफी है, तुझे बचा लिया गया और शैतान उस से दूर हो जाता है।"

सहीह: अबू दाऊद:2095. सहीहुत्तर्गीब:1605. इब्ने हिब्बान:822. बैहक़ी:5/251.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है हम इसे सिर्फ इसी सनद से जानते हैं।

35 - दुआ: अल्लाह के नाम से मैंने अल्लाह पर ही भरोसा किया।

35 بَاب مِنْهُ دعاء: بِسْمِ اللهِ، تَوَكَّلْتُ عَلَى اللهِ

3427 - सय्यदा उम्मे सलमा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि नबी (ﷺ) जब अपने घर से निकलते तो कहते: "अल्लाह के नाम से, मैंने अल्लाह ही पर भरोसा किया ऐ अल्लाह! हम तुझ से पनाह मांगते हैं कि हम फिसलें या गुमराह हों, हम ज़ुल्म करें या हम पर ज़ुल्म किया जाए, हम जिहालत के काम करें या हम पर जिहालत की जाए।"

सहीह: अबू दाऊद:5094. निसाई:5486. इब्ने माजह:3884. अहमद:6/306.

3427 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ عَامِرٍ الشَّعْبِيِّ، عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا خَرَجَ مِنْ بَيْتِهِ قَالَ: بِسْمِ اللهِ، تَوَكَّلْتُ عَلَى اللهِ، اللَّهُمَّ إِنَّا نَعُوذُ بِكَ مِنْ أَنْ نَزِلَّ، أَوْ نَضِلَّ، أَوْ نَظْلِمَ، أَوْ نُظْلَمَ، أَوْ نَجْهَلَ، أَوْ يُجْهَلَ عَلَيْنَا.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

36 - बाज़ार में दाख़िल होने की दुआ।

36 بَاب مَا يَقُولُ إِذَا دَخَلَ السُّوقَ

3428 - मुहम्मद बिन वासे कहते हैं कि मैं मक्का आया तो मुझे मेरे भाई सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर मिले: "उन्होंने मुझे अपने बाप के वास्ते से अपने दादा उमर बिन ख़त्ताब (رضي الله عنه) से बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिस शख़्स ने बाज़ार में दाख़िल होते वक़्त यह कहा: " अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं, उसकी बादशाहत है, उस के लिए हर क़िस्म की तारीफ़ है, वह ज़िंदा रहने वाला है, उसे मौत नहीं आएगी, उसी के हाथ में सारी भलाई है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।" तो अल्लाह तआला उस के लिए दस लाख नेकियाँ लिख देते हैं, दस

3428 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا أَزْهَرُ بْنُ سِنَانٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ وَاسِعٍ، قَالَ: قَدِمْتُ مَكَّةَ فَلَقِيَنِي أَخِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ، فَحَدَّثَنِي، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ دَخَلَ السُّوقَ، فَقَالَ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ، وَهُوَ حَيٌّ لاَ يَمُوتُ، بِيَدِهِ الخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، كَتَبَ اللَّهُ لَهُ أَلْفَ أَلْفِ حَسَنَةٍ، وَمَحَا عَنْهُ أَلْفَ

أَلْفِ سَيِّئَةٍ، وَرَفَعَ لَهُ أَلْفَ أَلْفِ دَرَجَةٍ.

लाख बुराइयां मिटा देते हैं और उसके दस लाख दर्जात बलंद कर देते हैं।"

हसन: इब्ने माजह्:2235. सहीहुत्तर्गीब:1694. अहमद:1/47. हाकिम:1/538.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है इसे आले ज़ुबैर के खजांची अम्र बिन दीनार ने भी सालिम बिन अब्दुल्लाह से इसी तरह रिवायत किया है।

3429 - حَدَّثَنَا بِذَلِكَ أَحْمَدُ بْنُ عَبْدَةَ الضَّبِّيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، وَالْمُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، قَالاَ: حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ، وَهُوَ قَهْرَمَانُ آلِ الزُّبَيْرِ، عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ قَالَ فِي السُّوقِ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الحَمْدُ، يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ حَيٌّ لاَ يَمُوتُ، بِيَدِهِ الخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، كَتَبَ اللَّهُ لَهُ أَلْفَ أَلْفِ حَسَنَةٍ، وَمَحَا عَنْهُ أَلْفَ أَلْفِ سَيِّئَةٍ، وَبَنَى لَهُ بَيْتًا فِي الجَنَّةِ.

3429 - सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर अपने बाप के ज़रिए अपने दादा से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिस शख़्स ने बाज़ार में यह दुआ पढ़ी "अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाहत है उसी के लिए हर क़िस्म की तारीफ़ है वह ज़िंदा करता और मारता है और वह ख़ुद ज़िंदा रहने वाला है, उसे मौत नहीं आएगी, उसी के हाथ में हर क़िस्म की भलाई है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है" तो अल्लाह तआला उस के लिए दस लाख नेकियाँ लिख देते हैं, उस से दस लाख गुनाह मिटा देते हैं और उस के लिए जन्नत में एक घर बना देते हैं।"

हसन: देखिये पिछली हदीस।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह अम्र बिन दीनार बस्रा के रहने वाले थे, इन के बारे में बअ़ज़ मोहद्दिसीन ने कलाम किया है। नीज़ इस हदीस को यहया बिन सुलैम अत्ताइफ़ी ने इमरान बिन मुस्लिम से बवास्ता अब्दुल्लाह बिन दीनार, इब्ने उमर (رضي الله عنه) के ज़रिए नबी (ﷺ) से रिवायत किया है इसमें उन्होंने उमर (رضي الله عنه) का ज़िक्र नहीं किया।

37 بَابُ مَا يَقُولُ العَبْدُ إِذَا مَرِضَ

37 - मरीज़ क्या दुआ पढ़े?

3430 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ جُحَادَةَ، قَالَ:

3430 - सय्यदना अबू सईद और सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) गवाही देते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो शख़्स यह कहे "अल्लाह के

حَدَّثَنَا عَبْدُ الْجَبَّارِ بْنُ عَبَّاسٍ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ الأَغَرِّ أَبِي مُسْلِمٍ، قَالَ: أَشْهَدُ عَلَى أَبِي سَعِيدٍ، وَأَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّهُمَا شَهِدَا عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَالَ: مَنْ قَالَ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ، صَدَّقَهُ رَبُّهُ، فَقَالَ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنَا، وَأَنَا أَكْبَرُ، وَإِذَا قَالَ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ قَالَ: يَقُولُ اللَّهُ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنَا وَحْدِي، وَإِذَا قَالَ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، قَالَ اللَّهُ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنَا وَحْدِي لاَ شَرِيكَ لِي، وَإِذَا قَالَ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الحَمْدُ، قَالَ اللَّهُ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنَا، لِيَ الْمُلْكُ وَلِيَ الحَمْدُ، وَإِذَا قَالَ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَلاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ، قَالَ اللَّهُ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنَا، وَلاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِي، وَكَانَ يَقُولُ: مَنْ قَالَهَا فِي مَرَضِهِ ثُمَّ مَاتَ لَمْ تَطْعَمْهُ النَّارُ.

सिवा कोई माबूद नहीं और अल्लाह बहुत बड़ा है, तो अल्लाह तआला उस की तस्दीक करते हुए फ़रमाते हैं: "मेरे सिवा कोई माबूद नहीं और मैं ही सब से बड़ा हूँ, और जब बन्दा यह कहे "अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह अकेला है, तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: "मेरे सिवा कोई माबूद नहीं और मैं अकेला हूँ, और जब बन्दा यह कहे:' "अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं, तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: मेरे सिवा कोई माबुद नहीं, मैं अकेला हूँ मेरा कोई शरीक नहीं, जब बन्दा यह कहे "अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं उसकी बादशाहत है और उसी के लिए हर क़िस्म की तारीफ़ है, तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: "मेरे सिवा कोई माबूद नहीं मेरी ही बादशाहत है और मेरे लिए ही तमाम तारीफ़ें हैं। और जब बन्दा यह कहता है: "अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं गुनाह से बचने की ताक़त और नेकी करने की ताक़त अल्लाह ही की तौफ़ीक़ से है, तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: "मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, गुनाह से बचने की ताक़त और नेकी करने की कुव्वत मेरे साथ ही है।" और आप (ﷺ) फ़रमाया करते थे: "जो शख़्स अपनी बीमारी में यह कहे फिर मर जाए तो आग उसे नहीं छुएगी।"

सहीह: इब्ने माजह:379. सहीहुत्तर्गीब:3481. इब्ने हिब्बान:851. हाकिम:1/5.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है इसे शोबा ने भी अबू इस्हाक़ से बवास्ता अगराबी मुस्लिम, अबू हुरैरा और अबू सईद (رضي الله عنه) से इसी हदीस के मफ़हूम में रिवायत किया है लेकिन शोबा ने इसे मर्फ़ू ज़िक्र नहीं किया। यह हदीस हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने बवास्ता मुहम्मद बिन जाफ़र शोबा से बयान की है।

38 - जब कोई किसी मुसीबत ज़दा को देखे तो क्या कहे?

38 بَاب مَا يَقُولُ إِذَا رَأَى مُبْتَلًى

3431 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ بَزِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، مَوْلَى آلِ الزُّبَيْرِ، عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنْ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ رَأَى صَاحِبَ بَلَاءٍ، فَقَالَ: الحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي عَافَانِي مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهِ، وَفَضَّلَنِي عَلَى كَثِيرٍ مِمَّنْ خَلَقَ تَفْضِيلاً، إِلاَّ عُوفِيَ مِنْ ذَلِكَ البَلَاءِ كَائِنًا مَا كَانَ مَا عَاشَ

3431 - सय्यदना उमर (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो शख़्स किसी मुसीबतज़दा को देख कर यह दुआ पढ़े "हर क़िस्म की तारीफ़ उस अल्लाह के लिए है जिसने मुझे इस चीज़ से आफ़ियत दी जिस में तुझे मुब्तला किया है और मुझे अपनी मख़्लूक़ में से बहुत से लोगों पर फ़ज़ीलत अता फ़रमाई है।" तो उसे उस मुसीबत से आफ़ियत मिल जाएगी जब तक वह ज़िंदा रहे और जो भी मुसीबत हो।"

हसन: इब्ने माजह:3892. तयालिसी:13. अब्द बिन हुमैद:38.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। नीज़ इस बारे में अबू हुरैरा से भी हदीस मर्वी है और अम्र बिन दीनार आले ज़ुबैर के खजांची थे जो कि बसरा के रहने वाले थे, और यह हदीस में क़वी नहीं हैं। और यह सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर से कुछ रिवायत लेने में अकेले हैं, नीज़ अबू जाफ़र मुहम्मद बिन अली से मर्वी है कि जब आदमी किसी मुसीबतज़दा को देखे तो उस मुसीबत से पनाह मांगे और यह दुआ अपने दिल में कहे मुसीबतज़दा को न सुनाये।

3432 - حَدَّثَنَا أَبُو جَعْفَرٍ السِّمْنَانِيُّ، وَغَيْرُ وَاحِدٍ، قَالُوا: حَدَّثَنَا مُطَرِّفُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الْمَدِينِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ العُمَرِيُّ، عَنْ سُهَيْلِ بْنِ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَنْ رَأَى مُبْتَلًى، فَقَالَ: الحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي عَافَانِي مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهِ، وَفَضَّلَنِي عَلَى كَثِيرٍ مِمَّنْ خَلَقَ تَفْضِيلاً، لَمْ يُصِبْهُ ذَلِكَ البَلَاءُ.

3432 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिस शख़्स ने किसी मुसीबतज़दा को देख कर यह दुआ पढ़ी "हर क़िस्म की तारीफ़ उस अल्लाह के लिए है जिसने मुझे उस चीज़ से आफ़ियत दी जिस में तुझे मुब्तला किया है और मुझे अपनी मख़्लूक़ में से बहुत से लोगों पर फ़ज़ीलत अता फ़रमाई है" तो उसे वह मुसीबत नहीं पहुंचेगी।"

सहीह:तबरानी फ़िल औसत:4721. सहीहुत्तर्गीब:3392.

39 - मजलिस से उठते वक़्त की दुआ।

39 بَاب مَا يَقُولُ إِذَا قَامَ مِنْ مَجْلِسِهِ

3433 - حَدَّثَنَا أَبُو عُبَيْدَةَ بْنُ أَبِي السَّفَرِ الكُوفِيُّ وَاسْمُهُ أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الهَمْدَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الحَجَّاجُ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ: قَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ: أَخْبَرَنِي مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ، عَنْ سُهَيْلِ بْنِ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ جَلَسَ فِي مَجْلِسٍ فَكَثُرَ فِيهِ لَغَطُهُ، فَقَالَ قَبْلَ أَنْ يَقُومَ مِنْ مَجْلِسِهِ ذَلِكَ: سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ، أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ، إِلاَّ غُفِرَ لَهُ مَا كَانَ فِي مَجْلِسِهِ ذَلِكَ.

3433 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो शख़्स किसी मजलिस में बैठे फिर वहाँ उसकी फ़ुज़ूल बातें बहुत ज़्यादा हो जाएँ तो वह अपनी इस मजलिस से उठने से पहले यह दुआ पढ़ ले "ऐ अल्लाह! तू अपनी तारीफ़ के साथ पाक है मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं मैं तुझ से बख़्शिश माँगता हूँ और तेरी तरफ़ तौबा करता हूँ" तो उसके इस मजलिस में होने वाले तमाम गुनाहों को बख़्श दिया जाता है।"

सहीह: अबू दाऊद:4858. हाकिम:1/536. अहमद:2/369.

वज़ाहत: इस बारे में अबू बर्ज़ा (رضي الله عنه) और आयशा (رضي الله عنها) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है हम इसे सुहैल के तरीक़ से ही जानते हैं।

3434 - حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْمُحَارِبِيُّ، عَنْ مَالِكِ بْنِ مِغْوَلٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سُوقَةَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: كَانَ تُعَدُّ لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْمَجْلِسِ الوَاحِدِ مِائَةُ مَرَّةٍ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَقُومَ: رَبِّ اغْفِرْ لِي وَتُبْ عَلَيَّ، إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الغَفُورُ.

3434 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि एक मजलिस से उठने से पहले रसूलुल्लाह (ﷺ) की सौ मर्तबा इस्तिग़फ़ार शुमार की जाती थी। "ऐ मेरे रब! मुझे बख़्श दे मुझ पर रुजू फ़रमा, बेशक तू बहुत ज़्यादा तौबा क़ुबूल करने वाला बख़्शने वाला है।

सहीह: अबू दाऊद:1516. इब्ने माजह:3814. अहमद:2/21. इब्ने हिब्बान:927.

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं: हमें इब्ने अबी उमर ने बवास्ता सुफ़ियान, मुहम्मद बिन सूका से इसी सनद के साथ ऐसे ही रिवायत की है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

40 - मुसीबत के वक़्त की दुआ।

40 بَاب مَا جَاءَ مَا يَقُولُ عِنْدَ الْكَرْبِ

3435 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي الْعَالِيَةِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ نَبِيَّ اللهِ ﷺ كَانَ يَدْعُو عِنْدَ الْكَرْبِ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ الْحَلِيمُ الْحَكِيمُ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ.

3435 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) मुसीबत (परेशानी) के वक़्त यह दुआ पढ़ते थे "अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह बड़ा बुर्दबार, बड़ी हिकमत वाला है, अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं जो अर्शे अज़ीम का रब है अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं जो आसमानों और ज़मीन का रब और अर्शे करीम का रब है।"

बुख़ारी:6345. मुस्लिम:2730. इब्ने माजह:3883. अहमद:1/228.

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं: हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने उन्हें इब्ने अबी अदी ने, उन्हें हिशाम ने क़तादा से उन्हें अबू आलिया ने बवास्ता इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) नबी करीम (ﷺ) से इस जैसी ही हदीस बयान की है। नीज़ इस बारे में अली (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3436 - حَدَّثَنَا أَبُو سَلَمَةَ يَحْيَى بْنُ الْمُغِيرَةِ الْمَخْزُومِيُّ الْمَدِينِيُّ، وَغَيْرُ وَاحِدٍ، قَالُوا: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي فُدَيْكٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ الْفَضْلِ، عَنِ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ إِذَا أَهَمَّهُ الأَمْرُ رَفَعَ رَأْسَهُ إِلَى السَّمَاءِ، فَقَالَ: سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيمِ، وَإِذَا اجْتَهَدَ فِي الدُّعَاءِ قَالَ: يَا حَيُّ، يَا قَيُّومُ.

3436 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) को जब कोई फ़िक्र लाहिक़ होती तो आप अपना सरे मुबारक आसमान की तरफ़ उठा कर कहते: "अज़मत वाला अल्लाह पाक है" और जब आप(ﷺ) दुआ में खूब कोशिश करते तो कहते: "ऐ ज़िंदा रहने वाले! ऐ क़ायम रहने वाले!"

ज़ईफ़ जिद्दा: अबू याला:6545. इब्नु सुन्ना फी अमलिल यौम वल लैला: 338. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफ़ा: 6345.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

41 - किसी जगह उतरने की दुआ

41 بَابُ مَا جَاءَ مَا يَقُولُ إِذَا نَزَلَ مَنْزِلاً

3437 - सय्यदा खौला बिन्ते हकीम सुलमिया (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो शख़्स किसी जगह उतर कर यह दुआ पढ़ ले "मैं अल्लाह के मुकम्मल कलिमात की पनाह माँगता हूँ उसकी मख़्लूक़ के शर से" तो उसे कोई चीज़ नुकसान नहीं पहुंचाएगी यहाँ तक कि वह अपनी उस जगह से कूच कर जाए।"

मुस्लिम: 2708. इब्ने माजह्:3547. अहमद:6/ 377.

3437 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنِ الحَارِثِ بْنِ يَعْقُوبَ، عَنْ يَعْقُوبَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ الأَشَجِّ، عَنْ بُسْرِ بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، عَنْ خَوْلَةَ بِنْتِ حَكِيمٍ السُّلَمِيَّةِ، عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ نَزَلَ مَنْزِلاً ثُمَّ قَالَ: أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ، لَمْ يَضُرَّهُ شَيْءٌ حَتَّى يَرْتَحِلَ مِنْ مَنْزِلِهِ ذَلِكَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रह.) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है। और मालिक बिन अनस ने भी इस हदीस को याकूब बिन अब्दुल्लाह बिन अशज से इसी हदीस की तरह रिवायत किया है। नीज़ यह हदीस इब्ने अजलान ने भी याकूब बिन अब्दुल्लाह बिन अशज से रिवायत की है और वह इसे बवास्ता सईद बिन मुसय्यब, खौला (रज़ि.) से बताते हैं,

इमाम तिर्मिज़ी (रह.) फ़रमाते हैं: लैस की रिवायत इब्ने अजलान की रिवायत से ज़्यादा सहीह है।

42 - सफ़र पर निकलते वक़्त की दुआ।

42 بَابُ مَا يَقُولُ إِذَا خَرَجَ مُسَافِرًا

3438 - सय्यदना अबू हुरैरा (रज़ि.) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब सफ़र करते तो आप अपनी सवारी पर सवार होते वक़्त अपनी उंगली से इशारा करके फ़रमाते। शोबा ने भी उंगली फैलाई। "ऐ अल्लाह! तू ही सफ़र का साथी और घर में निगहबान है, ऐ अल्लाह! तू अपनी ख़ैर ख़्वाही के साथ हमारे साथ रह और हमें अपने ज़िम्मा में ही वापस लौटा, ऐ अल्लाह! हमारे लिए ज़मीन को समेट दे और

3438 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُمَرَ بْنِ عَلِيٍّ الْمُقَدَّمِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ بِشْرٍ الخَثْعَمِيِّ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِذَا سَافَرَ فَرَكِبَ رَاحِلَتَهُ، قَالَ بِإِصْبَعِهِ، وَمَدَّ شُعْبَةُ إِصْبَعَهُ، قَالَ: اللَّهُمَّ أَنْتَ الصَّاحِبُ فِي السَّفَرِ، وَالخَلِيفَةُ فِي الأَهْلِ،

اللَّهُمَّ اصْحَبْنَا بِنُصْحِكَ، وَاقْلِبْنَا بِذِمَّةٍ، اللَّهُمَّ ازْوِ لَنَا الأَرْضَ، وَهَوِّنْ عَلَيْنَا السَّفَرَ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ، وَكَآبَةِ الْمُنْقَلَبِ.

हमारे सफ़र को आसान बना दे, ऐ अल्लाह! मैं सफ़र की मशक्क़त और ग़मगीन लौटने से तेरी पनाह माँगता हूँ।"

सहीह: अबू दाऊद:2598. निसाई:5501. अहमद:2/401. हाकिम:2/99.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस मैं सिर्फ इब्ने अदी के तरीक़ से ही जानता था हत्ता कि मुझे सुवैद ने भी बयान की।

हमें सुवैद बिन नस्र ने भी बवास्ता अब्दुल्लाह बिन मुबारक, शोबा से इसी सनद के साथ इसी मफ़हूम की हदीस बयान की है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: अबू हुरैरा (رضي الله عنه) के तरीक़ से यह हदीस हसन ग़रीब है हम इसे बवास्ता इब्ने अदी ही शोबा से जानते हैं।

3439 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ عَاصِمٍ الأَحْوَلِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ سَرْجِسَ، قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا سَافَرَ يَقُولُ: اللَّهُمَّ أَنْتَ الصَّاحِبُ فِي السَّفَرِ، وَالخَلِيفَةُ فِي الأَهْلِ، اللَّهُمَّ اصْحَبْنَا فِي سَفَرِنَا، وَاخْلُفْنَا فِي أَهْلِنَا، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ، وَكَآبَةِ الْمُنْقَلَبِ، وَمِنَ الْحَوْرِ بَعْدَ الْكَوْرِ، وَمِنْ دَعْوَةِ الْمَظْلُومِ، وَمِنْ سُوءِ الْمَنْظَرِ فِي الأَهْلِ وَالْمَالِ.

3439 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन सर्जिस (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) जब सफ़र करते तो कहते "ऐ अल्लाह! तू ही सफ़र में साथी और घर में निगहबान है, ऐ अल्लाह! तू हमारे सफ़र में हमारा साथ दे और हमारे घर में हमारा मुहाफ़िज़ बन जा, ऐ अल्लाह मैं सफ़र की मशक्क़त से, ग़मगीन लौटने से, फ़रमांबरदारी से निकल कर नाफ़रमानी की तरफ़ जाने से, मजलूम की बद्दुआ और अहलो माल में बुरा मंज़र देखने से तेरी पनाह माँगता हूँ।"

मुस्लिम:1343. इब्ने माजह:3888. निसाई:5498-5500. अहमद:5/82.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है, और " الحور بعد الكون " भी मर्वी है और "الحور بعد الكور", الكون या الكور दोनों का मतलब एक ही है और वह है ईमान से कुफ़्र की तरफ़ फ़रमांबरदारी से नाफ़रमानी की तरफ़ रुजू करना(पलटना)।

यानी इस से मुराद एक चीज़ से दूसरी ऐसी चीज़ की तरफ़ लौटना जो उस से बुरी हो।

43 - जब सफ़र से वापस आए तो क्या कहे?

43 بَاب مَا يَقُولُ إِذَا رَجَعَ مِنَ السَّفَرِ

3440 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، قَالَ: سَمِعْتُ الرَّبِيعَ بْنَ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا قَدِمَ مِنْ سَفَرٍ قَالَ: آيِبُونَ تَائِبُونَ عَابِدُونَ، لِرَبِّنَا حَامِدُونَ.

3440 - सय्यदना बराअ बिन आज़िब (ﷺ) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) जब सफ़र से वापस आते तो कहते "(यह) लौटने वाले, तौबा करने वाले, इबादत करने वाले और अपने रब की तारीफ़ करने वाले हैं।"

सहीह: अहमद:4/381. तयालिसी:716. इब्ने हिब्बान:2711. इब्ने अबी शैबा:12/520.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है, नीज़ सौरी ने भी इस हदीस को बवास्ता अबू इस्हाक़, बराअ बिन आज़िब (ﷺ) से रिवायत किया है। इसमें रबीअ बिन बराअ का ज़िक्र नहीं किया। लेकिन शोबा की रिवायत ज़्यादा सहीह है।

नीज़ इस बारे में इब्ने उमर, अनस और जाबिर बिन अब्दुल्लाह (ﷺ) से भी अहादीस मर्वी हैं।

44. मदीना की दीवारें देखकर आप (ﷺ) का अपनी सवारी को दौड़ाना और अपने जानवर को हरकत देना।

بَابٌ مِنْهُ إِيضَاعُهُ (ﷺ) رَاحِلَتَهُ وَتَحْرِيكُهُ دَابَّتَهُ عِنْدَ نَظَرِهِ إِلَى جُدْرَانِ الْمَدِينَةِ

3441 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ حُمَيْدٍ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا قَدِمَ مِنْ سَفَرٍ، فَنَظَرَ إِلَى جُدْرَانِ الْمَدِينَةِ، أَوْضَعَ رَاحِلَتَهُ، وَإِنْ كَانَ عَلَى دَابَّةٍ حَرَّكَهَا مِنْ حُبِّهَا.

3441 - सय्यदना अनस (ﷺ) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) जब सफ़र से लौटते, आप की नज़र मदीना की दीवारों पर पड़ती तो आप(ﷺ) अपनी ऊंटनी को दौड़ाते और अगर आप(ﷺ) किसी चौपाये पर होते तो भी मदीना की मोहब्बत की वजह से उसे हरकत देते थे।

बुख़ारी:1802. अहमद:3/159. इब्ने हिब्बान:2710.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

45 - किसी आदमी को अल्विदा करने की दुआ।

45 بَاب مَا يَقُولُ إِذَا وَدَّعَ إِنْسَانًا

3442 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي عُبَيْدِ اللهِ السُّلَيْمِيُّ البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو قُتَيْبَةَ سَلْمُ بْنُ قُتَيْبَةَ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ بْنِ أُمَيَّةَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِذَا وَدَّعَ رَجُلاً أَخَذَ بِيَدِهِ، فَلاَ يَدَعُهَا حَتَّى يَكُونَ الرَّجُلُ هُوَ يَدَعُ يَدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَيَقُولُ: اسْتَوْدِعِ اللَّهَ دِينَكَ وَأَمَانَتَكَ وَآخِرَ عَمَلِكَ.

3442 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) जब किसी आदमी को रूख़सत करते तो उसका हाथ पकड़ लेते फिर उसे न छोड़ते यहाँ तक कि वह आदमी ख़ुद नबी (ﷺ) का हाथ छोड़ता और आप(ﷺ) फ़रमाते: "मैं तुम्हारा दीन, तुम्हारी अमानत और तुम्हारे आमाल का ख़ातमा अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ।"

सहीह: इब्ने माजह:2826. अस-सिलसिला अस-सहीहा:16. तबरानी:13384.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस ग़रीब है नीज़ यह हदीस कई तुरूक़ से इब्ने उमर (رضي الله عنه) से मर्वी है।

3443 - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ مُوسَى الفَزَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ خُثَيْمٍ، عَنْ حَنْظَلَةَ، عَنْ سَالِمٍ، أَنَّ ابْنَ عُمَرَ، كَانَ يَقُولُ لِلرَّجُلِ إِذَا أَرَادَ سَفَرًا: أَنِ ادْنُ مِنِّي أُوَدِّعْكَ كَمَا كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُوَدِّعُنَا، فَيَقُولُ: أَسْتَوْدِعُ اللَّهَ دِينَكَ، وَأَمَانَتَكَ، وَخَوَاتِيمَ عَمَلِكَ.

3443 - सालिम (رحمه الله) से रिवायत है कि जब कोई आदमी सफ़र का इरादा करता तो इब्ने उमर (رضي الله عنه) उस से कहते: " कि मेरे क़रीब हो जा मैं तुम्हें वैसे ही रूख़सत करता हूँ जैसे रसूलुल्लाह (ﷺ) हमें रूख़सत किया करते थे फिर कहते: "मैं तुम्हारा दीन, तुम्हारी अमानत और तुम्हारे आमाल का खात्मा अल्लाह को सौंपता हूँ।"

सहीह: अहमद: 2/7. निसाई: 8806. अस-सिलसिला अस-सहीहा:16.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है जो सालिम बिन अब्दुल्लाह के तरीक़ से मर्वी है।

46- दुआ: अल्लाह तआ़ला तुझे तक़्वा का तोशा दे।

46 بَابٌ مِنْهُ دعاء: زَوَّدَكَ اللّٰهُ التَّقْوَى.

3444 - अनस (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मैं सफ़र पर जाना चाहता हूँ, आप मुझे जादे राह (सफ़र का खर्चा, तोशा) दीजिए तो आप ने फ़रमाया: ''अल्लाह तआ़ला तुझे तक़्वा का तोशा दे'' उस ने अर्ज़ किया, कुछ और भी दीजिए। आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "और वह तेरे गुनाह बख्शे।" उस ने कहा: मेरे मां बाप आप पर फ़िदा हों और दीजिए आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "और तू जहां भी हो वह तुझे भलाई मयस्सर करे।"

3444 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي زِيَادٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَيَّارٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنِّي أُرِيدُ سَفَرًا فَزَوِّدْنِي. قَالَ: زَوَّدَكَ اللَّهُ التَّقْوَى، قَالَ: زِدْنِي، قَالَ: وَغَفَرَ ذَنْبَكَ قَالَ: زِدْنِي بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي، قَالَ: وَيَسَّرَ لَكَ الخَيْرَ حَيْثُمَا كُنْتَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

47 - आप (ﷺ) का मुसाफिर को अल्लाह से डरने और हर बलंदी पर अल्लाहु अकबर कहने की वसिय्यत करना।

47 بَابٌ مِنْهُ وصية المسافر بتقوى الله والتكبير علي كل شرف.

3445 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि एक आदमी ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मैं सफ़र का इरादा रखता हूँ सो आप मुझे कोई वसीयत कर दीजिए। आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह के डर (तक़्वा) को लाजिम रखना और हर बलंदी पर अल्लाहु अकबर कहना" फिर जब वह वापस मुड़ा तो आप(ﷺ) ने कहा: ऐ अल्लाह इस के लिए दूरी को समेट दे और इस पर सफ़र आसान कर दे।"

हसन सहीह:हाकिम:2/97. इब्ने खुजैमा:2532. अल-कलिमुत्तयब:172. अहमद:2/325. हाकिम:1/445.

3445 - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الكِنْدِيُّ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ حُبَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أُسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَجُلاً قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنِّي أُرِيدُ أَنْ أُسَافِرَ فَأَوْصِنِي، قَالَ: عَلَيْكَ بِتَقْوَى اللهِ، وَالتَّكْبِيرِ عَلَى كُلِّ شَرَفٍ، فَلَمَّا أَنْ وَلَّى الرَّجُلُ، قَالَ: اللَّهُمَّ اطْوِ لَهُ الأَرْضَ، وَهَوِّنْ عَلَيْهِ السَّفَرَ.

बज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।

48 باب مَا يَقُولُ إِذَا رَكِبَ دَابَّةً

3446 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ رَبِيعَةَ، قَالَ: شَهِدْتُ عَلِيًّا، أُتِيَ بِدَابَّةٍ لِيَرْكَبَهَا، فَلَمَّا وَضَعَ رِجْلَهُ فِي الرِّكَابِ، قَالَ: بِسْمِ اللهِ ثَلاَثًا، فَلَمَّا اسْتَوَى عَلَى ظَهْرِهَا، قَالَ: الحَمْدُ لِلَّهِ، ثُمَّ قَالَ: {سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا، وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ وَإِنَّا إِلَى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ}، ثُمَّ قَالَ: الحَمْدُ لِلَّهِ ثَلاَثًا، اللَّهُ أَكْبَرُ ثَلاَثًا، سُبْحَانَكَ إِنِّي قَدْ ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي، فَإِنَّهُ لاَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلاَّ أَنْتَ، ثُمَّ ضَحِكَ. فَقُلْتُ: مِنْ أَيِّ شَيْءٍ ضَحِكْتَ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ؟ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَنَعَ كَمَا صَنَعْتُ، ثُمَّ ضَحِكَ، فَقُلْتُ: مِنْ أَيِّ شَيْءٍ ضَحِكْتَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: إِنَّ رَبَّكَ لَيَعْجَبُ مِنْ عَبْدِهِ إِذَا قَالَ: رَبِّ اغْفِرْ لِي ذُنُوبِي إِنَّهُ لاَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ غَيْرُكَ.

48 - सवारी (किसी जानवर) पर सवार होने की दुआ।

3446 - अली बिन रबीया (ﷺ) कहते हैं मैं गवाही देता हूँ कि सय्यदना अली (ﷺ) के पास एक सवारी लाई गई ताकि वह उस पर सवार हों, फिर जब उन्होंने अपना पाँव रिकाब में रखा तो तीन दफ़ा बिस्मिल्लाह कहा, फिर जब उसकी पुश्त पर बैठ गए तो अल्हम्दुलिल्लाह कहा, फिर कहा: "पाक है वह ज़ात जिस ने इस सवारी को हमारे ताबे कर दिया वर्ना हम इसे काबू में करने वाले नहीं थे और बेशक हम अपने रब ही की तरफ़ वापस जाने वाले हैं" (अज- ज़ुख्रूफ़: 13- 14) फिर तीन मर्तबा अल्हम्दुलिल्लाह और तीन दफ़ा अल्लाहु अकबर कहने के बाद कहा: " (ऐ अल्लाह!) तू पाक है मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया पस तू मुझे बख्श दे, वाक़िया यह है कि तू ही गुनाहों को बख़्श सकता है। फिर हंस पड़े, मैंने अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप किस वजह से हँसे हैं? फ़रमाया,मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा आप(ﷺ) ने भी ऐसे ही किया जैसे मैंने किया है, फिर आप मुस्कुरा दिए, मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! आप किस लिए मुस्कुराए हैं? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला अपने बन्दे से खुश होता है जब बन्दा कहता है ऐ

मेरे रब मुझे मेरे गुनाह बख़्श दे क्योंकि तेरे सिवा कोई गुनाहों को नहीं बख़्श सकता।"

सहीह: अबू दाऊद:2602. अहमद: 1/97. इब्ने हिब्बान:2697.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में इब्ने उमर (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है और यह हदीस हसन सहीह है।

3447 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ عَبْدِ اللهِ الْبَارِقِيِّ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا سَافَرَ فَرَكِبَ رَاحِلَتَهُ كَبَّرَ ثَلَاثًا وَقَالَ:: {سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ وَإِنَّا إِلَى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ}، ثُمَّ يَقُولُ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ فِي سَفَرِي هَذَا مِنَ الْبِرِّ وَالتَّقْوَى، وَمِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضَى، اللَّهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا الْمَسِيرَ، وَاطْوِ عَنَّا بُعْدَ الْأَرْضِ، اللَّهُمَّ أَنْتَ الصَّاحِبُ فِي السَّفَرِ، وَالْخَلِيفَةُ فِي الْأَهْلِ، اللَّهُمَّ اصْحَبْنَا فِي سَفَرِنَا، وَاخْلُفْنَا فِي أَهْلِنَا، وَكَانَ يَقُولُ إِذَا رَجَعَ إِلَى أَهْلِهِ: آيِبُونَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَائِبُونَ، عَابِدُونَ لِرَبِّنَا حَامِدُونَ.

3447 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) जब सफ़र का इरादा करते तो अपनी सवारी पर बैठ कर तीन दफ़ा अल्लाहु अकबर कहते ओर कहते "पाक है वह ज़ात जिस ने इस सवारी को हमारे ताबे कर दिया वर्ना हम इसे काबू में करने वाले नहीं थे और बेशक हम अपने रब की तरफ़ वापस जाने वाले हैं (अज- जुख़रूफ़: 13- 14) फिर कहते हैं: ऐ अल्लाह! मैं तुझ से अपने इस सफ़र में नेकी, तक़्वा और ऐसे अमल का सवाल करता हूँ जिसे तू पसंद फ़रमाए। ऐ अल्लाह, हम पर यह सफ़र आसान कर दे और ज़मीन की लम्बी मसाफ़त हम से लपेट दे, ऐ अल्लाह! इस सफ़र में तू ही हमारा साथी है और तू ही हमारा जानशीन है घर वालों में, ऐ अल्लाह! तू इस सफ़र में हमारा साथ दे और हमारे घर वालों में हमारा जानशीन बन जा" हम वापस लौटने वाले हैं, तौबा करने वाले हैं, इबादत करने वाले और अपने रब ही की तारीफ़ करने वाले हैं।"

मुस्लिम: 1342. अबू दाऊद:2599. अहमद:2/ 144.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

50 - मुसाफ़िर की दुआ।

50- بَابٌ ما ذكر في دعوة المسافر.

3448 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "तीन दुआएं कुबूल की जाती हैं: "मज़्लूम की दुआ, मुसाफिर की दुआ और बाप की बेटे पर बद्दुआ।

हसन: तख़रीज के लिए देखिए हदीस नम्बर: 1905.

3448 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الحَجَّاجُ الصَّوَّافُ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي جَعْفَرٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ثَلَاثُ دَعَوَاتٍ مُسْتَجَابَاتٌ: دَعْوَةُ الْمَظْلُومِ، وَدَعْوَةُ الْمُسَافِرِ، وَدَعْوَةُ الْوَالِدِ عَلَى وَلَدِهِ.

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं: हमें अली बिन हुज्र ने वह कहते हैं: हमें इस्माईल बिन इब्राहीम ने हिशाम दस्तवाई के ज़रिए, यहया बिन अबी कसीर से इसी सनद के साथ ऐसी ही हदीस बयान की है और इसमें इज़ाफ़ा है कि " (यह दुआएं) क़ुबूल होती हैं और इनकी क़ुबूलियत में कोई शक नहीं।" (हसन)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है और अबू जाफ़र राज़ी जिनसे यहया बिन अबी कसीर ने रिवायत की है उन्हें अबू जाफ़र अल-मुअज़्ज़िन भी कहा जाता है और यह्या बिन अबी कसीर ने उनसे बहुत सी अहादीस रिवायत की हैं मगर हम उनका नाम नहीं जानते।

51 - आंधी चलने के वक़्त की दुआ।

51 بَاب مَا يَقُولُ إِذَا هَاجَتِ الرِّيحُ

3449 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) रिवायत करती हैं कि नबी (ﷺ) जब आंधी देखते तो यह दुआ पढ़ते "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से इसकी भलाई का सवाल करता हूँ और उस चीज़ की भलाई का जो इसमें है और उस चीज़ की भलाई का जो इस के साथ भेजा गया है और मैं इसके शर से तेरी पनाह में आता हूँ और उस चीज़ के शर से जो इसमें है और उस चीज़ के शर से जिस के साथ उसे भेजा गया है।"

मुस्लिम:899. बैहक़ी:3/360.

3449 - حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الأَسْوَدِ أَبُو عَمْرٍو البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَبِيعَةَ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا رَأَى الرِّيحَ قَالَ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِهَا، وَخَيْرِ مَا فِيهَا، وَخَيْرِ مَا أُرْسِلَتْ بِهِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا، وَشَرِّ مَا فِيهَا، وَشَرِّ مَا أُرْسِلَتْ بِهِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में उबय बिन काब (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है और यह हदीस हसन है।

52 - बादल की गरज की आवाज़ सुन कर क्या दुआ पढ़ी जाए।

52 بَابُ مَا يَقُولُ إِذَا سَمِعَ الرَّعْدَ

3450 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) जब कड़क[1] और बिजलियों[2] की आवाज़ सुनते तो कहते "ऐ अल्लाह! हमें अपने ग़ज़ब के साथ न मारना और हमें अपने अज़ाब से हलाक न करना बल्कि इस से पहले ही हमें आफ़ियत दे देना।"

ज़ईफ़: अहमद: 2/100. निसाई:10763. अबू याला:5507.हाकिम:4/286. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:1042.

3450 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الوَاحِدِ بْنُ زِيَادٍ، عَنِ الْحَجَّاجِ بْنِ أَرْطَاةَ، عَنْ أَبِي مَطَرٍ، عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا سَمِعَ صَوْتَ الرَّعْدِ وَالصَّوَاعِقِ، قَالَ: اللَّهُمَّ لاَ تَقْتُلْنَا بِغَضَبِكَ، وَلاَ تُهْلِكْنَا بِعَذَابِكَ، وَعَافِنَا قَبْلَ ذَلِكَ.

तौज़ीह: (1) الرعد : गरज, कड़क, बिजली की चमक के बाद गूंजने वाली आवाज़, (अल-कामूसुल वहीद, प.638) (2) الصوائق : आसमान से गिरने वाली बिजली। (अल-कामूसुल वहीद, प.925)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है हम इसे सिर्फ इसी सनद से जानते हैं।

53 - चाँद देखने की दुआ।

53 بَابُ مَا يَقُولُ عِنْدَ رُؤْيَةِ الهِلاَلِ

3451 - सय्यदना तल्हा बिन उबैदुल्लाह (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) जब चाँद देखते तो कहते "ऐ अल्लाह! तू इसे अम्न, ईमान, सलामती और इस्लाम के साथ हम पर तुलू फ़रमा, (ऐ चाँद) मेरा और तेरा रब अल्लाह ही है।"

सहीह: अहमद:1/162. हाकिम:4/285. दारमी:1695. अस-सिलसिला अस-सहीहा:1816.

3451 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ العَقَدِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ سُفْيَانَ الْمَدِينِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي بِلاَلُ بْنِ يَحْيَى بْنِ طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ إِذَا رَأَى الهِلاَلَ قَالَ: اللَّهُمَّ أَهْلِلْهُ عَلَيْنَا بِالْيُمْنِ وَالإِيمَانِ وَالسَّلاَمَةِ وَالإِسْلاَمِ، رَبِّي وَرَبُّكَ اللَّهُ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

54 - गुस्से के वक़्त की दुआ।

54 بَاب مَا يَقُولُ عِنْدَ الْغَضَبِ

3452 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ قَالَ: اسْتَبَّ رَجُلَانِ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى عُرِفَ الْغَضَبُ فِي وَجْهِ أَحَدِهِمَا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: إِنِّي لَأَعْلَمُ كَلِمَةً لَوْ قَالَهَا لَذَهَبَ غَضَبُهُ: أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ.

3452 - सय्यदना मुआज़ बिन जबल (ﷺ) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) के पास दो आदमियों ने एक दूसरे को बुरा भला कहा, हत्ता (यहाँ तक) कि उनमें से एक के चेहरे में गुस्से के आसार नज़र आने लगे तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैं एक ऐसा कलिमा जानता हूँ अगर यह कह दे तो इसका गुस्सा ख़त्म हो जाएगा।" (वह यह है) "मैं अल्लाह की पनाह में आता हूँ शैतान मर्दूद से।"

सहीह: अबू दाऊद:4780. अहमद:5/240. तयालिसी:570.

वज़ाहत: इस बारे में सुलैमान बिन सुर्द (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है। (सुलैमान बिन सुर्द वाली रिवायत सहीह बुख़ारी में है हदीस:3282 (अबू सूफ़ियान)

अबू ईसा कहते हैं: हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने अब्दुर्रहमान के ज़रिए सुफ़ियान से इसी सनद के साथ इसी तरह रिवायत की है और यह हदीस मुर्सल है। क्योंकि अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला ने मुआज़ बिन जबल (ﷺ) से सिमा (सुनना) नहीं किया, मुआज़ बिन जबल (ﷺ) उमर (ﷺ) की ख़िलाफ़त में फौत हुए हैं और जब उमर बिन ख़त्ताब (ﷺ) शहीद हुए थे तो अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला छः साल के थे। नीज़ शोबा ने भी बवास्ता हकम, अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला से इसी तरह रिवायत की है और अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला ने उमर (ﷺ) से रिवायत की है और उन्हें देखा भी था। (सही)

अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला की कुनियत अबू ईसा थी और अबू लैला का नाम यसार था, नीज़ अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला से मर्वी है कि मैंने नबी (ﷺ) के एक सौ बीस अंसारी सहाबा को पाया है।

55 - बुरा ख़्वाब देखते वक़्त की दुआ।

55 بَاب مَا يَقُولُ إِذَا رَأَى رُؤْيَا يَكْرَهُهَا

3453 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا بَكْرُ بْنُ مُضَرَ، عَنِ ابْنِ الْهَادِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ خَبَّابٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ

3453 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (ﷺ) से रिवायत है कि उन्होंने नबी (ﷺ) से सुना आप ने फ़रमाया, "तुम में से कोई शख़्स जब अच्छा

صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: إِذَا رَأَى أَحَدُكُمُ الرُّؤْيَا يُحِبُّهَا فَإِنَّمَا هِيَ مِنَ اللهِ فَلْيَحْمَدِ اللَّهَ عَلَيْهَا وَلْيُحَدِّثْ بِمَا رَأَى، وَإِذَا رَأَى غَيْرَ ذَلِكَ مِمَّا يَكْرَهُهُ فَإِنَّمَا هِيَ مِنَ الشَّيْطَانِ، فَلْيَسْتَعِذْ بِاللَّهِ مِنْ شَرِّهَا وَلاَ يَذْكُرْهَا لأَحَدٍ فَإِنَّهَا لاَ تَضُرُّهُ.

ख़्वाब देखे तो वह अल्लाह की तरफ़ से है उसे चाहिए कि उस पर अल्लाह का शुक्र अदा करे और अपना ख़्वाब बयान कर दे, और जब इसके अलावा कोई नापसंदीदा ख़्वाब देखे तो वह शैतान की तरफ़ से है, उसे चाहिए कि वह इसके शर से अल्लाह की पनाह मांगे और किसी को बयान न करे वह उसे नुक़सान नहीं दे सकेगा।"

बुख़ारी: 6985. अहमद:3/8. अबू तयालिसी: 1363.

वज़ाहत: इस बारे में अबू क़तादा (رضی اللہ عنہ) से भी हदीस मर्वी है और इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है, इब्ने हाद का नाम यज़ीद बिन अब्दुल्लाह बिन उसामा बिन हाद मदनी है। मोहद्दिसीन के नज़दीक सिक़ह है। इन से इमाम मालिक और दीगर लोगों ने रिवायत की है।

56 بَاب مَا يَقُولُ إِذَا رَأَى الْبَاكُورَةَ مِنَ الثَّمَرِ

56 - नया नया फल देखते वक़्त की दुआ।

3454 - حَدَّثَنَا الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكٌ (ح) وحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ سُهَيْلِ بْنِ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: كَانَ النَّاسُ إِذَا رَأَوْا أَوَّلَ الثَّمَرِ جَاءُوا بِهِ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَإِذَا أَخَذَهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي ثِمَارِنَا، وَبَارِكْ لَنَا فِي مَدِينَتِنَا وَبَارِكْ لَنَا فِي صَاعِنَا وَمُدِّنَا، اللَّهُمَّ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ عَبْدُكَ وَخَلِيلُكَ وَنَبِيُّكَ وَإِنِّي عَبْدُكَ وَنَبِيُّكَ، وَإِنَّهُ دَعَاكَ لِمَكَّةَ وَأَنَا أَدْعُوكَ لِلْمَدِينَةِ بِمِثْلِ مَا دَعَاكَ بِهِ لِمَكَّةَ وَمِثْلِهِ مَعَهُ،

3454 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضی اللہ عنہ) रिवायत करते हैं कि लोग जब पहला-पहला फल देखते तो उसे रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास ले कर आते, चुनांचे जब रसूलुल्लाह (ﷺ) उसे पकड़ लेते तो दुआ करते "ऐ अल्लाह! हमारे लिए हमारे फलों में बरकत अता फ़रमा, हमारे लिए हमारे शहर में बरकत अता फ़रमा, और हमारे लिए हमारे साअ और हमारे मुद (मापने के पैमानों) में बरकत फ़रमा, ऐ अल्लाह! इब्राहीम तेरे बन्दे, तेरे खलील और तेरे नबी थे और मैं भी तेरा बन्दा हूँ और तेरा नबी हूँ, उन्होंने तुझ से मक्का के लिए दुआ की थी और मैं तुझ से मदीना के लिए वही कुछ माँगता हूँ जो उन्होंने मक्का के लिए तुझ से माँगा था और इतना ही उसके साथ भी।" रावी कहते हैं: फिर आप जो सब से छोटा

ثُمَّ يَدْعُو أَصْغَرَ وَلِيدٍ يَرَاهُ فَيُعْطِيهِ ذَلِكَ الثَّمَرَ.

बच्चा देखते उसको बुला कर वह फल दे देते।
मुस्लिम:1373. इब्ने माजह:3229. मालिक:1846. दारमी:2078.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

57 بَابُ مَا يَقُولُ إِذَا أَكَلَ طَعَامًا

3455 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ عُمَرَ وَهُوَ ابْنُ أَبِي حَرْمَلَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: دَخَلْتُ مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَا وَخَالِدُ بْنُ الْوَلِيدِ عَلَى مَيْمُونَةَ فَجَاءَتْنَا بِإِنَاءٍ مِنْ لَبَنٍ فَشَرِبَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنَا عَلَى يَمِينِهِ وَخَالِدٌ عَلَى شِمَالِهِ، فَقَالَ لِي: الشَّرْبَةُ لَكَ، فَإِنْ شِئْتَ آثَرْتَ بِهَا خَالِدًا، فَقُلْتُ: مَا كُنْتُ أُوثِرُ عَلَى سُؤْرِكَ أَحَدًا، ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ أَطْعَمَهُ اللَّهُ الطَّعَامَ فَلْيَقُلْ: اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيهِ وَأَطْعِمْنَا خَيْرًا مِنْهُ، وَمَنْ سَقَاهُ اللَّهُ لَبَنًا فَلْيَقُلْ: اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيهِ وَزِدْنَا مِنْهُ. وَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَيْسَ شَيْءٌ يَجْزِي مَكَانَ الطَّعَامِ وَالشَّرَابِ غَيْرُ اللَّبَنِ.

57 - खाना खाने की दुआ।

3455 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैं और ख़ालिद बिन वलीद रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ मैमूना (رضي الله عنها) के पास गए तो वह हमारे पास दूध का एक बर्तन ले कर आयी, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इसे नोश फ़रमाया, जब कि मैं आप की दायें और खालिद आप के बाएं जानिब थे तो आप(ﷺ) ने मुझ से फ़रमाया : " पीने का हक़ तुम्हारा है अगर तुम चाहो तो खालिद को तर्जीह दे सकते हो।" तो मैंने अर्ज़ किया, मैं आप (ﷺ) के बचे हुए दूध पर किसी को भी तर्जीह नहीं दूंगा। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिसे अल्लाह तआला खाना खिलाये तो वह कहे: "ऐ अल्लाह! हमारे लिए इसमें बरकत अता कर और हमें इससे बेहतर खिला और जिस शख़्स को अल्लाह तआला दूध पिलाये तो ह कहें: ऐ अल्लाह हमारे लिये बरकत अता फर्मा और हमें इसके साथ बढ़ा दे" और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "खाने और पीने की जगह दूध के अलावा और कोई चीज़ काम नहीं आती।"

हसन: अबू दाऊद:3730. इब्ने माजह:3322. अहमद:1/220. हुमैदी:482.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है। बअ़ज़ ने इस हदीस को अली बिन ज़ैद से रिवायत करते हुए उमर बिन हर्मला कहा है और बअ़ज़ ने अम्र बिन हर्मला लेकिन यह सहीह नहीं है।

58 - खाने से फ़रागत के बाद की दुआएँ

58 بَاب مَا يَقُولُ إِذَا فَرَغَ مِنَ الطَّعَامِ

3456 - सय्यदना अबू उमामा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) के आगे से दस्तरख्वान उठाया जाता तो आप (ﷺ) कहते: " हर क़िस्म की तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है, बहुत ज़्यादा, पाकीज़ा और इसमें बरकत डाली गई है न इसे विदा[1] किया गया है और न ही इस से बेनियाज़ हुआ जा सकता है ऐ हमारे रब! "

बुख़ारी:5458. अबू दाऊद:3849. इब्ने माजह्:3284. अहमद:5/252.

3456 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا ثَوْرُ بْنُ يَزِيدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَعْدَانَ، عَنْ أَبِي أُمَامَةَ، قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا رُفِعَتِ الْمَائِدَةُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ يَقُولُ: الحَمْدُ لِلَّهِ حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ غَيْرَ مُوَدَّعٍ وَلاَ مُسْتَغْنًى عَنْهُ رَبَّنَا.

तौज़ीह: (1) विदा: (रूख़सत करने छोड़ने) से है यानी यह हमारा आख़िरी खाना नहीं है बल्कि जब तक ज़िंदगी है खाते रहेंगे। (हिस्नुल मुस्लिम तबा दारुस्सलाम प.131)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3457 - सय्यदना अबू सईद (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) जब खाते या पीते तो फ़ारिग हो कर कहते: "हर क़िस्म की तारीफ़ उस अल्लाह के लिए हैं जिसने हमें पिलाया और हमें मुसलमान बनाया।

ज़ईफ़: अबू दाऊद:3850. इब्ने माजह्:3283. अहमद:3/98.

3457 - حَدَّثَنَا أَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غِيَاثٍ، وَأَبُو خَالِدٍ الأَحْمَرُ، عَنْ حَجَّاجِ بْنِ أَرْطَاةَ، عَنْ رِيَاحِ بْنِ عَبِيدَةَ، قَالَ حَفْصٌ: عَنِ ابْنِ أَخِي أَبِي سَعِيدٍ، وقَالَ أَبُو خَالِدٍ: عَنْ مَوْلًى لأَبِي سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا أَكَلَ أَوْ شَرِبَ قَالَ: الحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مُسْلِمِينَ

3458 - सहल बिन मुआज़ बिन अनस (رضي الله عنه) अपने बाप से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो शख़्स खाना खा कर

3458 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ الْمُقْرِئُ، قَالَ: حَدَّثَنَا

سَعِيدُ بْنُ أَبِي أَيُّوبَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو مَرْحُومٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ مُعَاذِ بْنِ أَنَسٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ أَكَلَ طَعَامًا فَقَالَ: الحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَطْعَمَنِي هَذَا وَرَزَقَنِيهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِنِّي وَلاَ قُوَّةٍ، غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ.

यह कहे "हर क़िस्म की तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है जिस ने यह खाना मुझे खिलाया और मुझे यह खाना अता किया बगैर मेरी किसी ताक़त के और बगैर मेरी किसी कुव्वत के।" तो उसके पहले गुनाहों को बख़्श दिया जाएगा।"

हसन: अबू दाऊद: 4023. इब्ने माजह:3285. सहीहुत्तर्गीब:2042. अहमद:3/439. दारमी:2693.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है और अबू मरहूम का नाम अब्दुर्रहीम बिन मरहूम है।

59 بَاب مَا يَقُولُ إِذَا سَمِعَ نَهِيقَ الحِمَارِ

59 - गधा रेंकने के वक़्त की दुआ।

3459 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ جَعْفَرِ بْنِ رَبِيعَةَ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: إِذَا سَمِعْتُمْ صِيَاحَ الدِّيَكَةِ فَاسْأَلُوا اللَّهَ مِنْ فَضْلِهِ فَإِنَّهَا رَأَتْ مَلَكًا، وَإِذَا سَمِعْتُمْ نَهِيقَ الحِمَارِ فَتَعَوَّذُوا بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهُ رَأَى شَيْطَانًا.

3459 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब तुम मुर्ग की आवाज़ सुनो तो अल्लाह से उस के फ़ज़ल का सवाल करो क्योंकि वह फ़रिश्ते को देखता है, और जब तुम गधे के रेंकने की आवाज़ सुनो तो शैताने मरदूद से अल्लाह की पनाह मांगो इसलिए कि वह शैतान को देखता है।"

बुख़ारी:3303. मुस्लिम:2729. अबू दाऊद:5102. अहमद:2/306.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।

60 بَاب مَا جَاءَ فِي فَضْلِ التَّسْبِيحِ وَالتَّكْبِيرِ وَالتَّهْلِيلِ وَالتَّحْمِيدِ

60- सुब्हान अल्लाह, अल्लाहु अकबर, ला इलाहा इलल्लाह और अल्हम्दुलिल्लाह कहने की फ़ज़ीलत।

3460 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي زِيَادٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ بَكْرٍ السَّهْمِيُّ، عَنْ حَاتِمِ بْنِ

3460 - अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया,

أَبِي صَغِيرَةَ، عَنْ أَبِي بَلْجٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَا عَلَى الأَرْضِ أَحَدٌ يَقُولُ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَلاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ، إِلاَّ كُفِّرَتْ عَنْهُ خَطَايَاهُ وَلَوْ كَانَتْ مِثْلَ زَبَدِ الْبَحْرِ.

"ज़मीन पर जो शख़्स यह कहता है: "अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं अल्लाह बहुत बड़ा है और गुनाह से बचने की ताक़त और नेकी करने की तौफ़ीक़ अल्लाह ही की मदद से है" तो उसके गुनाहों को ख़त्म कर दिया जता है अगरचे वह समन्दर की झाग के बराबर ही हों।"

हसन: अहमद: 2/158. हाकिम: 1/503. सहीहुत्तर्गीब: 1569.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। और शोबा ने भी इस हदीस को अबू बल्ज से इसी सनद के साथ ऐसे ही रिवायत किया है लेकिन वह मर्फ़ू नहीं है। नीज़ अबू बल्ज का नाम यहया बिन अबी सुलैम है उन्हें यहया बिन सुलैम भी कहा जाता है।

हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने, उन्हें इब्ने अबी अदी ने हातिम बिन अबी सगीरा से उन्हें अबू बल्ज ने अम्र बिन मैमून से बवास्ता अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) नबी करीम (ﷺ) से इसी तरह की है और हातिम की कुनियत अबू यूनुस अल-क़ुशैरी है।

हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने मुहम्मद बिन जाफ़र से बवास्ता शोबा, अबू बल्ज से इसी तरह रिवायत की हदीस बयान की है लेकिन वह मर्फ़ू नहीं है।

3461 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَرْحُومُ بْنُ عَبْدِ العَزِيزِ العَطَّارُ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو نَعَامَةَ السَّعْدِيُّ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ، عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ، قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي غَزَاةٍ، فَلَمَّا قَفَلْنَا أَشْرَفْنَا عَلَى الْمَدِينَةِ فَكَبَّرَ النَّاسُ تَكْبِيرَةً وَرَفَعُوا بِهَا أَصْوَاتَهُمْ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: إِنَّ رَبَّكُمْ لَيْسَ بِأَصَمَّ وَلاَ غَائِبٍ، هُوَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ رُءُوسِ رِحَالِكُمْ، ثُمَّ قَالَ: يَا عَبْدَ اللهِ بْنَ قَيْسٍ، أَلاَ أُعَلِّمُكَ كَنْزًا مِنْ كُنُوزِ الجَنَّةِ: لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ.

3461 - सय्यदना अबू मूसा अशअरी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ एक जंग में थे, चुनांचे जब हम लौटे हम ने मदीना को देखा, लोगों ने बलंद आवाज़ से अल्लाहु अकबर कहा, तो अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम्हारा रब बहरा और ग़ायब नहीं है। वह तो तुम्हारे और तुम्हारी सवारियों के सरों के दर्मियान है।" फिर आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ अब्दुल्लाह बिन कैस! क्या मैं तुम्हें जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना न सिखाऊँ (वह है) لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ।"

सहीह: तख़रीज के लिए देखिए हदीस नम्बर: 3374.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है, अबू उस्मान नहदी का नाम अब्दुर्रहमान बिन मुल्ल और अबू नुआमा का नाम अम्र बिन ईसा है और "वह (अल्लाह) तुम्हारे और तुम्हारी सवारियों के सरों के दर्मियान है से मुराद उसका इल्म और कुदरत है।

61- सुब्हान अल्लाह, अल्हम्दुलिल्लाह कहने से जन्नत में दरख़्त लगते हैं।

61- بَابٌ فِي أَن غِراس الجنة: سُبْحَانَ اللهِ وَالحَمْدُ لِلّهِ.

3462 - अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिस रात मुझे सैर कराई गई मेरी मुलाक़ात इब्राहीम (عليه السلام) से हुई तो उन्होंने फ़रमाया, "ऐ मुहम्मद (ﷺ)! मेरी तरफ़ से अपनी उम्मत को सलाम कहना और उन्हें बताना कि जन्नत पाकीज़ा मिट्टी वाली और मीठे पानी वाली है लेकिन वह चटियल मैदान है और उस में दरख़्त लगाने का ज़रिया सुब्हान अल्लाह, अल्हम्दुलिल्लाह, ला इलाहा इल्लल्लाह और अल्लाहु अकबर है।"

हसन: इब्ने मर्दवैह: 5/218. सहीहुत्तर्गीब:1550.

3462 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي زِيَادٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَيَّارٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الوَاحِدِ بْنُ زِيَادٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنِ القَاسِمِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَقِيتُ إِبْرَاهِيمَ لَيْلَةَ أُسْرِيَ بِي فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ، أَقْرِئْ أُمَّتَكَ مِنِّي السَّلَامَ وَأَخْبِرْهُمْ أَنَّ الجَنَّةَ طَيِّبَةُ التُّرْبَةِ عَذْبَةُ الْمَاءِ، وَأَنَّهَا قِيعَانٌ، وَأَنَّ غِرَاسَهَا سُبْحَانَ اللهِ وَالحَمْدُ لِلَّهِ وَلاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ.

वज़ाहत: इस बारे में अबू अय्यूब (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इब्ने मसऊद (رضي الله عنه) के तरीक़ से मर्वी यह हदीस हसन ग़रीब है।

3463 - मुस्अब बिन साद (رحمه الله) अपने बाप से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने पास बैठे हुए लोगों से फ़रमाया, "क्या तुम में से कोई शख़्स एक हज़ार नेकियाँ कमाने से आजिज़ है?" तो आप(ﷺ) के पास बैठे हुए लोगों में से एक सवाल करने वाले ने आप(ﷺ) से सवाल किया: हम में से कोई शख़्स एक हज़ार नेकियाँ कैसे कमा सकता है?

3463 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُوسَى الجُهَنِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي مُصْعَبُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِجُلَسَائِهِ: أَيَعْجِزُ أَحَدُكُمْ أَنْ يَكْسِبَ أَلْفَ حَسَنَةٍ؟ فَسَأَلَهُ سَائِلٌ مِنْ جُلَسَائِهِ: كَيْفَ

يَكْسِبُ أَحَدُنَا أَلْفَ حَسَنَةٍ؟ قَالَ: يُسَبِّحُ أَحَدُكُمْ مِائَةَ تَسْبِيحَةٍ تُكْتَبُ لَهُ أَلْفُ حَسَنَةٍ، وَتُحَطُّ عَنْهُ أَلْفُ سَيِّئَةٍ.

आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "कोई शख़्स एक सौ मर्तबा सुब्हान अल्लाह कहे तो उस के लिए एक हज़ार नेकियाँ लिख दी जाती हैं और उस से एक हज़ार बुराइयां मिटा दी जाती हैं।"

मुस्लिम:2698. अहमद: 1/ 174. इब्ने हिब्बान:825 हुमैदी:80.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

62 - بَابٌ فِي فَضَائِلِ سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ

62 - सुब्हान अल्लाह व बिहम्दिही की फ़ज़ीलत

3464 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ وَغَيْرُ وَاحِدٍ، قَالُوا: حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، عَنْ حَجَّاجٍ الصَّوَّافِ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، قَالَ: مَنْ قَالَ: سُبْحَانَ اللهِ العَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ، غُرِسَتْ لَهُ نَخْلَةٌ فِي الجَنَّةِ.

3464 - सय्यदना जाबिर (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिस शख़्स ने यह कहा "पाक है अल्लाह अज़मतों वाला अपनी तारीफ़ों के साथ," उसके लिए जन्नत में खुजूर का एक दरख़्त लगा दिया जाता है।"

सहीह: हाकिम: 1/501. इब्ने हिब्बान:826. अबू याला:2233. सहीहुत्तर्गीब: 1540.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है हम इसे बवास्ता अबू ज़ुबैर ही जाबिर (رضي الله عنه) से जानते हैं।

3465 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْمُؤَمَّلُ، عَنْ حَمَّادِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ قَالَ: سُبْحَانَ اللهِ العَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ غُرِسَتْ لَهُ نَخْلَةٌ فِي الجَنَّةِ.

3465 - जाबिर (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, जिस शख़्स ने ये कहा "पाक है अल्लाह अज़मतों वाला अपनी तारीफ़ों के साथ" तो उसके लिए जन्नत में खुजूर का एक दरख़्त लगा दिया जाता है।"

सहीह: देखिए हदीसे साबिक़।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

3466 - حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْمُحَارِبِيُّ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ، عَنْ سُمَيٍّ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَالَ: سُبْحَانَ اللهِ

3466 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिस ने सौ मर्तबा "पाक है अल्लाह अपनी तारीफों के साथ" कहा तो उसके गुनाह बख़्श दिए जाते हैं

وَبِحَمْدِهِ مِائَةَ مَرَّةٍ غُفِرَتْ لَهُ ذُنُوبُهُ وَإِنْ كَانَتْ مِثْلَ زَبَدِ الْبَحْرِ.

अगरचे वह समन्दर की झाग के बराबर ही हों।"

बुख़ारी:6405. मुस्लिम:2691. इब्ने माजह:3812. अहमद:2/302.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3467 - حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ عِيسَى، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْفُضَيْلِ، عَنْ عُمَارَةَ بْنِ الْقَعْقَاعِ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كَلِمَتَانِ خَفِيفَتَانِ عَلَى اللِّسَانِ، ثَقِيلَتَانِ فِي الْمِيزَانِ، حَبِيبَتَانِ إِلَى الرَّحْمَنِ، سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيمِ سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ.

3467 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "दो क़लिमे ज़बान पर हल्के फुल्के हैं (लेकिन) मीजान में इन्तिहाई वज़नी और अल्लाह तआला को बेहद महबूब हैं (और वह यह हैं) " पाक है अल्लाह अपनी खूबियों समेत, पाक है अल्लाह बहुत अज़मत वाला।"

बुख़ारी:6406. मुस्लिम:2794. इब्ने माजह:3806. अहमद:2/232.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3468 - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مُوسَى الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ سُمَيٍّ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ قَالَ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الحَمْدُ، يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ فِي يَوْمٍ مِائَةَ مَرَّةٍ، كَانَتْ لَهُ عِدْلَ عَشْرِ رِقَابٍ، وَكُتِبَتْ لَهُ مِائَةُ حَسَنَةٍ، وَمُحِيَتْ عَنْهُ مِائَةُ سَيِّئَةٍ، وَكَانَ لَهُ حِرْزًا مِنَ الشَّيْطَانِ يَوْمَهُ ذَلِكَ حَتَّى يُمْسِيَ، وَلَمْ يَأْتِ أَحَدٌ بِأَفْضَلَ مِمَّا جَاءَ بِهِ إِلاَّ أَحَدٌ عَمِلَ أَكْثَرَ مِنْ

3468 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो शख़्स एक दिन में सौ मर्तबा यह दुआ पढ़े "अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं उसकी बादशाहत है, और उसी के लिए सब तारीफ़ है वही ज़िंदा करता है और मारता है और वह हर चीज़ पर कामिल कुदरत रखता है।" उस के लिए दस गुलाम आज़ाद करने के बराबर सवाब होगा और उस के लिए सौ नेकियाँ लिखी जाती हैं, सौ गुनाह मिटा दिए जाते हैं और यह दुआ उसके लिए उस दिन शाम तक शैतान से बचाव का ज़रिया बन जाती है और उस जैसा अमल कोई नहीं लेकर आएगा, सिवाए उसके जो उस से भी ज़्यादा अमल करे।" और इसी सनद से

ذَلِكَ. وَبِهَذَا الإِسْنَادِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ قَالَ: سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ مِائَةَ مَرَّةٍ حُطَّتْ خَطَايَاهُ وَإِنْ كَانَتْ أَكْثَرَ مِنْ زَبَدِ الْبَحْرِ.

यह भी मर्वी है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया:" जिस शख़्स ने सौ मर्तबा यह पढ़ा "पाक है अल्लाह अपनी तमाम तारीफ़ों के साथ" तो उसके गुनाह मिटा दिए जाते हैं अगरचे वह समन्दर की झाग से भी ज़्यादा हों।"

बुख़ारी:3293. मुस्लिम:2691.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

63 - باب في ذكر سبحان الله وبحمده مائة مرة.

63 - सौ मर्तबा सुब्हान अल्लाह व बिहम्दिही कहने की फ़ज़ीलत का ज़िक्र।

3469 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ أَبِي الشَّوَارِبِ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ الْمُخْتَارِ، عَنْ سُهَيْلِ بْنِ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ سُمَيٍّ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ قَالَ حِينَ يُصْبِحُ وَحِينَ يُمْسِي: سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ مِائَةَ مَرَّةٍ لَمْ يَأْتِ أَحَدٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِأَفْضَلَ مِمَّا جَاءَ بِهِ إِلاَّ أَحَدٌ قَالَ مِثْلَ مَا قَالَ أَوْ زَادَ عَلَيْهِ.

3469 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिस शख़्स ने सुबह और शाम सौ मर्तबा यह दुआ पढ़ी "पाक है अल्लाह अपनी तमाम तारीफ़ों के साथ" तो क़यामत के दिन उस से अफ़ज़ल अमल कोई शख़्स नहीं लेकर आएगा सिवाए उस शख़्स के जिस ने ऐसे ही कहा होगा या इस से भी ज़्यादा।"

मुस्लिम:2692. अबू दाऊद:5091.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3470 - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ مُوسَى، قَالَ: حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ الزِّبْرِقَانِ، عَنْ مَطَرٍ الْوَرَّاقِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَاتَ يَوْمٍ لأَصْحَابِهِ: قُولُوا: سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ مِائَةَ مَرَّةٍ، مَنْ

3470 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि एक दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने सहाबा से फ़रमाया, "तुम सौ मर्तबा "पाक है अल्लाह अपनी तमाम तारीफों के साथ" कहा करो जो शख़्स एक मर्तबा इसे पढ़े उसके लिये दस नेकियाँ लिखी जाती हैं, और जो इसे दस मर्तबा

قَالَهَا مَرَّةً كُتِبَتْ لَهُ عَشْرًا، وَمَنْ قَالَهَا عَشْرًا كُتِبَتْ لَهُ مِائَةً، وَمَنْ قَالَهَا مِائَةً كُتِبَتْ لَهُ أَلْفًا، وَمَنْ زَادَ زَادَهُ اللَّهُ، وَمَنْ اسْتَغْفَرَ اللَّهَ غَفَرَ لَهُ.

कहे उसके लिए सौ, और जो सौ मर्तबा पढ़े उस के लिए हज़ार नेकियाँ लिखी जाती हैं, और जो इस से ज़्यादा मर्तबा कहे तो अल्लाह भी उसे बढ़ा देंगे और जो अल्लाह से बख़्शिश माँगता है अल्लाह उसे बख़्श देता है।"

ज़ईफ़ जिद्दा: निसाई: 160. तबरानी फ़ी मुस्नदिश्शामिय्यीन:2418. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:4067.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

64 - بَابٌ فِي ثَوَابِ التَّسْبِيحِ وَالتَّحْمِيدِ وَالتَّهْلِيلِ وَالتَّكْبِيرِ.

64 - सुब्हान अल्लाह, अल्हम्दुलिल्लाह, ला इलाहा इल्लल्लाह और अल्लाहु अकबर कहने की फ़ज़ीलत।

3471 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ وَزِيرٍ الوَاسِطِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو سُفْيَانَ الحِمْيَرِيُّ، عَنِ الضَّحَّاكِ بْنِ حُمْرَةَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ سَبَّحَ اللَّهَ مِائَةً بِالغَدَاةِ وَمِائَةً بِالعَشِيِّ كَانَ كَمَنْ حَجَّ مِائَةَ حَجَّةٍ، وَمَنْ حَمِدَ اللَّهَ مِائَةً بِالغَدَاةِ وَمِائَةً بِالعَشِيِّ كَانَ كَمَنْ حَمَلَ عَلَى مِائَةِ فَرَسٍ فِي سَبِيلِ اللهِ، أَوْ قَالَ غَزَا مِائَةَ غَزْوَةٍ، وَمَنْ هَلَّلَ اللَّهَ مِائَةً بِالغَدَاةِ وَمِائَةً بِالعَشِيِّ كَانَ كَمَنْ أَعْتَقَ مِائَةَ رَقَبَةٍ مِنْ وَلَدِ إِسْمَاعِيلَ، وَمَنْ كَبَّرَ اللَّهَ مِائَةً بِالغَدَاةِ وَمِائَةً بِالعَشِيِّ لَمْ يَأْتِ فِي ذَلِكَ اليَوْمِ أَحَدٌ بِأَكْثَرَ مِمَّا

3471 - अम्र बिन शोऐब अपने बाप से वह अपने दादा (अब्दुल्लाह बिन अम्र رضي الله عنه) से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिस ने सुबह के वक़्त एक सौ मर्तबा सुब्हान अल्लाह कहा और शाम के वक़्त भी सौ मर्तबा तो वह उस शख़्स की तरह होगा जिसने सौ मर्तबा हज किया, जिस ने सौ मर्तबा सुबह और शाम को अल्हम्दुलिल्लाह कहा तो वह उस शख़्स की तरह है जिस ने जिहाद में सौ घोड़े दिए।" या यह फ़रमाया: ''कि जिस ने सौ गज्वात किए, जो शख़्स सौ मर्तबा सुबह और शाम को ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़े तो वह उस शख़्स की तरह है जिसने औलादे इस्माईल से सौ गुलाम आज़ाद किए और जिसने सौ दफा सुबह और शाम को अल्लाहु अकबर कहा तो उस दिन उस शख़्स से ज़्यादा अमल कोई नहीं

أَتَى إِلاَّ مَنْ قَالَ مِثْلَ مَا قَالَ أَوْ زَادَ عَلَى مَا قَالَ.

लेकर आएगा सिवाए उस शख़्स के जिस ने ऐसा ही कहा या इससे भी ज़्यादा दफ़ा पढ़ा।"

मुन्कर: निसाई:821. तबरानी: 516. ज़ईफुत्तर्गीब:387.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

3472 - حَدَّثَنَا الحُسَيْنُ بْنُ الأَسْوَدِ العِجْلِيُّ البَغْدَادِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، عَنِ الحَسَنِ بْنِ صَالِحٍ، عَنْ أَبِي بِشْرٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ: تَسْبِيحَةٌ فِي رَمَضَانَ أَفْضَلُ مِنْ أَلْفِ تَسْبِيحَةٍ فِي غَيْرِهِ.

3472 - ज़ोहरी फ़रमाते हैं: रमज़ान में एक मर्तबा सुब्हान अल्लाह कहना ग़ैर रमज़ान में एक हज़ार दफ़ा सुब्हान अल्लाह कहने से अफ़ज़ल है।

ज़ईफुल इस्नाद मकतूअ़ इब्ने अबी शैबा: 10/432.

65 - بَابٌ فِي ثَوَابِ كَلِمَةِ التَّوْحِيدِ الَّتِي فِيهَا إِلَهًا وَاحِدًا أَحَدًا صَمَدًا.

65 - जिस क़लिमे तौहीद में वाहिद, अहद, समद के अल्फ़ाज़ हों उस की फ़ज़ीलत।

3473 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ الخَلِيلِ بْنِ مُرَّةَ، عَنْ أَزْهَرَ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنْ تَمِيمٍ الدَّارِيِّ، عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: مَنْ قَالَ: أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، إِلَهًا وَاحِدًا أَحَدًا صَمَدًا، لَمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَلاَ وَلَدًا، وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ. عَشْرَ مَرَّاتٍ كَتَبَ اللَّهُ لَهُ أَرْبَعِينَ أَلْفَ أَلْفِ حَسَنَةٍ.

3473 - सय्यदना तमीम दारी (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिस शख़्स ने दस मर्तबा यह कहा "अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, वह अकेला ही माबूद है, बेनियाज़ है उसकी बीवी है न औलाद और न ही उसका कोई हमसर है" तो अल्लाह तआला उसके लिए चार करोड़ नेकियाँ लिख देते हैं।"

ज़ईफ़: अहमद: 4/103. तबरानी:1278. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:3613.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है हम इसे सिर्फ इसी सनद से जानते हैं और खलील बिन मुर्रा मोहद्दिसीन के नज़दीक क़वी नहीं है। मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी फ़रमाते हैं: यह मुन्करुल हदीस है।

3474 - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مَعْبَدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ

3474 - सय्यदना अबू ज़र (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया,

بْنُ عَمْرٍو الرَّقِّيُّ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَبِي أُنَيْسَةَ، عَنْ شَهْرِ بْنِ حَوْشَبٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ غَنْمٍ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ قَالَ فِي دُبُرِ صَلاَةِ الفَجْرِ وَهُوَ ثَانٍ رِجْلَيْهِ قَبْلَ أَنْ يَتَكَلَّمَ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ عَشْرَ مَرَّاتٍ، كُتِبَتْ لَهُ عَشْرُ حَسَنَاتٍ، وَمُحِيَ عَنْهُ عَشْرُ سَيِّئَاتٍ، وَرُفِعَ لَهُ عَشْرُ دَرَجَاتٍ، وَكَانَ يَوْمَهُ ذَلِكَ كُلَّهُ فِي حِرْزٍ مِنْ كُلِّ مَكْرُوهٍ، وَحُرِسَ مِنَ الشَّيْطَانِ، وَلَمْ يَنْبَغِ لِذَنْبٍ أَنْ يُدْرِكَهُ فِي ذَلِكَ الْيَوْمِ إِلاَّ الشِّرْكَ بِاللَّهِ.

"जो शख़्स फज्र की नमाज़ के बाद बात करने से पहले दो ज़ानूँ बैठे हुए दस मर्तबा यह कलिमात कहे " अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, उसकी बादशाहत है, उसी के लिए हर क़िस्म की तारीफ़ है, वही ज़िंदा करता और मारता है और वह हर चीज़ पर कामिल कुदरत रखने वाला है" तो उस के लिए दस नेकियाँ लिख दी जाती हैं, उसकी दस बुराइयां मिटा दी जाती हैं और उसके दर्जात बलंद कर दिए जाते हैं और उसका यह सारा दीन हर नापसंदीदा चीज़ से महफ़ूज़ और शैतान से बचाव में हो जाता है और शिर्क के अलावा किसी भी गुनाह के लिए लायक़ नहीं है कि उस दिन उसे पहुंचे।"

ज़ईफ़: निसाई:127. अब्दुर्रज्जाक़:3192. अहमद: 4/227. बे सनदे मुर्सल। सहीहुत्तर्गीब: 472.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

66 بَابُ جَامِعِ الدَّعَوَاتِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

66 - रसूलुल्लाह (ﷺ) से मर्वी जामेअ दुआएं।

3475 - حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ عِمْرَانَ الثَّعْلَبِيُّ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ حُبَابٍ، عَنْ مَالِكِ بْنِ مِغْوَلٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ بُرَيْدَةَ الأَسْلَمِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: سَمِعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلاً يَدْعُو وَهُوَ يَقُولُ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ بِأَنِّي أَشْهَدُ أَنَّكَ أَنْتَ اللَّهُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ

3475 - अब्दुल्लाह बिन बुरैदा असलमी अपने बाप से रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने एक आदमी को सुना जो दुआ करते हुए कह रहा था: **"ऐ अल्लाह! बिला शुब्हा मैं तुझ से इसलिए सवाल कर रहा हूँ कि मैं इस बात की गवाही देता हूँ कि तू ही अल्लाह है, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं तू यक्ता है, ऐसा बे नियाज़ है जिसकी कोई औलाद नहीं और न वह किसी**

أَنْتَ الأَحَدُ الصَّمَدُ، الَّذِي لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ، قَالَ: فَقَالَ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَقَدْ سَأَلَ اللَّهَ بِاسْمِهِ الأَعْظَمِ الَّذِي إِذَا دُعِيَ بِهِ أَجَابَ، وَإِذَا سُئِلَ بِهِ أَعْطَى

की औलाद है और कोई भी उसका हमपल्ला नहीं, तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "उस ज़ात की क़सम! जिस के हाथ में मेरी जान है यक़ीनन उस ने अल्लाह तआला से उस के उस इस्मे आज़म के साथ सवाल किया है जिस के साथ उसे जब पुकारा जाता है तो वह जवाब देता है और जब उससे माँगा जाता है तो वह अता करता है।"

सहीह: अबू दाऊद:1493. इब्ने माजह:3857. अहमद:5/493.

ज़ैद कहते हैं! फिर दो साल के बाद मैंने ज़ुहैर बिन मुआविया से इस बात का तज़किरा किया, तो उन्होंने कहा: मुझे अबू इस्हाक़ ने मालिक बिन मिग्वल से बयान की थी, ज़ैद कहते हैं फिर मैंने उसका तज़किरा सुफ़ियान से किया तो उन्होंने मुझे मालिक की तरफ़ से बयान किया।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। और शरीक ने भी इस हदीस को अबू इस्हाक़ से बवास्ता इब्ने बुरैदा उन के बाप से रिवायत किया है और हक़ीक़त यह है कि अबू इस्हाक़ हम्दानी ने यह हदीस मालिक बिन मिग्वल से ली है, उन्होंने तद्लीस की है और शरीक ने यह हदीस अबू इस्हाक़ से रिवायत की है।

67 - بَابٌ فِي إِيجَابِ الدعاء بتقديم الحمد والثناء والصلاة علي النبي صلي الله عليه وسلم قبله.

67 - दुआ में सब से पहले अल्लाह की हम्दो सना, फिर नबी (ﷺ) पर दरूद भेजा जाए तो वह क़ुबूल होती है।

3476 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا رِشْدِينُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ أَبِي هَانِئٍ الخَوْلَانِيِّ، عَنْ أَبِي عَلِيٍّ الجَنْبِيِّ، عَنْ فَضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ، قَالَ: بَيْنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَاعِدٌ إِذْ دَخَلَ رَجُلٌ فَصَلَّى فَقَالَ: اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي

3476 - सय्यदना फ़ज़ाला बिन उबैद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ फ़रमा थे कि अचानक एक शख़्स मस्जिद में दाख़िल हुआ फिर उस ने नमाज़ पढ़ी तो कहा: ऐ अल्लाह मुझे बख़्श और मुझ पर रहम फ़रमा, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ नमाज़ पढ़ने वाले तुम ने जल्दी की है जब तुम नमाज़

وَارْحَمْنِي، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: عَجِلْتَ أَيُّهَا الْمُصَلِّي، إِذَا صَلَّيْتَ فَقَعَدْتَ فَاحْمَدِ اللَّهَ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ، وَصَلِّ عَلَيَّ ثُمَّ ادْعُهُ. قَالَ: ثُمَّ صَلَّى رَجُلٌ آخَرُ بَعْدَ ذَلِكَ فَحَمِدَ اللَّهَ وَصَلَّى عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَيُّهَا الْمُصَلِّي ادْعُ تُجَبْ.

पढ़ो, फिर (तशह्हुद के लिए) बैठो तो अल्लाह की ऐसे तारीफ़ करो जिसके वह लायक़ है और मुझ पर दरूद पढ़ो फिर तुम दुआ करो।" रावी कहते हैं: उसके बाद फिर एक और आदमी ने नमाज़ पढ़ी तो उस ने अल्लाह की तारीफ़ की और नबी (ﷺ) पर दरूद पढ़ा तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ नमाज़ पढ़ने वाले! दुआ कर कुबूल की जाएगी।"

सहीह: अबू दाऊद: 1481. निसाई:1284. अहमद:6/ 18.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है। इसे हैवा बिन शुरैह ने भी अबू हानी खौलानी से रिवायत किया है और अबू हानी खौलानी का नाम हुमैद बिन हानी और अबू अली जंबी का नाम अम्र बिन मालिक है।

3477 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْمُقْرِئُ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَيْوَةُ بْنُ شُرَيْحٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو هَانِئٍ، أَنَّ عَمْرَو بْنَ مَالِكٍ الْجَنْبِيَّ، أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَمِعَ فَضَالَةَ بْنَ عُبَيْدٍ، يَقُولُ: سَمِعَ النَّبِيُّ ﷺ رَجُلًا يَدْعُو فِي صَلَاتِهِ فَلَمْ يُصَلِّ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: عَجِلَ هَذَا، ثُمَّ دَعَاهُ فَقَالَ لَهُ أَوْ لِغَيْرِهِ: إِذَا صَلَّى أَحَدُكُمْ فَلْيَبْدَأْ بِتَحْمِيدِ اللهِ وَالثَّنَاءِ عَلَيْهِ، ثُمَّ لْيُصَلِّ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ، ثُمَّ لْيَدْعُ بَعْدُ بِمَا شَاءَ.

3477 - सय्यदना फज़ाला बिन उबैद (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) ने एक आदमी को सुना जो नमाज़ में दुआ कर रहा था लेकिन उस ने नबी (ﷺ) पर दरूद नहीं पढ़ा तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "उस ने जल्दी की है फिर आप(ﷺ) ने उसे बुला कर उस से या किसी और से कहा तुम में से कोई शख़्स जब नमाज़ पढ़े तो उसे चाहिए कि अल्लाह की हम्दो सना से शुरू करे फिर नबी (ﷺ) पर दरूद पढ़े फिर उसके बाद जो चाहे दुआ करे।"

सहीह: तख़रीज के लिए पिछली हदीस देखिए।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3478 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ خَشْرَمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ أَبِي زِيَادٍ

3478 - सय्यदना अस्मा बिन्ते यज़ीद (رضي الله عنها) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया,

الْقَدَّاحِ، عَنْ شَهْرِ بْنِ حَوْشَبٍ، عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ يَزِيدَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: اسْمُ اللهِ الأَعْظَمُ فِي هَاتَيْنِ الآيَتَيْنِ {وَإِلَهُكُمْ إِلَهٌ وَاحِدٌ لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ} وَفَاتِحَةِ آلِ عِمْرَانَ {الم اللَّهُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ}.

"इस्मे आज़म इन दो आयतों में है "और वह तुम्हारा माबूद एक ही माबूद है, उस रहमान व रहीम के सिवा कोई माबूद नहीं" (अल-बक़रा: 163) और सूरह आले इमरान के शुरू में "अलिफ़ लाम मीम, उस ज़िंदा रहने वाले और क़ायम रहने वाले के सिवा कोई माबूद नहीं।" (आले इमरान: 1- 2)

हसन: अबू दाऊद:1496. इब्ने माजह:3855. सहीहुत्तर्गीब:1642. अहमद:6/461.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3479 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُعَاوِيَةَ الْجُمَحِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا صَالِحٌ الْمُرِّيُّ، عَنْ هِشَامِ بْنِ حَسَّانَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ادْعُوا اللَّهَ وَأَنْتُمْ مُوقِنُونَ بِالإِجَابَةِ، وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ لاَ يَسْتَجِيبُ دُعَاءً مِنْ قَلْبٍ غَافِلٍ لاَهٍ.

3479 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (صلى الله عليه وسلم) ने फ़रमाया, "अल्लाह से इस तरह दुआ करो कि तुम्हें कुबूलियत का यक़ीन हो और जान लो कि अल्लाह तआला गाफ़िल, लापरवाह दिल से (निकली हुई) दुआ कुबूल नहीं करता।

हसन: हाकिम: 1/493. तबरानी:5105. सहीहुत्तर्गीब:1653.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। हम इसे सिर्फ़ इसी सनद से ही मर्फ़ू जानते हैं।

68 - بَابٌ دعاء: اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي جَسَدِي.

68 - दुआ। ऐ अल्लाह मेरे जिस्म में आफ़ियत दे।

3480 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ هِشَامٍ، عَنْ حَمْزَةَ الزَّيَّاتِ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ أَبِي ثَابِتٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَقُولُ: اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي

3480 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (صلى الله عليه وسلم) दुआ किया करते थे "ऐ अल्लाह मुझे मेरे जिस्म में आफ़ियत दे, मुझे मेरी निगाह में आफ़ियत दे और मुझ से मेरा वारिस बना दे, अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं जो बड़ा बुर्दबार बुज़ुर्गी वाला है, पाक है अल्लाह

جَسَدِي، وَعَافِنِي فِي بَصَرِي، وَاجْعَلْهُ الوَارِثَ مِنِّي، لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ الحَلِيمُ الكَرِيمُ، سُبْحَانَ اللهِ رَبِّ العَرْشِ العَظِيمِ، الحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ العَالَمِينَ.

अर्शे अज़ीम का रब, और हर क़िस्म की तारीफ़ अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए है।"
ज़ईफ़ुल इस्नाद:हाकिम: 1/530. अबू याला:अस-सिलसिला अज़-ज़ईफ़ा:2917.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है मैंने मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी से सुना वह फ़रमा रहे थे कि हबीब बिन अबी साबित ने उर्वा बिन जुबैर से कुछ भी नहीं सुना और अल्लाह ही खूब जानता है।

69 - بَابٌ الدعاء الذي علمه صلي الله عليه وسلم فاطمة حين سالته الخادم.

69 - वह दुआ जो नबी (ﷺ) ने फातिमा (رضي الله عنها) को सिखाई थी जब उन्होंने आप(ﷺ) से ख़ादिम माँगा था।

3481 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: جَاءَتْ فَاطِمَةُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَسْأَلُهُ خَادِمًا، فَقَالَ لَهَا: قُولِي: اللَّهُمَّ رَبَّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ، وَرَبَّ العَرْشِ العَظِيمِ، رَبَّنَا وَرَبَّ كُلِّ شَيْءٍ مُنْزِلَ التَّوْرَاةِ وَالإِنْجِيلِ وَالقُرْآنِ، فَالِقَ الحَبِّ وَالنَّوَى، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْءٍ أَنْتَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهِ، أَنْتَ الأَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَكَ شَيْءٌ، وَأَنْتَ الآخِرُ فَلَيْسَ بَعْدَكَ شَيْءٌ، وَأَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَكَ شَيْءٌ، وَأَنْتَ البَاطِنُ فَلَيْسَ دُونَكَ شَيْءٌ، اقْضِ عَنِّي الدَّيْنَ، وَأَغْنِنِي مِنَ الفَقْرِ.

3481 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि सय्यदा फातिमा (رضي الله عنها) ने नबी (ﷺ) के पास आकर आप(ﷺ) से ख़ादिम माँगा तो आप (ﷺ) ने उन से फ़रमाया, "तुम यह दुआ पढ़ा करो "ऐ अल्लाह! सातों आसमानों और अर्शे अजीम के रब! ऐ हमारे और हर चीज़ के परवरदिगार! तौरात, इंजील और कुरआन को नाज़िल करने वाले, दाने और गुठली को फाड़ने वाले! मैं तुझ से हर उस चीज़ के शर से पनाह मांगती हूँ जिसकी पेशानी तू पकड़े हुए है, तू ही अव्वल है पस तुझ से पहले कोई चीज़ नहीं, और तू ही आखिर है पस तेरे बाद कोई नहीं, और तू ही ग़ालिब है पस तेरे ऊपर कोई चीज़ नहीं, और तू ही बातिन है पस तुझ से पोशीदा कोई चीज़ नहीं है, मुझ से मेरा क़र्ज़ अदा कर दे और मुझे फ़क्र से निकाल कर गनी बना दे।" (सहीह: तख़रीज के लिए देखिए हदीस 3400.)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रहि.) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है और आमश के बअ़ज़ शागिर्दों ने भी आमश से इसी तरह रिवायत की है। जबकि बअ़ज़ ने बवास्ता आमश, अबू सालेह से मुर्सल रिवायत की है इसमें अबू हुरैरा (रज़ि.) का ज़िक्र नहीं है।

70 - दुआ। ऐ अल्लाह मैं ऐसे दिल से तेरी पनाह माँगता हूँ जो डरता न हो।

70- بَابٌ دعاء: اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ قَلْبٍ لاَ يَخْشَعُ.

3482 - अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) यह दुआ पढ़ा करते थे "ऐ अल्लाह मैं तुझ से पनाह माँगता हूँ ऐसे दिल से जो तुझ से डरता न हो, ऐसी दुआ से जो सुनी न जाए, ऐसे नफ़्स से जो सैर न होता हो, और ऐसे इल्म से जो नफ़ा न दे, मैं इन चार चीजों से तेरी पनाह चाहता हूँ।"

सहीह: निसाई:5442. सहीहुत्तर्गीब:1712. अहमद:2/167. हाकिम:1/534. बतरीक़े आख़र

3482 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ عَيَّاشٍ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الحَارِثِ، عَنْ زُهَيْرِ بْنِ الأَقْمَرِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَقُولُ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ قَلْبٍ لاَ يَخْشَعُ، وَمِنْ دُعَاءٍ لاَ يُسْمَعُ، وَمِنْ نَفْسٍ لاَ تَشْبَعُ، وَمِنْ عِلْمٍ لاَ يَنْفَعُ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ هَؤُلاَءِ الأَرْبَعِ.

वज़ाहत: इस बारे में जाबिर, अबू हुरैरा और इब्ने मसऊद (रज़ि.) से भी हदीस मर्वी है। नीज़ अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) से मर्वी यह हदीस इस तरीक़ से हसन सहीह ग़रीब है।

71 - दुआ: ऐ अल्लाह! मुझे मेरा दीन सिखा दे" की तालीम का किस्सा।

71- بَابٌ قصة تعليم دعاء: اللَّهُمَّ أَلْهِمْنِي رُشْدِي.

3483 - सय्यदना इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने मेरे बाप से फ़रमाया, "ऐ हुसैन! आज तुम कितने माबूदों की इबादत करते हो?" मेरे बाप ने कहा: सात की, छ ज़मीन में है एक आसमान में है। आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम खौफ़ और उम्मीद किस से वाबस्ता करते हो?" कहा: उस

3483 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنْ شَبِيبِ بْنِ شَيْبَةَ، عَنِ الحَسَنِ البَصْرِيِّ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ، قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لأَبِي: يَا حُصَيْنُ كَمْ تَعْبُدُ اليَوْمَ إِلَهًا؟ قَالَ أَبِي: سَبْعَةً سِتَّةً فِي الأَرْضِ وَوَاحِدًا فِي السَّمَاءِ. قَالَ: فَأَيُّهُمْ تَعُدُّ

لِرَغْبَتِكَ وَرَهْبَتِكَ؟ قَالَ: الَّذِي فِي السَّمَاءِ. قَالَ: يَا حُصَيْنُ أَمَا إِنَّكَ لَوْ أَسْلَمْتَ عَلَّمْتُكَ كَلِمَتَيْنِ تَنْفَعَانِكَ. قَالَ: فَلَمَّا أَسْلَمَ حُصَيْنٌ قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ عَلِّمْنِيَ الكَلِمَتَيْنِ اللَّتَيْنِ وَعَدْتَنِي، فَقَالَ: قُلْ: اللَّهُمَّ أَلْهِمْنِي رُشْدِي، وَأَعِذْنِي مِنْ شَرِّ نَفْسِي.

से जो आस्मान में है, आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ हुसैन! अगर तुम मुसलमान हो जाओ तो मैं तुम्हें दो कलिमे सिखाऊँ जो तुझे नफ़ा देंगे।" रावी कहते हैं: फिर हुसैन ने इस्लाम कुबूल कर लिया तो कहने लगे: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! आप मुझे वह दो क़लिमे सिखाएं जिनका आप(ﷺ) ने मुझ से वादा किया था, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम कहा करो "ऐ अल्लाह मुझे मेरा दीन समझा दे और मुझे मेरे नफ़्स के शर से पनाह दे।"

ज़ईफ़: तबरानी: 18/396. हिदायतुर्रूवात:2410.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है नीज़ यह हदीस एक और सनद से भी सय्यदना इमरान बिन हुसैन (رضي الله عنه) से मर्वी है।

72 - بَابٌ دعاء: اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الهَمِّ وَالحَزَنِ.

72 - दुआ: ऐ अल्लाह मैं गम और परेशानी से तेरी पनाह में आता हूँ।

3484 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ الْعَقَدِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُصْعَبٍ الْمَدَنِيُّ، عَنْ عَمْرِو بْنِ أَبِي عَمْرٍو، مَوْلَى الْمُطَّلِبِ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: كَثِيرًا مَا كُنْتُ أَسْمَعُ النَّبِيَّ ﷺ يَدْعُو بِهَؤُلَاءِ الكَلِمَاتِ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الهَمِّ وَالحَزَنِ وَالعَجْزِ وَالكَسَلِ وَالبُخْلِ وَضَلَعِ الدَّيْنِ وَقَهْرِ الرِّجَالِ.

3484 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि मैं अक्सर औकात सुना करता था कि नबी (ﷺ) इन कलिमात के साथ दुआ करते थे "ऐ अल्लाह! यक़ीनन मैं तेरी पनाह में आता हूँ परेशानी और गम से, आजिज़ होने और काहिली से, बुख्ल और क़र्ज़ के बोझ से और लोगों के तसल्लुत से।"

बुख़ारी:6369. अबू दाऊद:1541. निसाई:5449. अहमद:3/122.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस अम्र बिन अबी अम्र के तरीक़ से हसन ग़रीब है।

3485 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ حُمَيْدٍ، عَنْ أَنَسٍ،

3485 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) दुआ करते हुए

عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، كَانَ يَدْعُو يَقُولُ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَالْهَرَمِ وَالْجُبْنِ وَالْبُخْلِ، وَفِتْنَةِ الْمَسِيحِ، وَعَذَابِ الْقَبْرِ.

कहा करते थे: "ऐ अल्लाह! यक़ीनन मैं काहिली, बुढ़ापे, बुजदिली, बुख़्ल, मसीह दज्जाल के फ़ित्ने और अज़ाबे क़ब्र से तेरी पनाह में आता हूँ।"

बुख़ारी:4707. मुस्लिम:2706. अबू दाऊद:1540. निसाई:5457.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

73 بَابُ مَا جَاءَ فِي عَقْدِ التَّسْبِيحِ بِالْيَدِ

73 - हाथों की उँगलियों पर तस्बीहात गिनना।

3486 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، قَالَ: حَدَّثَنَا عَثَّامُ بْنُ عَلِيٍّ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ السَّائِبِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَعْقِدُ التَّسْبِيحَ بِيَدِهِ.

3486 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैंने नबी (ﷺ) को अपने हाथ पर तस्बीहत गिनते देखा।

सहीह: तख़रीज के लिये देखें हदीस नं.3410

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: आमश के ज़रिए अता बिन साइब से मर्वी यह हदीस इस सनद से हसन ग़रीब है। नीज़ शोबा और सौरी ने अता बिन साइब से इस हदीस को तवालत के साथ रिवायत किया है और इस बारे में सय्यदा उसैरा बिन्ते यासिर भी नबी (ﷺ) से रिवायत करती हैं वह बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ औरतों की जमाअत! (इन तस्बीहात को) उँगलियों के पोरों पर गिना करो, क्योंकि इन्हें बुला कर इन से सवाल किया जाएगा।"

3487 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَهْلُ بْنُ يُوسُفَ، قَالَ: حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ، عَنْ ثَابِتٍ الْبُنَانِيِّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَادَ رَجُلاً قَدْ جُهِدَ حَتَّى صَارَ مِثْلَ الْفَرْخِ فَقَالَ لَهُ: أَمَا كُنْتَ تَدْعُو؟ أَمَا كُنْتَ تَسْأَلُ رَبَّكَ الْعَافِيَةَ؟ قَالَ: كُنْتُ أَقُولُ: اللَّهُمَّ مَا

3487 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने एक आदमी की इयादत की जो बहुत बीमार था यहाँ तक कि वह एक चिड़िया के बच्चे की तरह बन चुका था, चुनांचे आप(ﷺ) ने उस से फ़रमाया, "क्या तुम ने दुआ नहीं की? क्या तुम ने अपने रब से आफ़ियत का सवाल नहीं किया?" उस

كُنْتَ مُعَاقِبِي بِهِ فِي الآخِرَةِ فَعَجِّلْهُ لِي فِي الدُّنْيَا، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: سُبْحَانَ اللهِ، إِنَّكَ لاَ تُطِيقُهُ أَوْ لاَ تَسْتَطِيعُهُ، أَفَلاَ كُنْتَ تَقُولُ: اللَّهُمَّ آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً، وَفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً، وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ.

ने कहा: मैं कहा करता हूँ: ऐ अल्लाह! जो सज़ा तू आख़िरत में मुझे देने वाला है वह मुझे दुनिया में ही दे दे तो नबी (ﷺ) ने तअज्जुब से फ़रमाया, "सुब्हान अल्लाह! तुम उसकी ताक़त नहीं रखते, तुम ने ऐसे क्यों नहीं कहा: " ऐ अल्लाह! हमें दुनिया में भलाई अता कर और आख़िरत में भी भलाई देना और हमें जहन्नम के अज़ाब से बचा।"

मुस्लिम:2688. अहमद:3/ 107. इब्ने हिब्बान:936.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है और कई तुरूक़ से बवास्ता अनस (رضي الله عنه), नबी (ﷺ) से मर्वी है।

3488 - حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ عَنْ هِشَامِ بْنِ حَسَّانَ، عَنِ الْحَسَنِ فِي قَوْلِهِ: {رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً}، قَالَ: فِي الدُّنْيَا الْعِلْمُ وَالْعِبَادَةُ، وَفِي الآخِرَةِ الْجَنَّةُ (1).

3488 - हसन बसरी (رحمه الله) अल्लाह तआला के फ़रमान "ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में भलाई अता कर और आख़िरत में भी भलाई दे" के बारे में फ़रमाते हैं: दुनिया में इल्म और इबादत और आख़िरत में जन्नत मुराद है।

हसन लिग़ैरिही:इब्ने अबी शैबा:13/ 529. तबरी:2/ 300.

74 - بَابُ دعاء: اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الهُدَى وَالتُّقَى وَالعَفَافَ وَالغِنَى.

74 - दुआ: ऐ अल्लाह! मैं तुझ से हिदायत, तक़्वा पाक दामनी और ग़िना का सवाल करता हूँ।

3489 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا الأَحْوَصِ، يُحَدِّثُ عَنْ عَبْدِ اللهِ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَدْعُو: اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الهُدَى وَالتُّقَى وَالعَفَافَ وَالغِنَى.

3489 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) यह दुआ किया करते थे: "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से हिदायत, तक़्वा, पाक दामनी और (तवंगरी) ग़िना का सवाल करता हूँ।"

मुस्लिम:2721. इब्ने माजह:3832. अहमद:1/ 389. इब्ने हिब्बान:900.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

75-दाऊद (عليه السلام) की दुआ: ऐ अल्लाह मैं तुझ से तेरी मोहब्बत का सवाल करता हूँ

75 بَابُ دُعَاءِ اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ حُبَّكَ، وَحُبَّ مَنْ يُحِبُّكَ

3490 - अबू दर्दा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "दाऊद (عليه السلام) यह दुआ किया करते थे: ऐ अल्लाह मैं तुझ से तेरी मोहब्बत और तुझ से मोहब्बत करने वाले की मोहब्बत का सवाल करता हूँ और ऐसे अमल का सवाल करता हूँ जो मुझे तेरी मोहब्बत तक पहुंचा दे, ऐ अल्लाह! तू अपनी मोहब्बत मुझे मेरे नफ़्स, मेरे अहल और ठंडे पानी से भी ज़्यादा महबूब बना दे" रावी कहते हैं: कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब दाऊद (عليه السلام) का तज़किरा करते तो आप(ﷺ) बयान किया करते थे कि " वह बहुत ज़्यादा इबादत गुज़ार थे।"

ज़ईफ़: इल्ला कौलूहु फी दाऊद: (كان اعبد البشر) हाकिम: 2/433. अस-सिलसिला अस-सहीहा:707.

3490 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سَعْدٍ الأَنْصَارِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ رَبِيعَةَ الدِّمَشْقِيِّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَائِذُ اللهِ أَبُو إِدْرِيسَ الخَوْلاَنِيُّ، عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كَانَ مِنْ دُعَاءِ دَاوُدَ يَقُولُ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ حُبَّكَ، وَحُبَّ مَنْ يُحِبُّكَ، وَالعَمَلَ الَّذِي يُبَلِّغُنِي حُبَّكَ، اللَّهُمَّ اجْعَلْ حُبَّكَ أَحَبَّ إِلَيَّ مِنْ نَفْسِي وَأَهْلِي، وَمِنَ الْمَاءِ البَارِدِ قَالَ: وَكَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا ذَكَرَ دَاوُدَ يُحَدِّثُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ أَعْبَدَ البَشَرِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

76 - दुआ: ऐ अल्लाह! मुझे अपनी मोहब्बत अता फ़रमा, और उस शख़्स की मोहब्बत कि जिसकी मोहब्बत तेरे नज़दीक मुझे नफ़ा बख़्शे।

76- بَابٌ دعاء: اللَّهُمَّ ارْزُقْنِي حُبَّكَ وَحُبَّ مَنْ يَنْفَعُنِي حُبُّهُ عِنْدَكَ.

3491 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन यज़ीद खतमी अंसारी (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपनी दुआ में कहा करते थे "ऐ अल्लाह! मुझे अपनी मोहब्बत अता फ़रमा

3491 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ حَمَّادِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي جَعْفَرٍ الخَطْمِيِّ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ كَعْبٍ القُرَظِيِّ،

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ يَزِيدَ الخَطْمِيِّ الأَنْصَارِيِّ، عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ فِي دُعَائِهِ: اللَّهُمَّ ارْزُقْنِي حُبَّكَ وَحُبَّ مَنْ يَنْفَعُنِي حُبُّهُ عِنْدَكَ، اللَّهُمَّ مَا رَزَقْتَنِي مِمَّا أُحِبُّ فَاجْعَلْهُ قُوَّةً لِي فِيمَا تُحِبُّ، اللَّهُمَّ وَمَا زَوَيْتَ عَنِّي مِمَّا أُحِبُّ فَاجْعَلْهُ فَرَاغًا لِي فِيمَا تُحِبُّ.

और उस शख़्स की मोहब्बत जिसकी मोहब्बत तेरे पास मुझे नफ़ा दे सके, ऐ अल्लाह! तूने जो चीज़ मुझे अता की है जिसे मैं पसंद करता हूँ, तू उसे मेरे लिए इस चीज़ में कुव्वत बना दे जिसे तू पसंद करता है ऐ अल्लाह! तूने मेरी पसंद की जो चीज़ें मुझ से रोकी हैं उसे मेरे लिए उस काम में फ़रागत बना दे जिसे तू पसंद करता है।"

ज़ईफ़: इब्नुल असीर फ़ी उस्दिल गाबा:3/416. हिदायतुर्रूवात: 2425.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है, और अबू जाफ़र हतमी का नाम उमैर बिन यज़ीद बिन खुमाशा है।

77- بَابٌ دعاء: اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ سَمْعِي، وَمِنْ شَرِّ بَصَرِي.

77 - दुआ: ऐ अल्लाह! मैं तुझ से अपने कानों और आँखों के शर से पनाह माँगता हूँ।

3492 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ الزُّبَيْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَعْدُ بْنُ أَوْسٍ، عَنْ بِلَالِ بْنِ يَحْيَى العَبْسِيِّ، عَنْ شُتَيْرِ بْنِ شَكَلٍ، عَنْ أَبِيهِ شَكَلِ بْنِ حُمَيْدٍ، قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ عَلِّمْنِي تَعَوُّذًا أَتَعَوَّذُ بِهِ. قَالَ: فَأَخَذَ بِكَفِّي فَقَالَ: قُلْ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ سَمْعِي، وَمِنْ شَرِّ بَصَرِي، وَمِنْ شَرِّ لِسَانِي، وَمِنْ شَرِّ قَلْبِي، وَمِنْ شَرِّ مَنِيِّي يَعْنِي فَرْجَهُ.

3492 - शकल बिन हुमैद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि मैंने नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मुझे कोई तावीज़ बताइए जिसके साथ मैं पनाह मांग सकूं, तो आप(ﷺ) ने मेरा हाथ पकड़ कर फ़रमाया, "तुम कहो! ऐ अल्लाह! मैं तुझ से अपने कान, अपनी आँख, अपनी ज़बान, अपने दिल और अपनी मनी "यानी शर्मगाह" के शर से पनाह माँगता हूँ।"

सहीह: अबू दाऊद:1551. निसाई: 5444.अहमद:3/429. इब्ने अबी शैबा:10/193.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे साद बिन औस के तरीक़ से बिलाल बिन यहया से जानते हैं।

78 - दुआ: ऐ अल्लाह! मैं तेरी रज़ा के साथ तेरे गुस्से से पनाह माँगता हूँ।

78-بَابٌ دعاء: أَعُوذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ.

3493 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के पहलू में सोई थी कि रात को मैंने आप(ﷺ) को गुम पाया, चुनांचे मैंने आप को तलाश किया तो मेरा हाथ आप(ﷺ) के क़दमों पर लगा आप(ﷺ) सज्दे में थे और कह रहे थे "ऐ अल्लाह! मैं पनाह माँगता हूँ तेरी रज़ा के ज़रिए तेरी नाराजगी से, तेरी माफ़ी के ज़रिए तेरी सज़ा से, मैं तेरी पूरी तारीफ़ नहीं कर सकता तू उसी तरह है जैसे तूने खुद अपने आप की तारीफ़ की है।"

मुस्लिम: 486. अबू दाऊद:879. इब्ने माजह्:3841. निसाई:1100.

3493 - حَدَّثَنَا الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ التَّيْمِيِّ، أَنَّ عَائِشَةَ، قَالَتْ: كُنْتُ نَائِمَةً إِلَى جَنْبِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَفَقَدْتُهُ مِنَ اللَّيْلِ فَلَمَسْتُهُ فَوَقَعَتْ يَدِي عَلَى قَدَمَيْهِ وَهُوَ سَاجِدٌ وَهُوَ يَقُولُ: أَعُوذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ، وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوبَتِكَ، لاَ أُحْصِي ثَنَاءً عَلَيْكَ، أَنْتَ كَمَا أَثْنَيْتَ عَلَى نَفْسِكَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और कई तुरूक़ से सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) से मर्वी है।

79 - बाब।

79-بَابٌ

3494 - अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) यह दुआ इस तरह सिखाया करते थे जैसे उन्हें कुरआन की सूरत सिखाते थे "ऐ अल्लाह! बेशक मैं जहन्नम के अज़ाब और क़ब्र के अज़ाब से तेरी पनाह में आता हूँ, मसीह दज्जाल के फित्ने से तेरी पनाह में आता हूँ और ज़िन्दगी और मौत के फित्ने से तेरी पनाह में आता हूँ।"

मुस्लिम:590. अबू दाऊद:984. इब्ने माजह्:3840. निसाई:2063. अहमद:1/242.

3494 - حَدَّثَنَا الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ الْمَكِّيِّ، عَنْ طَاوُسٍ الْيَمَانِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يُعَلِّمُهُمْ هَذَا الدُّعَاءَ كَمَا يُعَلِّمُهُمُ السُّورَةَ مِنَ الْقُرْآنِ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ، وَعَذَابِ الْقَبْرِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3495 - حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ إِسْحَاقَ الهَمْدَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدْعُو بِهَؤُلَاءِ الكَلِمَاتِ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ النَّارِ، وَعَذَابِ النَّارِ، وَعَذَابِ الْقَبْرِ، وَفِتْنَةِ الْقَبْرِ، وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الغِنَى، وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الفَقْرِ، وَمِنْ شَرِّ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ، اللَّهُمَّ اغْسِلْ خَطَايَايَ بِمَاءِ الثَّلْجِ وَالبَرَدِ، وَأَنْقِ قَلْبِي مِنَ الخَطَايَا كَمَا أَنْقَيْتَ الثَّوْبَ الأَبْيَضَ مِنَ الدَّنَسِ، وَبَاعِدْ بَيْنِي وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالمَغْرِبِ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الكَسَلِ وَالهَرَمِ وَالمَأْثَمِ وَالمَغْرَمِ.

3495 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) इन कलिमात के साथ दुआ किया करते थे: " ऐ अल्लाह! मैं आग के फ़ित्ने से तेरी पनाह में आता हूँ और अज़ाबे जहन्नम, अज़ाबे क़ब्र और क़ब्र के फ़ित्ने से भी, मालदारी के फ़ित्ने के शर और फ़क़ीरी के फ़ित्ने के शर और मसीह दज्जाल के फ़ित्ने के शर से भी ऐ अल्लाह! मेरे गुनाहों को बर्फ़ और ओलों के पानी से धो दे, मेरे दिल को गुनाहों से इस तरह साफ़ कर दे जिस तरह तू सफ़ेद कपड़े को मैल से साफ़ करता है और मेरे और मेरे गुनाहों के दर्मियान ऐसे दूरी डाल दे जिस तरह तू ने मशरिक़ और मग़रिब के दर्मियान दूरी डाली है। ऐ अल्लाह! मैं सुस्ती, बुढ़ापे, गुनाह और क़र्ज़ से तेरी पनाह में आता हूँ।"

बुख़ारी:6368. मुस्लिम:589. अबू दाऊद:880. इब्ने माजह:3832. निसाई:5466.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3496 - حَدَّثَنَا هَارُونُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ عَبَّادِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ عِنْدَ وَفَاتِهِ: اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي، وَأَلْحِقْنِي بِالرَّفِيقِ الأَعْلَى.

3496 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं की मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से आप की वफात के वक़्त सुना आप(ﷺ) कह रहे थे " ऐ अल्लाह! मुझे बख़्श दे, मुझ पर रहम फ़रमा और मुझे बलंद मर्तबा साथियों के साथ मिला दे।"

बुख़ारी:4440. मुस्लिम:2444. इब्ने माजह:1619.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

80 - आदमी यह न कहे कि ऐ अल्लाह! अगर तू चाहे तो मुझे माफ़ कर दे।

80 بَابٌ لا يقول أحدكم: اغفر لي إن شئت.

3497 - سय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, कि तुम में से कोई शख़्स यह न कहे कि ऐ अल्लाह! अगर तू चाहे तो मुझे माफ़ कर दे, ऐ अल्लाह! अगर तू चाहे तो मुझ पर रहम फ़रमा (बल्कि) उसे चाहिए कि पुख़्ता अज़्म से सवाल करे क्योंकि उस अल्लाह को कोई मजबूर करने वाला नहीं है।"

बुख़ारी:6339. मुस्लिम:2679. अबू दाऊद:1483. इब्ने माजह:3854.

3497 - حَدَّثَنَا الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لاَ يَقُولُ أَحَدُكُمُ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي إِنْ شِئْتَ، اللَّهُمَّ ارْحَمْنِي إِنْ شِئْتَ، لِيَعْزِمِ الْمَسْأَلَةَ فَإِنَّهُ لاَ مُكْرِهَ لَهُ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

81 - हदीस: हमारा रब हर रात आसमाने दुनिया की तरफ़ नुज़ूल करता है।

81 - بَابٌ حديث ينزل ربنا كل ليلة إلى السماء الدنيا.

3498 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, हमारा रब हर रात आसमाने दुनिया की तरफ़ नुज़ूल करता है। जब रात का आख़िरी तिहाई हिस्सा बाकी रह जाता है, फिर वह कहता है: कौन है जो मुझ से दुआ करे तो मैं उसकी दुआ कुबूल करूं, कौन है जो मुझ से मांगे तो मैं उसे अता करूं, और कौन है जो मुझ से बख़्शिश तलब करे तो मैं बख़्श दूं।"

बुख़ारी: 1145. मुस्लिम:758. अबू दाऊद:1315. इब्ने माजह:1366.

3498 - حَدَّثَنَا الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي عَبْدِ اللهِ الأَغَرِّ، وَعَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: يَنْزِلُ رَبُّنَا كُلَّ لَيْلَةٍ إِلَى السَّمَاءِ الدُّنْيَا حِينَ يَبْقَى ثُلُثُ اللَّيْلِ الآخِرُ، فَيَقُولُ: مَنْ يَدْعُونِي فَأَسْتَجِيبَ لَهُ؟ وَمَنْ يَسْأَلُنِي فَأُعْطِيَهُ؟ وَمَنْ يَسْتَغْفِرُنِي فَأَغْفِرَ لَهُ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और अबू अब्दुल्लाह अग़र्र का नाम सलमान है। नीज़ इस बारे में अली, अब्दुल्लाह बिन मसऊद, अबू सईद, जुबैर बिन मुतइम, रिफ़ाआ अल-जुहनी, अबू दर्दा और उस्मान बिन अबुल आस (رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है।

3499 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى الثَّقَفِيُّ الْمَرْوَزِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غِيَاثٍ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سَابِطٍ، عَنْ أَبِي أُمَامَةَ، قَالَ: قِيلَ يَا رَسُولَ اللهِ: أَيُّ الدُّعَاءِ أَسْمَعُ؟ قَالَ: جَوْفَ اللَّيْلِ الآخِرِ، وَدُبُرَ الصَّلَوَاتِ الْمَكْتُوبَاتِ.

3499 - सय्यदना अबू उमामा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि दर्याफ़्त किया गया: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! कौन सी दुआ ज़्यादा सुनी जाती है? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "आख़िरी आधी रात और फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद (की जाने वाली दुआ)"

हसन: निसाई: 108. सहीतुत्तर्गीब: 1648.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है। नीज़ अबू ज़र और इब्ने उमर (رضي الله عنهم) से भी मर्वी है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "आख़िरी आधी रात में की जाने वाली दुआ ज़्यादा अफ़ज़ल या (क़ुबूलियत में) बहुत उम्मीद वाली होती है।"

82 بَابُ دُعَاءِ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذَنْبِي، وَوَسِّعْ لِي فِي دَارِي

82- दुआ ऐ अल्लाह मेरे गुनाह माफ़ फ़र्मा और मेरे घर को वसीअ कर दे

3500 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الحَمِيدِ أَبُو عُمَرَ الهِلاَلِيُّ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ إِيَاسٍ الجُرَيْرِيِّ، عَنْ أَبِي السَّلِيلِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَجُلاً قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ سَمِعْتُ دُعَاءَكَ اللَّيْلَةَ، فَكَانَ الَّذِي وَصَلَ إِلَيَّ مِنْهُ أَنَّكَ تَقُولُ: اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذَنْبِي، وَوَسِّعْ لِي فِي دَارِي، وَبَارِكْ لِي فِيمَا رَزَقْتَنِي قَالَ: فَهَلْ تَرَاهُنَّ تَرَكْنَ شَيْئًا.

3500 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि एक आदमी ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मैंने आज रात आप(ﷺ) की दुआ सुनी, जो मुझ तक पहुंची वह यह है कि आप(ﷺ) कह रहे थे: " ऐ अल्लाह! मेरे लिए मेरे गुनाहों को माफ़ फ़रमा, मेरे लिए मेरे घर में वुस्अत दे और जो तूने मुझे रोज़ी दी है उसमें मेरे लिए बरकत अता फ़रमा।" आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "फिर क्या तूने देखा कि इन दुआओं ने (दीनो दुनिया की भलाइयों से) कुछ छोड़ा।"

ज़ईफ़: लेकिन दुआ हसन है: तबरानी फिस सगीर: 10.19. तमामुल मिनह्: 15.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। और अबू सलील का नाम ज़रीब बिन नुफ़ैर या नुकैर है।

83- दुआ: ऐ अल्लाह हमने सुबह की या शाम की, हम तुझे और तेरे अर्श को उठाने वाले फ़रिश्तों को गवाह बनाते हैं

83 بَابُ دُعَاءِ اللَّهُمَّ أَصْبَحْنَا أَوْ أَمْسَيْنَا نُشْهِدُكَ وَنُشْهِدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ

3501 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो शख़्स सुबह के वक़्त यह दुआ पढ़े " ऐ अल्लाह! हम ने सुबह की हम तुझे गवाह बनाते हैं और हम तेरे अर्श को उठाने वाले तेरे फ़रिश्तों और तेरी तमाम मख़्लूक़ को गवाह बनाते हैं, इसलिए कि तू अल्लाह है तेरे सिवा कोई माबूद के लायक़ नहीं तू अकेला है, तेरा कोई शरीक नहीं, और मुहम्मद (ﷺ) तेरे बन्दे और तेरे रसूल हैं" तो अल्लाह तआला उसे वह कुछ माफ़ कर देगा जो गुनाह वह उस दिन करेगा और अगर यह कलिमात शाम के वक़्त कहे तो अल्लाह तआला उसे उस रात के गुनाह माफ़ कर देगा।"

ज़ईफ़; अबू दाऊद:5078. अल-कलिमुत्तयब:25. बुख़ारी फ़ी अदबिल मुफ़रद: 1201.

3501 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا حَيْوَةُ بْنُ شُرَيْحٍ الْحِمْصِيُّ، عَنْ بَقِيَّةَ بْنِ الْوَلِيدِ، عَنْ مُسْلِمِ بْنِ زِيَادٍ، قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسًا، يَقُولُ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ قَالَ حِينَ يُصْبِحُ: اللَّهُمَّ أَصْبَحْنَا نُشْهِدُكَ وَنُشْهِدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ وَمَلاَئِكَتَكَ وَجَمِيعَ خَلْقِكَ بِأَنَّكَ اللَّهُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ وَحْدَكَ لاَ شَرِيكَ لَكَ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُولُكَ، إِلاَّ غَفَرَ اللَّهُ لَهُ مَا أَصَابَ فِي يَوْمِهِ ذَلِكَ، وَإِنْ قَالَهَا حِينَ يُمْسِي غَفَرَ اللَّهُ لَهُ مَا أَصَابَ فِي تِلْكَ اللَّيْلَةِ مِنْ ذَنْبٍ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

84 - दुआ: ऐ अल्लाह! हमारे लिए अपना ऐसा डर तकसीम कर दे जो हमारे और हमारी नाफ़रमानियों के दर्मियान हायल हो जाए।

84 - بَابُ دعاء: اللَّهُمَّ اقْسِمْ لَنَا مِنْ خَشْيَتِكَ مَا يَحُولُ بَيْنَنَا وَبَيْنَ مَعَاصِيكَ.

3502 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) किसी मजलिस से अपने सहाबा के लिए यह कलिमात पढ़े बग़ैर कम उठते थे "ऐ अल्लाह!

3502 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ زَحْرٍ، عَنْ خَالِدِ بْنِ أَبِي عِمْرَانَ،

أَنَّ ابْنَ عُمَرَ، قَالَ: قَلَّمَا كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُومُ مِنْ مَجْلِسٍ حَتَّى يَدْعُوَ بِهَؤُلاَءِ الدَّعَوَاتِ لأَصْحَابِهِ: اللَّهُمَّ اقْسِمْ لَنَا مِنْ خَشْيَتِكَ مَا يَحُولُ بَيْنَنَا وَبَيْنَ مَعَاصِيكَ، وَمِنْ طَاعَتِكَ مَا تُبَلِّغُنَا بِهِ جَنَّتَكَ، وَمِنَ الْيَقِينِ مَا تُهَوِّنُ بِهِ عَلَيْنَا مُصِيبَاتِ الدُّنْيَا، وَمَتِّعْنَا بِأَسْمَاعِنَا وَأَبْصَارِنَا وَقُوَّتِنَا مَا أَحْيَيْتَنَا، وَاجْعَلْهُ الْوَارِثَ مِنَّا، وَاجْعَلْ ثَأْرَنَا عَلَى مَنْ ظَلَمَنَا، وَانْصُرْنَا عَلَى مَنْ عَادَانَا، وَلاَ تَجْعَلْ مُصِيبَتَنَا فِي دِينِنَا، وَلاَ تَجْعَلِ الدُّنْيَا أَكْبَرَ هَمِّنَا وَلاَ مَبْلَغَ عِلْمِنَا، وَلاَ تُسَلِّطْ عَلَيْنَا مَنْ لاَ يَرْحَمُنَا.

हमारे लिए अपना ऐसा डर तक़्सीम कर दे जो हमारे और हमारी नाफ़रमानियों के दर्मियान हायल हो जाए, और अपनी ऐसी इताअत दे जिस के साथ तू हमें अपनी जन्नत तक पहुंचा दे, ऐसा यक़ीन जिस के साथ तू हम पर दुनिया के मसाइब आसान कर दे और हमें हमारे कानों, हमारी निगाहों और हमारी कुव्वत से ज़िंदगी भर फ़ायदा दे और हम से वारिस बना दे और हमारा इंतिकाम उस पर बना जो हम पर ज़ुल्म करे और जो हम से दुश्मनी रखें उनके ख़िलाफ़ हमारी मदद फ़रमा, हमारे दीन में हमारी मुसीबतों को दाख़िल न करना, हमारा सब से बड़ा फ़िक्र दुनिया को न बनाना और न ही हमारे इल्म की इंतिहा और हम पर ऐसा हाकिम मुसल्लत न कर जो हम पर रहम न करे।"

हसन: निसाई: 402. अल-कलिमुत्तयब: 226.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है और बअ़ज़ ने इस हदीस को ख़ालिद बिन अबू इमरान से नाफ़े इब्ने उमर (رضي الله عنه) से रिवायत किया है।

3503 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُثْمَانُ الشَّحَّامُ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِي بَكْرَةَ، قَالَ: سَمِعَنِي أَبِي، وَأَنَا أَقُولُ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْكَسَلِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ. قَالَ: يَا بُنَيَّ مِمَّنْ سَمِعْتَ هَذَا؟ قُلْتُ: سَمِعْتُكَ تَقُولُهُنَّ، قَالَ: الزَمْهُنَّ، فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُهُنَّ.

3503 - मुस्लिम बिन अबी बक्रा कहते हैं मुझे मेरे बाप ने सुना मैं कह रहा था: "ऐ अल्लाह! मैं गम, काहिली और अज़ाबे क़ब्र से तेरी पनाह में आता हूँ। उन्होंने फ़रमाया:" ऐ मेरे बेटे! तुम ने यह दुआ किस से सुनी है? मैंने कहा: मैंने नबी(ﷺ) को पढ़ते हुऐ सुना था। उन्होंने फ़रमाया, "इन्हें लाजिम रखना इसलिए कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को यह कहते हुए सुना था।"

सहीहुल इस्नाद: अबू दाऊद:5090. अहमद:5/36. हाकिम:1/533.

84 - दुआ: अल्लाह बलंद व बरतर के अलावा कोई माबूद नहीं।

84- بَابٌ دعاء لا إله ألا الله العلي العظيم.

3504 - सय्यदना अली (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझ से फ़रमाया, "क्या मैं तुम्हें ऐसे दुआइया कलिमात न सिखाऊँ कि जब तुम इन्हें कहो तो अल्लाह तआला तुझे बख़्श दे अगरचे तुम बख्शे जा चुके हो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम यह कहा करो " अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह बहुत बलंद अज़्मत वाला है अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह बहुत बड़ा बुर्दबार बुज़ुर्गी वाला है अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं अल्लाह अर्शे अज़ीम का रब पाक है।"

ज़ईफ़: तबरानी फिस सगीर:763. निसाई:1/ 158. बतरीके आख़र

3504 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ خَشْرَمٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا الفَضْلُ بْنُ مُوسَى، عَنِ الحُسَيْنِ بْنِ وَاقِدٍ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ الحَارِثِ، عَنْ عَلِيٍّ قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَلاَ أُعَلِّمُكَ كَلِمَاتٍ إِذَا قُلْتَهُنَّ غَفَرَ اللَّهُ لَكَ وَإِنْ كُنْتَ مَغْفُورًا لَكَ؟ قَالَ: قُلْ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ العَلِيُّ العَظِيمُ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ الحَلِيمُ الكَرِيمُ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ سُبْحَانَ اللهِ رَبِّ العَرْشِ العَظِيمِ.

वज़ाहत: अली बिन खश्रम कहते हैं: हमें अली बिन हुसैन बिन वाकिद ने अपने बाप की तरफ़ से इसी तरह हदीस बयान की लेकिन उन्होंने आखिर में यह भी कहा: कि तमाम तारीफ़ें अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए हैं। इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। हम इसे अबू इस्हाक़ से बवास्ता हारिस अली (رضي الله عنه) से ही जानते हैं।

85 - मछली वाले नबी की दुआ।

85- بَابٌ فِي دعوة ذي النون.

3505 - सय्यदना साद (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मछली वाले (नबी यूनुस عليه السلام) ने जब मछली के पेट में दुआ की तो उनकी दुआ यह थी "तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू पाक है यक़ीनन मैं ही ज़ालिमों में से हूँ।" बेशक वाक़िया यह है कि किसी भी मुसलमान ने कभी भी इसके साथ दुआ नहीं की मगर अल्लाह तआला ने उसकी

3505 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، قَالَ: حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ سَعْدٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: دَعْوَةُ ذِي النُّونِ إِذْ دَعَا وَهُوَ فِي بَطْنِ الحُوتِ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي

كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ، فَإِنَّهُ لَمْ يَدْعُ بِهَا رَجُلٌ مُسْلِمٌ فِي شَيْءٍ قَطُّ إِلاَّ اسْتَجَابَ اللَّهُ لَهُ.

दुआ कुबूल की।"

सहीह: अहमद:1/170. हाकिम:1/505. बैहक़ी फी शोबिल ईमान:620. सहीहुत्तर्गीब:1826.

वज़ाहत: मुहम्मद बिन यहया कहते हैं, मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने एक मर्तबा बवास्ता इब्राहीम बिन मुहम्मद बिन साद, साद (رضي الله عنه) से रिवायत किया है और इसमें उन के बाप (मुहम्मद बिन साद) का ज़िक्र नहीं किया।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: कई रावियों ने इस हदीस को यूनुस बिन अबू इस्हाक़ से बवास्ता इब्राहीम बिन मुहम्मद बिन साद, साद (رضي الله عنه) से रिवायत किया है और इसमें उन इब्राहीम के बाप का ज़िक्र नहीं किया और अबू अहमद ज़ुबैरी ने, यूनुस बिन अबी इस्हाक़ से रिवायत करते वक़्त मुहम्मद बिन यूसुफ़ की तरह इब्राहीम बिन मुहम्मद बिन साद से उन के बाप के ज़रिए साद (رضي الله عنه) से रिवायत की है।

यूनुस बिन अबू इस्हाक़ बसा औक़ात इसमें उनके बाप का ज़िक्र करते थे और बअ़ज़ दफ़ा नहीं करते थे।

86-بَابٌ إن الله تعيسة وتسعين إسما.

86 - अल्लाह तआ़ला के निन्नान्वे नाम है।

3506 - حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ حَمَّادٍ الْبَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي رَافِعٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّ لِلَّهِ تِسْعَةً وَتِسْعِينَ اسْمًا مِائَةً غَيْرَ وَاحِدٍ مَنْ أَحْصَاهَا دَخَلَ الجَنَّةَ.

3506 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "बेशक अल्लाह तआला के निन्नानवे, एक कम सौ नाम हैं, जिस ने उन्हें याद कर लिया वह जन्नत में दाख़िल होगा।"

बुख़ारी:3736. मुस्लिम:2677. इब्ने माजह:3860.

वज़ाहत: यूसुफ़ कहते हैं हमें अब्दुल आला ने हिशाम बिन हस्सान से बवास्ता मुहम्मद बिन सीरीन, अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से नबी (ﷺ) की इस जैसी हदीस बयान की है।

यह हदीस हसन है। जो कई तुरूक़ से बवास्ता अबू हुरैरा (رضي الله عنه) नबी करीम (ﷺ) से मर्वी है।

87-بَابٌ حديث في أسماء الله الحسنى مع ذكرها تماما.

87 - अल्लाह तआ़ला के अस्मा उल हुस्ना की तफ़सील।

3507 - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ يَعْقُوبَ قَالَ: حَدَّثَنِي صَفْوَانُ بْنُ صَالِحٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا

3507 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला के निन्नानवे, एक कम सौ नाम हैं जिस ने उन्हें शुमार किया वह जन्नत में दाख़िल हो गया:

الوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعَيْبُ بْنُ أَبِي حَمْزَةَ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ لِلَّهِ تَعَالَى تِسْعَةً وَتِسْعِينَ اسْمًا، مِئَةً غَيْرَ وَاحِدَةٍ، مَنْ أَحْصَاهَا دَخَلَ الجَنَّةَ، هُوَ اللَّهُ الَّذِي لا إِلَهَ إِلا هُوَ الرَّحْمَنُ، الرَّحِيمُ، المَلِكُ، القُدُّوسُ، السَّلامُ، المُؤْمِنُ، المُهَيْمِنُ، العَزِيزُ، الجَبَّارُ، المُتَكَبِّرُ، الخَالِقُ، البَارِئُ، المُصَوِّرُ، الغَفَّارُ، القَهَّارُ، الوَهَّابُ، الرَّزَّاقُ، الفَتَّاحُ، العَلِيمُ، القَابِضُ، البَاسِطُ، الخَافِضُ، الرَّافِعُ، المُعِزُّ، المُذِلُّ، السَّمِيعُ، البَصِيرُ، الحَكَمُ، العَدْلُ، اللَّطِيفُ، الخَبِيرُ، الحَلِيمُ، العَظِيمُ، الغَفُورُ، الشَّكُورُ، العَلِيُّ، الكَبِيرُ، الحَفِيظُ، المُقِيتُ، الحَسِيبُ، الجَلِيلُ، الكَرِيمُ، الرَّقِيبُ، المُجِيبُ، الوَاسِعُ، الحَكِيمُ، الوَدُودُ، المَجِيدُ، البَاعِثُ، الشَّهِيدُ، الحَقُّ، الوَكِيلُ، القَوِيُّ، المَتِينُ، الوَلِيُّ، الحَمِيدُ، المُحْصِي، المُبْدِئُ، المُعِيدُ، المُحْيِي، المُمِيتُ،

"वह अल्लाह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं (अर्रहमान) बहुत मेहरबान (अर्रहीम) निहायत रहम करने वाला (अल मालिक) बादशाह (अल कुद्दूस) पाक (अस्सलाम) सलामती वाला (अल मोमिन) अम्न देने वाला (अल मुहैमिन) निगहबान (अल अज़ीज़) ग़ालिब (अल जब्बार) सब पर भारी (अल मुतकब्बिर) जिसको तकब्बुर रवा है (अल ख़ालिक) पैदा करने वाला (अल बारी) नए सिरे से तख़लीक़ करने वाला (अल मुसव्विर) शक्लो-सूरत बनाने वाला (अल गफ़्फ़ार) बख़्शने वाला (अल क़ह्हार) ज़बरदस्त कुव्वत वाला (अल वह्हाब) बहुत ज़्यादा अता करने वाला (अर रज़्ज़ाक) रिज्क देने वाला (अल फत्ताह) फतह देने वाला (अल अलीम) इल्म वाला (अल काबिज़) रोज़ी तंग करने वाला (अल बासित) रोज़ी वसी करने वाला (अल खाफ़िज़) झुकाने वाला (अर्राफे) बलंद करने वाला (अल मुइज़्ज़) इज़्ज़त देने वाला (अल मोज़िल्ल) ज़िल्लत देने वाला (अस्समी) सुनने वाला (अल बसीर) देखने वाला (अल हकम) फैसला करने वाला (अल अदल) इन्साफ करने वाला (अल लतीफ़) बारीक बीन (अल खबीर) खबर रखने वाला (अल हलीम) बुर्दबार (अल अज़ीम) अज़मत वाला (अल गफूर) बहुत बख़्शने वाला (अश्शकूर) क़द्र दान (अल अली) बहुत बलंद (अल कबीर) बहुत बड़ा (अल हफीज) मुहाफ़िज़ (अल मुक़ीत) मुक़र्रर करने वाला (अल हसीब) हिसाब लेने वाला (अल जलील) साहिबे जलाल (अल करीम) बजुर्गी

الْحَيُّ، الْقَيُّومُ، الْوَاجِدُ، الْمَاجِدُ، الْوَاحِدُ، الصَّمَدُ، الْقَادِرُ، الْمُقْتَدِرُ، الْمُقَدِّمُ، الْمُؤَخِّرُ، الأَوَّلُ، الآخِرُ، الظَّاهِرُ، الْبَاطِنُ، الْوَالِي، الْمُتَعَالِي، الْبَرُّ، التَّوَّابُ، الْمُنْتَقِمُ، الْعَفُوُّ، الرَّءُوفُ، مَالِكُ الْمُلْكِ، ذُو الْجَلاَلِ وَالإِكْرَامِ، الْمُقْسِطُ، الْجَامِعُ، الْغَنِيُّ، الْمُغْنِي، الْمَانِعُ، الضَّارُّ، النَّافِعُ، النُّورُ، الْهَادِي، الْبَدِيعُ، الْبَاقِي، الْوَارِثُ، الرَّشِيدُ، الصَّبُورُ.

वाला (अर्रकीब) तआक़ूब करने वाला (अल मुजीब) दुआ कुबूल करने वाला (अल वासे) वुस्अत वाला (अल हकीम) दाना (अल वदूद) मोहब्बत करने वाला (अल मजीद) बुज़ुर्ग (अल बाइस) दोबारा उठाने वाला। (अश शहीद) गवाह (अल हक्क़) हक़ ज़ात (अल वकील) कार साज़ (अल क़वी) बहुत कुव्वत वाला (अल मतीन) बहुत मज़बूत (अल वली) दोस्त (अल हमीद) तारीफ़ वाला (अल मुह्सी) शुमार करने वाला (अल मुब्दी) पहली मर्तबा पैदा करने वाला (अल मुईद) दोबारा उठाने वाला (अल मुह्ई) ज़िंदा करने वाला (अल मुमीत) मारने वाला (अल हय्य) ज़िंदा (अल कय्यूम) कायम रहने वाला (अल वाजिद) पाने वाला (अल माजिद) बुज़ुर्गी वाला (अल वाहिद) अकेला, (अस्समद) बेनियाज़, (अल क़ादिर) कुदरत वाला, (अल मुक्तदिर) साहिबे इक्तिदार (अल मुक़द्दिम) आगे करने वाला (अल मुअख्खिर) पीछे हटाने वाला (अल अव्वल) सब से पहला (अल आखिर) सब से आख़िरी (अज्जाहिर) ज़ाहिर (अल बातिन) पोशीदा (अल वाली) सर परस्त (अल मुतआलि) बलंदियों वाला (अल बर्र) नेकी वाला (अत्तव्वाब) बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला (अल मुन्तकिम) इंतिकाम लेने वाला (अल अफ़व्वु) माफ़ करने वाला (अर्रऊफ) नर्मी करने वाला (मालिकुल मुल्क) बादशाहत का मालिक (ज़ुल ज़लाल वल इकराम) इज्ज़तो अज़मत वाला (अल मुक्सित) इंसाफ़ करने वाला, (अल जामेअ) जमा करने वाला, (अल

गनी) मालदार (अल मुग़्नी) मालदार करने वाला (अल माने) रोकने वाला (अज़् ज़ार) नुकसान देने वाला (अन् नाफ़े) नफ़ा देने वाला (अन् नूर) नूर (अल हादी) हिदायत देने वाला (अल बदीउ) शुरू करने वाला (अल बाक़ी) बाकी रहने वाला (अल वारिस) वारिस (अर्रशीद) समझदारी देने वाला (अस् सबूर) सब्र देने वाला।"

ज़ईफ़ बेसरदिल अस्मा: इब्ने माजह्:3861. हिदायतुर्रूवात:2228. 1/16. तबरानी फ़िद दुआ:111. इब्ने हिब्बान:808.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। हमें यह हदीस कई रावियों ने सफ़वान बिन सालेह से बयान की है और हम इसे सफ़वान बिन सालेह के तरीक़ से ही जानते हैं, यह मोहद्दिसीन के नज़दीक सिक़ह् हैं।

नीज़ यह हदीस कई तुरूक़ से बवास्ता अबू हुरैरा (رضي الله عنه) नबी करीम (ﷺ) से मर्वी है और हम ऐसी बहुत सी रिवायात के लिए सहीह सनद नहीं पाते जिन में अस्मा का ज़िक्र है।

आदम बिन अबी इयास ने इस हदीस को एक और सनद से बवास्ता अबू हुरैरा (رضي الله عنه) नबी (ﷺ) से रिवायत किया है इसमें भी अस्मा का ज़िक्र किया है लेकिन इस की सनद भी सहीह नहीं है।

3508 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला के निन्नानवे नाम हैं जिस ने उन्हें याद कर लिया वह जन्नत में दाख़िल हो गया।"

बुख़ारी:2736.मुस्लिम:2677. इब्ने माजह्:3860.

3508 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، قَالَ: إِنَّ لِلَّهِ تِسْعَةً وَتِسْعِينَ اسْمًا مَنْ أَحْصَاهَا دَخَلَ الجَنَّةَ، وَلَيْسَ فِي هَذَا الحَدِيثِ ذِكْرُ الأَسْمَاءِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) ने कहा: इस हदीस में अस्मा का ज़िक्र नहीं है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और इसे अबू यमान ने भी बवास्ता शोऐब बिन अबी हम्ज़ा अबू ज़िनाद से रिवायत किया है इसमें भी नामों का ज़िक्र नहीं है।

3509 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब तुम जन्नत के बागीचों के पास से गुजरो तो फल

3509 - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ يَعْقُوبَ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ حُبَابٍ، أَنَّ حُمَيْدًا الْمَكِّيَّ، مَوْلَى ابْنِ

عَلْقَمَةَ، حَدَّثَهُ، أَنَّ عَطَاءَ بْنَ أَبِي رَبَاحٍ، حَدَّثَهُ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا مَرَرْتُمْ بِرِيَاضِ الجَنَّةِ فَارْتَعُوا. قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ وَمَا رِيَاضُ الجَنَّةِ؟ قَالَ: الْمَسَاجِدُ، قُلْتُ: وَمَا الرَّتْعُ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: سُبْحَانَ اللهِ وَالحَمْدُ لِلَّهِ وَلاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ.

खाया करो। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! जन्नत के बागीचे कौन से हैं? आप ने फ़रमाया, "मस्जिदें" मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! फल खाने से क्या मुराद है? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह पाक है, हर क़िस्म की तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है, अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और अल्लाह बहुत बड़ा है" कहना।

ज़ईफ़: ज़ईफ़ुत्तर्गीब: 955. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफ़ा: 115.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

3510 - حَدَّثَنَا عَبْدُ الوَارِثِ بْنُ عَبْدِ الصَّمَدِ بْنِ عَبْدِ الوَارِثِ، قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ ثَابِتٍ هُوَ الْبُنَانِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِذَا مَرَرْتُمْ بِرِيَاضِ الجَنَّةِ فَارْتَعُوا قَالُوا: وَمَا رِيَاضُ الجَنَّةِ؟ قَالَ: حِلَقُ الذِّكْرِ.

3510 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब तुम जन्नत के बागीचों के पास से गुजरो तो फल खाया करो।" लोगों ने पूछा: जन्नत के बागीचे क्या है? आप ने फ़रमाया, "ज़िक्र के हल्क़े।"

हसन: अहमद: 3/150. अबू याला: 3432. अस-सिलसिला अस-सहीहा: 2562.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: बवास्ता साबित, अनस (رضي الله عنه) से मर्वी यह हदीस इस सनद से हसन ग़रीब है।

88 بَاب مِنْهُ فِي الاسترجاع عند مصيبة.

88- मुसीबत के वक़्त इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन पढ़ना

3511 - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ يَعْقُوبَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَاصِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ عُمَرَ بْنِ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أُمِّهِ أُمِّ

3511 – सय्यदना अबू सलमा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब तुम में से किसी शख़्स को मुसीबत पहुंचे तो वह कहे "हम अल्लाह ही के लिए हैं और यक़ीनन हम उसी की तरफ़ लौटने वाले हैं, ऐ

سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: إِذَا أَصَابَ أَحَدَكُمْ مُصِيبَةٌ فَلْيَقُلْ: إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ، اللَّهُمَّ عِنْدَكَ أَحْتَسِبُ مُصِيبَتِي فَأْجُرْنِي فِيهَا وَأَبْدِلْنِي مِنْهَا خَيْرًا. فَلَمَّا احْتُضِرَ أَبُو سَلَمَةَ، قَالَ: اللَّهُمَّ اخْلُفْ فِي أَهْلِي خَيْرًا مِنِّي، فَلَمَّا قُبِضَ قَالَتْ: أُمُّ سَلَمَةَ: إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ، عِنْدَ اللهِ أَحْتَسِبُ مُصِيبَتِي فَأْجُرْنِي فِيهَا.

अल्लाह! मैं तुझ से अपनी मुसीबत का सवाब चाहता हूँ पस तू मुझे इसमें अज्र दे और मुझे इस से बेहतर अता कर।" (उम्मे सलमा कहती हैं) फिर जब अबू सलमा की वफात का वक़्त आया तो उन्होंने कहा: ऐ अल्लाह! मेरे घर में मुझ से बेहतर जानशीन बना, फिर जब वह फौत हो गए तो उम्मे सलमा (رضي الله عنها) ने कहा: इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन" अल्लाह के पास ही मैं अपनी मुसीबत के सवाब की उम्मीद रखती हूँ पस तू मुझे इसमें अज्र अता फ़रमा।"

सहीहुल इस्नाद:इब्ने माजह्:1598. अहमद:4/27. तबरानी फ़ी कबीर: 23/497.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है। नीज़ यह हदीस एक और सनद से भी बवास्ता उम्मे सलमा (رضي الله عنها) नबी करीम (ﷺ) से मर्वी है।

और अबू सलमा का नाम अब्दुल्लाह बिन अब्दुल असद था। (رضي الله عنه)

89 - بَابٌ فِي فضل سوال العافية والمعافاة.

89 - माफ़ी और आफ़ियत का सवाल करने की फ़ज़ीलत।

3512 - حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ عِيسَى، قَالَ: حَدَّثَنَا الفَضْلُ بْنُ مُوسَى، قَالَ: حَدَّثَنَا سَلَمَةُ بْنُ وَرْدَانَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ رَجُلاً جَاءَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَيُّ الدُّعَاءِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: سَلْ رَبَّكَ العَافِيَةَ وَالمُعَافَاةَ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ، ثُمَّ أَتَاهُ فِي اليَوْمِ الثَّانِي فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَيُّ الدُّعَاءِ أَفْضَلُ؟

3512 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) से रिवायत है कि एक आदमी ने नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! कौन सी दुआ अफ़ज़ल है? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम अपने रब से दुनिया और आख़िरत में माफ़ी और आफ़ियत का सवाल करो।" फिर वह शख़्स दूसरे दिन आकर अर्ज़ करने लगा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! कौन सी दुआ

فَقَالَ لَهُ مِثْلَ ذَلِكَ، ثُمَّ أَتَاهُ فِي الْيَوْمِ الثَّالِثِ فَقَالَ لَهُ مِثْلَ ذَلِكَ. قَالَ: فَإِذَا أُعْطِيتَ الْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَأُعْطِيتَهَا فِي الآخِرَةِ فَقَدْ أَفْلَحْتَ.

अफ़ज़ल है? आप(ﷺ) ने उसे वही बात इर्शाद फ़रमाई, फिर वह तीसरे दिन आप(ﷺ) से आकर यही कहने लगा: तो आप(ﷺ) ने उसे वही जवाब देते हुए फ़रमाया, "जब तुझे दुनिया और आख़िरत में आफ़ियत मिल गई तो यक़ीनन तू कामयाब हो गया।"

ज़ईफ़: इब्ने माजह:3848. ज़ईफुत्तर्गीब:1977. अहमद:3/ 127. बुख़ारी फ़िल अदबिल मुफ़रद:637.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है।हम इसे सिर्फ सलमा बिन वर्दान की सनद से ही जानते हैं।

3513 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ سُلَيْمَانَ الضُّبَعِيُّ، عَنْ كَهْمَسِ بْنِ الْحَسَنِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ بُرَيْدَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ أَرَأَيْتَ إِنْ عَلِمْتُ أَيُّ لَيْلَةٍ لَيْلَةُ الْقَدْرِ مَا أَقُولُ فِيهَا؟ قَالَ: قُولِي: اللَّهُمَّ إِنَّكَ عُفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّي.

3513 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! आप यह बताइए कि अगर मैं लैलतुल क़द्र को पा लूं तो मैं इसमें क्या दुआ करूं? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम कहना: ऐ अल्लाह! तू बहुत माफ़ करने वाला है, तू माफ़ करने को पसंद करता है सो तू मुझे भी माफ़ कर दे।"

सहीह: इब्ने माजह:3850. अहमद:6/ 171. निसाई:872.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3514 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبِيدَةُ بْنُ حُمَيْدٍ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي زِيَادٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الْحَارِثِ، عَنِ الْعَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ عَلِّمْنِي شَيْئًا أَسْأَلُهُ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ، قَالَ: سَلِ اللَّهَ الْعَافِيَةَ، فَمَكَثْتُ أَيَّامًا ثُمَّ جِئْتُ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ عَلِّمْنِي شَيْئًا أَسْأَلُهُ اللَّهَ، فَقَالَ لِي:

3514 - सय्यदना अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! आप मुझे कोई ऐसी दुआ सिखलाइए जिसके साथ मैं अल्लाह अज्ज़ व जल्ल से सवाल करूं। आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "आप अल्लाह से आफ़ियत का सवाल करें।" फिर कुछ दिन ठहरने के बाद मैंने आकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! आप मुझे कोई ऐसी

يَا عَبَّاسُ يَا عَمَّ رَسُولِ اللهِ، سَلِ اللَّهَ، العَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ.

चीज़ सिखाइए जिस से मैं अल्लाह से सवाल करूं? तो आप(ﷺ) ने मुझे फ़रमाया:" ऐ अब्बास! ऐ अल्लाह के रसूल के चचा जान! आप(ﷺ) अल्लाह से दुनिया व आख़िरत में आफ़ियत का सवाल करें।"

सहीह: अहमद: 1/290. हुमैदी:461. इब्ने अबी शैबा:10/206. अस-सिलसिला अस-सहीहा:1523.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और अब्दुल्लाह बिन हारिस बिन नौफ़ल ने अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब (رضي الله عنه) से सिमा किया है।

3515 - حَدَّثَنَا الْقَاسِمُ بْنُ دِينَارٍ الْكُوفِيُّ، حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ الْكُوفِيُّ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ وَهُوَ الْمُلَيْكِيُّ، عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَا سُئِلَ اللَّهُ شَيْئًا أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ أَنْ يُسْأَلَ الْعَافِيَةَ.

3515 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिन चीजों से अल्लाह से सवाल किया जाता है उन में अल्लाह तआला को सब से पसंदीदा सवाल आफ़ियत का है।"

हसन: इस पर तख़रीज ज़िक्र नहीं की गई।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है हम इसे अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र अल मुलैकी के तरीक़ से ही जानते हैं।

91 - بَابُ دعاء اللَّهُمَّ خِرْ لِي وَاخْتَرْ لِي.

91 - दुआ: ऐ अल्लाह मेरे लिए ख़ैरो बरकत इख़्तियार फ़रमा।

3516 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ عُمَرَ بْنِ أَبِي الوَزِيرِ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَنْفَلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَبُو عَبْدِ اللهِ، عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، عَنْ أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا أَرَادَ أَمْرًا قَالَ: اللَّهُمَّ خِرْ لِي وَاخْتَرْ لِي.

3516 - सय्यदना अबू बक्र सिद्दीक़ (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) जब किसी काम का इरादा करते तो कहते "ऐ अल्लाह मेरा काम बेहतर बना और मेरे लिए (दुरुस्त काम को) इख़्तियार फ़रमा।"

ज़ईफ़: सिन्नी फी अमलिल यौम वल लैला: 591. अबू याला:44.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है हम इसे ज़न्फल की हदीस से ही जानते हैं और वह मोहद्दिसीन के नज़दीक ज़ईफ़ है। इसे ज़न्फल बिन अब्दुल्लाह अरफी भी कहा जाता है यह अरफ़ात में रहता था और इस हदीस में यह अकेला है उसकी मुताबअत नहीं की गई।

92-वुज़ू, अल्हम्दुलिल्लाह और सुब्हान अल्लाह की फ़ज़ीलत

92 بَابٌ فِي فَضْلِ الْوُضُوءِ وَالْحَمْدَلَةِ وَالتَّسْبِيحِ

3517 - अबू मालिक अशअरी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "वुज़ू ईमान का हिस्सा है, अल्हम्दुलिल्लाह (नेकियों वाले) तराज़ू को भर देता है और सुब्हान अल्लाह और अल्हम्दुलिल्लाह यह दोनों (या अकेला अल्हम्दुलिल्लाह) आसमान और ज़मीन के दर्मियान को (नेकियों से) भर देता है, नमाज़ रोशनी है, सदक़ा दलील है, सब्र चमक है और क़ुरआन तेरे हक़ में या तेरे ख़िलाफ़ हुज्जत है हर इंसान सुबह करता है तो कोई अपने आप को बेचने वाला होता है जब कि कोई उसे आज़ाद करने वाला होता है या हलाक करने वाला।"

3517 - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَبَّانُ بْنُ هِلَالٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبَانُ هُوَ ابْنُ يَزِيدَ العَطَّارُ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى، أَنَّ زَيْدَ بْنَ سَلَّامٍ، حَدَّثَهُ أَنَّ أَبَا سَلَّامٍ، حَدَّثَهُ، عَنْ أَبِي مَالِكٍ الأَشْعَرِيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: الوُضُوءُ شَطْرُ الإِيمَانِ، وَالحَمْدُ لِلَّهِ تَمْلَأُ الْمِيزَانَ، وَسُبْحَانَ اللهِ وَالحَمْدُ لِلَّهِ تَمْلَآنِ أَوْ تَمْلَأُ مَا بَيْنَ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ، وَالصَّلَاةُ نُورٌ، وَالصَّدَقَةُ بُرْهَانٌ، وَالصَّبْرُ ضِيَاءٌ، وَالقُرْآنُ حُجَّةٌ لَكَ أَوْ عَلَيْكَ، كُلُّ النَّاسِ يَغْدُو فَبَائِعٌ نَفْسَهُ فَمُعْتِقُهَا أَوْ مُوبِقُهَا.

मुस्लिम:223. इब्ने माजह:280. निसाई:3237.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

93 - दो अहादीस पर मुश्तमिल बाब: तस्बीह आधा मीज़ान है।

93- بَابٌ فيه حديثان: التسبيح نصف الميزان.

3518 - अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "सुब्हान अल्लाह आधा मीज़ान (भरता) है,

3518 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ عَرَفَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَيَّاشٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ زِيَادٍ،

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: التَّسْبِيحُ نِصْفُ الْمِيزَانِ، وَالحَمْدُ لِلَّهِ يَمْلَؤُهُ، وَلاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ لَيْسَ لَهَا دُونَ اللهِ حِجَابٌ حَتَّى تَخْلُصَ إِلَيْهِ.

अल्हम्दुलिल्लाह इसे (मुकम्मल) भर देता है और ला इलाहा इल्लल्लाह के लिए अल्लाह के आगे कोई पर्दा नहीं होता हत्ता (यहाँ तक) कि वह उस तक पहुँच जाता है।"

ज़ईफ़: ज़ईफुत्तर्गीब:930.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस इस सनद से ग़रीब है और इसकी सनद क़वी नहीं है।

3519 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ جُرَيٍّ النَّهْدِيِّ، عَنْ رَجُلٍ، مِنْ بَنِي سُلَيْمٍ، قَالَ: عَدَّهُنَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي يَدِي أَوْ فِي يَدِهِ: التَّسْبِيحُ نِصْفُ الْمِيزَانِ، وَالْحَمْدُ يَمْلَؤُهُ، وَالتَّكْبِيرُ يَمْلَأُ مَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ، وَالصَّوْمُ نِصْفُ الصَّبْرِ، وَالطُّهُورُ نِصْفُ الإِيمَانِ.

3519 - जुरय नहदी बनू सुलैम के एक आदमी से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें मेरे या अपने हाथ में शुमार किया "सुब्हान अल्लाह निस्फ़ तराज़ू (भरता) है, अल्हम्दुलिल्लाह उसे (पूरा) भर देता है, अल्लाहु अकबर ज़मीनों आसमान के दर्मियान को भर देता है, रोज़ा निस्फ़ सब्र और वुज़ू निस्फ़ ईमान है।

ज़ईफ़: अहमद:4/260. दारमी:660. ज़ईफुत्तर्गीब: 944.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है। इसे शोबा और सुफ़ियान सौरी ने भी अबू इस्हाक़ से रिवायत किया है।

94 - بَابٌ دعاء عرفة اللهم لك الحمد.

94 - अरफा की दुआ: ऐ अल्लाह हर क़िस्म की तारीफ़ तेरे लिए ही है।

3520 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ الْمُؤَدِّبُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ ثَابِتٍ قَالَ: حَدَّثَنِي قَيْسُ بْنُ الرَّبِيعِ، وَكَانَ مِنْ بَنِي أَسَدٍ، عَنِ الأَغَرِّ بْنِ الصَّبَّاحِ، عَنْ خَلِيفَةَ بْنِ حُصَيْنٍ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ، قَالَ: أَكْثَرُ مَا دَعَا بِهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَشِيَّةَ عَرَفَةَ فِي الْمَوْقِفِ: اللَّهُمَّ لَكَ الحَمْدُ كَالَّذِي نَقُولُ وَخَيْرًا مِمَّا نَقُولُ، اللَّهُمَّ لَكَ

3520 - सय्यदना अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि अरफा की शाम वक़ूफ़ की जगह में रसूलुल्लाह (ﷺ) अक्सर यह दुआ पढ़ा करते थे: ''ऐ अल्लाह! तमाम तारीफ़ें तेरे लिए ऐसे ही हैं जैसे तू कहता है और जो हम कहते हैं इससे बेहतर हैं, ऐ अल्लाह! मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानी, मेरी ज़िदगी और मेरी मौत तेरे लिए ही है, तेरी तरफ़ ही मेरा लौटना है, ऐ मेरे रब! मेरी विरासत भी तेरे लिए ही है, ऐ

صَلاَتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي، وَإِلَيْكَ مَآبِي، وَلَكَ رَبِّ تُرَاثِي، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَوَسْوَسَةِ الصَّدْرِ وَشَتَاتِ الأَمْرِ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا يَجِيءُ بِهِ الرِّيحُ.

अल्लाह! मैं अज़ाबे क़ब्र, दिल के वस्वसे और मामलात के बिगड़ने से तेरी पनाह में आता हूँ, ऐ अल्लाह! मैं उस चीज़ के शर से तेरी पनाह में आता हूँ जिसे आंधी लेकर आती है।''

ज़ईफ़: इब्ने खुजैमा:2841. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:2918.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस ग़रीब है और इसकी सनद कवी नहीं है।

95 - بَابُ دعاء : اللَّهُمَّ إِنَّا نَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا سَأَلَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ ﷺ

95 - दुआ: ऐ अल्लाह! हम तुझ से वह भलाई मांगते हैं जो तुझ से तेरे नबी मुहम्मद (ﷺ) ने मांगी थी।

3521 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَمَّارُ بْنُ مُحَمَّدٍ ابْنُ أُخْتِ سُفْيَانَ الثَّوْرِيِّ، قَالَ: حَدَّثَنَا لَيْثُ بْنُ أَبِي سُلَيْمٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سَابِطٍ، عَنْ أَبِي أُمَامَةَ، قَالَ: دَعَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِدُعَاءٍ كَثِيرٍ لَمْ نَحْفَظْ مِنْهُ شَيْئًا، قُلْنَا: يَا رَسُولَ اللهِ دَعَوْتَ بِدُعَاءٍ كَثِيرٍ لَمْ نَحْفَظْ مِنْهُ شَيْئًا، فَقَالَ: أَلاَ أَدُلُّكُمْ عَلَى مَا يَجْمَعُ ذَلِكَ كُلَّهُ، تَقُولُ: اللَّهُمَّ إِنَّا نَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا سَأَلَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا اسْتَعَاذَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَأَنْتَ الْمُسْتَعَانُ، وَعَلَيْكَ الْبَلاَغُ، وَلاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ.

3521 - सय्यदना अबू उमामा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बहुत सी दुआएं की जो हम याद न रख सके, हम ने अर्ज़ की : ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! आप(ﷺ) ने बहुत सी दुआएं की हैं, हम इन में से कुछ भी नहीं याद कर सके, आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या मैं तुम्हें उन सब दुआओं को जमा करने वाली दुआ न बताऊँ? तुम कहो " ऐ अल्लाह! हम तुझ से उस भलाई का सवाल करते हैं जो तुझ से तेरे नबी मुहम्मद (ﷺ) ने मांगी है और हम उस बुराई से तेरी पनाह में आते हैं जिस से तेरे नबी मुहम्मद (ﷺ) ने पनाह मांगी है, तू ही मददगार है तेरे ज़िम्मे ही (खैरो भलाई) का पहुंचाना है, गुनाह से बचने की ताक़त और नेकी करने की कुव्वत तेरी ही तौफ़ीक़ से है।"

ज़ईफ़: बुख़ारी फी अदबिल मुफ़रद: 679.तबरानी फ़िल कबीर:7791. बतरीके आख़र: अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:3356.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

96 - दुआ: ऐ दिलों के फेरने वाले।

96- بَابٌ دعاء يا مقلب القلوب.

3522 - शहर बिन हौशब कहते हैं मैंने सय्यदा उम्मे सलमा (رضي الله عنها) से दर्याफ़्त किया: ऐ उम्मुल मोमिनीन! रसूलुल्लाह (ﷺ) जब आप के पास होते थे तो आप अक्सर कौन सी दुआ पढ़ा करते थे? उन्होंने फ़रमाया, "रसूलुल्लाह(ﷺ) की अक्सर दुआ यह होती: " ऐ दिलों को फेरने वाले मेरे दिल को अपने दीन पर मज़बूत रख।" कहती हैं: मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! क्या वजह है कि आप ज़्यादातर यही दुआ करते हैं "ऐ दिलों को फेरने वाले मेरे दिल को अपने दीन पर मज़बूत रख।" आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ उम्मे सलमा! हर आदमी का दिल अल्लाह तआला की उँगलियों में से दो उँगलियों के दर्मियान है, फिर वह जिसे चाहे सीधा रखता है और जिस दिल को चाहे टेढ़ा कर देता है।" फिर मुआज़ (बिन मुआज़) ने यह आयत तिलावत की " ऐ हमारे रब! हमें हिदायत देने के बाद हमारे दिलों को टेढ़ा न करना।" (आले इमरान: 8)

अस- सिलसिला अस- सहीहा: 2091.

3522 - حَدَّثَنَا أَبُو مُوسَى الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ مُعَاذٍ، عَنْ أَبِي كَعْبٍ صَاحِبِ الحَرِيرِ قَالَ: حَدَّثَنِي شَهْرُ بْنُ حَوْشَبٍ، قَالَ: قُلْتُ لأُمِّ سَلَمَةَ: يَا أُمَّ الْمُؤْمِنِينَ مَا كَانَ أَكْثَرُ دُعَاءِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا كَانَ عِنْدَكِ؟ قَالَتْ: كَانَ أَكْثَرُ دُعَائِهِ: يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوبِ ثَبِّتْ قَلْبِي عَلَى دِينِكَ قَالَتْ: فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ مَا لأَكْثَرِ دُعَائِكَ يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوبِ ثَبِّتْ قَلْبِي عَلَى دِينِكَ؟ قَالَ: يَا أُمَّ سَلَمَةَ إِنَّهُ لَيْسَ آدَمِيٌّ إِلاَّ وَقَلْبُهُ بَيْنَ أُصْبُعَيْنِ مِنْ أَصَابِعِ اللهِ، فَمَنْ شَاءَ أَقَامَ، وَمَنْ شَاءَ أَزَاغَ. فَتَلاَ مُعَاذٌ {رَبَّنَا لاَ تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا}.

वज़ाहत: इस बारे में आयशा, नव्वास बिन समआन, अनस, जाबिर, अब्दुल्लाह बिन उमर और नुऐम बिन हिमार (رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

97 - बे ख़्वाबी का इलाज करने के लिए पढ़ी जाने वाली दुआ।

97- بَابٌ دعاء دفع الأرق اللهم رب السموات.

3523 - सुलैमान बिन बुरैदा अपने बाप से रिवायत करते हैं कि सय्यदना खालिद बिन

3523 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الحَكَمُ بْنُ ظُهَيْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَلْقَمَةُ بْنُ مَرْثَدٍ،

عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ بُرَيْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: شَكَا خَالِدُ بْنُ الْوَلِيدِ الْمَخْزُومِيُّ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ مَا أَنَامُ اللَّيْلَ مِنَ الأَرَقِ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا أَوَيْتَ إِلَى فِرَاشِكَ فَقُلْ: اللَّهُمَّ رَبَّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ وَمَا أَظَلَّتْ، وَرَبَّ الأَرَضِينَ وَمَا أَقَلَّتْ، وَرَبَّ الشَّيَاطِينِ وَمَا أَضَلَّتْ، كُنْ لِي جَارًا مِنْ شَرِّ خَلْقِكَ كُلِّهِمْ جَمِيعًا أَنْ يَفْرُطَ عَلَيَّ أَحَدٌ مِنْهُمْ أَوْ أَنْ يَبْغِيَ، عَزَّ جَارُكَ، وَجَلَّ ثَنَاؤُكَ، وَلاَ إِلَهَ غَيْرُكَ، وَلاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ.

वलीद मख़्ज़ूमी ने नबी (ﷺ) से शिकायत करते हुए अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मैं रात भर बेख़्वाबी[1] की वजह से सोता नहीं हूँ। तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब तुम अपने बिस्तर पर जाओ तो कहो " ऐ अल्लाह! सात आसमानों और उन चीजों के रब जिन्हें उन आसमानों ने साया किया है, ज़मीनों और उन चीजों के रब जिन्हें उस ने उठाया है, शैतानों और उन के रब जिन्हें उन्होंने गुमराह किया है, तू मेरे लिए अपनी तमाम मख़्लूक़ के शर से साथी बन जा, ताकि मुझ पर उन में से कोई भी ज्यादती न कर सके या मुझ पर सर्कशी न कर सके, तेरा साथी ग़ालिब होता है तेरी सना बुज़ुर्गी वाली है। तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तेरे सिवा कोई पूजा के लायक़ नहीं।"

अहमद: 6/294. अबू याला:6919. ज़ईफ़ुत्तर्गीब:994.

तौज़ीह: الأرق।1 : बेख्वाबी का मर्ज़, रात को नींद न आना। (अल-क़ामूसुल वहीद, पृ.120)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस हदीस की सनद मजूबत नहीं है और हकम बिन ज़ुहैर की हदीस को मोहद्दिसीन ने छोड़ा है। नीज़ यह हदीस एक और सनद से भी नबी (ﷺ) से मुर्सल मर्वी है।

98 - بَابُ قَولِ يَا حَيُّ يَا قَيُّومُ وَأَلِظُّوا بِيَا ذَا الجَلَالِ وَالإِكْرَامِ.

98 - दुआ: ऐ ज़िंदा कायम रखने वाले नीज़ या ज़ुल जलाल वल इक्राम को लाज़िम रखो।

3524 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ الْمُكْتِبُ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو بَدْرٍ شُجَاعُ بْنُ الْوَلِيدِ، عَنِ الرُّحَيْلِ بْنِ مُعَاوِيَةَ، أَخِي زُهَيْرِ بْنِ مُعَاوِيَةَ، عَنِ الرَّقَاشِيِّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا كَرَبَهُ أَمْرٌ قَالَ: يَا

3524 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) पर जब कोई मुश्किल आ पड़ती तो आप(ﷺ) कहते: "ऐ ज़िंदा रहने वाले! ऐ कायम रखने वाले! मैं तेरी रहमत के साथ मदद माँगता हूँ।" नीज़ इसी सनद से मर्वी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने

حَيُّ يَا قَيُّومُ بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيثُ.

وَبِإِسْنَادِهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَلِظُّوا بِيَا ذَا الجَلَالِ وَالإِكْرَامِ.

फ़रमाया, "या जुल जलाल वल इक्राम का वज़ीफ़ा लाजिम रखो।"

हसन: इब्ने सिन्नी फ़ी अमलिल यौम वल लैला:337. अल-कलिमुत्तय्यब:119.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। नीज़ यह हदीस एक और सनद से भी सय्यदना अनस (ﷺ) से मर्वी है।

3525 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْمُؤَمَّلُ، عَنْ حَمَّادِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ حُمَيْدٍ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: أَلِظُّوا بِيَا ذَا الجَلَالِ وَالإِكْرَامِ.

3525 - सय्यदना अनस (ﷺ) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "या जुल जलाल वल इक्राम का कहना लाजिम रखो।"

सहीह: अबू याला:3833. अस-सिलसिला अस-सहीहा:1236.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। और यह महफ़ूज़ नहीं है, यह तो हम्माद बिन सलमा से हुमैद के ज़रिए बवास्ता हसन बसरी नबी (ﷺ) से मर्वी है और यह ज़्यादा सहीह है। मोअम्मल ने इसमें ग़लती करते हुए अन हम्माद, अन हुमैद अन अनस कहा है जब कि उस पर मुताबअत नहीं है।

99 - بَابٌ فضل من أوي إلي فراشه طاهرا يذكر الله.

99 - बा वुज़ू सोने की फ़ज़ीलत।

3526 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ عَرَفَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَيَّاشٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي حُسَيْنٍ، عَنْ شَهْرِ بْنِ حَوْشَبٍ، عَنْ أَبِي أُمَامَةَ البَاهِلِيِّ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: مَنْ أَوَى إِلَى فِرَاشِهِ طَاهِرًا يَذْكُرُ اللَّهَ حَتَّى يُدْرِكَهُ النُّعَاسُ لَمْ يَنْقَلِبْ سَاعَةً مِنَ اللَّيْلِ يَسْأَلُ اللَّهَ شَيْئًا مِنْ خَيْرِ الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ إِلاَّ أَعْطَاهُ إِيَّاهُ.

3526 - सय्यदना अबू उमामा बाहिली (ﷺ) रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आप फ़रमा रहे थे: "जो शख़्स बावुज़ू अपने बिस्तर पर आकर अल्लाह का ज़िक्र करता रहा यहाँ तक कि उसे ऊंघ आने लगी वह रात की किसी भी घड़ी में करवट बदलते हुए अल्लाह तआला से दुनिया और आख़िरत की भलाई का सवाल करे तो अल्लाह तआला उसे वह चीज़ अता फ़रमा देंगे।"

ज़ईफ़: तबरानी:7568. अल-कलिमुत्तय्यब:44.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है और यह हदीस शह्र बिन हौशब से बवास्ता ज़बिया, अम्र बिन अब्सा के ज़रिए भी नबी (ﷺ) से इसी तरह मर्वी है।

3527 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الجُرَيْرِيِّ، عَنْ أَبِي الوَرْدِ، عَنِ اللَّجْلاَجِ، عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ، قَالَ: سَمِعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلاً يَدْعُو يَقُولُ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ تَمَامَ النِّعْمَةِ، فَقَالَ: أَيُّ شَيْءٍ تَمَامُ النِّعْمَةِ؟ قَالَ: دَعْوَةٌ دَعَوْتُ بِهَا أَرْجُو بِهَا الخَيْرَ. قَالَ: فَإِنَّ مِنْ تَمَامِ النِّعْمَةِ دُخُولَ الجَنَّةِ وَالفَوْزَ مِنَ النَّارِ، وَسَمِعَ رَجُلاً وَهُوَ يَقُولُ: يَا ذَا الجَلاَلِ وَالإِكْرَامِ، فَقَالَ: اسْتُجِيبَ لَكَ فَسَلْ، وَسَمِعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلاً وَهُوَ يَقُولُ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الصَّبْرَ، فَقَالَ: سَأَلْتَ اللَّهَ البَلاَءَ فَسَلْهُ العَافِيَةَ.

3527 - सय्यदना मुआज़ बिन जबल (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने एक आदमी को यह दुआ करते हुए सुना: "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से नेअ्मत के पूरे होने का सवाल करता हूँ" तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "नेअ्मत को पूरा करने वाली क्या चीज़ है?" उस ने कहा: एक दुआ है जिस के साथ मैंने भलाई का इरादा किया है। आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "नेअ्मत का पूरा होना जन्नत का दाख़िला और जहन्नम से आजादी है।" और आप (ﷺ) ने एक आदमी को सुना जो कह रहा था: "या ज़ुल जलाल वल इक्राम" तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम्हारी दुआ कुबूल की गई, अब सवाल करो।" और नबी ने एक आदमी को सुना जो कह रहा था: ऐ अल्लाह मैं तुझ से सब्र का सवाल करता हूँ आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम ने अल्लाह से तक्लीफ़ का सवाल किया है अब उस से आफ़ियत का सवाल कर।"

ज़ईफ़: अहमद:5/231. तबरानी:20/97. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:4520.

वज़ाहत: (अबू ईसा कहते हैं) हमें अहमद बिन मुनीअ ने बवास्ता इस्माईल बिन इब्राहीम इस सनद से ऐसे ही हदीस बयान की है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।

100 नीन्द में घबराहट के वक़्त की दुआ

100 بَابٌ دُعَاءُ الْفَزَعِ فِي النَّوْمِ

3528 - अम्र बिन शोऐब अपने बाप से वह अपने दादा (सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब तुम में से कोई शख़्स नींद में घबराए तो यह दुआ पढ़े: "मैं अल्लाह के मुकम्मल कलिमात के ज़रिए से पनाह माँगता हूँ, उस की नाराज़गी, उसकी सज़ा, उस के बन्दों के शर और शैतानों के वस्वसे डालने से और इस बात से कि वह शैतान मेरे पास आयें और मुझे बहकाएं।" तो यह घबराअहट उसे नुकसान नहीं पहुंचाएगी।" रावी कहते हैं अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) अपने बालिग़ बच्चों को यह सिखाते और जो उन में से बालिग़ न होता तो उसे किसी चीज़[1] में लिखते फिर उसे उस बच्चे के गले में लटका देते।

3528 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَيَّاشٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: إِذَا فَزِعَ أَحَدُكُمْ فِي النَّوْمِ فَلْيَقُلْ: أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ غَضَبِهِ وَعِقَابِهِ وَشَرِّ عِبَادِهِ، وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ وَأَنْ يَحْضُرُونِ فَإِنَّهَا لَنْ تَضُرَّهُ. فَكَانَ عَبْدُ اللهِ بْنُ عَمْرٍو، يُلَقِّنُهَا مَنْ بَلَغَ مِنْ وَلَدِهِ، وَمَنْ لَمْ يَبْلُغْ مِنْهُمْ كَتَبَهَا فِي صَكٍّ ثُمَّ عَلَّقَهَا فِي عُنُقِهِ.

अहमद:2/ 181. अबू दाऊद:3893. अब्दुल्लाह(رضي الله عنه) के अमल के बग़ैर बाकी हदीस हसन है। सहीहुत्तर्गीब:1601

तौज़ीह: صَكٌّ : किसी भी लिखी हुई चीज़ को कहा जाता है मसलन दस्तावेज़ात वग़ैरह। (अल-कामूसुल वहीद पृ.933)

101 - वह दुआ जो आप (ﷺ) ने अबू बक्र (رضي الله عنه) को सिखाई थी।

101 - بَابٌ دعاء علمه صلي الله عليه وسلم أبا بكر.

3529 - अबू राशिद जुब्रानी कहते हैं मैं सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (رضي الله عنه) के पास गया मैंने उन से कहा: आप हमें वह बयान कीजिए जो आप ने रसूलुल्लाह

3529 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ عَرَفَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَيَّاشٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زِيَادٍ، عَنْ أَبِي رَاشِدٍ الحُبْرَانِيِّ، قَالَ: أَتَيْتُ

عَبْدَ اللهِ بْنَ عَمْرِو بْنِ العَاصِ، فَقُلْتُ لَهُ: حَدِّثْنَا مِمَّا سَمِعْتَ مِنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَلْقَى إِلَيَّ صَحِيفَةً، فَقَالَ: هَذَا مَا كَتَبَ لِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: فَنَظَرْتُ فِيهَا فَإِذَا فِيهَا: إِنَّ أَبَا بَكْرٍ الصِّدِّيقَ قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ عَلِّمْنِي مَا أَقُولُ إِذَا أَصْبَحْتُ وَإِذَا أَمْسَيْتُ، فَقَالَ: يَا أَبَا بَكْرٍ قُلْ: اللَّهُمَّ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ عَالِمَ الغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَمَلِيكَهُ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِي، وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرْكِهِ، وَأَنْ أَقْتَرِفَ عَلَى نَفْسِي سُوءًا أَوْ أَجُرَّهُ إِلَى مُسْلِمٍ.

(ﷺ) से सुना है। तो उन्होंने एक सहीफा मेरी तरफ़ बढ़ाया, फिर कहने लगे: यह रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मेरे लिए लिखा था। रावी कहते हैं: मैंने उसे देखा तो उसमें था कि अबू बक्र सिद्दीक़ (رضي الله عنه) ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मुझे आप(ﷺ) कोई दुआ सिखाइए जो मैं सुबह शाम पढ़ूं, आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ अबू बक्र! तुम कहो: "ऐ अल्लाह! आसमानों और ज़मीन को पैदा करने वाले! गैब और हाज़िर को जानने वाले! तेरे सिवा कोई माबूद नहीं ऐ हर चीज़ के रब और उसके मालिक मैं तेरी पनाह में आता हूँ अपने नफ़्स के शर से, शैतान के शर और उसके शिर्क से और उस काम से कि मैं अपनी जान पर कोई बुरा काम करूं या उसे किसी मुसलमान की तरफ़ खींचूँ।"

सहीह: अहमद:2/ 196. बुख़ारी फी अदबिल मुफ़रद: 1204. अल-कलिमुत्तय्यब:22.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है।

102-بَابٌ لا أحد أغير من الله.

102-अल्लाह से बढ़ कर कोई ग़ैरत वाला नहीं

3530 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا وَائِلٍ، قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ مَسْعُودٍ، يَقُولُ: قُلْتُ لَهُ: أَنْتَ سَمِعْتَهُ مِنْ عَبْدِ اللهِ؟ قَالَ: نَعَمْ، وَرَفَعَهُ أَنَّهُ قَالَ: لاَ أَحَدَ أَغْيَرُ مِنَ اللهِ وَلِذَلِكَ حَرَّمَ

3530 - अम्र बिन मुर्रा कहते हैं मैंने अबू वाइल से हदीस सुनी कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) बयान करते हैं: मैंने उनसे कहा: क्या आप ने यह अब्दुल्लाह से सुनी है? उन्होंने कहा: हाँ, और यह मर्फ़ू है (यानी नबी (ﷺ) ने फ़रमाया): "अल्लाह से बढ़ कर कोई ग़ैरत वाला नहीं है। इसी वजह से उस ने ज़ाहिर और पोशीदा बेहयाइयों को हराम किया है और कोई

الفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ، وَلاَ أَحَدَ أَحَبُّ إِلَيْهِ الْمَدْحُ مِنَ اللهِ وَلِذَلِكَ مَدَحَ نَفْسَهُ.

शख़्स अल्लाह से ज़्यादा तारीफ़ को पसंद नहीं करता इसलिए उसने अपनी ख़ुद तारीफ़ की है।
बुख़ारी:4634. मुस्लिम:2760. अहमद:1/381.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

103 - بَابٌ دعاء اللَّهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ظُلْمًا كَثِيرًا.

103 - दुआ: ऐ अल्लाह! मैंने अपनी जान पर बहुत ज़ुल्म किया।

3531 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ أَبِي الخَيْرِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ، أَنَّهُ قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ عَلِّمْنِي دُعَاءً أَدْعُو بِهِ فِي صَلاَتِي. قَالَ: قُلْ: اللَّهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ظُلْمًا كَثِيرًا وَلاَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلاَّ أَنْتَ فَاغْفِرْ لِي مَغْفِرَةً مِنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِي إِنَّكَ أَنْتَ الغَفُورُ الرَّحِيمُ

3531 - सय्यदना अबू बक्र सिद्दीक़ (رضي الله عنه) से रिवायत है कि उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! आप मुझे कोई दुआ सिखाइए जो मैं अपनी नमाज़ में करूं। आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम कहो, ऐ अल्लाह! बिलाशुब्हा मैंने अपनी जान पर बहुत ज़ुल्म किया और तेरे सिवा कोई गुनाहों को माफ़ नहीं कर सकता, पस तू अपनी ख़ास बख़्शिश से माफ़ फ़रमा दे और मुझ पर रहम फ़रमा यक़ीनन तू बहुत बख़्शने वाला इन्तिहाई मेहरबान है।"
बुख़ारी:834. मुस्लिम:2705. इब्ने माजह:3835. निसाई:1302.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है और यह लैस बिन साद की हदीस है नीज़ अबू ख़ैर का नाम मर्सद बिन अब्दुल्लाह यज़नी है।

3532 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي زِيَادٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الحَارِثِ، عَنِ الْمُطَّلِبِ بْنِ أَبِي وَدَاعَةَ، قَالَ: جَاءَ العَبَّاسُ، إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَأَنَّهُ سَمِعَ شَيْئًا، فَقَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

3532 - मुत्तलिब बिन अबू वदाआ (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि अब्बास (رضي الله عنه) रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आए गोया वह कोई बात सुन कर आए थे, फिर नबी (ﷺ) मिम्बर पर खड़े हुए तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "मैं कौन हूँ?" लोगों ने कहा: आप अल्लाह के रसूल हैं। आप पर सलामती हो। आप ने फ़रमाया, "मैं मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब हूँ यक़ीनन अल्लाह तआला

عَلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ: مَنْ أَنَا؟، فَقَالُوا: أَنْتَ رَسُولُ اللهِ عَلَيْكَ السَّلَامُ. قَالَ: أَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، إِنَّ اللَّهَ خَلَقَ الخَلْقَ فَجَعَلَنِي فِي خَيْرِهِمْ فِرْقَةً، ثُمَّ جَعَلَهُمْ فِرْقَتَيْنِ فَجَعَلَنِي فِي خَيْرِهِمْ فِرْقَةً، ثُمَّ جَعَلَهُمْ قَبَائِلَ، فَجَعَلَنِي فِي خَيْرِهِمْ قَبِيلَةً، ثُمَّ جَعَلَهُمْ بُيُوتًا فَجَعَلَنِي فِي خَيْرِهِمْ بَيْتًا وَخَيْرِهِمْ نَسَبًا.

ने मख़्लूक़ को पैदा किया फिर मुझे उनके बेहतरीन गिरोह में शामिल किया, फिर उन के दो गिरोह बनाए मुझे उनके बेहतरीन गिरोह में शामिल किया, फिर उस ने कबीले बनाए तो मुझे बेहतरीन कबीले में शामिल किया, फिर उन के घराने बनाए तो मुझे उन के बेहतरीन घराने और बेहतरीन नसब में शामिल किया।"

ज़ईफ़: अहमद:1/201. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:3073.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।

103 - بَابٌ: فِي تساقط الذنوب.

103 - गुनाहों का गिर जाना।

3533 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حُمَيْدٍ الرَّازِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الفَضْلُ بْنُ مُوسَى، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرَّ بِشَجَرَةٍ يَابِسَةِ الوَرَقِ فَضَرَبَهَا بِعَصَاهُ فَتَنَاثَرَ الوَرَقُ، فَقَالَ: إِنَّ الحَمْدُ لِلَّهِ وَسُبْحَانَ اللهِ وَلاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ لَتُسَاقِطُ مِنْ ذُنُوبِ العَبْدِ كَمَا تَسَاقَطَ وَرَقُ هَذِهِ الشَّجَرَةِ.

3533 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) सूखे पत्तों वाले एक दरख़्त के पास से गुज़रे, तो आप(ﷺ) ने उस पर अपनी लाठी मारी, पत्ते गिर गए तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्हम्दुलिल्लाह, सुब्हान अल्लाह, ला इलाहा इल्लल्लाह और अल्लाहु अकबर बन्दे के गुनाहों को ऐसे ही झाड़ देते हैं जैसे इस दरख़्त के पत्ते गिर गए हैं।"
हसन: अबू नुएम फी हिल्या :5/55 सहीहुत्तर्गीब : 1570.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। आमश का अनस (رضي الله عنه) से सिमा (सुनना) साबित नहीं है लेकिन उन्होंने उन को देखा था।

3534 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ الجُلاَحِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ الحُبُلِيِّ، عَنْ عُمَارَةَ بْنِ شَبِيبٍ السَّبَئِيِّ، قَالَ:

3534 - उमारा बिन शबीब अस्सबई रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिस शख़्स ने मग़रिब की नमाज़ के बाद दस मर्तबा यह कहा: " अल्लाह के सिवा कोई

قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ قَالَ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الحَمْدُ، يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ عَشْرَ مَرَّاتٍ عَلَى إِثْرِ الْمَغْرِبِ بَعَثَ اللَّهُ لَهُ مَسْلَحَةً يَحْفَظُونَهُ مِنَ الشَّيْطَانِ حَتَّى يُصْبِحَ، وَكَتَبَ اللَّهُ لَهُ بِهَا عَشْرَ حَسَنَاتٍ مُوجِبَاتٍ، وَمَحَا عَنْهُ عَشْرَ سَيِّئَاتٍ مُوبِقَاتٍ، وَكَانَتْ لَهُ بِعَدْلِ عَشْرِ رِقَابٍ مُؤْمِنَاتٍ.

माबूद नहीं वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाहत है, उसी के लिए हर क़िस्म की तारीफ़ है, वही ज़िंदा करता है और मारता है और वह हर चीज़ पर कामिल कुदरत रखने वाला है, तो अल्लाह तआला उस के लिए दस अस्लहा बर्दार (हथियारबंद) फ़रिश्ते भेज देता है जो सुबह तक शैतान से उसकी हिफाज़त करते हैं, उस के दस वाजिब करने वाली नेकियाँ लिख देता है, उस से दस हलाक करने वाली बुराइयां मिटा देता है और यह वजीफा उस के लिए दस ईमान वाले गुलाम आज़ाद करने के बराबर होता है।"

निसाई: 577. सहीहुत्तर्गीब:473.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे लैस बिन साद के तरीक़ से ही जानते हैं और उमारा बिन शबीब का नबी (ﷺ) से सिमा करना (सुनना) हमारे इल्म में नहीं है।

104 بَابٌ فِي فَضْلِ التَّوْبَةِ وَالاِسْتِغْفَارِ وَمَا ذُكِرَ مِنْ رَحْمَةِ اللهِ بِعِبَادِهِ

104 - तौबा व इस्तिग़फ़ार की फ़ज़ीलत और अल्लाह तआला की अपने बन्दों पर रहमत का तज़किरा।

3535 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَاصِمِ بْنِ أَبِي النَّجُودِ، عَنْ زِرِّ بْنِ حُبَيْشٍ، قَالَ: أَتَيْتُ صَفْوَانَ بْنَ عَسَّالٍ الْمُرَادِيَّ، أَسْأَلُهُ عَنِ الْمَسْحِ عَلَى الْخُفَّيْنِ، فَقَالَ: مَا جَاءَ بِكَ يَا زِرُّ؟ فَقُلْتُ: ابْتِغَاءَ العِلْمِ، فَقَالَ: إِنَّ الْمَلاَئِكَةَ لَتَضَعُ أَجْنِحَتَهَا لِطَالِبِ العِلْمِ رِضًا بِمَا يَطْلُبُ. فَقُلْتُ: إِنَّهُ

3535 - जिर्र बिन हुबैश कहते हैं मैं सय्यदना सफ़वान बिन अस्साल मुरादी (رضي الله عنه) के पास मोजों पर मसह करने के बारे में पूछने आया तो उन्होंने फ़रमाया, ऐ जिर्र! तुम्हें क्या चीज़ लाई है? मैंने कहा: इल्म की तलाश, तो उन्होंने फ़रमाया, "फ़रिश्ते तालिबे इल्म के लिए उसकी तलब की रज़ा में अपने पर बिछाते हैं। मैंने कहा: बोलो बराज़ (पेशाब- पाखाना) के बाद मोजों पर मसह करने के मुताल्लिक़ मेरे दिल में खटका

حَكَّ فِي صَدْرِي الْمَسْحُ عَلَى الْخُفَّيْنِ بَعْدَ الغَائِطِ وَالبَوْلِ، وَكُنْتَ امْرَأً مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَجِئْتُ أَسْأَلُكَ هَلْ سَمِعْتَهُ يَذْكُرُ فِي ذَلِكَ شَيْئًا. قَالَ: نَعَمْ، كَانَ يَأْمُرُنَا إِذَا كُنَّا سَفَرًا أَوْ مُسَافِرِينَ أَنْ لاَ نَنْزِعَ خِفَافَنَا ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ وَلَيَالِيهِنَّ إِلاَّ مِنْ جَنَابَةٍ، لَكِنْ مِنْ غَائِطٍ وَبَوْلٍ وَنَوْمٍ، فَقُلْتُ: هَلْ سَمِعْتَهُ يَذْكُرُ فِي الْهَوَى شَيْئًا؟ قَالَ: نَعَمْ، كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سَفَرٍ فَبَيْنَا نَحْنُ عِنْدَهُ إِذْ نَادَاهُ أَعْرَابِيٌّ بِصَوْتٍ لَهُ جَهْوَرِيٍّ يَا مُحَمَّدُ. فَأَجَابَهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى نَحْوٍ مِنْ صَوْتِهِ هَاؤُمُ وَقُلْنَا لَهُ: وَيْحَكَ اغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ فَإِنَّكَ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَدْ نُهِيتَ عَنْ هَذَا. فَقَالَ: وَاللَّهِ لاَ أَغْضُضُ. قَالَ الأَعْرَابِيُّ: الْمَرْءُ يُحِبُّ الْقَوْمَ وَلَمَّا يَلْحَقْ بِهِمْ، قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الْمَرْءُ مَعَ مَنْ أَحَبَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ. فَمَا زَالَ يُحَدِّثُنَا حَتَّى ذَكَرَ بَابًا مِنْ قِبَلِ الْمَغْرِبِ مَسِيرَةُ عَرْضِهِ، أَوْ يَسِيرُ الرَّاكِبُ فِي عَرْضِهِ أَرْبَعِينَ أَوْ سَبْعِينَ عَامًا، قَالَ سُفْيَانُ: قِبَلَ الشَّامِ خَلَقَهُ اللَّهُ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ

सा था और मैं भी नबी (ﷺ) के सहाबा में से हूँ तो मैं आप के पास यह पूछने आया हूँ कि क्या आप ने नबी (ﷺ) को इसका तज़किरा करते हुए सुना है? उन्होंने फ़रमाया, "हाँ आप (ﷺ) ने हुक्म दिया था कि जब हम सफ़र में हों तो हम तीन दिन और रातें अपने मोज़े न उतारें सिवाए जनाबत के, लेकिन बोलो बराज़ और नींद की वजह से (न उतारें), रावी कहते हैं: फिर मैंने कहा: क्या आप ने मोहब्बत के बारे में भी आप से कुछ सुना है? उन्होंने फ़रमाया,हाँ, हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ एक सफ़र में थे हम आप के पास ही थे कि अचानक एक बदवी ने आप को बलंद आवाज़ से पुकारा, ऐ मुहम्मद! तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने भी वैसे ही आवाज़ में उसे जवाब दिया: " आओ" हम ने उस बदवी से कहा: अपनी आवाज़ को पस्त रख इसलिए कि तुम नबी (ﷺ) के पास हो और तुझे इस से मना किया गया है, तो वह कहने लगा: अल्लाह की क़सम! मैं आहिस्ता नहीं बोलूंगा फिर आराबी कहने लगा: एक आदमी किसी कौम से मोहब्बत करता है लेकिन अभी तक उन से मिला नहीं। तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "आदमी क़यामत के दिन उसी के साथ होगा जिससे उस की मोहब्बत है।" फिर आप (ﷺ) बयान करते रहे यहाँ तक कि आप(ﷺ) ने मग़रिब की तरफ़ एक दरवाज़े का ज़िक्र किया जिसकी मसाफ़त चौड़ाई में सत्तर साल है या यह कि ऊँट सवार उसकी चौड़ाई में चालीस साल या सत्तर साल चल सकता है।" सुफ़ियान कहते हैं: " यह

وَالأَرْضَ مَفْتُوحًا، يَعْنِي لِلتَّوْبَةِ، لاَ يُغْلَقُ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْهُ.

दरवाज़ा शाम की तरफ़ है उसे अल्लाह तआला ने उसी दिन बनाया था जिस दिन आसमानों और ज़मीनों को बनया था। यह तौबा के लिए खुला है यह उस वक़्त तक बंद नहीं होगा जब तक सूरज उस से तुलू न हो।"

हसन: तख़रीज के लिए देखें हदीस नम्बर:96.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3536 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدَةَ الضَّبِّيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ عَاصِمٍ، عَنْ زِرِّ بْنِ حُبَيْشٍ، قَالَ: أَتَيْتُ صَفْوَانَ بْنَ عَسَّالٍ الْمُرَادِيَّ، فَقَالَ لِي: مَا جَاءَ بِكَ؟ قُلْتُ: ابْتِغَاءَ العِلْمِ. قَالَ: بَلَغَنِي أَنَّ الْمَلاَئِكَةَ تَضَعُ أَجْنِحَتَهَا لِطَالِبِ العِلْمِ رِضًا بِمَا يَفْعَلُ، قَالَ: قُلْتُ لَهُ: إِنَّهُ حَاكَ، أَوْ قَالَ: حَكَّ فِي نَفْسِي شَيْءٌ مِنَ الْمَسْحِ عَلَى الخُفَّيْنِ، فَهَلْ حَفِظْتَ مِنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيهِ شَيْئًا؟ قَالَ: نَعَمْ، كُنَّا إِذَا كُنَّا سَفَرًا أَوْ مُسَافِرِينَ أُمِرْنَا أَنْ لاَ نَخْلَعَ خِفَافَنَا ثَلاَثًا إِلاَّ مِنْ جَنَابَةٍ، وَلَكِنْ مِنْ غَائِطٍ وَبَوْلٍ وَنَوْمٍ، قَالَ: فَقُلْتُ: فَهَلْ حَفِظْتَ مِنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الهَوَى شَيْئًا؟ قَالَ: نَعَمْ، كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي بَعْضِ أَسْفَارِهِ فَنَادَاهُ رَجُلٌ كَانَ فِي آخِرِ القَوْمِ بِصَوْتٍ جَهْوَرِيٍّ أَعْرَابِيٌّ جِلْفٌ جَافٍ فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ يَا مُحَمَّدُ،

3536 - ज़िर्र बिन हुबैश कहते हैं: मैं सफ़वान बिन अस्साल मुरादी के पास गया तो उन्होंने मुझ से फ़रमाया, तुम्हें क्या चीज़ लेकर आई है? मैंने कहा: इल्म की तलाश, उन्होंने कहा: मुझे यह हदीस पहुंची है कि फ़रिश्ते तालिबे इल्म के काम से खुश हो कर उस के नीचे पर बिछाते हैं। रावी कहते हैं: मैंने उन से कहा: मेरे दिल में मोजों पर मसह करने के बारे में कुछ खटका सा है क्या आप ने इस बारे में रसूलुल्लाह (ﷺ) से कोई बात याद रखी है? उन्होंने कहा: हाँ, जब हम सफ़र में होते थे तो आप हमें हुक्म देते थे कि हम अपने मोज़े तीन दिन तक न उतारें सिवाए जनाबत के, लेकिन बोलो बराज़ और नींद की वजह से (न उतारें)। रावी कहते हैं: फिर मैंने कहा क्या आप ने मोहब्बत के बारे में रसूलुल्लाह (ﷺ) से कोई बात याद रखी है? उन्होंने कहा: हाँ, हम किसी सफ़र में रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ थे कि लोगों के पीछे से एक अहमक़ और सख़्त मिजाज़ बदवी ने बलंद आवाज़ से आप (ﷺ) को आवाज़ दी: ऐ मुहम्मद! ऐ मुहम्मद! तो लोगों ने उस से कहा: क्या है तुम्हें इस से रोका गया है। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने भी उसे वैसे ही

فَقَالَ لَهُ الْقَوْمُ: مَهْ، إِنَّكَ قَدْ نُهِيتَ عَنْ هَذَا، فَأَجَابَهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَحْوًا مِنْ صَوْتِهِ هَاؤُمُ فَقَالَ: الرَّجُلُ يُحِبُّ الْقَوْمَ وَلَمَّا يَلْحَقْ بِهِمْ، قَالَ: فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الْمَرْءُ مَعَ مَنْ أَحَبَّ. قَالَ زِرٌّ: فَمَا بَرِحَ يُحَدِّثُنِي حَتَّى حَدَّثَنِي أَنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ جَعَلَ بِالْمَغْرِبِ بَابًا عَرْضُهُ مَسِيرَةُ سَبْعِينَ عَامًا لِلتَّوْبَةِ لاَ يُغْلَقُ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ قِبَلِهِ، وَذَلِكَ قَوْلُ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ {يَوْمَ يَأْتِي بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ لاَ يَنْفَعُ نَفْسًا إِيمَانُهَا} الآيَةَ.

आवाज़ में जवाब दिया " आ जाओ" उस ने कहा: एक आदमी किसी कौम से मोहब्बत करता है जबकि अभी तक उन से मिला नहीं, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "आदमी उस के साथ होगा जिस से उसकी मोहब्बत है।" जिर्र कहते हैं: फिर वह (सफ़वान) मुझे बयान करते रहे हत्ता कि उन्होंने बयान किया कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने मग़रिब में एक तौबा के लिए दरवाज़ा बनाया है जिसकी चौड़ाई सत्तर साल की मसाफ़त है वह बन्द नहीं होगा हत्ता(यहाँ तक) कि सूरज उस तरफ़ से निकले और यही अल्लाह तबारक व तआला का फ़रमान है "जिस दिन तेरे रब की बअ्ज़ निशानियाँ आ जाएंगी तो किसी जान को उसका ईमान नफ़ा नहीं दे सकेगा।" (अल- अन्आम: 158)

सहीहुल इस्नाद: तख़रीज के लिए देखें हदीस नम्बर:96.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

105 بَابٌ إِنَّ اللهَ يَقْبَلُ تَوْبَةَ الْعَبْدِ مَا لَمْ يُغَرْغِرْ

105-अल्लाह बन्दे की तौबा उस वक़्त तक क़ुबूल करता है जब तक उसका दम गले में न अटक जाए।

3537 - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ يَعْقُوبَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَيَّاشٍ الحِمْصِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ ثَابِتِ بْنِ ثَوْبَانَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ مَكْحُولٍ، عَنْ جُبَيْرِ بْنِ نُفَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّ اللَّهَ يَقْبَلُ تَوْبَةَ العَبْدِ مَا لَمْ يُغَرْغِرْ. هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ.

3537 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़र्माया, "अल्लाह तआला बन्दे की तौबा उस वक़्त तक कुबूल करता है जब तक उसका सांस गले में न अटक जाए।"(1)

हसन : इब्ने माजह:3253. सहीहुत्तर्गीब:3143. अहमद:2/132. हाकिम:4/257.

तौज़ीह: يُغَرْغِرْ। : ग़र ग़र गले में दम अटक जाना आख़िरी साँसें लेना।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने उन्हें अबू आमिर अक्दी ने अब्दुर्रहमान बिन साबित बिन सौबान से उन्हें उन के बाप ने मक्हूल से बवास्ता ज़ुबैर बिन नुफ़ैर इब्ने उमर (رضي الله) से इसी सनद के साथ इसी मफ़हूम की हदीसे नबवी बयान की है।

106- अल्लाह बन्दे की तौबा से बहुत ख़ुश होता है

106 بَابٌ لله اَفْرَحُ بِتَوْبَةِ أَحَدِكُمْ

3538 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْمُغِيرَةُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَلَّهُ أَفْرَحُ بِتَوْبَةِ أَحَدِكُمْ مِنْ أَحَدِكُمْ بِضَالَّتِهِ إِذَا وَجَدَهَا.

3538 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "यक़ीनन अल्लाह तआला तुम में से किसी शख़्स की तौबा की वजह से उस बन्दे से भी ज़्यादा ख़ुश होता है जिसे उस की गुमशुदा सवारी मिल जाए।"

मुस्लिम:2743. इब्ने माजह:4247.

वज़ाहत: इस बारे में इब्ने मसऊद, नौमान बिन बशीर और अनस (رضي الله) से भी अहादीस मर्वी है और यह हदीस अबू ज़िनाद के इस तरीक़ से हसन सहीह ग़रीब है। नीज़ यह हदीस मक्हूल से भी उनकी सनद से बवास्ता अबू ज़र (رضي الله) नबी (ﷺ) से इसी तरह ही मर्वी है।

107- अगर तुम गुनाह न करो तो अल्लाह तआला ऐसे लोग पैदा कर दे जो गुनाह करें फिर अल्लाह उन्हें बख़्शे

107 بَابٌ لَوْلَا أَنَّكُمْ تُذْنِبُوْنَ لَخَلَقَ اللهُ خَلْقًا يُذْنِبُوْنَ فَيَغْفِرُ لَهُمْ

3539 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ قَيْسٍ، قَاصِّ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ العَزِيزِ عَنْ أَبِي صِرْمَةَ، عَنْ أَبِي أَيُّوبَ، أَنَّهُ قَالَ حِينَ حَضَرَتْهُ الوَفَاةُ: قَدْ كَتَمْتُ عَنْكُمْ شَيْئًا سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ، سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ، يَقُولُ: لَوْلاَ أَنَّكُمْ تُذْنِبُونَ لَخَلَقَ اللَّهُ خَلْقًا يُذْنِبُونَ فَيَغْفِرَ لَهُمْ.

3539 - अबू सिर्मा रिवायत करते हैं कि अबू अय्यूब (رضي الله) ने अपनी वफ़ात के वक़्त कहा: मैंने तुम से एक हदीस छिपाई थी जो मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी थी, मैंने अल्लाह के रसूल (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "अगर तुम गुनाह न करो तो अल्लाह तआला ऐसे लोग पैदा कर दे जो गुनाह करें (फिर तौबा करें) तो अल्लाह तआला उन्हें माफ़ फ़रमा दे।"

मुस्लिम:2748. अहमद:5/414.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है और यह मुहम्मद बिन काब से भी बवास्ता अबू अय्यूब नबी (ﷺ) से इसी तरह मर्वी है। हमें यह हदीस कुतैबा ने अब्दुर्रहमान बिन अबू रिजाल से उन्होंने उमर मौला गफ़रा से उन्होंने मुहम्मद बिन काब कुर्ज़ी से बवास्ता अबू अय्यूब (رضي الله عنه) नबी (ﷺ) से ऐसे ही बयान की है।

108 हदीसे कुद्सी: ऐ इब्ने आदम तू जब तक मुझे पुकारता रहेगा..

108 بَابٌ الْحَدِيثُ الْقُدْسِي يَا ابْنَ آدَمَ إِنَّكَ مَادَعَوْتَنِي

3540 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "अल्लाह तबारक व तआला फ़रमाते हैं ऐ इब्ने आदम जब मुझे पुकारता और मुझ से (मग़्फ़िरत की) उम्मीद करता रहेगा मैं तुम्हारी तमाम आदतों के बावजूद तुम्हें बख़्शता रहूंगा और मैं परवाह नहीं करूंगा, ऐ इब्ने आदम अगर तेरे गुनाह आसमान के बादलों को भी पहुँच जाएँ फिर तू मुझ से माफ़ी मांगे तो मैं तुझे बख़्श दूंगा और मैं परवाह नहीं करूंगा, ऐ इब्ने आदम! अगर तू ज़मीन भर कर मेरे पास गुनाह ले कर आ जाए फिर तू मुझे इस हाल में मिले कि तुम ने मेरे साथ शिर्क न किया हो तो उसे भर कर तेरे पास मग़्फ़िरत के साथ आउंगा।"

सहीह: सहीहुत्तर्गीब: 1616.

3540 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ إِسْحَاقَ الجَوْهَرِيُّ البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا كَثِيرُ بْنُ فَائِدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُبَيْدٍ، قَالَ: سَمِعْتُ بَكْرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ الْمُزَنِيَّ، يَقُولُ: حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: قَالَ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى: يَا ابْنَ آدَمَ إِنَّكَ مَا دَعَوْتَنِي وَرَجَوْتَنِي غَفَرْتُ لَكَ عَلَى مَا كَانَ فِيكَ وَلاَ أُبَالِي، يَا ابْنَ آدَمَ لَوْ بَلَغَتْ ذُنُوبُكَ عَنَانَ السَّمَاءِ ثُمَّ اسْتَغْفَرْتَنِي غَفَرْتُ لَكَ، وَلاَ أُبَالِي، يَا ابْنَ آدَمَ إِنَّكَ لَوْ أَتَيْتَنِي بِقُرَابِ الأَرْضِ خَطَايَا ثُمَّ لَقِيتَنِي لاَ تُشْرِكُ بِي شَيْئًا لأَتَيْتُكَ بِقُرَابِهَا مَغْفِرَةً.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे सिर्फ़ इसी तरीक़ से जानते हैं।

109 - अल्लाह तआ़ला ने सौ रहमतों को पैदा किया।

109 - بَابٌ خلق الله مائة رحمة.

3541 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने सौ रहमतों को पैदा किया फिर उस ने एक रहमत को अपनी मख़्लूक़ में रखा जिस की वजह से वह एक दूसरे पर शफ़क़त करते हैं, और निन्नानवे रहमतें अल्लाह के पास हैं।"

बुख़ारी:6000. मुस्लिम:2752. इब्ने माजह:4293. अस-सिलसिला अस-सहीहा:1634.

3541 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ العَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنِ العَلَاءِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: خَلَقَ اللَّهُ مِائَةَ رَحْمَةٍ فَوَضَعَ رَحْمَةً وَاحِدَةً بَيْنَ خَلْقِهِ يَتَرَاحَمُونَ بِهَا وَعِنْدَ اللهِ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ رَحْمَةً.

वज़ाहत: इस बारे में सलमान और जुन्दुब बिन अब्दुल्लाह बिन सुफ़ियान बजली (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है। इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

110-अगर मोमिन अल्लाह के अज़ाबों को जान ले

110 بَابٌ لَوْ يَعْلَمُ الْمُؤْمِنُ مَا عِنْدَ اللهِ مِنَ الْعُقُوبَةِ

3542 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अगर मोमिन वह जान ले जो अल्लाह के पास अज़ाब हैं तो किसी को भी जन्नत का लालच न रहे, और अगर काफ़िर अल्लाह की रहमतों को जान ले तो जन्नत से कोई भी नाउम्मीद न हो।"

तख़रीज के लिए देखें पिछली हदीस।

3542 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ العَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنِ العَلَاءِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَوْ يَعْلَمُ الْمُؤْمِنُ مَا عِنْدَ اللهِ مِنَ العُقُوبَةِ مَا طَمِعَ فِي الجَنَّةِ أَحَدٌ، وَلَوْ يَعْلَمُ الكَافِرُ مَا عِنْدَ اللهِ مِنَ الرَّحْمَةِ مَا قَنَطَ مِنَ الجَنَّةِ أَحَدٌ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है। हम इसे अला बिन अब्दुर्रहमान से ही उनके बाप के ज़रिए अबू हुरैरा (ﷺ) से जानते हैं।

111-मेरी रहमत मेरे ग़ुस्से पर ग़ालिब है

111 بَابٌ إِنَّ رَحْمَتِي تَغْلِبُ غَضَبِي

3543 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ عَجْلَانَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ، قَالَ: إِنَّ اللَّهَ حِينَ خَلَقَ الخَلْقَ كَتَبَ بِيَدِهِ عَلَى نَفْسِهِ: إِنَّ رَحْمَتِي تَغْلِبُ غَضَبِي.

3543 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने जब मख़्लूक़ को पैदा किया तो अपने हाथ से अपने आप पर यह बात लिखी, कि मेरी रहमत मेरे गज़ब पर ग़ालिब है।"

बुख़ारी:3194. मुस्लिम:2751. इब्ने माजह:179.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3544 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي الثَّلْجِ،، رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ بَغْدَادَ أَبُو عَبْدِ اللهِ صَاحِبُ أَحْمَدَ بْنِ حَنْبَلٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ زَرْبِيٍّ، عَنْ عَاصِمٍ الأَحْوَلِ، وَثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: دَخَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَسْجِدَ وَرَجُلٌ قَدْ صَلَّى وَهُوَ يَدْعُو وَيَقُولُ فِي دُعَائِهِ: اللَّهُمَّ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ الْمَنَّانُ بَدِيعُ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ ذَا الجَلَالِ وَالإِكْرَامِ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَتَدْرُونَ بِمَ دَعَا اللَّهَ؟ دَعَا اللَّهَ بِاسْمِهِ الأَعْظَمِ، الَّذِي إِذَا دُعِيَ بِهِ أَجَابَ، وَإِذَا سُئِلَ بِهِ أَعْطَى.

3544 - सय्यदना अनस (ﷺ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) मस्जिद में दाख़िल हुए तो एक आदमी नमाज़ पढ़ चुका था और दुआ मांग रहा था अपनी दुआ में कह रहा था: ऐ अल्लाह! अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, तू बहुत एहसान करने वाला है ऐ ज़मीनों आसमान के पैदा करने वाले! और साहिबे जलाल और इज़्ज़त वाले! तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या तुम जानते हो कि उस ने किस चीज़ के साथ अल्लाह से दुआ की है? उस ने अल्लाह से उस के उस इस्मे आज़म के साथ दुआ की है जिसके साथ उससे जब दुआ की जाए तो वह क़ुबूल करता है और जब उस से सवाल किया जाए तो वह देता है।"

सहीह: अबू दाऊद:1495. इब्ने माजह:3854. निसाई:1300.

112 - फ़रमाने रसूल (ﷺ) उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो।।

112- بَابُ قول رسول الله صلي الله عليه وسلم رغم أنف رجل.

3545 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जाए जिस के पास मेरा नाम लिया जाए तो वह मुझ पर दरूद न पढ़े, उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास रमजान आकर गुज़र गया लेकिन उसे बख्शा न गया और उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस ने अपने पास अपने मां बाप को बुढ़ापे में पाया फिर वह दोनों उसे जन्नत में दाख़िल न कर सके।" अब्दुर्रहमान ने कहा: "मेरा ख्याल है कि उन्होंने कहा: " या उन में से एक।"

हसन सहीह: अहमद:2/254. हाकिम:1/549. सहीहुत्तर्गीब:1680.

3545 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الدَّوْرَقِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا رِبْعِيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: رَغِمَ أَنْفُ رَجُلٍ ذُكِرْتُ عِنْدَهُ فَلَمْ يُصَلِّ عَلَيَّ، وَرَغِمَ أَنْفُ رَجُلٍ دَخَلَ عَلَيْهِ رَمَضَانُ ثُمَّ انْسَلَخَ قَبْلَ أَنْ يُغْفَرَ لَهُ، وَرَغِمَ أَنْفُ رَجُلٍ أَدْرَكَ عِنْدَهُ أَبَوَاهُ الكِبَرَ فَلَمْ يُدْخِلاَهُ الجَنَّةَ قَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ: وَأَظُنُّهُ قَالَ: أَوْ أَحَدُهُمَا.

वज़ाहत: (इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) ने कहा): इस बारे में जाबिर और अनस (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है नीज़ इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है।

और रिबई बिन इब्राहीम, इस्माईल बिन इब्राहीम के भाई हैं यह सिक़ह हैं, यही इब्ने उलय्या है और बअ़ज़ उलमा से मर्वी है कि जब कोई आदमी एक मजलिस में नबी (ﷺ) पर एक मर्तबा दरूद पढ़ ले तो जब तक वह मजलिस में रहेगा उसे यही काफ़ी होगा।

3546 - सय्यदना अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "बखील वह है जिस के पास मेरा ज़िक्र किया जाए लेकिन वह मुझ पर दरूद न पढ़े।"

सहीह: अहमद: 1/201. अबू याला:6776. इब्ने हिब्बान:909. सहीहुत्तर्गीब:1683.

3546 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى، وَزِيَادُ بْنُ أَيُّوبَ، قَالاَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ العَقَدِيُّ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ بِلاَلٍ، عَنْ عُمَارَةَ بْنِ غَزِيَّةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنِ بْنِ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ حُسَيْنِ بْنِ عَلِيِّ بْنِ أَبِي

طَالِبٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَسَلَّمَ: الْبَخِيلُ الَّذِي مَنْ ذُكِرْتُ عِنْدَهُ فَلَمْ يُصَلِّ عَلَيَّ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है।

113 - दुआ: ऐ अल्लाह मेरे दिल को ठंडा कर दे।

113- بَابُ دُعَاءِ: اللَّهُمَّ بَرِّدْ قَلْبِي.

3547 - अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) दुआ किया करते थे: " ऐ अल्लाह मेरे दिल को बर्फ़, ओलों और ठंडे पानी से ठंडा कर दे, ऐ अल्लाह! मेरे दिल को गुनाहों से (इस तरह) साफ़ कर दे जैसे तू सफ़ेद कपड़े को मैल से साफ़ कर देता है।"

सहीह: निसाई:402. अहमद:4/354. इब्ने हिब्बान:956.

3547 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الدَّوْرَقِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، عَنِ الحَسَنِ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ السَّائِبِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى، قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: اللَّهُمَّ بَرِّدْ قَلْبِي بِالثَّلْجِ وَالبَرَدِ، وَالمَاءِ البَارِدِ، اللَّهُمَّ نَقِّ قَلْبِي مِنَ الخَطَايَا كَمَا نَقَّيْتَ الثَّوْبَ الأَبْيَضَ مِنَ الدَّنَسِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

114- जिसके लिये दुआ का दरवाज़ा खोल दिया जाए

114 بَابٌ مَنْ فُتِحَ لَهُ مِنْكُمْ بَابُ الدُّعَاءِ

3548 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम में से जिस शख़्स के लिए दुआ का दरवाज़ा खोल दिया गया उस के लिए रहमत के दरवाज़े खोल दिए गए और अल्लाह तआला को किसी चीज़ का सवाल उतना अच्छा नहीं लगता जितना अच्छा उस से आफ़ियत का सवाल करना उसे अच्छा लगता है।"

ज़ईफ़: तख़रीज के लिए देखें हदीस नम्बर:3515.

3548 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ عَرَفَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ القُرَشِيِّ، عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَنْ فُتِحَ لَهُ مِنْكُمْ بَابُ الدُّعَاءِ فُتِحَتْ لَهُ أَبْوَابُ الرَّحْمَةِ، وَمَا سُئِلَ اللَّهُ شَيْئًا يَعْنِي أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ أَنْ يُسْأَلَ العَافِيَةَ. وَقَالَ رَسُولُ

اللهِ ﷺ: إِنَّ الدُّعَاءَ يَنْفَعُ مِمَّا نَزَلَ وَمِمَّا لَمْ يَنْزِلْ، فَعَلَيْكُمْ عِبَادَ اللهِ بِالدُّعَاءِ.

और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "दुआ आई हुई मुसीबत से भी नफ़ा देती है और जो अभी नहीं उतरी उस से भी नफ़ा देती है लिहाज़ा ऐ अल्लाह के बन्दों! दुआ को लाजिम रखो।" (आमीन)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। हम इसे अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र कुर्शी के तरीक़ से ही जानते हैं। यह मक्की अल-मुल्की ही है जो कि हदीस में ज़ईफ़ है, उस के हाफ़िज़े की वजह से बअ़ज़ मोहद्दिसीन ने उस में कलाम की है। जबकि इस्राईल ने यह हदीस अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र से मूसा बिन उक़्बा के ज़रिए बवास्ता नाफ़े, इब्ने उमर (رضي الله عنه) से इसी तरह रिवायत की है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला से किसी चीज़ का सवाल नहीं किया गया जो उसे आफ़ियत के सवाल से ज़्यादा पसंद हो।" (ज़ईफ़)

3549 - حَدَّثَنَا بِذَلِكَ القَاسِمُ بْنُ دِينَارٍ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ الكُوفِيُّ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، بِهَذَا. حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو النَّضْرِ، قَالَ: حَدَّثَنَا بَكْرُ بْنُ خُنَيْسٍ، عَنْ مُحَمَّدٍ القُرَشِيِّ، عَنْ رَبِيعَةَ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ أَبِي إِدْرِيسَ الخَوْلَانِيِّ، عَنْ بِلَالٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: عَلَيْكُمْ بِقِيَامِ اللَّيْلِ فَإِنَّهُ دَأْبُ الصَّالِحِينَ قَبْلَكُمْ، وَإِنَّ قِيَامَ اللَّيْلِ قُرْبَةٌ إِلَى اللهِ، وَمَنْهَاةٌ عَنِ الإِثْمِ، وَتَكْفِيرٌ لِلسَّيِّئَاتِ، وَمَطْرَدَةٌ لِلدَّاءِ عَنِ الجَسَدِ.

3549 - सय्यदना बिलाल (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया; " तुम क़यामुल लैल को अपनाओ इसलिए कि यह नेक लोगों (सालिहीन) की आदत है जो तुम में से पहले थे, नीज़ कयामुल लैल अल्लाह की कुर्बत का बाइस, गुनाह से रुकने का ज़रिया, बुराइयों को मिटाने और जिस्म से बुराई को भगाने का आला है।"

ज़ईफ़:इब्ने तसर फी क़यामिल लैल:18. हिदायुर्रूवात:1184.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। हम इसे सिर्फ इसी तरीक़ से ही बिलाल (رضي الله عنه) से जानते हैं, लेकिन यह सनद सहीह नहीं है। इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) ने कहा: मैंने मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी को फ़रमाते हुए सुना कि मुहम्मद कुर्शी, मुहम्मद बिन सईद शामी, अबू कैस का बेटा है और यही मुहम्मद बिन हस्सान है इसकी हदीस मतरूक है।

नीज़ यह हदीस मुआविया बिन अबी सालेह ने भी रबीया बिन यज़ीद से अबू इदरीस खौलानी के ज़रिए बवास्ता अबू उमामा (رضي الله عنه) नबी (ﷺ) से रिवायत की है। हमें यह हदीस मुहम्मद बिन इस्माईल ने,

उन्हें अब्दुल्लाह बिन सालेह ने मुआविया बिन सालेह से, "कयामुल लैल (तहज्जुद) को अपनाओ, इसलिए कि यह तुम से पहले सालिहीन की आदत है, यह तुम्हारे रब की तरफ़ कुर्बत का बाइस, बुराइयों को मिटाने और गुनाह से रुकने का ज़रिया है।"

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस अबू इदरीस की बिलाल (رضي الله عنه) से रिवायतकर्दा हदीस से ज़्यादा सहीह है। (अख्रजहू इब्ने खुजैमा: 1135. व अल-हाकिम:1/308) (1) (हसन) देखिये: सहीह तरगीब:624)

115- मेरी उम्मत की उम्रें साठ से सत्तर के दर्मियान होगी

115 بَابٌ أَعْمَارُ أُمَّتِي بَيْنَ السِّتِّينَ إِلَى السَّبْعِينَ

3550 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ عَرَفَةَ، قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مُحَمَّدٍ الْمُحَارِبِيُّ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: أَعْمَارُ أُمَّتِي مَا بَيْنَ السِّتِّينَ إِلَى السَّبْعِينَ، وَأَقَلُّهُمْ مَنْ يَجُوزُ ذَلِكَ.

هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ مِنْ حَدِيثِ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، لاَ نَعْرِفُهُ إِلاَّ مِنْ هَذَا الوَجْهِ.

3550 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मेरी उम्मत (के लोगों) की उम्रें साठ से सत्तर (साल) के दर्मियान होंगी और बहुत कम लोग इस से आगे बढ़ेंगे।"

हसन: इब्ने माजह:4236. अस-सिलसिला अस-सहीहा:757. हाकिम:2/427. इब्ने हिब्बान:2980.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: मुहम्मद बिन अम्र के तरीक़ से बवास्ता अबू सलमा सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से मर्वी नबी (ﷺ) की यह हदीस इस तरीक़ से ग़रीब हसन है। हम इसे सिर्फ इसी सनद से जानते हैं, नीज़ यह हदीस एक और तर्ज़ पर भी अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से मर्वी है।

116 - ऐ मेरे रब मेरी मदद फ़रमा मेरे ख़िलाफ़ मदद न करना।

116 بَابٌ رَبِّ أَعِنِّي وَلاَ تُعِنْ عَلَيَّ.

3551 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ الحَفَرِيُّ، عَنْ سُفْيَانَ الثَّوْرِيِّ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الحَارِثِ، عَنْ

3551 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) दुआ किया करते थे: "ऐ मेरे परवरदिगार! मेरी मदद कर, मेरे ख़िलाफ़ मदद न करना, मेरे लिए तदबीर कर, मेरे ख़िलाफ़ तदबीर न करना और

طُلَيْقِ بْنِ قَيْسٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدْعُو يَقُولُ: رَبِّ أَعِنِّي وَلاَ تُعِنْ عَلَيَّ، وَانْصُرْنِي وَلاَ تَنْصُرْ عَلَيَّ، وَامْكُرْ لِي وَلاَ تَمْكُرْ عَلَيَّ، وَاهْدِنِي وَيَسِّرِ الهُدَى لِي، وَانْصُرْنِي عَلَى مَنْ بَغَى عَلَيَّ، رَبِّ اجْعَلْنِي لَكَ شَكَّارًا، لَكَ ذَكَّارًا، لَكَ رَهَّابًا، لَكَ مِطْوَاعًا، لَكَ مُخْبِتًا، إِلَيْكَ أَوَّاهًا مُنِيبًا، رَبِّ تَقَبَّلْ تَوْبَتِي، وَاغْسِلْ حَوْبَتِي، وَأَجِبْ دَعْوَتِي، وَثَبِّتْ حُجَّتِي، وَسَدِّدْ لِسَانِي، وَاهْدِ قَلْبِي، وَاسْلُلْ سَخِيمَةَ صَدْرِي.

मुझे हिदायत दे, मेरे लिए हिदायत को आसान कर दे और जो शख़्स मुझ पर ज़्यादती करे उसके ख़िलाफ़ मेरी मदद फ़रमा, ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे अपना शुक्र गुज़ार, अपना ज़िक्र करने वाला, अपने से डरने वाला, अपना ताबेदार, अपनी तरफ़ झुकने वाला और अपनी तरफ़ तौबा व रुजू करने वाला बना, ऐ मेरे रब! मेरी तौबा कुबूल फ़रमा, मेरे गुनाह धो दे, मेरी दुआ कुबूल फ़रमा, मेरी दलील मज़बूत कर, मेरी ज़बान को सीधा रख, मेरे दिल को हिदायत दे और मेरे दिल की मैल को साफ़ कर दे।"

सहीह: अबू दाऊद:1510. इब्ने माजह:3830. अहमद:1/227.

वज़ाहत: महमूद बिन गैलान कहते हैं: मुहम्मद बिन बिश्र अब्दी ने भी सुफ़ियान सौरी से इसी सनद के साथ ऐसे ही रिवायत की है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

117 بَابُ مَنْ دُعَا عَلَى مَنْ ظَلَمَهُ فَقَدِ انْتَصَرَ

117 जिस शख़्स ने अपने ज़ालिम पर बद्दुआ की उसने बदला ले लिया

3552 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ أَبِي حَمْزَةَ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الأَسْوَدِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ دَعَا عَلَى مَنْ ظَلَمَهُ فَقَدْ انْتَصَرَ.

3552 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (صلى الله عليه وسلم) ने फ़रमाया, "जिस शख़्स ने अपने ऊपर ज़ुल्म करने वाले पर बद्दुआ कर दी यक़ीनन उस ने बदला ले लिया।"

ज़ईफ़: इब्ने अबी शैबा:10/347. अबू याला:4454. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:4593.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। हम इसे अबू हम्ज़ा के तरीक़ से ही जानते हैं और बअ़ज़ अहले इल्म ने अबू हम्ज़ा के हाफ़िज़े की वजह से इसमें कलाम की है, यह मैमून आवर ही है।

हमें कुतैबा ने भी हुमैद बिन अब्दुर्रहमान रूआसी से बवास्ता अबू अह्‌वस, अबू हम्ज़ा से इसी सनद के साथ ऐसे ही रिवायत बयान की है।

118 - दस बार मुकम्मल कलिम-ए-तौहीद कहने वाला।

118- بَابٌ من قال كلمة التوحيد المفصل عشر مرات.

3553 - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الكِنْدِيُّ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ حُبَابٍ، قَالَ: وَأَخْبَرَنِي سُفْيَانُ الثَّوْرِيُّ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنْ أَبِي أَيُّوبَ الأَنْصَارِيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَنْ قَالَ عَشْرَ مَرَّاتٍ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الحَمْدُ، يُحْيِي وَيُمِيتُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، كَانَتْ لَهُ عِدْلَ أَرْبَعِ رِقَابٍ مِنْ وَلَدِ إِسْمَاعِيلَ.

3553 - अबू अय्यूब अंसारी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिस शख़्स ने दस मर्तबा यह कलिमात कहे "अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाहत है, उसी के लिए हर क़िस्म की तारीफ़ है, वही ज़िंदा करता है और वही मारता है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है" तो यह उस के लिए औलादे इस्माईल से दस गुलाम आज़ाद करने के बराबर है।"

मुन्कर: हाकिम:1/547. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:83. ज़ईफुत्तर्गीब:960.

वज़ाहत: यह हदीस अबू अय्यूब (رضي الله عنه) से मौकूफ़न भी मर्वी है।

119. मै अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता हूँ उस की मख़्लुक़ की तादाद के बराबर कहने का सवाब

119 بَابُ ثَوَابِ سُبْحَانَ اللهِ عَدَدَ خَلْقِهِ

3554 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ بْنُ عَبْدِ الوَارِثِ، قَالَ: حَدَّثَنَا هَاشِمٌ وَهُوَ ابْنُ سَعِيدٍ الكُوفِيُّ قَالَ: حَدَّثَتْنِي كِنَانَةُ، مَوْلَى صَفِيَّةَ قَالَ: سَمِعْتُ صَفِيَّةَ، تَقُولُ: دَخَلَ عَلَيَّ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ

3554 - उम्मुल मोमिनीन सय्यदा सफ़िय्या (رضي الله عنها) बयान फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरे पास तशरीफ़ लाये और मेरे आगे चार हज़ार गुठलियाँ पड़ी थीं, जिनसे मैं तस्बीहात कर रही थी, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम ने तो इन के साथ तस्बीह की है, क्या मैं इस से ज़्यादा

وَسَلَّمَ وَبَيْنَ يَدَيَّ أَرْبَعَةُ آلَافِ نَوَاةٍ أُسَبِّحُ بِهَا، قَالَ: لَقَدْ سَبَّحْتِ بِهَذِهِ، أَلَا أُعَلِّمُكِ بِأَكْثَرَ مِمَّا سَبَّحْتِ؟ فَقُلْتُ: بَلَى عَلِّمْنِي. فَقَالَ: قُولِي: سُبْحَانَ اللهِ عَدَدَ خَلْقِهِ.

न सिखाऊँ जो तुम ने तस्बीह की है? मैंने कहा: क्यों नहीं! आप मुझे ज़रूर सिखाइए। तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, तुम कहो "मैं अल्लाह की पाकीज़गी बयान करती हूँ उसकी मख़्लूक़ की तादाद के बराबर।"

मुन्कर: हाकिम:1/547. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:83. ज़ईफुत्तर्गीब:960.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। हम इसे सय्यदा सफ़िय्या (رضي الله عنها) से सिर्फ हाशिम बिन सईद कूफ़ी के तरीक़ से जानते हैं और इसकी सनद भी मारूफ़ नहीं है।

नीज़ इस बारे में इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

3555 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: سَمِعْتُ كُرَيْبًا، يُحَدِّثُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنْ جُوَيْرِيَةَ بِنْتِ الحَارِثِ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرَّ عَلَيْهَا وَهِيَ فِي مَسْجِدِهَا ثُمَّ مَرَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِهَا قَرِيبًا مِنْ نِصْفِ النَّهَارِ، فَقَالَ لَهَا: مَا زِلْتِ عَلَى حَالِكِ فَقَالَتْ: نَعَمْ، قَالَ: أَلَا أُعَلِّمُكِ كَلِمَاتٍ تَقُولِينَهَا: سُبْحَانَ اللهِ عَدَدَ خَلْقِهِ، سُبْحَانَ اللهِ عَدَدَ خَلْقِهِ، سُبْحَانَ اللهِ عَدَدَ خَلْقِهِ، سُبْحَانَ اللهِ رِضَا نَفْسِهِ، سُبْحَانَ اللهِ رِضَا نَفْسِهِ، سُبْحَانَ اللهِ رِضَا نَفْسِهِ، سُبْحَانَ اللهِ زِنَةَ عَرْشِهِ، سُبْحَانَ اللهِ زِنَةَ عَرْشِهِ، سُبْحَانَ اللهِ زِنَةَ عَرْشِهِ، سُبْحَانَ

3555 - उम्मुल मोमिनीन सय्यदा जुवैरिया बिन्ते हारिस (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि वह अपनी नमाज़ की जगह पर थीं कि नबी (ﷺ) उन के पास से गुज़रे, फिर नबी (ﷺ) दोपहर के क़रीब उन के पास से गुज़रे तो आप(ﷺ) ने उन से फ़रमाया, "तुम अपनी उसी हालत पर ही हो?" अर्ज़ किया जी हाँ। तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या मैं तुम्हें चन्द कलिमात न सिखाऊँ जिन्हें तुम पढ़ो, मैं अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता हूँ उसकी मख़्लूक़ की तादाद के बराबर, मैं अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता हूँ उसकी मख़्लूक़ की तादाद के बराबर, मैं अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता हूँ उसकी मख़्लूक़ की तादाद के बराबर, मैं अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता हूँ उस की ज़ात की रज़ा के बराबर, मैं अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता हूँ उस की ज़ात की रज़ा के बराबर, मैं अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता हूँ उस की ज़ात की रज़ा के बराबर, मैं

اللهِ مِدَادَ كَلِمَاتِهِ، سُبْحَانَ اللهِ مِدَادَ كَلِمَاتِهِ، سُبْحَانَ اللهِ مِدَادَ كَلِمَاتِهِ.

अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता हूँ उस के अर्श के वज़न के बराबर, मैं अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता हूँ उस के अर्श के वज़न के बराबर, मैं अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता हूँ उस के अर्श के वज़न के बराबर, मैं अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता हूँ उसके कलिमात की रोशनाई के बराबर, मैं अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता हूँ उसके कलिमात की रोशनाई के बराबर, मैं अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता हूँ उसके कलिमात की रोशनाई के बराबर।"

मुस्लिम:2726. इब्ने माजह्:3808. निसाई:1352. (अहमद:6/324.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है, और मौला आले तल्हा मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान मदीना के रहने वाले शैख़ और सिक़ह् रावी थे उन से इस हदीस को मसऊदी और सुफ़ियान सौरी ने रिवायत किया है।

120 - بَابٌ إن الله حي كريم.

120 - अल्लाह तआला बहुत हया वाला और करीम है।

3556 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، قَالَ: أَخْبَرَنَا جَعْفَرُ بْنُ مَيْمُونٍ، صَاحِبُ الأَنْمَاطِ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ، عَنْ سَلْمَانَ الفَارِسِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: إِنَّ اللَّهَ حَيِيٌّ كَرِيمٌ يَسْتَحْيِي إِذَا رَفَعَ الرَّجُلُ إِلَيْهِ يَدَيْهِ أَنْ يَرُدَّهُمَا صِفْرًا خَائِبَتَيْنِ.

3556 - सय्यदना सलमान फारसी (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "बेशक अल्लाह तआला बहुत शर्म करने वाला, बहुत ही इज्ज़त वाला है वह इस बात से शर्म महसूस करता है कि जब आदमी उस की तरफ़ अपने हाथों को उठाए तो उन्हें महरूम और खाली लौटा दे।''

सहीह: अबू दाऊद:1488. इब्ने माजह्:3865. अहमद:5/438. हाकिम:1/497.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है, और बअ़ज़ ने इसे मौकूफ़न रिवायत किया है।

3557 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि एक आदमी अपनी दो उँगलियों (के इशारे) से दुआ कर रहा था तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, ''एक के साथ एक के साथ (दुआ कर)''

सहीह: अबू दाऊद:1488. इब्ने माजह:3865. अहमद:5/438. हाकिम:1/497.

3557 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا صَفْوَانُ بْنُ عِيسَى، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَجْلَانَ، عَنِ الْقَعْقَاعِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَجُلاً كَانَ يَدْعُو بِإِصْبَعَيْهِ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَحِّدْ أَحِّدْ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है, और इस हदीस का मतलब यह है कि आदमी जब दुआ में शहादत के वक़्त उँगलियों से इशारा करे तो सिर्फ एक ही उंगली से इशारा करे।

أحاديث شتي من أبواب الدعوات

दुआओं की मुख़्तलिफ़ अहादीस

121 - بَابٌ سلو الله العفو والعافية.

121 - अल्लाह से माफ़ी और आफ़ियत का सवाल करो

3558 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ العَقَدِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ وَهُوَ ابْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ عَقِيلٍ، أَنَّ مُعَاذَ بْنَ رِفَاعَةَ، أَخْبَرَهُ عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَامَ أَبُو بَكْرٍ الصِّدِّيقُ، عَلَى الْمِنْبَرِ ثُمَّ بَكَى فَقَالَ: قَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَامَ الأَوَّلِ عَلَى الْمِنْبَرِ ثُمَّ بَكَى فَقَالَ: اسْأَلُوا اللَّهَ العَفْوَ وَالعَافِيَةَ، فَإِنَّ أَحَدًا لَمْ يُعْطَ بَعْدَ اليَقِينِ خَيْرًا مِنَ العَافِيَةِ.

3558 - मुआज़ बिन रिफ़ाआ अपने बाप से रिवायत करते हैं कि अबू बक्र सिद्दीक़ (رضي الله عنه) मिम्बर पर खड़े हुए तो रो दिए, फिर फ़रमाया, रसूलुल्लाह (ﷺ) हिज्रत के पहले साल मिम्बर पर खड़े हुए तो रो दिए फिर फ़रमाया, ''अल्लाह तआला से माफ़ी और आफ़ियत का सवाल करो क्योंकि यक़ीन के बाद आफ़ियत से बेहतर चीज़ किसी को नहीं मिली।

हसन सहीह: इब्ने माजह:3849. सहीहुत्तर्गीब:3387. अहमद: 1/3. इब्ने अबी शैबा: 1/205.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: अबू बक्र सिद्दीक़ (رضي الله عنه) के तरीक़ से यह हदीस इस सनद से हसन ग़रीब है।

122 - بَابٌ ما أصر من أستغفر.

122 - जो इस्तिग़फ़ार करता रहे वह गुनाहों पर मुसिर्र नहीं कहलाता

3559 - حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ يَزِيدَ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو يَحْيَى الحِمَّانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ وَاقِدٍ، عَنْ أَبِي نُصَيْرَةَ، عَنْ مَوْلًى لأَبِي بَكْرٍ، عَنْ أَبِي بَكْرٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَا أَصَرَّ مَنْ اسْتَغْفَرَ وَلَوْ فَعَلَهُ فِي اليَوْمِ سَبْعِينَ مَرَّةً

3559- सय्यदना अबू बक्र (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "जिस शख़्स ने (अपने गुनाहों से) इस्तिग़फ़ार किया वह गुनाहों पर मुसिर्र (बार- बार करने वाला) नहीं है ख़्वाह वह दिन में सत्तर मर्तबा भी करे।"

ज़ईफ़: अबू दाऊद:1514. अबू याला:137. अज़-ज़ईफ़ा:4474.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है हम इसे अबू नुसैरा की सनद से ही जानते हैं और इसकी सनद क़वी नहीं है।

122 - बाब।

122- بَابٌ

3560 - सय्यदना अबू उमामा (رضی اللہ) रिवायत करते हैं कि उमर बिन ख़त्ताब (رضی اللہ) ने नए कपड़े पहनने की दुआ की "हर क़िस्म की तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है जिस ने मुझे वह पहनाया जिससे मैं अपना सतर ढांपता हूँ और अपनी ज़िंदगी में इस से खूबसूरती हासिल करता हूँ" फिर पुराने कपड़े की तरफ़ क़सद किया उसे सदक़ा कर दिया, फिर कहने लगे: मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "जिस ने नया कपड़ा पहन कर यह कहा "तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने मुझे वह पहनाया जिसके साथ मैं अपने सतर को ढाँपता और अपनी ज़िंदगी में इस से खूबसूरत बनता हूँ" फिर पुराने कपड़े को सदक़ा कर दे वह ज़िंदगी में और मरने के बाद अल्लाह की पनाह, अल्लाह की हिफ़ाज़त और अल्लाह के पर्दे में हो जाता है।"

3560 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى، وَسُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، الْمَعْنَى وَاحِدٌ، قَالاَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: حَدَّثَنَا الأَصْبَغُ بْنُ زَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الْعَلاَءِ، عَنْ أَبِي أُمَامَةَ، قَالَ: لَبِسَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ، ثَوْبًا جَدِيدًا فَقَالَ: الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي كَسَانِي مَا أُوَارِي بِهِ عَوْرَتِي، وَأَتَجَمَّلُ بِهِ فِي حَيَاتِي، ثُمَّ عَمَدَ إِلَى الثَّوْبِ الَّذِي أَخْلَقَ فَتَصَدَّقَ بِهِ، ثُمَّ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: مَنْ لَبِسَ ثَوْبًا جَدِيدًا فَقَالَ: الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي كَسَانِي مَا أُوَارِي بِهِ عَوْرَتِي، وَأَتَجَمَّلُ بِهِ فِي حَيَاتِي ثُمَّ عَمَدَ إِلَى الثَّوْبِ الَّذِي أَخْلَقَ فَتَصَدَّقَ بِهِ كَانَ فِي كَنَفِ اللهِ وَفِي حِفْظِ اللهِ، وَفِي سَتْرِ اللهِ حَيًّا وَمَيِّتًا.

ज़ईफ़: इब्ने माजह:3557. ज़ईफ़ुत्तर्गीब:1249. अहमद:1/44. अब्द बिन हुमैद:18.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है इसे यहया बिन अय्यूब ने भी उबैदुल्लाह बिन ज़ज्र से अली बिन यज़ीद के ज़रिए बवास्ता क़ासिम, अबू उमामा (رضی اللہ) से रिवायत किया है।

123 - बाब

123- بَابٌ

3561 - सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब (رضی اللہ) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने नज्द की तरफ़ एक लश्कर रवाना किया तो उन्होंने बहुत गनीमत हासिल की और जल्द ही वापस आ गए, तो न

3561 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ الْحَسَنِ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ نَافِعٍ الصَّائِغُ قِرَاءَةً عَلَيْهِ، عَنْ حَمَّادِ بْنِ أَبِي حُمَيْدٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ

أَبِيهِ، عَنْ عُمَرَ بْنِ الخَطَّابِ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعَثَ بَعْثًا قِبَلَ نَجْدٍ فَغَنِمُوا غَنَائِمَ كَثِيرَةً وَأَسْرَعُوا الرَّجْعَةَ فَقَالَ رَجُلٌ مِمَّنْ لَمْ يَخْرُجْ، مَا رَأَيْنَا بَعْثًا أَسْرَعَ رَجْعَةً وَلاَ أَفْضَلَ غَنِيمَةً مِنْ هَذَا البَعْثِ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَلاَ أَدُلُّكُمْ عَلَى قَوْمٍ أَفْضَلُ غَنِيمَةً وَأَسْرَعُ رَجْعَةً؟ قَوْمٌ شَهِدُوا صَلاَةَ الصُّبْحِ ثُمَّ جَلَسُوا يَذْكُرُونَ اللَّهَ حَتَّى طَلَعَتِ الشَّمْسُ فَأُولَئِكَ أَسْرَعُ رَجْعَةً وَأَفْضَلُ غَنِيمَةً.

जाने वाले लोगों में से एक आदमी ने कहा: हम ने इस लश्कर से बढ़ कर जल्दी लौटने वाला और ज़्यादा ग़नीमत हासिल करने वाला लश्कर नहीं देखा। नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या मैं तुम्हें ऐसे लोगों के बारे में न बताऊँ जो अच्छी ग़नीमत हासिल करने वाले और बहुत जल्द वापस आने वाले हैं? वह लोग जो सुबह की नमाज़ में शरीक हों फिर सूरज तुलू होने तक बैठ कर अल्लाह का ज़िक्र करें तो यह लोग जल्दी लौटने वाले और बेहतरीन ग़नीमत हासिल करने वाले हैं।"

ज़ईफ़: इब्ने अदी फ़िल कामिल:2/658. ज़ईफ़ुत्तर्गीब: 247.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है हम इसे सिर्फ इसी सनद से ही जानते हैं, और हम्माद बिन अबी हुमैद, मुहम्मद बिन अबी हुमैद ही है जो कि अबू इब्राहीम अंसारी मदनी है और हदीस में ज़ईफ़ है।

124 - بَابٌ

124 - बाब

3562 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ عَاصِمِ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ، عَنْ سَالِمٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنْ عُمَرَ، أَنَّهُ اسْتَأْذَنَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي العُمْرَةِ فَقَالَ: أَيْ أُخَيَّ أَشْرِكْنَا فِي دُعَائِكَ وَلاَ تَنْسَنَا.

3562 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) से रिवायत है कि उमर (رضي الله عنه) ने नबी (ﷺ) से उम्रा करने की इजाज़त मांगी तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ मेरे भाई हमें भी अपनी दुआ में शामिल करना और हमें भूल न जाना।"

ज़ईफ़: अबू दाऊद:1498. इब्ने माजह:2894. अहमद:1/29.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है.

125 - बाब।

125- بَابٌ

3563 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ حَسَّانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ سَيَّارٍ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَلِيٍّ، أَنَّ مُكَاتَبًا جَاءَهُ فَقَالَ: إِنِّي قَدْ عَجَزْتُ عَنْ مُكَاتَبَتِي فَأَعِنِّي، قَالَ: أَلَا أُعَلِّمُكَ كَلِمَاتٍ عَلَّمَنِيهِنَّ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَوْ كَانَ عَلَيْكَ مِثْلُ جَبَلِ صِيرٍ دَيْنًا أَدَّاهُ اللَّهُ عَنْكَ، قَالَ: قُلْ: اللَّهُمَّ اكْفِنِي بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ، وَأَغْنِنِي بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ.

3563 - अबू वाइल रिवायत करते हैं कि एक मुकातब गुलाम सय्यदना अली (رضي الله عنه) के पास आकर कहने लगा: मैं अपनी मुकातिबत (की रक़म अदा करने) से आजिज़ आ गया हूँ आप मेरी मदद कीजिए। उन्होंने फरमाया: क्या मैं तुम्हें वह कलिमात न सिखाऊँ जो मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सिखाये थे? अगर तुम्हारे ऊपर सीर पहाड़ के ऊपर भी क़र्ज़ हो तो अल्लाह तआला तुम्हारी तरफ़ से अदा कर देगा, तुम कहो " ऐ अल्लाह! तू मुझे अपने हलाल के साथ अपनी हराम (कर्दा) चीजों से काफ़ी हो जा और मुझे अपने फ़ज़्ल के साथ अपने मासिवा से बे नियाज़ कर दे।"

हसन: हाकिम: 1/538. बज़्ज़ार:563. सहीहुत्तर्गीब:1820.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

126 - मरीज की दुआ।

126 بَاب فِي دُعَاءِ الْمَرِيضِ

3564 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ سَلِمَةَ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ: كُنْتُ شَاكِيًا فَمَرَّ بِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنَا أَقُولُ: اللَّهُمَّ إِنْ كَانَ أَجَلِي قَدْ حَضَرَ فَأَرِحْنِي، وَإِنْ كَانَ

3564 - अली (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि मैं बीमार था तो रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरे पास से गुज़रे मैं कह रहा था: "ऐ अल्लाह! अगर मेरी मौत का वक़्त आ चुका है तो मुझे आराम दे दे और अगर मौत में ताखीर है तो तू मेरी ज़िंदगी को ख़ुशगवार बना दे[1] और अगर यह आज़माइश है तो मुझे सब्र दे।" तो अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुमने कैसे कहा

مُتَأَخِّرًا فَارْفَعْنِي، وَإِنْ كَانَ بَلَاءً فَصَبِّرْنِي، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كَيْفَ قُلْتَ؟ قَالَ: فَأَعَادَ عَلَيْهِ مَا قَالَ، قَالَ: فَضَرَبَهُ بِرِجْلِهِ فَقَالَ: اللَّهُمَّ عَافِهِ، أَوْ اشْفِهِ، شُعْبَةُ الشَّاكُّ، فَمَا اشْتَكَيْتُ وَجَعِي بَعْدُ.

था?" रावी कहते हैं: उन्होंने दोबारा कहा तो आप (ﷺ) ने उन्हें अपना पाँव मारा और फ़रमाया, "ऐ अल्लाह! इसे आफ़ियत दे या शिफा दे।" यह शोबा ने शक के साथ कहा है। अली कहते हैं: फिर उस के बाद मुझे वह तक्लीफ़ नहीं हुई।

ज़ईफ़: अहमद: 1/83. अब्द बिन हुमैद:73. हाकिम:1/620. हिदायुर्रूवात:6053.

तौज़ीह: فَارْفَعْنِى: أرفع ख़ुशगवार ज़िंदगी वाला होना, आसूदा हाल होना इसका मस्दर الرفع है जिसका मानी है नर्मी, आसानी, फ़राखी, कुशादगी और आसूदगी वग़ैरह, तफ़्सील के लिए देखिये: (अल-कामूसुल वहीद,प.650)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3565 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ الحَارِثِ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا عَادَ مَرِيضًا قَالَ: اللَّهُمَّ أَذْهِبْ البَأْسَ رَبَّ النَّاسِ، وَاشْفِ فَأَنْتَ الشَّافِي، لَا شِفَاءَ إِلَّا شِفَاؤُكَ شِفَاءً لَا يُغَادِرُ سَقَمًا.

3565 - सय्यदना अली (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) जब किसी मरीज़ की बीमारपुर्सी करते तो आप(ﷺ) दुआ करते: ''ऐ अल्लाह! बीमारी को ले जा ऐ लोगों के परवरदिगार! शिफ़ा दे तू ही शिफा देने वाला है, शिफ़ा तो तेरी ही है, ऐसी शिफा दे जो किसी बीमारी को न छोड़े।''

सहीह: अहमद: 1/76. अब्द बिन हुमैद:66. इब्ने अबी शैबा:8/47. अस- सिलसिला अस- सहीहा:2775.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।

127 بَابٌ فِي دُعَاءِ الوِتْرِ

127 - दुआए वित्र।

3566 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عَمْرٍو الفَزَارِيِّ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ

3566 - सय्यदना अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) अपने वित्र में दुआ किया करते थे: ''ऐ अल्लाह! मैं पनाह माँगता हूँ तेरी रिज़ा के ज़रिए तेरी नाराज़गी से मैं

الحَارِثِ بْنِ هِشَامٍ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقُولُ فِي وِتْرِهِ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ، وَأَعُوذُ بِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوبَتِكَ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْكَ لَا أُحْصِي ثَنَاءً عَلَيْكَ، أَنْتَ كَمَا أَثْنَيْتَ عَلَى نَفْسِكَ.

पनाह माँगता हूँ तेरी माफ़ी के ज़रीये तेरी सज़ा से और मैं पनाह माँगता हूँ तेरे ज़रिए तुझ से, मैं तेरी तारीफ़ नहीं कर सकता, तू उसी तरह है जैसे तूने ख़ुद अपने आप की तारीफ़ की है''

सहीह: अबू दाऊद:1427. इब्ने माजह:1179. निसाई:1747. अहमद:1/96.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: सय्यदना अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) के तरीक़ से यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे सिर्फ हम्माद बिन सलमा के तरीक़ से ही जानते हैं।

128 بَاب فِي دُعَاءِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَتَعَوُّذِهِ فِي دُبُرِ كُلِّ صَلَاةٍ

128 - नबी (ﷺ) का हर नमाज़ के बाद दुआ और तअव्वुज़ करना।

3567 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا زَكَرِيَّا بْنُ عَدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ هُوَ ابْنُ عَمْرٍو، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ مُصْعَبِ بْنِ سَعْدٍ، وَعَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ، قَالَا: كَانَ سَعْدٌ، يُعَلِّمُ بَنِيهِ هَؤُلَاءِ الكَلِمَاتِ كَمَا يُعَلِّمُ الْمُكَتِّبُ الغِلْمَانَ وَيَقُولُ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَتَعَوَّذُ بِهِنَّ دُبُرَ الصَّلَاةِ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الجُبْنِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ البُخْلِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ أَرْذَلِ العُمُرِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْيَا، وَعَذَابِ القَبْرِ.

3567 - मुसअब बिन साद और अम्र बिन मैमून (رحمه الله) बयान करते हैं कि साद अपने बेटों को यह कलिमात उसी तरह सिखाया करते थे जैसे उस्ताद बच्चों को सिखाता है और फ़रमाया करते रसूलुल्लाह (ﷺ) हर नमाज़ के बाद इन कलिमात के साथ पनाह माँगा करते थे। "ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह में आता हूँ बुख़्ल से, मैं निकम्मी उम्र से तेरी पनाह में आता हूँ और मैं दुनिया के फ़ित्ने और अज़ाबे क़ब्र से तेरी पनाह में आता हूँ।"

बुख़ारी:2822. निसाई:5445. इब्ने खुज़ैमा:746.

वज़ाहत: अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान कहते हैं: अबू इस्हाक़ हम्दानी से इस हदीस में इज़्तिराब वाक़ेअ हुआ है वह अम्र बिन मैमून के ज़रिए उमर (رضي الله عنه) से बयान करते हैं जबकि इज़्तिराब करते हुए किसी और से भी बयान कर देते हैं।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन सहीह है।

3568 - सय्यदा आयशा बिन्ते साद बिन अबी वक़्क़ास (رضي الله عنه) अपने बाप से रिवायत करती हैं कि वह रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ एक औरत के पास गए, उसके आगे गुठलियाँ और कंकरियाँ पड़ी हुई थीं जिन के साथ वह तस्बीह कर रही थीं, तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या मैं तुम्हें इस से आसान और अफ़ज़ल वज़ीफ़ा न बताऊँ?" मैं अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता हूँ इतनी तादाद में जो उस ने ज़मीन में पैदा किया, मैं अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता हूँ उस तादाद के बराबर जो उस ने आसमान में पैदा किया, मैं अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता हूँ उस तादाद के बराबर जो उस के दर्मियान में है, मैं अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता हूँ उस तादाद के बराबर जिसे वह पैदा करने वाला है और इसी तरह अल्लाहु अकबर, ऐसे ही अल्हम्दुलिल्लाह और ऐसे ही ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह।"

मुन्कर अबू दाऊद:1500. ज़ईफुत्तर्गीब:959. हाकिम:1/574. इब्ने हिब्बान:837.

3568 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ الحَسَنِ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَصْبَغُ بْنُ الفَرَجِ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ وَهْبٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ الحَارِثِ، أَنَّهُ أَخْبَرَهُ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي هِلَالٍ، عَنْ خُزَيْمَةَ، عَنْ عَائِشَةَ بِنْتِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، عَنْ أَبِيهَا، أَنَّهُ دَخَلَ مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى امْرَأَةٍ وَبَيْنَ يَدَيْهَا نَوَاةٌ، أَوْ قَالَ: حَصَاةٌ تُسَبِّحُ بِهَا، فَقَالَ: أَلاَ أُخْبِرُكِ بِمَا هُوَ أَيْسَرُ عَلَيْكِ مِنْ هَذَا أَوْ أَفْضَلُ؟ سُبْحَانَ اللهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ فِي السَّمَاءِ، وَسُبْحَانَ اللهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ فِي الأَرْضِ، وَسُبْحَانَ اللهِ عَدَدَ مَا بَيْنَ ذَلِكَ، وَسُبْحَانَ اللهِ عَدَدَ مَا هُوَ خَالِقٌ، وَاللَّهُ أَكْبَرُ مِثْلَ ذَلِكَ، وَالحَمْدُ لِلَّهِ مِثْلَ ذَلِكَ، وَلاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ مِثْلَ ذَلِكَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: साद (رضي الله عنه) के तरीक़ से यह हदीस हसन ग़रीब है।

3569 - सय्यदना ज़ुबैर बिन अव्वाम (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "हर वह सुबह जिस में बन्दा सुबह करता है तो एक ऐलान करने वाला फ़रिश्ता ऐलान करता है " पाक बादशाह की पाकीज़गी बयान करो।"

ज़ईफ़: अब्द बिन हुमैद: 96. अबू याला:685. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:4496

3569 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ نُمَيْرٍ، وَزَيْدُ بْنُ حُبَابٍ، عَنْ مُوسَى بْنِ عُبَيْدَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ ثَابِتٍ، عَنْ أَبِي حَكِيمٍ، مَوْلَى الزُّبَيْرِ، عَنِ الزُّبَيْرِ بْنِ العَوَّامِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا مِنْ صَبَاحٍ يُصْبِحُ العَبْدُ فِيهِ إِلاَّ وَمُنَادٍ يُنَادِي: سَبِّحُوا الْمَلِكَ الْقُدُّوسَ.

वज़ाहतः इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है।

129 - हिफ़्ज़े कुरआन की दुआ।

129 بَابٌ فِي دُعَاءِ الحِفْظِ

3570 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि हम नबी(ﷺ) के पास थे कि अचानक आप के पास अली बिन अबी तालिब(رضي الله عنه) आकर कहने लगे: आप पर मेरे मां बाप कुर्बान हों यह कुरआन मेरे सीने से भाग जाता है, चुनांचे मैं इस पर कुदरत नहीं रखता तो अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ अबुल हसन! क्या मैं तुम्हें कुछ कलिमात न सिखाऊँ जिनके साथ अल्लाह तुझे नफ़ा देगा और उसे भी नफ़ा देगा जिसे तुम यह कलिमात सिखाओगे और जो तुम सीखोगे वह तुम्हारे सीने में महफ़ूज़ रहेगा?" उन्होंने अर्ज़ किया, ज़रूर, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आप मुझे सिखाइए। आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "जब जुमा की रात हो तो अगर तुम में ताक़त हो तो रात के आखिर तिहाई हिस्से में क़याम करो, यह ऐसी घड़ी है जिसमें फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं और इसमें की गई दुआ कुबूल होती है और मेरे भाई याकूब (عليه السلام) ने भी अपने बेटों से कहा था "अन्क़रीब मैं तुम्हारे लिए अपने रब से बख़्शिश मांगूंगा।" (यूसुफ़:98) हत्ता (यहाँ तक) कि जुमा की रात आ गई (तो उन्होंने दुआ की), अगर तुम (आख़िरी हिस्से में कयाम की) ताक़त नहीं रखते तो इस के दर्मियान में कर लो और अगर इसकी भी ताक़त नहीं है तो पहले हिस्से में कयाम करो तो चार रकअतें पढ़ो, पहली रकअत

3570 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ الحَسَنِ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الدِّمَشْقِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي رَبَاحٍ، وَعِكْرِمَةَ، مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّهُ قَالَ: بَيْنَمَا نَحْنُ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذْ جَاءَهُ عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ فَقَالَ: بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي، تَفَلَّتَ هَذَا القُرْآنُ مِنْ صَدْرِي فَمَا أَجِدُنِي أَقْدِرُ عَلَيْهِ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَا أَبَا الحَسَنِ، أَفَلاَ أُعَلِّمُكَ كَلِمَاتٍ يَنْفَعُكَ اللَّهُ بِهِنَّ، وَيَنْفَعُ بِهِنَّ مَنْ عَلَّمْتَهُ، وَيُثَبِّتُ مَا تَعَلَّمْتَ فِي صَدْرِكَ؟ قَالَ: أَجَلْ يَا رَسُولَ اللهِ فَعَلِّمْنِي. قَالَ: إِذَا كَانَ لَيْلَةُ الجُمُعَةِ، فَإِنْ اسْتَطَعْتَ أَنْ تَقُومَ فِي ثُلُثِ اللَّيْلِ الآخِرِ فَإِنَّهَا سَاعَةٌ مَشْهُودَةٌ، وَالدُّعَاءُ فِيهَا مُسْتَجَابٌ وَقَدْ قَالَ أَخِي يَعْقُوبُ لِبَنِيهِ {سَوْفَ أَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّي} يَقُولُ: حَتَّى تَأْتِيَ لَيْلَةُ الجُمْعَةِ، فَإِنْ لَمْ تَسْتَطِعْ فَقُمْ فِي وَسَطِهَا، فَإِنْ لَمْ تَسْتَطِعْ فَقُمْ

में सूरह फातिहा और सूरह यासीन, दूसरी रकअत में फातिहा और सूरह दुखान, तीसरी रकअत में फातिहा और सूरह तंजील अस्सज्दा और चौथी रकअत में फातिहा और सूरह मुल्क पढ़ो, फिर जब तुम तशह्हुद से फ़ारिग़ हो जाओ तो अल्लाह की तारीफ़ करो और अल्लाह पर अच्छी सना पढ़ो और मुझ पर अच्छी तरह दरूद पढ़ो और तमाम अंबिया पर भी, इसी तरह मोमिन मर्दों औरतों और अपने उन भाईयों के लिए बख़्शिश की दुआ करो जो तुझ से ईमान में सबक़त ले जा चुके हैं, फिर उसके आखिर में कहो " ऐ अल्लाह तू मुझे जब तक ज़िंदा रखे तो नाफ़र्मानियों को छोड़ने के साथ मुझ पर रहम फ़रमा, और इस बात से मुझ पर रहम कि मैं बेमकसद काम में तकल्लुफ करूं, और मुझे उस काम में अच्छी नज़र अता कर जो तुझे मुझ से राजी करने वाला हो, ऐ अल्लाह! आसमानों और ज़मीन की तख़्लीक़ करने वाले! जलाल व अज़मत और इज्ज़त वाले! ऐसी इज्ज़त वाले जिसकी कोई और ख़्वाहिश नहीं करता ऐ अल्लाह! ऐ रहमान! मैं तुझ से तेरे जलाल और तेरे चेहरे के नूर के साथ सवाल करता हूँ कि तू मेरे दिल में अपनी किताब के हिफ्ज़ को लाजिम कर दे जैसा कि तूने मुझे इसका इल्म दिया है और मुझे ऐसी तौफ़ीक़ दे कि मैं उसे इस तरीक़े पर पढ़ सकूं जो तुझे मुझ पर राजी कर दे, ऐ अल्लाह! ज़मीनों आसमान की तख़्लीक़ करने वाले! ऐ शानो शौकत और ऐसी इज्ज़त वाले जिसकी कोई और ख़्वाहिश नहीं करता ऐ अल्लाह! ऐ

فِي أَوَّلِهَا، فَصَلِّ أَرْبَعَ رَكَعَاتٍ، تَقْرَأُ فِي الرَّكْعَةِ الأُولَى بِفَاتِحَةِ الكِتَابِ وَسُورَةِ يٰس وَفِي الرَّكْعَةِ الثَّانِيَةِ بِفَاتِحَةِ الكِتَابِ وَحم الدُّخَانِ، وَفِي الرَّكْعَةِ الثَّالِثَةِ بِفَاتِحَةِ الكِتَابِ وَالم تَنْزِيلُ السَّجْدَةِ، وَفِي الرَّكْعَةِ الرَّابِعَةِ بِفَاتِحَةِ الكِتَابِ وَتَبَارَكَ الْمُفَصَّلِ، فَإِذَا فَرَغْتَ مِنَ التَّشَهُّدِ فَاحْمَدِ اللَّهَ، وَأَحْسِنْ الثَّنَاءَ عَلَى اللهِ، وَصَلِّ عَلَيَّ وَأَحْسِنْ، وَعَلَى سَائِرِ النَّبِيِّينَ، وَاسْتَغْفِرْ لِلْمُؤْمِنِينَ وَالمُؤْمِنَاتِ وَلِإِخْوَانِكَ الَّذِينَ سَبَقُوكَ بِالإِيمَانِ، ثُمَّ قُلْ فِي آخِرِ ذَلِكَ: اللَّهُمَّ ارْحَمْنِي بِتَرْكِ الْمَعَاصِي أَبَدًا مَا أَبْقَيْتَنِي، وَارْحَمْنِي أَنْ أَتَكَلَّفَ مَا لاَ يَعْنِينِي، وَارْزُقْنِي حُسْنَ النَّظَرِ فِيمَا يُرْضِيكَ عَنِّي، اللَّهُمَّ بَدِيعَ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ ذَا الجَلَالِ وَالإِكْرَامِ وَالعِزَّةِ الَّتِي لاَ تُرَامُ، أَسْأَلُكَ يَا أَللَّهُ يَا رَحْمَنُ بِجَلَالِكَ وَنُورِ وَجْهِكَ أَنْ تُلْزِمَ قَلْبِي حِفْظَ كِتَابِكَ كَمَا عَلَّمْتَنِي، وَارْزُقْنِي أَنْ أَتْلُوَهُ عَلَى النَّحْوِ الَّذِي يُرْضِيكَ عَنِّي، اللَّهُمَّ بَدِيعَ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ ذَا الجَلَالِ وَالإِكْرَامِ وَالعِزَّةِ الَّتِي لاَ تُرَامُ، أَسْأَلُكَ يَا أَللَّهُ يَا رَحْمَنُ بِجَلَالِكَ وَنُورِ وَجْهِكَ أَنْ تُنَوِّرَ بِكِتَابِكَ بَصَرِي،

وَأَنْ تُطْلِقَ بِهِ لِسَانِي، وَأَنْ تُفَرِّجَ بِهِ عَنْ قَلْبِي، وَأَنْ تَشْرَحَ بِهِ صَدْرِي، وَأَنْ تَغْسِلَ بِهِ بَدَنِي، فَإِنَّهُ لاَ يُعِينُنِي عَلَى الحَقِّ غَيْرُكَ وَلاَ يُؤْتِيهِ إِلاَّ أَنْتَ، وَلاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ العَلِيِّ العَظِيمِ، يَا أَبَا الحَسَنِ

فَافْعَلْ ذَلِكَ ثَلاَثَ جُمَعٍ أَوْ خَمْسًا أَوْ سَبْعًا تُجَبْ بِإِذْنِ اللهِ، وَالَّذِي بَعَثَنِي بِالحَقِّ مَا أَخْطَأَ مُؤْمِنًا قَطُّ قَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبَّاسٍ: فَوَاللَّهِ مَا لَبِثَ عَلِيٌّ إِلاَّ خَمْسًا أَوْ سَبْعًا حَتَّى جَاءَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي مِثْلِ ذَلِكَ الْمَجْلِسِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنِّي كُنْتُ فِيمَا خَلاَ لاَ آخُذُ إِلاَّ أَرْبَعَ آيَاتٍ أَوْ نَحْوَهُنَّ، فَإِذَا قَرَأْتُهُنَّ عَلَى نَفْسِي تَفَلَّتْنَ وَأَنَا أَتَعَلَّمُ اليَوْمَ أَرْبَعِينَ آيَةً أَوْ نَحْوَهَا، وَإِذَا قَرَأْتُهَا عَلَى نَفْسِي فَكَأَنَّمَا كِتَابُ اللهِ بَيْنَ عَيْنَيَّ، وَلَقَدْ كُنْتُ أَسْمَعُ الحَدِيثَ فَإِذَا رَدَّدْتُهُ تَفَلَّتَ وَأَنَا اليَوْمَ أَسْمَعُ الأَحَادِيثَ فَإِذَا تَحَدَّثْتُ بِهَا لَمْ أَخْرِمْ مِنْهَا حَرْفًا، فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عِنْدَ ذَلِكَ: مُؤْمِنٌ وَرَبِّ الكَعْبَةِ يَا أَبَا الحَسَنِ.

रहमान! मैं तुझ से तेरी शान और तेरे चेहरे के नूर के साथ सवाल करता हूँ कि तू अपनी किताब के साथ मेरे सीने को रोशन कर दे, इस के साथ मेरी ज़बान खोल दे, इस के साथ मेरा दिल कुशादा कर दे, इस के साथ मेरा सीना खोल दे और इस के साथ मेरे बदन को धो दे इसलिए कि तेरे सिवा कोई हक़ पर मेरी मदद नहीं कर सकता और तू ही अता करता है, गुनाह से बचने की ताक़त और नेकी करने की कुव्वत अल्लाह बलंद व बरतर की तौफ़ीक़ से ही है।

ऐ अबुल हसन! तीन, पांच या सात जुमे इसी तरह करो अल्लाह के हुक्म से तुम्हारी दुआ कुबूल होगी, उस ज़ात की क़सम जिस ने मुझे हक़ के साथ भेजा है यह मोमिन से खता कभी नहीं करती।"

अब्दुल्लाह बिन अब्बास (ﷺ) बयान करते हैं अल्लाह की क़सम! पांच या सात जुमे ही गुज़रे थे कि एक ऐसी ही मजलिस में अली (ﷺ) रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास आकर अर्ज़ करने लगे: ऐ अल्लाह के रसूल मैं ऐसा आदमी था कि इस से पहले चार आयतें ही लेता, फिर जब उन्हें दिल में पढ़ लेता तो वह भूल जातीं और आज मैं चालीस के क़रीब आयात लेता हूँ फिर जब उन्हें ज़बानी पढ़ता हूँ तो गोया अल्लाह की किताब मेरी आँखों के सामने होती है और मैं हदीस सुना करता था फिर जब सुनाता तो वह भूलने लगती और आज मैं कई अहादीस सुनता हूँ फिर जब उन्हें बयान करता हूँ तो उन से एक हर्फ़ की भी कमी नहीं होती तब रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उनसे

फ़रमाया, "ऐ अबुल हसन रब्बे काबा की क़सम है तू मोमिन है।"

मौज़ू (मनघड़त): ज़ईफुत्तर्गीब:874.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है, हम इसे वलीद बिन मुस्लिम के तरीक़ से ही जानते हैं।

130 - तकालीफ़ (तक्लीफ़ों)के ख़त्म होने का इन्तिज़ार करना।

130 بَابٌ فِي انْتِظَارِ الفَرَجِ وَغَيْرِ ذَلِكَ

3571 - حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ مُعَاذٍ العَقَدِيُّ البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ وَاقِدٍ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي الأَحْوَصِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: سَلُوا اللَّهَ مِنْ فَضْلِهِ، فَإِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ يُحِبُّ أَنْ يُسْأَلَ، وَأَفْضَلُ العِبَادَةِ انْتِظَارُ الفَرَجِ.

3571.अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला से उस के फ़ज़्ल का सवाल करो इसलिए कि अल्लाह तआला इस बात को पसंद करता है कि उस से सवाल किया जाए और बेहतरीन इबादत कुशादगी व आसानी का इन्तिज़ार करना है।"

ज़ईफ़: तबरानी: 10088. ज़ईफुत्तर्गीब:1015.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस हदीस को हम्माद बिन वाकिद ने इसी तरह रिवायत किया है और उनकी रिवायत में इख़्तिलाफ़ किया गया है।

हम्माद बिन वाकिद सफ़्फ़ार ही हैं जो कि हाफ़िज़ नहीं हैं। हमारे मुताबिक यह बुजुर्ग बस्रा के रहने वाले थे। जबकि अबू नुऐम ने इस हदीस को इस्राईल से बवास्ता हकीम बिन जुबैर एक आदमी के ज़रिए नबी (ﷺ) से मुर्सल रिवायत किया है और अबू नएम की हदीस ज़्यादा सहीह मालूम होती है।

3572 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَاصِمٌ الأَحْوَلُ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ، قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الكَسَلِ وَالعَجْزِ وَالبُخْلِ.

3572 - सय्यदना ज़ैद बिन अरक़म (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) दुआ किया करते थे: "ऐ अल्लाह! मैं काहिली, आजिज़ हो जाने और बुख़्ल से तेरी पनाह में आता हूँ" और इसी सनद से मर्वी है कि नबी (ﷺ) बुढ़ापे और अज़ाबे क़ब्र से पनाह माँगा करते थे।

मुस्लिम: 2722. निसाई:5458. अहमद:4/371. बतरीके आख़र।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रहमतुल्लाह) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3573 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، عَنِ ابْنِ ثَوْبَانَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ مَكْحُولٍ، عَنْ جُبَيْرِ بْنِ نُفَيْرٍ، أَنَّ عُبَادَةَ بْنَ الصَّامِتِ، حَدَّثَهُمْ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَا عَلَى الأَرْضِ مُسْلِمٌ يَدْعُو اللَّهَ بِدَعْوَةٍ إِلاَّ آتَاهُ اللَّهُ إِيَّاهَا أَوْ صَرَفَ عَنْهُ مِنَ السُّوءِ مِثْلَهَا مَا لَمْ يَدْعُ بِإِثْمٍ أَوْ قَطِيعَةِ رَحِمٍ، فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ القَوْمِ: إِذًا نُكْثِرُ، قَالَ: اللَّهُ أَكْثَرُ.

3573 - उबादा बिन सामित (रज़ियल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया "ज़मीन पर कोई भी मुसलमान अल्लाह तआला से जो भी दुआ करता है तो अल्लाह तआला या तो उसे वही चीज़ अता कर देता है या उस जैसी कोई तक्लीफ़ उस से फेर देता है जब तक वह किसी गुनाह या क़ता रहमी की दुआ नहीं करता।" तो लोगों में से एक आदमी ने कहा: "फिर तो हम बहुत दुआएं करेंगे आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, "अल्लाह उस से भी ज़्यादा देने वाला है।"

हसन सहीह: तबरानी फ़िल औसत: 147. अब्दुल्लाद बिन अहमद फ़ी मुस्नदिही:5/ 329.सहीहुत्तर्गीब:1931.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रहमतुल्लाह) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है, और इब्ने सौबान, अब्दुर्रहमान बिन साबित बिन सौबान आबिद हैं जो शाम के रहने वाले थे।

131 - بَابُ الدعاء عند النوم

131 - सोने की दुआ!

3574 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَيْدَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي البَرَاءُ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِذَا أَخَذْتَ مَضْجَعَكَ فَتَوَضَّأْ وُضُوءَكَ لِلصَّلاَةِ، ثُمَّ اضْطَجِعْ عَلَى شِقِّكَ الأَيْمَنِ، ثُمَّ قُلْ: اللَّهُمَّ أَسْلَمْتُ وَجْهِي إِلَيْكَ، وَفَوَّضْتُ أَمْرِي إِلَيْكَ، وَأَلْجَأْتُ ظَهْرِي إِلَيْكَ، رَغْبَةً وَرَهْبَةً إِلَيْكَ، لاَ مَلْجَأَ وَلاَ مَنْجَا مِنْكَ إِلاَّ

3574 - सय्यदना बराअ (रज़ियल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, "तुम अपने बिस्तर पर जाने लगो तो नमाज़ के वुज़ू की तरह वुज़ू करो फिर अपनी दायें करवट पर लेट कर यह दुआ पढ़ो " ऐ अल्लाह! मैंने अपना चेहरा तेरे ताबेअ कर दिया, अपना मामला तुझे सौंप दिया, अपनी पुश्त तेरी तरफ़ झुकाई (सवाब में) रग़बत करते हुए और तेरे अज़ाब से डरते हुए, तेरी बारगाह के सिवा कोई पनाहगाह है न निजात की जगह, मैं तेरी उस किताब पर ईमान लाया जिसे तूने नाज़िल फ़रमाया और तेरे उस नबी पर जिसे

إِلَيْكَ، آمَنْتُ بِكِتَابِكَ الَّذِي أَنْزَلْتَ، وَبِنَبِيِّكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ، فَإِنْ مُتَّ فِي لَيْلَتِكَ مُتَّ عَلَى الفِطْرَةِ، قَالَ: فَرَدَدْتُهُنَّ لأَسْتَذْكِرَهُ، فَقُلْتُ: آمَنْتُ بِرَسُولِكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ، فَقَالَ: قُلْ: آمَنْتُ بِنَبِيِّكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ.

तूने (हमारी तरफ़) भेजा।" फिर अगर तुम उसी रात फौत हो गए तो तुम फित्रते इस्लाम पर फौत होगे।" रावी कहते हैं: मैंने याद करने के लिए आप को सुनाई तो मैंने कहा: मैं तेरे उस रसूल पर ईमान लाया जिसे तूने हमारी तरफ़ भेजा तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "यह कहो कि मैं तेरे उस नबी पर ईमान लाया जिसे तूने भेजा।"

सहीह: बुख़ारी: 1/71. मुस्लिम:8/77. अबू दाऊद:5046. अहमद:4/290. मज़ीद तख़रीज के लिए देखें हदीस नम्बर:3394.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और कई इस्नाद से बराअ (رضي الله عنه) से मर्वी है लेकिन इस हदीस के अलावा किसी और रिवायत में वुज़ू का ज़िक्र नहीं है।

3575 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي فُدَيْكٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ البَرَّادِ، عَنْ مُعَاذِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ خُبَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: خَرَجْنَا فِي لَيْلَةٍ مَطِيرَةٍ وَظُلْمَةٍ شَدِيدَةٍ نَطْلُبُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي لَنَا، قَالَ: فَأَدْرَكْتُهُ، فَقَالَ: قُلْ فَلَمْ أَقُلْ شَيْئًا، ثُمَّ قَالَ: قُلْ، فَلَمْ أَقُلْ شَيْئًا، قَالَ: قُلْ، فَقُلْتُ، مَا أَقُولُ؟ قَالَ: قُلْ: قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ، وَالمُعَوِّذَتَيْنِ حِينَ تُمْسِي وَتُصْبِحُ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ تَكْفِيكَ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ.

3575 - मुआज़ बिन अब्दुल्लाह बिन ख़ुबैब अपने बाप से रिवायत करते हैं कि हम बारिश वाली अंधेरी रात में रसूलुल्लाह (ﷺ) को तलाश करने निकले ताकि आप हमें नमाज़ पढ़ाएं, रावी कहते हैं: फिर मैंने आप(ﷺ) को पा लिया तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम कहो" मैंने कुछ न कहा, फिर आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "कहो" तो मैंने कुछ भी न कहा, फिर आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "कहो" तो मैंने अर्ज़ किया, मैं क्या कहूं? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम कहो "قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ": " और मुअव्विज़तैन सूरतें पढ़ो सुबह और शाम तीन-तीन मर्तबा यह तुम्हें हर चीज़ से काफी होंगी।"

हसन: अबू दाऊद:5082. निसाई:5428. सहीहुत्तर्गीब:649. अब्द बिन हुमैद:494.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस इस सनद से हसन सहीह ग़रीब है, और अबू सईद बर्राद उसैद बिन अबी उसैद मदीनी हैं।

132 - मेहमान की दुआ (मेज़बान को)

132 بَاب فِي دُعَاءِ الضَّيْفِ

3576 - अब्दुल्लाह बिन बुस्र (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ), मेरे बाप के यहाँ बतौर मेहमान आए तो हम ने आप(ﷺ) को खाना पेश किया, आप(ﷺ) ने उस से खाया फिर खुजूरें लाई गयीं तो आप उन्हें खाते और गुठलियाँ अपनी शहादत वाली और दर्मियान वाली उंगली से फेंकते थे। शोबा कहते हैं: यह मेरा गुमान है अल्लाह ने चाहा तो सही होगा और आप (ﷺ) ने दो उँगलियों के दर्मियान रख कर गुठलियाँ फेंकीं, फिर मशरूब लाया गया आप(ﷺ) ने वह पिया फिर अपनी दायें जानिब वाले को दे दिया, फिर मेरे बाप ने आप(ﷺ) की सवारी की लगाम थामते हुए अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! हमारे लिए दुआ कीजिए तो आप ने दुआ फ़रमाई "ऐ अल्लाह इनकी रोज़ी में बरकत दे, इन्हें बख़्श दे और इन पर रहम फ़रमा।"

3576 - حَدَّثَنَا أَبُو مُوسَى مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ خُمَيْرٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ بُسْرٍ، قَالَ: نَزَلَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى أَبِي فَقَرَّبْنَا إِلَيْهِ طَعَامًا فَأَكَلَهُ، ثُمَّ أُتِيَ بِتَمْرٍ فَكَانَ يَأْكُلُ وَيُلْقِي النَّوَى بِإِصْبَعَيْهِ جَمَعَ السَّبَّابَةَ وَالوُسْطَى، قَالَ شُعْبَةُ: وَهُوَ ظَنِّي فِيهِ إِنْ شَاءَ اللَّهُ وَأَلْقَى النَّوَى بَيْنَ أُصْبُعَيْنِ، ثُمَّ أُتِيَ بِشَرَابٍ فَشَرِبَهُ، ثُمَّ نَاوَلَهُ الَّذِي عَنْ يَمِينِهِ، قَالَ: فَقَالَ أَبِي وَأَخَذَ بِلِجَامِ دَابَّتِهِ ادْعُ لَنَا، فَقَالَ: اللَّهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِيمَا رَزَقْتَهُمْ، وَاغْفِرْ لَهُمْ وَارْحَمْهُمْ.

मुस्लिम:2042. अबू दाऊद:3729. अहमद:4/ 188.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। नीज़ एक और सनद से भी अब्दुल्लाह बिन बुस्र (رضي الله عنه) से मर्वी है।

3577 - बिलाल बिन यसार बिन ज़ैद अपने बाप के ज़रिए अपने दादा से रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिस शख़्स ने यह दुआ पढ़ी "मैं उस अज़मत वाले अल्लाह से बख़्शिश माँगता हूँ जिसके अलावा कोई माबूद नहीं वह ज़िंदा और कायम रहने वाला है और मैं उसकी तरफ़ तौबा करता हूँ" अगर वह ज़ंग से

3577 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ الشَّنِّيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عُمَرُ بْنُ مُرَّةَ، قَالَ: سَمِعْتُ بِلَالَ بْنَ يَسَارِ بْنِ زَيْدٍ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ جَدِّي، سَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يَقُولُ: مَنْ قَالَ أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ الَّذِي لَا إِلَهَ

إِلاَّ هُوَ الحَيَّ القَيُّومَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ، غُفِرَ لَهُ وَإِنْ كَانَ فَرَّ مِنَ الزَّحْفِ.

भी भागा हुआ हो तो अल्लाह तआला उसे बख़्श देंगे।"

सहीह: अबू दाऊद: 1517. सहीहुत्तर्गीब: 1622.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है, हम इसे सिर्फ इसी तरीक़ से जानते हैं।

133 - بَابٌ

133 - बाब।

3578 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي جَعْفَرٍ، عَنْ عُمَارَةَ بْنِ خُزَيْمَةَ بْنِ ثَابِتٍ، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ حُنَيْفٍ، أَنَّ رَجُلاً ضَرِيرَ البَصَرِ أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ادْعُ اللَّهَ أَنْ يُعَافِيَنِي قَالَ: إِنْ شِئْتَ دَعَوْتُ، وَإِنْ شِئْتَ صَبَرْتَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكَ. قَالَ: فَادْعُهْ، قَالَ: فَأَمَرَهُ أَنْ يَتَوَضَّأَ فَيُحْسِنَ وُضُوءَهُ وَيَدْعُوَ بِهَذَا الدُّعَاءِ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ وَأَتَوَجَّهُ إِلَيْكَ بِنَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ نَبِيِّ الرَّحْمَةِ، إِنِّي تَوَجَّهْتُ بِكَ إِلَى رَبِّي فِي حَاجَتِي هَذِهِ لِتُقْضَى لِيَ، اللَّهُمَّ فَشَفِّعْهُ فِيَّ.

3578 - सय्यदना उस्मान बिन हुनैफ़ (رضي الله عنه) से रिवायत है कि एक नाबीना आदमी नबी (ﷺ) के पास आकर अर्ज़ करने लगा: आप अल्लाह से दुआ कीजिए कि वह मुझे आफ़ियत दे दे। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "अगर तुम चाहते हो तो मैं दुआ कर देता हूँ और अगर चाहो तो सब्र करो वह तुम्हारे लिए बेहतर होगा।" उसने कहा: आप दुआ कर दीजिए, फिर आपने उसे हुक्म दिया कि अच्छी तरह वुज़ू करके यह दुआ पढ़ो "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से सवाल करता हूँ और तेरी तरफ़ तेरे नबीयुर्रहमा मुहम्मद (ﷺ) को मुतवज्जह करता हूँ, मैं अपनी इस हाजत में आप को अपने रब की तरफ़ मुतवज्जह करता हूँ, ऐ अल्लाह! मेरे मामले में इनकी सिफ़ारिश क़ुबूल फ़रमा।"

सहीह: इब्ने माजह: 1385. अहमद: 4/ 138. हाकिम: 1/ 313. इब्ने खुज़ैमा: 129.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह ग़रीब है, हम इसे अबू जाफ़र के तरीक़ से ही जानते हैं और यह खतमी के अलावा हैं।

नीज़ उस्मान बिन हुनैफ़ (رضي الله عنه) सहल बिन हुनैफ़ (رضي الله عنه) के भाई थे।

3579 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا إِسْحَاقُ بْنُ عِيسَى، قَالَ: حَدَّثَنِي مَعْنٌ قَالَ: حَدَّثَنِي مُعَاوِيَةُ بْنُ صَالِحٍ، عَنْ

3579 - सय्यदना अम्र बिन अबसा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि उन्होंने नबी (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: " जिस घड़ी में रब अपने बन्दे

ضَمْرَةَ بْنِ حَبِيبٍ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا أُمَامَةَ، يَقُولُ: حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ عَبَسَةَ، أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ ، يَقُولُ: أَقْرَبُ مَا يَكُونُ الرَّبُّ مِنَ الْعَبْدِ فِي جَوْفِ اللَّيْلِ الآخِرِ، فَإِنِ اسْتَطَعْتَ أَنْ تَكُونَ مِمَّنْ يَذْكُرُ اللَّهَ فِي تِلْكَ السَّاعَةِ فَكُنْ.

से क़रीब तरीन होता है वह रात का आख़िरी हिस्सा है अगर तुममें ताक़त है कि तू इस घड़ी में अल्लाह को याद करने वालों में हो सको तो हो जाओ।"

सहीह: निसाई: 573. अल-कलिमुत्तय्यब:54. मुस्लिम:294. अबू दाऊद:1277. अहमद:4/111.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस सहीह ग़रीब है।

3580 - حَدَّثَنَا أَبُو الوَلِيدِ الدِّمَشْقِيُّ أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ بَكَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُفَيْرُ بْنُ مَعْدَانَ، أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا دَوْسٍ اليَحْصُبِيَّ، يُحَدِّثُ عَنِ ابْنِ عَائِذٍ اليَحْصُبِيِّ، عَنْ عُمَارَةَ بْنِ زَعْكَرَةَ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: إِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ يَقُولُ: إِنَّ عَبْدِي كُلَّ عَبْدِيَ الَّذِي يَذْكُرُنِي وَهُوَ مُلَاقٍ قِرْنَهُ يَعْنِي: عِنْدَ القِتَالِ.

3580 - सय्यदना उमारा बिन ज़अ्करा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "अल्लाह तआला फ़रमाता है: मेरा वह बन्दा कामिल बन्दा है जो मुझे अपने मद्दे मुक़ाबिल के सामने भी याद करता है यानी जंग में।"

ज़ईफ़:अल-कमाल:13/437. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:3135.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी(رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। हम इसे इसी सनद से जानते हैं इसकी सनद कवी नहीं है। नीज़ हम उमारा बिन ज़अ्करा(رضي الله عنه) की नबी(ﷺ) से यही एक हदीस जानते हैं और वह मद्दे मुक़ाबिल के सामने हो यानी जंग में, इसका मतलब यह है कि वह आदमी उस घड़ी में भी अल्लाह को याद करे।

134 بَاب فِي فَضْلِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ

134 - ला हौला वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह कहने की फ़ज़ीलत।

3581 - حَدَّثَنَا أَبُو مُوسَى مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ: حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، قَالَ: سَمِعْتُ مَنْصُورَ بْنَ زَاذَانَ يُحَدِّثُ، عَنْ

3581 - सय्यदना कैस बिन साद बिन उबादा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मेरे बाप ने मुझे नबी (ﷺ) की ख़िदमत के लिए आप के सुपुर्द किया, कहते हैं: नबी (ﷺ) मेरे पास से गुज़रे

مَيْمُونِ بْنِ أَبِي شَبِيبٍ، عَنْ قَيْسِ بْنِ سَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ، أَنَّ أَبَاهُ دَفَعَهُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَخْدُمُهُ، قَالَ: فَمَرَّ بِيَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَدْ صَلَّيْتُ فَضَرَبَنِي بِرِجْلِهِ وَقَالَ: أَلاَ أَدُلُّكَ عَلَى بَابٍ مِنْ أَبْوَابِ الجَنَّةِ؟ قُلْتُ: بَلَى؟ قَالَ: لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ.

जब कि मैंने नमाज़ पढ़ ली थी आप(ﷺ) ने अपना पाँव मुझे मार कर फ़रमाया, "क्या मैं जन्नत के दरवाजों में से एक दरवाज़े की तरफ़ तुम्हारी रहनुमाई न करूं?" मैंने अर्ज़ किया, क्यों नहीं, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "(वह है) لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ का कहना।"

सहीह: अहमद: 3/422. हाकिम:4/290. अस-सिलसिला अस-सहीहा:1528. सहीहुत्तर्गीब:1582.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस सहीह ग़रीब है।

3582 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ أَبِي جَعْفَرٍ، عَنْ صَفْوَانَ بْنِ سُلَيْمٍ، قَالَ: مَا نَهَضَ مَلَكٌ مِنَ الأَرْضِ حَتَّى قَالَ: لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ.

3582 - सफ़वान बिन सुलैम कहते हैं किसी फ़रिश्ते ने لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ कहे बग़ैर ज़मीन की तरफ़ परवाज़ नहीं की।(1)

इस्नादुहू सहीह मकतूअ

तौज़ीह: (1) यह चीज़ वहि के बग़ैर पता नहीं चल सकती जबकि इस बारे में नबी (ﷺ) से कोई चीज़ सहीह सनद से साबित नहीं और यह भी मुम्किन है सफ़वान ने यह कौल अहले किताब से लिया हो।

135 بَابٌ فِي فضل التسبيح والتهليل والتقديس

135 - तस्बीह, तह्लील और तक्दीस की फ़ज़ीलत।

3583 - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ حِزَامٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، وَغَيْرُ وَاحِدٍ، قَالُوا: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ، قَالَ: سَمِعْتُ هَانِئَ بْنَ عُثْمَانَ، عَنْ أُمِّهِ حُمَيْضَةَ بِنْتِ يَاسِرٍ، عَنْ جَدَّتِهَا يُسَيْرَةَ، وَكَانَتْ مِنَ الْمُهَاجِرَاتِ، قَالَتْ: قَالَ لَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ: عَلَيْكُنَّ بِالتَّسْبِيحِ وَالتَّهْلِيلِ وَالتَّقْدِيسِ، وَاعْقِدْنَ بِالأَنَامِلِ فَإِنَّهُنَّ مَسْئُولاَتٌ مُسْتَنْطَقَاتٌ، وَلاَ تَغْفُلْنَ فَتَنْسَيْنَ الرَّحْمَةَ.

3583 - सय्यदा युसैरा (رضي الله عنها) जो कि हिज्रत करने वाली ख्वातीन में से थीं रिवायत करती हैं कि अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने हम से फ़रमाया, "तस्बीह, तह्लील और तक्दीस(1) **ज़रूर करो और उन्हें उँगलियों के पोरों पर शुमार करो इसलिए कि उन्हें गोयाई की कुव्वत देकर उन से सवाल किया जाएगा और गफ़लत न करना वर्ना तुम रहमत से भुला दी जाओगी।"**

हसन: अबू दाऊद:1501. अहमद:6/370. हाकिम:1/547. अस-सिलसिला अस-सहीहा: 83.

तौज़ीह: تسبیح से मुराद سبحان الله कहना, तहलील से मुराद لا إله إلا الله और तक्दीस से मुराद سبوح قدوس رب الملائكة والروح या سبحان الملك القدوس का वज़ीफ़ा करना है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह ग़रीब है, हम इसे उम्मे हानी बिन उस्मान के तरीक़ से ही जानते हैं इसे मुहम्मद बिन रबीया ने भी हानी बिन उस्मान से रिवायत किया है।

136 - जंग के वक़्त की दुआ।

136 بَابٌ فِي الدعاء إذا غزا

3584 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) जब जंग करते तो यह दुआ करते थे "ऐ अल्लाह! तू ही मेरा बाज़ू है, तू ही मददगार है और तेरी ही मदद से मैं लड़ाई करता हूँ।"

सहीह: अबू दाऊद:2632. अल-कलिमुत्तय्यब: 126. अहमद:3/ 184. इब्ने हिब्बान:4761.

3584 - حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ الجَهْضَمِيُّ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي، عَنِ الْمُثَنَّى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا غَزَا، قَالَ: اللَّهُمَّ أَنْتَ عَضُدِي، وَأَنْتَ نَصِيرِي وَبِكَ أُقَاتِلُ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है, और मेरे बाजू से मुराद है कि तू ही मेरा तआवुन करने वाला है।

137 - यौमे अरफ़ा (नौ ज़िल हिज्जा) की दुआ।

137 - بَابٌ فِي دعاء يوم عرفة.

3585 - अम्र बिन शोऐब अपने बाप से वह अपने दादा (अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि0) से रिवायात करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "बेहतरीन दुआ अरफ़ा के दिन की दुआ है और बेहतरीन वज़ीफ़ा जो मैं ने और मुझ से पहले अंबिया ने कहा है वह यह है: "अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाहत है उसी के लिए हर क़िस्म की तारीफ़ है और वह हर चीज़ पर कामिल कुदरत रखने वाला है।"

हसन: अहमद: अस-सिलसिला अस-सहीहा:1503. सहीहुत्तर्गीब: 1536.

3585 - حَدَّثَنَا أَبُو عَمْرٍو مُسْلِمُ بْنُ عَمْرٍو، قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ نَافِعٍ، عَنْ حَمَّادِ بْنِ أَبِي حُمَيْدٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: خَيْرُ الدُّعَاءِ دُعَاءُ يَوْمِ عَرَفَةَ، وَخَيْرُ مَا قُلْتُ أَنَا وَالنَّبِيُّونَ مِنْ قَبْلِي: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है और हम्माद बिन अबी हुमैद यह मुहम्मद बिन अबी हुमैद ही हैं और यह अबू इब्राहीम अंसारी मदनी हैं जो कि मोहद्दिसीन के नज़दीक कवी नहीं हैं।

138 - दुआ। ऐ अल्लाह मेरा बातिन मेरे ज़ाहिर से अच्छा बना दे।

138- بَابٌ دعاء: اللَّهُمَّ اجْعَلْ سَرِيرَتِي خَيْرًا مِنْ عَلاَنِيَتِي.

3586 - सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे यह दुआ सिखाई कि तुम कहो "ऐ अल्लाह मेरा बातिन मेरे ज़ाहिर से अच्छा बना दे, मेरा ज़ाहिर नेक बना दे और अल्लाह मैं तुझ से उन अच्छी चीजों का सवाल करता हूँ जो तू लोगों को अहलो औलाद और माल अता करता है जो न गुमराह हो और न ही गुमराह करने वाला हो।"

ज़ईफ़: अबू नुऐम फिल हिल्या: 1/53. हिदायुर्रूवात : 3438.

3586 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ أَبِي بَكْرٍ، عَنِ الجَرَّاحِ بْنِ الضَّحَّاكِ الكِنْدِيِّ، عَنْ أَبِي شَيْبَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُكَيْمٍ، عَنْ عُمَرَ بْنِ الخَطَّابِ، قَالَ: عَلَّمَنِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: قُلْ: اللَّهُمَّ اجْعَلْ سَرِيرَتِي خَيْرًا مِنْ عَلاَنِيَتِي، وَاجْعَلْ عَلاَنِيَتِي صَالِحَةً، اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ صَالِحِ مَا تُؤْتِي النَّاسَ مِنَ الْمَالِ وَالأَهْلِ وَالوَلَدِ، غَيْرِ الضَّالِّ وَلاَ الْمُضِلِّ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है, हम इसे सिर्फ इसी सनद से ही जानते हैं और इसकी सनद क़वी नहीं है।

139 - दुआ: ऐ दिलों को फेरने वाले मेरे दिल को मज़बूत कर।

139- بَابٌ دعاء: يَا مُقَلِّبَ القُلُوبِ، ثَبِّتْ قَلْبِي.

3587 - आसिम बिन कुलैब जरमी अपने बाप के ज़रिए अपने दादा से रिवायत करते हैं कि मैं नबी (ﷺ) के पास गया आप नमाज़ पढ़ रहे थे जब कि आप (ﷺ) ने अपना बायाँ हाथ अपनी बाएं रान और दायाँ हाथ अपनी दायीं रान पर रखा हुआ था और उँगलियों को बंद कर के

3587 - حَدَّثَنَا عُقْبَةُ بْنُ مُكْرَمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ سُفْيَانَ الجَحْدَرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَعْدَانَ، قَالَ: أَخْبَرَنِي عَاصِمُ بْنُ كُلَيْبٍ الجَرْمِيُّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يُصَلِّي

وَقَدْ وَضَعَ يَدَهُ الْيُسْرَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُسْرَى، وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُمْنَى وَقَبَضَ أَصَابِعَهُ وَبَسَطَ السَّبَّابَةَ، وَهُوَ يَقُولُ: يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوبِ، ثَبِّتْ قَلْبِي عَلَى دِينِكَ.

शहादत वाली उंगली फैलाई हुई थी और आप (ﷺ) कह रहे थे "ऐ दिलों को फेरने वाले मेरे दिल को अपने दीन पर मज़बूत रखना।"

मुन्कर : यह सियाक़ देखिए: 291,292,2128, 3350) तबरानी फ़िल कबीर:17/7232.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस इस सनद से ग़रीब है।

140 - بَابٌ فِي الرقية أذا أشتكي .

140 - किसी तक्लीफ़ की वजह से दम करना।

3588 - حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ بْنُ عَبْدِ الصَّمَدِ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَالِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا ثَابِتٌ الْبُنَانِيُّ، قَالَ: قَالَ لِي يَا مُحَمَّدُ إِذَا اشْتَكَيْتَ فَضَعْ يَدَكَ حَيْثُ تَشْتَكِي، ثُمَّ قُلْ: بِسْمِ اللهِ، أَعُوذُ بِعِزَّةِ اللهِ وَقُدْرَتِهِ مِنْ شَرِّ مَا أَجِدُ مِنْ وَجَعِي هَذَا، ثُمَّ ارْفَعْ يَدَكَ ثُمَّ أَعِدْ ذَلِكَ وِتْرًا فَإِنَّ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ، حَدَّثَنِي أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَدَّثَهُ بِذَلِكَ.

3588 - मुहम्मद बिन सालिम (رحمه الله) बयान करते हैं कि साबित बुनानी (رحمه الله) ने मुझ से कहा ऐ मुहम्मद! जब तुम्हें कोई तक्लीफ़ महसूस हो तो अपना हाथ तक्लीफ़ वाली जगह पर रख कर कहो "मैं अल्लाह की इज़्ज़त और कुदरत के साथ अपने इस बीमारी की तक्लीफ़ के शर से पनाह माँगता हूँ, फिर अपना हाथ उठा लो यही अमल ताक़ तादाद में करो क्योंकि मुझे अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) ने बताया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें ऐसे ही इर्शाद फ़रमाया था।

सहीह: हाकिम:4/219. अस-सिलसिला अस-सहीहा: 1258. सहीहुत्तर्गीब:3454.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है, और मुहम्मद बिन सालिम बस्रा के रहने वाले थे।

141 بَابُ دُعَاءِ أُمِّ سَلَمَةَ

141 - सय्यदा उम्मे सलमा (رضي الله عنها) की दुआ।

3589 - حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ عَلِيِّ بْنِ الأَسْوَدِ الْبَغْدَادِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ حَفْصَةَ بِنْتِ أَبِي

3589 - सय्यदा उम्मे सलमा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे यह दुआ सिखाई "ऐ अल्लाह! यह तेरी रात के आने, तेरे दिन के जाने, तुझे पुकारने वालों की आवाजों

كَثِيرٍ، عَنْ أَبِيهَا أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ، قَالَتْ: عَلَّمَنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ قَالَ: قُولِي: اللَّهُمَّ هَذَا اسْتِقْبَالُ لَيْلِكَ وَاسْتِدْبَارُ نَهَارِكَ، وَأَصْوَاتُ دُعَاتِكَ وَحُضُورُ صَلَوَاتِكَ، أَسْأَلُكَ أَنْ تَغْفِرَ لِي.

और तेरी नमाज़ों में हाजिरी का वक़्त है मैं तुझ से सवाल करता हूँ कि तू मुझे बख़्शश दे।"

ज़ईफ़: अबू दाऊद:530. हाकिम:1/299. अबू याला:6896.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है हम इसे सिर्फ इसी तरीक़ से जानते हैं और हम हफ्सा बिन्ते अबी कसीर को जानते हैं और न ही उनके बाप को।

3590 - حَدَّثَنَا الحُسَيْنُ بْنُ عَلِيِّ بْنِ يَزِيدَ الصُّدَائِيُّ البَغْدَادِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الوَلِيدُ بْنُ القَاسِمِ الهَمْدَانِيُّ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ كَيْسَانَ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَا قَالَ عَبْدٌ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ قَطُّ مُخْلِصًا، إِلاَّ فُتِحَتْ لَهُ أَبْوَابُ السَّمَاءِ، حَتَّى تُفْضِيَ إِلَى العَرْشِ، مَا اجْتَنَبَ الكَبَائِرَ.

3590 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो बन्दा ख़ुलूसे निय्यत से لا إله إلا الله कहता है तो उसके लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं यहाँ तक कि वह कलिमा अर्श तक पहुँच जाता है जब तक कहने वाला कबीरा गुनाहों से बचता रहे।"

हसन: निसाई:833. सहीहुत्तर्गीब:1524.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है।

3591 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ بَشِيرٍ، وَأَبُو أُسَامَةَ، عَنْ مِسْعَرٍ، عَنْ زِيَادِ بْنِ عِلاَقَةَ، عَنْ عَمِّهِ، قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ مُنْكَرَاتِ الأَخْلاَقِ، وَالأَعْمَالِ وَالأَهْوَاءِ.

3591 - ज़ियाद बिन इलाक़ा अपने चचा से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) दुआ किया करते थे "ऐ अल्लाह! मैं बुरे अख़्लाक़, बुरे आमाल और बुरी ख़्वाहिशात से तेरी पनाह में आता हूँ।"

सहीह: हाकिम:1/532. इब्ने हिब्बान:960. तबरानी:19/36.हिदायुर्रूवात:2405.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है, और ज़ियाद बिन इलाक़ा के चचा नबी करीम (ﷺ) के सहाबी सय्यदना कतबा बिन मालिक (رضي الله عنه) हैं।

3592 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الدَّوْرَقِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ: حَدَّثَنَا

3592 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ नमाज़ पढ़ रहे थे कि लोगों में से

الحَجَّاجُ بْنُ أَبِي عُثْمَانَ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ عَوْنِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: بَيْنَا نَحْنُ نُصَلِّي مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، إِذْ قَالَ رَجُلٌ مِنَ القَوْمِ: اللَّهُ أَكْبَرُ كَبِيرًا، وَالحَمْدُ لِلَّهِ كَثِيرًا، وَسُبْحَانَ اللهِ بُكْرَةً وَأَصِيلاً، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنِ القَائِلُ كَذَا وَكَذَا؟ فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ القَوْمِ: أَنَا يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ: عَجِبْتُ لَهَا فُتِحَتْ لَهَا أَبْوَابُ السَّمَاءِ قَالَ ابْنُ عُمَرَ: مَا تَرَكْتُهُنَّ مُنْذُ سَمِعْتُ مِنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

एक आदमी ने कहा: अल्लाह सब से बड़ा है, बहुत बड़ा हर क़िस्म की तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है बहुत ज़्यादा और मैं सुबहो शाम अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता हूँ, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (नमाज़ के बाद) फ़रमाया, "इस इस तरह कहने वाला कौन था?" लोगों में से एक आदमी कहने लगा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मैं था। आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "मुझे इस कलिमा से तअज्जुब हुआ इसके लिए आसमान के दरवाज़े खोले गए। इब्ने उमर (رضي الله عنه) कहते हैं: मैंने जब से रसूलुल्लाह (ﷺ) से इन कलिमात के बारे सुना तो मैंने उन्हें (कहना) नहीं छोड़ा।

मुस्लिम:601. निसाई:886. अहमद:2/ 14. अबू याला:5728.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस ग़रीब हसन सहीह है। और हज्जाज बिन अबी उस्मान, हज्जाज बिन मैसरा अस्सव्वाफ़ ही हैं उनकी कुनियत अबू सल्त थी और मोहद्दिसीन के नज़दीक यह सिक़ह् रावी हैं।

142 بَابُ أَيُّ الكَلَامِ أَحَبُّ إِلَى اللهِ

142 - अल्लाह तआला को कौन सा कलाम सब से ज़्यादा पसंद है?

3593 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الدَّوْرَقِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا الجُرَيْرِيُّ، عَنْ أَبِي عَبْدِ اللهِ الجَسْرِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الصَّامِتِ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَادَهُ،، أَوْ أَنَّ أَبَا ذَرٍّ عَادَ رَسُولَ اللهِ ﷺ، فَقَالَ: بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي

3593. सय्यदना अबू ज़र (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) उनकी इयादत के लिए तशरीफ़ लाये या अबू ज़र (رضي الله عنه) रसूलुल्लाह (ﷺ) की इयादत के लिये गए थे तो उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! आप पर मेरे मां बाप कुर्बान हों अल्लाह तआला को कौन सा कलाम सबसे ज़्यादा पसंद है? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो कलाम अल्लाह ने

يَا رَسُولَ اللهِ، أَيُّ الكَلَامِ أَحَبُّ إِلَى اللهِ عَزَّ وَجَلَّ؟ قَالَ: مَا اصْطَفَى اللَّهُ لِمَلَائِكَتِهِ: سُبْحَانَ رَبِّي وَبِحَمْدِهِ، سُبْحَانَ رَبِّي وَبِحَمْدِهِ.

अपने फ़रिश्तों के लिए चुनी है "मेरा रब अपनी तमाम तर तारीफ़ों के साथ पाक है, मेरा रब अपनी तमाम तर तारीफ़ों के साथ पाक है''

मुस्लिम:2731. अहमद:5/ 148. बुख़ारी फी अदबिल मुफ़रद:638. अस- सिलसिला अस- सहीहा: 1498.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

143 بَابٌ فِي العَفْوِ وَالعَافِيَةِ

143 - माफ़ी और आफ़ियत का सवाल।

3594 - حَدَّثَنَا أَبُو هِشَامٍ الرِّفَاعِيُّ مُحَمَّدُ بْنُ يَزِيدَ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ اليَمَانِ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ زَيْدٍ العَمِّيِّ، عَنْ أَبِي إِيَاسٍ مُعَاوِيَةَ بْنِ قُرَّةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: الدُّعَاءُ لَا يُرَدُّ بَيْنَ الأَذَانِ وَالإِقَامَةِ، قَالُوا: فَمَاذَا نَقُولُ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: سَلُوا اللَّهَ العَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ.

3594 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अज़ान और इक़ामत के दर्मियान (की जाने वाली) दुआ रद्द नहीं की जाती। लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! फिर हम क्या दुआ करें? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम अल्लाह से दुनिया और आख़िरत में आफ़ियत का सवाल करो।"

मुन्कर: तख़्रीज के लिए देखें हदीस नम्बर:212.

तौज़ीह: हदीस का पहला जुज़ सहीह है इस के कई शवाहिद हैं जिन में अगली हदीस भी है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है। और यह अल्फ़ाज़ कि "लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! हम क्या दुआ करें? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह से दुनिया और आख़िरत की आफ़ियत का सवाल करो।" यह्या बिन यमान ने इज़ाफ़ा किया है।

3595 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، وَعَبْدُ الرَّزَّاقِ، وَأَبُو أَحْمَدَ، وَأَبُو نُعَيْمٍ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ زَيْدٍ العَمِّيِّ، عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ قُرَّةَ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، قَالَ: الدُّعَاءُ لَا يُرَدُّ بَيْنَ الأَذَانِ وَالإِقَامَةِ.

3595 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अज़ान और इक़ामत के दर्मियान (की जाने वाली) दुआ रद्द नहीं की जाती।"

सहीह: पिछली हदीस देखें।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: अबू इस्हाक़ हम्दानी ने इस हदीस को बुरैदा बिन अबी

मरियम कूफी से बवास्ता अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) नबी करीम (ﷺ) से ऐसे ही रिवायत किया है और यह ज़्यादा सहीह है।

146 بَابٌ سَبَقَ الْمُفَرِّدُونَ

144- हल्के फुल्के लोग आगे निकल गये

3596 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنْ عُمَرَ بْنِ رَاشِدٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: سَبَقَ الْمُفْرِدُونَ، قَالُوا: وَمَا الْمُفْرِدُونَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: الْمُسْتَهْتَرُونَ فِي ذِكْرِ اللهِ، يَضَعُ الذِّكْرُ عَنْهُمْ أَثْقَالَهُمْ فَيَأْتُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ خِفَافًا.

3596- सय्यदना अबू हुरैरा(رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "हल्के फुल्के लोग आगे निकल गए।" लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! हल्के फुल्के लोग कौन हैं? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह के ज़िक्र में डूबे हुए लोग, [1] ज़िक्रे इलाही उन से उन के बोझ उतार देगा फिर वह क़यामत के दिन हल्के फुल्के हो कर आएंगे।"

ज़ईफ़: अज़-ज़ईफा: 3690. अहमद:2/323. इब्ने हिब्बान:848. हाकिम:1/495. दूसरे तरीक़ से। लेकिन पहला जुज़ सहीह है। देखिए सहीह मुस्लिम:2676.

तौज़ीह: اَلْمُسْتَهْتَرُون : किसी तन्क़ीद और नसीहत से लापरवाह हो कर किसी चीज़ का शैदाई हो जाना और उसे अपनाए रखना, आशिक व फ़रेफ़्ता इंसान (देखिये अल-क़ामूसुल वहीद,प.1739) और यहाँ ऐसे लोग मुराद हैं जो लोगों से बेपरवाह हो कर ज़िक्रे इलाही में मगन रहें।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

3597 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الْأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَأَنْ أَقُولَ سُبْحَانَ اللهِ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ، وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ، أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا طَلَعَتْ عَلَيْهِ الشَّمْسُ.

3597 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अगर मैं यह कलिमात कहूं "अल्लाह पाक है, तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं। उस के सिवा कोई माबूद नहीं और अल्लाह बहुत बड़ा है" तो यह मुझे उन चीजों से ज़्यादा महबूब है जिन पर सूरज तुलू होता है।"

मुस्लिम:2695. इब्ने हिब्बान:834. इब्ने अबी शैबा:10/288.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3598 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ نُمَيْرٍ، عَنْ سَعْدَانَ الْقُبِّيِّ، عَنْ أَبِي مُجَاهِدٍ، عَنْ أَبِي مُدِلَّةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ثَلاثَةٌ لاَ تُرَدُّ دَعْوَتُهُمْ: الصَّائِمُ حَتَّى يُفْطِرَ، وَالإِمَامُ العَادِلُ، وَدَعْوَةُ الْمَظْلُومِ يَرْفَعُهَا اللَّهُ فَوْقَ الغَمَامِ وَيَفْتَحُ لَهَا أَبْوَابَ السَّمَاءِ وَيَقُولُ الرَّبُّ: وَعِزَّتِي لأَنْصُرَنَّكِ وَلَوْ بَعْدَ حِينٍ.

3598 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "तीन आदमी ऐसे हैं जिनकी दुआ रद्द नहीं की जाती: रोज़ेदार की इफ़्तारी के वक़्त की दुआ, इन्साफ करने वाला हाकिम और मज़्लूम की दुआ अल्लाह उसे बादलों के ऊपर उठाते हैं, उस के लिए आसमान के दरवाज़े खोले जाते हैं और परवरदिगार फ़रमाता है मेरी इज़्ज़त की क़सम मैं तुम्हारी मदद ज़रूर करूंगा ख़्वाह कुछ वक़्त के बाद ही करूं।"

ज़ईफ़: हदीस का पहला जुज़ आदिल इमाम के बदले मुसाफिर और एक रिवायत के मुताबिक " वालिद" के अल्फ़ाज़ से सहीह है) इब्ने माजह:1752. अहमद:2/304. इब्ने हिब्बान:874. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:1358.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है। और सादान क़ुब्बी, सादान बिन बिश्र हैं उनसे ईसा बिन यूनुस, अबू आसिम और दीगर बड़े-बड़े मोहद्दिसीन ने रिवायत की है, अबू मुजाहिद, साद अत्ताई हैं और अबू मुदिल्ला, उम्मुल मोमिनीन सय्यदा आयशा (ﷺ) के आज़ादकर्दा गुलाम थे और हम उन्हें सिर्फ इसी हदीस में जानते हैं और यह हदीस उन से तवालत (तफ़्सील) के साथ भी मर्वी है।

3599 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ نُمَيْرٍ، عَنْ مُوسَى بْنِ عُبَيْدَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ ثَابِتٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: اللَّهُمَّ انْفَعْنِي بِمَا عَلَّمْتَنِي، وَعَلِّمْنِي مَا يَنْفَعُنِي، وَزِدْنِي عِلْمًا، الحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ، وَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ حَالِ أَهْلِ النَّارِ.

3599 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दुआ फ़रमाई: "ऐ अल्लाह! मुझे उस इल्म के साथ नफ़ा दे, जो तूने मुझे सिखाया और मुझे वह इल्म अता कर जो मुझे नफा दे, हर हाल में सब तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं और मैं अहले जहन्नम के हाल से अल्लाह की पनाह में आता हूँ।"

सहीह: अल-हम्दुलिल्लाह के अल्फ़ाज़ के अलावा इब्ने माजह:251. अब्द बिन हुमैद:1419. इब्ने अबी शैबा:10/281.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है।

145- अल्लाह के कुछ फ़रिश्ते ज़मीन में चलते हैं

145 بَابُ مَا جَاءَ إِنَّ لِلّٰهِ مَلَائِكَةً سَيَّاحِينَ فِي الْأَرْضِ

3600 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "लोगों के आमाल लिखने वालों के अलावा भी अल्लाह के कुछ फ़रिश्ते ज़मीन में चलते हैं, चुनांचे जब वह ऐसे लोगों को देखते हैं जो अल्लाह का ज़िक्र कर रहे हों तो वह आवाज़ देते हैं: जो तुम तलाश कर रहे थे उसकी तरफ़ आ जाओ, फिर वह आकर उन लोगों को आसमाने दुनिया तक घेर लेते हैं, फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है: तुम मेरे बन्दों को क्या काम करते हुए छोड़ कर आए हो? तो वह अर्ज़ करते हैं: हम उन्हें तेरी तारीफ़, तेरी बुज़ुर्गी और तेरा ज़िक्र करते हुए छोड़ कर आए हैं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह फ़रमाता है: क्या उन्होंने मुझे देखा है? वह कहते हैं: नहीं, तो वह फ़रमाता है: अगर वह मुझे देख लें तो क्या हो? वह कहते हैं: अगर वह तुझे देख लें तो इस से भी ज़्यादा तेरी हम्द व तौसीफ़ और तेरा ज़िक्र करें, फिर अल्लाह तआला पूछता है: वह क्या चीज़ तलाश कर रहे थे? तो वह कहते हैं: वह जन्नत के मुतलाशी थे। अल्लाह तआला फ़रमाता है: क्या उन्होंने जन्नत देखी है? वह कहते हैं: नहीं, तो अल्लाह फ़रमाता है: अगर उसे देख लें तो क्या हो? वह अर्ज़ करते हैं: अगर वह उसे देख लें तो उनकी जुस्तुजू और लालच और बढ़ जाए, फिर अल्लाह पूछता है: किस चीज़ से पनाह मांग रहे थे, वह कहते हैं जहन्नम से पनाह मांग

3600 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَوْ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ لِلَّهِ مَلاَئِكَةً سَيَّاحِينَ فِي الأَرْضِ فُضْلاً عَنْ كُتَّابِ النَّاسِ، فَإِذَا وَجَدُوا أَقْوَامًا يَذْكُرُونَ اللَّهَ تَنَادَوْا: هَلُمُّوا إِلَى بُغْيَتِكُمْ، فَيَجِيئُونَ فَيَحُفُّونَ بِهِمْ إِلَى سَمَاءِ الدُّنْيَا، فَيَقُولُ اللَّهُ: أَيَّ شَيْءٍ تَرَكْتُمْ عِبَادِي يَصْنَعُونَ، فَيَقُولُونَ: تَرَكْنَاهُمْ يَحْمَدُونَكَ وَيُمَجِّدُونَكَ وَيَذْكُرُونَكَ، قَالَ: فَيَقُولُ: فَهَلْ رَأَوْنِي، فَيَقُولُونَ: لاَ، قَالَ: فَيَقُولُ: فَكَيْفَ لَوْ رَأَوْنِي؟ قَالَ: فَيَقُولُونَ: لَوْ رَأَوْكَ لَكَانُوا أَشَدَّ تَحْمِيدًا، وَأَشَدَّ تَمْجِيدًا، وَأَشَدَّ لَكَ ذِكْرًا، قَالَ: فَيَقُولُ: وَأَيُّ شَيْءٍ يَطْلُبُونَ؟ قَالَ: فَيَقُولُونَ: يَطْلُبُونَ الجَنَّةَ، قَالَ: فَيَقُولُ: وَهَلْ رَأَوْهَا؟ قَالَ: فَيَقُولُونَ: لاَ، فَيَقُولُ: فَكَيْفَ لَوْ رَأَوْهَا؟ قَالَ: فَيَقُولُونَ: لَوْ رَأَوْهَا؟ لَكَانُوا أَشَدَّ لَهَا طَلَبًا، وَأَشَدَّ عَلَيْهَا حِرْصًا، قَالَ: فَيَقُولُ: فَمِنْ أَيِّ شَيْءٍ يَتَعَوَّذُونَ؟ قَالُوا: يَتَعَوَّذُونَ مِنَ النَّارِ، قَالَ: فَيَقُولُ: وَهَلْ رَأَوْهَا؟ فَيَقُولُونَ: لاَ، فَيَقُولُ: فَكَيْفَ لَوْ رَأَوْهَا؟ فَيَقُولُونَ: لَوْ رَأَوْهَا

لَكَانُوا مِنْهَا أَشَدَّ هَرَبًا، وَأَشَدَّ مِنْهَا خَوْفًا، وَأَشَدَّ مِنْهَا تَعَوُّذًا، قَالَ: فَيَقُولُ: فَإِنِّي أُشْهِدُكُمْ أَنِّي قَدْ غَفَرْتُ لَهُمْ، فَيَقُولُونَ: إِنَّ فِيهِمْ فُلاَنًا الخَطَّاءَ لَمْ يُرِدْهُمْ إِنَّمَا جَاءَهُمْ لِحَاجَةٍ، فَيَقُولُ: هُمُ القَوْمُ لاَ يَشْقَى لَهُمْ جَلِيسٌ.

रहे थे, अल्लाह तआला फ़रमाता है: क्या उन्होंने इसे देखा है वह कहते हैं:नहीं, तो अल्लाह तआला फ़रमाता है: अगर इसे देख लें तो क्या हो? वह अर्ज़ करते हैं: अगर वह इसे देख लें तो इस से ज़्यादा डर और खौफ़ हो और ज़्यादा पनाह मांगें तो अल्लाह तआला फ़रमाता है: तो फिर मैं गवाह बनाता हूँ कि मैंने उन्हें माफ़ कर दिया है। फ़रिश्ते अर्ज़ करते हैं: उन में फुलां शख़्स गुजरते हुए बैठ गया था, जो अपने किसी काम के लिये आया था तो अल्लाह तआला फ़रमाता है: यह ऐसे लोग हैं जिनके साथ बैठने वाला कोई भी बदबख्त नहीं होता।"

बुख़ारी:6408. मुस्लिम:2689. अहमद:2/251.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और एक दूसरी सनद से भी अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से मर्वी है।

146 باب فضل لا حول ولا قوة إلا بالله

146 - ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह कहने की फ़ज़ीलत।

3601 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو خَالِدٍ الأَحْمَرُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ الغَازِ، عَنْ مَكْحُولٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَكْثِرْ مِنْ قَوْلِ: لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ، فَإِنَّهَا مِنْ كَنْزِ الْجَنَّةِ قَالَ مَكْحُولٌ، فَمَنْ قَالَ لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ وَلاَ مَنْجَى مِنَ اللهِ إِلاَّ إِلَيْهِ: كَشَفَ عَنْهُ سَبْعِينَ بَابًا مِنَ الضُّرِّ أَدْنَاهُنَّ الفَقْرُ.

3601 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझ से फ़रमाया, "لا حول ولا قوة إلا بالله का विर्द कसरत से किया करो इसलिए कि यह जन्नत के खजानों में से एक खज़ाना है।" मक्हूल कहते हैं: जिसने यह कहा "गुनाह से बचने की ताक़त और नेकी करने की कुव्वत अल्लाह ही की तौफ़ीक़ से है और अल्लाह के सिवा कोई जाए निजात नहीं है।" तो उस से हर क़िस्म की तक्लीफ़ें हटा दी जाती हैं जिन में सब से कम फ़क़ीरी है।

सहीह: अहमद:2/333. अबी हुरैरा बे-नह्विवही:105. (लेकिन इसमें मक्हूल का कौल ज़ईफ़ है।)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: हदीस की सनद मुत्तसिल नहीं है। मक्हूल ने अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से सिमा नहीं किया।

3602 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لِكُلِّ نَبِيٍّ دَعْوَةٌ مُسْتَجَابَةٌ، وَإِنِّي اخْتَبَأْتُ دَعْوَتِي شَفَاعَةً لأُمَّتِي، وَهِيَ نَائِلَةٌ إِنْ شَاءَ اللَّهُ مَنْ مَاتَ مِنْهُمْ لاَ يُشْرِكُ بِاللَّهِ شَيْئًا.

3602 सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "हर नबी की एक दुआ ज़रूर कुबूल की जाती है और मैंने अपनी दुआ को अपनी उम्मत की सिफ़ारिश के लिए संभाल कर रखा है और यह दुआ इन्शा अल्लाह उस शख़्स को पहुंचेगी जो इस हाल में मरा कि अल्लाह के साथ शिर्क नहीं करता था।

बुख़ारी:6304. मुस्लिम:198. इब्ने माजह:4307. अहमद:2/462.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

147 باب في حسن الظن بالله عزوجل

147 - अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के साथ हुस्ने ज़न (अच्छा गुमान) रखना।

3603 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، وَأَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَقُولُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ: أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِي بِي وَأَنَا مَعَهُ حِينَ يَذْكُرُنِي، فَإِنْ ذَكَرَنِي فِي نَفْسِهِ ذَكَرْتُهُ فِي نَفْسِي، وَإِنْ ذَكَرَنِي فِي مَلأٍ ذَكَرْتُهُ فِي مَلأٍ خَيْرٍ مِنْهُمْ، وَإِنْ اقْتَرَبَ إِلَيَّ شِبْرًا اقْتَرَبْتُ مِنْهُ ذِرَاعًا، وَإِنْ اقْتَرَبَ إِلَيَّ ذِرَاعًا اقْتَرَبْتُ إِلَيْهِ بَاعًا، وَإِنْ أَتَانِي يَمْشِي أَتَيْتُهُ هَرْوَلَةً.

3603 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: मैं अपने बन्दे के साथ उसके बारे में गुमान के मुताबिक हूँ, अगर वह मुझे अपने दिल में याद करे तो मैं भी उसे अपने दिल में याद करता हूँ, अगर वह मुझे लोगों में याद करे तो मैं उसे उन से बेहतर लोगों में उसका तजकिरा करता हूँ, अगर वह मेरी तरफ़ एक बालिश्त क़रीब हो तो मैं एक हाथ क़रीब होता हूँ, अगर वह एक हाथ मेरे क़रीब हो तो मैं एक बाअ[1] क़रीब होता हूँ और अगर वह मेरे पास चल कर आए तो मैं दौड़ कर उसकी तरफ़ जाता हूँ।"

बुख़ारी:7405. मुस्लिम:2675. अहमद:2/251.

तौज़ीह: باع : दर्मियाने क़द का इंसान दोनों बाज़ू फैलाए तो एक हाथ की उंगली के सिरों से ले कर दूसरे हाथ की उंगलियों के सिरों तक सीने की चौड़ाई के साथ इस मिक़्दार व फासले को बाअ कहा जाता है जो कि चार हाथ के बराबर है। (देखिये: फतह: जिल्द नम्बर 13.पृ.514) हमारे पैमाने के लिहाज़ से तक़रीबन छ फिट मिक़्दार बनती है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और इस हदीस की शरह में आमश (رحمہ اللہ) से मर्वी है कि "जो शख़्स एक बालिश्त मेरे क़रीब हो मैं एक हाथ उसके क़रीब होता हूँ" से मुराद मग़फ़िरत और रहमत है। उलमा ने इस हदीस की यही तफ़्सीर की है कि इस से मुराद यही है कि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: जब बन्दा मेरी इताअत वाले कामों के साथ एक बालिश्त मेरे क़रीब होता है तो मेरी मग़फ़िरत और रहमत उसकी तरफ़ जल्दी करती है। नीज़ सईद बिन जुबैर (رحمہ اللہ) से मर्वी है कि उन्होंने आयत "तुम मुझे याद करो मैं तुम्हें याद करूंगा।" (अल-बक़रा:152) की तफ़्सीर में फ़रमाया है कि तुम मेरी इताअत को याद रखो मैं अपनी मग़फ़िरत में तुम्हें याद रखूंगा।

अबू ईसा कहते हैं: हमें अब्द बिन हुमैद ने उन्हें हसन बिन मूसा और अम्र बिन हाशिम रमली ने इब्ने लहीया से बवास्ता अता बिन यसार, सईद बिन जुबैर से यह बात बयान की है।

148 - पनाह तलब करना।

148 باب في الاستعاذة

3604/ 1 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضی اللہ عنہ) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जहन्नम के अज़ाब से अल्लाह की पनाह तलब करो, क़ब्र के अज़ाब से अल्लाह की पनाह तलब करो, मसीह दज्जाल के फित्ने से अल्लाह की पनाह तलब करो और ज़िंदगी व मौत के फित्ने से अल्लाह की पनाह तलब करो।"

मुस्लिम 588, बुख़ारी:1377, अहमद:2/423

3604/ 1- حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: اسْتَعِيذُوا بِاللَّهِ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ، وَاسْتَعِيذُوا بِاللَّهِ مِنْ عَذَابِ القَبْرِ. اسْتَعِيذُوا بِاللَّهِ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ، وَاسْتَعِيذُوا بِاللَّهِ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالمَمَاتِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

149 - दुआ: मैं अल्लाह के मुकम्मल कलिमात के साथ उसकी मख़्लूक़ के शर से पनाह माँगता हूँ।

149 - بَابٌ دعاء: أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ.

3604/ 2 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो शख़्स शाम के वक़्त तीन मर्तबा यह कलिमात कहे "मैं अल्लाह के मुकम्मल कलिमात की पनाह में आता हूँ, उसकी मख़्लूक़ के शर से" तो उसे उस रात कोई ज़हर नुकसान नहीं देगा"
मुस्लिम:588. बुख़ारी; 1377. अहमद:2/ 423.

3604/ 2 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى، قَالَ: أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ حَسَّانَ، عَنْ سُهَيْلِ بْنِ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ قَالَ حِينَ يُمْسِي ثَلَاثَ مَرَّاتٍ: أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ، لَمْ يَضُرَّهُ حُمَةٌ تِلْكَ اللَّيْلَةَ.

सुहैल कहते हैं: हमारे घर वालों ने इसे सीखा वह हर रात पढ़ते थे फिर उन में से एक लड़की को किसी चीज़ ने डस लिया तो उसे कोई तक्लीफ़ महसूस नहीं हुई।

قَالَ سُهَيْلٌ: فَكَانَ أَهْلُنَا تَعَلَّمُوهَا فَكَانُوا يَقُولُونَهَا كُلَّ لَيْلَةٍ فَلُدِغَتْ جَارِيَةٌ مِنْهُمْ فَلَمْ تَجِدْ لَهَا وَجَعًا.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है। इसे मालिक बिन अनस ने भी सुहैल बिन अबी सालेह से उनके बाप के ज़रिए अबू हुरैरा (ﷺ) से उन्होंने नबी (ﷺ) से रिवायत किया है, जबकि उबैदुल्लाह बिन उमर और दीगर रावियों ने इसे सुहैल से रिवायत किया है इसमें अबू हुरैरा (ﷺ) का ज़िक्र नहीं है।

150 - दुआ: ऐ अल्लाह! मुझे ऐसा बना दे कि मैं तेरा बड़ा शुक्र बजा लाऊँ।

150 - بَابٌ دعاء: اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي أُعَظِّمُ شُكْرَكَ.

3604/ 3 - अबू हुरैरा (ﷺ) बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से एक दुआ याद की थी जिसे मैं छोड़ता नहीं हूँ "ऐ अल्लाह! मुझे

3604/ 3 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى، قَالَ: أَخْبَرَنَا وَكِيعٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا أَبُو فَضَالَةَ الفَرَجُ بْنُ

فَضَالَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْحِمْصِيِّ، أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ، قَالَ: دُعَاءٌ حَفِظْتُهُ مِنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لاَ أَدَعُهُ: اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي أُعَظِّمُ شُكْرَكَ، وَأُكْثِرُ ذِكْرَكَ، وَأَتَّبِعُ نَصِيحَتَكَ، وَأَحْفَظُ وَصِيَّتَكَ.

ऐसा बना दे कि मैं तेरा बड़ा शुक्र बजा लाऊँ, कस्रत से तेरा ज़िक्र करूं, तेरी नसीहत की पैरवी करूं और तेरी वसीयत को याद रखूँ।"
सहीह: अहमद:290. निसाई:590.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है।

151 ما من رجل يدعو الله بدعاء إلا أستجيب له.

151 - आदमी अल्लाह से जो भी दुआ करता है उसे कुबूल किया जाता है।

4/3604 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى، قَالَ: أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ هُوَ ابْنُ أَبِي سُلَيْمٍ، عَنْ زِيَادٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا مِنْ رَجُلٍ يَدْعُو اللَّهَ بِدُعَاءٍ إِلاَّ اسْتُجِيبَ لَهُ، فَإِمَّا أَنْ يُعَجَّلَ فِي الدُّنْيَا، وَإِمَّا أَنْ يُدَّخَرَ لَهُ فِي الآخِرَةِ، وَإِمَّا أَنْ يُكَفَّرَ عَنْهُ مِنْ ذُنُوبِهِ بِقَدْرِ مَا دَعَا، مَا لَمْ يَدْعُ بِإِثْمٍ أَوْ قَطِيعَةِ رَحِمٍ أَوْ يَسْتَعْجِلْ. قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ وَكَيْفَ يَسْتَعْجِلُ؟ قَالَ: يَقُولُ: دَعَوْتُ رَبِّي فَمَا اسْتَجَابَ لِي.

3604/4 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "आदमी अल्लाह से जो भी दुआ करता है उसे कुबूल किया जाता है (वह इस तरह कि) या तो उसे दुनिया में अता कर दिया जाता है या उसके लिए आख़िरत में जमा हो जाती है या उसकी दुआ के मुताबिक उसके गुनाह मिटा दिए जाते हैं जब तक वह गुनाह या क़तअ की दुआ न करे या जल्दी न करे।" लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! जल्दी कैसे करता है? आप ने फ़रमाया, "वह यह कहता है कि मैंने अपने रब से दुआ की उस ने मेरी सुनी ही नहीं।"
ज़ईफ़: अहमद:2/311. तयालिसी:2553.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस ग़रीब है।

3604/ 5 - حَدَّثَنَا يَحْيَى، قَالَ: أَخْبَرَنَا يَعْلَى بْنُ عُبَيْدٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ عُبَيْدِ اللهِ،

3604/5 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो बन्दा हाथ उठाये यहाँ तक कि

عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَا مِنْ عَبْدٍ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَتَّى يَبْدُوَ إِبِطُهُ يَسْأَلُ اللَّهَ مَسْأَلَةً، إِلاَّ آتَاهَا إِيَّاهُ مَا لَمْ يَعْجَلْ، قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ وَكَيْفَ عَجَلَتُهُ؟ قَالَ: يَقُولُ: قَدْ سَأَلْتُ وَسَأَلْتُ وَلَمْ أُعْطَ شَيْئًا.

उसकी बगल जाहिर हो जाए फिर अल्लाह से कोई भी सवाल करे तो अल्लाह तआला उसे अता कर देते हैं जब तक वह जल्दी नहीं करता।" लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! उसकी जल्दी क्या है? आप ने फ़रमाया, "वह कहता है मैंने कई बार माँगा लेकिन मुझे कुछ नहीं मिला।"

सहीह: अबू याला:6134. (लेकिन गुनाहों की माफ़ी वाला जुम्ला ज़इफ है)

वज़ाहत: इस हदीस को ज़ोहरी ने अबू उबैद मौला इब्ने अज़हर से बवास्ता अबू हुरैरा नबी (ﷺ) से रिवायत किया है कि " आदमी की दुआ तब तक क़ुबूल होती है जब तक वह जल्दी करते हुए यह न कहे कि मैंने दुआ की लेकिन क़ुबूल नहीं हुई। (यह हदीस सहीह है। देखिये:हदीस:3387)

151 - بَابٌ إن حسن الظن بالله من حسن عبادة الله.

151 - अल्लाह के साथ अच्छा गुमान कर लेना अल्लाह की अच्छी इबादत करना है।

6/3604- حَدَّثَنَا يَحْيَي بْنُ مُوسَى، قَالَ: أَخْبَرَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا صَدَقَةُ بْنُ مُوسَى، قَالَ: أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ وَاسِعٍ، عَنْ سُمَيْرِ بْنِ نَهَارٍ الْعَبْدِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ حُسْنَ الظَّنِّ بِاللَّهِ مِنْ حُسْنِ عِبَادَةِ اللَّهِ.

3604/ 6 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह के साथ अच्छा गुमान कर लेना अल्लाह की अच्छी इबादत करना है।"

सहीह: रफ़ा के बग़ैर: अहमद:2/448. हाकिम:1/497. बुख़ारी फी अदबिल मुफ़रद:711.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है।

152 - بَابٌ لينظر أحدكم ما الذي يتمني.

152 - आदमी को यह ख़्याल ज़रूर रखना चाहिए कि वह क्या ख़्वाहिश कर रहा है।

7/3604 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْنٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا أَبُو عَوَانَةَ،

3604/ 7 - अम्र बिन अबी सलमा अपने बाप से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "आदमी को यह ख़याल ज़रूर

عَنْ عُمَرَ بْنِ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لِيَنْظُرَنَّ أَحَدُكُمْ مَا الَّذِي يَتَمَنَّى فَإِنَّهُ لاَ يَدْرِي مَا يُكْتَبُ لَهُ مِنْ أُمْنِيَّتِهِ.

रखना चाहिए कि वह क्या ख़्वाहिश कर रहा है इसलिए कि वह नहीं जानता कि उस की आरज़ूओं पर क्या लिखा जा रहा है।"

ज़ईफ़: अबू दाऊद:4993. अहमद:2/297. इब्ने हिब्बान:631.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।

153 - بَابٌ دعاء: اللَّهُمَّ مَتِّعْنِي بِسَمْعِي وَبَصَرِي.

153 - दुआ: ऐ अल्लाह मुझे मेरे कानों और मेरी निगाह से फ़ायदा दे।

8/3604 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى، قَالَ: أَخْبَرَنَا جَابِرُ بْنُ نُوحٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرٍو، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدْعُو فَيَقُولُ: اللَّهُمَّ مَتِّعْنِي بِسَمْعِي وَبَصَرِي وَاجْعَلْهُمَا الوَارِثَ مِنِّي، وَانْصُرْنِي عَلَى مَنْ يَظْلِمُنِي، وَخُذْ مِنْهُ بِثَارِي.

3604/ 8 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) दुआ किया करते थे " ऐ अल्लाह! मुझे मेरे कानों और मेरी निगाह से फ़ायदा दे और इन दोनों का मुझसे वारिस बना दे और जो मुझ पर ज़्यादती करे उस के खिलाफ़ मेरी मदद फ़रमा और उस से मेरा बदला ले ले।"

ज़ईफ़: तख़्रीज ज़िक्र नहीं की गई।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है।

154 - بَابٌ ليسأل أحدكم ربه حاجته كلها.

154 - आदमी को अपनी तमाम ज़रूरीयात का सवाल अपने रब से ही करना चाहिए।

9/3604 - حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ سُلَيْمَانُ بْنُ الأَشْعَثِ السِّجْزِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا قَطَنُ البَصْرِيُّ، قَالَ: أَخْبَرَنَا جَعْفَرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ

3604/ 9 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "आदमी को अपनी तमाम ज़रूरीयात का सवाल अपने रब से ही करना चाहिए यहाँ तक कि जब उसके जूते का तस्मा

وَسَلَّمَ: لِيَسْأَلْ أَحَدُكُمْ رَبَّهُ حَاجَتَهُ كُلَّهَا حَتَّى يَسْأَلَ شِسْعَ نَعْلِهِ إِذَا انْقَطَعَ.

भी टूट जाए तो वह उसी से सवाल करे।"

हसन: हाकिम: 1/523. बुख़ारी फी अदबिल मुफ़रद:650.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है, कई मोहद्दिसीन ने इस हदीस को जाफ़र बिन सुलैमान से बवास्ता साबित बुनानी नबी (ﷺ) से रिवायत किया है तो इसमें अनस (رضي الله عنه) का ज़िक्र नहीं किया।

3604/ 10 - حَدَّثَنَا صَالِحُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا جَعْفَرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ ثَابِتٍ الْبُنَانِيِّ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لِيَسْأَلْ أَحَدُكُمْ رَبَّهُ حَاجَتَهُ حَتَّى يَسْأَلَهُ الْمِلْحَ، وَحَتَّى يَسْأَلَهُ شِسْعَ نَعْلِهِ إِذَا انْقَطَعَ.

3604/ 10 - साबित बुनानी (رحمه الله) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "हर आदमी अपने रब से ही अपनी ज़रूरीयात का सवाल करे यहाँ तक कि नमक का भी और अपने जूते के तस्मे का भी जब वह टूट जाए।"

ज़ईफ़: इब्ने हिब्बान:866. अबू याला:3403.

वज़ाहत: यह हदीस कतन की जाफ़र बिन सुलेमान से रिवायतकर्दा हदीस से ज़्यादा सहीह है।

मल्हूज़ा (नोट): हदीस नम्बर 3604 के तहत दस अहादीस बयान हुई हैं जिसकी वजह यह है कि हदीस नम्बर 3604 जिसके साथ (1) हिन्दसा लगाया गया है वह मख्तूता में मौजूद है जब कि अगली नौ अहादीस 2 ता 10 मख्तूता में नहीं हैं बल्कि उन्हें साहिबे तोहफ़तुल अशराफ़ ने बयान किया इसलिए इन रिवायात को किताब की अहादीस में जमा नहीं किया गया। वल्लाहु आलम।

ख़ुलासा

- अल्लाह तआला के यहाँ दुआ बहुत अहमियत वाला अमल है।
- दुआ करने वाला अल्लाह का महबूब बन्दा होता है जब कि दुआ से तकब्बुर करने वाला ज़लील व रुस्वा होगा।
- जो बन्दा अल्लाह से नहीं माँगता अल्लाह उस पर नाराज़ हो जाता है।
- ज़िक्र करने वाले लोगों पर अल्लाह की रहमत साया फ़गन होती है।
- दुआ मांगने में अपने आप से पहल की जाए।
- सुबह और शाम के मस्नून अज़्कार को मामूल बनाया जाए।

- सोने से पहले मस्नून दुआएं पढ़ी जाएँ तो बन्दा अल्लाह की हिफाज़त में आ जाता है।
- सोने से पहले सूरह मुल्क, सज्दा और मुअव्विजात वग़ैरह पढ़ी जाएँ।
- नमाज़ों के बाद मस्नून अज्कार और तस्बीहात को मामूल बनाया जाए।
- घर से निकलते और दाख़िल होते वक़्त अल्लाह से दुआ करें।
- किसी मुसीबतज़दा को देख कर अल्लाह से आफ़ियत की दुआ करें।
- सफ़र पर रवाना होते और वापसी पर दुआ का एहतमाम करें।
- आंधी चलते, चाँद देखते और गुस्सा के वक़्त भी दुआ करें।
- खाना खाने से पहले और फ़रागत के बाद दुआ को मामूल बनाएं।
- दुआ में अल्लाह की तारीफ़ की जाए इसलिए कि अल्लाह को अपनी तारीफ़ बहुत पसंद है।
- तस्बीह, तह्मीद, तक्बीर और तह्लील बन्दे के गुनाहों को झाड़ देती हैं।
- तौबा का दरवाज़ा सूरज के मग़रिब से तुलू होने तक खुला हुआ है।
- अल्लाह तआला बन्दे की तौबा से बहुत खुश होते हैं।
- अल्लाह की रहमत उसके ग़ज़ब पर ग़ालिब है।
- अपनी तमाम ज़रूरियात का सवाल सिर्फ अल्लाह ही से किया जाए।

मज़मून नम्बर 47

أَبْوَابُ الْمَنَاقِبِ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

रसूलुल्लाह (ﷺ) से मर्वी फ़ज़ाइल व मनाकिब का बयान

तआरुफ़

75 अबवाब और 352 अहादीस पर मुश्तमिल इस उन्वान में आप पढ़ेंगे:

- नबी (ﷺ) की सूरत और आप की सीरत का दिलनशीं तज़किरा।
- आसमाने नबुव्वत के दरख़्शिन्दा सितारों की ज़िंदगियों के ताबनाक नुकूश।
- उम्मत की माँओं के आला अख़्लाक़ व किरदार का हसीन तज़किरा।

1 بَابٌ فِي فَضْلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

1 - नबी करीम (ﷺ) के फ़ज़ाइल।

3605 - حَدَّثَنَا خَلَّادُ بْنُ أَسْلَمَ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُصْعَبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ، عَنْ أَبِي عَمَّارٍ، عَنْ وَاثِلَةَ بْنِ الأَسْقَعِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَى مِنْ وَلَدِ إِبْرَاهِيمَ، إِسْمَاعِيلَ، وَاصْطَفَى مِنْ وَلَدِ إِسْمَاعِيلَ بَنِي كِنَانَةَ، وَاصْطَفَى مِنْ بَنِي كِنَانَةَ قُرَيْشًا، وَاصْطَفَى مِنْ قُرَيْشٍ بَنِي هَاشِمٍ، وَاصْطَفَانِي مِنْ بَنِي هَاشِمٍ.

3605 - सय्यदना वासिला बिन अस्क़ा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने इब्राहीम (عليه السلام) की औलाद से इस्माईल (عليه السلام) का इन्तिख़ाब फ़रमाया, इस्माईल (عليه السلام) की औलाद से बनू किनाना का इन्तिख़ाब किया, बनू किनाना से कुरैश को पसंद किया, कुरैश से बनू हाशिम को चुना और बनू हाशिम से मेरा इन्तिख़ाब फ़रमाया।"

सहीह: इस्तिफाउल अव्वल के अलावा: मुस्लिम:2276. अहमद:4/107. इब्ने हिब्बान:6242.अस-सिलसिला अस-सहीहा:302.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3606 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الدِّمَشْقِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي شَدَّادُ أَبُو عَمَّارٍ قَالَ: حَدَّثَنِي وَاثِلَةُ بْنُ الأَسْقَعِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَى كِنَانَةَ مِنْ وَلَدِ إِسْمَاعِيلَ، وَاصْطَفَى قُرَيْشًا مِنْ كِنَانَةَ، وَاصْطَفَى هَاشِمًا مِنْ قُرَيْشٍ، وَاصْطَفَانِي مِنْ بَنِي هَاشِمٍ.

3606 - सय्यदना वासिला बिन अस्क़ा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने औलादे इस्माईल से किनाना का इन्तिखाब किया, किनाना से क़ुरैश का इन्तिख़ाब किया, क़ुरैश से हाशिम को चुना और बनू हाशिम से मुझे मुन्तख़ब फ़रमाया।" (1)

पिछली हदीस देखिए।

तौज़ीह: नबी (ﷺ) का सिलसिल-ए-नसब कुछ इस तरह है, मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्दे मुनाफ़ बिन कुसै बिन किलाब बिन मुर्रा बिन काब बिन लोय बिन ग़ालिब बिन फ़हर बिन मालिक बिन नज़र बिन किनाना बिन खुज़ैमा बिन मुदरिका बिन इल्यास बिन मुज़र बिन नजार बिन माद बिन अदनान। अदनान तक आपका सिलसिल-ए-नसब सहीह साबित है, अदनान से इस्माईल (عليه السلام) तक मुख़्तलफ़ फीह (सीरत निगारों का इत्तिफ़ाक़ नहीं) है इसलिए हम ने यहाँ तक ही ज़िक्र किया है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

3607 - حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ مُوسَى البَغْدَادِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي زِيَادٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الحَارِثِ، عَنِ العَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ قُرَيْشًا جَلَسُوا فَتَذَاكَرُوا أَحْسَابَهُمْ بَيْنَهُمْ، فَجَعَلُوا مَثَلَكَ كَمَثَلِ نَخْلَةٍ فِي كَبْوَةٍ مِنَ الأَرْضِ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ اللَّهَ خَلَقَ الخَلْقَ فَجَعَلَنِي

3607 - सय्यदना अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैंने अर्ज़ की: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! कुरैशियों ने आपस में बैठ कर अपने नसब का ज़िक्र किया तो आप(ﷺ) की मिसाल खुजूर के एक ऐसे दरख़्त से दी जो ज़मीन से कुछ बलंदी[1] पर हो। तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने लोगों को पैदा फ़रमाया तो मुझे उनके बेहतरीन लोगों और बेहतरीन गिरोह में बनाया, फिर उस ने क़बाइल को पसंद किया तो मुझे बेहतरीन कबीले में रखा, फिर घरों को पसंद किया तो मुझे बेहतरीन घराने में बनाया, मैं उन में ज़ात के

مِنْ خَيْرِهِمْ مِنْ خَيْرِ فِرَقِهِمْ وَخَيْرِ الفَرِيقَيْنِ، ثُمَّ تَخَيَّرَ القَبَائِلَ فَجَعَلَنِي مِنْ خَيْرِ قَبِيلَةٍ، ثُمَّ تَخَيَّرَ البُيُوتَ فَجَعَلَنِي مِنْ خَيْرِ بُيُوتِهِمْ، فَأَنَا خَيْرُهُمْ نَفْسًا، وَخَيْرُهُمْ بَيْتًا.

लिहाज़ से भी बेहतर हूँ और खानदान के लिहाज़ से भी बेहतर हूँ।"

ज़ईफ़: बैहक़ी फी दलाइलिन नबुव्वा:1/167, 168. अहमद:1/210. दूसरे तरीक़ से। अस-सिलसिला अज़-ज़ईफ़ा:3073.

तौज़ीह: كبوة : बअ़्ज़ ने इसे الكباء कहा है जो कि पानी के अतराफ में जमा होने वाली झाग और मिट्टी वग़ैरह होती है जब कि बअ़्ज़ कहते हैं: यह ربوة के माना में है जिसका मतलब है ज़मीन से कुछ बलंद जगह क्योंकि लफ़्ज़ كبوة का मफ़हूम इस रिवायत के सियाक से मुनासिबत नहीं रखता, क्योंकि كبوة का माना ठोकर और लग्ज़िश होता है इसी तरह किसी काम में ताम्मुल करने को भी كبوة कहा जाता है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है। और अब्दुल्लाह बिन हारिस नौफ़ल के बेटे हैं।

3608 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي زِيَادٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الحَارِثِ، عَنِ الْمُطَّلِبِ بْنِ أَبِي وَدَاعَةَ، قَالَ: جَاءَ العَبَّاسُ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَكَأَنَّهُ سَمِعَ شَيْئًا فَقَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ: مَنْ أَنَا؟ قَالُوا: أَنْتَ رَسُولُ اللهِ عَلَيْكَ السَّلَامُ. قَالَ: أَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، إِنَّ اللَّهَ خَلَقَ الخَلْقَ فَجَعَلَنِي فِي خَيْرِهِمْ فِرْقَةً، ثُمَّ جَعَلَهُمْ فِرْقَتَيْنِ فَجَعَلَنِي فِي خَيْرِهِمْ فِرْقَةً، ثُمَّ جَعَلَهُمْ قَبَائِلَ فَجَعَلَنِي فِي خَيْرِهِمْ قَبِيلَةً، ثُمَّ جَعَلَهُمْ بُيُوتًا فَجَعَلَنِي فِي خَيْرِهِمْ بَيْتًا وَخَيْرِهِمْ نَفْسًا.

3608 - सय्यदना मुत्तलिब बिन वदाआ (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि अब्बास (رضي الله عنه) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए, उन्होंने कोई बात सुनी थी तो नबी (ﷺ) ने मिम्बर पर खड़े हो कर फ़रमाया, "मैं कौन हूँ?" लोगों ने कहा: आप अल्लाह के रसुल हैं। आप पर सलामती हो। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैं मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब हूँ, अल्लाह तआला ने मख़्लूक़ को पैदा किया तो मुझे बेहतरीन गिरोह में रखा फिर उनके दो गिरोह बनाए तो मुझे उनके बेहतरीन गिरोह में रखा, फिर क़बाइल बनाए तो मुझे बेहतरीन क़बीला (कुरैश) में रखा, फिर खानदान बनाए तो मुझे बेहतरीन खानदान (बनू हाशिम) में रखा और बेहतरीन इंसान बनया।"

ज़ईफ़: तख़रीज के लिए देखिये हदीस नम्बर:3532, 3758.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रहिमहुल्लाह) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। नीज़ सुफ़ियान सौरी ने भी यज़ीद बिन अबी ज़ियाद से इस्माईल बिन अबी ख़ालिद की यज़ीद बिन अबी ज़ियाद से बवास्ता अब्दुल्लाह बिन हारिस, अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायतकर्दा हदीस जैसी रिवायत की है।

3609 - حَدَّثَنَا أَبُو هَمَّامٍ الوَلِيدُ بْنُ شُجَاعِ بْنِ الوَلِيدِ البَغْدَادِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، عَنِ الأَوْزَاعِيِّ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالُوا يَا رَسُولَ اللهِ مَتَى وَجَبَتْ لَكَ النُّبُوَّةُ؟ قَالَ: وَآدَمُ بَيْنَ الرُّوحِ وَالجَسَدِ.

3609 - सय्यदना अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! आप के लिए नबुव्वत कब वाजिब हुई थी? आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, "जब आदम (अलैहिस्सलाम) रूह और जिस्म के दर्मियान थे।"

सहीह: हाकिम:2/609. बैहक़ी फी दलाइलिन नबुव्वा:2/130. अस-सिलसिला अस-सहीहा:1856.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रहिमहुल्लाह) फ़रमाते हैं: यह हदीस सय्यदना अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) के तरीक़ से हसन सहीह ग़रीब है। हम इसे इसी सनद से जानते हैं। नीज़ इस बारे में मैसरा अल-फज्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) से भी हदीस मर्वी है। (मैसरा अल-फज्र की रिवायत मुसनद अहमद:5/59 में है (अबू सुफ़ियान)

3610 - حَدَّثَنَا الحُسَيْنُ بْنُ يَزِيدَ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ السَّلَامِ بْنُ حَرْبٍ، عَنْ لَيْثٍ، عَنِ الرَّبِيعِ بْنِ أَنَسٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَنَا أَوَّلُ النَّاسِ خُرُوجًا إِذَا بُعِثُوا، وَأَنَا خَطِيبُهُمْ إِذَا وَفَدُوا، وَأَنَا مُبَشِّرُهُمْ إِذَا أَيِسُوا، لِوَاءُ الحَمْدِ يَوْمَئِذٍ بِيَدِي، وَأَنَا أَكْرَمُ وَلَدِ آدَمَ عَلَى رَبِّي وَلَا فَخْرَ.

3610 - सय्यदना अनस बिन मालिक (रज़ियल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, "लोग जब उठाए जायेंगे तो मैं सबसे पहले निकलूंगा, जब वह अल्लाह की बारगाह में हाज़िर होंगे तो मैं उनका ख़तीब हूंगा और जब वह मायूस होंगे तो मैं उन्हें खुशख़बरी सुनाने वाला हूंगा, उस दिन लिवा- अल हम्द (हम्द का झंडा) मेरे हाथ में होगा और मेरे रब के नज़दीक औलादे आदम में सब से ज़्यादा क़ाबिले इज़्ज़त मैं ही हूंगा लेकिन (फिर भी) फ़ख़्र नहीं है।"

ज़ईफ़: दारमी:49. बैहक़ी फी दलाइलिन नबुव्वा:5/484. हिदायतुर्रूवात:5696.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रहिमहुल्लाह) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

3611 - حَدَّثَنَا الحُسَيْنُ بْنُ يَزِيدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ السَّلَامِ بْنُ حَرْبٍ، عَنْ يَزِيدَ أَبِي خَالِدٍ، عَنِ الْمِنْهَالِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الحَارِثِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: أَنَا أَوَّلُ مَنْ تَنْشَقُّ عَنْهُ الأَرْضُ فَأُكْسَى الْحُلَّةَ مِنْ حُلَلِ الْجَنَّةِ، ثُمَّ أَقُومُ عَنْ يَمِينِ الْعَرْشِ لَيْسَ أَحَدٌ مِنَ الْخَلَائِقِ يَقُومُ ذَلِكَ الْمَقَامَ غَيْرِي.

3611 - सय्यदना अबू हुरैरा (रज़ि०) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैं पहला शख़्स हूँ जिस से ज़मीन को फाड़ा जाएगा, फिर मुझे जन्नत के लिबासों में से एक लिबास पहनाया जाएगा, चुनांचे मैं अर्शे इलाही की दायें जानिब खड़ा हो जाउंगा मख़्लूक़ में से मेरे सिवा इस जगह कोई खड़ा नहीं हो सकेगा।"

ज़ईफ़: हिदायतुर्रूवात:5697.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रह०) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है।

3612 - حَدَّثَنَا بُنْدَارٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ وَهُوَ الثَّوْرِيُّ، عَنْ لَيْثٍ وَهُوَ ابْنُ أَبِي سُلَيْمٍ قَالَ: حَدَّثَنِي كَعْبٌ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: سَلُوا اللَّهَ لِيَ الوَسِيلَةَ قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ وَمَا الوَسِيلَةُ؟ قَالَ: أَعْلَى دَرَجَةٍ فِي الجَنَّةِ لاَ يَنَالُهَا إِلاَّ رَجُلٌ وَاحِدٌ أَرْجُو أَنْ أَكُونَ أَنَا هُوَ.

3612 - सय्यदना अबू हुरैरा (रज़ि०) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम मेरे लिए वसीला का सवाल करो।" लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! वसीला क्या है? फ़रमाया, "जन्नत में एक बहुत बलंद दर्जा है जहां सिर्फ एक ही आदमी पहुँच सकता है मुझे उम्मीद है कि वह मैं ही हूंगा।"

सहीह: अहमद: 2/265. अबू याला:6414.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रह०) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है, इस की सनद क़वी नहीं है, काब मारूफ़ रावी नहीं है और लैस बिन अबी सुलैम के अलावा हम किसी को नहीं जानते जिसने उस से रिवायत की हो।

3613 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ عَقِيلٍ، عَنِ الطُّفَيْلِ بْنِ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَثَلِي فِي

3613 - सय्यदना उबय बिन काब (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अंबिया में मेरी मिसाल उस आदमी जैसी है जिसने एक घर बनाया, उसे खूबसूरत मुकम्मल और जाज़िबे नज़र बनाया मगर उस में एक ईंट की जगह छोड़ दी, फिर लोग इमारत के इर्द गिर्द घूम कर तअज्जुब से कहने लगे: काश! एक ईंट

النَّبِيِّينَ كَمَثَلِ رَجُلٍ بَنَى دَارًا فَأَحْسَنَهَا وَأَكْمَلَهَا وَأَجْمَلَهَا وَتَرَكَ مِنْهَا مَوْضِعَ لَبِنَةٍ، فَجَعَلَ النَّاسُ يَطُوفُونَ بِالبِنَاءِ وَيَعْجَبُونَ مِنْهُ، وَيَقُولُونَ: لَوْ تَمَّ مَوْضِعُ تِلْكَ اللَّبِنَةِ، وَأَنَا فِي النَّبِيِّينَ مَوْضِعُ تِلْكَ اللَّبِنَةِ.

وَبِهَذَا الإِسْنَادِ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ "((إِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ كُنْتُ إِمَامَ النَّبِيِّينَ وَخَطِيبَهُمْ وَصَاحِبَ شَفَاعَتِهِمْ غَيْرُ فَخْرٍ "))

की जगह भी मुकम्मल हो जाती और मैं अंबिया में उस ईंट की जगह हूँ।" नीज़ इसी सनद से मर्वी है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "जब क़यामत का दिन होगा तो मैं अंबिया का इमाम, उनका ख़तीब और सिफ़ारिश करने का हक़दार हूंगा बग़ैर फ़ख़्र के।"

सहीह: इब्ने माजह:4314. सहीहुल जामे:5733. अहमद:5/ 136.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है,

3614 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ الْمُقْرِئُ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَيْوَةُ، قَالَ: أَخْبَرَنَا كَعْبُ بْنُ عَلْقَمَةَ، سَمِعَ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ جُبَيْرٍ، أَنَّهُ سَمِعَ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَمْرٍو، أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: إِذَا سَمِعْتُمُ الْمُؤَذِّنَ فَقُولُوا مِثْلَ مَا يَقُولُ، ثُمَّ صَلُّوا عَلَيَّ، فَإِنَّهُ مَنْ صَلَّى عَلَيَّ صَلاَةً صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ بِهَا عَشْرًا، ثُمَّ سَلُوا لِيَ الوَسِيلَةَ فَإِنَّهَا مَنْزِلَةٌ فِي الجَنَّةِ لاَ تَنْبَغِي إِلاَّ لِعَبْدٍ مِنْ عِبَادِ اللهِ وَأَرْجُو أَنْ أَكُونَ أَنَا هُوَ، وَمَنْ سَأَلَ لِيَ الوَسِيلَةَ حَلَّتْ عَلَيْهِ الشَّفَاعَةُ.

3614 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि उन्होंने नबी (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "जब तुम मुअज़्ज़िन की अज़ान को सुनो तो तुम भी वही कहो जो वह कहता है फिर मुझ पर दरूद पढ़ो, वाक़िया यह है कि जो शख़्स मुझ पर एक मर्तबा दरूद पढ़े अल्लाह तआला उस के बदले उस आदमी पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाते हैं, फिर मेरे लिए वसीला का सवाल करो, वह जन्नत का एक मक़ाम है जो अल्लाह के बन्दों में से सिर्फ एक बन्दे के लिए ही है और मुझे उम्मीद है कि वह (बन्दा) मैं ही हूंगा, और जिस ने मेरे लिए वसीला का सवाल क्या उस के लिए मेरी शफ़ाअत हलाल हो गई।"

मुस्लिम:384. अबू दाऊद:523. निसाई:678. अहमद:2/ 168.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह अब्दुर्रहमान बिन जुबैर, कुरैशी, मिस्री, मदनी हैं और अब्दुर्रहमान बिन जुबैर बिन नुफैर शाम के रहने वाले थे।

3615 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ ابْنِ جُدْعَانَ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: أَنَا سَيِّدُ وَلَدِ آدَمَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلاَ فَخْرَ، وَبِيَدِي لِوَاءُ الحَمْدِ وَلاَ فَخْرَ، وَمَا مِنْ نَبِيٍّ يَوْمَئِذٍ آدَمُ فَمَنْ سِوَاهُ إِلاَّ تَحْتَ لِوَائِي، وَأَنَا أَوَّلُ مَنْ تَنْشَقُّ عَنْهُ الأَرْضُ وَلاَ فَخْرَ.

3615 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (ﷺ) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "क़यामत के दिन मैं औलादे आदम का सरदार हूंगा, (इसमें) फ़ख्र नहीं है, हम्द का झंडा मेरे हाथ में होगा लेकिन इस पर फ़ख्र नहीं है, आदम (ﷺ) और उन के अलावा हर नबी मेरे झंडे के नीचे ही होंगे और मैं ही वह पहला शख़्स हूँ जिससे ज़मीन फटेगी लेकिन (इस पर भी) फ़ख्र नहीं है।"

सहीह: तख़्रीज के लिए देखिये 3148.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस हदीस में एक किस्सा भी है और यह हदीस हसन सहीह है। नीज़ इसी सनद से अबू नज़रा, इब्ने अब्बास (ﷺ) के ज़रिए भी नबी (ﷺ) से रिवायत करते हैं।

3616 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ نَصْرِ بْنِ عَلِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْمَجِيدِ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَمْعَةُ بْنُ صَالِحٍ، عَنْ سَلَمَةَ بْنِ وَهْرَامَ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: جَلَسَ نَاسٌ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَنْتَظِرُونَهُ قَالَ: فَخَرَجَ حَتَّى إِذَا دَنَا مِنْهُمْ سَمِعَهُمْ يَتَذَاكَرُونَ فَسَمِعَ حَدِيثَهُمْ، فَقَالَ بَعْضُهُمْ: عَجَبًا إِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ اتَّخَذَ مِنْ خَلْقِهِ خَلِيلاً، اتَّخَذَ مِنْ إِبْرَاهِيمَ خَلِيلاً، وَقَالَ آخَرُ: مَاذَا بِأَعْجَبَ مِنْ

3616 - अब्दुल्लाह बिन अब्बास (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के सहाबा में से कुछ लोग बैठे आप का इन्तिज़ार कर रहे थे कि आप (ﷺ) तशरीफ़ लाये यहाँ तक कि जब उन के क़रीब हुए तो आप ने सुना कि वह आपस में मुज़ाकरा कर रहे थे आप(ﷺ) ने उनकी बातें सुनीं उन में से एक कह रहा था: तअज्जुब है अल्लाह तआला ने अपनी मख़लूक़ में से ख़लील भी बनाया, अल्लाह तआला ने इब्राहीम (ﷺ) को ख़लील बनाया था, दूसरे ने कहा: इस से भी तअज्जुब वाली बात यह है कि उस ने मूसा (ﷺ) से कलाम की है, तीसरे ने कहा: ईसा (ﷺ) अल्लाह के कलिमा और

كَلَامِ مُوسَى كَلَّمَهُ تَكْلِيمًا، وَقَالَ آخَرُ: فَعِيسَى كَلِمَةُ اللهِ وَرُوحُهُ، وَقَالَ آخَرُ: آدَمُ اصْطَفَاهُ اللَّهُ. فَخَرَجَ عَلَيْهِمْ فَسَلَّمَ، وَقَالَ: قَدْ سَمِعْتُ كَلَامَكُمْ وَعَجَبَكُمْ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ خَلِيلُ اللهِ وَهُوَ كَذَلِكَ وَمُوسَى نَجِيُّ اللهِ وَهُوَ كَذَلِكَ، وَعِيسَى رُوحُهُ وَكَلِمَتُهُ وَهُوَ كَذَلِكَ وَآدَمُ اصْطَفَاهُ اللَّهُ وَهُوَ كَذَلِكَ، أَلَا وَأَنَا حَبِيبُ اللهِ وَلَا فَخْرَ، وَأَنَا حَامِلُ لِوَاءِ الحَمْدِ يَوْمَ القِيَامَةِ وَلَا فَخْرَ، وَأَنَا أَوَّلُ شَافِعٍ وَأَوَّلُ مُشَفَّعٍ يَوْمَ القِيَامَةِ وَلَا فَخْرَ، وَأَنَا أَوَّلُ مَنْ يُحَرِّكُ حِلَقَ الجَنَّةِ فَيَفْتَحُ اللَّهُ لِي فَيُدْخِلُنِيهَا وَمَعِي فُقَرَاءُ الْمُؤْمِنِينَ وَلَا فَخْرَ، وَأَنَا أَكْرَمُ الأَوَّلِينَ وَالآخِرِينَ وَلَا فَخْرَ.

उसकी रूह हैं, चौथा कहने लगा: आदम (عليه السلام) को अल्लाह ने चुन लिया था। चुनांचे आप(ﷺ) उन के पास तशरीफ़ ले गए उन्हें सलाम किया और फ़रमाया, "मैं ने तुम्हारी बातों और तुम्हारे तअज्जुब को सुन लिया है, इब्राहीम अल्लाह के ख़लील थे यह बात ऐसे ही है, यह भी सहीह है मूसा अल्लाह से सरगोशी करने वाले थे, यह भी दुरुस्त है कि ईसा (عليه السلام) अल्लाह की रूह और उसका कलिमा थे और आदम (عليه السلام) को उस ने चुन लिया था यह भी ऐसे ही है, लेकिन सुनो! मैं अल्लाह का हबीब (महबूब) हूँ लेकिन कोई फ़ख्र नहीं, मैं ही क़यामत के दिन हम्द के झंडे को उठाने वाला हूंगा कोई फ़ख्र नहीं, क़यामत के दिन सबसे पहले मैं ही सिफ़ारिश करूंगा और सब से पहले मेरी ही सिफ़ारिश कुबूल की जाएगी, लेकिन इस पर भी कोई फ़ख्र नहीं है, मैं ही वह शख़्स हूँ जो सबसे पहले जन्नत के कड़े को हरकत दूंगा, फिर अल्लाह तआला उसे मेरे लिए खोल कर मुझे इसमें दाख़िल करेगा और मेरे साथ ईमान वाले फ़ुकरा होंगे और मैं अगले पिछले तमाम लोगों में सबसे ज़्यादा क़ाबिले इज्ज़त हूँ लेकिन इस पर भी कोई फ़ख्र नहीं।"

ज़ईफ़:दारमी:48. हिदायतुर्रूवात:5693.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है।

3617 - حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ أَخْزَمَ الطَّائِيُّ البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو قُتَيْبَةَ سَلْمُ بْنُ قُتَيْبَةَ قَالَ:حَدَّثَنِي أَبُو مَوْدُودٍ الْمَدَنِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ الضَّحَّاكِ،

3617 - अब्दुल्लाह बिन सलाम (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं: तौरात में मुहम्मद (ﷺ) और ईसा इब्ने मरियम (عليه السلام) के बारे में लिखा हुआ है

عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يُوسُفَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ سَلَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، قَالَ: مَكْتُوبٌ فِي التَّوْرَاةِ صِفَةُ مُحَمَّدٍ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ يُدْفَنُ مَعَهُ قَالَ: فَقَالَ أَبُو مَوْدُودٍ وَقَدْ بَقِيَ فِي الْبَيْتِ مَوْضِعُ قَبْرٍ.

कि वह उनके साथ दफ़न होंगे" अबू मौदूद कहते हैं: हुजरा में एक क़ब्र की जगह बाकी है।

ज़ईफ़: हिदायतुर्रूवात: 5703.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है, रावी ने उस्मान बिन ज़ह्हाक ही से रिवायत किया है. लेकिन मारूफ़ ज़ह्हाक बिन उस्मान मदनी है।

3618 - حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ هِلَالٍ الصَّوَّافُ الْبَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ سُلَيْمَانَ الضُّبَعِيُّ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: لَمَّا كَانَ الْيَوْمُ الَّذِي دَخَلَ فِيهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ الْمَدِينَةَ أَضَاءَ مِنْهَا كُلُّ شَيْءٍ، فَلَمَّا كَانَ الْيَوْمُ الَّذِي مَاتَ فِيهِ أَظْلَمَ مِنْهَا كُلُّ شَيْءٍ، وَمَا نَفَضْنَا عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ الْأَيْدِي وَإِنَّا لَفِي دَفْنِهِ حَتَّى أَنْكَرْنَا قُلُوبَنَا.

3618 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं: जिस दिन अल्लाह के रसूल (ﷺ) मदीना में दाख़िल हुए थे तो हर चीज़ रोशन हो गई थी, फिर जिस रोज़ आप की वफ़ात हुई तो हर चीज़ तारीक हो गई और हम ने रसूलुल्लाह (ﷺ) की तदफ़ीन से हाथ भी नहीं झाड़े थे बल्कि हम आप की तदफ़ीन में ही मसरूफ़ थे कि हमारे दिल बदल गए।(1)

सहीह: इब्ने माजह:1631. अहमद:3/221. इब्ने हिब्बान:6634.

तौज़ीह: (1) यानी हमारे दिलों में वह ईमान न रहा जो रसूलुल्लाह (ﷺ) की मौजूदगी में था।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह ग़रीब है,

2 بَابُ مَا جَاءَ فِي مِيلَادِ النَّبِيِّ ﷺ

2 - नबी (ﷺ) की विलादत का बयान।

3619 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ الْعَبْدِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، قَالَ: سَمِعْتُ مُحَمَّدَ بْنَ إِسْحَاقَ، يُحَدِّثُ عَنِ الْمُطَّلِبِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ قَيْسِ بْنِ مَخْرَمَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، قَالَ: وُلِدْتُ أَنَا وَرَسُولُ اللهِ ﷺ عَامَ الْفِيلِ، قَالَ: وَسَأَلَ عُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ قُبَاثَ بْنَ

3619 - कैस बिन मख़्रमा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैं और रसूलुल्लाह (ﷺ) आमुल फ़ील में पैदा हुए थे। रावी कहते हैं: उस्मान बिन अफ्फ़ान (رضي الله عنه) ने क़ुबास बिन अश्यम (رضي الله عنه) से पूछा (उम्र में) तुम बड़े हो या अल्लाह के रसूल (ﷺ) तो उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह (ﷺ) मुझ से बड़े हैं जबकि मेरी पैदाइश आप(ﷺ) से पहले हुई थी

أَشْيَمَ أَخَا بَنِي يَعْمَرَ بْنِ لَيْثٍ أَأَنْتَ أَكْبَرُ أَمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ ؟ فَقَالَ: رَسُولُ اللهِ ﷺ أَكْبَرُ مِنِّي وَأَنَا أَقْدَمُ مِنْهُ فِي الْمِيلاَدِ، قَالَ: وَرَأَيْتُ خَذْقَ الْفِيلِ أَخْضَرَ مُحِيلاً.

और कहने लगे: मैंने परिंदों का फ़ोज़्ला (बीट) देखा जिसका रंग तब्दील हो कर सब्ज़ हो चुका था। [1]

ज़ईफ़ुल इस्नाद: अहमद:4/251. हाकिम:2/603.

तौज़ीह: (1) आमुल फ़ील से मुराद वह साल है जब अब्रहा ने मक्का पर चढ़ाई की थी और जिन परिंदों के फ़ोज़्ले का ज़िक्र है उन से वही परिंदे मुराद हैं जो अब्रहा के लश्कर और उसके हाथियों की तबाही का बाइस बने थे।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है,हम इसे मुहम्मद बिन इस्हाक़ के तरीक़ से ही जानते हैं।

3 بَابُ مَا جَاءَ فِي بَدْءِ نُبُوَّةِ النَّبِيِّ ﷺ

3 - नबी (ﷺ) की नबुव्वत की इब्तिदा का बयान।

3620 - حَدَّثَنَا الْفَضْلُ بْنُ سَهْلٍ أَبُو الْعَبَّاسِ الأَعْرَجُ الْبَغْدَادِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ غَزْوَانَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا يُونُسُ بْنُ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: خَرَجَ أَبُو طَالِبٍ إِلَى الشَّامِ وَخَرَجَ مَعَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي أَشْيَاخٍ مِنْ قُرَيْشٍ، فَلَمَّا أَشْرَفُوا عَلَى الرَّاهِبِ هَبَطُوا فَحَلُّوا رِحَالَهُمْ، فَخَرَجَ إِلَيْهِمُ الرَّاهِبُ وَكَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ يَمُرُّونَ بِهِ فَلاَ يَخْرُجُ إِلَيْهِمْ وَلاَ يَلْتَفِتُ. قَالَ: فَهُمْ يَحُلُّونَ رِحَالَهُمْ، فَجَعَلَ يَتَخَلَّلُهُمُ الرَّاهِبُ حَتَّى جَاءَ فَأَخَذَ بِيَدِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ،

3620 - सय्यदना अबू मूसा अशअरी (رضي الله عنه)" बयान करते हैं कि अबू तालिब शाम की तरफ़ रवाना हुए तो उनके साथ नबी (ﷺ) भी कुछ कुरैशी बुज़ुर्गों के साथ निकले, चुनांचे जब वह राहिब (बुहैरा) के पास पहुंचे तो पहाड़ी से नीचे उतर कर अपने कजावे उतार दिए, तो राहिब भी उनकी तरफ़ आ गया, हालांकि इससे पहले भी यह लोग उस राहिब के पास से गुज़रते थे लेकिन वह उन के पास नहीं आता था और न ही उनकी तरफ़ मुतवज्जह होता था। रावी कहते हैं: वह अपने कजावे खोल ही रहे थे कि राहिब ने उनके दर्मियान में आकर रसूलुल्लाह (ﷺ) के हाथ पकड़ कर कहा: यह जहानों का सरदार है, यह रब्बुल आलमीन का रसूल है, अल्लाह तआला इसे रहमतुल्लिल आलमीन बनाएगा। कुरैश के लोग उस से कहने लगे: तुम कैसे जानते हो? उस

فَقَالَ: هَذَا سَيِّدُ العَالَمِينَ، هَذَا رَسُولُ رَبِّ العَالَمِينَ، يَبْعَثُهُ اللَّهُ رَحْمَةً لِلعَالَمِينَ، فَقَالَ لَهُ أَشْيَاخٌ مِنْ قُرَيْشٍ: مَا عِلْمُكَ، فَقَالَ: إِنَّكُمْ حِينَ أَشْرَفْتُمْ مِنَ العَقَبَةِ لَمْ يَبْقَ شَجَرٌ وَلاَ حَجَرٌ إِلاَّ خَرَّ سَاجِدًا وَلاَ يَسْجُدَانِ إِلاَّ لِنَبِيٍّ، وَإِنِّي أَعْرِفُهُ بِخَاتَمِ النُّبُوَّةِ أَسْفَلَ مِنْ غُضْرُوفِ كَتِفِهِ مِثْلَ التُّفَّاحَةِ، ثُمَّ رَجَعَ فَصَنَعَ لَهُمْ طَعَامًا، فَلَمَّا أَتَاهُمْ بِهِ وَكَانَ هُوَ فِي رِعْيَةِ الإِبِلِ، قَالَ: أَرْسِلُوا إِلَيْهِ، فَأَقْبَلَ وَعَلَيْهِ غَمَامَةٌ تُظِلُّهُ، فَلَمَّا دَنَا مِنَ القَوْمِ وَجَدَهُمْ قَدْ سَبَقُوهُ إِلَى فَيْءِ الشَّجَرَةِ، فَلَمَّا جَلَسَ مَالَ فَيْءُ الشَّجَرَةِ عَلَيْهِ، فَقَالَ: انْظُرُوا إِلَى فَيْءِ الشَّجَرَةِ مَالَ عَلَيْهِ، قَالَ: فَبَيْنَمَا هُوَ قَائِمٌ عَلَيْهِمْ وَهُوَ يُنَاشِدُهُمْ أَنْ لاَ يَذْهَبُوا بِهِ إِلَى الرُّومِ، فَإِنَّ الرُّومَ إِنْ رَأَوْهُ عَرَفُوهُ بِالصِّفَةِ فَيَقْتُلُونَهُ، فَالتَفَتَ فَإِذَا بِسَبْعَةٍ قَدْ أَقْبَلُوا مِنَ الرُّومِ فَاسْتَقْبَلَهُمْ، فَقَالَ: مَا جَاءَ بِكُمْ؟ قَالُوا: جِئْنَا، إِنَّ هَذَا النَّبِيَّ خَارِجٌ فِي هَذَا الشَّهْرِ، فَلَمْ يَبْقَ طَرِيقٌ إِلاَّ بُعِثَ إِلَيْهِ بِأُنَاسٍ وَإِنَّا قَدْ أُخْبِرْنَا خَبَرَهُ فَبُعِثْنَا إِلَى طَرِيقِكَ هَذَا، فَقَالَ: هَلْ خَلْفَكُمْ أَحَدٌ هُوَ خَيْرٌ مِنْكُمْ؟ قَالُوا: إِنَّمَا أُخْبِرْنَا خَبَرَهُ بِطَرِيقِكَ هَذَا. قَالَ: أَفَرَأَيْتُمْ

ने कहा: जब तुम लोग घाटी से उतर रहे थे तो हर एक पत्थर और दरख़्त ने उन्हें सज्दा किया है और यह दोनों चीज़ें किसी नबी को ही सज्दा करती हैं और मैंने इन्हें मोहरे नबुव्वत से पहचान लिया है जो इनके शाने के नीचे की नर्म हड्डी[1] के नीचे एक सेब की तरह है। फिर उस राहिब ने वापस जा कर उन के लिए खाना तैयार किया, फिर जब उनके पास खाना ले कर आया तो आप (ﷺ) ऊँट चराने में मसरूफ़ थे। वह कहने लगा: उन्हें भी बुलाओ, फिर आप आए तो एक बादल आप को साया किए हुए था, जब उन के क़रीब पहुंचे तो देखा वह आप से पहले दरख़्त का साया हासिल कर चुके हैं जब आप बैठे तो दरख़्त का साया झुक गया तो वह राहिब कहने लगा: यह देखो दरख़्त का साया इन पर आ गया है, रावी कहते हैं: वह राहिब उन के पास खड़ा उन लोगों को वास्ता दे रहा था कि इन्हें रूम की तरफ़ लेकर न जाएँ इसलिए कि अगर उन लोगों ने इन्हें देख कर इनकी सिफ़ात से पहचान लिया तो इन्हें क़त्ल कर देंगे, इसी बीच अचानक देखा कि सात रूमी उनकी तरफ़ आ रहे हैं, उसने कहा: तुम कैसे आए हो वह कहने लगे: हम इसलिए आए हैं कि हमें पता चला कि वह नबी इस महीने में निकलने वाला है चुनांचे हर रास्ते की तरफ़ लोग भेजे गए हैं और हमें भी उस नबी के बारे में पता चला है तो हमें इस रास्ते की तरफ़ भेजा गया है, उस राहिब ने कहा: क्या तुम्हारे पीछे कोई ऐसा शख़्स है जो तुम से बेहतर हो? उन्होंने कहा: हमें उस के मुताल्लिक़ तुम्हारे इस रास्ते का बताया गया है।

أَمْرًا أَرَادَ اللَّهُ أَنْ يَقْضِيَهُ هَلْ يَسْتَطِيعُ أَحَدٌ مِنَ النَّاسِ رَدَّهُ؟ قَالُوا: لاَ، قَالَ: فَبَايَعُوهُ وَأَقَامُوا مَعَهُ قَالَ: أَنْشُدُكُمْ بِاللَّهِ أَيُّكُمْ وَلِيُّهُ؟ قَالُوا: أَبُو طَالِبٍ، فَلَمْ يَزَلْ يُنَاشِدُهُ حَتَّى رَدَّهُ أَبُو طَالِبٍ وَبَعَثَ مَعَهُ أَبُو بَكْرٍ بِلاَلاً وَزَوَّدَهُ الرَّاهِبُ مِنَ الكَعْكِ وَالزَّيْتِ.

राहिब ने कहा: तुम यह बताओ अगर अल्लाह तआला ने अपने किसी काम को करना चाहा तो क्या लोगों में से कोई हटा सकता है? उन्होंने कहा; नहीं, रावी कहते हैं: फिर उन्होंने बैअत की और उस के साथ रहे। उस राहिब ने कहा: मैं लोगों को अल्लाह का वास्ता देकर पूछता हूँ कि उसका वारिस कौन है? उन्होंने कहा: अबू तालिब। वह उस से कहता रहा यहाँ तक कि अबू तालिब ने आप को वापस भेज दिया और अबू बक्र ने आप के साथ बिलाल को भेजा और राहिब ने जादे राह के तौर पर आप को रोटी(2) और तेल दिया।"

सहीह: इब्ने अबी शैबा:11/479. बैहक़ी फी दलाइल:2/24. हिदायतुर्रूवात:5861. (लेकिन इसमें बिलाल का ज़िक्र मुन्कर है)।

तौज़ीह: غضروف : किसी भी जगह की नर्म व गुदाज़ हड्डी इसकी जमा غضاريف आती है। देखिये अल्कामूसुल वहीद:पृ.1170.

(2) كعك : यह फारसी ज़बान का मोरब है और यह लफ़्ज़ केक और पेस्ट्री वग़ैरह पर बोला जाता है। देखिये अल्कामूसुल वहीद:पृ.1411)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है, हम इसे सिर्फ इसी तरीक़ से जानते हैं।

4 بَابٌ فِي مَبْعَثِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَابْنُ كَمْ كَانَ حِينَ بُعِثَ؟

4- नबी (ﷺ) की बिअ़सत का बयान और आपको कितनी उम्र में नबुव्वत दी गई थी।

3621 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ هِشَامِ بْنِ حَسَّانَ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: أُنْزِلَ عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ ابْنُ أَرْبَعِينَ،

3621 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) पर वहि नाज़िल हुई तो आप चालीस साल के थे, फिर आप तेरह साल मक्का और दस साल मदीना में रहे और तिरसठ साल की उम्र में आप की वफ़ात हुई।

فَأَقَامَ بِمَكَّةَ ثَلَاثَ عَشْرَةَ وَبِالْمَدِينَةِ عَشْرًا، وَتُوُفِّيَ وَهُوَ ابْنُ ثَلَاثٍ وَسِتِّينَ.

बुख़ारी:3851. मुस्लिम:2351. अहमद: 1/228.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।

3622 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: قُبِضَ النَّبِيُّ ﷺ وَهُوَ ابْنُ خَمْسٍ وَسِتِّينَ سَنَةً. هَكَذَا حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، وَرَوَى عَنْهُ مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، مِثْلَ ذَلِكَ.

3622 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि जब नबी (ﷺ) की वफात हुई तो आप पैंसठ (65) बरस के थे।

शाज़ इस की तख़रीज पिछली हदीस में गुज़र चुकी है। नीज़: ''खम्स व सित्तीन'' के अल्फ़ाज़ गैर महफूज़ हैं।

वज़ाहत: मुहम्मद बिन बश्शार ने भी इसी तरह बयान किया है और उन से मुहम्मद बिन इस्माईल ने भी ऐसे ही रिवायत की है।

3623 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ (ح) وحَدَّثَنَا الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ، عَنْ رَبِيعَةَ بْنِ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ، يَقُولُ: لَمْ يَكُنْ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالطَّوِيلِ البَائِنِ، وَلاَ بِالقَصِيرِ، وَلاَ بِالأَبْيَضِ الأَمْهَقِ، وَلاَ بِالآدَمِ، وَلَيْسَ بِالجَعْدِ القَطَطِ، وَلاَ بِالسَّبِطِ، بَعَثَهُ اللَّهُ عَلَى رَأْسِ أَرْبَعِينَ سَنَةً فَأَقَامَ بِمَكَّةَ عَشْرَ سِنِينَ وَبِالْمَدِينَةِ عَشْرًا، وَتَوَفَّاهُ اللَّهُ عَلَى رَأْسِ سِتِّينَ سَنَةً، وَلَيْسَ فِي رَأْسِهِ وَلِحْيَتِهِ عِشْرُونَ شَعْرَةً بَيْضَاءَ.

3623 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) न बहुत लम्बे क़द के थे और न ही बहुत छोटे, आप(ﷺ) का रंग न बहुत ज़्यादा सफ़ेद था(1) न ही बिलकुल गंदुमी, बाल बहुत ज़्यादा घुंघरियाले थे न ही बिलकुल सीधे, अल्लाह तआला ने आप(ﷺ) को चालीस साल की उम्र में नबुव्वत अता फ़रमाई, फिर आप(ﷺ) दस साल मक्का और दस साल मदीना में रहे, और अल्लाह तआला ने साठ (60) साल की उम्र में आप(ﷺ) को फौत किया, जबकि आप के सर और दाढ़ी मुबारक में बीस बाल भी सफ़ेद नहीं थे।

बुख़ारी:3548. मुस्लिम:2347. इब्ने माजह:3229. निसाई:5053.

तौज़ीह: (1) الامهق : जिसका रंग बिलकुल सफ़ेद हो और उस में सुर्ख़ी शामिल न हो जबकि आप (ﷺ) के रंग में सुर्ख़ी थी।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

5 - नबी (ﷺ) के मोजिज़ात और आप (ﷺ) की ख़ुसूसियात का बयान।

5 بَابٌ فِي آيَاتِ نُبُوَّةِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَا قَدْ خَصَّهُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ بِهِ

3624 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، وَمَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالاَ: أَخْبَرَنَا أَبُو دَاوُدَ الطَّيَالِسِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ مُعَاذٍ الضَّبِّيُّ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ بِمَكَّةَ حَجَرًا كَانَ يُسَلِّمُ عَلَيَّ لَيَالِيَ بُعِثْتُ، إِنِّي لأَعْرِفُهُ الآنَ.

3624 - सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मक्का में एक पत्थर है जो मुझे उन रातों में सलाम किया करता था जब मुझे नबुव्वत मिली थी मैं अब भी उसे पहचानता हूँ।"

मुस्लिम:277. अहमद:5/89. इब्ने हिब्बान:6482. दारमी:20.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

3625 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ التَّيْمِيُّ، عَنْ أَبِي العَلاَءِ، عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدَبٍ، قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَتَدَاوَلُ فِي قَصْعَةٍ مِنْ غُدْوَةٍ حَتَّى اللَّيْلِ يَقُومُ عَشَرَةٌ وَيَقْعُدُ عَشَرَةٌ، قُلْنَا: فَمَا كَانَتْ تُمَدُّ؟ قَالَ: مِنْ أَيِّ شَيْءٍ تَعْجَبُ مَا كَانَتْ تُمَدُّ إِلاَّ مِنْ هَاهُنَا وَأَشَارَ بِيَدِهِ إِلَى السَّمَاءِ.

3625 - सय्यदना समुरह बिन जुन्दुब (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि हम नबी (ﷺ) के साथ थे, हम सुबह से शाम तक एक ही प्याले से खाना लेते रहे, दस आदमी उठ जाते और दस आदमी बैठ जाते, हम ने समुरह से कहा: वह कहाँ से बढ़ाया जाता था? उन्होंने फ़रमाया, तुम किस बात पर तअज्जुब करते हो वह तो उधर से बढ़ाया जाता था और अपने हाथ से आसमान की तरफ़ इशारा किया।

सहीह: अहमद: 5/12. हाकिम:2/618. दारमी:57. हिदायतुर्रूवात:5871.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।और अबू अला का नाम यज़ीद बिन अब्दुल्लाह बिन शिख्खीर है।

6 - अली (رضي الله عنه) का कौल कि पहाड़ और दरख़्त सलाम कह कर नबी (ﷺ) का इस्तिकबाल करता था।

6- بَابٌ فِي قول علي في استقبال كل جبل وشجر النبي ﷺ بالتسليم.

3626 - حَدَّثَنَا عَبَّادُ بْنُ يَعْقُوبَ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الوَلِيدُ بْنُ أَبِي ثَوْرٍ، عَنِ السُّدِّيِّ، عَنْ عَبَّادِ بْنِ أَبِي يَزِيدَ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ، قَالَ: كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بِمَكَّةَ فَخَرَجْنَا فِي بَعْضِ نَوَاحِيهَا فَمَا اسْتَقْبَلَهُ جَبَلٌ وَلاَ شَجَرٌ إِلاَّ وَهُوَ يَقُولُ: السَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ.

3626 - सय्यदना अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैं मक्का में नबी (ﷺ) के साथ था हम उसकी किसी जानिब निकले तो सामने जो भी पहाड़ या दरख़्त आता तो वह कहताः ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! आप पर सलाम हो।

ज़ईफ़: दारमी:21. बैहक़ी फी दलाइल:2/ 153. सहीहुत्तर्गीब:1209.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। कई रावियों ने इसे वलीद बिन अबी सौर से रिवायत करते वक़्त अब्बाद बिन अबी यज़ीद ही कहा है, जिन में एक फर्वा बिन अबी मग़रा भी हैं।

3627 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ يُونُسَ، عَنْ عِكْرِمَةَ بْنِ عَمَّارٍ، عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَطَبَ إِلَى لِزْقِ جِذْعٍ وَاتَّخَذُوا لَهُ مِنْبَرًا، فَخَطَبَ عَلَيْهِ فَحَنَّ الجِذْعُ حَنِينَ النَّاقَةِ، فَنَزَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَمَسَّهُ فَسَكَتَ.

3627 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) बयान करते हैं: " रसूलुल्लाह (ﷺ) खुजूर के एक तने से टेक लगा कर ख़ुत्बा देते थे, लोगों ने आप के लिए मिम्बर बना दिया, चुनांचे आप(ﷺ) ने उस पर (खड़े हो कर) ख़ुत्बा दिया तो वह तना ऊंटनी की तरह रोने लगा, फिर नबी (ﷺ) नीचे उतरे उस पर हाथ फेरा तो वह चुप हो गया।"

सहीह: इब्ने माजह: 1415. दारमी:42. इब्ने खुजैमा: 1777.

वज़ाहत: इस बारे में अबी, जाबिर, इब्ने उमर, सहल बिन साद, इब्ने अब्बास और उम्मे सलमा (رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है। नीज़ अनस (رضي الله عنه) की यह हदीस इस सनद से ग़रीब है।

3628 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ:

3628 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) बयान करते हैं: एक बदवी रसूलुल्लाह

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شَرِيكٌ، عَنْ سِمَاكٍ، عَنْ أَبِي ظَبْيَانَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: جَاءَ أَعْرَابِيٌّ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ بِمَ أَعْرِفُ أَنَّكَ نَبِيٌّ؟ قَالَ: إِنْ دَعَوْتُ هَذَا العِذْقَ مِنْ هَذِهِ النَّخْلَةِ تَشْهَدُ أَنِّي رَسُولُ اللهِ؟ فَدَعَاهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَجَعَلَ يَنْزِلُ مِنَ النَّخْلَةِ حَتَّى سَقَطَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، ثُمَّ قَالَ: ارْجِعْ فَعَادَ، فَأَسْلَمَ الأَعْرَابِيُّ.

(ﷺ) के पास आकर कहने लगा: मुझे कैसे पता चलेगा कि आप नबी हैं? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "अगर मैं खुजूर के उस खोशे[1] को बुलाऊँ तो क्या तुम मेरे अल्लाह के रसूल होने की गवाही दोगे?" फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसे बुलाया, तो वह खुजूर के दरख्त से उतरा और नबी (ﷺ) के सामने आकर गिर गया फिर आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "वापस चले जाओ" वह वापस लौट गया तो वह आराबी मुसलमान हो गया।

सहीह: अहमद:1/223. हाकिम:2/620. दारमी:24. अस-सिलसिला अस-सहीहा:7/627. (लेकिन आराबी के मुसलमान होने वाली बात शाज़ है।)

तौज़ीह: (1) العذق : खुजूर का गुच्छा, शाखों वाली टहनी (देखिये :अल-कामूसुल वहीद:पृ.1061)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है।

3629 - حَدَّثَنَا بُنْدَارٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَزْرَةُ بْنُ ثَابِتٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عِلْبَاءُ بْنُ أَحْمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو زَيْدِ بْنُ أَخْطَبَ، قَالَ: مَسَحَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَدَهُ عَلَى وَجْهِي وَدَعَا لِي قَالَ عَزْرَةُ: إِنَّهُ عَاشَ مِائَةً وَعِشْرِينَ سَنَةً وَلَيْسَ فِي رَأْسِهِ إِلاَّ شُعَيْرَاتٌ بِيضٌ.

3629 - अबू ज़ैद बिन अख्तब (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मेरे चेहरे पर हाथ फेरा और मेरे लिए दुआ की, अज़्रा कहते हैं: वह एक सौ बीस साल ज़िंदा रहे लेकिन उन के सर में चन्द सफ़ेद बाल थे।

सहीह: अहमद:5/77. इब्ने हिब्बान:7171. तबरानी फ़िल कबीर:17/45.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है और अबू ज़ैद का नाम अम्र बिन अख्तब है।

3630 - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مُوسَى الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ: عَرَضْتُ عَلَى مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ، عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ،

3630 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि अबू तल्हा ने उम्मे सुलैम से कहा: मैंने नबी (ﷺ) की आवाज़ सुनी है जो बहुत नहीफ (कमज़ोर) थी, मुझे लगता है कि

أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ، يَقُولُ: قَالَ أَبُو طَلْحَةَ لِأُمِّ سُلَيْمٍ: لَقَدْ سَمِعْتُ صَوْتَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، ضَعِيفًا، أَعْرِفُ فِيهِ الجُوعَ فَهَلْ عِنْدَكِ مِنْ شَيْءٍ؟ فَقَالَتْ: نَعَمْ، فَأَخْرَجَتْ أَقْرَاصًا مِنْ شَعِيرٍ، ثُمَّ أَخْرَجَتْ خِمَارًا لَهَا فَلَفَّتِ الخُبْزَ بِبَعْضِهِ، ثُمَّ دَسَّتْهُ فِي يَدِي وَرَدَّتْنِي بِبَعْضِهِ، ثُمَّ أَرْسَلَتْنِي إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: فَذَهَبْتُ بِهِ إِلَيْهِ فَوَجَدْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَالِسًا فِي الْمَسْجِدِ وَمَعَهُ النَّاسُ، قَالَ: فَقُمْتُ عَلَيْهِمْ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَرْسَلَكَ أَبُو طَلْحَةَ؟ فَقُلْتُ نَعَمْ. قَالَ: بِطَعَامٍ؟ فَقُلْتُ نَعَمْ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِمَنْ مَعَهُ: قُومُوا، قَالَ: فَانْطَلَقُوا، فَانْطَلَقْتُ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ حَتَّى جِئْتُ أَبَا طَلْحَةَ فَأَخْبَرْتُهُ، فَقَالَ أَبُو طَلْحَةَ: يَا أُمَّ سُلَيْمٍ قَدْ جَاءَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالنَّاسُ مَعَهُ وَلَيْسَ عِنْدَنَا مَا نُطْعِمُهُمْ. قَالَتْ أُمُّ سُلَيْمٍ: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: فَانْطَلَقَ أَبُو طَلْحَةَ حَتَّى لَقِيَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَقْبَلَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَبُو طَلْحَةَ مَعَهُ حَتَّى دَخَلَا، فَقَالَ

आप(ﷺ) को भूक लगी है क्या तुम्हारे पास कोई चीज़ है? उन्होंने कहा जी हाँ। चुनांचे उन्होंने जौ की चन्द रोटियाँ निकालीं फिर अपना एक दुपट्टा निकाल कर उसके कुछ हिस्से से रोटियाँ लपेट दीं और वह मेरे हाथ में थमा दीं और (दुपट्टे) का बअज़ हिस्सा मुझे ओढ़ा दिया, फिर मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) की तरफ़ भेज दिया, मैं आप(ﷺ) की तरफ़ गया तो मैं ने रसूलुल्लाह (ﷺ) को मस्जिद में पाया, आप(ﷺ) के साथ लोग भी थे, रावी कहते हैं: मैं उन लोगों के पास जा कर खड़ा हो गया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या तुम्हें अबू तल्हा ने भेजा है?" मैंने अर्ज़ किया, जी हाँ, फ़रमाया, "खाना देकर" मैंने कहा: जी। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने साथ वालों से फ़रमाया, "उठो" रावी कहते हैं: वह चल दिए मैं उनके आगे- आगे चला यहाँ तक कि अबू तल्हा के पास आकर उन को बताया तो अबू तल्हा ने कहा: ऐ उम्मे सुलैम! रसूलुल्लाह (ﷺ) तो लोगों को लेकर आ गए हैं और हमारे पास उनको खिलाने के लिए कुछ नहीं है, उम्मे सुलैम कहने लगीं, अल्लाह और उसके रसूल(ﷺ) बेहतर जानते हैं। रावी कहते हैं: फिर अबू तल्हा चले यहाँ तक कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से मिले, रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाये और अबू तल्हा भी आप(ﷺ) के साथ थे, यहाँ तक कि घर में दाख़िल हुए तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ उम्मे सुलैम जो कुछ तुम्हारे पास है उसे ले आओ।" तो वह वही रोटियाँ ले आयीं। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) के हुक्म पर उन रोटियों

رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: هَلُمِّي يَا أُمَّ سُلَيْمٍ مَا عِنْدَكِ؟ فَأَتَتْهُ بِذَلِكَ الخُبْزِ، فَأَمَرَ بِهِ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَفُتَّ وَعَصَرَتْ أُمُّ سُلَيْمٍ بِعُكَّةٍ لَهَا فَأَدَمَتْهُ، ثُمَّ قَالَ فِيهِ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا شَاءَ اللَّهُ أَنْ يَقُولَ، ثُمَّ قَالَ: ائْذَنْ لِعَشَرَةٍ، فَأَذِنَ لَهُمْ فَأَكَلُوا حَتَّى شَبِعُوا، ثُمَّ خَرَجُوا، ثُمَّ قَالَ: ائْذَنْ لِعَشَرَةٍ، فَأَذِنَ لَهُمْ فَأَكَلُوا حَتَّى شَبِعُوا، ثُمَّ خَرَجُوا، فَأَكَلَ القَوْمُ كُلُّهُمْ وَشَبِعُوا وَالقَوْمُ سَبْعُونَ أَوْ ثَمَانُونَ رَجُلاً.

के टुकड़े किए गए और उम्मे सुलैम ने उन के ऊपर घी की एक डिबिया[1] पलट कर उसे सालन बना दिया, फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उस पर जो अल्लाह ने चाहा दुआ की फिर फ़रमाया, "दस आदमियों को बुलाओ।" आप(ﷺ) ने उन्हें खाने की इजाज़त दी उन्होंने सैर हो कर खाया फिर निकल गए, आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "दस आदमियों को बुलाओ।" उन्हें इजाज़त दी वह भी खा कर सैर हो कर चले गए, फिर फ़रमाया, "दस आदमियों को बुलाओ।" उन्हें इजाज़त दी उन्होंने भी सैर हो कर खाया फिर वह भी चले गए, सब लोगों ने सैर हो कर खाना खाया और वह सत्तर या अस्सी अफ़राद थे।

बुख़ारी:422. मुस्लिम:2040.

तौज़ीह: عكة : घी का छोटा सा मश्कीज़ा (डिबिया वगैरह) इसकी जमा عكك और عكاك आती है। (देखिये: अल-मोजमुल वसीत:पृ.236)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3631 - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مُوسَى الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ، عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَحَانَتْ صَلَاةُ العَصْرِ وَالتَمَسَ النَّاسُ الوَضُوءَ فَلَمْ يَجِدُوا، فَأُتِيَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِوَضُوءٍ فَوَضَعَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدَهُ فِي ذَلِكَ الإِنَاءِ وَأَمَرَ النَّاسَ أَنْ يَتَوَضَّئُوا مِنْهُ

3631 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा जब अस्र की नमाज़ का वक़्त हो चुका था और लोगों ने वुज़ू के लिए पानी की तलाश की मगर नहीं मिला, रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास वुज़ू का थोड़ा सा पानी लाया गया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपना हाथ मुबारक उस बर्तन में रखा और लोगों को उस से वुज़ू करने का हुक्म दिया। रावी कहते हैं: फिर मैंने देखा कि पानी आप की उँगलियों के नीचे से बह रहा था लोग वुज़ू करने लगे यहाँ तक कि सभी लोगों ने वुज़ू कर लिया।

قَالَ: فَرَأَيْتُ الْمَاءَ يَنْبُعُ مِنْ تَحْتِ أَصَابِعِهِ، فَتَوَضَّأَ النَّاسُ حَتَّى تَوَضَّئُوا مِنْ عِنْدِ آخِرِهِمْ.

बुख़ारी:129. मुस्लिम:2279. अहमद:3/ 132

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में इमरान बिन हुसैन, इब्ने मसऊद, जाबिर और जियाद बिन हारिस सुदाई (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। नीज़ अनस (رضي الله عنه) की हदीस हसन सहीह है।

3632 - حَدَّثَنَا الأَنْصَارِيُّ إِسْحَاقُ بْنُ مُوسَى، قَالَ: حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ بُكَيْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْحَاقَ قَالَ: حَدَّثَنِي الزُّهْرِيُّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّهَا قَالَتْ: أَوَّلُ مَا ابْتُدِئَ بِهِ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنَ النُّبُوَّةِ حِينَ أَرَادَ اللَّهُ كَرَامَتَهُ وَرَحْمَةَ العِبَادِ بِهِ أَنْ لاَ يَرَى شَيْئًا إِلاَّ جَاءَتْ كَ فَلَقِ الصُّبْحِ، فَمَكَثَ عَلَى ذَلِكَ مَا شَاءَ اللَّهُ أَنْ يَمْكُثَ، وَحُبِّبَ إِلَيْهِ الخَلْوَةُ فَلَمْ يَكُنْ شَيْءٌ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ أَنْ يَخْلُوَ.

3632 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं: जब अल्लाह तआला ने बन्दों पर रहमत और करामत का इरादा किया तो नबुव्वत में सबसे पहले रसूलुल्लाह (ﷺ) को जिस चीज़ से इब्तिदा कराई गई वह यह थी कि आप(ﷺ) जो भी ख्वाब देखते वह सुबह के फूटने की तरह साबित होता फिर जितना अर्सा अल्लाह ने चाहा आप ऐसी ही हालत पर रहे और आप को तन्हाई अच्छी लगने लगी, चुनांचे तन्हाई से बढ़ कर आप(ﷺ) को कोई चीज़ महबूब नहीं थी।

बुख़ारी:3. मुस्लिम:160.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3633 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ الزُّبَيْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: إِنَّكُمْ تَعُدُّونَ الآيَاتِ عَذَابًا وَإِنَّا كُنَّا نَعُدُّهَا عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَرَكَةً، لَقَدْ كُنَّا نَأْكُلُ الطَّعَامَ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَحْنُ نَسْمَعُ تَسْبِيحَ الطَّعَامِ. قَالَ: وَأُتِيَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

3633 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं: तुम कुदरत की निशानियों को अज़ाब समझते हो जब कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के दौर में उन्हें बरकत शुमार करते थे, हम नबी (ﷺ) के साथ खाना खाया करते थे तो हम खाने की तस्बीह सुन रहे होते थे कहते हैं: नबी (ﷺ) के पास एक बर्तन लाया गया आप(ﷺ) ने अपना हाथ उस में रखा तो आप(ﷺ) की उँगलियों के दर्मियान से पानी फूटने लगा फिर नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "बाबरकत पानी पर आ जाओ और बरकत आसमान से आई है।"

بِإِنَاءٍ فَوَضَعَ يَدَهُ فِيهِ فَجَعَلَ الْمَاءُ يَنْبُعُ مِنْ بَيْنِ أَصَابِعِهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: حَيَّ عَلَى الْوَضُوءِ الْمُبَارَكِ وَالْبَرَكَةُ مِنَ السَّمَاءِ حَتَّى تَوَضَّأْنَا كُلُّنَا.

यहाँ तक कि हम सब लोगों ने वुज़ू किया।

बुख़ारी:3579. निसाई:77. अहमद:1/396.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

7 بَابُ مَا جَاءَ كَيْفَ كَانَ يَنْزِلُ الْوَحْيُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

7 - नबी (ﷺ) पर वहि कैसे नाज़िल होती थी।

3634 - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مُوسَى الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ الحَارِثَ بْنَ هِشَامٍ، سَأَلَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كَيْفَ يَأْتِيكَ الوَحْيُ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَحْيَانًا يَأْتِينِي مِثْلَ صَلْصَلَةِ الجَرَسِ وَهُوَ أَشَدُّهُ عَلَيَّ، وَأَحْيَانًا يَتَمَثَّلُ لِيَ الْمَلَكُ رَجُلاً فَيُكَلِّمُنِي فَأَعِي مَا يَقُولُ. قَالَتْ عَائِشَةُ: فَلَقَدْ رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَنْزِلُ عَلَيْهِ الْوَحْيُ فِي الْيَوْمِ الشَّدِيدِ الْبَرْدِ فَيَفْصِمُ عَنْهُ وَإِنَّ جَبِينَهُ لَيَتَفَصَّدُ عَرَقًا.

3634 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि हारिस बिन हिशाम ने अल्लाह के रसूल (ﷺ) से पूछा: आप(ﷺ) पर वहि कैसे नाज़िल होती है? तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "कभी तो मेरे पास घंटी की झंकार के साथ आती है और यह हालत मुझ पर बहुत सख़्त होती है। और कभी फ़रिश्ता आदमी की शक्ल इख़्तियार करके मुझ से बातें करता है तो मैं उसकी बातें याद कर लेता हूँ।" सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) फ़रमाती हैं: मैंने सख़्त सर्दी के दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) पर वहि नाज़िल होते हुए देखा: वह कैफ़ियत दूर हुई तो आप(ﷺ) की पेशानी से पसीना बह रहा था।

बुख़ारी:2. मुस्लिम:3333. निसाई:933.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

8 بَابُ مَا جَاءَ فِي صِفَةِ النَّبِيِّ ﷺ

8- नबी (ﷺ) का हुलिया मुबारक।

3635 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ

3635 - सय्यदना बराअ (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैंने किसी साहिबे लिम्मा[1] को सुर्ख़ जोड़े में रसूलुल्लाह (ﷺ) से बढ़ कर ख़ूबसूरत नहीं

الْبَرَاءِ، قَالَ: مَا رَأَيْتُ مِنْ ذِي لِمَّةٍ فِي حُلَّةٍ حَمْرَاءَ أَحْسَنَ مِنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، لَهُ شَعْرٌ يَضْرِبُ مَنْكِبَيْهِ، بَعِيدُ مَا بَيْنَ الْمَنْكِبَيْنِ، لَمْ يَكُنْ بِالْقَصِيرِ وَلاَ بِالطَّوِيلِ.

देखा, आप(ﷺ) के बाल आप के कन्धों पर लगते थे, दोनों कन्धों के दर्मियान फ़ासला था, न ही ज़्यादा छोटे थे और न ही बहुत लम्बे।

सहीह: तख़रीज के लिए देखिये: 1724.

तौज़ीह: لمة : उन बालों को कहा जाता है जो कानों से नीचे तक हों।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3636 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، قَالَ: سَأَلَ رَجُلٌ الْبَرَاءَ: أَكَانَ وَجْهُ رَسُولِ اللهِ ﷺ مِثْلَ السَّيْفِ؟ قَالَ: لاَ مِثْلَ الْقَمَرِ.

3636 - अबू इस्हाक़ बयान करते हैं कि एक आदमी ने बराअ (رضي الله عنه) से पूछा: क्या नबी (ﷺ) का चेहरा मुबारक तलवार जैसा था? उन्होंने फ़रमाया, "नहीं (बल्कि) चाँद जैसा था।

सहीह:बुख़ारी:4/228. अहमद:4/281. दारमी:65.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3637 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْمَسْعُودِيُّ، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ مُسْلِمِ بْنِ هُرْمُزَ، عَنْ نَافِعِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ: لَمْ يَكُنْ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالطَّوِيلِ وَلاَ بِالْقَصِيرِ شَثْنَ الْكَفَّيْنِ وَالْقَدَمَيْنِ، ضَخْمَ الرَّأْسِ، ضَخْمَ الْكَرَادِيسِ طَوِيلَ الْمَسْرُبَةِ، إِذَا مَشَى تَكَفَّأَ تَكَفُّؤًا كَأَنَّمَا يَنْحَطُّ مِنْ صَبَبٍ لَمْ أَرَ قَبْلَهُ وَلاَ بَعْدَهُ مِثْلَهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

3637 - सय्यदना अली (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) न ही बहुत ज़्यादा लम्बे थे और न ही ज़्यादा छोटे, हाथों[1] और पावों की उंगलियाँ मोटी थीं, सरे मुबारक बड़ा था, हड्डियां[2] पुर गोश्त थीं, सीने से नाफ़ तक बालों की लम्बी लकीर थी[3], आगे झुक कर चलते थे गोया बलंदी से नीचे उतर रहे हों। मैंने आप(ﷺ) से पहले और बाद में आप (ﷺ) जैसा कोई नहीं देखा।

सहीह: अहमद: 1/96. हाकिम:2/605. शमाइल:5.

तौज़ीह: (1) شثن : मोटा यानी हाथों और पैरों की उंगलियाँ मोटी थीं,

(2) الكراديس : एक जोड़ पर मिली हुई हर दो हड्डियां जैसे कंधे, घुटने, कोहनी वग़ैरह की हड्डियां ज़ख्म से मुराद पुरगोश्त यानी आप की कोहनियाँ और घुटने वग़ैरह पुर गोश्त थे।

(3) طَوِيلَ الْمَسْرُبَةِ : छड़ी की तरह की बारीक बारीक बालों की लम्बी सी लकीर जो सीने से नाफ़ तक थीं।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

हमें सुफ़ियान बिन वकीअ ने भी अपने बाप के ज़रिए मसूदी से इसी सनद के साथ ऐसे ही हदीस बयान की है।

3638 - حَدَّثَنَا أَبُو جَعْفَرٍ مُحَمَّدُ بْنُ الحُسَيْنِ بْنِ أَبِي حَلِيمَةَ مِنْ قَصْرِ الأَحْنَفِ، وَأَحْمَدُ بْنُ عَبْدَةَ الضَّبِّيُّ، وَعَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ الْمَعْنَى وَاحِدٌ، قَالُوا: حَدَّثَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ عَبْدِ اللهِ مَوْلَى غُفْرَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُحَمَّدٍ، مِنْ وَلَدِ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ قَالَ: كَانَ عَلِيٌّ، إِذَا وَصَفَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: لَيْسَ بِالطَّوِيلِ الْمُمَّغِطِ وَلاَ بِالقَصِيرِ الْمُتَرَدِّدِ وَكَانَ رَبْعَةً مِنَ القَوْمِ، وَلَمْ يَكُنْ بِالجَعْدِ القَطَطِ وَلاَ بِالسَّبِطِ كَانَ جَعْدًا رَجِلاً وَلَمْ يَكُنْ بِالمُطَهَّمِ، وَلاَ بِالمُكَلْثَمِ، وَكَانَ فِي الوَجْهِ تَدْوِيرٌ، أَبْيَضُ مُشْرَبٌ، أَدْعَجُ العَيْنَيْنِ، أَهْدَبُ الأَشْفَارِ، جَلِيلُ الْمُشَاشِ، وَالكَتَدِ، أَجْرَدُ ذُو مَسْرُبَةٍ شَثْنُ الكَفَّيْنِ وَالقَدَمَيْنِ، إِذَا مَشَى تَقَلَّعَ كَأَنَّمَا يَمْشِي فِي صَبَبٍ، وَإِذَا التَفَتَ التَفَتَ مَعًا، بَيْنَ كَتِفَيْهِ خَاتَمُ النُّبُوَّةِ وَهُوَ خَاتَمُ النَّبِيِّينَ، أَجْوَدُ النَّاسِ صَدْرًا، وَأَصْدَقُ النَّاسِ لَهْجَةً، وَأَلْيَنُهُمْ عَرِيكَةً، وَأَكْرَمُهُمْ عِشْرَةً،

3638 - सय्यदना अली (رضي الله عنه) की औलाद से इब्राहीम बिन मुहम्मद (رحمه الله) रिवायत करते हैं कि अली (رضي الله عنه) जब नबी (ﷺ) का हुलिया मुबारक बयान करते तो आप फ़रमाते: आप(ﷺ) बहुत ज़्यादा लम्बे थे न ही बहुत ज़्यादा छोटे, लोगों में दर्मियाने क़द वाले थे, बाल न ही बहुत ज़्यादा घुंघरियाले थे और न ही बिलकुल सीधे, बल्कि थोड़े से घुंघरियाले थे, बहुत बड़े जिस्म वाले नहीं थे, न ही बिलकुल गोल चेहरे वाले, आप(ﷺ) के चेहरे में कुछ गोलाई थी और चेहरा सुर्ख़ी माइल सफ़ेद था, आँखों की सियाही ज़्यादा थी, लम्बी पलकों वाले थे, बड़े जोड़ों और बड़े शानों वाले थे, बदन मुबारक पर बाल नहीं थे, सीने से नाफ़ तक छड़ी की तरह बारीक बालों की लकीर थी, हाथों और पावों की उंगलियाँ मोटी थीं, पाँव गाड़ कर चलते थे गोया बलंदी से उतर रहे हों, जब किसी की तरफ़ देखते तो पूरा बदन को फेरते (यानी सिर्फ आँख चुरा कर नहीं देखते) थे, आप(ﷺ) के दोनों कन्धों के दर्मियान महरे नबुव्वत थी जो अंबिया की महर होती है, सब से ज़्यादा सख़ावत वाले हाथ और खुले सीने वाले थे, गुफ्तगू में सब से बड़े सच्चे, सब से ज़्यादा नर्म तबीयत वाले, रहन सहन में बहुत ही क़ाबिले इज्ज़त व एहतराम, जो आप(ﷺ) को अचानक

مَنْ رَآهُ بَدِيهَةً هَابَهُ، وَمَنْ خَالَطَهُ مَعْرِفَةً أَحَبَّهُ، يَقُولُ نَاعِتُهُ: لَمْ أَرَ قَبْلَهُ وَلاَ بَعْدَهُ مِثْلَهُ.

देखता वह मरऊब हो जाता और जो आप(ﷺ) से मिल कर वाक़िफ़ हो जाता वह आप(ﷺ) से मोहब्बत करने लगता, आप (ﷺ) की तारीफ़ करने वाला कहता मैंने आप (ﷺ) से पहले और बाद में आप जैसा नहीं देखा।

ज़ईफ़: इब्ने अबी शैबा:11/512. बैहक़ी फी दलाइल:1/269. शमाइल:7.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। इस की सनद मुत्तसिल नहीं है।

अबू जाफ़र कहते हैं: अस्मई (رحمه الله) नबी करीम (ﷺ) के हुलिया मुबारक की तफ़सीर में कहते हैं:

المغطط : वह शख़्स जो बहुत ज़्यादा लंबा हो, कहते हैं: मैंने एक आराबी से सुना वह कह रहा था تمغط في نشابته : यानी उसने अपने तीरों को खूब लंबा बनाया है, और المترد : वह शख़्स जिस के जिस्म के आज़ा गट्ठे गट्ठे हों और जिस्म का क़द छोटा हो: القطط , बहुत ज़्यादा घुंघरियाले बाल الرجل , : वह आदमी जिस के बालों में थोड़ा सा ख़म हो यानी थोड़े से मुड़े हुए, (खमदार: مطهم (बहुत फर्बा कसीरुल लहम आदमी: مكلثم , बिलकुल गोल चेहरे वाला: مشرب, वह शख़्स होता है जिसकी सफेदी में सुर्खी शामिल हो: الادعج , जिस के आँख की सियाही बहुत ज़्यादा हो: الأهداب , जिसकी पलकें लम्बी हों: ألكتد , दोनों शानों के इकट्ठा होने की जगह जिसे काहिल भी कहा जाता है: المسربة , बारीक बाल जो एक छड़ी की तरह सीने से नाफ़ तक हों: الشثن , हाथों और पावों की उंगलियाँ मोटी हों: التقلع , कुव्वत और ज़ोर से चलना: الصبب , से मुराद नीचे उतरना जैसे हम कहते हैं: हम बलंदी से उतरे: جليل المشاش . से मुराद कन्धों के मोहर हैं: عشرة , सोहबत, साथ को कहा जाता है, और عشير : साथी को कहते हैं: البديهة , अचानक कहा जाता है : بدهته بامر यानी अचानक वह किसी काम से घबरा गया.

9 بَابٌ فِي كَلَامِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

9 - आयशा (رضي الله عنها) का कौल: आप (ﷺ) खुली और वाज़ेह कलाम करते थे।

3639 - حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ مَسْعَدَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ الأَسْوَدِ، عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ:

3639 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) तुम्हारी तरह जल्दी-जल्दी गुफ़्तगू[1] नहीं करते थे बल्कि आप ऐसी खुली और वाज़ेह गुफ़्तगू करते थे कि आप के

مَا كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسْرُدُ سَرْدَكُمْ هَذَا، وَلَكِنَّهُ كَانَ يَتَكَلَّمُ بِكَلَامٍ يُبَيِّنُهُ، فَصْلٌ، يَحْفَظُهُ مَنْ جَلَسَ إِلَيْهِ.

पास बैठने वाला उसे याद कर लेता।

मुस्लिम:2493. अबू दाऊद:3654. अहमद:6/ 118.

तौज़ीह: 1) يَسْرُدُ: سَرْدَ का माना है मुसलसल और लगातार बातें नहीं करते थे बल्कि एक बात करके वक्फ़ा करते फिर अगली बात इर्शाद फ़रमाते।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। हम इसे ज़ोहरी के तरीक़ से ही जानते हैं इसे यूनुस बिन यज़ीद ने भी ज़ोहरी से रिवायत किया है।

3640 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو قُتَيْبَةَ سَلْمُ بْنُ قُتَيْبَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الْمُثَنَّى، عَنْ ثُمَامَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُعِيدُ الكَلِمَةَ ثَلَاثًا لِتُعْقَلَ عَنْهُ.

3640 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक बात को तीन दफ़ा दोहराते ताकि उसे समझ लिया जाए।

हसन सहीह: तखरीज के लिए देखिये:2723.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है, हम इसे अब्दुल्लाह बिन मुसन्ना के तरीक़ से ही जानते हैं।

10 بَابٌ فِي قَوْلِ ابْنِ جَزْءٍ: مَا رَأَيْتُ أَحَدًا أَكْثَرَ تَبَسُّمًا

10 - इब्ने जज़्आ का कौल कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से ज़्यादा मुस्कुराने वाला कोई नहीं देखा।

3641 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ لَهِيعَةَ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ الْمُغِيرَةِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الحَارِثِ بْنِ جَزْءٍ، قَالَ: مَا رَأَيْتُ أَحَدًا أَكْثَرَ تَبَسُّمًا مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ.

3641 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन हारिस बिन जज़्आ (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से ज़्यादा मुस्कुराने वाला कोई नहीं देखा।

सहीह: अहमद:4/ 190. शमाइल:227.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है, नीज़ बवास्ता यज़ीद बिन अबी हबीब भी अब्दुल्लाह बिन हारिस बिन जज़्आ से इसी तरह मर्वी है।

Sherkhan
9825 696 131

3642 - حَدَّثَنَا بِذَلِكَ أَحْمَدُ بْنُ خَالِدٍ الخَلاَّلُ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ إِسْحَاقَ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الحَارِثِ بْنِ جَزْءٍ، قَالَ: مَا كَانَ ضَحِكُ رَسُولِ اللهِ ﷺ إِلاَّ تَبَسُّمًا.

3642 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन हारिस बिन जज़्आ (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं: रसूलुल्लाह (ﷺ) का हंसना सिर्फ मुस्कराहट के साथ होता था।

सहीह: शमाइल:228.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है, हम इसे सिर्फ इसी सनद से ही लैस बिन साद से जानते हैं।

11 - بَاب مَا جَاءَ فِي خَاتَمِ النُّبُوَّةِ

11 - महरे नबुव्वत का बयान।

3643 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَاتِمُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، عَنِ الجَعْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: سَمِعْتُ السَّائِبَ بْنَ يَزِيدَ، يَقُولُ: ذَهَبَتْ بِي خَالَتِي إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ ابْنَ أُخْتِي وَجِعٌ، فَمَسَحَ بِرَأْسِي وَدَعَا لِي بِالبَرَكَةِ وَتَوَضَّأَ فَشَرِبْتُ مِنْ وَضُوئِهِ، فَقُمْتُ خَلْفَ ظَهْرِهِ فَنَظَرْتُ إِلَى الخَاتَمِ بَيْنَ كَتِفَيْهِ فَإِذَا هُوَ مِثْلُ زِرِّ الحَجَلَةِ.

3643 - सय्यदना साइब बिन यज़ीद (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मेरी खाला मुझे नबी (ﷺ) की ख़िदमत में ले जाकर अर्ज़ करने लगीं: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मेरा भांजा बीमार है, तो आप(ﷺ) ने मेरे सर पर हाथ फेर कर मेरे लिए बरकत की दुआ की और आप(ﷺ) ने वुज़ू फ़रमाया, फिर मैंने आप के वुज़ू से बचा हुआ पानी पिया तो मैंने आप(ﷺ) के पीछे खड़े हो कर आप(ﷺ) के दोनों कन्धों के दर्मियान महरे नबुव्वत को देखा तो वह मसहरी (हजला अरूसी) की घुंडी (बटन) की तरह थी। (1)

बुख़ारी:190. मुस्लिम:2345.

तौज़ीह: زر : का माना बटन होता है जिससे कपड़े को दो हिस्सों में बांटा जाता है और हजला दुल्हन के लिए सजाये गए कमरे या मसहरी को कहते हैं। बअ़ज़ ने यह भी कहा है हजला फ़ाख्ता को कहते हैं और जिर्र उसका अंडा है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में सलमान, कुर्राअ बिन इयास अल-मुज़नी, जाबिर बिन समुरह, बुरैदा असलमी, अब्दुल्लाह बिन सर्जिस, अम्र बिन अख्तब और अबू सईद (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

3644 - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ يَعْقُوبَ الطَّالَقَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَيُّوبُ بْنُ جَابِرٍ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، قَالَ: كَانَ خَاتَمُ رَسُولِ اللهِ ﷺ، يَعْنِي الَّذِي بَيْنَ كَتِفَيْهِ، غُدَّةً حَمْرَاءَ مِثْلَ بَيْضَةِ الحَمَامَةِ.

3644 - सय्यदना जाबिर बिन समुरह् (رضی اللہ عنہ) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की महरे नबुव्वत यानी जो आपके दोनों शानों (कंधों) के दर्मियान थी वह कबूतरी के अंडे की तरह सुर्ख गदूद थी।

मुस्लिम:2344. अहमद:5/86.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

12 بَابٌ فِي صِفَةِ النَّبِيِّ ﷺ

12 - जाबिर बिन समुरह् (رضی اللہ عنہ) का बयान कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की पिंडली में बारीकी थी।

3645 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبَّادُ بْنُ العَوَّامِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا الحَجَّاجُ هُوَ ابْنُ أَرْطَاةَ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، قَالَ: كَانَ فِي سَاقَيْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حُمُوشَةٌ، وَكَانَ لاَ يَضْحَكُ إِلاَّ تَبَسُّمًا، وَكُنْتُ إِذَا نَظَرْتُ إِلَيْهِ قُلْتُ: أَكْحَلُ العَيْنَيْنِ وَلَيْسَ بِأَكْحَلَ.

3645 - सय्यदना जाबिर बिन समुरह् (رضی اللہ عنہ) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की दोनों पिंडलियाँ बारीक थीं और आप(ﷺ) सिर्फ मुस्कुराते थे और मैं जब आप(ﷺ) की तरफ़ देखता था तो कहता आप(ﷺ) ने दोनों आँखों में सुर्मा लगाया हुआ है हालांकि आप(ﷺ) ने सुर्मा नहीं लगाया होता था।

ज़ईफ़: अहमद:5/105. तबरानी फ़िल कबीर:2024. शमाइल:226.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3646 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو قَطَنٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ ضَلِيعَ الفَمِ، أَشْكَلَ العَيْنَيْنِ، مَنْهُوسَ العَقِبِ.

3646 - सय्यदना जाबिर बिन समुरह् (رضی اللہ عنہ) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) का दहन कुशादा[1] था, आँखों के डोरे सुर्ख थे, एड़ियां कम गोश्त वाली थीं।

मुस्लिम:2339. अहमद:5/86.

तौज़ीह: دهن : मुंह का कुशादा होना मर्दों के लिए बाइसे हुस्न और औरतों के लिए ना पसंदीदा है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3647 - सय्यदना जाबिर बिन समुरह (ﷺ) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) कुशादा दहन के थे, (आप की) आँखों के डोरे सुर्ख और एड़ियां कम गोश्त वाली थीं।

3647 - حَدَّثَنَا أَبُو مُوسَى مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ضَلِيعَ الفَمِ، أَشْكَلَ العَيْنَيْنِ، مَنْهُوسَ العَقِبِ قَالَ شُعْبَةُ: قُلْتُ لِسِمَاكٍ: مَا ضَلِيعُ الفَمِ؟ قَالَ: وَاسِعُ الفَمِ. قُلْتُ: مَا أَشْكَلُ الْعَيْنِ؟ قَالَ: طَوِيلُ شَقِّ العَيْنِ. قُلْتُ: مَا مَنْهُوسُ الْعَقِبِ؟ قَالَ: قَلِيلُ اللَّحْمِ.

शोबा कहते हैं: मैंने सिमाक से पूछा ضليع الفم का मतलब क्या है? तो उन्होंने कहा: कुशादा दहन (मुंह)। मैंने कहा: أشكل العينين से क्या मुराद है? तो उन्होंने कहा: आँखों के शिगाफ का लंबा होना, (1) मैंने कहा: منهوش العقب से क्या मुराद है? उन्होंने कहा: कम गोश्त।

तौज़ीह: أشكل : दो रंगी चीज़, उस शख़्स को कहा जाता है जिसकी आँख की सफेदी में सुर्खी हो। (देखिये: अल-कामूसुल वहीद,पृ.881)

जरीर का शेर है . . .

فما زالت القتلى تمج دماءها — بدجلة حتى ماد دجلة أشكل.

यानी मक़्तूलीन का खून दजला में गिरता रहा यहाँ तक कि दजला का पानी सुर्ख हो गया तो इस लिहाज़ से वकीअ की बात दुरुस्त मालूम नहीं होती लिहाज़ा इस का माना वही होगा जो हम ने किया है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3648 - अबू हुरैरा (ﷺ) का बयान मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से ज़्यादा खूबसूरत कोई चीज़ नहीं देखी (ऐसा लगता था) गोया सूरज आप(ﷺ) के चेहरे में चल रहा है, और रसूलुल्लाह (ﷺ) से ज़्यादा तेज़ किसी को चलते नहीं देखा गोया ज़मीन आप(ﷺ) के लिए लपेटी जा रही हो, हम (आप(ﷺ) के

3648 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ لَهِيعَةَ، عَنْ أَبِي يُونُسَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: مَا رَأَيْتُ شَيْئًا أَحْسَنَ مِنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَأَنَّ الشَّمْسَ تَجْرِي فِي وَجْهِهِ، وَمَا رَأَيْتُ أَحَدًا أَسْرَعَ فِي مَشْيِهِ

مِنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَأَنَّمَا الأَرْضُ تُطْوَى لَهُ، إِنَّا لَنُجْهِدُ أَنْفُسَنَا، وَإِنَّهُ لَغَيْرُ مُكْتَرِثٍ.

साथ चलते हुए) अपनी जानों को मशक्क़त में डालते थे जब कि आप (ﷺ) परवाह किए बग़ैर चलते जाते थे।

ज़ईफ़: अहमद:2/350. इब्ने हिब्बान:6309.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है।

3649 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: عُرِضَ عَلَيَّ الأَنْبِيَاءُ، فَإِذَا مُوسَى ضَرْبٌ مِنَ الرِّجَالِ كَأَنَّهُ مِنْ رِجَالِ شَنُوءَةَ، وَرَأَيْتُ عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ، فَإِذَا أَقْرَبُ النَّاسِ مَنْ رَأَيْتُ بِهِ شَبَهًا عُرْوَةُ بْنُ مَسْعُودٍ، وَرَأَيْتُ إِبْرَاهِيمَ فَإِذَا أَقْرَبُ مَنْ رَأَيْتُ بِهِ شَبَهًا صَاحِبُكُمْ يَعْنِي نَفْسَهُ، وَرَأَيْتُ جِبْرِيلَ فَإِذَا أَقْرَبُ مَنْ رَأَيْتُ بِهِ شَبَهًا دِحْيَةُ..

3649 - सय्यदना जाबिर (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मुझ पर अंबिया को पेश किया गया तो देखा मूसा (عليه السلام) दर्मियाने आदमी थे गोया कि वह शनूआ कबीले के लोगों में से हों, मैंने ईसा बिन मरियम को देखा तो जिन लोगों को मैंने देखा है उन में से उर्वा बिन मसऊद मिलते जुलते थे, मैंने इब्राहीम (عليه السلام) को देखा तो वह तुम्हारे साथी के मुशाबेह थे। यानी आप (ﷺ) के। और मैंने जिब्रील को (इंसानी शक्ल) में देखा तो वह दिह्या बिन ख़लीफ़ा कल्बी के मुशाबेह थे।"

मुस्लिम:167. अहमद:3/334. इब्ने हिब्बान:6232.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह ग़रीब है।

13 بَابٌ فِي سِنِّ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَابْنُ كَمْ كَانَ حِينَ مَاتَ

13- नबी (ﷺ) की उम्रे मुबारक का बयान।

3650- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، وَيَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الدَّوْرَقِيُّ، قَالاَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ ابْنُ عُلَيَّةَ ، عَنْ خَالِدٍ الْحَذَّاءِ، قَالَ: حَدَّثَنِي عَمَّارٌ، مَوْلَى بَنِي هَاشِمٍ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ، يَقُولُ: تُوُفِّيَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَهُوَ ابْنُ خَمْسٍ وَسِتِّينَ.

3650 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि (जब) नबी (ﷺ) की वफ़ात हुई तो आप पैंसठ (65) साल के थे।

शाज़: अहमद:1/223. अबू याला:2452. शमाइल:381.

3651 - حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ الجَهْضَمِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ، قَالَ: حَدَّثَنَا خَالِدٌ الحَذَّاءُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَمَّارٌ، مَوْلَى بَنِي هَاشِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ عَبَّاسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تُوُفِّيَ وَهُوَ ابْنُ خَمْسٍ وَسِتِّينَ.

3651 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) बयान फ़रमाते हैं नबी (ﷺ) फौत हुए तो आप पैंसठ बरस के थे।

शाज़: पिछली हदीस देखिये।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसनुल इस्नाद सहीह है।

3652 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَكَرِيَّا بْنُ إِسْحَاقَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: مَكَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَكَّةَ ثَلَاثَ عَشْرَةَ، يَعْنِي يُوحَى إِلَيْهِ، وَتُوُفِّيَ وَهُوَ ابْنُ ثَلَاثٍ وَسِتِّينَ.

3652 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) नबुव्वत मिलने के बाद) मक्का में तेरह साल रहे यानी (तेरह साल) आप(ﷺ) की तरफ़ वहि आती रही और (जब) आप फ़ौत हुए तो तिरसठ (63) बरस के थे।

बुख़ारी:3903. मुस्लिम:2351. अहमद:1/371.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में आयशा (رضي الله عنها), अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) और दग़फ़ल बिन हंज़ला से भी हदीस मर्वी है जबकि दग़फ़ल का नबी (ﷺ) से सिमा (सुनना) करना या देखना साबित नहीं है, नीज़ इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) की हदीस अम्र बिन दीनार के तरीक़ से हसन ग़रीब है।

3653 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ أَبِي سُفْيَانَ، أَنَّهُ قَالَ: سَمِعْتُهُ يَخْطُبُ يَقُولُ: مَاتَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ ابْنُ ثَلَاثٍ وَسِتِّينَ وَأَبُو بَكْرٍ، وَعُمَرُ، وَأَنَا ابْنُ ثَلَاثٍ وَسِتِّينَ.

3653 - सय्यदना मुआविया बिन अबी सुफ़ियान (رضي الله عنه) से रिवायत है कि उन्होंने ख़ुत्बा देते हुए फ़रमाया, "रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात हुई तो आप तिरसठ (63) बरस के थे और अबू बक्र व उमर (رضي الله عنهما) भी (तिरसठ बरस में फौत हुए) और मैं भी तिरसठ बरस का हूँ।

मुस्लिम:2352. अहमद:4/96.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3654 - حَدَّثَنَا العَبَّاسُ العَنْبَرِيُّ، وَالحُسَيْنُ بْنُ مَهْدِيٍّ الْبَصْرِيُّ، قَالاَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، قَالَ: أُخْبِرْتُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، وَقَالَ: الحُسَيْنُ بْنُ مَهْدِيٍّ، فِي حَدِيثِهِ: ابْنُ جُرَيْجٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ مَاتَ وَهُوَ ابْنُ ثَلاَثٍ وَسِتِّينَ.

3654 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) फौत हुए तो आप तिरसठ बरस के थे।

बुखारी:3536. मुस्लिम:2349. अहमद:6/93.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। इसे ज़ोहरी के भतीजे ने भी ज़ोहरी से बवास्ता उर्वा, सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) से इसी तरह रिवायत किया है।

14 بَابُ مَنَاقِبِ أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ وَاسْمُهُ عَبْدُ اللهِ بْنُ عُثْمَانَ وَلَقَبُهُ عَتِيقٌ

14- सय्यदना अबू बक्र (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाकिब(1) उनका नाम अब्दुल्लाह बिन उस्मान और लक़ब अतीक है।

3655 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا الثَّوْرِيُّ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي الأَحْوَصِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَبْرَأُ إِلَى كُلِّ خَلِيلٍ مِنْ خِلِّهِ، وَلَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا خَلِيلاً لاَتَّخَذْتُ ابْنَ أَبِي قُحَافَةَ خَلِيلاً، وَإِنَّ صَاحِبَكُمْ لَخَلِيلُ اللَّهِ.

3655 - अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैं हर दोस्त की दोस्ती से एलाने बराअत करता हूँ और अगर मैं किसी को वली दोस्त बनाने वाला होता तो मैं अबू कुहाफा के बेटे (अबू बक्र) को दोस्त बनाता लेकिन तुम्हारा साथी (यानी मुहम्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) अल्लाह का दोस्त (खलील) है।"

मुस्लिम:2383. इब्ने माजह:93. अहमद:1/377.

तौज़ीह: مناقب : منقبة की जमा है जिसका मानी है खानदानी खूबी या उम्दा अख़्लाक़ व औसाफ़, शरीफाना अमल। (देखिये: अल- कामूसुल वहीद पृ.1690)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है, नीज इस बारे में अबू सईद, अबू हुरैरा, इब्ने जुबैर और इब्ने अब्बास (رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है।

3656 - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعِيدٍ الجَوْهَرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي أُوَيْسٍ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ بِلاَلٍ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، عَنْ عُمَرَ بْنِ الخَطَّابِ، قَالَ: أَبُو بَكْرٍ سَيِّدُنَا وَخَيْرُنَا وَأَحَبُّنَا إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ.

3656 - सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं: अबू बक्र हमारे सरदार, हम से बेहतर और रसूलुल्लाह (ﷺ) को हम सब से ज़्यादा महबूब थे।

हसन: नीज इसका पहला जुज़ बुख़ारी में है। बुख़ारी:3754. हाकिम:3/66.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3657 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الدَّوْرَقِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الجُرَيْرِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ شَقِيقٍ، قَالَ: قُلْتُ لِعَائِشَةَ: أَيُّ أَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ أَحَبَّ إِلَى رَسُولِ اللهِ؟ قَالَتْ: أَبُو بَكْرٍ، قُلْتُ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَتْ: عُمَرُ، قُلْتُ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَتْ: ثُمَّ أَبُو عُبَيْدَةَ بْنُ الجَرَّاحِ، قُلْتُ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: فَسَكَتَتْ.

3657 - अब्दुल्लाह बिन शकीक (رحمه الله) रिवायत करते हैं कि मैंने सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) से पूछा: नबी (ﷺ) का कौन सा सहाबी रसूलुल्लाह (ﷺ) को सबसे ज़्यादा महबूब था? उन्होंने फ़रमाया, अबू बक्र (رضي الله عنه), मैंने कहा: फिर कौन? फ़रमाने लगीं: उमर (رضي الله عنه), मैंने कहा: फिर कौन? उन्होंने फ़रमाया, फिर उबैदा बिन जर्राह (رضي الله عنه), रावी कहते हैं: मैंने कहा: फिर कौन? तो वह ख़ामोश हो गईं।

सहीह: इब्ने माजा:102. अहमद:6/218.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3658 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي حَفْصَةَ، وَالأَعْمَشِ، وَعَبْدِ اللهِ بْنِ صَهْبَانَ، وَابْنِ أَبِي لَيْلَى، وَكَثِيرٍ النَّوَّاءِ كُلِّهِمْ، عَنْ عَطِيَّةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ أَهْلَ الدَّرَجَاتِ العُلَى لَيَرَاهُمْ مَنْ تَحْتَهُمْ كَمَا تَرَوْنَ النَّجْمَ الطَّالِعَ فِي أُفُقِ السَّمَاءِ، وَإِنَّ أَبَا بَكْرٍ، وَعُمَرَ مِنْهُمْ وَأَنْعَمَا.

3658 - सय्यदना अबू सईद (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "बलंद दर्जात वालों को निचले दर्जों वाले इस तरह देखेंगे जैसे तुम आसमान के किनारे में तुलू होने वाले सितारे को देखते हो, और अबू बक्र व उमर (رضي الله عنهما) उन में से हैं और कैसे खुशनसीब हैं।"

सहीह: अबू दाऊद:3987. इब्ने माजह:96. अहमद:3/27.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمة الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है, और कई तुरूक़ से बवास्ता अतिय्या, अबू सईद (رضي الله) से मर्वी है।

15- बाब: अगर मैं किसी को दोस्त बनाने वाला होता तो अबू बक्र को दोस्त बनाता।

15 - بَابٌ لو كنت متخذا خليلا لاتخذت أبا بكر خليلا .

3659 - इब्ने अबी मुअल्ला अपने बाप से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक दिन ख़ुत्बा देते हुए इर्शाद फ़रमाया, "एक आदमी को उस के रब ने दुनिया में उसकी मर्ज़ी के मुताबिक़ ज़िंदा रहने, अपनी मर्ज़ी के मुताबिक दुनिया में खाने और अपने रब से मिलने के दर्मियान इख़्तियार दिया है तो उसने रब से मिलना चाहा है।" रावी कहते हैं: अबू बक्र (رضي الله) रोने लग गए तो नबी (ﷺ) के सहाबा ने कहा: क्या तुम इस बूढ़े से तअज्जुब नहीं करते कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने तो एक नेक आदमी का ज़िक्र किया है जिसे उस के रब दुनिया और रब की मुलाक़ात के दर्मियान इख़्तियार दिया है तो उस ने अपने रब से मिलने को इख़्तियार किया, रावी कहते हैं: अबू बक्र (رضي الله) रसूलुल्लाह (ﷺ) की बात को ज़्यादा जानते थे, अबू बक्र ने कहा: हम अपने आबा और अमवाल को आप पर क़ुर्बान करते हैं तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अबू क़ुहाफ़ा के बेटे से बढ़ कर लोगों में कोई शख़्स अपने साथ और माल के साथ हम पर एहसान करने वाला नहीं है और अगर मुझे किसी को ख़लील (वली, दोस्त) बनाना होता तो इब्ने अबी क़ुहाफा को दोस्त

3659 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ أَبِي الشَّوَارِبِ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنِ ابْنِ أَبِي الْمُعَلَّى، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَطَبَ يَوْمًا فَقَالَ: إِنَّ رَجُلاً خَيَّرَهُ رَبُّهُ بَيْنَ أَنْ يَعِيشَ فِي الدُّنْيَا مَا شَاءَ أَنْ يَعِيشَ وَيَأْكُلَ فِي الدُّنْيَا مَا شَاءَ أَنْ يَأْكُلَ وَبَيْنَ لِقَاءِ رَبِّهِ فَاخْتَارَ لِقَاءَ رَبِّهِ. قَالَ: فَبَكَى أَبُو بَكْرٍ، فَقَالَ أَصْحَابُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَلاَ تَعْجَبُونَ مِنْ هَذَا الشَّيْخِ إِذْ ذَكَرَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلاً صَالِحًا خَيَّرَهُ رَبُّهُ بَيْنَ الدُّنْيَا وَبَيْنَ لِقَاءِ رَبِّهِ فَاخْتَارَ لِقَاءَ رَبِّهِ. قَالَ: فَكَانَ أَبُو بَكْرٍ أَعْلَمَهُمْ بِمَا قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: بَلْ نَفْدِيكَ بِآبَائِنَا وَأَمْوَالِنَا. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا مِنَ النَّاسِ أَحَدٌ أَمَنَّ إِلَيْنَا فِي صُحْبَتِهِ وَذَاتِ يَدِهِ مِنْ ابْنِ أَبِي قُحَافَةَ، وَلَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا خَلِيلاً

لاتَّخَذْتُ ابْنَ أَبِي قُحَافَةَ خَلِيلاً، وَلَكِنْ وُدٌّ وَإِخَاءُ إِيمَانٍ، وُدٌّ وَإِخَاءُ إِيمَانٍ، مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلاثًا، أَلاَ وَإِنَّ صَاحِبَكُمْ خَلِيلُ اللهِ.

बनाता लेकिन मोहब्बत और दीनी भाई चारा है।" आप(ﷺ) ने यह बात दो या तीन मर्तबा कही, (फिर फ़रमाया:) " आगाह रहो तुम्हारा साथी अल्लाह का खलील है।"

ज़ईफ़ुल इस्नाद: अहमद:3/478. तबरानी फ़िल कबीर:22/825.

वज़ाहत: इस बारे में अबू सईद से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है, नीज़ यह हदीस एक दूसरी सनद से बवास्ता अबू अवाना, अब्दुल मलिक बिन उमैर से भी मर्वी है اَمَنَّ إلينا: का मानी है हम पर एहसान करने वाला।

3660 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ الْحَسَنِ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ، عَنْ أَبِي النَّضْرِ، عَنْ عُبَيْدِ بْنِ حُنَيْنٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَلَسَ عَلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ: إِنَّ عَبْدًا خَيَّرَهُ اللَّهُ بَيْنَ أَنْ يُؤْتِيَهُ مِنْ زَهْرَةِ الدُّنْيَا مَا شَاءَ وَبَيْنَ مَا عِنْدَهُ، فَاخْتَارَ مَا عِنْدَهُ، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: فَدَيْنَاكَ يَا رَسُولَ اللهِ بِآبَائِنَا وَأُمَّهَاتِنَا. قَالَ: فَعَجِبْنَا، فَقَالَ النَّاسُ: انْظُرُوا إِلَى هَذَا الشَّيْخِ يُخْبِرُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ عَبْدٍ خَيَّرَهُ اللَّهُ بَيْنَ أَنْ يُؤْتِيَهُ مِنْ زَهْرَةِ الدُّنْيَا مَا شَاءَ وَبَيْنَ مَا عِنْدَ اللهِ وَهُوَ يَقُولُ: فَدَيْنَاكَ بِآبَائِنَا وَأُمَّهَاتِنَا قَالَ: فَكَانَ رَسُولُ اللهِ هُوَ الْمُخَيَّرُ، وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ هُوَ أَعْلَمَنَا بِهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ مِنْ أَمَنِّ النَّاسِ

3660 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) मिम्बर पर जलवा अफ़रोज़ हुए तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "एक बन्दे को अल्लाह ने इख़्तियार दिया है कि वह उसे उसकी ख़्वाहिश के मुताबिक़ दुनिया की आसाइश दे दे या उस अल्लाह के पास जो कुछ है उसे इख़्तियार कर ले तो उस ने अल्लाह के पास वाली चीज़ को चुना है।" अबू बक्र कहने लगे: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! हम अपने मां बाप आप पर कुर्बान करते हैं। रावी कहते हैं: हमें बड़ा तअज्जुब हुआ, लोग कहने लगे: इस बूढ़े को देखो रसूलुल्लाह (ﷺ) तो एक आदमी के बारे में बता रहे हैं जिसे अल्लाह ने दुनिया की आसाइश और अपने पास आने के दर्मियान इख़्तियार दिया है और यह कह रहे हैं कि हम अपने मां, बाप आप पर कुर्बान करते हैं। तो वह रसूलुल्लाह (ﷺ) ही थे जिन्हें इख़्तियार दिया गया था और अबू बक्र इस बात को हम से ज़्यादा जानते थे। फिर नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "अपनी सोहबत और माल में मुझ पर सब से ज़्यादा

عَلَيَّ فِي صُحْبَتِهِ وَمَالِهِ أَبُو بَكْرٍ، وَلَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا خَلِيلاً لاَتَّخَذْتُ أَبَا بَكْرٍ خَلِيلاً وَلَكِنْ أُخُوَّةُ الإِسْلاَمِ، لاَ تُبْقَيَنَّ فِي الْمَسْجِدِ خَوْخَةٌ إِلاَّ خَوْخَةُ أَبِي بَكْرٍ.

एहसान करने वाला अबू बक्र है और अगर मैं किसी को दोस्त बनाने वाला होता, तो अबू बक्र को बनाता लेकिन (उस के साथ) इस्लाम का भाई चारा है, मस्जिद के अन्दर अबू बक्र की खिड़की[1] के अलावा कोई खिड़की न रहे।"

बुख़ारी:466. मुस्लिम:2382. अहमद:3/ 18.

तौज़ीह: خَوْخَةٌ : खिड़की, रोशनदान और बड़े गेट में लगे हुए छोटे दरवाज़े को भी خَوْخَةٌ कहा जाता है आज भी अगर आप मस्जिदे नबवी के अगले हिस्से में क़िब्ला रुख हो कर खड़े हों तो आप के दायें हाथ बाबे अबी बक्र सिद्दीक़ है और वहाँ आप देखेंगे कि एक छोटे दरवाज़े की निशानदेही की हुई है जिस पर लिखा है।(هذه خَوْخَةُ أَبِي بَكْرٍ) यानी यह अबू बक्र (رضي الله عنه) की खिड़की थी.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3661 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الحَسَنِ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَحْبُوبُ بْنُ مُحْرِزٍ القَوَارِيرِيُّ، عَنْ دَاوُدَ بْنِ يَزِيدَ الأَوْدِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا لأَحَدٍ عِنْدَنَا يَدٌ إِلاَّ وَقَدْ كَافَيْنَاهُ مَا خَلاَ أَبَا بَكْرٍ فَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا يَدًا يُكَافِئُهُ اللَّهُ بِهِ يَوْمَ القِيَامَةِ، وَمَا نَفَعَنِي مَالُ أَحَدٍ قَطُّ مَا نَفَعَنِي مَالُ أَبِي بَكْرٍ، وَلَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا خَلِيلاً لاَتَّخَذْتُ أَبَا بَكْرٍ خَلِيلاً، أَلاَ وَإِنَّ صَاحِبَكُمْ خَلِيلُ اللَّهِ.

3661 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (صلى الله عليه وسلم) ने फ़रमाया, "हमारे ऊपर जिसका भी कोई एहसान था हम ने उसका बदला चुका दिया है सिवाए अबू बक्र के, उनकी हम पर इतनी नेकियाँ हैं कि उन्हें क़यामत के दिन अल्लाह ही बदला देगा, मुझे किसी के माल ने उतना नफ़ा नहीं दिया जितना अबू बक्र के माल ने नफा दिया है, और अगर मैं किसी को दोस्त बनाने वाला होता तो अबू बक्र को दोस्त बनाता, सुन लो! तुम्हारा साथी अल्लाह का खलील है।

ज़ईफ़: इब्ने माजह:94. अहमद:2/ 253. (लेकिन अखीर वाले जुम्ले दीगर सहीह अहादीस से साबित हैं।) (يعني وما نفعني)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है।

3662 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ الصَّبَّاحِ البَزَّارُ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ زَائِدَةَ، عَنْ

3662 - सय्यदना हुज़ैफा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (صلى الله عليه وسلم) ने फ़रमाया, "मेरे बाद दो आदमियों अबू बक्र और उमर की इक़्तिदा

عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ رِبْعِيٍّ، عَنْ حُذَيْفَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: اقْتَدُوا بِاللَّذَيْنِ مِنْ بَعْدِي أَبِي بَكْرٍ، وَعُمَرَ.

करना।"

सहीह: इब्ने माजह्:97. अहमद:5/382. हुमैदी:449.

वज़ाहत: इस बारे में इब्ने मसऊद (رضي الله) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है इस हदीस को सुफ़ियान सौरी ने अब्दुल मलिक बिन उबैद से बवास्ता मौला रिबई से उन्होंने बवास्ता हुज़ैफा (رضي الله) नबी (ﷺ) से रिवायत किया है।

(अबू ईसा कहते हैं) हमें अहमद बिन मुनीअ और दीगर मोहद्दिसीन ने, वह कहते हैं हमें सुफ़ियान बिन उयय्ना ने, अब्दुल मलिक बिन उमैर से इसी तरह रिवायत बयान की है, सुफ़ियान बिन उयय्ना इस हदीस में तद्लीस करते हैं कभी तो वह इसे ज़ायदा के ज़रिए अब्दुल मलिक बिन उमैर के ज़रिए ज़िक्र करते हैं और कभी इसमें ज़ायदा का ज़िक्र नहीं करते।

इस हदीस को इब्राहीम बिन साद ने सुफ़ियान सौरी से उन्हें अब्दुल मलिक बिन उमैर ने रिबई के आज़ादकर्दा गुलाम हिलाल से उन्होंने रिबई से बवास्ता हुज़ैफा (رضي الله) नबी (ﷺ) से मरवी है इसे सालिम अन्अमी कूफी ने बवास्ता रिबई बिन हिराश हुज़ैफा (رضي الله) से रिवायत किया है।

3663 - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ الأُمَوِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ سَالِمٍ أَبِي الْعَلَاءِ الْمُرَادِيِّ، عَنْ عَمْرِو بْنِ هَرِمٍ، عَنْ رِبْعِيِّ بْنِ حِرَاشٍ، عَنْ حُذَيْفَةَ قَالَ: كُنَّا جُلُوسًا عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: إِنِّي لاَ أَدْرِي مَا بَقَائِي فِيكُمْ، فَاقْتَدُوا بِاللَّذَيْنِ مِنْ بَعْدِي. وَأَشَارَ إِلَى أَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ.

3663 - सय्यदना हुज़ैफा (رضي الله) बयान करते हैं: हम नबी (ﷺ) के पास बैठे हुए थे तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैं नहीं जानता कि कब तक तुम में रहूँ, सो तुम मेरे बाद दो आदमियों की इक्तिदा करना।" और आप(ﷺ) ने अबू बक्र और उमर (رضي الله) की तरफ़ इशारा किया।

सहीह: अहमद: 5/399. इब्ने हिब्बान:6902.

3664 - حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ الصَّبَّاحِ الْبَزَّارُ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، عَنِ الأَوْزَاعِيِّ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لأَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ: هَذَانِ سَيِّدَا كُهُولِ أَهْلِ الْجَنَّةِ مِنَ الأَوَّلِينَ وَالآخِرِينَ

3664 - सय्यदना अनस (رضي الله) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अबू बक्र और उमर (رضي الله) के बारे में फ़रमाया, "यह दोनों अंबिया और रसूलों के अलावा अगले पिछले तमाम लोगों में से जन्नती बूढ़ों के सरदार हैं। ऐ अली! तुम उन दोनों को मत बताना।"

إلاَّ النَّبِيِّينَ وَالمُرْسَلِينَ. لاَ تُخْبِرْهُمَا يَا عَلِيُّ.

सहीह: इब्ने अबी आसिम फिस सुन्ना:1420. तबरानी फ़िल औसत:6869. अस-सिलसिला अस-सहीहा:824.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस इस सनद से हसन ग़रीब है।

3665 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا الوَلِيدُ بْنُ مُحَمَّدٍ المُوقَرِيُّ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ الحُسَيْنِ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ، قَالَ: كُنْتُ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ إِذْ طَلَعَ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: هَذَانِ سَيِّدَا كُهُولِ أَهْلِ الجَنَّةِ مِنَ الأَوَّلِينَ وَالآخِرِينَ إِلاَّ النَّبِيِّينَ وَالمُرْسَلِينَ، يَا عَلِيُّ لاَ تُخْبِرْهُمَا

3665 - सय्यदना अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ था अचानक अबू बक्र और उमर नज़र आए तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "यह दोनों अंबिया और पैगम्बरों के अलावा अगले और पिछले लोगों में से जन्नत के बूढ़ों के सरदार होंगे ऐ अली! तुम उन्हें मत बताना।"

सहीह: इब्ने माजह:95. अस-सिलसिला अस-सहीहा:824.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस इस सनद से ग़रीब है। वलीद बिन मुहम्मद अल-मुकिर्री हदीस में ज़ईफ़ है और अली बिन हुसैन ने भी अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) से सिमा (सुनना) नहीं किया। यह हदीस एक और सनद से भी सय्यदना अली (رضي الله عنه) से मर्वी है।

नीज़ इस बारे में अनस और इब्ने अब्बास (رضي الله عنهما) से भी हदीस मर्वी है।

3666 - حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الدَّوْرَقِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، قَالَ: ذَكَرَهُ دَاوُدُ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنِ الحَارِثِ، عَنْ عَلِيٍّ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ سَيِّدَا كُهُولِ أَهْلِ الجَنَّةِ مِنَ الأَوَّلِينَ وَالآخِرِينَ مَا خَلاَ النَّبِيِّينَ وَالمُرْسَلِينَ، لاَ تُخْبِرْهُمَا يَا عَلِيُّ.

3666 - सय्यदना अली (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "अबू बक्र और उमर दोनों अंबिया और रसूलों के अलावा जन्नत के बूढ़ों के सरदार होंगे[1] ऐ अली! तुम उन्हें मत बताना।"

सहीह: पिछली हदीस देखिये।

तौज़ीह: (1) बहुत सी अहादीस में सराहत मिलती है कि जन्नत के लोग हम उम्र होंगे और हमेशा जवान रहेंगे तो इस हदीस का मफ़हूम यह है कि दुनिया में जिन लोगों ने बुढ़ापे की हालत में वफ़ात पाई अबू बक्र और उमर (رضي الله عنهما) उन लोगों के सरदार होंगे।

3667 - حَدَّثَنَا أَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُقْبَةُ بْنُ خَالِدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الجُرَيْرِيِّ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، قَالَ: قَالَ أَبُو بَكْرٍ: أَلَسْتُ أَحَقَّ النَّاسِ بِهَا؟ أَلَسْتُ أَوَّلَ مَنْ أَسْلَمَ؟ أَلَسْتُ صَاحِبَ كَذَا، أَلَسْتُ صَاحِبَ كَذَا؟.

3667 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (ﷺ) बयान करते हैं कि अबू बक्र (ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या मैं इस ख़िलाफ़त का सब से ज़्यादा हक़दार नहीं हूँ? क्या मैंने सब से पहले इस्लाम क़ुबूल नहीं किया? क्या मैंने यह काम नहीं किया? क्या मैंने यह काम नहीं किया?

सहीह:इब्ने हिब्बान:6863. बज़्ज़ार:35.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। बअ़ज़ ने इसे शोबा से बवास्ता जुरैरी, अबू नज़रा से इसी तरह रिवायत किया है कि अबू बक्र (ﷺ) ने फ़रमाया, "यह ज़्यादा सहीह है। हमें यह हदीस मुहम्मद बिन बश्शार ने, उन्हें अब्दुर्रहमान बिन महदी ने शोबा से बवास्ता जुरैरी, अबू नज़रा से बयान की है कि अबू बक्र (ﷺ) ने फ़रमाया आखिर तक। फिर इसी मफ़हूम की हदीस बयान की इसमें अबू सईद (ﷺ) का ज़िक्र नहीं है और यह ज़्यादा सहीह है।

3668 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا الحَكَمُ بْنُ عَطِيَّةَ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَخْرُجُ عَلَى أَصْحَابِهِ مِنَ المُهَاجِرِينَ وَالأَنْصَارِ وَهُمْ جُلُوسٌ وَفِيهِمْ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ فَلاَ يَرْفَعُ إِلَيْهِ أَحَدٌ مِنْهُمْ بَصَرَهُ إِلاَّ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ فَإِنَّهُمَا كَانَا يَنْظُرَانِ إِلَيْهِ وَيَنْظُرُ إِلَيْهِمَا وَيَتَبَسَّمَانِ إِلَيْهِ وَيَتَبَسَّمُ إِلَيْهِمَا.

3668 - सय्यदना अनस (ﷺ) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने मुहाजिरीन और अंसारी सहाबा की तरफ़ तशरीफ़ लाते वह (अपनी मजलिस में) बैठे होते थे, उन में अबू बक्र और उमर (ﷺ) भी होते तो अबू बक्र और उमर के अलावा उन में से कोई भी आदमी आपकी तरफ़ नज़र नहीं उठाता था, यह दोनों आप(ﷺ) की तरफ़ देखते थे या आप(ﷺ) की तरफ़ देख कर मुस्कुराते और आप(ﷺ) उन दोनों की तरफ़ देख कर मुस्कुराते।

ज़ईफ़: अहमद:3/150. अब्द बिन हुमैद:1298. तयालिसी:2064. हिदायतुर्रूवात:6007.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। हम इसे हकीम बिन अतिया के तरीक़ से ही जानते हैं और बअ़ज़ मोहद्दिसीन ने हकम बिन अतिया के बारे में कलाम किया है।

3669 - حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ بْنِ مُجَالِدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ

3669 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (ﷺ) से रिवायत है कि एक दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) घर

بْنِ أُمَيَّةَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَرَجَ ذَاتَ يَوْمٍ وَدَخَلَ الْمَسْجِدَ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ، أَحَدُهُمَا عَنْ يَمِينِهِ وَالآخَرُ عَنْ شِمَالِهِ وَهُوَ آخِذٌ بِأَيْدِيهِمَا، وَقَالَ: هَكَذَا نُبْعَثُ يَوْمَ القِيَامَةِ.

से निकले और मस्जिद में दाख़िल हुए, अबू बक्र व उमर (رضي الله عنه) भी (दाख़िल हुए) उन में एक आप(ﷺ) की दायें और दूसरा बाएं जानिब था और आप(ﷺ) उन दोनों के हाथ पकड़े हुए थे आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "क़यामत के दिन हम इसी तरह उठाए जायेंगे।"

ज़ईफ़: इब्ने माजह्:99. हिदायतुर्रूवात:6008. हाकिम:3/68.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है, क्योंकि सईद बिन मस्लमा मोहद्दिसीन के नज़दीक कवी नहीं है। नीज़ यह हदीस एक और सनद से भी ऐसे ही बवास्ता नाफ़े, इब्ने उमर (رضي الله عنه) से मर्वी है।

3670 - حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ مُوسَى الْقَطَّانُ الْبَغْدَادِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ مَنْصُورِ بْنِ أَبِي الأَسْوَدِ قَالَ: حَدَّثَنِي كَثِيرٌ أَبُو إِسْمَاعِيلَ، عَنْ جُمَيْعِ بْنِ عُمَيْرٍ التَّيْمِيِّ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ لأَبِي بَكْرٍ: أَنْتَ صَاحِبِي عَلَى الحَوْضِ وَصَاحِبِي فِي الغَارِ.

3670 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अबू बक्र (رضي الله عنه) से फ़रमाया, "तुम हौज़े कौसर पर मेरे साथ होगे और तुम गार में भी मेरे साथ थे।"

ज़ईफ़: इब्ने मर्दवैह : 4/199. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:2956.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है।

3671 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي فُدَيْكٍ، عَنْ عَبْدِ العَزِيزِ بْنِ الْمُطَّلِبِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ عَبْدِ اللهِ بْنِ حَنْطَبٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأَى أَبَا بَكْرٍ وَعُمَرَ فَقَالَ: هَذَانِ السَّمْعُ وَالبَصَرُ.

3671 - अब्दुल्लाह बिन हन्तब बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) ने अबू बक्र और उमर (رضي الله عنه) को देख कर फ़रमाया, "यह दोनों मेरी समाअत और निगाह हैं।"

सहीह: हाकिम: 3/69. अस-सिलसिला अस-सहीहा:814.

वज़ाहत: इस बारे में अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है नीज़ यह हदीस मुर्सल है, क्योंकि अब्दुल्लाह बिन हन्तब ने नबी (ﷺ) को नहीं देखा।

3672 - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مُوسَى الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مُرُوا أَبَا بَكْرٍ فَلْيُصَلِّ بِالنَّاسِ، فَقَالَتْ عَائِشَةُ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ أَبَا بَكْرٍ إِذَا قَامَ مَقَامَكَ لَمْ يُسْمِعِ النَّاسَ مِنَ الْبُكَاءِ فَأْمُرْ عُمَرَ فَلْيُصَلِّ بِالنَّاسِ، قَالَتْ: فَقَالَ: مُرُوا أَبَا بَكْرٍ فَلْيُصَلِّ بِالنَّاسِ قَالَتْ عَائِشَةُ: فَقُلْتُ لِحَفْصَةَ: قُولِي لَهُ إِنَّ أَبَا بَكْرٍ إِذَا قَامَ مَقَامَكَ لَمْ يُسْمِعِ النَّاسَ مِنَ الْبُكَاءِ فَأْمُرْ عُمَرَ فَلْيُصَلِّ بِالنَّاسِ، فَفَعَلَتْ حَفْصَةُ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّكُنَّ لَأَنْتُنَّ صَوَاحِبُ يُوسُفَ، مُرُوا أَبَا بَكْرٍ فَلْيُصَلِّ بِالنَّاسِ، فَقَالَتْ حَفْصَةُ لِعَائِشَةَ: مَا كُنْتُ لأُصِيبَ مِنْكِ خَيْرًا.

3672 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "अबू बक्र को हुक्म दो कि लोगों को नमाज़ पढ़ाएं।" तो आयशा ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! अबू बक्र जब आप(ﷺ) की जगह खड़े होंगे तो रोने की वजह से लोगों को सुना नहीं सकेंगे, चुनांचे आप(ﷺ) उमर को हुक्म दे दें कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ायें" आयशा कहती हैं: मैंने हफ्सा से कहा: तुम आप(ﷺ) से कहो कि अबू बक्र जब आप की जगह खड़े होंगे तो रोने की वजह से लोगों को सुना नहीं सकेंगे, आप उमर को हुक्म दीजिए कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ा दें, हफ्सा ने ऐसे ही किया, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम वही औरतें हो जिन्होंने यूसुफ़ (عليه السلام) को परेशान किया था। अबू बक्र को हुक्म दो कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ाएं।" तो हफ्सा आयशा से कहने लगीं: मुझे तुम से कभी भलाई नसीब नहीं हुई।

बुख़ारी:679. मुस्लिम:418. इब्ने माजह:1233. निसाई:833. अहमद:6/96.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है, नीज़ इस बारे में अब्दुल्लाह बिन मसऊद, अबू मूसा, इब्ने अब्बास, सालिम बिन उबैद और अब्दुल्लाह बिन ज़मआ(رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है।

3673 - حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ بَشِيرٍ، عَنْ عِيسَى بْنِ مَيْمُونٍ الأَنْصَارِيِّ، عَنِ القَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: لَا يَنْبَغِي لِقَوْمٍ فِيهِمْ أَبُو بَكْرٍ أَنْ يَؤُمَّهُمْ غَيْرُهُ.

3673 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जिन लोगों में अबू बक्र मौजूद हों तो उन के लिए लायक़ नहीं है कि कोई दूसरा उनकी इमामत करवाए।"

ज़ईफ़ जिद्दा: इब्ने जौज़ी फिलइलल अल-मुतनाहिया:300. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:4820.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

3674 - حَدَّثَنَا الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ أَنْفَقَ زَوْجَيْنِ فِي سَبِيلِ اللهِ نُودِيَ فِي الجَنَّةِ يَا عَبْدَ اللهِ هَذَا خَيْرٌ، فَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الصَّلاَةِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الصَّلاَةِ، وَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الجِهَادِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الجِهَادِ، وَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الصَّدَقَةِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الصَّدَقَةِ، وَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الصِّيَامِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الرَّيَّانِ، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي مَا عَلَى مَنْ دُعِيَ مِنْ هَذِهِ الأَبْوَابِ مِنْ ضَرُورَةٍ فَهَلْ يُدْعَى أَحَدٌ مِنْ تِلْكَ الأَبْوَابِ كُلِّهَا؟ قَالَ: نَعَمْ، وَأَرْجُو أَنْ تَكُونَ مِنْهُمْ.

3674 - सय्यदना अबू हुरैरा (﵁) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो शख़्स अल्लाह के रास्ते में किसी चीज़ का जोड़ा ख़र्च करे तो जन्नत में उसे आवाज दी जाएगी: ऐ अल्लाह के बन्दे! यह है भलाई, फिर जो शख़्स नमाज़ी होगा उसे बाबुस्सलात से बुलाया जाएगा, जो शख़्स मुजाहिद होगा उसे बाबुल जिहाद से बुलाया जाएगा, जो सदक़ा करने वाला होगा उसे बाबुस्सदक़ा से बुलाया जाएगा और जो रोज़ादार होगा उसे बाबुर्रय्यान से बुलाया जाएगा।" तो अबू बक्र ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! आप(ﷺ) पर मेरे मां बाप फ़िदा हों किसी आदमी का इन तमाम दरवाजों से बुलाया जाना ज़रूरी तो नहीं[1] तो क्या किसी को तमाम दरवाजों से बुलाया जा सकता है? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "हाँ! और मुझे उम्मीद है कि तुम उन लोगों में से होगे।"

बुख़ारी:1897. मुस्लिम:1028. निसाई:2439.

तौज़ीह: (1) यानी जन्नत में तो दाख़िल एक दरवाज़े से ही होगा।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (﵀) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3675 - حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللهِ البَزَّازُ البَغْدَادِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الفَضْلُ بْنُ دُكَيْنٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: سَمِعْتُ عُمَرَ بْنَ الخَطَّابِ، يَقُولُ: أَمَرَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ نَتَصَدَّقَ فَوَافَقَ ذَلِكَ عِنْدِي

3675 - सय्यदना उमर बिन खत्ताब (﵁) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें सदक़ा करने का हुक्म दिया तो उस वक़्त मेरे पास माल था, मैंने कहा: अगर आज मैं अबू बक्र से सबक़त ले गया तो मैं उनसे आगे बढ़ जाउंगा, कहते हैं: फिर मैं अपना आधा माल लेकर आया तो अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़रमाया, "अपने घर वालों के लिए क्या रखा है?" मैंने कहा:

مالاً، فَقُلْتُ: اليَوْمَ أَسْبِقُ أَبَا بَكْرٍ إِنْ سَبَقْتُهُ يَوْمًا، قَالَ: فَجِئْتُ بِنِصْفِ مَالِي، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا أَبْقَيْتَ لأَهْلِكَ؟ قُلْتُ: مِثْلَهُ، وَأَتَى أَبُو بَكْرٍ بِكُلِّ مَا عِنْدَهُ، فَقَالَ: يَا أَبَا بَكْرٍ مَا أَبْقَيْتَ لأَهْلِكَ؟ قَالَ: أَبْقَيْتُ لَهُمُ اللَّهَ وَرَسُولَهُ، قُلْتُ: لاَ أَسْبِقُهُ إِلَى شَيْءٍ أَبَدًا.

इतना ही और अबू बक्र हर वह चीज़ ले आए जो उनके पास थी, तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "अबू बक्र! तुम ने अपने घर वालों के लिए क्या रखा है?" उन्होंने अर्ज़ किया, मैंने उन के लिए अल्लाह और उसके रसूल को रखा है। मैंने कहा: अल्लाह की क़सम मैं अबू बक्र से कभी आगे नहीं बढ़ सकता।

हसन: अबू दाऊद: 1678. हाकिम: 1/414. दारमी: 1667. अब्द बिन हुमैद: 14.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

17 – باب قوله صلي الله عليه وسلم لامرأة: فان لم تجد فاتي أبا بكر.

17 - आप (ﷺ) का एक औरत से यह फ़रमाना अगर मैं न हुआ तो अबू बक्र के पास आना।

3676 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: أَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ، أَنَّ أَبَاهُ جُبَيْرَ بْنَ مُطْعِمٍ أَخْبَرَهُ، أَنَّ امْرَأَةً أَتَتْ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَلَّمَتْهُ فِي شَيْءٍ فَأَمَرَهَا بِأَمْرٍ، فَقَالَتْ: أَرَأَيْتَ يَا رَسُولَ اللهِ إِنْ لَمْ أَجِدْكَ؟ قَالَ: إِنْ لَمْ تَجِدِينِي فَائْتِي أَبَا بَكْرٍ.

3676 - सय्यदना जुबैर बिन मुत्इम (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि एक औरत ने रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हो कर आप से किसी के सिलसिले में कोई बात की, तो आप(ﷺ) ने उसे कोई हुक्म दिया, वह कहने लगी: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! आप यह बताइए कि अगर आप(ﷺ) मुझे न मिल सके तो?[1] आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "अगर तुम मुझे न पा सको तो अबू बक्र के पास आ जाना।"

बुख़ारी: 3569. मुस्लिम: 2386. अहमद: 4/82.

तौज़ीह: (1) उस ख़ातून का इशारा इस तरफ़ था कि हो सकता है कि मैं आऊँ तो आप दुनिया में न हों।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस सहीह ग़रीब है।

3677 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "एक आदमी गाय पर सवार जा रहा था कि उस गाय ने कहा: मुझे इस काम के लिए पैदा नहीं किया गया है, मुझे तो खेतीबाड़ी के लिए पैदा किया गया है।" फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैं, अबू बक्र और उमर इस पर ईमान लाये।"

अबू सलमा कहते हैं: हालांकि उस दिन वह दोनों लोगों में मौजूद नहीं थे और अल्लाह ही बेहतर जानता है।

3677 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: بَيْنَمَا رَجُلٌ رَاكِبٌ بَقَرَةً، إِذْ قَالَتْ: لَمْ أُخْلَقْ لِهَذَا، إِنَّمَا خُلِقْتُ لِلْحَرْثِ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: آمَنْتُ بِذَلِكَ أَنَا وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ قَالَ أَبُو سَلَمَةَ: وَمَا هُمَا فِي الْقَوْمِ يَوْمَئِذٍ.

बुख़ारी:2324. मुस्लिम:2388. अहमद:2/ 245.

वज़ाहत: (अबू ईसा कहते हैं) हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने बवास्ता मुहम्मद बिन जाफ़र, शोबा से इसी सनद के साथ ऐसी ही हदीस बयान की है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3678 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि नबी (ﷺ) ने अबू बक्र के दरवाज़े के अलावा (मस्जिद की तरफ़ खुलने वाले) तमाम दरवाजों को बंद करने का हुक्म दिया था।

सहीह: अबू याला:4678. इब्ने हिब्बान:6857. तबरानी फ़िल औसत:1497.

3678 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُخْتَارِ، عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ رَاشِدٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ: أَمَرَ بِسَدِّ الأَبْوَابِ إِلاَّ بَابَ أَبِي بَكْرٍ.

वज़ाहत: इस बारे में अबू सईद से भी हदीस मर्वी है। इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस ग़रीब है।

3679 - आयशा (رضي الله عنها) से रिवायत है कि अबू बक्र (رضي الله عنه) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम अल्लाह की तरफ़ से जहन्नम की आग से आज़ाद किए गए हो।" चुनांचे उस दिन से उनका

3679 - حَدَّثَنَا الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ يَحْيَى بْنِ طَلْحَةَ، عَنْ عَمِّهِ إِسْحَاقَ بْنِ طَلْحَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ أَبَا بَكْرٍ، دَخَلَ عَلَى رَسُولِ اللهِ

صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: أَنْتَ عَتِيقُ اللهِ مِنَ النَّارِ فَيَوْمَئِذٍ سُمِّيَ عَتِيقًا.

नाम अतीक़ पड़ गया।

सहीह: हाकिम: 2/415. तबरानी फ़िल कबीर:9. अस-सिलसिला अस-सहीहा:1574. हिदायतुर्रूवात:5977.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। और बअ्ज़ ने इसे मअन से रिवायत करते वक़्त अन मूसा बिन तल्हा अन आयशा कहा है।

3680 - حَدَّثَنَا أَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا تَلِيدُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ أَبِي الجَحَّافِ، عَنْ عَطِيَّةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَا مِنْ نَبِيٍّ إِلاَّ لَهُ وَزِيرَانِ مِنْ أَهْلِ السَّمَاءِ وَوَزِيرَانِ مِنْ أَهْلِ الأَرْضِ، فَأَمَّا وَزِيرَايَ مِنْ أَهْلِ السَّمَاءِ فَجِبْرِيلُ وَمِيكَائِيلُ، وَأَمَّا وَزِيرَايَ مِنْ أَهْلِ الأَرْضِ فَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ.

3680 - अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "हर नबी के दो वजीर आसमान वालों और दो वजीर ज़मीन वालों से रहे हैं, आसमान वालों से मेरे वजीर जिब्राईल और मीकाईल हैं, और ज़मीन वालों से मेरे दो वजीर अबू बक्र और उमर हैं।"

ज़ईफ़: हाकिम:2/264. हिदायतुर्रूवात:6010.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है, और अबू जह्हाफ का नाम दाऊद बिन अबी औफ़ है।

सुफ़ियान सौरी से मर्वी है वह कहते हैं: हमें अबू जह्हाफ़ ने बयान किया और वह पसंदीदा आदमी थे।

नीज़ तलीद बिन सुलैमान की कुनियत अबू इदरीस है यह शीई है।

18 بَابٌ فِي مَنَاقِبِ أَبِي حَفْصٍ عُمَرَ بْنِ الخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

18 – अबू हफ़्स उमर बिन ख़त्ताब के फ़ज़ाइल व मनाक़िब

3681 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ، قَالاَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ العَقَدِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا خَارِجَةُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيُّ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: اللَّهُمَّ أَعِزَّ الإِسْلاَمَ بِأَحَبِّ

3681 - .सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दुआ फ़रमाई: " ऐ अल्लाह इन दो आदमियों: अबू जहल या उमर बिन खत्ताब में जो तुझे ज़्यादा पसंद है उसके साथ इस्लाम को मज़बूत कर दे।" कहते हैं उन दोनों में से उसे (अल्लाह को) उमर ज़्यादा पसंद थे।

هَذَيْنِ الرَّجُلَيْنِ إِلَيْكَ بِأَبِي جَهْلٍ أَوْ بِعُمَرَ بْنِ الخَطَّابِ قَالَ: وَكَانَ أَحَبَّهُمَا إِلَيْهِ عُمَرُ.

सहीह: अहमद:2/95. हाकिम:3/83. इब्ने हिब्बान:6881. हिदायतुर्रूवात:5990.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इब्ने उमर (رضي الله عنه) के तरीक़ से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3682 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ العَقَدِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا خَارِجَةُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ اللَّهَ جَعَلَ الحَقَّ عَلَى لِسَانِ عُمَرَ وَقَلْبِهِ. وقَالَ ابْنُ عُمَرَ: مَا نَزَلَ بِالنَّاسِ أَمْرٌ قَطُّ فَقَالُوا فِيهِ وَقَالَ فِيهِ عُمَرُ أَوْ قَالَ ابْنُ الخَطَّابِ فِيهِ، شَكَّ خَارِجَةُ، إِلاَّ نَزَلَ فِيهِ القُرْآنُ عَلَى نَحْوِ مَا قَالَ عُمَرُ.

3682 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने उमर की ज़बान और उसके दिल पर हक़ रख दिया है।" इब्ने उमर (رضي الله عنه) कहते हैं: लोगों पर कभी भी कोई भी मामला पेश आया फिर उन्होंने भी उस बारे में कुछ कहा और उमर बिन ख़त्ताब ने भी कोई बात कही, तो कुरआन उमर (رضي الله عنه) की बात के मुवाफ़िक़ नाज़िल हुआ।

सहीह: अहमद: 2/53. इब्ने हिब्बान:6895. तबरानी फ़िल औसत:291. हिदायतुर्रूवात:5988.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में फ़ज़ल बिन अब्बास, अबू ज़र और अबू हुरैरा (رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है नीज़ इस सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। और खारिजा बिन अब्दुल्लाह अंसारी, सुलैमान बिन ज़ैद बिन साबित के पोते हैं और सिक़ह रावी हैं।

3683 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ بُكَيْرٍ، عَنِ النَّضْرِ أَبِي عُمَرَ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: اللَّهُمَّ أَعِزَّ الإِسْلاَمَ بِأَبِي جَهْلِ بْنِ هِشَامٍ أَوْ بِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ قَالَ: فَأَصْبَحَ فَغَدَا عُمَرُ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَأَسْلَمَ.

3683 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दुआ किया, "ऐ अल्लाह! अबू जहल बिन हिशाम या उमर बिन ख़त्ताब के साथ इस्लाम को मज़बूत फ़रमा।" फिर सुबह हुई तो उमर (رضي الله عنه) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हो कर इस्लाम कुबूल कर लिया।

ज़ईफ़ जिद्दा: अब्दुल्लाह बिन अहमद फी जवाइदिही अलल फ़ज़ाइल:311. हिदायतुर्रूवात:5990.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस ग़रीब है, बअ़ज़ मोहद्दिसीन ने नज़र अबी उमर के हाफ़िज़े की वजह से कलाम की है, यह मुन्कर रिवायात नक़ल किया करता था।

3684 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ دَاوُدَ الْوَاسِطِيُّ أَبُو مُحَمَّدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ ابْنُ أَخِي مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: قَالَ عُمَرُ لأَبِي بَكْرٍ: يَا خَيْرَ النَّاسِ بَعْدَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: أَمَا إِنَّكَ إِنْ قُلْتَ ذَاكَ فَلَقَدْ سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: مَا طَلَعَتِ الشَّمْسُ عَلَى رَجُلٍ خَيْرٍ مِنْ عُمَرَ.

3684 - सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (ﷺ) से रिवायत है कि उमर (ﷺ) ने अबू बक्र (ﷺ) से कहा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ) के बाद सबसे बेहतरीन इंसान! तो उन्होंने फ़रमाया, "तुम यह बात कहते हो जब कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "सूरज किसी ऐसे आदमी पर तुलूअ नहीं हुआ जो उमर (ﷺ) से बेहतर हो।"

मौज़ू: हाकिम:3/90. उक़ैली फी ज़ोफा:3/4. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफ़ा:1357.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है, हम इसे सिर्फ इसी सनद से जानते हैं और इस सनद की कुछ हैसियत नहीं है। नीज़ इस बारे में अबू दर्दा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

3685 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ دَاوُدَ، عَنْ حَمَّادِ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ، قَالَ: مَا أَظُنُّ رَجُلاً يَنْتَقِصُ أَبَا بَكْرٍ وَعُمَرَ يُحِبُّ النَّبِيَّ ﷺ.

3685 - मुहम्मद बिन सीरीन (ﷺ) फ़रमाते हैं: मेरा नहीं ख़याल कि जो शख़्स अबू बक्र और उमर (ﷺ) की तौहीन करता हो उसे नबी (ﷺ) से मोहब्बत हो।

सहीह इस्नाद मकतूअ

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब हसन है।

3686 - حَدَّثَنَا سَلَمَةُ بْنُ شَبِيبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْمُقْرِئُ، عَنْ حَيْوَةَ بْنِ شُرَيْحٍ، عَنْ بَكْرِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ مِشْرَحِ بْنِ هَاعَانَ، عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: لَوْ كَانَ نَبِيٌّ بَعْدِي لَكَانَ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ.

3686 - सय्यदना उक़्बा बिन आमिर (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अगर मेरे बाद कोई नबी होता तो वह उमर बिन ख़त्ताब होता।"

हसन: अहमद: 4/154. हाकिम:3/58. अस-सिलसिला अस-सहीहा:327.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे मिश्रह बिन हाआन की सनद से ही जानते हैं।

3687 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैंने ख्वाब में देखा कि मेरे पास दूध का एक प्याला लाया गया, मैंने उस से पिया, फिर अपने से बचा हुआ उमर बिन खत्ताब को दे दिया।" लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! तो आप(ﷺ) ने उसकी तावील (ताबीर) क्या की है? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "इल्म।"

3687 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ حَمْزَةَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: رَأَيْتُ كَأَنِّي أُتِيتُ بِقَدَحِ لَبَنٍ فَشَرِبْتُ مِنْهُ فَأَعْطَيْتُ فَضْلِي عُمَرَ بْنَ الخَطَّابِ، قَالُوا: فَمَا أَوَّلْتَهُ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ العِلْمَ.

सहीह: तख़रीज के लिए देखिए हदीस नम्बर:2284.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3688 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैं जन्नत में दाख़िल हुआ तो मैंने सोने का एक महल देखा मैंने पूछा यह महल किस का है? लोगों ने कहा: कुरैश में से एक नौजवान का मैंने समझा शायद वह मैं ही हूँ। फिर मैंने पूछा वह नौजवान कौन है? तो फ़रिश्तों ने जवाब दिया: उमर बिन खत्ताब।"

3688 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ حُمَيْدٍ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: دَخَلْتُ الجَنَّةَ فَإِذَا أَنَا بِقَصْرٍ مِنْ ذَهَبٍ فَقُلْتُ: لِمَنْ هَذَا القَصْرُ؟ قَالُوا: لِشَابٍّ مِنْ قُرَيْشٍ، فَظَنَنْتُ أَنِّي أَنَا هُوَ، فَقُلْتُ: وَمَنْ هُوَ؟ فَقَالُوا: عُمَرُ بْنُ الخَطَّابِ.

सहीह: अहमद: 3/107. अबू याला:3860. अस-सिलसिला अस-सहीहा:1423.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3689 - सय्यदना बुरैदा (رضي الله عنه) बयान करते हैं रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सुबह की, तो बिलाल को बुला कर फ़रमाया, "ऐ बिलाल तुम जन्नत में मुझ से आगे कैसे चले गए? मैं जब भी जन्नत में दाख़िल हुआ तो मैंने अपने आगे तुम्हारे जूतों की आहट सुनी है। गुज़िश्ता रात भी जब मैं (ख्वाब

3689 - حَدَّثَنَا الحُسَيْنُ بْنُ حُرَيْثٍ أَبُو عَمَّارٍ الْمَرْوَزِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الحُسَيْنِ بْنِ وَاقِدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ بُرَيْدَةَ، قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي بُرَيْدَةَ، قَالَ: أَصْبَحَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَدَعَا بِلَالًا

फ़क़ाल: या बिलाल बिम सबक़तनी इलल जन्नह...

فَقَالَ: يَا بِلَالُ بِمَ سَبَقْتَنِي إِلَى الْجَنَّةِ؟ مَا دَخَلْتُ الْجَنَّةَ قَطُّ إِلَّا سَمِعْتُ خَشْخَشَتَكَ أَمَامِي، دَخَلْتُ الْبَارِحَةَ الْجَنَّةَ فَسَمِعْتُ خَشْخَشَتَكَ أَمَامِي، فَأَتَيْتُ عَلَى قَصْرٍ مُرَبَّعٍ مُشْرِفٍ مِنْ ذَهَبٍ، فَقُلْتُ: لِمَنْ هَذَا الْقَصْرُ؟ فَقَالُوا: لِرَجُلٍ مِنَ الْعَرَبِ، فَقُلْتُ: أَنَا عَرَبِيٌّ، لِمَنْ هَذَا الْقَصْرُ؟ قَالُوا لِرَجُلٍ مِنْ قُرَيْشٍ، فَقُلْتُ: أَنَا قُرَشِيٌّ، لِمَنْ هَذَا الْقَصْرُ؟ قَالُوا: لِرَجُلٍ مِنْ أُمَّةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقُلْتُ: أَنَا مُحَمَّدٌ لِمَنْ هَذَا الْقَصْرُ؟ قَالُوا: لِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ. فَقَالَ بِلَالٌ: يَا رَسُولَ اللهِ مَا أَذَّنْتُ قَطُّ إِلَّا صَلَّيْتُ رَكْعَتَيْنِ، وَمَا أَصَابَنِي حَدَثٌ قَطُّ إِلَّا تَوَضَّأْتُ عِنْدَهَا وَرَأَيْتُ أَنَّ لِلَّهِ عَلَيَّ رَكْعَتَيْنِ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: بِهِمَا.

में) जन्नत में दाख़िल हुआ तो अपने आगे तुम्हारे जूतों की आवाज़ सुनी, फिर मैंने सोने से बने हुए एक चौकोर मुरब्बा महल के पास गया तो मैंने कहा: यह महल किसका है? उन्होंने बताया कि यह अरब के एक आदमी का है मैंने कहा: मैं भी. अरब से ही हूँ यह महल किसका है? उन्होंने कहा: कुरैश के एक आदमी का, मैंने कहा: मैं भी कुरैशी हूँ यह महल किसका है? उन्होंने कहा: मुहम्मद (ﷺ) की उम्मत के एक आदमी का, मैंने कहा: मैं मुहम्मद हूँ यह महल किसका है? उन्होंने कहा: उमर बिन ख़त्ताब का।" फिर बिलाल ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल मैं जब भी अज़ान देता हूँ तो दो रकअतें पढ़ लेता हूँ। जब भी बे वुज़ू होता हूँ तो वुज़ू कर लेता हूँ और मैं ज़रूरी समझता हूँ कि अल्लाह के लिए मेरे जिम्मे दो रकअतें हैं, तो अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़रमाया, "उन दोनों रकअतों की वजह से ही है।"

सहीह: अहमद: 5/354. हाकिम:1/313. इब्ने हिब्बान:7086. सहीहुत्तर्गीब:201.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में जाबिर, मुआज़, अनस और अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैंने जन्नत में सोने का एक महल देखा, तो पूछा यह किसका है? उन्होंने बताया: उमर बिन ख़त्ताब का।"

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है और "मैं गुज़िश्ता रात जन्नत में दाख़िल हुआ" इस से मुराद यह है कि मैंने ख्वाब में देखा कि मैं जन्नत में दाख़िल हुआ। बअ़ज़ अहादीस में भी इसी तरह ही मर्वी है। नीज़ इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं: कि अंबिया के ख्वाब वहि होते हैं।

3690 - حَدَّثَنَا الْحُسَيْنُ بْنُ حُرَيْثٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْحُسَيْنِ بْنِ وَاقِدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي

3690 - सय्यदना बुरैदा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने किसी ग़ज़वा में निकले फिर जब आप (ﷺ) वापस आए तो एक

قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ بُرَيْدَةَ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي بُرَيْدَةَ، يَقُولُ: خَرَجَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي بَعْضِ مَغَازِيهِ، فَلَمَّا انْصَرَفَ جَاءَتْ جَارِيَةٌ سَوْدَاءُ، فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنِّي كُنْتُ نَذَرْتُ إِنْ رَدَّكَ اللَّهُ سَالِمًا أَنْ أَضْرِبَ بَيْنَ يَدَيْكَ بِالدُّفِّ وَأَتَغَنَّى، فَقَالَ لَهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ: إِنْ كُنْتِ نَذَرْتِ فَاضْرِبِي وَإِلاَّ فَلاَ. فَجَعَلَتْ تَضْرِبُ، فَدَخَلَ أَبُو بَكْرٍ وَهِيَ تَضْرِبُ، ثُمَّ دَخَلَ عَلِيٌّ وَهِيَ تَضْرِبُ، ثُمَّ دَخَلَ عُثْمَانُ وَهِيَ تَضْرِبُ، ثُمَّ دَخَلَ عُمَرُ فَأَلْقَتِ الدُّفَّ تَحْتَ اسْتِهَا، ثُمَّ قَعَدَتْ عَلَيْهِ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: إِنَّ الشَّيْطَانَ لَيَخَافُ مِنْكَ يَا عُمَرُ، إِنِّي كُنْتُ جَالِسًا وَهِيَ تَضْرِبُ فَدَخَلَ أَبُو بَكْرٍ وَهِيَ تَضْرِبُ، ثُمَّ دَخَلَ عَلِيٌّ وَهِيَ تَضْرِبُ، ثُمَّ دَخَلَ عُثْمَانُ وَهِيَ تَضْرِبُ، فَلَمَّا دَخَلْتَ أَنْتَ يَا عُمَرُ أَلْقَتِ الدُّفَّ.

सियाह फाम लौंडी आकर कहने लगी: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मैंने नज़र मानी थी कि अगर अल्लाह तआला आप(ﷺ) को सहीह सलामत ले आया तो मैं आप(ﷺ) के सामने दुफ़ बजाउंगी और गाऊँगी, तो अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़रमाया, "अगर तुम ने नज़र मानी थी तो बजा लो वर्ना नहीं।" चुनांचे वह दुफ़ बजाने लगी तो अबू बक्र दाख़िल हुए वह बजाती रही, फिर अली दाख़िल हुए वह बजाती रही, फिर उस्मान दाख़िल हुए वह बजाती रही, फिर उमर दाख़िल हुए उस ने दुफ़ को अपनी सुरीन के नीचे रखा और उसके ऊपर बैठ गई, तो अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ उमर! यक़ीनन तुम से शैतान भी डरता है। मैं बैठा हुआ था और यह दुफ़ बजा रही थी, अबू बक्र आए तो बजा रही थी, फिर अली आए तो बजा रही थी, फिर उस्मान आए तो बजा रही थी तो ऐ उमर! जब तुम दाख़िल हुए तो उस ने दुफ़ रख दी।"

सहीह: अहमद: 5/353. इब्ने हिब्बान:6892. अस-सिलसिला अस-सहीहा:2261.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रहिमहुल्लाह) फ़रमाते हैं: बुरैदा की हदीस इस सनद से हसन सहीह ग़रीब है, नीज़ इस बारे में उमर, साद बिन अबी वक़्क़ास और आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से भी हदीस मर्वी है।

3691 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ الصَّبَاحِ البَزَّارُ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ حُبَابٍ، عَنْ خَارِجَةَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ سُلَيْمَانَ بْنِ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ رُومَانَ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَالِسًا

3691 - सय्यदा आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) बैठे हुए थे कि हम ने शोर और बच्चों की आवाज़ सुनी तो रसूल (ﷺ) ने खड़े हो कर देखा एक हब्शी औरत नाच रही थी और बच्चे उस के इर्द गिर्द जमा थे। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "आयशा! आओ देखो" मैं आयी तो मैंने अपनी ठोड़ी रसूलुल्लाह (ﷺ) के कंधे

فَسَمِعْنَا لَغَطًا وَصَوْتَ صِبْيَانٍ، فَقَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَإِذَا حَبَشِيَّةٌ تَزْفِنُ وَالصِّبْيَانُ حَوْلَهَا، فَقَالَ: يَا عَائِشَةُ تَعَالَيْ فَانْظُرِي. فَجِئْتُ فَوَضَعْتُ لَحْيَيَّ عَلَى مَنْكِبِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَجَعَلْتُ أَنْظُرُ إِلَيْهَا مَا بَيْنَ الْمَنْكِبِ إِلَى رَأْسِهِ، فَقَالَ لِي: أَمَا شَبِعْتِ، أَمَا شَبِعْتِ. قَالَتْ: فَجَعَلْتُ أَقُولُ لاَ لأَنْظُرَ مَنْزِلَتِي عِنْدَهُ إِذْ طَلَعَ عُمَرُ، قَالَتْ: فَارْفَضَّ النَّاسُ عَنْهَا: قَالَتْ: فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: إِنِّي لأَنْظُرُ إِلَى شَيَاطِينِ الإِنْسِ وَالجِنِّ قَدْ فَرُّوا مِنْ عُمَرَ قَالَتْ: فَرَجَعْتُ.

पर रख दी, फिर आप के कंधे और सर के दर्मियान से उस औरत को देखने लगी, फिर आप ने मुझ से फ़रमाया, "क्या अभी तक दिल नहीं भरा? क्या अभी तक दिल नहीं भरा?" तो मैं कहती थी: नहीं, मैं यह देखना चाहती थी कि आप(ﷺ) के नज़दीक मेरा क्या मक़ाम है कि अचानक इतने में उमर आ गए, तो लोग उस औरत के पास से भाग गए, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैंने इंसानों और जिन्नों के शयातीन को देखा वह उमर (के डर) से भाग गए।" आयशा कहती हैं फिर मैं भी आ गई।

सहीह: मुसन्नफ़ फी इललिही अल-कबीर: 693. हिदायतुर्रूवात : 5994.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3692 - حَدَّثَنَا سَلَمَةُ بْنُ شَبِيبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ نَافِعٍ الصَّائِغُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ عُمَرَ العُمَرِيُّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَنَا أَوَّلُ مَنْ تَنْشَقُّ عَنْهُ الأَرْضُ ثُمَّ أَبُو بَكْرٍ ثُمَّ عُمَرُ، ثُمَّ آتِي أَهْلَ البَقِيعِ فَيُحْشَرُونَ مَعِي، ثُمَّ أَنْتَظِرُ أَهْلَ مَكَّةَ حَتَّى أُحْشَرَ بَيْنَ الحَرَمَيْنِ.

3692 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैं वह पहला शख़्स हूँ जिससे ज़मीन फटेगी, फिर अबू बक्र, फिर उमर, फिर मैं बक़ी वालों के पास आउंगा उन्हें मेरे साथ जमा किया जाएगा, फिर मैं मक्का वालों का इन्तिज़ार करूंगा यहाँ तक कि मेरा हश्र हरमैन (मक्का और मदीना) के दर्मियान होगा।"

ज़ईफ़: इब्ने हिब्बान:6899. इब्ने जौज़ी:1528. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:2949.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है और आसिम बिन उमर उमरी मेरे और मोहद्दिसीन के नज़दीक हाफ़िज़ और सिक़ह् नहीं हैं।

3693 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ عَجْلاَنَ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِي

3693 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "उम्मतों में

سَلَمَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: قَدْ كَانَ يَكُونُ فِي الأُمَمِ مُحَدَّثُونَ، فَإِنْ يَكُ فِي أُمَّتِي أَحَدٌ فَعُمَرُ بْنُ الخَطَّابِ.

मुहद्दस [1] हुआ करते थे अगर मेरी उम्मत में कोई मुहद्दस है तो वह उमर बिन ख़त्ताब है।"

मुस्लिम:2398. अहमद:6/55. हाकिम:3/86.

तौज़ीह: (1) محدث: : दाल के ऊपर ज़बर है इस्मे मफ़ऊल, मुहद्दस के बारे में मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं लेकिन सब से उम्दा और बेहतरीन तफ़्सीर यह है कि मुहद्दस वह शख़्स है जिसकी ज़बान पर हक़ जारी हो और उसकी राय दुरूस्त हो।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और मुझे इब्ने उयय्ना के किसी शागिर्द ने बताया कि सुफ़ियान बिन उयय्ना फ़रमाते हैं: मुहद्दस से मुराद वह शख़्स है जिसे कामिल फ़हम अता किया गया हो।

3694 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ القُدُّوسِ، قَالَ: حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ عَبِيدَةَ السَّلْمَانِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: يَطَّلِعُ عَلَيْكُمْ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الجَنَّةِ فَاطَّلَعَ أَبُو بَكْرٍ، ثُمَّ قَالَ: يَطَّلِعُ عَلَيْكُمْ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الجَنَّةِ فَاطَّلَعَ عُمَرُ.

3694 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम्हारे पास जन्नती लोगों में से एक आदमी आ रहा है।" तो अबू बक्र (رضي الله عنه) आए, फिर आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम्हारे पास एक (और) जन्नती आदमी आ रहा है।" तो उमर (رضي الله عنه) आए।

ज़ईफ़: हाकिम: 3/73. तबरानी:10342. हिदायतुर्रूवात: 6012.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) के तरीक़ से यह हदीस ग़रीब है। नीज़ इस बारे में अबू मूसा और जाबिर (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

3695 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ الطَّيَالِسِيُّ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: بَيْنَمَا رَجُلٌ يَرْعَى غَنَمًا لَهُ إِذْ جَاءَ ذِئْبٌ فَأَخَذَ شَاةً فَجَاءَ صَاحِبُهَا فَانْتَزَعَهَا مِنْهُ،

3695 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "एक आदमी अपनी बकरियां चरा रहा था कि अचानक भेड़िये ने आकर एक बकरी पकड़ ली, तो उस के मालिक ने आकर उस से छीन ली, भेड़िया कहने लगा: उस दिन तुम क्या करोगे जिस दिन मेरे अलावा इनका चरवाहा कोई नहीं होगा?"

فَقَالَ الذِّئْبُ: كَيْفَ تَصْنَعُ بِهَا يَوْمَ السَّبُعِ يَوْمَ لاَ رَاعِيَ لَهَا غَيْرِي؟ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: فَآمَنْتُ بِذَلِكَ أَنَا وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ قَالَ أَبُو سَلَمَةَ: وَمَا هُمَا فِي الْقَوْمِ يَوْمَئِذٍ.

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "इस बात पर मैं अबू बक्र और उमर ईमान लाये" अबू सलमा कहते हैं: हालांकि यह दोनों उस दिन लोगों में मौजूद नहीं थे।

बुख़ारी:2324. मुस्लिम:2388. मज़ीद देखिए:3677.

वज़ाहत: (अबू ईसा कहते हैं) हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने, मुहम्मद बिन जाफ़र से बवास्ता शोबा, साद बिन इब्राहीम से ऐसी ही हदीस बयान की है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

19 بَابٌ فِي مَنَاقِبِ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، وَلَهُ كُنْيَتَانِ، يُقَالُ: أَبُو عَمْرٍو، وَأَبُو عَبْدِ اللهِ

19 - सय्यदना उस्मान बिन अफ़्फ़ान (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब उनकी दो कुनियतें थी अबू अम्र और अबू अब्दुल्लाह।

3696 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ سُهَيْلِ بْنِ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ عَلَى حِرَاءَ هُوَ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَعُثْمَانُ وَعَلِيٌّ وَطَلْحَةُ وَالزُّبَيْرُ فَتَحَرَّكَتِ الصَّخْرَةُ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: اهْدَأْ، فَمَا عَلَيْكَ إِلاَّ نَبِيٌّ أَوْ صِدِّيقٌ أَوْ شَهِيدٌ.

3696 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ), अबू बक्र, उमर, उस्मान, अली, तल्हा और ज़ुबैर (رضي الله عنهم) हिरा पर थे कि चट्टान ने हरकत की तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "ठहर जा तेरे ऊपर नबी है या सिद्दीक़ या शहीद।"

मुस्लिम:2417. अहमद:2/419. इब्ने अबी आसिम फिस्सुन्ना:1441.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में उस्मान, सईद बिन ज़ैद, इब्ने अब्बास, सहल बिन साद, अनस बिन मालिक और बुरैदा असलमी (رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है, नीज यह हदीस सहीह है।

3697 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي عَرُوبَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، أَنَّ أَنَسًا حَدَّثَهُمْ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ صَعِدَ أُحُدًا وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَعُثْمَانُ

3697 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ), अबू बक्र, उमर और उस्मान (رضي الله عنهم) उहुद पहाड़ पर चढ़े तो उसने उन्हें हिलाया, अल्लाह के नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ उहुद रुक जा, तेरे ऊपर एक नबी है

فَرَجَفَ بِهِمْ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: اثْبُتْ أُحُدُ فَإِنَّمَا عَلَيْكَ نَبِيٌّ وَصِدِّيقٌ وَشَهِيدَانِ.

एक सिद्दीक़ और दो शहीद हैं।"

बुख़ारी:3675. अबू दाऊद:4651. अहमद:3/112. इब्ने हिब्बान:6865.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3698 - حَدَّثَنَا أَبُو هِشَامٍ الرِّفَاعِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ الْيَمَانِ، عَنْ شَيْخٍ، مِنْ بَنِي زُهْرَةَ، عَنِ الْحَارِثِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي ذُبَابٍ، عَنْ طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ، قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: لِكُلِّ نَبِيٍّ رَفِيقٌ وَرَفِيقِي، يَعْنِي فِي الْجَنَّةِ - عُثْمَانُ.

3698 - सय्यदना तल्हा बिन उबैदुल्लाह (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "हर नबी का एक साथी होता है और मेरा साथी। यानी जन्नत में उस्मान होगा।"

ज़ईफ़: अबू याला:665. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफ़ा:2292. हिदायतुर्रूवात:6016.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। इसकी सनद मज़बूत नहीं है नीज़ सनद मुन्क़तअ भी है।

3699 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ جَعْفَرٍ الرَّقِّيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَمْرٍو، عَنْ زَيْدٍ هُوَ ابْنُ أَبِي أُنَيْسَةَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ السُّلَمِيِّ، قَالَ: لَمَّا حُصِرَ عُثْمَانُ، أَشْرَفَ عَلَيْهِمْ فَوْقَ دَارِهِ، ثُمَّ قَالَ: أُذَكِّرُكُمْ بِاللَّهِ هَلْ تَعْلَمُونَ أَنَّ حِرَاءَ حِينَ انْتَفَضَ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: اثْبُتْ حِرَاءُ فَلَيْسَ عَلَيْكَ إِلاَّ نَبِيٌّ أَوْ صِدِّيقٌ أَوْ شَهِيدٌ قَالُوا: نَعَمْ. قَالَ: أُذَكِّرُكُمْ بِاللَّهِ هَلْ تَعْلَمُونَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ فِي جَيْشِ الْعُسْرَةِ: مَنْ يُنْفِقُ نَفَقَةً مُتَقَبَّلَةً، وَالنَّاسُ مُجْهَدُونَ مُعْسِرُونَ فَجَهَّزْتُ

3699 - अबू अब्दुर्रहमान सुलमी बयान करते हैं जब उस्मान का मुहासरा हुआ तो उन्होंने अपने घर के ऊपर से लोगों को मुख़ातब करके फ़रमाया, मैं तुम्हें अल्लाह का वास्ता दे कर याद कराता हूँ क्या तुम जानते हो कि जब हिरा का पहाड़ हिला था तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया था: ऐ हिरा ठहर जा तुझ पर नबी है, सिद्दीक़ है या शहीद?" लोगों ने कहा: हाँ। फ़रमाया, "मैं अल्लाह के वास्ते से तुम्हें याद कराता हूँ कि क्या तुम जानते हो कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जैशुल उस्रा[1] के मौक़ा पर फ़रमाया था " कौन है जो क़ुबूल की जाने वाली चीज़ ख़र्च करे" जब कि लोग मशक़्क़त और तंगी में थे, तो मैंने उस लश्कर का सामान मुहय्या किया था। उन्होंने कहा: हाँ, फिर फ़रमाने लगे: मैं तुम्हें अल्लाह के वास्ते याद दिलाता हूँ कि बीरे रूमा

ذَلِكَ الْجَيْشَ؟ قَالُوا: نَعَمْ. ثُمَّ قَالَ أُذَكِّرُكُمْ بِاللَّهِ هَلْ تَعْلَمُونَ أَنَّ رُومَةَ لَمْ يَكُنْ يَشْرَبُ مِنْهَا أَحَدٌ إِلاَّ بِثَمَنٍ فَابْتَعْتُهَا فَجَعَلْتُهَا لِلْغَنِيِّ وَالْفَقِيرِ وَابْنِ السَّبِيلِ؟ قَالُوا: اللَّهُمَّ، نَعَمْ، وَأَشْيَاءَ عَدَّدَهَا.

से कोई भी आदमी बग़ैर कीमत पानी नहीं पी सकता था, फिर मैंने उसे खरीद कर मालदार मोहताज और मुसाफिर सब के लिए वक्फ़ कर दिया? उन्होंने कहा: हम अल्लाह को गवाह बना कर कहते हैं कि ऐसे ही है (और साथ) कुछ और चीज़ें भी गिन कर बताई।

सहीह: निसाई:3209. अहमद:1/59. इब्ने खुज़ैमा:2491.

तौज़ीह: جيش العسرة : तंगी वाला लश्कर: इस से मुराद ग़ज़्व-ए-तबूक के लिए जाने वाला लश्कर है उसे तंगी वाला लश्कर इसलिए कहा जाता है कि इस मौक़ा पर मुसलमानों के पास माल की कमी थी जब कि सफ़र बहुत दूर और दुश्मन की तादाद बहुत ज़्यादा थी इस के साथ-साथ दुश्मन बहुत चालाक और शातिर भी था।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है, जो कि बतरीके अबू अब्दुर्रहमान सुलमी, उस्मान (رضي الله عنه) से मर्वी है।

3700 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا السَّكَنُ بْنُ الْمُغِيرَةِ، وَيُكْنَى أَبَا مُحَمَّدٍ مَوْلًى لِآلِ عُثْمَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ أَبِي هِشَامٍ، عَنْ فَرْقَدٍ أَبِي طَلْحَةَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ خَبَّابٍ، قَالَ: شَهِدْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يَحُثُّ عَلَى جَيْشِ الْعُسْرَةِ فَقَامَ عُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ عَلَيَّ مِائَةُ بَعِيرٍ بِأَحْلاَسِهَا وَأَقْتَابِهَا فِي سَبِيلِ اللهِ، ثُمَّ حَضَّ عَلَى الْجَيْشِ فَقَامَ عُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ عَلَيَّ مِائَتَا بَعِيرٍ بِأَحْلاَسِهَا وَأَقْتَابِهَا فِي سَبِيلِ اللهِ، ثُمَّ حَضَّ عَلَى

3700 - सय्यदना अब्दुर्रहमान बिन खब्बाब (رضي الله عنه) बयान करते हैं मैं नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर था आप(ﷺ) जैशुल उस्रा पर ख़र्च करने की तरग़ीब दे रहे थे। तो उस्मान बिन अफ्फ़ान (رضي الله عنه) ने खड़े हो कर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मैं एक सौ ऊँट झूलों[1] और पालानों[2] समेत अल्लाह के रास्ते में देता हूँ, आप (ﷺ) ने फिर लश्कर (पर ख़र्च की) तरग़ीब दी तो उस्मान बिन अफ़्फ़ान ने खड़े हो कर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मैं दो सौ ऊँट झूलों और पालानों समेत अल्लाह के रास्ते में देता हूँ, आप (ﷺ) ने फिर लश्कर (पर ख़र्च की) तरगीब दी तो उस्मान बिन अफ़्फ़ान ने खड़े हो कर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मैं तीन सौ ऊँट झूलों और

الجَيْشِ فَقَامَ عُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ عَلَيَّ ثَلَاثُ مِائَةِ بَعِيرٍ بِأَحْلَاسِهَا وَأَقْتَابِهَا فِي سَبِيلِ اللهِ، فَأَنَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَنْزِلُ عَنِ الْمِنْبَرِ وَهُوَ يَقُولُ: مَا عَلَى عُثْمَانَ مَا عَمِلَ بَعْدَ هَذِهِ، مَا عَلَى عُثْمَانَ مَا عَمِلَ بَعْدَ هَذِهِ.

पालानों समेत अल्लाह के रास्ते में देता हूँ, फिर मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा आप(ﷺ) मिम्बर से उतरते हुए फ़रमा रहे थे: "इस काम के करने के बाद उस्मान पर किसी काम का मुआखज़ा नहीं है, इस काम के करने के बाद उस्मान पर किसी काम का मुआखज़ा नहीं है।"

ज़ईफ़: तयालिसी:1189. अब्द बिन हुमैद:311. बैहक़ी फी दलाइल:5/214. हिदायतुर्रूवात:6017.

तौज़ीह: (1) أحلاس : यह حلس की जमा है और حلس उस टाट या दरी वग़ैरह को कहा जाता है जो ऊँट के कजावे या घोड़े की ज़ीन के नीचे कमर से लगा हुआ हो। (देखिये: अल-कामूसुल वहीद पृ.368)

(2) اقتاب : यह القتب की जमा है। ऊँट के कोहान के मुताबिक छोटा कजावा। (देखिये अल-मोजमुल वसीत,पृ.860)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस ग़रीब है, हम इसे सकन बिन मुग़ीरा के तरीक़ से ही जानते हैं नीज़ इस बारे में अब्दुर्रहमान बिन समुरह् (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

3701 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ وَاقِعٍ الرَّمْلِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا ضَمْرَةُ بْنُ رَبِيعَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ شَوْذَبٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ القَاسِمِ، عَنْ كَثِيرٍ، مَوْلَى عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سَمُرَةَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سَمُرَةَ، قَالَ: جَاءَ عُثْمَانُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ بِأَلْفِ دِينَارٍ، قَالَ الحَسَنُ بْنُ وَاقِعٍ: وَكَانَ فِي مَوْضِعٍ آخَرَ مِنْ كِتَابِي، فِي كُمِّهِ، حِينَ جَهَّزَ جَيْشَ الْعُسْرَةِ فَنَثَرَهَا فِي حِجْرِهِ. قَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ: فَرَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُقَلِّبُهَا فِي حِجْرِهِ وَيَقُولُ: مَا ضَرَّ عُثْمَانَ مَا عَمِلَ بَعْدَ اليَوْمِ مَرَّتَيْنِ.

3701 - सय्यदना अब्दुर्रहमान बिन समुरह् (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि उस्मान (رضي الله عنه) एक हज़ार दीनार लेकर नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए, हसन बिन वक़ीअ कहते हैं मेरी किताब में एक दूसरी जगह पर है (वह दीनार) उनकी आस्तीन में थे। जब आप(ﷺ) ने जैशुल उस्रा पर ख़र्च करने की तरग़ीब दी थी तो उन्होंने वह दीनार आप (ﷺ) की गोद में बिखेर दिए, अब्दुर्रहमान कहते हैं: फिर मैंने देखा कि आप (ﷺ) अपनी झोली में उलट पलट रहे थे और आप(ﷺ) फ़रमा रहे थे: "आज के बाद उस्मान का कोई भी अमल उसे नुकसान नहीं देगा।" आप(ﷺ) ने यह बात दो मर्तबा फ़रमाई।

हसन: अहमद:5/63. हाकिम:3/102. तबरानी फ़िल औसत:9222. हिदायतुर्रूवात:6018.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है।

3702 - अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जब बैअते रिजवान करने का हुक्म दिया तो उस्मान बिन अफ्फ़ान, रसूलुल्लाह (ﷺ) के क़ासिद बन कर मक्का वालों की तरफ़ गए हुए थे। रावी कहते हैं: रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "उस्मान, अल्लाह और उस के रसूल के काम में है।" फिर आप(ﷺ) ने एक हाथ दूसरे पर रखा, चुनांचे रसूलुल्लाह (ﷺ) का उस्मान के लिए रखा गया हाथ लोगों के अपने हाथों से बेहतर था।

ज़ईफ़: हिदायतुर्रूवात:6019.

3702 - حَدَّثَنَا أَبُو زُرْعَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ بِشْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الحَكَمُ بْنُ عَبْدِ الْمَلِكِ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: لَمَّا أُمِرَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِبَيْعَةِ الرِّضْوَانِ كَانَ عُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ رَسُولَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى أَهْلِ مَكَّةَ قَالَ: فَبَايَعَ النَّاسَ، قَالَ: فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ عُثْمَانَ فِي حَاجَةِ اللهِ وَحَاجَةِ رَسُولِهِ. فَضَرَبَ بِإِحْدَى يَدَيْهِ عَلَى الأُخْرَى، فَكَانَتْ يَدُ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِعُثْمَانَ خَيْرًا مِنْ أَيْدِيهِمْ لأَنْفُسِهِمْ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3703 - सुमामा बिन हज़्न कुशैरी बयान करते हैं जब उस्मान (رضي الله عنه) ने घर के ऊपर से लोगों को मुख़ातब किया तो मैं भी वहीं मौजूद था, उन्होंने फ़रमाया, "उन दोनों आदमियों को मेरे पास लाओ जिन्होंने तुम्हें मुझ पर जमा किया है? रावी कहते हैं: उन्हें लाया गया तो वह दो ऊँट या दो गधे लगते थे। रावी कहते हैं: फिर उस्मान ऊपर से ही उन्हें मुख़ातब करके फ़रमाने लगे: मैं तुम्हें अल्लाह और इस्लाम का वास्ता देता हूँ क्या तुम जानते हो कि जब अल्लाह के रसूल (ﷺ) मदीना आए थे तो यहाँ रूमा के कुएं के

3703 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، وَعَبَّاسُ بْنُ مُحَمَّدٍ الدُّورِيُّ، وَغَيْرُ وَاحِدٍ الْمَعْنَى وَاحِدٌ، قَالُوا: حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَامِرٍ، قَالَ: عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ عَامِرٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي الحَجَّاجِ الْمِنْقَرِيِّ، عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الجُرَيْرِيِّ، عَنْ ثُمَامَةَ بْنِ حَزْنٍ القُشَيْرِيِّ، قَالَ: شَهِدْتُ الدَّارَ حِينَ أَشْرَفَ عَلَيْهِمْ عُثْمَانُ، فَقَالَ: ائْتُونِي بِصَاحِبَيْكُمُ اللَّذَيْنِ أَلَّبَاكُمْ عَلَيَّ. قَالَ: فَجِيءَ بِهِمَا فَكَأَنَّهُمَا جَمَلاَنِ أَوْ كَأَنَّهُمَا حِمَارَانِ، قَالَ:

فَأَشْرَفَ عَلَيْهِمْ عُثْمَانُ، فَقَالَ: أَنْشُدُكُمْ بِاللَّهِ وَالإِسْلاَمِ هَلْ تَعْلَمُونَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَدِمَ الْمَدِينَةَ وَلَيْسَ بِهَا مَاءٌ يُسْتَعْذَبُ غَيْرَ بِئْرِ رُومَةَ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَنْ يَشْتَرِي بِئْرَ رُومَةَ فَيَجْعَلَ دَلْوَهُ مَعَ دِلاَءِ الْمُسْلِمِينَ بِخَيْرٍ لَهُ مِنْهَا فِي الْجَنَّةِ؟ فَاشْتَرَيْتُهَا مِنْ صُلْبِ مَالِي فَأَنْتُمُ الْيَوْمَ تَمْنَعُونِي أَنْ أَشْرَبَ مِنْهَا حَتَّى أَشْرَبَ مِنْ مَاءِ الْبَحْرِ. قَالُوا: اللَّهُمَّ نَعَمْ. فَقَالَ: أَنْشُدُكُمْ بِاللَّهِ وَالْإِسْلاَمِ هَلْ تَعْلَمُونَ أَنَّ الْمَسْجِدَ ضَاقَ بِأَهْلِهِ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَنْ يَشْتَرِي بُقْعَةَ آلِ فُلاَنٍ فَيَزِيدَهَا فِي الْمَسْجِدِ بِخَيْرٍ لَهُ مِنْهَا فِي الْجَنَّةِ؟ فَاشْتَرَيْتُهَا مِنْ صُلْبِ مَالِي فَأَنْتُمُ الْيَوْمَ تَمْنَعُونِي أَنْ أُصَلِّيَ فِيهَا رَكْعَتَيْنِ؟ قَالُوا: اللَّهُمَّ، نَعَمْ. قَالَ: أَنْشُدُكُمْ بِاللَّهِ وَبِالْإِسْلاَمِ، هَلْ تَعْلَمُونَ أَنِّي جَهَّزْتُ جَيْشَ الْعُسْرَةِ مِنْ مَالِي؟ قَالُوا: اللَّهُمَّ نَعَمْ. ثُمَّ قَالَ: أَنْشُدُكُمْ بِاللَّهِ وَالإِسْلاَمِ هَلْ تَعْلَمُونَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ عَلَى ثَبِيرِ مَكَّةَ وَمَعَهُ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَأَنَا فَتَحَرَّكَ الْجَبَلُ حَتَّى تَسَاقَطَتْ حِجَارَتُهُ بِالْحَضِيضِ قَالَ: فَرَكَضَهُ بِرِجْلِهِ وَقَالَ: اسْكُنْ ثَبِيرُ فَإِنَّمَا عَلَيْكَ نَبِيٌّ وَصِدِّيقٌ وَشَهِيدَانِ؟ قَالُوا: اللَّهُمَّ، نَعَمْ. قَالَ: اللَّهُ أَكْبَرُ شَهِدُوا لِي وَرَبِّ

अलावा मीठा पानी नहीं था, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "जो शख़्स बीरे रूमा को खरीद कर उस में अपना डोल भी आम मुसलमानों के डोलों की तरह रखे तो उसके लिए जन्नत में उस से बेहतर मिलेगा।" तो मैंने उसे अपने जाती माल से खरीदा था आज तुम मुझे उसी से ही पानी पीने से रोकते हो, यहाँ तक कि मैं समन्दर का पानी पी रहा हूँ? लोगों ने कहा: जी हाँ, फिर फ़रमाया, क्या तुम जानते हो कि मस्जिद नमाजियों से तंग पड़ गई थी? तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया था: "कौन है जो आले फुलां की कुल ज़मीन खरीद कर उसे मस्जिद में मिला कर जन्नत में इससे बेहतर जगह ले ले।?" तो उसे भी मैंने अपने जाती माल से खरीदा था आज तुम मुझे इसमें दो रकअतें पढ़ने से भी रोकते हो? लोगों ने कहा: जी हाँ, फ़रमाने लगे तुम्हें अल्लाह और रसूल का वास्ता देता हूँ क्या तुम जानते हो "जैशुल उस्रा" को मैंने ही अपने माल से तैयार किया था? लोगों ने कहा: जी हाँ। फ़रमाया, "मैं तुम्हें अल्लाह और उसके रसूल का वास्ता देता हूँ क्या तुम्हें इल्म है कि अल्लाह के रसूल (ﷺ) मक्का की सबीर पहाड़ी पर थे, मैं, अबू बक्र और उमर आप के साथ थे, तो पहाड़ ने हरकत की थी, यहाँ तक कि उस के पत्थर निचले हिस्से (1) तक आ गिरे, तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया था: "ठहर जा ऐ सबीर तुझ पर नबी है या सिद्दीक़ या दो शहीद।" उन्होंने कहा: जी हाँ, तो फ़रमाया, "अल्लाह सब से

बड़ा है रब्बे काबा की क़सम! उन्होंने तीन दफ़ा मेरे लिए शहीद होने की गवाही दे दी है।"

الكَعْبَةِ أَنِّي شَهِيدٌ، ثَلاثًا.

सहीह: अल-अरवा:1594. निसाई:3638. तोहफतुल अशराफ़:9785.

तौज़ीह: الحضيض : पस्त ज़मीन, पहाड़ की ज़ेरीं ज़मीन। (देखिए: अल-कामूसुल वहीद,पृ.350.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है और कई तुरूक़ से उस्मान (رضي الله عنه) से हदीस मर्वी है।

3704 - अबू अशअस सनआनी बयान करते हैं शाम में बहुत से खतीब खड़े हुए जिनमें नबी (ﷺ) के सहाबा भी थे, सबसे आखिर में जो आदमी खड़े हुए उनको मुर्रा बिन काब (رضي الله عنه) कहा जाता था, उन्होंने फ़रमाया, "अगर मैं ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से एक हदीस न सुनी होती तो मैं खड़ा न होता और आप (ﷺ) ने फ़ित्नों का ज़िक्र किया और उन्हें क़रीबी वक़्त में बताया फिर एक आदमी कपड़े से चेहरा ढांपे हुए गुजरा, तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "उस दिन यह शख़्स हिदायत पर होगा" मैं उस आदमी की तरफ़ गया तो देखा वह उस्मान बिन अफ़्फ़ान थे। फिर मैंने उनका चेहरा आप(ﷺ) की तरफ़ मोड़ कर पूछा यह शख़्स? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "हाँ।"

3704 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الوَهَّابِ الثَّقَفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ أَبِي قِلَابَةَ، عَنْ أَبِي الأَشْعَثِ الصَّنْعَانِيِّ، أَنَّ خُطَبَاءَ قَامَتْ بِالشَّامِ وَفِيهِمْ رِجَالٌ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَامَ آخِرُهُمْ رَجُلٌ يُقَالُ لَهُ: مُرَّةُ بْنُ كَعْبٍ، فَقَالَ: لَوْلَا حَدِيثٌ سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا قُمْتُ وَذَكَرَ الفِتَنَ فَقَرَّبَهَا، فَمَرَّ رَجُلٌ مُقَنَّعٌ فِي ثَوْبٍ فَقَالَ: هَذَا يَوْمَئِذٍ عَلَى الهُدَى، فَقُمْتُ إِلَيْهِ فَإِذَا هُوَ عُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ. قَالَ: فَأَقْبَلْتُ عَلَيْهِ بِوَجْهِهِ، فَقُلْتُ: هَذَا؟ قَالَ: نَعَمْ.

(3704) सहीह: अहमद:4/236. हिदायतुर्रूवात: 6021.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है,नीज़ इस बारे में इब्ने उमर, अब्दुल्लाह बिन हवाला और काब बिन उज्रा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

3705 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ उस्मान! हो सकता है कि अल्लाह तआला तुझे

3705 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا حُجَيْنُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ بْنُ

سَعْدٍ، عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ صَالِحٍ، عَنْ رَبِيعَةَ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَامِرٍ، عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: يَا عُثْمَانُ إِنَّهُ لَعَلَّ اللَّهَ يُقَمِّصُكَ قَمِيصًا، فَإِنْ أَرَادُوكَ عَلَى خَلْعِهِ فَلاَ تَخْلَعْهُ لَهُمْ. وَفِي الحَدِيثِ قِصَّةٌ طَوِيلَةٌ.

(ख़िलाफ़त) की क़मीस पहनाये, चुनांचे अगर लोग उसे उतारने का तुझ से मुतालबा कर दें तो तुम उनके लिए न उतारना।"

सहीह: इब्ने माजह्:112. हिदायतुर्रूवात:6022. अहमद:6/86. हाकिम:3/99.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस हदीस में एक लम्बा किस्सा भी है और यह हदीस हसन ग़रीब है।

3706 - حَدَّثَنَا صَالِحُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَوْهَبٍ، أَنَّ رَجُلاً مِنْ أَهْلِ مِصْرَ حَجَّ البَيْتَ فَرَأَى قَوْمًا جُلُوسًا فَقَالَ: مَنْ هَؤُلاَءِ؟ قَالُوا: قُرَيْشٌ. قَالَ: فَمَنْ هَذَا الشَّيْخُ؟ قَالُوا: ابْنُ عُمَرَ فَأَتَاهُ فَقَالَ: إِنِّي سَائِلُكَ عَنْ شَيْءٍ فَحَدِّثْنِي، أَنْشُدُكَ اللَّهَ بِحُرْمَةِ هَذَا البَيْتِ أَتَعْلَمُ أَنَّ عُثْمَانَ فَرَّ يَوْمَ أُحُدٍ؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: أَتَعْلَمُ أَنَّهُ تَغَيَّبَ عَنْ بَيْعَةِ الرِّضْوَانِ فَلَمْ يَشْهَدْهَا؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: أَتَعْلَمُ أَنَّهُ تَغَيَّبَ يَوْمَ بَدْرٍ فَلَمْ يَشْهَدْهُ؟ قَالَ: نَعَمْ. فَقَالَ: اللَّهُ أَكْبَرُ، فَقَالَ لَهُ ابْنُ عُمَرَ: تَعَالَ أُبَيِّنْ لَكَ مَا سَأَلْتَ عَنْهُ: أَمَّا فِرَارُهُ يَوْمَ أُحُدٍ فَأَشْهَدُ أَنَّ اللَّهَ قَدْ عَفَا عَنْهُ وَغَفَرَ لَهُ، وَأَمَّا تَغَيُّبُهُ يَوْمَ بَدْرٍ فَإِنَّهُ كَانَتْ عِنْدَهُ أَوْ تَحْتَهُ

3706 - उस्मान बिन अब्दुल्लाह बिन मोहिब (رحمه الله) से रिवायत है कि मिस्र के एक आदमी ने हज किया तो कुछ लोगों को बैठा देख कर कहने लगा यह लोग कौन हैं? लोगों ने बताया क़ुरेशी हैं, उस ने कहा: उन में बुज़ुर्ग कौन हैं? लोगों ने बताया कि इब्ने उमर (رضي الله عنه) हैं। फिर वह उन के पास आकर कहने लगा: मैं आप से कुछ पूछने लगा हूँ मैं आप को इस घर की हुर्मत का वास्ता देता हूँ कि आप मुझे ज़रूर बताएँगे। क्या आप जानते हैं कि उस्मान उहुद के दिन भाग गए थे? उन्होंने फ़रमाया, "हाँ, वह कहने लगा: क्या आप जानते हैं कि वह बैअते रिजवान में भी शरीक नहीं थे? फ़रमाया, हाँ, उस ने कहा: क्या आप जानते हैं कि वह बद्र के दिन भी ग़ायब थे उस में शरीक नहीं हुए? उन्होंने फ़रमाया, हाँ, तो उसने अल्लाहु अकबर कहा। फिर इब्ने उमर (رضي الله عنه) ने फ़रमाया, आओ मैं तुम्हें तुम्हारे सवालों का जवाब देता हूँ, उन के उहुद के दिन भागने की तो मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह ने उन्हें माफ़ कर दिया और उन्हें बख़्श दिया था, उन के

ابْنَةُ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَكَ أَجْرُ رَجُلٍ شَهِدَ بَدْرًا وَسَهْمُهُ، وَأَمَرَهُ أَنْ يَخْلُفَ عَلَيْهَا وَكَانَتْ عَلِيلَةً. وَأَمَّا تَغَيُّبُهُ عَنْ بَيْعَةِ الرِّضْوَانِ فَلَوْ كَانَ أَحَدٌ أَعَزَّ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْ عُثْمَانَ لَبَعَثَهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَكَانَ عُثْمَانَ، بَعَثَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عُثْمَانَ وَكَانَتْ بَيْعَةُ الرِّضْوَانِ بَعْدَ مَا ذَهَبَ عُثْمَانُ إِلَى مَكَّةَ. قَالَ: فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِيَدِهِ الْيُمْنَى: هَذِهِ يَدُ عُثْمَانَ. وَضَرَبَ بِهَا عَلَى يَدِهِ، فَقَالَ: هَذِهِ لِعُثْمَانَ، قَالَ لَهُ: اذْهَبْ بِهَذَا الآنَ مَعَكَ.

बद्र से गैर हाज़िर होने की वजह यह थी कि उनके निकाह में रसूलुल्लाह (ﷺ) की बेटी थीं तो अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने उन से फ़रमाया था तुम्हारे लिए बद्र में शरीक होने वाले आदमी का अज्र और उसका हिस्सा होगा, और आप(ﷺ) ने उन्हें हुक्म दिया था कि वह अपनी बीवी का ख़याल रखें जो कि बीमार थीं, और रहा मामला उनका बैअते रिजवान से गैर हाज़िर होना तो अगर कोई और शख़्स मक्का में उस्मान से ज़्यादा इज्ज़त वाला होता तो अल्लाह के रसूल (ﷺ) उस्मान की जगह उसे भेजते, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उस्मान को मक्का की तरफ़ रवाना किया और बैअते रिजवान उस्मान के मक्का जाने के बाद हुई थी, फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने दायें हाथ की तरफ़ से इशारा करके फ़रमाया "यह उस्मान का हाथ है" और उसे अपने हाथ पर मार कर फ़रमाया, "यह उस्मान की बैअत है" और उस (सवाल करने वाले मिस्री) से कहने लगे: अब यह जवाबात अपने साथ लेकर चले जाओ।

बुख़ारी:3130. अहमद:2/ 101.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3707 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الدَّوْرَقِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْعَلَاءُ بْنُ عَبْدِ الْجَبَّارِ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْحَارِثُ بْنُ عُمَيْرٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: كُنَّا نَقُولُ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ حَيٌّ: أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَعُثْمَانُ.

3707 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) बयान करते हैं रसूलुल्लाह (ﷺ) ज़िंदा थे तो हम (इस तरह) कहा करते थे अबू बक्र, उमर और उस्मान (رضي الله عنهم)।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस इस सनद से हसन सहीह ग़रीब है, और

अब्दुल्लाह बिन उमर से ग़रीब बनती है, नीज़ यह हदीस कई इस्नाद से इब्ने उमर (رضی اللہ عنہ) से मर्वी है।

3708 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضی اللہ عنہ) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक फ़ित्ने का ज़िक्र करते हुए उस्मान बिन अफ़्फ़ान (رضی اللہ عنہ) के बारे में फ़रमाया, "यह उस फ़ित्ने के दौर में मज़्लूमियत की हालत में शहीद होंगे।"

हसनुल इस्नाद: अहमद:2/ 115. हिदायतुर्रूवात: 6023.

3708 - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعِيدٍ الجَوْهَرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا شَاذَانُ الأَسْوَدُ بْنُ عَامِرٍ، عَنْ سِنَانِ بْنِ هَارُونَ، عَنْ كُلَيْبِ بْنِ وَائِلٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: ذَكَرَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِتْنَةً، فَقَالَ: **يُقْتَلُ هَذَا فِيهَا مَظْلُومًا لِعُثْمَانَ.**

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: इब्ने उमर (رضی اللہ عنہ) के तरीक़ से यह हदीस हसन ग़रीब है।-

3709 - सय्यदना जाबिर (رضی اللہ عنہ) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) के पास एक आदमी का जनाज़ा लाया गया कि आप उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ा दें लेकिन आप(ﷺ) ने न पढ़ाई तो पूछा गया: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! इस से पहले हम ने कभी नहीं देखा कि आप ने किसी की नमाज़े जनाज़ा छोड़ी हो? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "यह उस्मान से बुग़्ज़ रखता था अल्लाह को भी इस से नफ़रत है।"

मौज़ू:इब्ने अबी हातिम फी इलल: 1087. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा: 1967.

3709 - حَدَّثَنَا الفَضْلُ بْنُ أَبِي طَالِبٍ البَغْدَادِيُّ، وَغَيْرُ وَاحِدٍ، قَالُوا: حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ زُفَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ زِيَادٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَجْلَانَ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: أُتِيَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِجَنَازَةِ رَجُلٍ لِيُصَلِّيَ عَلَيْهِ فَلَمْ يُصَلِّ عَلَيْهِ، فَقِيلَ: يَا رَسُولَ اللهِ مَا رَأَيْنَاكَ تَرَكْتَ الصَّلَاةَ عَلَى أَحَدٍ قَبْلَ هَذَا؟ قَالَ: **إِنَّهُ كَانَ يَبْغَضُ عُثْمَانَ فَأَبْغَضَهُ اللَّهُ.**

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है, हम इसे सिर्फ इसी सनद से जानते हैं। यह मुहम्मद बिन ज़ियाद, मेहरान बिन मेहरान का शागिर्द है जो कि हदीस में बहुत ज़ईफ़ है। जबकि मुहम्मद बिन ज़ियाद जो अबू हुरैरा के शागिर्द हैं, बस्रा के रहने वाले सिक़ह् रावी थे। उनकी कुनियत अबू हारिस है और अबू उमामा (رضی اللہ عنہ) के शागिर्द मुहम्मद बिन ज़ियाद हानी भी सिक़ह् हैं उनकी कुनियत अबू सुफ़ियान थी वह शाम के रहने वाले थे।

3710 - सय्यदना अबू मूसा अश्अरी (رضی اللہ عنہ) बयान करते हैं कि मैं नबी (ﷺ) के साथ चला, आप अंसार के एक बाग़ में गए, अपनी हाजत

3710 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدَةَ الضَّبِّيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ، عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ،

قَالَ: انْطَلَقْتُ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَدَخَلَ حَائِطًا لِلأَنْصَارِ فَقَضَى حَاجَتَهُ، فَقَالَ لِي: يَا أَبَا مُوسَى أَمْلِكْ عَلَيَّ البَابَ فَلاَ يَدْخُلَنَّ عَلَيَّ أَحَدٌ إِلاَّ بِإِذْنٍ. فَجَاءَ رَجُلٌ فَضَرَبَ الْبَابَ، فَقُلْتُ: مَنْ هَذَا؟ فَقَالَ: أَبُو بَكْرٍ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ هَذَا أَبُو بَكْرٍ يَسْتَأْذِنُ، قَالَ: ائْذَنْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالجَنَّةِ. فَدَخَلَ وَبَشَّرْتُهُ بِالجَنَّةِ، وَجَاءَ رَجُلٌ آخَرُ فَضَرَبَ البَابَ، فَقُلْتُ: مَنْ هَذَا؟ فَقَالَ: عُمَرُ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ هَذَا عُمَرُ يَسْتَأْذِنُ، قَالَ: افْتَحْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالجَنَّةِ. فَفَتَحْتُ البَابَ وَدَخَلَ وَبَشَّرْتُهُ بِالجَنَّةِ، فَجَاءَ رَجُلٌ آخَرُ فَضَرَبَ البَابَ، فَقُلْتُ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: عُثْمَانُ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ هَذَا عُثْمَانُ يَسْتَأْذِنُ، قَالَ: افْتَحْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالجَنَّةِ عَلَى بَلْوَى تُصِيبُهُ.

पूरी की और फ़रमाया, ऐ अबू मूसा तुम दरवाज़े पर ठहरो बग़ैर इजाज़त कोई शख़्स अन्दर न आए।" चुनांचे एक आदमी आया उस ने दरवाज़ा खटखटाया तो मैंने कहा कौन हो? उस ने कहा: अबू बक्र हूँ। मैंने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! यह अबू बक्र इजाज़त मांग रहे हैं? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, उन्हें इजाज़त दे दो और जन्नत की ख़ुशख़बरी दे दो" फिर वह दाख़िल हुए मैंने उन्हें जन्नत की बशारत दी, एक और आदमी आया उस ने दरवाज़ा खटखटाया मैंने कहा: कौन? कहा उमर। मैंने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! यह उमर इजाज़त मांग रहे हैं। फ़रमाया, "दरवाज़ा खोल दो और उन्हें भी जन्नत की बशारत दे दो।" मैंने दरवाज़ा खोला तो वह अन्दर आए तो मैंने उन्हें जन्नत की बशारत दी, फिर एक और आदमी ने आकर दरवाज़ा खटखटाया मैंने कहा: कौन? कहा उस्मान हूँ। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! यह उस्मान इजाज़त मांग रहे हैं, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "उन के लिए भी दरवाज़ा खोल दो और उन्हें जन्नत की बशारत दे दो, जो एक मुसीबत पहुँचने के बाद मिलेगी।"

बुख़ारी:3674. मुस्लिम:2403. अहमद:4/393.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और कई तुरूक़ से अबू उस्मान नहदी से मर्वी है। नीज़ इस बारे में जाबिर और इब्ने उमर (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

3711 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، وَيَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ، عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي حَازِمٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو

3711 - अबू सह्ला बयान करते हैं कि घर में मुहासरा के दिन उस्मान (رضي الله عنه) ने मुझ से फ़रमाया, "रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझ से एक

سَهْلَةَ، قَالَ: قَالَ عُثْمَانُ يَوْمَ الدَّارِ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَدْ عَهِدَ إِلَيَّ عَهْدًا فَأَنَا صَابِرٌ عَلَيْهِ.

वसीयत की थी चुनांचे मैं उसी पर सब्र कर रहा हूँ।"

सहीह: इब्ने माजह: 113. अहमद: 1/58.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है, हम इसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद के तरीक़ से ही जानते हैं।

20 بَابُ مَنَاقِبِ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، يُقَالُ وَلَهُ كُنْيَتَانِ: أَبُو تُرَابٍ، وَأَبُو الْحَسَنِ

20 - सय्यदना अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब उनकी भी दो कुनियतें थी अबू तुराब और अबुल हसन।

3712 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ سُلَيْمَانَ الضُّبَعِيُّ، عَنْ يَزِيدَ الرِّشْكِ، عَنْ مُطَرِّفِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ، قَالَ: بَعَثَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَيْشًا وَاسْتَعْمَلَ عَلَيْهِمْ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ، فَمَضَى فِي السَّرِيَّةِ فَأَصَابَ جَارِيَةً فَأَنْكَرُوا عَلَيْهِ، وَتَعَاقَدَ أَرْبَعَةٌ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالُوا: إِذَا لَقِينَا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَخْبَرْنَاهُ بِمَا صَنَعَ عَلِيٌّ، وَكَانَ الْمُسْلِمُونَ إِذَا رَجَعُوا مِنَ السَّفَرِ بَدَءُوا بِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَلَّمُوا عَلَيْهِ، ثُمَّ انْصَرَفُوا إِلَى رِحَالِهِمْ فَلَمَّا قَدِمَتِ السَّرِيَّةُ سَلَّمُوا عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَامَ أَحَدُ الْأَرْبَعَةِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ

3712 - सय्यदना इमरान बिन हुसैन (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक लश्कर रवाना किया और उन पर अली बिन अबी तालिब को अमीर बनाया, फिर वह उस लश्कर में गए तो (माले ग़नीमत से) एक लौंडी ले ली, लोगों ने इस काम को बुरा जाना और रसूलुल्लाह (ﷺ) के चार सहाबा ने अहद कर लिया कि अगर रसूलुल्लाह (ﷺ) से हमारी मुलाक़ात हुई तो हम आप को अली के इस काम के मुताल्लिक़ आप(ﷺ) को बताएँगे, मुसलमान जब किसी सफ़र से वापस आते थे तो सब से पहले रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास जाते और आप(ﷺ) को सलाम करते, फिर अपने घरों को जाते थे। चुनांचे जब यह लश्कर आया उन्होंने भी नबी (ﷺ) को सलाम कहा, तो उन चार आदमियों में से एक ने खड़े हो कर कहा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! क्या आप जानते हैं कि अली बिन अबी तालिब ने ऐसे- ऐसे किया

اللهِ أَلَمْ تَرَ إِلَى عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ صَنَعَ كَذَا وَكَذَا، فَأَعْرَضَ عَنْهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، ثُمَّ قَامَ الثَّانِي فَقَالَ مِثْلَ مَقَالَتِهِ، فَأَعْرَضَ عَنْهُ، ثُمَّ قَامَ إِلَيْهِ الثَّالِثُ فَقَالَ مِثْلَ مَقَالَتِهِ، فَأَعْرَضَ عَنْهُ، ثُمَّ قَامَ الرَّابِعُ فَقَالَ مِثْلَ مَا قَالُوا، فَأَقْبَلَ إِلَيْهِ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالغَضَبُ يُعْرَفُ فِي وَجْهِهِ، فَقَالَ: مَا تُرِيدُونَ مِنْ عَلِيٍّ؟ مَا تُرِيدُونَ مِنْ عَلِيٍّ؟ مَا تُرِيدُونَ مِنْ عَلِيٍّ؟ إِنَّ عَلِيًّا مِنِّي وَأَنَا مِنْهُ، وَهُوَ وَلِيُّ كُلِّ مُؤْمِنٍ مِنْ بَعْدِي.

है? रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उस से अपना चेहरा फेर लिया, फिर दूसरे ने भी खड़े हो कर वैसे ही बात कही तो आप(ﷺ) ने उससे भी चेहरा फेर लिया, फिर तीसरा खड़ा हो कर उस ने भी वही बात कही, आप(ﷺ) ने उससे भी चेहरा फेर लिया, फिर चौथा खड़ा हुआ उस ने भी वही बात कही तो रसूलुल्लाह (ﷺ) उसकी तरफ़ मुतवज्जह हुए आप के चेहरे पर गुस्से के आसार थे फ़रमाया, "तुम अली से क्या चाहते हो? तुम अली से क्या चाहते हो? तुम अली से क्या चाहते हो? यक़ीनन अली मुझ से है और मैं उस से हूँ और मेरे बाद यह हर मोमिन का दोस्त है।"

(3712) सहीह: अहमद:4/437. इब्ने हिब्बान:6929. अस-सिलसिला अस-सहीहा:2223

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे जाफ़र बिन सुलैमान के तरीक़ से ही जानते हैं।

3713 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَلَمَةَ بْنِ كُهَيْلٍ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا الطُّفَيْلِ يُحَدِّثُ، عَنْ أَبِي سَرِيحَةَ، أَوْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ، شَكَّ شُعْبَةُ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ كُنْتُ مَوْلَاهُ فَعَلِيٌّ مَوْلَاهُ.

3713 - सय्यदना अबू सरीहा या सय्यदना ज़ैद बिन अरक़म (رضي الله عنه) से रिवायत है शोबा को शक हुआ है कि उन में से कोई एक से रिवायत है। कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "

सहीह: हाकिम:3/109. तबरानी: 3049. अस-सिलसिला अस-सहीहा:1750.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। और शोबा ने इस हदीस को मैमून अबू अब्दुल्लाह से भी बवास्ता ज़ैद बिन अरक़म नबी (ﷺ) से इसी तरह रिवायत किया है।

नीज़ अबू सरीहा, हुज़ैफा बिन उसैद (رضي الله عنه) ही हैं जिनका ताल्लुक़ क़बीले गिफ़ार से था और यह नबी (ﷺ) के सहाबी हैं।

3714 - حَدَّثَنَا أَبُو الخَطَّابِ زِيَادُ بْنُ يَحْيَى البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَتَّابٍ سَهْلُ بْنُ حَمَّادٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْمُخْتَارُ بْنُ نَافِعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو حَيَّانَ التَّيْمِيُّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: رَحِمَ اللَّهُ أَبَا بَكْرٍ زَوَّجَنِي ابْنَتَهُ، وَحَمَلَنِي إِلَى دَارِ الهِجْرَةِ، وَأَعْتَقَ بِلَالًا مِنْ مَالِهِ، رَحِمَ اللَّهُ عُمَرَ، يَقُولُ الحَقَّ وَإِنْ كَانَ مُرًّا، تَرَكَهُ الحَقُّ وَمَا لَهُ صَدِيقٌ، رَحِمَ اللَّهُ عُثْمَانَ، تَسْتَحْيِيهِ الْمَلَائِكَةُ، رَحِمَ اللَّهُ عَلِيًّا، اللَّهُمَّ أَدِرِ الحَقَّ مَعَهُ حَيْثُ دَارَ.

3714 - सय्यदना अली (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह अबू बक्र पर रहम फ़रमाए उस ने अपनी बेटी का निकाह मुझसे कराया, मुझे दारुल हिज्रत तक ले कर आया और बिलाल को अपने माल से आज़ाद किया, अल्लाह उमर पर रहम फ़रमाए जो सच कहता है ख़्वाह वह कड़वी ही हो, उसे सच्चाई ने ऐसी हालत पर छोड़ दिया है कि उसका कोई दोस्त नहीं, अल्लाह तआला उस्मान पर रहम करे जिस से फ़रिश्ते भी हया करते हैं, अल्लाह अली पर रहम करे, ऐ अल्लाह! हक़ को उसके साथ उधर ही घुमा दे जिधर यह घूमे।"

ज़ईफ़ जिद्दा: उकैली फी ज़ोफा:4/210. तर्जुमा:1797. इब्ने जौज़ी:1/410. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:2094.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है, हम इसे सिर्फ इसी सनद से जानते हैं, मुख्तार बिन नाफ़ेअ बस्रा का रहने वाला था और बहुत ही ग़रीब रिवायात बयान करने वाला था और अबू हय्यान अत्तैमी का नाम यहया बिन सईद बिन हय्यान अत्तैमी है यह कूफा के रहने वाले सिक़ह् रावी थे।

3715 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ شَرِيكٍ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ رِبْعِيِّ بْنِ حِرَاشٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ، بِالرَّحَبَةِ، قَالَ: لَمَّا كَانَ يَوْمُ الحُدَيْبِيَةِ خَرَجَ إِلَيْنَا نَاسٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ فِيهِمْ سُهَيْلُ بْنُ عَمْرٍو وَأُنَاسٌ مِنْ رُؤَسَاءِ الْمُشْرِكِينَ، فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ خَرَجَ إِلَيْكَ نَاسٌ مِنْ أَبْنَائِنَا وَإِخْوَانِنَا وَأَرِقَّائِنَا وَلَيْسَ لَهُمْ فِقْهٌ فِي الدِّينِ، وَإِنَّمَا خَرَجُوا فِرَارًا مِنْ أَمْوَالِنَا وَضِيَاعِنَا

3715 - रिबई बिन हिराश बयान करते हैं कि हमें अली (رضي الله عنه) ने रहबा के मक़ाम पर बयान करते हुए फ़रमाया, जब हुदैबिया का दिन था तो मुश्रिकीन के कुछ लोग हमारी तरफ़ आए जिन में सहल बिन अम्र और मुश्रिकीन के कुछ सरदार भी थे, उन लोगों ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! आप के पास हमारे बेटों, भाइयों और गुलामों में से कुछ लोग आए हैं उन्हें दीन में समझ नहीं है, वह तो सिर्फ हमारे अमवाल और ज़िया (साजो सामान) से भागे हैं। चुनाँचे उन्हें आप हमारी तरफ़ लौटा दीजिए, अगर उन्हें दीन की समझ नहीं है तो अन्क़रीब हम उन्हें समझा देंगे,

فَارْدُدْهُمْ إِلَيْنَا. فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُمْ فِقْهٌ فِي الدِّينِ سَنُفَقِّهُهُمْ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَا مَعْشَرَ قُرَيْشٍ لَتَنْتَهُنَّ أَوْ لَيَبْعَثَنَّ اللَّهُ عَلَيْكُمْ مَنْ يَضْرِبُ رِقَابَكُمْ بِالسَّيْفِ عَلَى الدِّينِ، قَدْ امْتَحَنَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ عَلَى الْإِيمَانِ. قَالُوا: مَنْ هُوَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ فَقَالَ لَهُ أَبُو بَكْرٍ: مَنْ هُوَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ وَقَالَ عُمَرُ: مَنْ هُوَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: هُوَ خَاصِفُ النَّعْلِ، وَكَانَ أَعْطَى عَلِيًّا نَعْلَهُ يَخْصِفُهَا، قَالَ: ثُمَّ الْتَفَتَ إِلَيْنَا عَلِيٌّ فَقَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ.

तो नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ कुरैश की जमाअत! तुम बाज़ आ जाओ वर्ना अल्लाह तआला तुम पर ऐसे लोगों को भेजेगा जो दीन की बुनियाद पर तुम्हारी गर्दनें तलवारों से उड़ा देंगे, यक़ीनन अल्लाह ने उनके दिलों को ईमान के लिए आज़मा लिया है।" वह कहने लगे: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! वह कौन है? फिर अबू बक्र ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! वह कौन है? और उमर ने भी कहा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! वह कौन है? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, वह हैं जूते के पेवंद लगाने वाला।" और आप ने अली को टांका लगाने के लिए अपना जूता दिया था। रावी कहते हैं: फिर अली (رضي الله عنه) ने हमारी तरफ़ देख कर फ़रमाया, "बेशक रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया है: " जो शख़्स जान बूझ कर मुझ पर झूठ बोले वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।"

ज़ईफ़: तखरीज के लिए देखिए 2660. लेकिन हदीस का आख़िरी जुम्ला (من كذب ...إلخ) सहीह है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है, हम इसे सिर्फ़ इसी सनद से बवास्ता रिबई बिन हिराश ही अली (رضي الله عنه) से जानते हैं।

3716 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ إِسْرَائِيلَ (ح) وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لِعَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ: أَنْتَ مِنِّي وَأَنَا مِنْكَ وَفِي الْحَدِيثِ قِصَّةٌ.

3716 - सय्यदना बराअ बिन आज़िब (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) से फ़रमाया, "तू मुझ से है और मैं तुझ से हूँ।" इस हदीस में एक क़िस्सा भी है।

सहीह: तख़रीज के लिए देखिए 938, 1904, हिदायतुर्रूवात:6035.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3717 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ أَبِي هَارُونَ الْعَبْدِيِّ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، قَالَ: إِنْ كُنَّا لَنَعْرِفُ الْمُنَافِقِينَ نَحْنُ مَعْشَرَ الأَنْصَارِ بِبُغْضِهِمْ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ.

3717 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि हम अंसार के लोग मुनाफिक़ीन को अली बिन अबी तालिब के साथ बुग्ज़ रखने की वजह से पहचान लेते थे।

ज़ईफुल इस्नाद जिद्दा: इब्ने अदी फी कामिल:5/ 1734.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है और शोबा ने अबू हारून अब्दी के बारे में कलाम किया है। नीज़ यह हदीस आमश से भी बवास्ता अबू सालेह, अबू सईद (رضي الله عنه) से मर्वी है।

3717 م. حَدَّثَنَا وَاصِلُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَبِي نَصْرٍ، عَنِ الْمُسَاوِرِ الحِمْيَرِيِّ، عَنْ أُمِّهِ، قَالَتْ: دَخَلْتُ عَلَى أُمِّ سَلَمَةَ، فَسَمِعْتُهَا تَقُولُ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: لاَ يُحِبُّ عَلِيًّا مُنَافِقٌ وَلاَ يَبْغَضُهُ مُؤْمِنٌ.

3717 (ब)- सय्यदा उम्मे सलमा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि रसूल (ﷺ) फ़रमाया करते थे: "कोई मुनाफ़िक़ अली से मोहब्बत नहीं करता और कोई मोमिन उस से बुग्ज़ नहीं रखता।"

ज़ईफ़: अहमद:6/ 292. हिदायतुर्रूवात:6046.

वज़ाहत: इस बारे में अली (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है, नीज यह हदीस इस सनद से हसन ग़रीब है। और अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान अबू नसर अल- वर्राक़ ही हैं उन से सूफ़ियान सौरी ने रिवायत ली है।

3718 - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ مُوسَى الفَزَارِيُّ ابْنُ بِنْتِ السُّدِّيِّ، قَالَ: حَدَّثَنَا شَرِيكٌ، عَنْ أَبِي رَبِيعَةَ، عَنِ ابْنِ بُرَيْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ اللَّهَ أَمَرَنِي بِحُبِّ أَرْبَعَةٍ، وَأَخْبَرَنِي أَنَّهُ يُحِبُّهُمْ. قِيلَ: يَا رَسُولَ اللهِ سَمِّهِمْ لَنَا، قَالَ: عَلِيٌّ مِنْهُمْ، يَقُولُ ذَلِكَ ثَلاَثًا وَأَبُو ذَرٍّ،

3718 - सय्यदना बुरैदा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने मुझे चार आदमियों से मोहब्बत करने का हुक्म दिया है और उस ने मुझे बताया है कि वह भी उन से मोहब्बत करता है।" कहा गया: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! आप हमें उन के नाम बता दीजिए। आप ने फ़रमाया, "अली उन में से है" यह बात आप ने तीन मर्तबा फ़रमाई " (इस के अलावा) अबू ज़र, मिक़्दाद और सलमान हैं। उस ने मुझे उन से मोहब्बत करने का हुक्म दिया

وَالمِقْدَادُ، وَسَلْمَانُ أَمَرَنِي بِحُبِّهِمْ، وَأَخْبَرَنِي أَنَّهُ يُحِبُّهُمْ..

है और मुझे बताया है कि वह भी उन से मोहब्बत करता है।"

ज़ईफ़: इब्ने माजह्:149. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:3128. अहमद:5/ 351. हाकिम:3/ 130.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है, हम इसे शरीक के तरीक़ से ही जानते हैं।

3719 - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ مُوسَى، قَالَ: حَدَّثَنَا شَرِيكٌ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ حُبْشِيِّ بْنِ جُنَادَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: عَلِيٌّ مِنِّي وَأَنَا مِنْ عَلِيٍّ، وَلاَ يُؤَدِّي عَنِّي إِلاَّ أَنَا أَوْ عَلِيٌّ.

3719 - हुब्शी बिन जुनादा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अली मुझ से है और मैं अली से हूँ और मेरी तरफ़ से (अहद या सुलह वग़ैरह की बात) सिर्फ मैं या अली अदा कर सकते हैं।"

हसन: इब्ने माजह्:119. अहमद:4/ 164. तबरानी:3511. हिदायतुर्रूवात:6038.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब सहीह है,

3720 - حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ مُوسَى القَطَّانُ البَغْدَادِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ قَادِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ صَالِحِ بْنِ حَيٍّ، عَنْ حَكِيمِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ جُمَيْعِ بْنِ عُمَيْرٍ التَّيْمِيِّ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: آخَى رَسُولُ اللهِ ﷺ بَيْنَ أَصْحَابِهِ فَجَاءَ عَلِيٌّ تَدْمَعُ عَيْنَاهُ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ آخَيْتَ بَيْنَ أَصْحَابِكَ وَلَمْ تُؤَاخِ بَيْنِي وَبَيْنَ أَحَدٍ، فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ: أَنْتَ أَخِي فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ.

3720 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने सहाबा के दर्मियान भाई चारा कायम किया तो अली आंसू बहाते हुए आए अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! आप ने अपने सहाबा को भाई भाई बना दिया है लेकिन आप ने मुझे किसी का भाई नहीं बनाया, तो अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम दुनिया और आख़िरत में मेरे भाई हो।".

ज़ईफ़: हाकिम:3/ 14. हिदायतुर्रूवात:2039.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है, और इस बारे में ज़ैद बिन अबी औफ़ा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

3721 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ عِيسَى بْنِ عُمَرَ،

3721 - सय्यदना अनस बिन मालिक (ﷺ) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) के पास परिंदे का गोश्त था, आप(ﷺ) ने दुआ की "ऐ अल्लाह!

عَنِ السُّدِّيِّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: كَانَ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ طَيْرٌ فَقَالَ: اللَّهُمَّ ائْتِنِي بِأَحَبِّ خَلْقِكَ إِلَيْكَ يَأْكُلُ مَعِي هَذَا الطَّيْرَ فَجَاءَ عَلِيٌّ فَأَكَلَ مَعَهُ.

मेरे पास वह बन्दा ले कर आ जो तुझे तेरी मख़लूक़ में से सब से ज़्यादा महबूब हो वह मेरे साथ इस परिंदे का गोश्त खाए।" तो अली (رضي الله عنه) तशरीफ़ लाये, चुनांचे उन्होंने आप (ﷺ) के साथ मिलकर खाया।

ज़ईफ़: अबू याला:4052. हिदायतुर्रूवात:6040.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है, हम इसे सिर्फ इसी तरीक़ से ही सुद्दी से जानते हैं। नीज़ यह हदीस कई तुरूक़ से अनस (رضي الله عنه) से भी मर्वी है।

ईसा बिन उमर कूफा के रहने वाले थे और सुद्दी का नाम इस्माईल बिन अब्दुर्रहमान है। उन्होंने अनस बिन मालिक को पाया और हसन बिन अली को भी देखा था, उन्हें शोबा, सुफ़ियान सौरी और ज़ायदा ने सिक़ह् कहा है, उन्हें यहया बिन सईद क़त्तान भी सिक़ह् कहते हैं।

3722 - حَدَّثَنَا خَلَّادُ بْنُ أَسْلَمَ البَغْدَادِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا النَّضْرُ بْنُ شُمَيْلٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَوْفٌ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ هِنْدٍ الجَمَلِيِّ، قَالَ: قَالَ عَلِيٌّ: كُنْتُ إِذَا سَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ أَعْطَانِي، وَإِذَا سَكَتُّ ابْتَدَأَنِي.

3722 - अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन हिन्द बिन जमली रिवायत करते हैं कि अली (رضي الله عنه) ने फ़रमाया, "मैं जब अल्लाह के रसूल (ﷺ) से माँगता तो आप मुझे देते और जब मैं ख़ामोश रहता तो आप मुझ से इब्तिदा करते।

ज़ईफ़: हाकिम:3/125. इब्ने अबी शैबा:12/59. हिदायतुर्रूवात:6041.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस इस सनद से हसन ग़रीब है।

3723 - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ مُوسَى، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُمَرَ بْنِ الرُّومِيِّ، قَالَ: حَدَّثَنَا شَرِيكٌ، عَنْ سَلَمَةَ بْنِ كُهَيْلٍ، عَنْ سُوَيْدِ بْنِ غَفَلَةَ، عَنِ الصُّنَابِحِيِّ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: أَنَا دَارُ الحِكْمَةِ وَعَلِيٌّ بَابُهَا.

3723 - सय्यदना अली (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैं दानाई का घर हूँ और अली उसका दरवाज़ा।"

ज़ईफ़: इब्ने जौज़ी फ़िल मौज़ूआत:1/349. हिदायतुर्रूवात:6042.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब मुन्कर है। बअ़ज़ ने इस हदीस को शरीक से रिवायत करते वक़्त सुनाबिही का ज़िक्र नहीं किया और शरीक के अलावा हम किसी सिक़ह् रावी से यह हदीस नहीं जानते, नीज़ इस बारे में इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

3724 - सय्यदना साद बिन अबी वक़्क़ास (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मुआविया बिन अबी सुफ़ियान (رضي الله عنه) ने साद से कहा: तुम्हें अबू तुराब को बुरा भला कहने से क्या चीज़ रोकती है? उन्होंने फ़रमाया, जब तक मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) के तीन फ़रामीन याद हैं तो मैं उन्हें (अबू तुराब رضي الله عنه को) हरगिज़ बुरा भला नहीं कहूंगा, इसलिए कि उनमें से एक-एक बात मुझे सुर्ख ऊंटों से ज़्यादा महबूब है, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आप अली (رضي الله عنه) से फ़रमा रहे थे, जब आप ने उन्हें किसी जंग से पीछे छोड़ा था, अली ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! आप मुझे औरतों और बच्चों के साथ पीछे छोड़ रहे हैं? तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन से फ़रमाया था: " क्या तुम इस बात से खुश नहीं हो कि तुम मेरी तरफ़ उसी मुकाम पर बन जाओ जिस पर मूसा की जानिब से हारून थे, लेकिन फ़र्क सिर्फ यह है कि मेरे बाद नबुव्वत नहीं है।" और मैंने ख़ैबर के दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) को यह फ़रमाते हुए सुना " मैं झंडा ऐसे शख़्स को दूंगा जो अल्लाह और उसके रसूल से मोहब्बत करता है और अल्लाह और उसका रसूल उससे मोहब्बत करते हैं।" (साद) कहते हैं: फिर हम लोगों ने उस के लिए रगबत की, तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "अली को बुला कर मेरे पास लाओ।" फिर वह आप(ﷺ) के पास आए उन की आँखें खराब थीं तो आप(ﷺ) ने उनकी आँख में अपना लुआब लगाया, फिर झंडा उन्हें थमा दिया, तो अल्लाह तआला ने उनके हाथों फतह अता फ़रमाई और

3724 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَاتِمُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ بُكَيْرِ بْنِ مِسْمَارٍ، عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: أَمَّرَ مُعَاوِيَةُ بْنُ أَبِي سُفْيَانَ سَعْدًا، فَقَالَ: مَا يَمْنَعُكَ أَنْ تَسُبَّ أَبَا تُرَابٍ، قَالَ: أَمَّا مَا ذَكَرْتَ ثَلاَثًا قَالَهُنَّ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَنْ أَسُبَّهُ، لأَنْ تَكُونَ لِي وَاحِدَةٌ مِنْهُنَّ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ حُمْرِ النَّعَمِ. سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ لِعَلِيٍّ وَخَلَفَهُ فِي بَعْضِ مَغَازِيهِ، فَقَالَ لَهُ عَلِيٌّ: يَا رَسُولَ اللهِ تَخْلُفُنِي مَعَ النِّسَاءِ وَالصِّبْيَانِ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَمَا تَرْضَى أَنْ تَكُونَ مِنِّي بِمَنْزِلَةِ هَارُونَ مِنْ مُوسَى إِلاَّ أَنَّهُ لاَ نُبُوَّةَ بَعْدِي، وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ يَوْمَ خَيْبَرَ: لأُعْطِيَنَّ الرَّايَةَ رَجُلاً يُحِبُّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيُحِبُّهُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ. قَالَ: فَتَطَاوَلْنَا لَهَا، فَقَالَ: ادْعُوا لِي عَلِيًّا، فَأَتَاهُ وَبِهِ رَمَدٌ، فَبَصَقَ فِي عَيْنِهِ، فَدَفَعَ الرَّايَةَ إِلَيْهِ، فَفَتَحَ اللَّهُ عَلَيْهِ، وَأُنْزِلَتْ هَذِهِ الآيَةَ {فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ} الآيَةَ، دَعَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلِيًّا وَفَاطِمَةَ وَحَسَنًا وَحُسَيْنًا فَقَالَ: اللَّهُمَّ هَؤُلاَءِ أَهْلِي.

यह आयत (तर्जुमा) " हम अपने बेटों और तुम्हारे बेटों और अपनी बीवियों और तुम्हारी बीवियों को बुलाते हैं।" (आले- इमरान:61) नाज़िल हुई तो अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने अली, फातिमा, हसन और हुसैन (رضي الله عنهم) को बुला कर कहा " ऐ अल्लाह यह मेरे घर वाले हैं।"

बुख़ारी:3706. मुस्लिम:2404. अहमद:1/ 185.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस इस सनद से हसन ग़रीब सहीह है।

3725 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي زِيَادٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الأَحْوَصُ بْنُ جَوَّابٍ أَبُو الجَوَّابِ، عَنْ يُونُسَ بْنِ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ البَرَاءِ، قَالَ: بَعَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَيْشَيْنِ وَأَمَّرَ عَلَى أَحَدِهِمَا عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ وَعَلَى الآخَرِ خَالِدَ بْنَ الوَلِيدِ وَقَالَ: إِذَا كَانَ القِتَالُ فَعَلِيٌّ قَالَ: فَافْتَتَحَ عَلِيٌّ حِصْنًا فَأَخَذَ مِنْهُ جَارِيَةً، فَكَتَبَ مَعِي خَالِدٌ كِتَابًا إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَشِي بِهِ. قَالَ: فَقَدِمْتُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَرَأَ الكِتَابَ، فَتَغَيَّرَ لَوْنُهُ، ثُمَّ قَالَ: مَا تَرَى فِي رَجُلٍ يُحِبُّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيُحِبُّهُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ؟ قَالَ: قُلْتُ: أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ غَضَبِ اللهِ وَمِنْ غَضَبِ رَسُولِهِ، وَإِنَّمَا أَنَا رَسُولٌ، فَسَكَتَ.

3725 - सय्यदना बराअ (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) ने दो लश्कर रवाना किए एक का अमीर अली बिन अबी तालिब और दूसरे का ख़ालिद बिन वलीद को बनाया और आप ने फ़रमाया, "जब लड़ाई शुरू हो जाए तो अली (ही अमीर) होगा।" रावी कहते हैं अली (رضي الله عنه) ने किला को फतह करके एक लौंडी ले ली तो ख़ालिद बिन वलीद ने मुझे ख़त देकर नबी (ﷺ) की तरफ़ रवाना किया, जिस में उन्होंने अली की शिकायत की थी, कहते हैं: मैं नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, आप ने ख़त पढ़ा तो आप का रंग मुतगय्यर हो गया फिर फ़रमाया, "ऐसे आदमी के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है जो अल्लाह और उसके रसूल से मोहब्बत करता है और अल्लाह और उसके रसूल उस से मोहब्बत करते हैं।" मैंने अर्ज़ किया, मैं अल्लाह और उस के रसूल के गुस्से से अल्लाह की पनाह में आता हूँ मैं तो सिर्फ एक कासिद हूँ तो आप (ﷺ) ख़ामोश हो गए।

ज़ईफुल इस्नाद:देखिए हदीस नम्बर:1704.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है, हम इसे सिर्फ इसी सनद से जानते हैं।

3726 - सय्यदना जाबिर (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि ताइफ़ के (मुहासरे के) दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अली को बुला कर उन से सरगोशी की तो लोगों ने कहा: आप की अपने चचा के बेटे के साथ सरगोशी तवील हो गई है, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैंने उस से अपनी मर्ज़ी से सरगोशी नहीं की बल्कि अल्लाह के हुक्म से मैंने उस से सरगोशी की है।" (1)

ज़ईफ़: अबू याला:2163. तबरानी फ़िल कबीर:1756. हिदायतुर्रूवात:6043.

3726 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْمُنْذِرِ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، عَنِ الأَجْلَحِ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: دَعَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلِيًّا يَوْمَ الطَّائِفِ فَ انْتَجَاهُ، فَقَالَ النَّاسُ: لَقَدْ طَالَ نَجْوَاهُ مَعَ ابْنِ عَمِّهِ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا انْتَجَيْتُهُ وَلَكِنَّ اللَّهَ انْتَجَاهُ.

(1)यानी अल्लाह ने उसे सरगोशी करने का हुक्म दिया है और सरगोशी से मुराद किसी के कान में कोई बात कहना, ऐसी आवाज़ से बातें करना कि कोई तीसरा आदमी उन की बातों को न सुन सके।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है,हम इसे अज्लह के तरीक़ से ही जानते हैं, इब्ने फ़ुज़ैल के अलावा और लोगों ने भी इसे अज्लह से रिवायत किया है, नीज़ आप के फ़रमान: बल्कि अल्लाह ने उससे सरगोशी की है का मतलब यह है कि अल्लाह ने मुझे उसके साथ सरगोशी करने का हुक्म दिया है।

3727 - अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ अली! मेरे और तुम्हारे अलावा किसी आदमी के लिए इस मस्जिद में जुन्बी होना जायज़ नहीं है।"

ज़ईफ़: बैहक़ी:7/66. हिदायतुर्रूवात:6044.

3727 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْمُنْذِرِ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي حَفْصَةَ، عَنْ عَطِيَّةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِعَلِيٍّ: يَا عَلِيُّ لاَ يَحِلُّ لأَحَدٍ يُجْنِبُ فِي هَذَا الْمَسْجِدِ غَيْرِي وَغَيْرِكَ قَالَ عَلِيُّ بْنُ الْمُنْذِرِ: قُلْتُ لِضِرَارِ بْنِ صُرَدٍ: مَا مَعْنَى هَذَا الحَدِيثِ؟ قَالَ: لاَ يَحِلُّ لأَحَدٍ يَسْتَطْرِقُهُ جُنُبًا غَيْرِي وَغَيْرِكَ.

अली बिन मुन्ज़िर कहते हैं: मैंने ज़िरार बिन सुर्द से कहा: इस हदीस का मतलब क्या है? उन्होंने कहा: मेरे और तुम्हारे अलावा हालते जनाबत में इस मस्जिद से गुज़रना किसी के लिए हलाल नहीं है।

Sherkhan
9825 696 131

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है,हम इसे सिर्फ़ इसी सनद से जानते हैं नीज़ मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी ने मुझ से यह हदीस सुनी, तो उसे ग़रीब कहा।

3728 - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ مُوسَى، قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَابِسٍ، عَنْ مُسْلِمٍ الْمُلاَئِيِّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: بُعِثَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ الإِثْنَيْنِ، وَصَلَّى وَعَلِيٌّ يَوْمَ الثُّلاَثَاءِ.

3728 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि सोमवार के दिन नबी (ﷺ) को नबुव्वत मिली और मंगल के दिन अली (رضي الله عنه) ने नमाज़ पढ़ी।

ज़ईफ़ुल इस्नाद: हाकिम: 3/ 112. अबू याला:4208.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में अली (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है और यह हदीस ग़रीब है, हम इसे मुस्लिम आवर के तरीक़ से ही जानते हैं, जबकि मुस्लिम आवर मोहद्दिसीन के नज़दीक कवी नहीं है। नीज़ यह हदीस मुस्लिम से बवास्ता हय्या, अली (رضي الله عنه) से भी इस के क़रीब-क़रीब ही मर्वी है।

3729 - حَدَّثَنَا خَلاَّدُ بْنُ أَسْلَمَ الْبَغْدَادِيُّ، حَدَّثَنَا النَّضْرُ بْنُ شُمَيْلٍ، أَخْبَرَنَا عَوْفٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ هِنْدٍ الْجَمَلِيِّ قَالَ: قَالَ عَلِيٌّ كُنْتُ إِذَا سَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ أَعْطَانِي وَإِذَا سَكَتُّ ابْتَدَأَنِي.

3729 - अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन हिन्द बिन जमली बयान करते हैं कि अली (رضي الله عنه) ने फ़रमाया, मैं जब अल्लाह के रसूल (ﷺ) से माँगता तो आप मुझे देते और जब मैं ख़ामोश रहता तो आप मुझ से इब्तिदा करते।

ज़ईफ़: तखरीज के लिए देखिए हदीस नम्बर:3722.

3730 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا شَرِيكٌ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ عَقِيلٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لِعَلِيٍّ: أَنْتَ مِنِّي بِمَنْزِلَةِ هَارُونَ مِنْ مُوسَى إِلاَّ أَنَّهُ لاَ نَبِيَّ بَعْدِي.

3730 - सय्यदना साद बिन अबी वक़्क़ास (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने अली (رضي الله عنه) से फ़रमाया, "तुम मेरे साथ उस मर्तबे में हो जैसे हारून का मूसा के साथ ताल्लुक़ था मगर मेरे बाद कोई नबी नहीं है।"

बुख़ारी:3706. मुस्लिम:2404. इब्ने माजह: 115

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और कई तुरूक़ से बवास्ता सईद (बिन मुसय्यब) नबी (ﷺ) से मर्वी है, नीज़ यह हदीस यहया बिन सईद अंसारी से ग़रीब है।

3731 - حَدَّثَنَا القَاسِمُ بْنُ دِينَارٍ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، عَنْ عَبْدِ السَّلاَمِ بْنِ حَرْبٍ، عَنْ

3731 - सय्यदना जाबिर (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने अली (رضي الله عنه) से फ़रमाया, "तुम मेरी तरफ़ से उसी मुकाम पर हो जिस पर

يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِعَلِيٍّ: أَنْتَ مِنِّي بِمَنْزِلَةِ هَارُونَ مِنْ مُوسَى إِلاَّ أَنَّهُ لاَ نَبِيَّ بَعْدِي.

मूसा की तरफ़ से हारून थे लेकिन मेरे बाद कोई नबी नहीं है।"

सहीह: अहमद:3/338. ज़िलालुल जन्ना:1348. तोहफतुल अशराफ़:2370.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस इस सनद से हसन ग़रीब है। नीज़ इस बारे में साद, ज़ैद बिन अरक़म, अबू हुरैरा और उम्मे सलमा (رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है।

3732 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حُمَيْدٍ الرَّازِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُخْتَارِ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ أَبِي بَلْجٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَمَرَ بِسَدِّ الأَبْوَابِ إِلاَّ بَابَ عَلِيٍّ.

3732 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने अली (رضي الله عنه) के दरवाज़े के अलावा (मस्जिद की तरफ़ खुलने वाले) तमाम दरवाजों को बंद करने का हुक्म दिया था।

सहीह: अहमद:1/330. तबरानी फिल कबीर: 12593. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफ़ा:4932.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है, हम इसे सिर्फ इसी तरीक़ से ही इस सनद के साथ शोबा से जानते हैं।

3733 - حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ الْجَهْضَمِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ جَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَخِي مُوسَى بْنُ جَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِيهِ جَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِيهِ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ عَنْ أَبِيهِ عَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ أَخَذَ بِيَدِ حَسَنٍ وَحُسَيْنٍ فَقَالَ: مَنْ أَحَبَّنِي وَأَحَبَّ هَذَيْنِ وَأَبَاهُمَا وَأُمَّهُمَا كَانَ مَعِي فِي دَرَجَتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

3733 - सय्यदना अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने हसन और हुसैन (رضي الله عنهما) का हाथ पकड़ कर फ़रमाया, "जिस ने मुझ से, इन दोनों से, इन के बाप और इनकी मां से मोहब्बत की तो वह क़यामत के दिन मेरे साथ मेरे ही मुक़ाम में होगा।"

ज़ईफ़: तबरानी फिस्सगीर: 960. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:3122.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है, हम इसे सिर्फ इसी सनद से ही मुहम्मद बिन जाफ़र से जानते हैं।

3734 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضی اللہ) रिवायत करते हैं कि सब से पहले जिस ने नमाज़ पढ़ी थी वह अली (رضی اللہ) थे।

सहीह: अहमद:1/373. तयालिसी:2753. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफ़ा:4932.

3734 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُخْتَارِ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ أَبِي بَلْجٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: أَوَّلُ مَنْ صَلَّى عَلِيٌّ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस ग़रीब है, हम इसे शोबा से बावस्ता अबू बल्ज ही जानते हैं वह भी सिर्फ इसी एक तरीक़ से ही जो कि मुहम्मद बिन हुमैद का तरीक़ है और अबू बल्ज का नाम यहया बिन अबी सुलैम है।

बअ़ज़ अहले इल्म कहते हैं: सब से पहले अबू बक्र सिद्दीक़ (رضی اللہ) ने इस्लाम क़ुबूल किया और अली ने जब इस्लाम क़ुबूल किया था तो वह आठ साल के थे और औरतों में सबसे पहले ख़दीजा (رضی اللہ) इस्लाम लायीं थीं।

3735 - सय्यदना जैद बिन अर्क़म (رضی اللہ) से रिवायत है कि सब से पहले अली (رضی اللہ) ने इस्लाम क़ुबूल किया था, अम्र बिन मुर्रा कहते हैं: मैंने इब्राहीम नखई से इसका ज़िक्र किया, तो उन्होंने इसका इन्कार किया और कहने लगे: सबसे पहले अबू बक्र सिद्दीक़ इस्लाम लाये थे।

सहीह: अहमद:4/368. तयालिसी:678.

3735 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالاَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ، عَنْ أَبِي حَمْزَةَ، رَجُلٍ مِنَ الأَنْصَارِ قَالَ: سَمِعْتُ زَيْدَ بْنَ أَرْقَمَ، يَقُولُ: أَوَّلُ مَنْ أَسْلَمَ عَلِيٌّ. قَالَ: عَمْرُو بْنُ مُرَّةَ،، فَذَكَرْتُ ذَلِكَ، لِإِبْرَاهِيمَ النَّخَعِيِّ، فَأَنْكَرَهُ وَقَالَ: أَوَّلُ مَنْ أَسْلَمَ أَبُو بَكْرٍ الصِّدِّيقُ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी(رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और अबू हम्ज़ा का नाम तल्हा बिन यज़ीद है।

3736 - सय्यदना अली (رضی اللہ) बयान करते हैं कि नबी (ﷺ) ने मुझ से फ़रमाया, जो कि उम्मी नबी थे "तुझ से सिर्फ मोमिन ही मोहब्बत करेगा और सिर्फ मुनाफ़िक़ ही तुझ से बुग़्ज़ (नफ़रत) रखेगा।" अदी बिन साबित कहते हैं: मैं उस दौर के लोगों में से हूँ जिनके लिए नबी (ﷺ) ने दुआ की थी।[1]

3736 - حَدَّثَنَا عِيسَى بْنُ عُثْمَانَ ابْنِ أَخِي يَحْيَى بْنِ عِيسَى الرَّمْلِيِّ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ عِيسَى الرَّمْلِيُّ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ، عَنْ زِرِّ بْنِ حُبَيْشٍ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ: لَقَدْ عَهِدَ إِلَيَّ النَّبِيُّ الأُمِّيُّ ﷺ أَنَّهُ لاَ يُحِبُّكَ إِلاَّ

مُؤْمِنٌ، وَلاَ يَبْغَضُكَ إِلاَّ مُنَافِقٌ قَالَ عَدِيُّ بْنُ ثَابِتٍ: أَنَا مِنَ الْقَرْنِ الَّذِي دَعَا لَهُمُ النَّبِيُّ ﷺ.

मुस्लिम:78. इब्ने माजह:78. निसाई:5014. अहमद: 1/84.

तौज़ीह: (1) तीन अदवार जिन्हें नबी (ﷺ) ने ख़ैरुल कुरून (बेहतरीन अदवार) क़रार दिया था यानी सहाबा ताबेईन और तबा ताबेईन अदी बिन साबित का शुमार तबा ताबेईन में होता है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है

3737 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، وَيَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ وَغَيْرُ وَاحِدٍ، قَالُوا: حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، عَنْ أَبِي الْجَرَّاحِ قَالَ: حَدَّثَنِي جَابِرُ بْنُ صُبْحٍ، قَالَ: حَدَّثَتْنِي أُمُّ شَرَاحِيلَ، قَالَتْ: حَدَّثَتْنِي أُمُّ عَطِيَّةَ، قَالَتْ: بَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ جَيْشًا فِيهِمْ عَلِيٌّ، قَالَتْ: فَسَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَهُوَ رَافِعٌ يَدَيْهِ يَقُولُ: اللَّهُمَّ لاَ تُمِتْنِي حَتَّى تُرِيَنِي عَلِيًّا.

3737 - सय्यदा उम्मे अतिय्या (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि नबी (ﷺ) ने एक लश्कर रवाना फ़रमाया जिनमें अली (رضي الله عنه) भी थे। कहती हैं: फिर मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को अपने हाथ उठा कर दुआ करते हुए सुना: "ऐ अल्लाह! तू मुझे फौत न करना जब तक मुझे अली न दिखा दे।"

ज़ईफ़: तबरानी फिल कबीर: 25/168. हिदायतुर्रूवात: 6045.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है, हम इसे सिर्फ इसी सनद से जानते हैं।

मल्हूज़ा (नोट): सय्यदना अली (رضي الله عنه) मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा और दामादे रसूल (ﷺ) हैं, नबी (ﷺ) को उन से बहुत मोहब्बत थी कुतुबे अहादीस में सब से कम मनाक़िब उनके ही मिलते हैं और उसकी वजह यह है कि राफ़िज़ियों ने आप (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल में बहुत कुछ अपनी तरफ़ से मिला दिया इसलिए एहतियातन मोहद्दिसीन ने बहुत कम रिवायात ज़िक्र की हैं इसका अंदाजा आप इस से लगा सकते हैं कि इमाम तिर्मिज़ी ने अली (رضي الله عنه) के मनाक़िब में 26 अहादीस ज़िक्र की हैं जिन में 15 अहादीस ज़ईफ़ हैं।

21 بَابُ مَنَاقِبِ أَبِي مُحَمَّدٍ طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

21 - सय्यदना अबू मुहम्मद तल्हा बिन उबैदुल्लाह (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

3738 - حَدَّثَنَا أَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ بُكَيْرٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ يَحْيَى بْنِ عَبَّادِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ أَبِيهِ،

3738 - ज़ुबैर (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि उहद के दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) के जिस्मे मुबारक पर दो ज़िरहें थीं, आप एक चट्टान पर चढ़ने लगे तो न चढ़ सके, चुनांचे आप ने तल्हा (رضي الله عنه) को नीचे

عَنْ جَدِّهِ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنِ الزُّبَيْرِ، قَالَ: كَانَ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ يَوْمَ أُحُدٍ دِرْعَانِ فَنَهَضَ إِلَى صَخْرَةٍ، فَلَمْ يَسْتَطِعْ فَأَقْعَدَ تَحْتَهُ طَلْحَةَ، فَصَعِدَ النَّبِيُّ ﷺ حَتَّى اسْتَوَى عَلَى الصَّخْرَةِ، فَقَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: أَوْجَبَ طَلْحَةُ.

बिठाया, फिर नबी (ﷺ) चढ़े यहाँ तक कि चट्टान पर पहुँच गए, कहते हैं: मैंने नबी (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "तल्हा ने (अपने ऊपर जन्नत) वाजिब कर ली है।"

हसन: तखरीज के लिए देखिये हदीस नम्बर: 1692.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3739 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا صَالِحُ بْنُ مُوسَى، عَنِ الصَّلْتِ بْنِ دِينَارٍ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، قَالَ: قَالَ جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَنْظُرَ إِلَى شَهِيدٍ يَمْشِي عَلَى وَجْهِ الأَرْضِ فَلْيَنْظُرْ إِلَى طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ اللَّهِ. هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ، لاَ نَعْرِفُهُ إِلاَّ مِنْ حَدِيثِ الصَّلْتِ.

3739 - सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आप फ़रमा रहे थे: "जो शख़्स ज़मीन पर चलते हुए शहीद को देखना चाहे तो वह तल्हा बिन उबैदुल्लाह को देख ले।"

सहीह: इब्ने माजह: 125. अस-सिलसिला अस-सहीहा: 125.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है, हम इसे सल्त बिन दीनार के तरीक़ से ही जानते हैं, और बअ़ज़ उलमा ने सल्त बिन दीनार पर जरह करते हुए इसे ज़ईफ़ कहा है, नीज़ मोहद्दिसीन ने सालेह बिन मूसा के हाफ़िज़े की वजह से उसके बारे में कलाम भी किया है।

3740 - حَدَّثَنَا عَبْدُ الْقُدُّوسِ بْنُ مُحَمَّدٍ الْعَطَّارُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَاصِمٍ، عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ يَحْيَى بْنِ طَلْحَةَ، عَنْ عَمِّهِ مُوسَى بْنِ طَلْحَةَ، قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى مُعَاوِيَةَ، فَقَالَ: أَلاَ أُبَشِّرُكَ؟ سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: طَلْحَةُ مِمَّنْ قَضَى نَحْبَهُ.

3740 - सय्यदना अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मेरे कान ने रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़बाने मुबारक से सुना आप(ﷺ) फ़रमा रहे थे: "तल्हा और ज़ुबैर जन्नत में मेरे पड़ोसी होंगे।"

हसन: हाकिम:3/365. उकैली फी ज़ोफा: 4/294. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:2311. हिदायतुर्रूवात: 6068.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है, हम इसे सिर्फ इसी तरीक़ से जानते हैं।

3741 - حَدَّثَنَا أَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنُ مَنْصُورٍ العَنَزِيُّ، عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَلْقَمَةَ اليَشْكُرِيِّ، قَالَ: سَمِعْتُ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ، قَالَ: سَمِعَتْ أُذُنِي مِنْ فِي رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يَقُولُ: طَلْحَةُ وَالزُّبَيْرُ جَارَايَ فِي الجَنَّةِ.

3741 - मूसा बिन तल्हा बयान करते हैं कि मैं मुआविया (رضي الله عنه) के पास गया तो उन्होंने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें खुशखबरी न दूं? मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आप फ़रमा रहे थे: "तल्हा उन लोगों में से है जिन्होंने अपना अहद पूरा कर दिया है।"

ज़ईफ़: तखरीज के लिए देखिये हदीस नम्बर:3202.

3742 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ مُحَمَّدُ بْنُ العَلَاءِ، قَالَ: حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ بُكَيْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا طَلْحَةُ بْنُ يَحْيَى، عَنْ مُوسَى، وَعِيسَى ابْنَيْ طَلْحَةَ، عَنْ أَبِيهِمَا طَلْحَةَ، أَنَّ أَصْحَابَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالُوا: لأَعْرَابِيٍّ جَاهِلٍ: سَلْهُ عَمَّنْ قَضَى نَحْبَهُ مَنْ هُوَ؟ وَكَانُوا لاَ يَجْتَرِئُونَ عَلَى مَسْأَلَتِهِ يُوَقِّرُونَهُ وَيَهَابُونَهُ، فَسَأَلَهُ الأَعْرَابِيُّ، فَأَعْرَضَ عَنْهُ، ثُمَّ سَأَلَهُ فَأَعْرَضَ عَنْهُ، ثُمَّ سَأَلَهُ فَأَعْرَضَ عَنْهُ، ثُمَّ إِنِّي اطَّلَعْتُ مِنْ بَابِ الْمَسْجِدِ وَعَلَيَّ ثِيَابٌ خُضْرٌ، فَلَمَّا رَآنِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: أَيْنَ السَّائِلُ عَمَّنْ قَضَى نَحْبَهُ؟ قَالَ الأَعْرَابِيُّ: أَنَا يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ: هَذَا مِمَّنْ قَضَى نَحْبَهُ.

3742 - सय्यदना तल्हा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के सहाबा ने एक जाहिल आराबी से कहा: तुम आप (ﷺ) से उन लोगों के बारे में सवाल करो जिन्होंने अपना अहद निभा दिया है कि वह कौन हैं? जब कि वह लोग ख़ुद नबी (ﷺ) की तौक़ीर और आप की हैबत की वजह से आप से सवाल करने की जुर्अत नहीं करते थे, आराबी ने आप(ﷺ) से सवाल किया, तो आप(ﷺ) ने उस से अपना चेहरा फेर लिया, उस ने फिर सवाल किया तो आप ने अपना चेहरा फेर लिया, फिर मैंने मस्जिद के दरवाज़े से अन्दर झांका मुझ पर सब्ज लिबास था, तो नबी (ﷺ) ने मुझे देख कर फ़रमाया, "अहद निभाने वाले के बारे में पूछने वाला कहाँ है?" आराबी ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मैं हूँ, आप ने फ़रमाया, "यह (तल्हा) अहद निभाने वालों में से है।"

हसन सहीह: तखरीज के लिए देखिए हदीस नम्बर:3202.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है, हम इसे बवास्ता अबू कुरैब यूनुस बिन बुकैरे से जानते हैं, नीज़ बहुत से किबारे मोहद्दिसीन ने इस हदीस को अबू कुरैब से रिवायत किया है, मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी भी इस हदीस को अबू कुरैब से रिवायत करते हैं और उन्होंने इसे किताबुल फवाइद में भी नक़ल किया है।

22 - सय्यदना ज़ुबैर बिन अव्वाम (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

22 بَابُ مَنَاقِبِ الزُّبَيْرِ بْنِ الْعَوَّامِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

3743 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنِ الزُّبَيْرِ، قَالَ: جَمَعَ لِي رَسُولُ اللهِ ﷺ أَبَوَيْهِ يَوْمَ قُرَيْظَةَ فَقَالَ: بِأَبِي وَأُمِّي.

3743 - सय्यदना ज़ुबैर बिन अव्वाम (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि बनू क़ुरैज़ा के मुहासरे के दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मेरे लिए अपने मां बाप को जमा करते हुए फ़रमाया, मेरा बाप और मेरी मां तुझ पर फ़िदा हों।"

बुख़ारी:3720. मुस्लिम:2416. इब्ने माजह्:123.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

23- हर नबी का एक मददगार साथी होता है।

23- بَاب: إِنَّ لِكُلِّ نَبِيٍّ حَوَارِيًّا.

3744 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرٍو، قَالَ: حَدَّثَنَا زَائِدَةُ، عَنْ عَاصِمٍ، عَنْ زِرٍّ، عَنْ عَلِيٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ لِكُلِّ نَبِيٍّ حَوَارِيًّا وَإِنَّ حَوَارِيِّي الزُّبَيْرُ بْنُ الْعَوَّامِ.

3744 - अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "हर नबी का एक साथी और हामी[1] होता था, मेरा साथी ज़ुबैर बिन अव्वाम है।"

हसन सहीह: अहमद: 1/89. हाकिम:3/367. तयालिसी:163. सहीहुल जामे:2155.

तौज़ीह: حَوَارِي: साथी और हामी व मददगार इसकी जमा حواريون आती है ईसा (عليه السلام) के सहाबा को भी حَوَارِي कहा गया है। (देखिये: अल-मोजमुल वसीत,पृ.242)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और حَوَارِي मददगार को कहा जाता है। इब्ने अबी उमर कहते हैं: सुफ़ियान बिन उयय्ना का भी यही कौल है कि حَوَارِي मददगार होता है।

24- बाब: साबिक़ा हदीस वाला किस्सा के बारे में आप (ﷺ) का फ़रमान।

24- بَاب: قوله صلي الله عليه وسلم كالذي قبله مع قصة فيه.

3745 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ الْحَفَرِيُّ، وَأَبُو نُعَيْمٍ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ

3745 - सय्यदना जाबिर (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना:

مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: إِنَّ لِكُلِّ نَبِيٍّ حَوَارِيًّا وَإِنَّ حَوَارِيَّ الزُّبَيْرُ بْنُ الْعَوَّامِ وَزَادَ أَبُو نُعَيْمٍ فِيهِ: يَوْمَ الأَحْزَابِ. قَالَ: مَنْ يَأْتِينَا بِخَبَرِ الْقَوْمِ قَالَ الزُّبَيْرُ أَنَا. قَالَهَا ثَلَاثًا. قَالَ الزُّبَيْرُ أَنَا.

"हर नबी का एक मददगार होता है और मेरा साथी जुबैर बिन अव्वाम है।"
बुख़ारी:2846. मुस्लिम:2415. इब्ने माजह:122.

अबू नुऐम ने इसमें यह इज़ाफ़ा भी किया है कि आप (ﷺ) ने अहज़ाब के दिन फ़रमाया, "लोगों के हालात की ख़बर कौन लायेगा?" जुबैर ने कहा: मैं, आप(ﷺ) ने यह बात तीन दफ़ा फ़रमाई, तो जुबैर ने ही जवाव दिया कि मैं।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3746 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ صَخْرِ بْنِ جُوَيْرِيَةَ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، قَالَ: أَوْصَى الزُّبَيْرُ، إِلَى ابْنِهِ عَبْدِ اللهِ صَبِيحَةَ الْجَمَلِ، فَقَالَ: مَا مِنِّي عُضْوٌ إِلاَّ وَقَدْ جُرِحَ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ حَتَّى انْتَهَى ذَلِكَ إِلَى فَرْجِهِ.

3746 - हिशाम बिन उर्वा बयान करते हैं कि जंगे जमल की सुबह जुबैर (رضي الله عنه) ने अपने बेटे अब्दुल्लाह से कहा: मेरे जिस्म का कोई अज्व (अंग) ऐसा नहीं जो रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ मिलकर जिहाद करते हुए ज़ख्मी न हुआ हो हत्ता (यहाँ तक) कि मेरी शर्मगाह भी।

सहीहुल इस्नाद।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हम्माद बिन ज़ैद के तरीक़ से हसन ग़रीब है।

25 بَابُ مَنَاقِبِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفِ بْنِ عَبْدِ عَوْفٍ الزُّهْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

25- सय्यदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ अज़्ज़ोहरी (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

3747 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ حُمَيْدٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَبُو بَكْرٍ فِي الْجَنَّةِ، وَعُمَرُ فِي الْجَنَّةِ، وَعُثْمَانُ فِي الْجَنَّةِ،

3747 - अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अबू बक्र जन्नत में होंगे, उमर जन्नत में होंगे, उस्मान जन्नत में होंगे, अली जन्नत में होंगे, तल्हा जन्नत में होंगे, जुबैर जन्नत में होंगे, अब्दुर्रहमान बिन औफ़ जन्नत में होंगे, साद बिन

وَعَلِيٌّ فِي الجَنَّةِ، وَطَلْحَةُ فِي الجَنَّةِ وَالزُّبَيْرُ فِي الجَنَّةِ، وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ فِي الجَنَّةِ، وَسَعْدٌ فِي الجَنَّةِ، وَسَعِيدٌ فِي الجَنَّةِ، وَأَبُو عُبَيْدَةَ بْنُ الجَرَّاحِ فِي الجَنَّةِ.

अबी वक़्क़ास जन्नत में होंगे, सईद बिन ज़ैद जन्नत में होंगे और अबू उबैदा बिन जर्राह भी जन्नत में होंगे।"(1)

सहीह: अहमद: 1/193. इब्ने हिब्बान:7002. अबू याला:835. हिदायतुर्रूवात: 6064.

तौज़ीह: ज़बाने रिसालत से जन्नत की बशारत पाने वाले उन दस अजीमुल मर्तबा और खुशनसीब सहाबा को इस्तिलाह में عشرة مبشرة (यानी दस जन्नती सितारे رضي الله عنهم) भी कहा जाता है।

वज़ाहत: अबू ईसा कहते हैं: हमें अबू मुस्अब ने अब्दुल अज़ीज़ बिन मुहम्मद से उन्होंने अब्दुर्रहमान बिन हुमैद के ज़रिए उनके बाप से बवास्ता सईद बिन ज़ैद नबी (ﷺ) से हदीस बयान की है इसमें अब्दुर्रहमान बिन औफ़ का ज़िक्र नहीं किया।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस अब्दुर्रहमान बिन हुमैद से उन के बाप के वास्ते से सईद बिन ज़ैद के ज़रिए भी नबी (ﷺ) से इसी तरह मर्वी है और यह पहली हदीस से ज़्यादा सहीह है।

3748 - حَدَّثَنَا صَالِحُ بْنُ مِسْمَارٍ الْمَرْوَزِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي فُدَيْكٍ، عَنْ مُوسَى بْنِ يَعْقُوبَ، عَنْ عُمَرَ بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ حُمَيْدٍ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ سَعِيدَ بْنَ زَيْدٍ، حَدَّثَهُ فِي نَفَرٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: عَشَرَةٌ فِي الجَنَّةِ: أَبُو بَكْرٍ فِي الجَنَّةِ، وَعُمَرُ فِي الجَنَّةِ، وَعُثْمَانُ وَعَلِيٌّ وَالزُّبَيْرُ وَطَلْحَةُ وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ وَأَبُو عُبَيْدَةَ وَسَعْدُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ. قَالَ: فَعَدَّ هَؤُلَاءِ التِّسْعَةَ وَسَكَتَ عَنِ العَاشِرِ، فَقَالَ القَوْمُ: نَنْشُدُكَ اللَّهَ يَا أَبَا الأَعْوَرِ مَنِ العَاشِرُ؟ قَالَ: نَشَدْتُمُونِي بِاللَّهِ، أَبُو الأَعْوَرِ فِي الجَنَّةِ.

3748 - सय्यदना सईद बिन ज़ैद (رضي الله عنه) ने कुछ लोगों में बैठे हुए बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "दस आदमी जन्नत में होंगे, अबू बक्र जन्नत में होंगे उमर जन्नत में होंगे अली, उस्मान, ज़ुबैर, तल्हा, अब्दुर्रहमान,अबू उबैदा और साद बिन अबी वक़्क़ास जन्नत में होंगे।"

सहीह: हाकिम: 3/440. निसाई फ़िल कुबरा:8195.

रावी कहते हैं: उन्होंने उन नौ आदमियों का ज़िक्र किया और दसवें पर ख़ामोश हो गए, तो लोगों ने कहा: ऐ अबू आवर! हम आप को अल्लाह का वास्ता देकर पूछते हैं कि दसवां कौन है? आप ने फ़रमाया, तुम

लोगों ने मुझे अल्लाह का वास्ता दे दिया है अबू आवर भी जन्नत में होगा।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: अबू आवर, सय्यदना सईद बिन ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल ही हैं और मैंने इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल से सुना वह फ़रमा रहे थे: यह हदीस पहली हदीस से ज़्यादा सहीह है।

3749 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا بَكْرُ بْنُ مُضَرَ، عَنْ صَخْرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقُولُ: إِنَّ أَمْرَكُنَّ لَمِمَّا يُهِمُّنِي بَعْدِي، وَلَنْ يَصْبِرَ عَلَيْكُنَّ إِلاَّ الصَّابِرُونَ. قَالَ: ثُمَّ تَقُولُ عَائِشَةُ، فَسَقَى اللَّهُ أَبَاكَ مِنْ سَلْسَبِيلِ الجَنَّةِ، تُرِيدُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ عَوْفٍ، وَقَدْ كَانَ وَصَلَ أَزْوَاجَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَالٍ، يُقَالُ: بِيعَتْ بِأَرْبَعِينَ أَلْفًا.

3749 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि अल्लाह के रसूल (ﷺ) फ़रमाया करते थे: "मेरे बाद मुझे तुम्हारे मामलात की फ़िक्र है और तुम्हारे हुक़ूक़ अदा करने और ख़िदमत करने के हवाले से सब्र करने वाले ही सब्र कर सकेंगे।" अबू साद कहते हैं: फिर सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला तुम्हारे बाप को जन्नत के सल्सबील चश्मे से पिलाए। उनकी मुराद अब्दुर्रहमान बिन औफ़ थे। उन्होंने नबी (ﷺ) की अज़्वाजे मुतह्हरात को माल पहुंचाया था जो चालीस हज़ार में फ़रोख्त हुआ था।

हसन: अहमद: 6/77. हाकिम:3/312. इब्ने हिब्बान:6995. हिदायतुर्रूवात: 6075.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3750 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عُثْمَانَ البَصْرِيُّ، وَإِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ حَبِيبٍ البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا قُرَيْشُ بْنُ أَنَسٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ عَوْفٍ، أَوْصَى بِحَدِيقَةٍ لأُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِينَ بِيعَتْ بِأَرْبَعِ مِائَةِ أَلْفٍ.

3750 - अबू सलमा बयान करते हैं कि अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने उम्महातुल मोमिनीन के लिए एक बाग़ की वसीयत की थी जो चार लाख में फ़रोख्त हुआ था।

हसनुल इस्नाद पिछली हदीस की तरह: हाकिम: 3/311, 312.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

26- सय्यदना अबू इस्हाक़ साद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि०) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब और अबू वक़्क़ास का नाम मालिक बिन वहीब है।

26 بَابُ مَنَاقِبِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ. وَاسْمُ أَبِي وَقَّاصٍ: مَالِكُ بْنُ وَهِيبٍ

3751 - सय्यदना साद (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने दुआ की "ऐ अल्लाह! साद जब भी तुझ से दुआ करे तो उसकी दुआ को क़ुबूल फ़रमाना।"

सहीह: हाकिम: 3/499. इब्ने हिब्बान:6990. अहमद फी फ़ज़ाइले सहाबा:1308. हिदायतुर्रूवात: 6070.

3751 - حَدَّثَنَا رَجَاءُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْعُذْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْنٍ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ، عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ سَعْدٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: اللَّهُمَّ اسْتَجِبْ لِسَعْدٍ إِذَا دَعَاكَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रह०) फ़रमाते हैं: यह हदीस बवास्ता इस्माईल, कैस से मर्वी है कि नबी (सल्ल०) ने दुआ की "ऐ अल्लाह! साद जब भी तुझ से दुआ करे तो उसकी दुआ को क़ुबूल फ़रमाना।" और यह ज़्यादा सहीह है।

3752 - सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि०) रिवायत करते हैं साद (रज़ि०) आए तो नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, "यह मेरे मामूं हैं कोई आदमी मुझे (इन जैसा) मामूं दिखाए।"

सहीह: हाकिम: 3/498. तबरानी फ़िल कबीर:323. अबू याला:2049. इब्ने साद:3/137.

3752 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، وَأَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، قَالاَ: حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ مُجَالِدٍ، عَنْ عَامِرٍ الشَّعْبِيِّ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: أَقْبَلَ سَعْدٌ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: هَذَا خَالِي فَلْيُرِنِي امْرُؤٌ خَالَهُ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रह०) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे मुजालिद के तरीक़ से ही जानते हैं, साद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि०) बनू ज़ोहरा से थे और आप की वालिदा भी बनू ज़ोहरा से थीं इसी लिए नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, "यह मेरे मामूं हैं।"

3753 - सय्यदना अली (रज़ि०) फ़रमाते हैं: रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने साद के अलावा किसी के लिए अपने मां बाप को जमा नहीं किया, आप ने उहुद के दिन उनसे फ़रमाया, "तीर चलाओ तुझ पर मेरे मां बाप क़ुर्बान हों।" और आप ने उन से

3753 - حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ الصَّبَّاحِ الْبَزَّارُ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ زَيْدٍ، وَيَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، سَمِعَا سَعِيدَ بْنَ

الْمُسَيَّبِ، يَقُولُ: قَالَ عَلِيٌّ: مَا جَمَعَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَبَاهُ وَأُمَّهُ لأَحَدٍ إِلاَّ لِسَعْدٍ، قَالَ لَهُ يَوْمَ أُحُدٍ: ارْمِ فِدَاكَ أَبِي وَأُمِّي، وَقَالَ لَهُ: ارْمِ أَيُّهَا الغُلاَمُ الحَزَوَّرُ.

फ़रमाया, "ऐ ताक़तवर लड़के तीर चला।"

मुन्कर(بذكر الغلام الحذو ر) तखरीज के लिए देखिए: हदीस नम्बर:2829.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और इस बारे में साद (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है, नीज़ इस हदीस को कई रावियों ने यहया बिन सईद से बवास्ता सईद बिन मुसय्यब, साद (ﷺ) से रिवायत किया है।

3754 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ بْنُ سَعْدٍ، وَعَبْدُ العَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، قَالَ: جَمَعَ لِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَبَوَيْهِ يَوْمَ أُحُدٍ.

3754 - सय्यदना साद बिन अबी वक़्क़ास (ﷺ) रिवायत करते हैं कि उहुद के दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मेरे लिए अपने मां बाप को जमा किया।

बुख़ारी:3725. मुस्लिम:2412. इब्ने माजह:130. मजीद देखिए हदीस नमबर:2830.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और यह हदीस अब्दुल्लाह बिन शद्दाद बिन अल्हाद से बवास्ता अली बिन अबी तालिब (ﷺ) भी नबी करीम (ﷺ) से मर्वी है।

3755 - حَدَّثَنَا بِذَلِكَ مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ شَدَّادٍ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ، قَالَ: مَا سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُفَدِّي أَحَدًا بِأَبَوَيْهِ إِلاَّ لِسَعْدٍ، فَإِنِّي سَمِعْتُهُ يَقُولُ يَوْمَ أُحُدٍ: ارْمِ سَعْدُ فِدَاكَ أَبِي وَأُمِّي.

3755 - सय्यदना अली बिन अबी तालिब (ﷺ) रिवायत करते हैं कि मैंने नबी (ﷺ) को साद के अलावा किसी शख़्स पर अपने मां बाप फ़िदा करते नहीं सुना, मैंने जंगे उहुद के दिन आप (ﷺ) से सुना आप फ़रमा रहे थे: "ऐ साद! तीर चलाओ तुझ पर मेरे मां बाप कुर्बान हों।"

सहीह: बुख़ारी:2905. मुस्लिम:2411. इब्ने माजह:129. अहमद:1/92.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

Sherkhan
9825 696 131

3756 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) (किसी जंग से) मदीना में आए तो आप रात भर न सो सके चुनांचे आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "काश कोई नेक आदमी आज मेरी पहरेदारी करे।" फ़रमाती हैं हम उसी हालत पर ही थे कि अचानक हम ने अस्लहा की आवाज़ सुनी, तो आप ने पूछा: " कौन हो?" तो उस ने कहा: (मैं) साद बिन अबी वक़्क़ास हूँ। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पूछा कैसे आए हो?" साद ने अर्ज़ किया, मेरे दिल में रसूलुल्लाह (ﷺ) के बारे में डर पैदा हुआ तो मैं उनकी पहरेदारी के लिए आया हूँ, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन के लिए दुआ की फिर आप सो गए।

3756 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَامِرِ بْنِ رَبِيعَةَ، أَنَّ عَائِشَةَ، قَالَتْ: سَهِرَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَقْدَمَهُ الْمَدِينَةَ لَيْلَةً. قَالَ: لَيْتَ رَجُلاً صَالِحًا يَحْرُسُنِي اللَّيْلَةَ. قَالَتْ: فَبَيْنَمَا نَحْنُ كَذَلِكَ إِذْ سَمِعْنَا خَشْخَشَةَ السِّلاَحِ، فَقَالَ: مَنْ هَذَا؟ فَقَالَ: سَعْدُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ، فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا جَاءَ بِكَ؟ فَقَالَ سَعْدٌ: وَقَعَ فِي نَفْسِي خَوْفٌ عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَجِئْتُ أَحْرُسُهُ، فَدَعَا لَهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، ثُمَّ نَامَ.

बुख़ारी:2885. मुस्लिम:2410. अहमद:6/ 140.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

27 - सय्यदना अबू आवर जिनका नाम सईद बिन ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल है के फ़ज़ाइल व मनाकिब।

27 بَابُ مَنَاقِبِ أَبِي الأَعْوَرِ، وَاسْمُهُ سَعِيدِ بْنِ زَيْدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ نُفَيْلٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

3757 - सय्यदना सईद बिन ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल से रिवायत है कि उन्होंने फ़रमाया, मैं नौ आदमियों के बारे में गवाही देता हूँ कि वह जन्नती हैं और अगर मैं दस्वीं पर गवाही दे दूं तो मुझे गुनाह नहीं होगा, पूछा गया वह कैसे? कहने लगे:हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ हिरा पर थे कि आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ हिरा ठहर जा!

3757 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا حُصَيْنٌ، عَنْ هِلاَلِ بْنِ يَسَافٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ ظَالِمٍ الْمَازِنِيِّ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ زَيْدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ نُفَيْلٍ، أَنَّهُ قَالَ: أَشْهَدُ عَلَى التِّسْعَةِ أَنَّهُمْ فِي الجَنَّةِ، وَلَوْ شَهِدْتُ عَلَى العَاشِرِ لَمْ آثَمْ. قِيلَ: وَكَيْفَ ذَاكَ؟ قَالَ:

كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ بِحِرَاءَ، فَقَالَ: اثْبُتْ حِرَاءُ، فَإِنَّهُ لَيْسَ عَلَيْكَ إِلاَّ نَبِيٌّ أَوْ صِدِّيقٌ أَوْ شَهِيدٌ. قِيلَ: وَمَنْ هُمْ؟ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَأَبُو بَكْرٍ، وَعُمَرُ، وَعُثْمَانُ، وَعَلِيٌّ، وَطَلْحَةُ، وَالزُّبَيْرُ، وَسَعْدٌ، وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ. قِيلَ فَمَنِ الْعَاشِرُ؟ قَالَ: أَنَا.

तुम्हारे ऊपर नबी है सिद्दीक़ है या शहिद" कहा गया: कौन- कौन थे? कहने लगे: अल्लाह के रसूल (ﷺ) अबू बक्र, उमर, उस्मान, अली, तल्हा, ज़ुबैर, साद और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (رضي الله عنهم) कहा गया दस्वाँ कौन था? फ़रमाया, मैं था।

सहीह: अबू दाऊद:4648. इब्ने माजह:134. अहमद:1/188. हाकिम:3/316.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और कई तुरूक़ से बवास्ता सईद बिन ज़ैद, नबी करीम (ﷺ) से मर्वी है।

अबू ईसा कहते हैं: हमें अहमद बिन मुनीअ ने, उन्हें हज्जाज बिन मुहम्मद ने, उन्हें शोबा ने हुर बिन सबाह से बवास्ता अब्दुर्रहमान बिन अख़्नस, सईद बिन ज़ैद (رضي الله عنه) से नबी (ﷺ) की इस मफ़हूम की हदीस बयान की है। (अख़्रजहू अबू दाऊद:4649. व अहमद:1/188)

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।

3757 -)(١) حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ قَالَ : حَدَّثَنَا وَكِيعٌ قَالَ : حَدَّثَنَا سُفْيَانُ ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ ، عَنْ صِلَةَ بْنِ زُفَرَ عَنْ حُذَيْفَةَ بْنِ الْيَمَانِ ، قَالَ : جَاءَ الْعَاقِبُ وَالسَّيِّدُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ ، فَقَالاَ : ابْعَثْ مَعَنَا أَمِينَكَ ، فَقَالَ : فَإِنِّي سَأَبْعَثُ مَعَكُمْ أَمِينًا حَقَّ أَمِينٍ ، فَأَشْرَفَ لَهَا النَّاسُ ، فَبَعَثَ أَبَا عُبَيْدَةَ قَالَ : وَكَانَ أَبُو إِسْحَاقَ ، إِذَا حَدَّثَ بِهَذَا الْحَدِيثِ عَنْ صِلَةَ ، قَالَ : سَمِعْتُهُ مُنْذُ سِتِّينَ سَنَةً

3757 – (1) सय्यदना हुज़ैफ़ा बिन यमान (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि आक़िब और सय्यद ने नबी (ﷺ) के पास आकर अर्ज़ किया, आप(ﷺ) हमारे साथ अपना अमीन भेजें, आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "मैं अन्क़रीब तुम्हारे साथ अपना अमीन भेजूंगा जो यक़ीनन अमीन कहलाने का हक़दार है।" चुनांचे लोग इस ख़िदमत की ख़्वाहिश करने लगे। फिर आप(ﷺ) ने अबू उबैदा (رضي الله عنه) को भेजा।

बुख़ारी 3745. मुस्लिम:2420.

सुफ़ियान कहते हैं: अबू इस्हाक़ जब इस हदीस को सिला से बयान करते तो कहते: मैंने उन से साठ साल से पहले यह हदीस सुनी थी।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और इब्ने उमर (رضي الله عنه) नबी करीम

(ﷺ) से रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "हर उम्मत का एक अमीन होता है और मेरी उम्मत का अमीन अबू उबैदा बिन जर्राह (رضي الله عنه) है।"

3757 -(٢) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ أَخْبَرَنَا سَلْمُ بْنُ قُتَيْبَةَ وَ أَبُو دَاوُدَ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: قَالَ حُذَيْفَةُ قَلْبُ صِلَةَ بْنِ زُفَرَ مِنْ ذَهَبٍ

3757 - (2) अबू इस्हाक़ से रिवायत है कि हुज़ैफा (رضي الله عنه) ने फ़रमाया, "सिला बिन ज़ुफ़र का दिल सोने का है।

ज़ईफ़: यह कौल इन्किता की वजह से ज़ईफ़ है।

3757 -(٣) حدثنا أحمد الدورقي أخبرنا إسمعيل بن إبراهيم عن الجريري عن عبد الله بن شقيق قال قلت لعائشة أي أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم كان أحب إليه قالت أبو بكر قلت ثم من قالت ثم عمر قلت ثم من قالت ثم أبو عبيدة بن الجراح قلت ثم من فسكتت

3757 - (3) अब्दुल्लाह बिन शकीक (رحمه الله) बयान करते हैं कि मैंने सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) से दर्याफ़्त किया कि नबी (ﷺ) का कौनसा सहाबी आप(ﷺ) को सब से ज़्यादा महबूब था? फ़रमाने लगीं: अबू बक्र (رضي الله عنه) मैंने कहा: फिर कौन? फ़रमाया, "फिर उमर (رضي الله عنه) मैंने कहा: फिर कौन? फ़रमाया, "फिर अबू उबैदा बिन जर्राह (رضي الله عنه) रावी कहते हैं: मैंने कहा: फिर कौन? तो वह ख़ामोश हो गई।

सहीह: पिछली हदीस की तरह।

3757 -(٤) أَخْبَرَنَا قُتَيْبَةُ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ سُهَيْلِ بْنِ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، رضى الله عنه قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ "((نِعْمَ الرَّجُلُ أَبُو بَكْرٍ نِعْمَ الرَّجُلُ عُمَرُ نِعْمَ الرَّجُلُ أَبُو عُبَيْدَةَ بْنُ الْجَرَّاحِ))

3757 - (4) सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अबू बक्र, उमर और अबू उबैदा बिन जर्राह (رضي الله عنهم) अच्छे आदमी हैं।"

सहीह: निसाई: फ़िल कुब्रा: 8230.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है, हम इसे सुहैल के तरीक़ से ही जानते हैं।

मल्हूज़ा: हदीस नम्बर 3757 से मुल्हक़ मुन्दर्जा बाला (उपर दर्ज की गई) चार रिवायात हमारे तख़रीज़ वाले नुस्खें में दर्ज नहीं हैं लेकिन जामेअ तिर्मिज़ी के अरबी नुस्खे मत्बूआ दारुस्सलाम में यह रिवायात इसी तर्तीब के साथ हैं इसीलिए हम ने इस पर तख़रीज़ मोहतरम जनाब हाफ़िज़ ज़ुबैर अली जई (رحمه الله) की लगाई है।

28- सय्यदना अबुल फ़ज़्ल नबी (ﷺ) के चचा यानी अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब के फ़ज़ाइल व मनाक़िब

28 بَابُ مَنَاقِبِ أَبِي الْفَضْلِ عَمِّ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ الْعَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

3758 – सय्यदना अब्दुल मुत्तलिब बिन रबीया बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब से रिवायत है किअब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब (رضي الله عنه) गुस्से की हालत में रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए, मैं भी आप (ﷺ) के पास था। आपने फ़रमाया, "किस ने आप को गुस्सा दिलाया है?" कहने लगे: अल्लाह के रसूल (ﷺ)! कुरैश को हम से क्या दुख है? जब वह आपस में मिलते हैं तो बड़ी ख़न्दा पेशानी से मिलते हैं और जब हमें (यानी बनू हाशिम को) मिलते हैं तो उनका रवय्या और होता है। रावी कहते हैं: फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) को भी गुस्सा आया यहाँ तक कि आप(ﷺ) का चेहरा मुबारक सुर्ख़ हो गया। फ़रमाया, "उस ज़ात की क़सम जिस के हाथ में मेरी जान है किसी आदमी के दिल में ईमान उस वक़्त तक दाख़िल नहीं हो सकता यहाँ तक कि अल्लाह और उसके रसूल के लिए तुम से मोहब्बत न करने लगे।" फिर फ़रमाया, "ऐ लोगो! जिस ने मेरे चचा को तक्लीफ़ दी, तो उसने मुझे तक्लीफ़ दी इसलिए कि आदमी का चचा उसके बाप की तरह होता है।"

3758 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي زِيَادٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الْحَارِثِ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ الْمُطَّلِبِ بْنُ رَبِيعَةَ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، أَنَّ الْعَبَّاسَ بْنَ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، دَخَلَ عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُغْضَبًا وَأَنَا عِنْدَهُ، فَقَالَ: مَا أَغْضَبَكَ؟ قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ مَا لَنَا وَلِقُرَيْشٍ، إِذَا تَلَاقَوْا بَيْنَهُمْ تَلَاقَوْا بِوُجُوهٍ مُبْشَرَةٍ، وَإِذَا لَقُونَا لَقُونَا بِغَيْرِ ذَلِكَ، قَالَ: فَغَضِبَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى احْمَرَّ وَجْهُهُ، ثُمَّ قَالَ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لاَ يَدْخُلُ قَلْبَ رَجُلٍ الإِيمَانُ حَتَّى يُحِبَّكُمْ لِلَّهِ وَلِرَسُولِهِ، ثُمَّ قَالَ: يَا أَيُّهَا النَّاسُ مَنْ آذَى عَمِّي فَقَدْ آذَانِي فَإِنَّمَا عَمُّ الرَّجُلِ صِنْوُ أَبِيهِ.

ज़ईफ़: सिवाए इस कौल के ((عم الرجل)) अहमद: 1/207. हाकिम: 3/333. निसाई फ़िल कुब्रा: 8176. अस-सिलसिला अस-सहीहा: 806.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3759 - حَدَّثَنَا القَاسِمُ بْنُ زَكَرِيَّا الْكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ عَبْدِ الأَعْلَى، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: العَبَّاسُ مِنِّي وَأَنَا مِنْهُ.

3759 - अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "अब्बास मुझ से हैं और मैं अब्बास से हूँ।

ज़ईफ़: निसाई:4779. अस-सिलसिला अज़-ज़ईफा:2315. अहमद: 1/300. हाकिम:3/325.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है, हम इसे इस्राईल की सनद से ही जानते हैं।

3760 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الدَّوْرَقِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، قَالَ: سَمِعْتُ الأَعْمَشَ يُحَدِّثُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ، عَنْ أَبِي البَخْتَرِيِّ، عَنْ عَلِيٍّ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لِعُمَرَ فِي العَبَّاسِ: إِنَّ عَمَّ الرَّجُلِ صِنْوُ أَبِيهِ، وَكَانَ عُمَرُ كَلَّمَهُ فِي صَدَقَتِهِ.

3760 - अली (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी (ﷺ) ने अब्बास (رضي الله عنه) के बारे में उमर (رضي الله عنه) से फ़रमाया, "बेशक आदमी का चचा उसके बाप ही की तरह है।" उमर ने सदके से मुताल्लिक़ उन से कोई बात कही थी।

सहीह: अहमद:1/94. बैहक़ी:4/111. अबू याला:545. अस-सिलसिला अस-सहीहा:806.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3761 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الدَّوْرَقِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا شَبَابَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَرْقَاءُ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: العَبَّاسُ عَمُّ رَسُولِ اللهِ، وَإِنَّ عَمَّ الرَّجُلِ صِنْوُ أَبِيهِ، أَوْ مِنْ صِنْوِ أَبِيهِ.

3761 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, "अब्बास, अल्लाह के रसूल के चचा हैं और आदमी का चचा उस के बाप की तरह या उस के बाप के नस्ल से ही होता है।"

मुस्लिम:983. अबू दाऊद:1623. अहमद:2/322. अस-सिलसिला अस-सहीहा:806.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है, हम इसे इसी सनद से ही अबी ज़िनाद से जानते हैं।

3762 - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعِيدٍ الجَوْهَرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الوَهَّابِ بْنُ عَطَاءٍ، عَنْ ثَوْرٍ

3762 - अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने

بْنِ يَزِيدَ، عَنْ مَكْحُولٍ، عَنْ كُرَيْبٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِلْعَبَّاسِ: إِذَا كَانَ غَدَاةَ الاِثْنَيْنِ فَأْتِنِي أَنْتَ وَوَلَدُكَ حَتَّى أَدْعُوَ لَهُمْ بِدَعْوَةٍ يَنْفَعُكَ اللَّهُ بِهَا وَوَلَدَكَ، فَغَدَا وَغَدَوْنَا مَعَهُ فَأَلْبَسَنَا كِسَاءً ثُمَّ قَالَ: اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِلْعَبَّاسِ وَوَلَدِهِ مَغْفِرَةً ظَاهِرَةً وَبَاطِنَةً لاَ تُغَادِرُ ذَنْبًا، اللَّهُمَّ احْفَظْهُ فِي وَلَدِهِ.

अब्बास (رضي الله) से फ़रमाया, "सोमवार के दिन सुबह के वक़्त तुम और तुम्हारी औलाद मेरे पास आना, मैं उनके लिए एक ऐसी दुआ करूंगा जिस के साथ तुम्हें और तुम्हारी औलाद को नफ़ा देगा।" चुनांचे सुबह के वक़्त वह निकले हम भी उन के साथ निकले, तो आप(ﷺ) ने हमें एक कम्बल ओढ़ाया फिर दुआ की "ऐ अल्लाह! अब्बास और उसकी औलाद को ज़ाहिरी और बातिनी मग़्फ़िरत से बख़्श दे जो किसी गुनाह को न छोड़े। ऐ अल्लाह! उसकी औलाद में उसकी हिफाज़त फ़रमा।"

हसन: खतीब फी तारीखिही:11/24. इब्ने जौज़ी :465. हिदायतुर्रूवात:6107.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है,हम इसे सिर्फ इसी सनद से जानते हैं।

29 بَابُ مَنَاقِبِ جَعْفَرِ بْنِ أَبِي طَالِبٍ أَخِي عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

29- सय्यदना जाफ़र बिन अबू तालिब जो कि अली(رضي الله) के भाई हैं उनके फ़ज़ाइल व मनाक़िब

3763 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنِ العَلاَءِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: رَأَيْتُ جَعْفَرًا يَطِيرُ فِي الجَنَّةِ مَعَ المَلاَئِكَةِ.

3763 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैंने जाफ़र (رضي الله) को जन्नत में फ़रिश्तों के साथ उड़ता हुआ देखा।"[1]

सहीह: हाकिम: 3/209. इब्ने हिब्बान:7047. अबू याला:6464. अस-सिलसिला अस-सहीहा:1226.

तौज़ीह: (1) इसी सबब से उन्हें जाफ़र तय्यार (उड़ने वाला) कहा जाता है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله) के तरीक़ से यह हदीस ग़रीब है, हम इसे अब्दुल्लाह बिन जाफ़र की हदीस से ही जानते हैं। जबकि यहया बिन मईन और दीगर मोहद्दिसीन ने अब्दुल्लाह बिन जाफ़र को ज़ईफ़ कहा है, यह अली बिन मदीनी के वालिद थे। नीज़ इस बारे में इब्ने अब्बास (رضي الله) से भी हदीस मर्वी है।

30- अबू हुरैरा का कौल: रसूल (ﷺ) के बाद किसी ने जूता नहीं पहना जो जाफ़र (رضي الله عنه) से अफ़ज़ल हो।

30باب أَبِي هُرَيْرَةَ مَا احْتَذَى النِّعَالَ بَعْدَ رَسُولِ اللهِ (ﷺ) أَفْضَلُ مِنْ جَعْفَرٍ.

3764 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الوَهَّابِ الثَّقَفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا خَالِدٌ الحَذَّاءُ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: مَا احْتَذَى النِّعَالَ وَلاَ انْتَعَلَ وَلاَ رَكِبَ الْمَطَايَا وَلاَ رَكِبَ الْكُورَ بَعْدَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَفْضَلُ مِنْ جَعْفَرٍ.

3764 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) फरमाते हैं: रसूलुल्लाह(ﷺ) के बाद न किसी ने जूता पहना न कोई ऊंटनी पर सवार[1] हुआ और न ही कोई कजावे पर बैठा जो जाफ़र बिन अबू तालिब से अफ़ज़ल हो।

सहीहुल इस्नाद मौकूफन: अहमद:2/413. हाकिम:3/41. तबरानी फ़िल औसत:7059.

तौज़ीह: المطايا: المطية:की जमा है जो कि सवारी वाले जानवर को कहा जाता है। (देखिये : अल-कामूसुल वहीद:प।1564)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है, और الكور से मुराद कजावा है।

3765 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ البَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِجَعْفَرِ بْنِ أَبِي طَالِبٍ: أَشْبَهْتَ خَلْقِي وَخُلُقِي وَفِي الحَدِيثِ قِصَّةٌ.

3765 - सय्यदना बराअ बिन आज़िब (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने जाफ़र बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) से फ़रमाया, "तुम सूरत और सीरत में मेरे मुशाबेह हो।"

इस हदीस में एक किस्सा भी है।

सहीह: तखरीज के लिए देखें हदीस नम्बर: 1904.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। नीज़ हमें सुफ़ियान बिन वकीअ ने बवास्ता उबय इस्राईल से ऐसी ही हदीस बयान की है।

3766 - حَدَّثَنَا أَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ أَبُو يَحْيَى التَّيْمِيُّ، قَالَ:

3766 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैं नबी(ﷺ) के किसी सहाबी से कुरआन की उन आयात के बारे में पूछा करता

حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ أَبُو إِسْحَاقَ الْمَخْزُومِيُّ، عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: إِنْ كُنْتُ لَأَسْأَلُ الرَّجُلَ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الآيَاتِ مِنَ الْقُرْآنِ أَنَا أَعْلَمُ بِهَا مِنْهُ، مَا أَسْأَلُهُ إِلاَّ لِيُطْعِمَنِي شَيْئًا، فَكُنْتُ إِذَا سَأَلْتُ جَعْفَرَ بْنَ أَبِي طَالِبٍ لَمْ يُجِبْنِي حَتَّى يَذْهَبَ بِي إِلَى مَنْزِلِهِ فَيَقُولُ لِامْرَأَتِهِ: يَا أَسْمَاءُ أَطْعِمِينَا، فَإِذَا أَطْعَمَتْنَا أَجَابَنِي، وَكَانَ جَعْفَرٌ يُحِبُّ الْمَسَاكِينَ وَيَجْلِسُ إِلَيْهِمْ وَيُحَدِّثُهُمْ وَيُحَدِّثُونَهُ، فَكَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَكْنِيهِ بِأَبِي الْمَسَاكِينِ.

था जिनका मुझे उस से ज़्यादा इल्म होता था, मैं तो इसलिए पूछता था कि वह मुझे कुछ खिला देगा चुनांचे मैं जब जाफ़र बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) से पूछता, तो वह मुझे जवाब देने के बजाए अपने घर ले जाते, फिर अपनी बीवी से कहते : ऐ अस्मा! हमें खाना खिलाओ, तो जब वह हमें खाना खिला देतीं तो यह मुझे जवाब देते, और जाफ़र मिस्कीनों से मोहब्बत करते थे उन के पास बैठते, उन से बातें करते, वह इन से बातें करते, इसलिए रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उनकी कुनियत ही अबुल मसाकीन (मिस्कीनों का बाप) रख दी।

ज़ईफ़ जिद्दा: आख़िरी हिस्से (كان رسول الله .... ألخ) के अलावा बाकी रिवायत शवाहिद की बिना पर सहीह है। बुख़ारी:3708 इब्ने माजह:4125.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है अबू इस्हाक़ मख्ज़ूमी इब्राहीम बिन फ़ज़ल मदनी ही है, बअ़ज़ मोहद्दिसीन ने उस के हाफ़िज़े की वजह से उस पर जरह की है यह ग़रीब रिवायात ज़िक्र करता था।

3767 - حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ حَاتِمُ بْنُ سِيَاهٍ الْمَرْوَزِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ ابْنِ عَجْلاَنَ عَنْ يَزِيدَ بْنِ قُسَيْطٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ كُنَّا نَدْعُو جَعْفَرَ بْنَ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَبَا الْمَسَاكِينِ فَكُنَّا إِذَا أَتَيْنَاهُ قَرَّبَنَا إِلَيْهِ مَا حَضَرَ فَأَتَيْنَاهُ يَوْمًا فَلَمْ يَجِدْ عِنْدَهُ شَيْئًا فَأَخْرَجَ جَرَّةً مِنْ عَسَلٍ فَكَسَرَهَا فَجَعَلْنَا نَلْعَقُ مِنْهَا

3767 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि हम जाफ़र बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) को अबूल मसाकीन (मिस्कीनों के बाप) कह कर बुलाया करते थे, फिर जब हम उनके पास जाते तो जो कुछ भी मौजूद होता वह हमेशा पेश कर देते, एक दिन हम उनके पास गए, तो उनके पास कोई चीज़ नहीं थी, चुनांचे उन्होंने मिट्टी का एक बर्तन[1] निकाला जिसमें शहद था उसे तोड़ दिया तो हम उसे उँगलियों से चाटने लगे।

ज़ईफ़: तखरीज ज़िक्र नहीं की गई।

तौज़ीह: جرة : मिट्टी से बना हुआ (घड़ानुमा) कोई भी बर्तन उसकी जमा جرار आती है। (देखिये अल-मोजमुल वसीत:प।138)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: अबू सलमा के ज़रिए अबू हुरैरा से मर्वी यह हदीस हसन ग़रीब है।

31 - अबू मुहम्मद हसन बिन अली बिन अबी तालिब और हुसैन बिन अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

31 بَابُ مَنَاقِبِ أَبِي مُحَمَّدٍ الْحَسَنِ بْنِ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ وَالْحُسَيْنِ بْنِ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا

3768 - अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "हसन और हुसैन (رضي الله عنه) जन्नती जवानों के सरदार हैं।"

सहीह: अहमद:3/3. हाकिम:3/166. इब्ने हिब्बान:6959. तबरानी फ़िल कबीर: 2610. अस-सिलसिला अस-सहीहा:796.

3768 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ الحَفَرِيُّ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي زِيَادٍ، عَنِ ابْنِ أَبِي نُعْمٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: الحَسَنُ وَالحُسَيْنُ سَيِّدَا شَبَابِ أَهْلِ الجَنَّةِ.

वज़ाहत: (अबू ईसा कहते हैं) हमें सुफ़ियान ने, उन्हें वकीअ ने बवास्ता, जरीर और मुहम्मद बिन फुज़ैल, यज़ीद से इसी तरह हदीस बयान की है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह हसन है और इब्ने अबी नुअम बजली कूफी हैं उनकी कुनियत अबू हकम थी।

3769 - सय्यदना उसामा बिन ज़ैद (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि एक रात मैं किसी काम की गरज़ से नबी{ﷺ} की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, नबी(ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाये तो आप(ﷺ) की कोई चीज़ लापता हो गई थी मैं नहीं जानता था कि वह क्या है, फिर जब मैं अपने काम से फ़ारिग़ हुआ, तो मैंने अर्ज़ किया, यह क्या है? यह क्या है? जिसे आप(ﷺ)

3769 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَا: حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ يَعْقُوبَ الزَّمْعِيُّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بَكْرِ بْنِ زَيْدِ بْنِ الْمُهَاجِرِ قَالَ: أَخْبَرَنِي مُسْلِمُ بْنُ أَبِي سَهْلٍ النَّبَّالُ قَالَ: أَخْبَرَنِي الحَسَنُ بْنُ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ قَالَ:

أَخْبَرَنِي أَبِي أُسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ، قَالَ: طَرَقْتُ النَّبِيَّ ﷺ ذَاتَ لَيْلَةٍ فِي بَعْضِ الحَاجَةِ فَخَرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ مُشْتَمِلٌ عَلَى شَيْءٍ لاَ أَدْرِي مَا هُوَ، فَلَمَّا فَرَغْتُ مِنْ حَاجَتِي. قُلْتُ: مَا هَذَا الَّذِي أَنْتَ مُشْتَمِلٌ عَلَيْهِ؟ فَكَشَفَهُ فَإِذَا حَسَنٌ وَحُسَيْنٌ عَلَى وَرِكَيْهِ، فَقَالَ: هَذَانِ ابْنَايَ وَابْنَا ابْنَتِي، اللَّهُمَّ إِنِّي أُحِبُّهُمَا فَأَحِبَّهُمَا وَأَحِبَّ مَنْ يُحِبُّهُمَا.

लपेटे हुए हैं, आप(ﷺ) ने कपड़ा हटाया तो देखा आपकी रानों पर हसन और हुसैन (رضي الله عنهما) थे? फिर आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "यह मेरे बेटे हैं यह दोनों मेरे नवासे हैं। ऐ अल्लाह! मैं इन दोनों से मोहब्बत करता हूँ तू भी इन से मोहब्बत फ़रमा और जो इन दोनों से मोहब्बत करे उससे भी मोहब्बत फ़रमा।"

हसन: तबरानी फी सगीर: 551. इब्ने हिब्बान:6967. इब्ने अबी शैबा:12/97, 98. हियातुर्रूवात: 6114.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

3770 - حَدَّثَنَا عُقْبَةُ بْنُ مُكْرَمٍ الْبَصْرِيُّ الْعَمِّيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرِ بْنِ حَازِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي يَعْقُوبَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي نُعْمٍ، أَنَّ رَجُلاً مِنْ أَهْلِ العِرَاقِ سَأَلَ ابْنَ عُمَرَ عَنْ دَمِ البَعُوضِ يُصِيبُ الثَّوْبَ، فَقَالَ ابْنُ عُمَرَ: انْظُرُوا إِلَى هَذَا يَسْأَلُ عَنْ دَمِ البَعُوضِ وَقَدْ قَتَلُوا ابْنَ رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَسَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: إِنَّ الحَسَنَ وَالحُسَيْنَ هُمَا رَيْحَانَتَايَ مِنَ الدُّنْيَا.

3770 - अब्दुर्रहमान बिन अबी नुअम बयान करते हैं कि एक इराक़ी ने इब्ने उमर (رضي الله عنه) से मच्छर के खून के बारे में पूछा जो एहराम वाले कपड़े को लग जाए, तो इब्ने उमर ने फ़रमाया, "इसे देखो मच्छर के खून के मुताल्लिक़ सवाल करता है जबकि इन लोगों ने रसूलुल्लाह(ﷺ) की बेटी के बेटे को शहीद किया है और मैंने रसूलुल्लाह{ﷺ} को फ़रमाते हुए सुना: "बेशक हसन व हुसैन (رضي الله عنهما) दुनिया के मेरे दो फूल हैं।"

बुख़ारी:3753. अहमद:2/85. तबरानी फ़िल कबीर:2884.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह है, इसे शोबा और महदी बिन मैमून ने भी मुहम्मद बिन अबी याक़ूब से रिवायत किया है और बवास्ता अबू हुरैरा (رضي الله عنه) भी नबी(ﷺ) से ऐसी ही हदीस मर्वी है नीज़ इब्ने अबी नुअम, अब्दुर्रहमान बिन अबी नुअम बजली हैं।

3771 - حَدَّثَنَا أَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو خَالِدٍ الأَحْمَرُ، قَالَ: حَدَّثَنَا رَزِينٌ، قَالَ: حَدَّثَتْنِي سَلْمَى، قَالَتْ: دَخَلْتُ عَلَى أُمِّ سَلَمَةَ، وَهِيَ تَبْكِي، فَقُلْتُ: مَا يُبْكِيكِ؟ قَالَتْ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ، تَعْنِي فِي الْمَنَامِ، وَعَلَى رَأْسِهِ وَلِحْيَتِهِ التُّرَابُ، فَقُلْتُ: مَا لَكَ يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ: شَهِدْتُ قَتْلَ الحُسَيْنِ آنِفًا.

3771 - सलमा रिवायत करती हैं कि मैं सय्यदा उम्मे सलमा (रज़ि०) के पास गई वह रो रही थीं, मैंने कहा: आप को किस चीज़ ने रुलाया? वह फ़रमाने लगीं: मैंने ख्वाब में रसूलुल्लाह(ﷺ) को देखा आप(ﷺ) के सर और दाढ़ी मुबारक पर मिट्टी थी मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आप(ﷺ) को क्या हुआ? फ़रमाया, "मैं अभी- अभी हुसैन के क़त्ल होने की जगह में हाज़िर था।"

ज़ईफ़: तबरानी फ़िल कबीर: 23/882.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रह०) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है।

3772 - حَدَّثَنَا أَبُو سَعِيدٍ الأَشَجُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُقْبَةُ بْنُ خَالِدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي يُوسُفُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ، يَقُولُ: سُئِلَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَيُّ أَهْلِ بَيْتِكَ أَحَبُّ إِلَيْكَ؟ قَالَ: الحَسَنُ وَالحُسَيْنُ. وَكَانَ يَقُولُ لِفَاطِمَةَ ادْعِي لِيَ ابْنَيَّ، فَيَشُمُّهُمَا وَيَضُمُّهُمَا إِلَيْهِ.

3772 - अनस बिन मालिक (रज़ि०) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल(ﷺ) से पूछा गया: आप(ﷺ) को अपने घर वालों में सबसे ज़्यादा मोहब्बत किस से है? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "हसन और हुसैन से" और आप(ﷺ) सय्यदा फ़ातिमा (रज़ि०) से फ़रमाया करते: "मेरे दोनों बेटों को मेरे पास बुलाओ" फिर आप(ﷺ) उनको बोसा देते और अपने सीने से लगाते।"

ज़ईफ़: अबू याला:4294. इब्ने अदी फ़िल कलाम:7/2623.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रह०) फ़रमाते हैं: अनस (रज़ि०) से मर्वी यह हदीस इस तरीक़ से ग़रीब है।

3773 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الأَنْصَارِيُّ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: حَدَّثَنَا الأَشْعَثُ هُوَ ابْنُ عَبْدِ الْمَلِكِ، عَنِ الْحَسَنِ، عَنْ أَبِي بَكْرَةَ، قَالَ: صَعِدَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى

3773 - सय्यदना अबू बक्र (रज़ि०) बयान करते हैं कि रसूलुल्लह(ﷺ) मिम्बर पर चढ़े तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "मेरा यह बेटा हसन सरदार है अल्लाह इस के हाथों दो बहुत बड़ी जमाअतों के दर्मियान सुलह करवाएगा।"

اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمِنْبَرَ فَقَالَ: إِنَّ ابْنِي هَذَا سَيِّدٌ يُصْلِحُ اللَّهُ عَلَى يَدَيْهِ فِئَتَيْنِ عَظِيمَتَيْنِ.

बुख़ारी:3704. अबू दाऊद:4662. निसाई:1410. अहमद:5/37. अल-अर्वा:1597.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और इसमें हसन बिन अली (رضي الله عنه) मुराद हैं।

3774 - حَدَّثَنَا الحُسَيْنُ بْنُ حُرَيْثٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُسَيْنِ بْنِ وَاقِدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ بُرَيْدَةَ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي بُرَيْدَةَ، يَقُولُ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَخْطُبُنَا إِذْ جَاءَ الحَسَنُ وَالحُسَيْنُ عَلَيْهِمَا قَمِيصَانِ أَحْمَرَانِ يَمْشِيَانِ وَيَعْثُرَانِ، فَنَزَلَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنَ الْمِنْبَرِ فَحَمَلَهُمَا وَوَضَعَهُمَا بَيْنَ يَدَيْهِ، ثُمَّ قَالَ: صَدَقَ اللَّهُ{إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ} نَظَرْتُ إِلَى هَذَيْنِ الصَّبِيَّيْنِ يَمْشِيَانِ وَيَعْثُرَانِ فَلَمْ أَصْبِرْ حَتَّى قَطَعْتُ حَدِيثِي وَرَفَعْتُهُمَا.

3774 - सय्यदना बुरैदा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) खुत्बा दे रहे थे कि अचानक हसन व हुसैन (رضي الله عنهما) आ गए, उन पर सुर्ख़ कुरते थे वह चलते हुए गिर रहे थे, तो अल्लाह के रसूल(ﷺ) मिम्बर से नीचे उतरे, उन्हें उठाया और अपने सामने बिठा दिया फिर फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने सच फ़रमाया है (तर्जुमा) तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तो सिर्फ तुम्हारी आज़माइश हैं। (अत-तगाबुन: 15) मैंने इन दोनों बच्चों को देखा जो चल रहे थे और अटक कर गिर रहे थे, तो मुझ से सब्र न हो सका यहाँ तक कि मैंने अपनी बात को रोक कर उन दोनों को उठाया।"

सहीह: अबू दाऊद:1109. इब्ने माजह:3600. निसाई:1413. अहमद:5/354.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है, हम इसे हुसैन बिन वाकिद के तरीक़ से ही जानते हैं।

3775 - حَدَّثَنَا الحَسَنُ بْنُ عَرَفَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَيَّاشٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُثْمَانَ بْنِ خُثَيْمٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ رَاشِدٍ، عَنْ يَعْلَى بْنِ مُرَّةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: حُسَيْنٌ مِنِّي وَأَنَا مِنْ حُسَيْنٍ، أَحَبَّ اللَّهُ مَنْ أَحَبَّ حُسَيْنًا، حُسَيْنٌ سِبْطٌ مِنَ الأَسْبَاطِ.

3775 - सय्यदना याला बिन मुर्रा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने फ़रमाया, "हुसैन मुझ से है और मैं हुसैन से हूँ, जो हुसैन से मोहब्बत करेगा अल्लाह भी उस से मोहब्बत करेगा, हुसैन नवासों में से एक नवासा है।"

हसन: इब्ने माजह:144. अस-सिलसिला अस-सहीहा:1227. अहमद:4/172. इब्ने हिब्बान:6971.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है, हम इसे अब्दुल्लाह बिन उस्मान बिन ख़ुसैम के तरीक़ से ही जानते हैं इसे कई राविओं ने अब्दुल्लाह बिन उस्मान बिन ख़ुसैम से रिवायत किया है।

3776 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: لَمْ يَكُنْ أَحَدٌ مِنْهُمْ أَشْبَهَ بِرَسُولِ اللهِ ﷺ مِنَ الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ.

3776 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि हसन बिन अली से बढ़ कर उन में से कोई भी रसूलुल्लाह(ﷺ) से मुशाबहत नहीं रखता था।

बुख़ारी:3752. अहमद:3/ 146. हाकिम:3/ 168.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3777 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي خَالِدٍ، عَنْ أَبِي جُحَيْفَةَ، قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَكَانَ الحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ يُشْبِهُهُ.

3777 - अबू जुहैफ़ा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को देखा था, हसन बिन अली (رضي الله عنه) आप(ﷺ) के मुशाबेह हैं।

सहीह: तखरीज के लिए देखिए, हदीस नम्बर:2826.

वज़ाहत: इस बारे में अबू बक्र सिद्दीक़, इब्ने अब्बास और इब्ने ज़ुबैर (رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है।

3778 - حَدَّثَنَا خَلَّادُ بْنُ أَسْلَمَ الْبَغْدَادِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا النَّضْرُ بْنُ شُمَيْلٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ حَسَّانَ، عَنْ حَفْصَةَ بِنْتِ سِيرِينَ، قَالَتْ: حَدَّثَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، قَالَ: كُنْتُ عِنْدَ ابْنِ زِيَادٍ فَجِيءَ بِرَأْسِ الحُسَيْنِ فَجَعَلَ يَقُولُ بِقَضِيبٍ فِي أَنْفِهِ وَيَقُولُ: مَا رَأَيْتُ مِثْلَ هَذَا حُسْنًا، لِمَ يُذْكَرُ؟ قَالَ: قُلْتُ: أَمَا إِنَّهُ كَانَ مِنْ أَشْبَهِهِمْ بِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

3778 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैं इब्ने ज़ियाद के पास था तो हुसैन (رضي الله عنه) का सर लाया गया, वह एक छड़ी उनकी नाक पर लगा कर कहने लगा: मैंने हुस्न में इस जैसा नहीं देखा इस का तज़किरा किस लिए किया जाता है। रावी कहते हैं: मैंने कहा: यह सब से ज़्यादा अल्लाह के रसूल के मुशाबेह थे।

बुख़ारी दूसरे तरीक़ से:3748. इब्ने हिब्बान:6972. तबरानी फ़िल कबीर:2879.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3779 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ

3779 - सय्यदना अली (رضي الله عنه) बयान करते हैं: हसन (رضي الله عنه) सीने से सर तक अल्लाह के

إِسْرَائِيلَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ هَانِئِ بْنِ هَانِئٍ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ: الحَسَنُ أَشْبَهُ بِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا بَيْنَ الصَّدْرِ إِلَى الرَّأْسِ، وَالْحُسَيْنُ أَشْبَهُ بِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا كَانَ أَسْفَلَ مِنْ ذَلِكَ.

रसूल(ﷺ) के मुशाबेह थे और हुसैन उस से नीचे रसूल(ﷺ) के मुशाबेह थे।

ज़ईफ़: अहमद: 1/99. इब्ने हिब्बान:6974.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3780 - حَدَّثَنَا وَاصِلُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ عُمَارَةَ بْنِ عُمَيْرٍ، قَالَ: لَمَّا جِيءَ بِرَأْسِ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ زِيَادٍ وَأَصْحَابِهِ نُضِّدَتْ فِي الْمَسْجِدِ فِي الرَّحَبَةِ فَانْتَهَيْتُ إِلَيْهِمْ وَهُمْ يَقُولُونَ: قَدْ جَاءَتْ قَدْ جَاءَتْ، فَإِذَا حَيَّةٌ قَدْ جَاءَتْ تَخَلَّلُ الرُّءُوسَ حَتَّى دَخَلَتْ فِي مَنْخَرَيْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ زِيَادٍ فَمَكَثَتْ هُنَيْهَةً، ثُمَّ خَرَجَتْ فَذَهَبَتْ حَتَّى تَغَيَّبَتْ. ثُمَّ قَالُوا: قَدْ جَاءَتْ، قَدْ جَاءَتْ، فَفَعَلَتْ ذَلِكَ مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلاَثًا.

3780 – उमारा बिन उमैर बयान करते हैं कि जब उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद और उसके साथियों के सर लाये गए तो उन्हें सहने मस्जिद में लटका दिया गया, मैं वहाँ पहुंचा तो लोग कह रहे थे, यह आ गया यह आ गया, अचानक देखा तो एक सांप सरों को फलांगता हुआ उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद के नथुनों में दाख़िल हो गया, थोड़ी देर ठहरा रहा फिर निकल कर चला गया, यहाँ तक कि ग़ायब हो गया। फिर लोगों ने कहा: यह आ गया, यह आ गया उस ने दो या तीन मर्तबा ऐसे ही किया।

सहीहुल इस्नाद।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3781 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، وَإِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، قَالاَ: أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ مَيْسَرَةَ بْنِ حَبِيبٍ، عَنِ الْمِنْهَالِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ زِرِّ بْنِ حُبَيْشٍ، عَنْ حُذَيْفَةَ، قَالَ: سَأَلَتْنِي أُمِّي مَتَى عَهْدُكَ

3781 - हुज़ैफ़ा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मेरी मां ने मुझ से पूछा: तुम नबी(ﷺ) के पास कब गए थे? मैंने कहा: मैं इतने दिनों आप की ख़िदमत में हाज़िर न हो सका। तो उन्होंने मुझे बहुत डांटा तो मैंने उन से कहा: आप मुझे नबी(ﷺ) के पास जाने दीजिए ताकि मैं मग़रिब

تَعْنِي بِالنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ مَا لِي بِهِ عَهْدٌ مُنْذُ كَذَا وَكَذَا، فَنَالَتْ مِنِّي، فَقُلْتُ لَهَا: دَعِينِي آتِي النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأُصَلِّيَ مَعَهُ الْمَغْرِبَ، وَأَسْأَلُهُ أَنْ يَسْتَغْفِرَ لِي وَلَكِ، فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَصَلَّيْتُ مَعَهُ الْمَغْرِبَ فَصَلَّى حَتَّى صَلَّى العِشَاءَ، ثُمَّ انْفَتَلَ فَتَبِعْتُهُ، فَسَمِعَ صَوْتِي، فَقَالَ: مَنْ هَذَا، حُذَيْفَةُ؟ قُلْتُ: نَعَمْ، قَالَ: مَا حَاجَتُكَ غَفَرَ اللَّهُ لَكَ وَلِأُمِّكَ؟ قَالَ: إِنَّ هَذَا مَلَكٌ لَمْ يَنْزِلِ الأَرْضَ قَطُّ قَبْلَ هَذِهِ اللَّيْلَةِ اسْتَأْذَنَ رَبَّهُ أَنْ يُسَلِّمَ عَلَيَّ وَيُبَشِّرَنِي بِأَنَّ فَاطِمَةَ سَيِّدَةُ نِسَاءِ أَهْلِ الجَنَّةِ وَأَنَّ الحَسَنَ وَالحُسَيْنَ سَيِّدَا شَبَابِ أَهْلِ الجَنَّةِ.

की नमाज़ आप(ﷺ) के साथ पढ़ूं और अपने और आप के लिए बख़्शिश की दुआ करने का सवाल करूं, चुनांचे मैं नबी(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, आप(ﷺ) के साथ मग़रिब की नमाज़ पढ़ी आप(ﷺ) ने मग़रिब पढ़ी फिर इशा की नमाज़ पढ़ कर चले गए मैं आप(ﷺ) के पीछे गया तो आप(ﷺ) ने मेरी आवाज़ सुनकर फ़रमाया, "कौन हो? हुज़ैफा हो?" मैंने अर्ज़ किया, "जी हाँ। आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम्हें क्या काम है? अल्लाह तुम्हारी और तुम्हारी मां की बख़्शिश फ़रमाए।" फिर आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "यह फ़रिश्ता इस रात से पहले कभी ज़मीन पर नहीं उतरा उसने अपने रब से इजाज़त मांगी कि मुझे सलाम अर्ज़ करे और मुझे खुशख़बरी दे कि फ़ातिमा जन्नत वालों की औरतों की सरदार होंगी और हसन व हुसैन जन्नती नौजवानों के सरदार होंगे।"

सहीह: अहमद:5/391. हाकिम:381. इब्ने हिब्बान:6960. तबरानी फ़िल कबीर:2606.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे इस्राईल की हदीस से ही जानते हैं।

3782 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ فُضَيْلِ بْنِ مَرْزُوقٍ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ، عَنِ البَرَاءِ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَبْصَرَ حَسَنًا وَحُسَيْنًا فَقَالَ: اللَّهُمَّ إِنِّي أُحِبُّهُمَا فَأَحِبَّهُمَا.

3782 - सय्यदना बराअ (رضي الله عنه) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने हसन व हुसैन (رضي الله عنهما) को देख कर दुआ की, ''ऐ अल्लाह! मैं इन दोनों से मोहब्बत करता हूँ सो तू भी इन से मोहब्बत फ़रमा।''

सहीह: (हदीस के बहुत से शवाहिद हैं देखिए:3769. और आगे आने वाली हदीस: (अबू सुफियान) अस-सिलसिला अस-सहीहा:2789.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3783 - सय्यदना बराअ बिन आज़िब (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं: मैंने नबी(ﷺ) को देखा आप हसन बिन अली को कंधे पर उठाए हुए थे और आप फ़रमा रहे थे "ऐ अल्लाह! मैं इस से मोहब्बत करता हूँ तू भी इस से मोहब्बत फ़रमा।"

बुख़ारी:3749. मुस्लिम:2422. अहमद:4/ 283.

3783 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ، قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ بْنَ عَازِبٍ، يَقُولُ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاضِعًا الحَسَنَ بْنَ عَلِيٍّ عَلَى عَاتِقِهِ وَهُوَ يَقُولُ: اللَّهُمَّ إِنِّي أُحِبُّهُ فَأَحِبَّهُ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और फ़ज़्ल बिन मर्ज़ूक की रिवायत से ज़्यादा सहीह है।

3784 - अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) हसन बिन अली को अपने कंधे पर उठाए हुए थे कि एक आदमी ने कहा: ऐ लड़के तुमने बहुत अच्छी सवारी पाई है तो नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, "यह सवार भी तो अच्छा है।"

ज़ईफ़: इब्ने अदी फ़िल कामिल:3/ 1085.

3784 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ العَقَدِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَمْعَةُ بْنُ صَالِحٍ، عَنْ سَلَمَةَ بْنِ وَهْرَامَ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَامِلَ الْحُسَنِ بْنِ عَلِيٍّ عَلَى عَاتِقِهِ فَقَالَ رَجُلٌ: نِعْمَ الْمَرْكَبُ رَكِبْتَ يَا غُلَامُ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: وَنِعْمَ الرَّاكِبُ هُوَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है, हम इसे सिर्फ इसी सनद से जानते हैं और ज़म्आ बिन सालेह को मोहद्दिसीन ने उसके हाफ़िज़े की वजह से ज़ईफ़ कहा है।

3785 - सय्यदना अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, "हर नबी को सात मुम्ताज़ साथी अता किए गए, जब कि मुझे चौदह अता किए गए हैं।" हम ने अर्ज़ किया, वह कौन हैं? आप ने फ़रमाया, "मैं, मेरे दोनों बेटे (हसन व हुसैन

3785 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ كَثِيرٍ النَّوَّاءِ، عَنْ أَبِي إِدْرِيسَ، عَنِ الْمُسَيَّبِ بْنِ نَجَبَةَ، قَالَ عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ كُلَّ نَبِيٍّ أُعْطِيَ سَبْعَةَ نُجَبَاءَ رُفَقَاءَ أَوْ رُقَبَاءَ

وَأُعْطِيتُ أَنَا أَرْبَعَةَ عَشَرَ، قُلْنَا: مَنْ هُمْ؟ قَالَ، أَنَا وَابْنَايَ، وَجَعْفَرٌ، وَحَمْزَةُ، وَأَبُو بَكْرٍ، وَعُمَرُ، وَمُصْعَبُ بْنُ عُمَيْرٍ، وَبِلَالٌ، وَسَلْمَانُ، وَعَمَّارٌ، وَالْمِقْدَادُ، وَحُذَيْفَةُ، وَعَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْعُودٍ.

(رضي الله عنه), जाफ़र, हम्ज़ा, अबू बक्र, उमर, मुस्अब बिन उमैर, बिलाल, सलमान, अम्मार, मिक़्दाद, हुज़ैफा, अबू ज़र और अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه)।"

ज़ईफ़: इब्ने अदी फ़िल कामिल: 6/2087. हियातुर्रूवात:6107.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है और यह हदीस अली (رضي الله عنه) से मौकूफ़न भी मर्वी है।

32 بَابُ مَنَاقِبِ أَهْلِ بَيْتِ النَّبِيِّ ﷺ

32-नबी{ﷺ} के घर वालों के फ़ज़ाइल व मनाक़िब

3786 - حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ الحَسَنِ، عَنْ جَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حَجَّتِهِ يَوْمَ عَرَفَةَ وَهُوَ عَلَى نَاقَتِهِ القَصْوَاءِ يَخْطُبُ، فَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي تَرَكْتُ فِيكُمْ مَا إِنْ أَخَذْتُمْ بِهِ لَنْ تَضِلُّوا: كِتَابَ اللهِ، وَعِتْرَتِي أَهْلَ بَيْتِي.

3786 - सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह{ﷺ} को हज में अरफ़ा के दिन देखा, आप{ﷺ} अपनी कस्वा ऊंटनी पर बैठ कर ख़ुत्बा इर्शाद फ़रमा रहे थे, चुनांचे मैंने आप{ﷺ} को फ़रमाते हुए सुना "ऐ लोगो! मैंने तुम में ऐसी चीज़ छोड़ी है जिसे तुम थाम लोगे तो हरगिज़ गुमराह नहीं होगे अल्लाह की किताब और मेरे घर वाले।"[1]

सहीह: तबरानी फ़िल कबीर: 2680. अस-सिलसिला अस-सहीहा:1761. हियातुर्रूवात:6100.

तौज़ीह: عترت : عترت : के कई मआनी होते हैं, लेकिन यहाँ रसूलुल्लाह(ﷺ) ने यह ख़ुद वज़ाहत फ़रमा दी है कि इस से मुराद मेरे अहले बैत हैं।

वज़ाहत: इस बारे में अबू ज़र, अबू सईद, ज़ैद बिन अरक़म और हुज़ैफा बिन उसैद (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस इस सनद से हसन ग़रीब है और ज़ैद बिन हसन सईद बिन सलमान और दीगर अहले इल्म ने रिवायत की है।

3787 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سُلَيْمَانَ بْنِ الأَصْبَهَانِيِّ، عَنْ يَحْيَى بْنِ عُبَيْدٍ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي رَبَاحٍ، عَنْ عُمَرَ بْنِ أَبِي سَلَمَةَ، رَبِيبِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ{إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ البَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا} فِي بَيْتِ أُمِّ سَلَمَةَ، فَدَعَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاطِمَةَ وَحَسَنًا وَحُسَيْنًا فَجَلَّلَهُمْ بِكِسَاءٍ وَعَلِيٌّ خَلْفَ ظَهْرِهِ فَجَلَّلَهُ بِكِسَاءٍ ثُمَّ قَالَ: اللَّهُمَّ هَؤُلَاءِ أَهْلُ بَيْتِي فَأَذْهِبْ عَنْهُمُ الرِّجْسَ وَطَهِّرْهُمْ تَطْهِيرًا قَالَتْ أُمُّ سَلَمَةَ: وَأَنَا مَعَهُمْ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: أَنْتِ عَلَى مَكَانِكِ وَأَنْتِ إِلَى خَيْرٍ.

3787 - नबी(ﷺ) के घर में परवरिश पाने वाले उमर बिन अबी सलमा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि आयत (तर्जुमा) "अल्लाह तआला तो यही चाहता है कि नबी के घर वालो! तुम से नापाकी को ले जाए और ख़ूब पाक कर दे।" (अल- अहज़ाब: 33) यानी अल्लाह नबी के घर वालों से नापाकी को दूर करना चाहता है उम्मे सलमा (رضي الله عنها) के घर में नबी(ﷺ) पर नाज़िल हुई थी, चुनांचे नबी(ﷺ) ने फ़ातिमा, हसन और हुसैन (رضي الله عنهم) को बुला कर उन्हें एक चादर में छिपाया और अली (رضي الله عنه) आप{ﷺ} के पीछे थे उन्हें भी चादर में छिपाया और फ़रमाया, "ऐ अल्लाह! यह मेरे घर वाले हैं तू इन से नापाकी को दूर कर दे और इन्हें खूब पाक कर दे।" उम्मे सलमा कहने लगीं: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! मैं भी इन में शामिल हूँ? फ़रमाया, "तुम अपने एक मक़ाम पर हो और तुम भलाई पर हो।"

सहीह: देखिए: हदीस नम्बर:3205.

वज़ाहत: इस बारे में उम्मे सलमा, माक़िल बिन यसार अबू हमरा और अनस बिन मालिक (رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस ग़रीब है।

3788 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْمُنْذِرِ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ عَطِيَّةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، وَالأَعْمَشُ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ أَبِي ثَابِتٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ قَالاَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ

3788 - ज़ैद बिन अरक़म (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "मैं तुम में ऐसी चीज़ छोड़ने वाला हूँ अगर तुम उसे थाम लो तो मेरे बाद हरगिज़ गुमराह नहीं होगे, उनमें से एक दूसरी चीज़ से बड़ी है। अल्लाह की किताब जो आसमान से ज़मीन तक लटकने

وَسَلَّمَ: إِنِّي تَارِكٌ فِيكُمْ مَا إِنْ تَمَسَّكْتُمْ بِهِ لَنْ تَضِلُّوا بَعْدِي أَحَدُهُمَا أَعْظَمُ مِنَ الآخَرِ: كِتَابُ اللهِ حَبْلٌ مَمْدُودٌ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الأَرْضِ. وَعِتْرَتِي أَهْلُ بَيْتِي، وَلَنْ يَتَفَرَّقَا حَتَّى يَرِدَا عَلَيَّ الحَوْضَ فَانْظُرُوا كَيْفَ تَخْلُفُونِي فِيهِمَا.

वाली रस्सी है, और मेरे घर वाले और यह दोनों चीज़ें जुदा नहीं होंगी यहाँ तक कि मेरे पास हौज़ पर आयेंगी तो तुम देखो कि तुम इन दोनों में कैसे मेरे नायब बनते हो।"

सहीह: अहमद: 3/14. अबू याला: 1021. इब्ने अबी शैबा: 1/506. तबरानी फ़िल कबीर: 2678.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

3789 - حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ سُلَيْمَانُ بْنُ الأَشْعَثِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ مَعِينٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ سُلَيْمَانَ النَّوْفَلِيِّ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيِّ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَحِبُّوا اللَّهَ لِمَا يَغْذُوكُمْ مِنْ نِعَمِهِ وَأَحِبُّونِي بِحُبِّ اللهِ وَأَحِبُّوا أَهْلَ بَيْتِي لِحُبِّي.

3789 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला से मोहब्बत करो इसलिए कि वह तुम्हें अपनी नेअ्मत खिलाता है, मुझ से अल्लाह की मोहब्बत की वजह से मोहब्बत करो और मेरे घर वालों से मेरी मोहब्बत की वजह से मोहब्बत करो।"

ज़ईफ़: हाकिम: 3/150. तबरानी फ़िल कबीर: 2639.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे सिर्फ़ इसी सनद से जानते हैं।

33 بَابُ مَنَاقِبِ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ، وَزَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ، وَأُبَيٍّ، وَأَبِي عُبَيْدَةَ بْنِ الجَرَّاحِ رضي الله عنهم

33 - मुआज़ बिन जबल, ज़ैद बिन साबित, उबय बिन काब और अबू उबैदा बिन जर्राह (رضي الله عنهم) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

3790 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ دَاوُدَ العَطَّارِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ:

3790 - अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़रमाया, "मेरी उम्मत में से मेरी उम्मत पर सब से ज़्यादा शफ़्क़त करने वाला अबू बक्र है, अल्लाह के मामले में सबसे ज़्यादा सख़्त उमर है, सब से

قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَرْحَمُ أُمَّتِي بِأُمَّتِي أَبُو بَكْرٍ، وَأَشَدُّهُمْ فِي أَمْرِ اللهِ عُمَرُ، وَأَصْدَقُهُمْ حَيَاءً عُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ، وَأَعْلَمُهُمْ بِالحَلَالِ وَالحَرَامِ مُعَاذُ بْنُ جَبَلٍ، وَأَفْرَضُهُمْ زَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ، وَأَقْرَؤُهُمْ أُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ أَمِينٌ وَأَمِينُ هَذِهِ الأُمَّةِ أَبُو عُبَيْدَةَ بْنُ الجَرَّاحِ.

ज़्यादा हया वाला उस्मान बिन अफ़्फ़ान है, हलाल व हराम को सब से ज़्यादा जानने वाला मुआज़ बिन जबल है, विरासत के मसाइल को सबसे बेहतर जानने वाला ज़ैद बिन साबित, सबसे बड़ा क़ारी उबय बिन काब है और हर उम्मत का अमीन होता है इस उम्मत का अमीन अबू उबैदा बिन जर्राह है।"

सहीह: अबू नुऐम फी हिल्या:7/ 175. आने वाली हदीस शाहिद है इसको।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे सिर्फ इसी सनद से क़तादा से जानते हैं इसे अबू किलाबा ने भी बवास्ता अनस (رضي الله عنه) नबी करीम(ﷺ) से रिवायत की है और अबू किलाबा की रिवायत मशहूर है।

3791 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الوَهَّابِ بْنُ عَبْدِ الْمَجِيدِ الثَّقَفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا خَالِدٌ الحَذَّاءُ، عَنْ أَبِي قِلَابَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَرْحَمُ أُمَّتِي بِأُمَّتِي أَبُو بَكْرٍ، وَأَشَدُّهُمْ فِي أَمْرِ اللهِ عُمَرُ، وَأَصْدَقُهُمْ حَيَاءً عُثْمَانُ، وَأَقْرَؤُهُمْ لِكِتَابِ اللهِ أُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ، وَأَفْرَضُهُمْ زَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ، وَأَعْلَمُهُمْ بِالحَلَالِ وَالحَرَامِ مُعَاذُ بْنُ جَبَلٍ أَلَا وَإِنَّ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَمِينًا وَإِنَّ أَمِينَ هَذِهِ الأُمَّةِ أَبُو عُبَيْدَةَ بْنُ الجَرَّاحِ.

3791 - अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने फ़रमाया, "मेरी उम्मत में से मेरी उम्मत पर सब से ज़्यादा शफ़्क़त करने वाला अबू बक्र है, अल्लाह के मामले में सब से ज़्यादा सख़्त उमर है, सब से ज़्यादा हया वाला उस्मान बिन अफ़्फ़ान है,किताबुल्लाह का सब से बड़ा क़ारी उबय बिन काब, फ़राइज़ को सब से ज़्यादा जानने वाला ज़ैद बिन साबित और हलाल व हराम का सब से ज़्यादा इल्म रखने वाला मुआज़ बिन जबल है और सुनो! हर उम्मत का एक अमीन होता है इस उम्मत का अमीन अबू उबैदा बिन जर्राह है।"

सहीह: इब्ने माजह:154. अहमद:3/ 184. हाकिम:3/ 422. इब्ने हिब्बान:7131. बैहक़ी:6/ 210.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3792 - सय्यदना अनस बिन मालिक (ﷺ) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने उबय बिन काब से फ़रमाया, "अल्लाह ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें सूरह बय्यना सुनाऊँ।" उबय बिन काब ने कहा: उस अल्लाह ने मेरा नाम(ﷺ) लिया है? आप ने फ़रमाया, "हाँ" तो वह रो पड़े।

बुख़ारी:3809. मुस्लिम:799. अहमद:3/ 130.

3792 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ: سَمِعْتُ قَتَادَةَ، يُحَدِّثُ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لأُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ: إِنَّ اللَّهَ أَمَرَنِي أَنْ أَقْرَأَ عَلَيْكَ{لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا} قَالَ: وَسَمَّانِي؟ قَالَ: نَعَمْ، فَبَكَى.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। नीज़ यह हदीस उबय बिन काब से भी मर्वी है कि नबी(ﷺ) ने मुझ से फ़रमाया....फिर ऐसी ही रिवायत की।

3793 - सय्यदना उबय बिन काब (ﷺ) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने मुझ से फ़रमाया, "अल्लाह ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें पढ़ कर सुनाऊँ।" फिर यह सूरत पढ़ी: ''अहले किताब के मुशिरकीन नहीं है . . .आखिर तक, आप ने इसमें यह भी पढ़ा "अल्लाह के नज़दीक दीन वही है जो कि यक तरफ़ा मुतीअ है, न यहूदियत का दीन है और न ही ईसाइयत का, जो भलाई करेगा उसे महरूम नहीं किया जाएगा।'' और आप ने यह भी पढ़ा कि ''अगर इब्ने आदम के पास माल की एक वादी हो तो वह दूसरी को तलाश करेगा और अगर उसे दूसरी भी मिल जाए तो वह तीसरी को तलाश करेगा और इब्ने आदम के पेट को सिर्फ मिट्टी ही भरेगी और अल्लाह तौबा करने वालों की तौबा कुबूल करता है''

सहीह: इस पर तखरीज ज़िक्र नहीं की गई। (लेकिन हदीस नम्बर:3898,3792 मुलाहजा फ़रमाएं।

3793 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَاصِمٍ، قَالَ: سَمِعْتُ زِرَّ بْنَ حُبَيْشٍ يُحَدِّثُ، عَنْ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ لَهُ: إِنَّ اللَّهَ أَمَرَنِي أَنْ أَقْرَأَ عَلَيْكَ فَقَرَأَ عَلَيْهِ لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ فَقَرَأَ فِيهَا: إِنَّ ذَاتَ الدِّينِ عِنْدَ اللهِ الْحَنِيفِيَّةُ الْمُسْلِمَةُ لاَ الْيَهُودِيَّةُ، وَلاَ النَّصْرَانِيَّةُ، مَنْ يَعْمَلْ خَيْرًا فَلَنْ يُكْفَرَهُ، وَقَرَأَ عَلَيْهِ: وَلَوْ أَنَّ لاِبْنِ آدَمَ وَادِيًا مِنْ مَالٍ لاَبْتَغَى إِلَيْهِ ثَانِيًا، وَلَوْ كَانَ لَهُ ثَانِيًا لاَبْتَغَى إِلَيْهِ ثَالِثًا، وَلاَ يَمْلأُ جَوْفَ ابْنِ آدَمَ إِلاَّ التُّرَابُ، وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَى مَنْ تَابَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है,और यह एक दूसरी सनद से भी

मर्वी है। जिसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान बिन अब्ज़ा ने अपने बाप के ज़रिए उबय बिन काब से रिवायत किया है कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने मुझे हुक्म दिया है कि तुम्हें क़ुरआन पढ़ कर सुनाऊँ।" और क़तादा ने अनस (رضي الله عنه) से रिवायत की है कि नबी(ﷺ) ने उबय से फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें क़ुरआन पढ़ कर सुनाऊँ।"

3794 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: جَمَعَ الْقُرْآنَ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ أَرْبَعَةٌ كُلُّهُمْ مِنَ الأَنْصَارِ: أُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ، وَمُعَاذُ بْنُ جَبَلٍ، وَزَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ، وَأَبُو زَيْدٍ .قَالَ: قُلْتُ لأَنَسٍ: مَنْ أَبُو زَيْدٍ؟ قَالَ: أَحَدُ عُمُومَتِي.

3794 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) के दौर में चार आदमियों ने क़ुरआन को जमा किया था सब अंसार से थे उबय बिन काब, मुआज़ बिन जबल, ज़ैद बिन साबित और अबू ज़ैद। मैंने अनस से पूछा: अबू ज़ैद कौन थे? कहा मेरे एक चचा थे।

बुख़ारी:3810. मुस्लिम:2465. अहमद:3/233.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3795 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ سُهَيْلِ بْنِ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: نِعْمَ الرَّجُلُ أَبُو بَكْرٍ، نِعْمَ الرَّجُلُ عُمَرُ، نِعْمَ الرَّجُلُ أَبُو عُبَيْدَةَ بْنُ الْجَرَّاحِ، نِعْمَ الرَّجُلُ أُسَيْدُ بْنُ حُضَيْرٍ، نِعْمَ الرَّجُلُ ثَابِتُ بْنُ قَيْسِ بْنِ شَمَّاسٍ، نِعْمَ الرَّجُلُ مُعَاذُ بْنُ جَبَلٍ، نِعْمَ الرَّجُلُ مُعَاذُ بْنُ عَمْرِو بْنِ الْجَمُوحِ.

3795 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "अबू बक्र अच्छे आदमी हैं, उमर अच्छे आदमी हैं, उसैद बिन हुज़ैर अच्छे आदमी हैं, साबित बिन कैस बिन शम्मास अच्छे आदमी हैं, मुआज़ बिन जबल अच्छे आदमी हैं, मुआज़ बिन अम्र बिन जमूह अच्छे आदमी हैं।"

सहीह: अहमद:2/419. हाकिम:3/233. इब्ने हिब्बान:6997.अस-सिलसिला अस-सहीहा:875.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है, हम इसे सिर्फ सुहैल के तरीक़ से ही जानते हैं।

3796 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ صِلَةَ بْنِ زُفَرَ، عَنْ حُذَيْفَةَ بْنِ الْيَمَانِ، قَالَ: جَاءَ الْعَاقِبُ وَالسَّيِّدُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَا: ابْعَثْ مَعَنَا أَمِينَكَ، فَقَالَ: فَإِنِّي سَأَبْعَثُ مَعَكُمْ أَمِينًا حَقَّ أَمِينٍ، فَأَشْرَفَ لَهَا النَّاسُ، فَبَعَثَ أَبَا عُبَيْدَةَ بْنَ الْجَرَّاحِ قَالَ: وَكَانَ أَبُو إِسْحَاقَ، إِذَا حَدَّثَ بِهَذَا الْحَدِيثِ عَنْ صِلَةَ، قَالَ: سَمِعْتُهُ مُنْذُ سِتِّينَ سَنَةً.

3796 - सय्यदना हुज़ैफा बिन यमान (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि आक़िब और सय्यद नबी(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हो कर कहने लगे: हमारे साथ कोई अमीन भेजिए तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "मैं तुम्हारे साथ ऐसा अमीन भेजूंगा जो अमीन कहलाने का हक़दार है।" लोगों ने इस ख़िदमत का लालच किया, तो आप ने अबू उबैदा बिन जर्राह को भेजा। सुफ़ियान कहते हैं: अबू इस्हाक़ जब यह हदीस बयान करते तो कहते मैंने इसे सिला से साठ साल से पहले सुना था।

बुख़ारी:3745. मुस्लिम:2420. इब्ने माजह:135. अहमद:5/385.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है, नीज़ इब्ने उमर और अनस (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, "हर उम्मत का एक अमीन होता है और इस उम्मत का अमीन अबू उबैदा बिन जर्राह है।"

34 بَابُ مَنَاقِبِ سَلْمَانَ الفَارِسِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

34 - सय्यदना सलमान फ़ारसी (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

3797 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، عَنِ الْحَسَنِ بْنِ صَالِحٍ، عَنْ أَبِي رَبِيعَةَ الْإِيَادِيِّ، عَنِ الْحَسَنِ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: إِنَّ الْجَنَّةَ تَشْتَاقُ إِلَى ثَلَاثَةٍ: عَلِيٍّ، وَعَمَّارٍ، وَسَلْمَانَ.

3797 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "जन्नत तीन आदमियों की मुश्ताक़ है, अली, अम्मार और सलमान (رضي الله عنه)।"

ज़ईफ़: हाकिम:3/137. इब्ने जौज़ी फ़ी इलल:459. अस-सिलसिला अज-ज़ईफ़ा:2328.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है, हम इसे हसन बिन सालेह के तरीक़ से ही जानते हैं।

35 بَابُ مَنَاقِبِ عَمَّارِ بْنِ يَاسِرٍ وَكُنْيَتُهُ أَبُو الْيَقْظَانِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

35 - सय्यदना अबुल यक्ज़ान अम्मार बिन यासिर (ﷺ) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

3798 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ هَانِئِ بْنِ هَانِئٍ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ: جَاءَ عَمَّارٌ يَسْتَأْذِنُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ائْذَنُوا لَهُ، مَرْحَبًا بِالطَّيِّبِ الْمُطَيَّبِ.

3798 - सय्यदना अली (ﷺ) बयान करते हैं कि अम्मार बिन यासिर ने आकर नबी(ﷺ) के पास जाने की इजाज़त मांगी तो आप ने फ़रमाया, "खुश आमदेद इस पाक रहने वाले पाकीज़ा आदमी को इजाज़त दे दो।"

सहीह: इब्ने माजह:146. अहमद:1/99. हाकिम:3/388. अबू याला:404.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3799- حَدَّثَنَا الْقَاسِمُ بْنُ دِينَارٍ الْكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ سِيَاهٍ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ أَبِي ثَابِتٍ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ:مَا خُيِّرَ عَمَّارٌ بَيْنَ أَمْرَيْنِ إِلاَّ اخْتَارَ أَرْشَدَهُمَا

3799 - सय्यदा आयशा (ﷺ) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "अम्मार को अगर दो कामों में इख़्तियार दिया गया तो उस ने ज़्यादा बेहतर काम को इख़्तियार किया।"

सहीह: इब्ने माजह:148. अहमद:6/113. हाकिम:3/388. अस-सिलसिला अस-सहीहा:835.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है, हम इसे अब्दुल अज़ीज़ बिन सियाह के तरीक़ से ही जानते हैं यह कूफा के रहने वाले थे। इनसे काफी लोगों ने रिवायत की है इनके एक बेटे का नाम यज़ीद बिन अब्दुल अज़ीज़ है जिनसे यहया बिन आदम ने रिवायत की है।

अबू ईसा कहते हैं हमें महमूद बिन गैलान ने, उन्हें वकीअ ने, उन्हें सुफ़ियान ने अब्दुल मलिक बिन उमैर से उन्होंने रिबई के आज़ादकर्दा गुलाम से बवास्ता रिबई बिन हिराश, हुज़ैफा (ﷺ) से रिवायत की है कि हम नबी(ﷺ) के पास बैठे हुए थे तो आप ने फ़रमाया, "मैं नहीं जानता कि मेरा तुम्हारे साथ कितना कयाम बाकी है, तुम मेरे बाद दो आदमियों की इक़्तिदा करना।" और आप(ﷺ) ने अबू बक्र व उमर की तरफ़ इशारा किया। "तुम अम्मार के तरीक़े को अपनाना और इब्ने मसऊद तुम्हें जो बयान करे उसको सच्चा समझना।" (तख़रीज के लिए देखिये:3663)

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है इस हदीस को इब्राहीम बिन साद ने भी सुफ़ियान सौरी से बवास्ता हिलाल मौला रिबई, रिबई से उन्होंने बवास्ता हुज़ैफा (رضي الله) नबी(ﷺ) से इसी तरह रिवायत की है, नीज़ सालिम मुरादी कूफी ने भी अम्र बिन हरम से बवास्ता रिबई बिन हिराश, हुज़ैफा के ज़रिए नबी(ﷺ) से इसी तरह रिवायत की है।

3800 - حَدَّثَنَا أَبُو مُصْعَبٍ الْمَدِينِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنِ الْعَلَاءِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَبْشِرْ يَا عَمَّارُ تَقْتُلُكَ الفِئَةُ البَاغِيَةُ.

3800 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "अम्मार खुश हो जाओ तुम्हें बाग़ी गिरोह शहीद करेगा।"

अबू याला:6524. इब्नुल असीर फी उस्दिल गाबा:4/ 133. अस-सिलसिला अस-सहीहा: 710.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस बारे में उम्मे सलमा, अब्दुल्लाह बिन अम्र, अबू युस्र और हुज़ैफा (رضي الله) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस अला बिन अब्दुर्रहमान के तरीक़ से हसन सहीह ग़रीब है।

36 بَابُ مَنَاقِبِ أَبِي ذَرٍّ الْغِفَارِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

36 - सय्यदना अबू ज़र गिफ़ारी (رضي الله) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

3801 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عُمَيْرٍ هُوَ أَبُو الْيَقْظَانِ، عَنْ أَبِي حَرْبِ بْنِ أَبِي الأَسْوَدِ الدِّيْلِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: مَا أَظَلَّتِ الخَضْرَاءُ وَلاَ أَقَلَّتِ الغَبْرَاءُ أَصْدَقَ مِنْ أَبِي ذَرٍّ.

3801 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله) रिवायत करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल{ﷺ} से सुना आप ने फ़रमाया, "अबू ज़र से ज़्यादा सच्चा किसी आदमी पर सर सब्ज़ चीज़ ने न साया किया है और न ही ज़मीन ने उठाया है।"

सहीह: इब्ने माजह:1436. अहमद:2/ 163. हाकिम:3/ 342.

वज़ाहत: इस बारे में अबू दर्दा और अबू हुज़ैफा (رضي الله) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।

3802 - حَدَّثَنَا العَبَّاسُ العَنْبَرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا النَّضْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ بْنُ عَمَّارٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو زُمَيْلٍ، عَنْ مَالِكِ بْنِ مَرْثَدٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا أَظَلَّتِ الخَضْرَاءُ وَلاَ أَقَلَّتِ الغَبْرَاءُ مِنْ ذِي لَهْجَةٍ أَصْدَقَ وَلاَ أَوْفَى مِنْ أَبِي ذَرٍّ شِبْهِ عِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ، فَقَالَ عُمَرُ بْنُ الخَطَّابِ كَالحَاسِدِ يَا رَسُولَ اللهِ أَفَتَعْرِفُ ذَلِكَ لَهُ؟ قَالَ: نَعَمْ فَاعْرِفُوهُ.

3802 - सय्यदना अबू ज़र (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "ईसा (عليه السلام) के मुशाबेह अबू ज़र से बढ़ कर किसी ज़बान के सच्चे पर आसमान ने साया किया है न ही ज़मीन ने उठाया है।" तो उमर बिन ख़त्ताब ने रश्क करते हुए कहा: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! क्या आप यह बात उन के लिए जानते हैं? आप ने फ़रमाया, "हाँ उसे भी बता दो।"

ज़ईफ़: इब्ने माजह्:156. अस-सिलसिला अस-सहीहा: 1436. इब्ने हिब्बान:7132. हाकिम:3/342.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है, और बअ़ज़ ने इस हदीस को रिवायत करते हुए बयान किया है कि आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "अबू ज़र ज़मीन पर ईसा इब्ने मरियम के ज़ोहद के साथ चलता है।"

37 بَابُ مَنَاقِبِ عَبْدِ اللهِ بْنِ سَلاَمٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

37 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन सलाम (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

3803 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ سَعِيدٍ الكِنْدِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُحَيَّاةَ يَحْيَى بْنُ يَعْلَى بْنِ عَطَاءٍ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنِ ابْنِ أَخِي عَبْدِ اللهِ بْنِ سَلاَمٍ، قَالَ: لَمَّا أُرِيدَ قَتْلُ عُثْمَانَ جَاءَ عَبْدُ اللهِ بْنُ سَلاَمٍ، فَقَالَ لَهُ عُثْمَانُ: مَا جَاءَ بِكَ؟ قَالَ: جِئْتُ فِي نَصْرِكَ، قَالَ: اخْرُجْ إِلَى

3803 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन सलाम (رضي الله عنه) के भतीजे (उमर बिन मुहम्मद) से रिवायत है कि जब सय्यदना उस्मान (رضي الله عنه) को शहीद करने का इरादा किया गया तो अब्दुल्लाह बिन सलाम उन के पास गए उस्मान ने उन से कहा: आप कैसे आए? कहा: मैं आप की मदद के लिए आया हूँ। उन्होंने फ़रमाया, आप लोगों के पास जाएँ उन्हें मुझ से हटायें आप का बाहर होना मेरे लिए आप के अन्दर होने से बेहतर है।

النَّاسِ فَاطْرُدْهُمْ عَنِّي فَإِنَّكَ خَارِجًا خَيْرٌ لِي مِنْكَ دَاخِلاً، فَخَرَجَ عَبْدُ اللهِ، إِلَى النَّاسِ، فَقَالَ: أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّهُ كَانَ اسْمِي فِي الجَاهِلِيَّةِ فُلاَنٌ فَسَمَّانِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَبْدَ اللهِ، وَنَزَلَتْ فِيَّ آيَاتٌ مِنْ كِتَابِ اللهِ، فَنَزَلَتْ فِيَّ{وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِنْ بني إسرائيل عَلَى مِثْلِهِ فَآمَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ إِنَّ اللَّهَ لاَ يَهْدِي القَوْمَ الظَّالِمِينَ} وَنَزَلَ{قُلْ كَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَمَنْ عِنْدَهُ عِلْمُ الكِتَابِ} إِنَّ لِلَّهِ سَيْفًا مَغْمُودًا عَنْكُمْ، وَإِنَّ الْمَلاَئِكَةَ قَدْ جَاوَرَتْكُمْ فِي بَلَدِكُمْ هَذَا الَّذِي نَزَلَ فِيهِ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَاللَّهَ اللَّهَ فِي هَذَا الرَّجُلِ أَنْ تَقْتُلُوهُ، فَوَاللَّهِ لَئِنْ قَتَلْتُمُوهُ لَتَطْرُدُنَّ جِيرَانَكُمُ الْمَلاَئِكَةَ، وَلَتَسُلُّنَّ سَيْفَ اللهِ الْمَغْمُودَ عَنْكُمْ فَلاَ يُغْمَدُ إِلَى يَوْمِ القِيَامَةِ، قَالُوا: اقْتُلُوا اليَهُودِيَّ وَاقْتُلُوا عُثْمَانَ.

चुनाँचे अब्दुल्लाह बिन सलाम ने बाहर जाकर लोगों से कहा: ऐ लोगो! जाहिलियत में मेरा फुलां नाम था, फिर रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मेरा नाम अब्दुल्लाह रखा, मेरे बारे में क़ुरआन की कई आयात नाज़िल हुईः मेरे बारे में यह आयत नाज़िल हुई (तर्जुमा) " और बनी इसराईल के एक गवाह ने भी ऐसी ही गवाही दी, वह तो ईमान ले आया लेकिन तुम ने तकब्बुर किया, बेशक अल्लाह तआला ज़ालिम कौम को हिदायत नहीं देता।" (अल- अह्काफ़: 10) और मेरे बारे में यह आयत नाज़िल हुई (तर्जुमा) कह दीजिए मेरे और तुम्हारे दर्मियान अल्लाह ही गवाही के लिए काफी है और वह जिसके पास पहली किताब का इल्म है।" (अर- राद:43) अल्लाह तआला की एक तलवार को तुम से बंद किया गया है और फ़रिश्ते तुम्हारे इस शहर में तुम्हारे साथ रहते हैं जिस में अल्लाह के रसूल(ﷺ) तशरीफ़ लाये थे, सो तुम उस आदमी के क़त्ल से अल्लाह से डरो, अल्लाह की क़सम! अगर तुम ने उसे क़त्ल कर दिया तो तुम अपने पड़ोसी फ़रिश्तों को भगा दोगे और अल्लाह की बंद तलवार सौंत लोगे, फिर क़यामत के दिन तक वह बंद नहीं होगी। लोग कहने लगे: इस यहूदी को भी क़त्ल कर दो और उस्मान को भी क़त्ल कर दो।

ज़ईफुल इस्नाद: देखिए: हदीस नम्बर:3256.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है, हम इसे अब्दुल मलिक बिन उमैर के तरीक़ से ही जानते हैं। इस हदीस को शोऐब बिन सफ़वान ने अब्दुल मलिक बिन उमैर से रिवायत करते वक़्त यह कहा है कि उमर बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन सलाम अपने दादा अब्दुल्लाह बिन सलाम से रिवायत करते हैं।

3804 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ صَالِحٍ، عَنْ رَبِيعَةَ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ أَبِي إِدْرِيسَ الخَوْلَانِيِّ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ عُمَيْرَةَ، قَالَ: لَمَّا حَضَرَ مُعَاذَ بْنَ جَبَلٍ الْمَوْتُ قِيلَ لَهُ: يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَوْصِنَا، قَالَ: أَجْلِسُونِي، فَقَالَ: إِنَّ العِلْمَ وَالإِيمَانَ مَكَانَهُمَا، مَنْ ابْتَغَاهُمَا وَجَدَهُمَا، يَقُولُ ذَلِكَ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، وَالتَمِسُوا العِلْمَ عِنْدَ أَرْبَعَةِ رَهْطٍ، عِنْدَ عُوَيْمِرٍ أَبِي الدَّرْدَاءِ، وَعِنْدَ سَلْمَانَ الفَارِسِيِّ، وَعِنْدَ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ وَعِنْدَ عَبْدِ اللهِ بْنِ سَلَامٍ الَّذِي كَانَ يَهُودِيًّا فَأَسْلَمَ فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: إِنَّهُ عَاشِرُ عَشَرَةٍ فِي الجَنَّةِ.

3804 - यज़ीद बिन उमैरा बयान करते हैं कि जब सय्यदना मुआज़ बिन जबल (رضي الله عنه) की वफ़ात का वक़्त आया, तो हम ने उनसे कहा: ऐ अबू अब्दुर्रहमान! हमें कोई वसीयत करें। उन्होंने कहा: मुझे बिठा दो फिर फ़रमाया,इल्म और ईमान अपनी जगह पर हैं जो इन्हें तलाश करे वह इनें हासिल कर लेता है, तीन मर्तबा यह बात कही, और इल्म को चार आदमियों से हासिल करना: उवैमिर अबू दर्दा, सलमान फ़ारसी, अब्दुल्लाह बिन मसऊद और अब्दुल्लाह बिन सलाम के पास (अब्दुल्लाह बिन सलाम) जो कि पहले यहूदी थे, फिर मुसलमान हो गए तो मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से फ़रमाते हुए सुना: "यह जन्नत का दस्वाँ हिस्सा है।"

सहीह: अहमद:5/242. हाकिम:3/270. इब्ने हिब्बान:7165. तबरानी फ़िल कबीर: 8514.

वज़ाहत: इस बारे में साद (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

38 بَابُ مَنَاقِبِ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

38 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

3805 - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ بْنِ يَحْيَى بْنِ سَلَمَةَ بْنِ كُهَيْلٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ سَلَمَةَ بْنِ كُهَيْلٍ، عَنْ أَبِي الزَّعْرَاءِ، عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: اقْتَدُوا بِاللَّذَيْنِ مِنْ بَعْدِي مِنْ

3805 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल{ﷺ} ने फ़रमाया, "मेरे बाद मेरे सहाबा में से दो आदमियों अबू बक्र और उमर की इक़्तिदा करना, अम्मार की आदात इख़्तियार करना और इब्ने मसऊद की नसीहत को मज़बूती से थामना।

أَصْحَابِي أَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ، وَاهْتَدُوا بِهَدْيِ عَمَّارٍ، وَتَمَسَّكُوا بِعَهْدِ ابْنِ مَسْعُودٍ.

सहीह: हाकिम:3/75. तबरानी फ़िल कबीर:8426. अस- सिलसिला अस- सहीहा:1233.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इब्ने मसऊद के तरीक़ से यह हदीस हसन ग़रीब है, हम इसे यहया बिन सलमा बिन कुहैल के तरीक़ से ही जानते हैं और यह्या बिन सलमा हदीस में ज़ईफ़ है। अबू ज़अरा का नाम अब्दुल्लाह बिन हानी है और जिस अबू ज़ुर्आ से शोबा, सौरी और इब्ने उयय्ना रिवायत लेते हैं उनका नाम उमर बिन अम्र है वह अब्दुल्लाह बिन मसऊद के शागिर्द और अबू अह्वस के भतीजे हैं।

3806 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ يُوسُفَ بْنِ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ الأَسْوَدِ بْنِ يَزِيدَ، أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا مُوسَى، يَقُولُ: لَقَدْ قَدِمْتُ أَنَا وَأَخِي، مِنَ الْيَمَنِ وَمَا نُرَى حِينًا إِلاَّ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ مَسْعُودٍ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ بَيْتِ النَّبِيِّ ﷺ ، لِمَا نَرَى مِنْ دُخُولِهِ وَدُخُولِ أُمِّهِ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ.

3806 - अबू मूसा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैं और मेरा भाई यमन से आए तो काफी अर्सा तक हमारा ख़याल यही रहा कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) नबी(ﷺ) के खानदान के एक फर्द हैं, इसलिए कि हम उनका और उनकी मां का नबी(ﷺ) के पास आना जाना देखते थे।

बुख़ारी : 3763. मुस्लिम:2460. अहमद:4/401.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है, इसे सौरी ने भी अबू इस्हाक़ से रिवायत किया है।

3807 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ، قَالَ: أَتَيْنَا عَلَى حُذَيْفَةَ، فَقُلْنَا: حَدِّثْنَا بِأَقْرَبِ النَّاسِ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ هَدْيًا وَدَلًّا فَنَأْخُذَ عَنْهُ وَنَسْمَعَ مِنْهُ؟ قَالَ: كَانَ أَقْرَبُ النَّاسِ هَدْيًا وَدَلًّا وَسَمْتًا بِرَسُولِ اللهِ ﷺ ابْنُ مَسْعُودٍ حَتَّى يَتَوَارَى مِنَّا فِي بَيْتِهِ، وَلَقَدْ عَلِمَ

3807 - अब्दुर्रहमान बिन यज़ीद बयान करते हैं कि हम हुज़ैफा (رضي الله عنه) के पास आए, हम ने कहा: आप हमें उस शख़्स के बारे में बताइए जो तरीक़े और वज़ा क़ता में रसूलुल्लाह(ﷺ) के बहुत क़रीब हो, ताकि हम उस से नसीहतें लें और उस से (अहादीस) सुनें उन्होंने फ़रमाया: सीरत व किरदार और वक़ार व संजीदगी[1] में तमाम लोगों से ज़्यादा अल्लाह के रसूल(ﷺ) के क़रीब इब्ने मसऊद हैं, यहाँ तक कि वह अपने घर में चले जाएँ और मुहम्मद(ﷺ) के

الْمَحْفُوظُونَ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ ﷺ أَنَّ ابْنَ أُمِّ عَبْدٍ هُوَ مِنْ أَقْرَبِهِمْ إِلَى اللهِ زُلْفَى.

सहाबा में से अहले इल्म जानते हैं कि इब्ने उम्मे अब्द उन में सब से ज़्यादा अल्लाह के क़रीब हैं।

बुख़ारी:3762. अहमद:5/389. इब्ने हिब्बान:7063.

तौज़ीह: هديا : तरीक़ा आदात व खसाइल। دلا : वकार व संजीदगी की कैफ़ियत। سمتا : बेहतर रुख और अच्छी हैयत वाला होना।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3808 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا صَاعِدُ الحَرَّانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَنْصُورٌ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ الحَارِثِ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَوْ كُنْتُ مُؤَمِّرًا أَحَدًا مِنْ غَيْرِ مَشُورَةٍ لَأَمَّرْتُ عَلَيْهِمْ ابْنَ أُمِّ عَبْدٍ .هَذَا حَدِيثٌ إِنَّمَا نَعْرِفُهُ مِنْ حَدِيثِ الحَارِثِ عَنْ عَلِيٍّ.

3808 - सय्यदना अली (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने फ़रमाया, अगर मैं इन लोगों में से बगैर मशवरा किसी को अमीर बनाने वाला होता तो मैं इब्ने उम्मे अब्द (अब्दुल्लाह बिन मसऊद) को उन पर अमीर मुक़र्रर करता।"

ज़ईफ़: इब्ने माजह:137. अस-सिलसिला अज-ज़ईफा:2327. अहमद:1/76. बज़्ज़ार:837.इब्ने अबी शैबा:12/113.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है, हम इसे बवास्ता हारिस ही अली (رضي الله عنه) से जानते हैं।

3809 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ سُفْيَانَ الثَّوْرِيِّ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ الحَارِثِ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَوْ كُنْتُ مُؤَمِّرًا أَحَدًا مِنْ غَيْرِ مَشُورَةٍ لَأَمَّرْتُ ابْنَ أُمِّ عَبْدٍ.

3809 - सय्यदना अली (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने फ़रमाया, "अगर मैं मशवरे के बगैर किसी को अमीर बनाने वाला होता तो इब्ने उम्मे अब्द को बनाता।"

ज़ईफ़: तखरीज के लिए पिछली हदीस देखें।

3810 - حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ شَقِيقِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: خُذُوا

3810 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "चार आदमियों से कुरआन सीखो, इब्ने मसऊद, उबय बिन काब, मुआज़ बिन जबल और सालिम मौला अबू हुज़ैफा(رضي الله عنه)

الْقُرْآنَ مِنْ أَرْبَعَةٍ: مِنْ ابْنِ مَسْعُودٍ، وَأُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ، وَمُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ، وَسَالِمٍ مَوْلَى أَبِي حُذَيْفَةَ.

से।"

बुख़ारी:3760. मुस्लिम:2464. अहमद:2/ 163.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3811 - حَدَّثَنَا الْجَرَّاحُ بْنُ مَخْلَدٍ الْبَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ خَيْثَمَةَ بْنِ أَبِي سَبْرَةَ، قَالَ: أَتَيْتُ الْمَدِينَةَ فَسَأَلْتُ اللَّهَ أَنْ يُيَسِّرَ لِي جَلِيسًا صَالِحًا، فَيَسَّرَ لِي أَبَا هُرَيْرَةَ، فَجَلَسْتُ إِلَيْهِ، فَقُلْتُ لَهُ: إِنِّي سَأَلْتُ اللَّهَ أَنْ يُيَسِّرَ لِي جَلِيسًا صَالِحًا فَوُفِّقْتَ لِي، فَقَالَ: مِنْ أَيْنَ أَنْتَ؟ قُلْتُ: مِنْ أَهْلِ الكُوفَةِ، جِئْتُ أَلْتَمِسُ الخَيْرَ وَأَطْلُبُهُ فَقَالَ: أَلَيْسَ فِيكُمْ سَعْدُ بْنُ مَالِكٍ مُجَابُ الدَّعْوَةِ، وَابْنُ مَسْعُودٍ صَاحِبُ طَهُورِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَعْلَيْهِ، وَحُذَيْفَةُ صَاحِبُ سِرِّ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَعَمَّارٌ الَّذِي أَجَارَهُ اللَّهُ مِنَ الشَّيْطَانِ عَلَى لِسَانِ نَبِيِّهِ، وَسَلْمَانُ صَاحِبُ الكِتَابَيْنِ؟ قَالَ قَتَادَةُ، وَالْكِتَابَانِ الْإِنْجِيلُ وَالْقُرْآنُ.

3811 - ख़ैसमा बिन सब्रा (رضي الله عنه) कहते हैं: मैं मदीना गया तो अल्लाह से सवाल किया कि वह मुझे कोई सालेह रफीक अता करे, चुनांचे अल्लाह ने मुझे अबू हुरैरा की रिफाक़त अता की, मैं उन के पास बैठा, फिर उन से कहा: मैंने अल्लाह से सवाल किया था कि वह मुझे अच्छा साहिबे मजलिस अता करे तो आप मुझे मिले हैं। उन्होंने पूछा तुम कहाँ से आए हो? मैंने कहा: कूफा वालों में से हूँ, मैं भलाई (इल्म) की तलाश में निकला हूँ, तो उन्होंने फ़रमाया, क्या तुम में साद बिन मालिक नहीं हैं जिनकी दुआएं कुबूल होती हैं, और क्या तुम में इब्ने मसऊद जो रसूलुल्लाह(ﷺ) के वुज़ू का पानी और जूते उठाने वाले थे, रसूलुल्लाह(ﷺ) के राज़दान हुज़ैफा, अम्मार जिन्हें अल्लाह तआला ने अपने नबी की ज़बान पर शैतान से पनाह दी और दोनों किताबों (कुरआन और इंजील पर ईमान लाने) वाले सलमान नहीं है? क़तादा कहते हैं दो किताबों से मुराद इंजील और कुरआन है।

सहीह।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है और ख़ैसमा, अब्दुर्रहमान बिन अबी सब्रा के बेटे हैं उनकी निस्बत दादा की तरफ़ है।

39 بَابُ مَنَاقِبِ حُذَيْفَةَ بْنِ الْيَمَانِ رضي الله عنه

39 - सय्यदना हुज़ैफा बिन यमान (ﷺ) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

3812 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا إِسْحَاقُ بْنُ عِيسَى، عَنْ شَرِيكٍ، عَنْ أَبِي الْيَقْظَانِ، عَنْ زَاذَانَ، عَنْ حُذَيْفَةَ، قَالَ: قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ لَوْ اسْتَخْلَفْتَ. قَالَ: إِنْ أَسْتَخْلِفْ عَلَيْكُمْ فَعَصَيْتُمُوهُ عُذِّبْتُمْ، وَلَكِنْ مَا حَدَّثَكُمْ حُذَيْفَةُ فَصَدِّقُوهُ، وَمَا أَقْرَأَكُمْ عَبْدُ اللهِ فَاقْرَءُوهُ قَالَ عَبْدُ اللهِ: فَقُلْتُ لِإِسْحَاقَ بْنِ عِيسَى: يَقُولُونَ هَذَا عَنْ أَبِي وَائِلٍ. قَالَ: لاَ، عَنْ زَاذَانَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ.

3812 - सय्यदना हुज़ैफा बिन यमान (ﷺ) बयान करते हैं कि लोगों ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! अगर आप ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर दें (तो बेहतर होगा) आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "अगर मैंने ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर दिया फिर तुम ने उसकी नाफ़रमानी की तो तुम्हें अज़ाब दिया जाएगा, लेकिन हुज़ैफा तुम से जो कहे उसे सच्चा समझना, और अब्दुल्लाह जो तुम्हें पढ़ाये उसे पढ़ना।"

ज़ईफ़: हाकिम:3/70. दूसरे तरीक़ से।

वज़ाहत: अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान कहते हैं: मैंने इस्हाक़ बिन ईसा से कहा: लोग कहते हैं: यह हदीस अबू वाइल से मर्वी है। उन्होंने कहा: इन्शा अल्लाह ज़ाजान से ही है।

यह हदीस हसन है और यह शरीक की रिवायत है।

40 بَابُ مَنَاقِبِ زَيْدِ بْنِ حَارِثَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

40 - सय्यदना ज़ैद बिन हारिसा (ﷺ) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

3813 - حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَكْرٍ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عُمَرَ، أَنَّهُ فَرَضَ لأُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ فِي ثَلاَثَةِ آلاَفٍ وَخَمْسِ مِائَةٍ، وَفَرَضَ لِعَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ فِي ثَلاَثَةِ آلاَفٍ. قَالَ عَبْدُ

3813 - ज़ैद बिन असलम अपने बाप से रिवायत करते हैं कि सय्यदना उमर (ﷺ) ने उसामा बिन ज़ैद का वज़ीफ़ा तीन हज़ार पांच सौ, अब्दुल्लाह बिन उमर का वजीफा तीन हज़ार मुक़र्रर किया, तो अब्दुल्लाह बिन उमर ने अपने बाप से कहा: आप ने उसामा को मुझ पर

اللهِ بْنُ عُمَرَ لأَبِيه: لِمَ فَضَّلْتَ أُسَامَةَ عَلَيَّ؟ فَوَاللَّهِ مَا سَبَقَنِي إِلَى مَشْهَدٍ. قَالَ: لأَنَّ زَيْدًا كَانَ أَحَبَّ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ أَبِيكَ، وَكَانَ أُسَامَةُ أَحَبَّ إِلَى رَسُولِ اللهِ مِنْكَ، فَآثَرْتُ حُبَّ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى حُبِّي.

फ़ज़ीलत क्यों दी? अल्लाह की क़सम! वह किसी भी मार्का में मुझ से आगे नहीं थे। उन्होंने फ़रमाया, इसलिए कि ज़ैद, रसूलुल्लाह (ﷺ) को तेरे बाप से ज़्यादा महबूब थे और उसामा भी तुम से ज़्यादा प्यारे थे, इसलिए मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) के महबूब को अपने महबूब पर तर्जीह दी।

ज़ईफ़: इब्ने साद:4/70. दूसरे तरीक़ से।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

3814 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: مَا كُنَّا نَدْعُو زَيْدَ بْنَ حَارِثَةَ إِلاَّ زَيْدَ ابْنَ مُحَمَّدٍ حَتَّى نَزَلَتْ{ادْعُوهُمْ لِآبَائِهِمْ هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ}.

3814 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि ज़ैद बिन हारिसा को हम ज़ैद बिन मुहम्मद ही कहा करते थे हत्ता (यहाँ तक) कि यह आयत नाज़िल हुई (तर्जुमा) "उन्हें उनके बापों के नाम से पुकारो अल्लाह के नज़दीक यह ज़्यादा अदल वाली बात है।" (अल- अहज़ाब:5)

सहीह: तख़रीज के लिए देखें हदीस:3209.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह है।

3815 - حَدَّثَنَا الجَرَّاحُ بْنُ مَخْلَدٍ البَصْرِيُّ وَغَيْرُ وَاحِدٍ، قَالُوا: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُمَرَ بْنِ الرُّومِيِّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ، عَنْ أَبِي عَمْرٍو الشَّيْبَانِيِّ، قَالَ: أَخْبَرَنِي جَبَلَةُ بْنُ حَارِثَةَ، أَخُو زَيْدٍ قَالَ: قَدِمْتُ عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ ابْعَثْ مَعِي أَخِي زَيْدًا قَالَ: هُوَ ذَا، فَإِنْ انْطَلَقَ مَعَكَ لَمْ

3815 - सय्यदना ज़ैद के भाई जबला बिन हारिसा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आप मेरे भाई ज़ैद को मेरे साथ भेज दीजिए। आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "वह रहा (ले जाओ) फ़रमाया, "अगर वह तुम्हारे साथ चला जाए तो मैं नहीं रोकूंगा।" ज़ैद ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! अल्लाह की क़सम! मैं आप(ﷺ) पर किसी दूसरे का इंतेखाब नहीं

أَمْنَعُهُ. قَالَ زَيْدٌ: يَا رَسُولَ اللهِ، وَاللهِ لاَ أَخْتَارُ عَلَيْكَ أَحَدًا، قَالَ: فَرَأَيْتُ رَأْيَ أَخِي أَفْضَلَ مِنْ رَأْيِي.

करूंगा। रावी कहते हैं: मेरे भाई की राय मेरी राय से बेहतर थी।

हसन:हाकिम: 3/114. तबरानी फ़िल कबीर:2192. हियातुर्रूवात:6123.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। हम इसे बवास्ता इब्ने रूमी ही अली बिन मुस्हिर से जानते हैं।

3816 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ الحَسَنِ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعَثَ بَعْثًا وَأَمَّرَ عَلَيْهِمْ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ فَطَعَنَ النَّاسُ فِي إِمْرَتِهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنْ تَطْعَنُوا فِي إِمْرَتِهِ فَقَدْ كُنْتُمْ تَطْعَنُونَ فِي إِمْرَةِ أَبِيهِ مِنْ قَبْلُ، وَايْمُ اللهِ إِنْ كَانَ لَخَلِيقًا لِلإِمَارَةِ، وَإِنْ كَانَ مِنْ أَحَبِّ النَّاسِ إِلَيَّ، وَإِنَّ هَذَا مِنْ أَحَبِّ النَّاسِ إِلَيَّ بَعْدَهُ.

3816 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने एक लश्कर रवाना किया और उनका अमीर उसामा बिन ज़ैद को बनाया, लोगों ने उनकी इमारत में नुक़्ताचीनी की तो नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, "अगर तुम इसके अमीर बनने में नुक़्ताचीनी करते हो, तो तुमने इससे पहले इसके बाप की इमारत में भी तअन किया था, अल्लाह की क़सम! वह इमारत के काबिल था और मुझे तमाम लोगों से ज़्यादा महबूब था और उसके बाद यह भी मुझे तमाम लोगों से ज़्यादा महबूब है।"

बुख़ारी:3730. मुस्लिम:2426. अहमद:2/20.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

अबू ईसा कहते हैं: हमें अली बिन हुज्र ने उन्हें इस्माईल बिन जाफ़र ने अब्दुल्लाह बिन दीनार से बवास्ता इब्ने उमर (رضي الله عنه) नबी करीम(ﷺ) से इमाम मालिक बिन अनस की हदीस जैसी हदीस बयान की है।

41 بَابُ مَنَاقِبِ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رضي الله عنه

41 - सय्यदना उसामा बिन ज़ैद के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

3817 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ بُكَيْرٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ سَعِيدِ

3817 - उसामा बिन ज़ैद (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल(ﷺ) की तबीयत जब ज़्यादा खराब हो गई तो मैं और कुछ लोग

मदीना में उतरे[1] फिर मैं अल्लाह के रसूल(ﷺ) के पास गया आप ख़ामोश थे, बात नहीं कर रहे थे फिर रसूलुल्लाह(ﷺ) अपने दोनों हाथ मुझ पर रखने लगे और उन्हें बलंद करते थे, मैं जान गया कि आप(ﷺ) मेरे लिए दुआ कर रहे हैं।

हसन: अहमद:5/201. तबरानी फ़िल कबीर:377.

بْنِ عُبَيْدِ بْنِ السَّبَّاقِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: لَمَّا ثَقُلَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَبَطْتُ وَهَبَطَ النَّاسُ الْمَدِينَةَ، فَدَخَلْتُ عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَدْ أَصْمَتَ فَلَمْ يَتَكَلَّمْ، فَجَعَلَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَضَعُ يَدَيْهِ عَلَيَّ وَيَرْفَعُهُمَا فَأَعْرِفُ أَنَّهُ يَدْعُو لِي.

तौज़ीह: (1) नबी(ﷺ) ने अपनी ज़िंदगी के आख़िरी अय्याम (दिनों) में उसामा बिन ज़ैद की इमारत में यह लश्कर रवाना फ़रमाया अभी लश्कर जुर्फ़ मक़ाम जो कि मदीना की बालाई जानिब है वहाँ पर था कि आप(ﷺ) के बारे में उन्हें ख़बर पहुंची तो यह वापस आ गए फिर सिद्दीक़े अकबर (رضي الله عنه) ने अपनी ख़िलाफ़त में सब से पहला काम लश्करे उसामा को रवाना करने वाला ही किया था।

3818 - उम्मुल मोमिनीन सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि नबी(ﷺ) ने उसामा की नाक[1] साफ़ करने का इरादा किया तो आयशा ने कहा: आप(ﷺ) रहने दें मैं यह काम करती हूँ, आप ने फ़रमाया, "ऐ आयशा! उससे मोहब्बत करना इसलिए कि मैं भी उससे मोहब्बत करता हूँ।"

सहीह: इब्ने हिब्बान:7058.

3818 - حَدَّثَنَا الحُسَيْنُ بْنُ حُرَيْثٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الفَضْلُ بْنُ مُوسَى، عَنْ طَلْحَةَ بْنِ يَحْيَى، عَنْ عَائِشَةَ بِنْتِ طَلْحَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ قَالَتْ: أَرَادَ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يُنَحِّيَ مُخَاطَ أُسَامَةَ. قَالَتْ عَائِشَةُ: دَعْنِي حَتَّى أَكُونَ أَنَا الَّذِي أَفْعَلُ قَالَ: يَا عَائِشَةُ أَحِبِّيهِ فَإِنِّي أُحِبُّهُ.

तौज़ीह: (1) مخاط: नाक से निकलने वाला माद्दा नाक की रेज़िश। (देखिये:अल-मोजमुल वसीत पृ.1036)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

3819 - सय्यदना उसामा बिन ज़ैद (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैं नबी(ﷺ) के पास बैठा हुआ था कि अचानक अली और अब्बास ने

3819 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ الحَسَنِ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ

بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: أَخْبَرَنِي أُسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ، قَالَ: كُنْتُ جَالِسًا إِذْ جَاءَ عَلِيٌّ وَالْعَبَّاسُ يَسْتَأْذِنَانِ، فَقَالاَ: يَا أُسَامَةُ اسْتَأْذِنْ لَنَا عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ عَلِيٌّ وَالعَبَّاسُ يَسْتَأْذِنَانِ، فَقَالَ: أَتَدْرِي، مَا جَاءَ بِهِمَا؟ قُلْتُ: لاَ. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَكِنِّي أَدْرِي، فَأَذِنَ لَهُمَا، فَدَخَلاَ، فَقَالاَ: يَا رَسُولَ اللهِ جِئْنَاكَ نَسْأَلُكَ أَيُّ أَهْلِكَ أَحَبُّ إِلَيْكَ؟ قَالَ: فَاطِمَةُ بِنْتُ مُحَمَّدٍ، فَقَالاَ: مَا جِئْنَاكَ نَسْأَلُكَ عَنْ أَهْلِكَ. قَالَ: أَحَبُّ أَهْلِي إِلَيَّ مَنْ قَدْ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَأَنْعَمْتُ عَلَيْهِ أُسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ. قَالاَ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: ثُمَّ عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ. قَالَ العَبَّاسُ: يَا رَسُولَ اللهِ جَعَلْتَ عَمَّكَ آخِرَهُمْ؟ قَالَ: لأَنَّ عَلِيًّا قَدْ سَبَقَكَ بِالهِجْرَةِ.

आकर कहा: ऐ उसामा! हमारे लिए रसूलुल्लाह(ﷺ) से अन्दर आने की इजाज़त तलब करो, मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! अली और अब्बास (رضي الله عنه) आना चाहते हैं। आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या तुम जानते हो कि यह दोनों किस लिए आए हैं?" मैंने कहा: मैं नहीं जानता तो नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, "लेकिन मैं जानता हूँ उन्हें इजाज़त दे दो।" वह दोनों अन्दर आए तो कहने लगे: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! हम आप से यह पूछने आए हैं कि आप अपने अहल में सब से ज़्यादा किससे मोहब्बत करते हैं? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद से।" उन्होंने कहा: "हम आप से आप की औलाद के बारे में नहीं पूछ रहे, फ़रमाया, "मेरे अहल में सब से ज़्यादा महबूब वह शख़्स है जिस पर अल्लाह ने भी इन्आम किया और मैंने भी इन्आम किया वह है उसामा बिन ज़ैद।" उन्होंने कहा: फिर कौन? फ़रमाया, "अली बिन अबी तालिब" अब्बास कहने लगे: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आप(ﷺ) ने अपने चचा को आखिर में कर दिया? फ़रमाया, अली ने आप(ﷺ) से पहले हिज्रत की है।"

ज़ईफ़: हाकिम:3/596. तहावी फी शरहे मुश्किलुल आसार:5298

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और शोबा उमर बिन अबू सलमा को ज़ईफ़ कहते हैं।

42 - सय्यदना जरीर बिन अब्दुल्लाह अल बजली (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

42 بَابُ مَنَاقِبِ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ البَجَلِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

3820 - सय्यदना जरीर बिन अब्दुल्लाह बजली (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैं जब से मुसलमान हुआ हूँ रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मुझे (किसी अता से) महरूम नहीं रखा और आप(ﷺ) ने मुझे जब भी देखा आप मुस्कुरा दिए।

बुख़ारी:3035. मुस्लिम:2475. इब्ने माजह:159. अहमद:4/358.

3820 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرٍو الأَزْدِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَائِدَةُ، عَنْ بَيَانٍ، عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: مَا حَجَبَنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ مُنْذُ أَسْلَمْتُ وَلاَ رَآنِي إِلاَّ ضَحِكَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3821 - सय्यदना जरीर बिन अब्दुल्लाह बजली (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैं जब से इस्लाम कुबूल किया हूँ रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मुझे (किसी अता से) महरूम नहीं किया और आप(ﷺ) ने मुझे जब भी देखा आप मुस्कुरा दिए।

सहीह: तख़रीज के लिए पिछली हदीस देखिए।

3821 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرٍو، قَالَ: حَدَّثَنَا زَائِدَةُ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ، عَنْ قَيْسٍ، عَنْ جَرِيرٍ، قَالَ مَا حَجَبَنِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُنْذُ أَسْلَمْتُ وَلاَ رَآنِي إِلاَّ تَبَسَّمَ.

43 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

43 بَابُ مَنَاقِبِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا

3822 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि उन्होंने दो मर्तबा जिब्रील (عليه السلام) को देखा और दो मर्तबा ही नबी(ﷺ) ने उनके लिए बरकत की दुआ की।

ज़ईफुल इस्नाद:इब्ने साद:2/370.

3822 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، وَمَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالاَ: حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ لَيْثٍ، عَنْ أَبِي جَهْضَمٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّهُ رَأَى جِبْرِيلَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ مَرَّتَيْنِ وَدَعَا لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرَّتَيْنِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस मुर्सल है, क्योंकि अबू जह्ज़म ने इब्ने अब्बास को नहीं पाया और ये बवास्ता उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन अब्बास भी अब्दुल्लाह बिन अब्बास से मर्वी है और अबू जह्जम का नाम मूसा बिन सालिम है।

3823 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ الْمُؤَدِّبُ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْقَاسِمُ بْنُ مَالِكٍ الْمُزَنِيُّ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ أَبِي سُلَيْمَانَ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: دَعَا لِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يُؤْتِيَنِي اللَّهُ الحِكْمَةَ مَرَّتَيْنِ.

3823 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मेरे लिए दो मर्तबा दुआ की कि अल्लाह मुझे इल्म व हिक्मत अता फ़रमाए।

सहीह: निसाई फ़िल कुब्रा:8178.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: अता के तरीक़ से यह हदीस हसन ग़रीब है, इसे इक्रिमा ने भी इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) से रिवायत किया है।

3824 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الوَهَّابِ الثَّقَفِيُّ، قَالَ: أَخْبَرَنَا خَالِدٌ الْحَذَّاءُ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: ضَمَّنِي إِلَيْهِ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَالَ: اللَّهُمَّ عَلِّمْهُ الْحِكْمَةَ.

3824 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मुझे अपने साथ लगा कर दुआ की "ऐ अल्लाह इसे हिक्मत (कुरआन का इल्म) सिखा दे।"

बुख़ारी:3756. इब्ने माजह:166. अहमद:1/214.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

44 بَابُ مَنَاقِبِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا

44 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

3825 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: رَأَيْتُ فِي الْمَنَامِ كَأَنَّمَا بِيَدِي قِطْعَةُ إِسْتَبْرَقٍ وَلاَ أُشِيرُ بِهَا إِلَى مَوْضِعٍ

3825 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैंने ख्वाब में देखा कि मेरे हाथ में रेशम का एक टुकड़ा है मैं जन्नत में जिस जगह भी इसे इशारा करता हूँ वह मुझे उस तरफ़ उड़ा कर ले जाता है, मैंने (अपनी बहन) सय्यदा

مِنَ الجَنَّةِ إِلاَّ طَارَتْ بِي إِلَيْهِ فَقَصَصْتُهَا عَلَى حَفْصَةَ، فَقَصَّتْهَا حَفْصَةُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: إِنَّ أَخَاكَ رَجُلٌ صَالِحٌ، أَوْ: إِنَّ عَبْدَ اللهِ رَجُلٌ صَالِحٌ.

हफ्सा (رضي الله عنها) को बयान किया, तो हफ्सा ने नबी(ﷺ) को बयान किया, आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम्हारा भाई नेक आदमी है" या यह फ़रमाया, "अब्दुल्लाह नेक आदमी है।"
बुख़ारी:7015. मुस्लिम:2478. अहमद:2/5.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

45 بَابُ مَنَاقِبِ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

45 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

3826 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ إِسْحَاقَ الجَوْهَرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الْمُؤَمَّلِ، عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأَى فِي بَيْتِ الزُّبَيْرِ مِصْبَاحًا، فَقَالَ: يَا عَائِشَةُ مَا أُرَى أَسْمَاءَ إِلاَّ قَدْ نُفِسَتْ فَلاَ تُسَمُّوهُ حَتَّى أُسَمِّيَهُ. فَسَمَّاهُ عَبْدَ اللهِ وَحَنَّكَهُ بِتَمْرَةٍ.

3826 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि नबी(ﷺ) ने ज़ुबैर (رضي الله عنه) के घर चिराग़ देखा तो फ़रमाया, "ऐ आयशा! मेरा ख्याल है कि अस्मा ने बच्चे को जन्म दिया है तो उसका नाम न रखना मैं ख़ुद उसका नाम रखूंगा।" चुनांचे आप(ﷺ) ने उसका नाम अब्दुल्लाह रखा और अपने हाथ से एक खुजूर चबा कर उस के मुंह में रखी।
हसन: हियातुर्रूवात:6195.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

46 بَابُ مَنَاقِبِ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رضي الله عنه

46 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

3827 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنِ الجَعْدِ أَبِي عُثْمَانَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: مَرَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَسَمِعَتْ أُمِّي أُمُّ سُلَيْمٍ صَوْتَهُ، فَقَالَتْ: بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي يَا

3827 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) गुज़रे तो मेरी मां उम्मे सुलैम ने आप(ﷺ) की आवाज़ सुनकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! यह उनैस है, रावी कहते हैं: फिर

رَسُولَ اللهِ، أُنَيْسٌ. قَالَ: فَدَعَا لِي رَسُولُ اللهِ ﷺ ثَلاثَ دَعَوَاتٍ، قَدْ رَأَيْتُ مِنْهُنَّ اثْنَتَيْنِ فِي الدُّنْيَا، وَأَنَا أَرْجُو الثَّالِثَةَ فِي الآخِرَةِ.

रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मेरे लिए तीन दुआएं की उन में से दो की बरकतें तो मैंने दुनिया में ही देख ली और तीसरी की आख़िरत में उम्मीद करता हूँ।

मुस्लिम:2481. अबू याला:4354. अब्दुर्रज्ज़ाक़:7/34.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। नीज़ यह हदीस कई तुरूक़ से बवास्ता अनस बिन मालिक नबी(ﷺ) से मर्वी है।

3828 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ شَرِيكٍ، عَنْ عَاصِمٍ الأَحْوَلِ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: رُبَّمَا قَالَ لِيَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَا ذَا الأُذُنَيْنِ. قَالَ أَبُو أُسَامَةَ: يَعْنِي يُمَازِحُهُ.

3828 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) बअज़ दफ़ा मुझे कहा करते थे "ऐ दो कानों वाले! अबू उसामा कहते हैं, यानी आप(ﷺ) उन से मज़ाक करते थे।

सहीह: तखरीज के लिए देखिए हदीस नम्बर:1992.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3829 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ: سَمِعْتُ قَتَادَةَ، يُحَدِّثُ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ أُمِّ سُلَيْمٍ، أَنَّهَا قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ أَنَسٌ خَادِمُكَ ادْعُ اللَّهَ لَهُ. قَالَ: اللَّهُمَّ أَكْثِرْ مَالَهُ وَوَلَدَهُ، وَبَارِكْ لَهُ فِيمَا أَعْطَيْتَهُ.

3829 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) से रिवायत है कि उम्मे सुलैम (رضي الله عنها) ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! अनस बिन मालिक आप का ख़ादिम है आप उस के लिए अल्लाह से दुआ कीजिए। आप(ﷺ) ने दुआ की, ऐ अल्लाह! इसका माल और इसकी औलाद ज़्यादा कर दे और जो तू इसे दे उस में इसके लिए बरकत अता फ़रमा।"

बुख़ारी:4378. मुस्लिम:2480. अहमद:6/430.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3830 - حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ أَخْزَمَ الطَّائِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ جَابِرٍ، عَنْ أَبِي نَصْرٍ، عَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَنَّانِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِبَقْلَةٍ كُنْتُ أَجْتَنِيهَا.

3830 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने एक तरकारी के नाम पर मेरी कुनियत रखी जिसे मैं चुना करता था।

ज़ईफ़: अहमद: 3/127. अबू याला:4057. तबरानी फ़िल कबीर:656. हियातुर्रूवात:4699.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है, हम इसे सिर्फ जाबिर जोफ़ी के ज़रिए ही अबू नस्र से जानते हैं और अबू नस्र खैसमा बिन अबी खैसमा बसरी हैं उन्होंने अनस (رضي الله عنه) से कई अहादीस रिवायत की हैं।

3831 - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ يَعْقُوبَ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ حُبَابٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَيْمُونٌ أَبُو عَبْدِ اللهِ، قَالَ: حَدَّثَنَا ثَابِتٌ، قَالَ: قَالَ لِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، يَا ثَابِتُ خُذْ عَنِّي فَإِنَّكَ لَنْ تَأْخُذَ عَنْ أَحَدٍ أَوْثَقَ مِنِّي، إِنِّي أَخَذْتُهُ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَأَخَذَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَنْ جِبْرِيلَ، وَأَخَذَهُ جِبْرِيلُ عَنِ اللهِ تَعَالَى.

3831 - साबित बुनानी रिवायत करते हैं कि अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) ने मुझ से कहा: ऐ साबित! मुझ से हदीस ले लो, इसलिए कि मुझ से ज़्यादा क़ाबिले एतमाद से तुम ने रिवायत नहीं ली होगी, मैंने इसे अल्लाह के रसूल(ﷺ) से लिया है, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने इसे जिब्रील से लिया था और जिब्रील ने अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल से।

ज़ईफुल इस्नाद: तखरीज ज़िक्र नहीं की गई। (लेकिन मुस्तदरक हाकिम:3/547 देखिए।)

3832 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ حُبَابٍ، عَنْ مَيْمُونٍ أَبِي عَبْدِ اللهِ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، نَحْوَ حَدِيثِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ يَعْقُوبَ، وَلَمْ يَذْكُرْ فِيهِ وَأَخَذَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ جِبْرِيلَ.

3832 - (अबू ईसा कहते हैं) हमें अबू कुरैब ने भी ज़ैद बिन हुबाब से बवास्ता मैमून अबी अब्दुल्लाह, साबित बुनानी से अनस की हदीस इब्राहीम बिन याकूब की तरह ही बयान की है लेकिन इसमें यह ज़िक्र नहीं है कि नबी(ﷺ) ने इसे जिब्रील से लिया है।

ज़ईफ़: तख़रीज के लिए पिछली हदीस देखिए।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है,हम इसे ज़ैद बिन हुबाब के तरीक़ से ही जानते हैं।

3833 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، عَنْ أَبِي خَلْدَةَ، قَالَ: قُلْتُ لِأَبِي الْعَالِيَةِ، سَمِعَ أَنَسٌ، مِنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: خَدَمَهُ عَشْرَ سِنِينَ وَدَعَا لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَكَانَ لَهُ

3833 - अबू खल्दा कहते हैं कि मैंने अबू आलिया से पूछा: क्या अनस (رضي الله عنه) ने नबी(ﷺ) से सिमा किया है? उन्होंने कहा: उन्होंने दस साल आप (عليه السلام) की ख़िदमत की है और नबी{ﷺ} ने उन के लिए (बरकत की) दुआ भी की थी उन के दो बाग़ थे जो साल में दो

بُسْتَانٌ يَحْمِلُ فِي السَّنَةِ الْفَاكِهَةَ مَرَّتَيْنِ، وَكَانَ فِيهَا رَيْحَانٌ يَجِدُ مِنْهُ رِيحَ الْمِسْكِ.

मर्तबा फल देते थे और इसमें एक फूल का पौधा भी था जिस से कस्तूरी की खुशबू आती थी।

सहीह: अस- सिलसिला अस- सहीहा:2241.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है,और अबू खल्दा का नाम खालिद बिन दीनार था, यह मोहद्दिसीन के नज़दीक सिक़ह् थे, नीज़ अबू खल्दा ने अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) से मुलाक़ात भी की और उन से रिवायत भी की है।

47 بَابُ مَنَاقِبِ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

47 - बाब: अबू हुरैरा (رضي الله عنه) के मनाक़िब का बयान।

3834 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُمَرَ بْنِ عَلِيٍّ الْمُقَدَّمِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ سِمَاكٍ، عَنْ أَبِي الرَّبِيعِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَبَسَطْتُ ثَوْبِي عِنْدَهُ، ثُمَّ أَخَذَهُ فَجَمَعَهُ عَلَى قَلْبِي، فَمَا نَسِيتُ بَعْدَهُ.

3834 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) कहते हैं कि मैं नबी(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो मैंने आप(ﷺ) के पास अपनी चादर फैला दी, आप(ﷺ) ने उसे उठाया और समेट कर उसे मेरे दिल पर रख दिया, उसके बाद से मैं कोई चीज़ नहीं भूला।

हसनुल इस्नाद।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस इस सनद से हसन ग़रीब है।

3835 - حَدَّثَنَا أَبُو مُوسَى مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ: حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ، عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ أَسْمَعُ مِنْكَ أَشْيَاءَ فَلاَ أَحْفَظُهَا، قَالَ: ابْسُطْ رِدَاءَكَ فَبَسَطْتُ، فَحَدَّثَ حَدِيثًا كَثِيرًا، فَمَا نَسِيتُ شَيْئًا حَدَّثَنِي بِهِ.

3835 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) कहते हैं कि मैंने अर्ज़ किया: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! मैं बहुत सी चीज़ें आप(ﷺ) से सुनता हूँ लेकिन उन्हें याद नहीं रख पाता, आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "अपनी चादर फैलाओ।" तो मैंने उसे फैला दिया, फिर आप(ﷺ) ने बहुत सी हदीसें बयान फ़रमाई तो आप(ﷺ) ने जितनी भी हदीसें मुझ से बयान फ़रमाई मैं उन में से कोई भी नहीं भूला।

बुख़ारी:1119, 3648.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से कई सनदों से आई है।

3836 - अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) से मर्वी है कि उन्होंने अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से कहा: ऐ अबू हुरैरा! आप हम सब से ज़्यादा रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ रहने वाले और आप की अहादीस को हम सब से ज़्यादा याद रखने वाले थे।

सहीहुल इस्नाद:अहमद:2/2 हाकिम:3/510 अब्दुर्रज़्ज़ाक़:6270

3836 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا يَعْلَى بْنُ عَطَاءٍ، عَنِ الوَلِيدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّهُ قَالَ: لأَبِي هُرَيْرَةَ: يَا أَبَا هُرَيْرَةَ أَنْتَ كُنْتَ أَلْزَمَنَا لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَحْفَظَنَا لِحَدِيثِهِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।

3837 - मालिक बिन अबी आमिर से रिवायत है कि एक आदमी ने तल्हा बिन उबैदुल्लाह (رضي الله عنه) के पास आकर कहा: ऐ अबू मुहम्मद! आप बताइए कि यह यमानी यानी अबू हुरैरा तुम लोगों से ज़्यादा हदीसे रसूल(ﷺ) को जानते हैं, हम उन से वह सुनते हैं जो आप लोगों से नहीं सुनते हैं या फिर यह अल्लाह के रसूल(ﷺ) की तरफ़ बातें मंसूब करते हैं जो आप ने नहीं कीं। उन्होंने फ़रमाया, यह अल्लाह के रसूल(ﷺ) से वह सब कुछ सुना करते थे जो हम नहीं सुनते थे इस की वजह यह है कि वह मिस्कीन थे उन के पास कुछ नहीं था रसूलुल्लाह(ﷺ) के मेहमान थे, उनका हाथ रसूलुल्लाह(ﷺ) के हाथ में रहता था और हम लोग घरों वाले मालदार लोग थे, हम सुबह शाम ही अल्लाह के रसूल(ﷺ) के पास जाया करते थे मुझे इसमें कोई शक नहीं है कि उन्होंने अल्लाह के रसूल(ﷺ) से वह सब

3837 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي شُعَيْبٍ الحَرَّانِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَبِي عَامِرٍ، قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ، فَقَالَ يَا أَبَا مُحَمَّدٍ أَرَأَيْتَ هَذَا اليَمَانِيَّ، يَعْنِي أَبَا هُرَيْرَةَ، أَهُوَ أَعْلَمُ بِحَدِيثِ رَسُولِ اللهِ ﷺ مِنْكُمْ؟ نَسْمَعُ مِنْهُ مَا لاَ نَسْمَعُ مِنْكُمْ، أَوْ يَقُولُ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ مَا لَمْ يَقُلْ. قَالَ: أَمَّا أَنْ يَكُونَ سَمِعَ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ مَا لَمْ نَسْمَعْ عَنْهُ، وَذَاكَ أَنَّهُ كَانَ مِسْكِينًا لاَ شَيْءَ لَهُ ضَيْفًا لِرَسُولِ اللهِ ﷺ، يَدُهُ مَعَ يَدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَكُنَّا

कुछ सुना है जो हम नहीं सुन सके और तुझे उस शख़्स में भलाई नज़र नहीं आयेगी जो अल्लाह के रसूल की तरफ़ वह बात मंसूब करे जो आप ने नहीं कही।

ज़ईफुल इस्नाद: हाकिम:3/511. अबू याला:636. बज़्ज़ार:932.

نَحْنُ أَهْلَ بُيُوتَاتٍ وَغِنًى، وَكُنَّا نَأْتِي رَسُولَ اللهِ ﷺ طَرَفَي النَّهَارِ، لاَ أَشُكُّ إِلاَّ أَنَّهُ سَمِعَ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ مَا لَمْ نَسْمَعْ، وَلاَ تَجِدُ أَحَدًا فِيهِ خَيْرٌ يَقُولُ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ مَا لَمْ يَقُلْ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है, हम इसे मुहम्मद बिन इस्हाक़ के तरीक़ से ही जानते हैं, इसे यूनुस बिन बुकैर वग़ैरह ने भी मुहम्मद बिन इस्हाक़ से रिवायत किया है।

3838 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मुझ से पूछा: "तुम किन लोगों से हो" मैंने अर्ज़ किया, दौस कबीले से। आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "मेरा यह ख्याल था कि दौस के किसी आदमी में भलाई नहीं है।"

सहीह

3838 - حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ آدَمَ ابْنِ بِنْتِ أَزْهَرَ السَّمَّانِ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ بْنُ عَبْدِ الوَارِثِ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو خَلْدَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو العَالِيَةِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ لِي النَّبِيُّ ﷺ: مِمَّنْ أَنْتَ؟ قَالَ: قُلْتُ: مِنْ دَوْسٍ. قَالَ: مَا كُنْتُ أَرَى أَنَّ فِي دَوْسٍ أَحَدًا فِيهِ خَيْرٌ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है, नीज़ अबू खल्दा का नाम ख़ालिद बिन दीनार और अबू आलिया का नाम रुफै है।

3839 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैं कुछ खुजूरें लेकर नबी(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! आप इन में बरकत की दुआ कीजिए आप(ﷺ) ने उन्हें मुट्ठी में लिया, मेरे लिए उनमें बरकत की दुआ की, फिर मुझ से फ़रमाया, "इन्हें पकड़ो और इन्हें अपने उस थैले (तोशादान) में रख लो तुम जब भी इस से कुछ लेने का इरादा करो तो अपना हाथ उस

3839 - حَدَّثَنَا عِمْرَانُ بْنُ مُوسَى القَزَّازُ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْمُهَاجِرُ، عَنْ أَبِي العَالِيَةِ الرِّيَاحِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِتَمَرَاتٍ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ ادْعُ اللَّهَ فِيهِنَّ بِالبَرَكَةِ فَضَمَّهُنَّ ثُمَّ دَعَا لِي فِيهِنَّ بِالبَرَكَةِ. فَقَالَ لِي: خُذْهُنَّ وَاجْعَلْهُنَّ فِي

مِزْوَدِكَ هَذَا، أَوْ فِي هَذَا الْمِزْوَدِ، كُلَّمَا أَرَدْتَ أَنْ تَأْخُذَ مِنْهُ شَيْئًا فَأَدْخِلْ يَدَكَ فِيهِ فَخُذْهُ وَلاَ تَنْثُرْهُ نَثْرًا، فَقَدْ حَمَلْتُ مِنْ ذَلِكَ التَّمْرِ كَذَا وَكَذَا مِنْ وَسْقٍ فِي سَبِيلِ اللهِ، فَكُنَّا نَأْكُلُ مِنْهُ وَنُطْعِمُ، وَكَانَ لاَ يُفَارِقُ حِقْوِي حَتَّى كَانَ يَوْمُ قَتْلِ عُثْمَانَ فَإِنَّهُ انْقَطَعَ.

में दाख़िल करके लेना और उसे झाड़ना मत।" तहक़ीक़ कि मैंने उन खुजूरों से इतने वस्क अल्लाह के रास्ते में दिए, हम उस से ख़ुद भी खाते और लोगों को भी खिलाते, वह (थैला) मेरे कमर के साथ ही रहता था यहाँ तक कि उस्मान (رضي الله عنه) की शहादत के दिन गिर गया।

हसनुल इस्नादःअहमदः 2/352. इब्ने हिब्बान:6532. बैहक़ी फी दलाइल:6/109. अस-सिलसिला अस-सहीहा: 2936.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है, नीज़ यह हदीस एक और सनद से भी अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से मर्वी है।

3840 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ سَعِيدٍ الْمُرَابِطِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أُسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ رَافِعٍ، قَالَ: قُلْتُ لأَبِي هُرَيْرَةَ، لِمَ كُنِّيتَ أَبَا هُرَيْرَةَ؟ قَالَ أَمَا تَفْرَقُ مِنِّي؟ قُلْتُ: بَلَى وَاللَّهِ إِنِّي لأَهَابُكَ. قَالَ: كُنْتُ أَرْعَى غَنَمَ أَهْلِي، فَكَانَتْ لِي هُرَيْرَةٌ صَغِيرَةٌ فَكُنْتُ أَضَعُهَا بِاللَّيْلِ فِي شَجَرَةٍ، فَإِذَا كَانَ النَّهَارُ ذَهَبْتُ بِهَا مَعِي فَلَعِبْتُ بِهَا فَكَنَّوْنِي أَبَا هُرَيْرَةَ.

3840 - अब्दुल्लाह बिन राफ़े बयान करते हैं कि मैंने अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से कहा: आप की कुनियत अबू हुरैरा क्यों पड़ी? उन्होंने फ़रमाया, क्या मुझ से डरते नहीं? मैंने कहा: क्यों नहीं, अल्लाह की क़सम! मैं आप से डरता हूँ। उन्होंने फ़रमाया, मैं अपने घर वालों की बकरियां चराया करता था मेरे पास एक छोटी सी बिल्ली थी, रात के वक़्त मैं उसे दरख़्त पर छोड़ देता, फिर जब दिन होता तो मैं उसे अपने साथ ले जाता, मैं उस के साथ खेलता तो लोगों ने मेरी कुनियत ही अबू हुरैरा (बिल्ली वाला) रख दी।

हसनुल इस्नाद।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

3841 حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ وَهْبِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنْ أَخِيهِ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: لَيْسَ أَحَدٌ أَكْثَرَ حَدِيثًا عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ مِنِّي

3841 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि कोई शख़्स मुझ से ज़्यादा रसूलुल्लाह(ﷺ) की अहादीस बयान करने वाला नहीं है सिवाए अब्दुल्लाह बिन अम्र (رضي الله عنه) के इसलिए कि वह लिखते थे और मैं

إِلاَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَمْرٍو، فَإِنَّهُ كَانَ يَكْتُبُ وَكُنْتُ لاَ أَكْتُبُ.

लिखता नहीं था।

सहीह: देखिए हदीस:2668.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

48 بَابُ مَنَاقِبِ مُعَاوِيَةَ بْنِ أَبِي سُفْيَانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

48 - सय्यदना मुआविया बिन अबी सुफ़ियान (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

3842 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُسْهِرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ عَبْدِ الْعَزِيزِ، عَنْ رَبِيعَةَ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي عُمَيْرَةَ، وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ لِمُعَاوِيَةَ: اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ هَادِيًا مَهْدِيًّا وَاهْدِ بِهِ.

3842 - सय्यदना अब्दुर्रहमान बिन अबी उमैरह (رضي الله عنه) जो कि रसूलुल्लाह(ﷺ) के सहाबा में से हैं बयान करते हैं कि नबी(ﷺ) ने मुआविया (رضي الله عنه) के लिए दुआ की "ऐ अल्लाह! इसे हिदायत याफ्ता रहनुमा बना और इस के ज़रिये लोगों को हिदायत दे।"

सहीह: अहमद:4/216. तबरानी फ़िल औसत:660. दूसरे तरीक़ से। अस-सिलसिला अस-सहीहा:1969.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

3843 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ النُّفَيْلِيُّ قَالَ: حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ وَاقِدٍ، عَنْ يُونُسَ بْنِ حَلْبَسٍ، عَنْ أَبِي إِدْرِيسَ الْخَوْلاَنِيِّ، قَالَ: لَمَّا عَزَلَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ عُمَيْرَ بْنَ سَعْدٍ عَنْ حِمْصَ وَلَّى مُعَاوِيَةَ، فَقَالَ النَّاسُ: عَزَلَ عُمَيْرًا وَوَلَّى مُعَاوِيَةَ، فَقَالَ عُمَيْرٌ: لاَ تَذْكُرُوا مُعَاوِيَةَ إِلاَّ بِخَيْرٍ، فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: اللَّهُمَّ اهْدِ بِهِ.

3843 - अबू इदरीस ख़ौलानी (رحمه الله) बयान करते हैं कि उमर बिन ख़त्ताब (رضي الله عنه) ने जब उमैर बिन साद को हिम्स से माज़ूल कर के मुआविया को गवर्नर बनाया। तो उमैर कहने लगे: मुआविया का तज़किरा भलाई के साथ ही करो इसलिए कि मैंने अल्लाह के रसूल{ﷺ} से सुना आप{ﷺ} फ़रमा रहे थे: "ऐ अल्लाह! इस के साथ लोगों को हिदायत दे।".

सहीह लिगैरिही।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है और अम्र बिन वाकिद ज़ईफ़ रावी है।

49 - सय्यदना अम्र बिन आस (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

49 بَابُ مَنَاقِبِ عَمْرِو بْنِ العَاصِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

3844 - उक़्बा बिन आमिर (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "लोग़ इस्लाम लाये और अम्र बिन आस ईमान लाए।"

हसन: अहमद।4/ 155. अस-सिलसिला अस-सहीहा:155.

3844 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قال: حَدَّثَنَا ابْنُ لَهِيعَةَ، عَنْ مِشْرَحِ بْنِ هَاعَانَ، عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَسْلَمَ النَّاسُ وَآمَنَ عَمْرُو بْنُ العَاصِ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है, हम इसे इब्ने लहीया के तरीक़ से ही मिश्रह बिन हाआन से जानते हैं इसकी सनद क़वी नहीं है।

3845 - सय्यदना तल्हा बिन उबैदुल्लाह (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह{ﷺ} को फ़रमाते हुए सुना: "अम्र बिन आस क़ुरैश के सालिहीन में से हैं।"

ज़ईफुल इस्नाद:अहमद: 1/ 161. अबू याला:645. अस-सिलसिला अस-सहीहा: 653.

3845 - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ قال: أَخْبَرَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ نَافِعِ بْنِ عُمَرَ الجُمَحِيِّ، عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، قَالَ: قَالَ طَلْحَةُ بْنُ عُبَيْدِ اللهِ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: إِنَّ عَمْرَو بْنَ العَاصِ مِنْ صَالِحِي قُرَيْشٍ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस हदीस को हम नाफ़ेअ बिन उमर जुमही के तरीक़ से ही जानते हैं और नाफ़े सिक़ह् रावी हैं, नीज़ इसकी सनद मुत्तसिल नहीं है, इब्ने मुलैका ने तल्हा बिन उबैदुल्लाह (رضي الله عنه) को नहीं पाया।

50 - सय्यदना ख़ालिद बिन वलीद (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

50 بَابُ مَنَاقِبِ خَالِدِ بْنِ الوَلِيدِ رضي الله عنه

3846 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि हम अल्लाह के रसूल(ﷺ) के साथ एक जगह उतरे तो लोग गुज़रने लगे, रसूलुल्लाह(ﷺ) पूछते थे: "ऐ अबू हुरैरा! यह

3846 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قال: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: نَزَلْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْزِلاً، فَجَعَلَ النَّاسُ يَمُرُّونَ،

فَيَقُولُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ هَذَا يَا أَبَا هُرَيْرَةَ؟ فَأَقُولُ: فُلَانٌ، فَيَقُولُ: نِعْمَ عَبْدُ اللهِ هَذَا، وَيَقُولُ: مَنْ هَذَا؟ فَأَقُولُ: فُلَانٌ، فَيَقُولُ: بِئْسَ عَبْدُ اللهِ هَذَا، حَتَّى مَرَّ خَالِدُ بْنُ الوَلِيدِ، فَقَالَ: مَنْ هَذَا؟ فَقُلْتُ: هَذَا خَالِدُ بْنُ الوَلِيدِ، فَقَالَ: نِعْمَ عَبْدُ اللهِ خَالِدُ بْنُ الوَلِيدِ، سَيْفٌ مِنْ سُيُوفِ اللَّهِ.

कौन है?" मैं कहता फुलां शख़्स है। तो आप(ﷺ) फ़रमाते: "अल्लाह का यह बन्दा अच्छा है" और पूछते यह कौन है?" मैं कहता यह फुलां है। आप फ़रमाते: "यह अल्लाह का बन्दा बुरा है।" हत्ता (यहाँ तक) कि ख़ालिद बिन वलीद गुज़रे तो आप(ﷺ) ने पूछा यह कौन है?" मैंने कहा: यह खालिद बिन वलीद है। आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह का अच्छा बन्दा है। खालिद बिन वलीद अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार है।"

सहीह: अहमद: 2/360. दूसरे तरीक़ से। (والسنة منقطع) । अस-सिलसिला अस-सहीहा: 1237.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है, हम ज़ैद बिन असलम का अबू हुरैरा से सिमा करना नहीं जानते, और यह हदीस मेरे नज़दीक मुर्सल है, नीज़ इस बारे में अबू बक्र सिद्दीक़ (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

51 بَابُ مَنَاقِبِ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ رضي الله عنه

51 - सय्यदना साद बिन मुआज़ (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

3847 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ قَالَ: حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ البَرَاءِ، قَالَ: أُهْدِيَ لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَوْبُ حَرِيرٍ فَجَعَلُوا يَعْجَبُونَ مِنْ لِينِهِ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَتَعْجَبُونَ مِنْ هَذَا؟ لَمَنَادِيلُ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ فِي الجَنَّةِ أَحْسَنُ مِنْ هَذَا.

3847 - सय्यदना बराअ (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) को रेशम का कपड़ा तोहफ़े में मिला, लोग उसकी नर्मी से तअज्जुब करने लगे, तो अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम इस से तअज्जुब करते हो? जन्नत में साद बिन मुआज़ के रूमाल इस से भी उम्दा है।"

बुख़ारी:3249. मुस्लिम:2668. इब्ने माजह:157. निसाई:5302.

वज़ाहत: इस बारे में अनस (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3848 - सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल(ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना जबकि साद बिन मुआज़ का जनाज़ा उनके सामने था: "आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "उनके लिए रहमान का अर्श भी हिल गया।"

बुख़ारी दूसरे तरीक़ से:3802. मुस्लिम:2466. इब्ने माजह:158.

3848 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو الزُّبَيْرِ، أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ، يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: وَجَنَازَةُ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ: اهْتَزَّ لَهُ عَرْشُ الرَّحْمَنِ.

वज़ाहत: इस बारे में उसैद बिन हुज़ैर, अबू सईद और रुमैसा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3849 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि जब साद बिन मुआज़ का जनाज़ा उठाया गया, तो मुनाफ़िक़ कहने लगे: इसका जनाज़ा किस क़दर हल्का है? और उन्होंने यह बात बनू क़ुरैज़ा के बारे में उनके फ़ैसले की वजह से कही थी, चुनांचे नबी(ﷺ) को यह बात पहुंची तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "उसे फ़रिश्तों ने उठाया हुआ था।"

सहीह: इब्ने हिब्बान:7032. अब्द बिन हुमैद:1195. तबरानी फ़िल कबीर:5342.

3849 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: لَمَّا حُمِلَتْ جَنَازَةُ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ قَالَ الْمُنَافِقُونَ: مَا أَخَفَّ جَنَازَتَهُ، وَذَلِكَ لِحُكْمِهِ فِي بَنِي قُرَيْظَةَ، فَبَلَغَ ذَلِكَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: إِنَّ الْمَلَائِكَةَ كَانَتْ تَحْمِلُهُ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

52 - सय्यदना कैस बिन साद बिन उबादा (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

52 بَابُ مَنَاقِبِ قَيْسِ بْنِ سَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

3850 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि कैस बिन साद का नबी(ﷺ) से ऐसे ही ताल्लुक़ था जैसे कोतवाल (थानेदार) का अमीर

3850 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَرْزُوقٍ الْبَصْرِيُّ قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الْأَنْصَارِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ ثُمَامَةَ، عَنْ أَنَسٍ،

قَالَ: كَانَ قَيْسُ بْنُ سَعْدٍ مِنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَنْزِلَةِ صَاحِبِ الشُّرَطِ مِنَ الأَمِيرِ قَالَ الأَنْصَارِيُّ: يَعْنِي مِمَّا يَلِي مِنْ أُمُورِهِ.

से ताल्लुक़ होता है। अंसारी कहते हैं: इस से मुराद यह है कि वह आप(ﷺ) के कामों को बजा लाते थे।

बुखारी:7155. इब्ने हिब्बान:4508. बैहक़ी:8/ 155.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे अंसारी के तरीक़ से ही जानते हैं। (अबू ईसा कहते हैं) हमें मुहम्मद बिन यहया ने मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अंसारी से इसी तरह की हदीस बयान की है और उसमें अंसारी का कौल ज़िक्र नहीं किया।

53 بَابُ مَنَاقِبِ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا

53 - सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

3851 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: جَاءَنِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيْسَ بِرَاكِبِ بَغْلٍ وَلاَ بِرْذَوْنٍ.

3851 - सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) मेरे पास तशरीफ़ लाए आप न खच्चर पर थे न घोड़े पर।(1)

तखरीज के लिए देखिये हदीस नम्बर:3015, 3097.

तौज़ीह: بِرْذَوْن : तुर्की घोड़े को कहा जाता है इस से मुराद यह है कि आप पैदल तशरीफ़ लाये यह आप(ﷺ) की अपने सहाबी से मोहब्बत का सबूत है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3852 - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عُمَرَ قَالَ: حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ السَّرِيِّ، عَنْ حَمَّادِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: اسْتَغْفَرَ لِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيْلَةَ البَعِيرِ خَمْسًا وَعِشْرِينَ مَرَّةً.

3852 - सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने ऊँट (खरीदने) की रात मेरे लिए पच्चीस (25) मर्तबा दुआए मग़्फ़िरत की।

ज़ईफ़: हाकिम: 3/565. इब्ने हिब्बान:7142. तयालिसी:1733. तबरानी फिस सगीर:732.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। और लैलतुल बईर (ऊँट

की रात) से मुराद वही है जो कई तुरूक़ से मर्वी है कि जाबिर (رضی اللہ) नबी(ﷺ) के साथ एक सफ़र में थे, तो उन्होंने अपना ऊँट नबी(ﷺ) को फ़रोख़्त किया और मदीना तक सवारी करने की शर्त लगाई, जाबिर कहते हैं: जिस रात मैंने अपना ऊँट नबी(ﷺ) को फ़रोख़्त किया आप(ﷺ) ने मेरे लिए पच्चीस मर्तबा दुआए मग़फ़िरत फ़रमाई, जाबिर के वालिद अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन हिज़ाम कई बेटियाँ छोड़ कर उहुद के मैदान में शहीद हो गए थे। फिर जाबिर ही उनकी परवरिश करते और उन पर ख़र्च करते थे और नबी(ﷺ) इस सबब से जाबिर पर एहसान और शफ़क़त करते थे। एक और हदीस में जाबिर (رضی اللہ) से ऐसे ही मर्वी है।

54 بَابُ مَنَاقِبِ مُصْعَبِ بْنِ عُمَيْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

54 - सय्यदना मुस्अब बिन उमैर (رضی اللہ) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

3853 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ قَال: حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ قَال: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ خَبَّابٍ، قَالَ: هَاجَرْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَبْتَغِي وَجْهَ اللهِ، فَوَقَعَ أَجْرُنَا عَلَى اللهِ، فَمِنَّا مَنْ مَاتَ لَمْ يَأْكُلْ مِنْ أَجْرِهِ شَيْئًا، وَمِنَّا مَنْ أَيْنَعَتْ لَهُ ثَمَرَتُهُ فَهُوَ يَهْدِبُهَا، وَإِنَّ مُصْعَبَ بْنَ عُمَيْرٍ مَاتَ وَلَمْ يَتْرُكْ إِلاَّ ثَوْبًا، كَانُوا إِذَا غَطَّوْا بِهِ رَأْسَهُ خَرَجَتْ رِجْلاَهُ، وَإِذَا غَطَّوْا بِهِ رِجْلَيْهِ خَرَجَ رَأْسُهُ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غَطُّوا رَأْسَهُ وَاجْعَلُوا عَلَى رِجْلَيْهِ الإِذْخِرَ.

3853 - सय्यदना ख़ब्बाब (رضی اللہ) बयान करते हैं कि हम ने अल्लाह की रिज़ाजोई की तलाश के लिए नबी(ﷺ) के साथ हिजरत की, तो हमारा अज्र अल्लाह के जिम्मे हो गया, हम में से कुछ ऐसी हालत में भी फौत हुए कि उन्होंने अपनी उज्रत में से कुछ भी नहीं कमाया, और कोई ऐसा भी है जिसका फल उस के लिए पक चुका है और वह उसे चुन रहा है, और मुस्अब बिन उमैर फौत हुए तो उनका तरका एक ही कपड़ा था जब उसके साथ उनका सर ढाँपते तो उनके पाँव नंगे हो जाते, और जब पाँव ढाँपते तो तो सर नंगा हो जाता, तो रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "उसके सर को ढाँप दो और उसके पैरों पर इज्खिर (घास) रख दो।"

बुख़ारी:1274. मुस्लिम:940. अबू दाऊद:2876. निसाई:1903.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। हमें हन्नाद ने, उन्हें इब्ने इदरीस ने आमश से बवास्ता अबू वाइल शकीक़ बिन सलमा, ख़ब्बाब बिन अरत(رضی اللہ) से ऐसी ही हदीस बयान की है।

55 - सय्यदना बराअ बिन मालिक (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

55 بَابُ مَنَاقِبِ الْبَرَاءِ بْنِ مَالِكٍ رضي الله عنه

3854 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "कितने ही ऐसे लोग हैं जो पुराने कपड़ों[1] और गर्द आलूद बिखरे बालों वाले हैं, जिनकी तरफ़ किसी का ख़याल नहीं जाता, लेकिन अगर वह अल्लाह के नाम की क़सम उठालें तो अल्लाह उन्हें बरी कर देता है, उन में बराअ बिन मालिक भी है।"

सहीह: अहमद:3/145. दूसरे तरीक़ से। सहीहुत्तर्गीब:2083.

3854 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي زِيَادٍ قَالَ: حَدَّثَنَا سَيَّارٌ قَالَ: حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنَا ثَابِتٌ، وَعَلِيُّ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كَمْ مِنْ أَشْعَثَ أَغْبَرَ ذِي طِمْرَيْنِ لاَ يُؤْبَهُ لَهُ لَوْ أَقْسَمَ عَلَى اللهِ لأَبَرَّهُ مِنْهُمُ الْبَرَاءُ بْنُ مَالِكٍ.

तौज़ीह: ذِی طِمْرَيْن : طمر का तस्निया है इसकी जमा اطمار आती है, पुराना बोसीदा कपड़ा। (देखिये:अल-मोजमुल वसीत:पृ.666)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है।

56 - सय्यदना अबू मूसा अशअरी (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

56 بَابُ مَنَاقِبِ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ رضي الله عنه

3855 - सय्यदना अबू मूसा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ अबू मूसा! तुम्हें आले दाऊद की खूबसूरत आवाज़ों में से एक खूबसूरत आवाज़ दी गई है।"

बुख़ारी:5048. मुस्लिम:793.

3855 - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الكِنْدِيُّ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو يَحْيَى الحِمَّانِيُّ، عَنْ بُرَيْدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ ، أَنَّهُ قَالَ: يَا أَبَا مُوسَى لَقَدْ أُعْطِيتَ مِزْمَارًا مِنْ مَزَامِيرِ آلِ دَاوُدَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब हसन सहीह है।
नीज़ इस बारे में बुरैदा, अबू हुरैरा और अनस (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

3856 - सय्यदना सहल बिन साद (رضي الله عنه) से

3856 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ بَزِيعٍ -

قال: حَدَّثَنَا الفُضَيْلُ بْنُ سُلَيْمَانَ قال: حَدَّثَنَا أَبُو حَازِمٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ، قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يَحْفِرُ الخَنْدَقَ وَنَحْنُ نَنْقُلُ التُّرَابَ وَيَمُرُّ بِنَا فَقَالَ: اللَّهُمَّ لاَ عَيْشَ إِلاَّ عَيْشَ الآخِرَهْ ... فَاغْفِرْ لِلأَنْصَارِ وَالْمُهَاجِرَهْ.

रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ थे आप खंदक खोद रहे थे और हम मिट्टी निकाल रहे थे, आप(ﷺ) हमारे पास से गुज़रे तो कहा: "ऐ अल्लाह ज़िंदगी तो सिर्फ आख़िरत की ज़िंदगी ही है सो तू अंसार व मुहाजिरीन को बख़्श दे।"

बुख़ारी:3797. मुस्लिम: 1804.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है और अबू हाज़िम का नाम सलमा बिन दीनार आरज जाहिद है। नीज़ इस बारे में अनस बिन मालिक से भी हदीस मर्वी है।

3857 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قال: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ قال: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، قال: حَدَّثَنَا أَنَسٌ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقُولُ: اللَّهُمَّ لاَ عَيْشَ إِلاَّ عَيْشَ الآخِرَهْ , فَأَكْرِمِ الأَنْصَارَ وَالْمُهَاجِرَهْ.

3857 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) फ़रमाया करते थे: "ऐ अल्लाह ज़िंदगी तो आख़िरत की ज़िंदगी ही है तू अंसार और मुहाजिरीन को इज्ज़त अता फ़रमा दे।"

सहीह बुख़ारी:2834. मुस्लिम: 1804.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी(رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है, और कई तुरूक़ से अनस (رضي الله عنه) से मर्वी है।

57 بَابُ مَا جَاءَ فِي فَضْلِ مَنْ رَأَى النَّبِيَّ ﷺ وَصَحِبَهُ

57 - नबी{ﷺ} के सहाबी की फ़ज़ीलत।

3858 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَبِيبِ بْنِ عَرَبِيٍّ الْبَصْرِيُّ قال: حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ كَثِيرٍ الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: سَمِعْتُ طَلْحَةَ بْنَ خِرَاشٍ، يَقُولُ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ، يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: لاَ تَمَسُّ النَّارُ مُسْلِمًا رَآنِي أَوْ رَأَى مَنْ رَآنِي قَالَ

3858 - सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं कि मैं नबी(ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "उस मुसलमान शख़्स को जहन्नम की आग नहीं छुएगी जिसने मुझे देखा या मुझे देखने वाले को देखा।" तल्हा कहते हैं: मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) को देखा है और मूसा कहते हैं: मैंने तल्हा को देखा है। यहया कहते हैं: मुझ से मूसा ने कहा: तुम ने मुझे

طَلْحَةُ: فَقَدْ رَأَيْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ وَقَالَ مُوسَى: وَقَدْ رَأَيْتُ طَلْحَةَ قَالَ يَحْيَى: وَقَالَ لِيَ مُوسَى: وَقَدْ رَأَيْتَنِي وَنَحْنُ نَرْجُو اللَّهَ.

देखा है और हम सब अल्लाह से जन्नत की उम्मीद रखते हैं।

ज़ईफ़: मिज़्ज़ी फी तहजीबिल कमाल: 13/394. हियातुर्रूवात : 5958.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है, हम इसे मूसा बिन इब्राहीम अंसारी के तरीक़ से ही जानते हैं, नीज़ अली बिन मदीनी और दीगर मोहद्दिसीन ने भी इस हदीस को मूसा से रिवायत किया है।

3859 - حَدَّثَنِي هَنَّادٌ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَبِيدَةَ هُوَ السَّلْمَانِيُّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: خَيْرُ النَّاسِ قَرْنِي ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ، ثُمَّ يَأْتِي قَوْمٌ بَعْدَ ذَلِكَ تَسْبِقُ أَيْمَانُهُمْ شَهَادَاتِهِمْ أَوْ شَهَادَاتُهُمْ أَيْمَانَهُمْ.

3859 - अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "बेहतरीन लोग मेरे ज़माने के हैं, फिर वह लोग जो उनसे मिलेंगे, (यानी ताबेईन) फिर वह लोग जो उनसे मिलेंगे, (यानी तबा ताबेईन) फिर उस के बाद कुछ ऐसे लोग आयेंगे जिनकी कसमें उनकी गवाहियों पर सबक़त ले जायेंगी या उनकी गवाहियां उनकी कसमों पर सबक़त ले जायेंगी।"

बुख़ारी:2652. मुस्लिम:2533. इब्ने माजह्:2362.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) ने कहा: इस बारे में उमर, इमरान बिन हुसैन और बुरैदा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

58 بَابٌ فِي فَضْلِ مَنْ بَايَعَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ

58 - दरख़्त के नीचे बैअत करने वाले सहाबा की फ़ज़ीलत।

3860 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لاَ يَدْخُلُ النَّارَ أَحَدٌ

3860 - सय्यदना जाबिर (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "दरख़्त के नीचे[1] बैअत करने वालों में कोई भी शख़्स जहन्नम की आग में दाख़िल नहीं हो सकता।"

مِمَّنْ بَايَعَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ.

सहीह: अबू दाऊद:4653. अहमद:3/350. इब्ने हिब्बान:3802.

तौज़ीह: (1) इस से मुराद बैअ़ते रिजवान है यह हुदैबिया के मुकाम पर एक दरख़्त के नीचे हुई थी।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

59 بَابٌ فِيمَنْ سَبَّ أَصْحَابَ النَّبِيِّ ﷺ

59 - सहाबा को बुरा भला कहने वाला।

3861 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ قال: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الأَعْمَشِ، قَالَ: سَمِعْتُ ذَكْوَانَ أَبَا صَالِحٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لاَ تَسُبُّوا أَصْحَابِي، فَوَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوْ أَنَّ أَحَدَكُمْ أَنْفَقَ مِثْلَ أُحُدٍ ذَهَبًا مَا أَدْرَكَ مُدَّ أَحَدِهِمْ وَلاَ نَصِيفَهُ.

3861 - अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम मेरे सहाबा को गाली मत दो, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! तुम में से अगर कोई शख़्स उहुद पहाड़ के बराबर भी सोना ख़र्च कर दे तो वह सवाब में उनके एक मुद या निस्फ़ मुद को भी नहीं पहुँच सकता।"

बुख़ारी:3673. मुस्लिम:2541. अबू दाऊद:4658.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है, और नसीफ़ा से मुराद निस्फ़ (आधा) मुद है। हमें हसन बिन अली ख़ल्लाल ने जो कि हाफ़िज़े हदीस थे, उन्हें अबू मुआविया ने आमश से उन्हें अबू सालेह ने बवास्ता अबू सईद ख़ुदरी नबी(ﷺ) से ऐसी ही हदीस बयान की है।

3862 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى قال: حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ قال: حَدَّثَنَا عَبِيدَةُ بْنُ أَبِي رَائِطَةَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ زِيَادٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُغَفَّلٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهَ اللَّهَ فِي أَصْحَابِي، لاَ تَتَّخِذُوهُمْ غَرَضًا بَعْدِي، فَمَنْ أَحَبَّهُمْ فَبِحُبِّي أَحَبَّهُمْ، وَمَنْ أَبْغَضَهُمْ فَبِبُغْضِي أَبْغَضَهُمْ،

3862 - अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल (رضي الله عنه) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने फ़रमाया, "मेरे सहाबा के मुताल्लिक़ अल्लाह से डरना, मेरे सहाबा के मुताल्लिक़ अल्लाह से डरना, मेरे बाद उन्हें निशाना मत बनाना, जो उन से मोहब्बत करेगा उसने मेरी मोहब्बत की वजह से ही मोहब्बत की, और जिसने उन से बुग़्ज़ रखा उसने मेरी अदावत की वजह से ही बुग़्ज़ रखा, जिसने उन्हें तक्लीफ़ दी, उसने मुझे तक्लीफ़ दी और जिसने मुझे तक्लीफ़ पहुंचाई

وَمَنْ آذَاهُمْ فَقَدْ آذَانِي، وَمَنْ آذَانِي فَقَدْ آذَى اللَّهَ، وَمَنْ آذَى اللَّهَ فَيُوشِكُ أَنْ يَأْخُذَهُ.

उसने अल्लाह को ईज़ा पहुंचाई, और जो अल्लाह को ईज़ा पहुंचाए हो सकता है कि वह उसे पकड़ ले।"

ज़ईफ़:अहमद:4/87. इब्ने हिब्बान:7256. अस-सिलसिला अज-ज़ईफा:2901.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है, हम इसे सिर्फ इसी सनद से जानते हैं।

3863 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ قَالَ: حَدَّثَنَا أَزْهَرُ السَّمَّانُ، عَنْ سُلَيْمَانَ التَّيْمِيِّ، عَنْ خِدَاشٍ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَيَدْخُلَنَّ الجَنَّةَ مَنْ بَايَعَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ إِلاَّ صَاحِبَ الجَمَلِ الأَحْمَرِ.

3863 - जाबिर (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, "दरख़्त के नीचे बैअत करने वाले जन्नत में ज़रूर जायेंगे सिवाए सुर्ख़ ऊँट वाले के।" (1)

ज़ईफ़: बज़्ज़ार:2762. दूसरे तरीक़ से। अस-सिलसिला अस-सहीहा:2160.

तौज़ीह: (1) इस से मुराद मुनाफ़िक़ जद बिन कैस है, जो बैअत के वक़्त अपना ऊँट तलाश करता फिर रहा था और बैअ़ते रिजवान में शरीक ना हुआ था।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है,

3864 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، أَنَّ عَبْدًا لِحَاطِبِ بْنِ أَبِي بَلْتَعَةَ جَاءَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَشْكُو حَاطِبًا فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ لَيَدْخُلَنَّ حَاطِبٌ النَّارَ فَقَالَ: رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كَذَبْتَ لاَ يَدْخُلُهَا فَإِنَّهُ شَهِدَ بَدْرًا وَالْحُدَيْبِيَةَ.

3864 - सय्यदना जाबिर (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि हातिब बिन अबी बल्ता (رضي الله عنه) के एक ग़ुलाम रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास आकर उनकी शिकायत करने लगा उसने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! हातिब ज़रूर जहन्नम में जाएगा। तो अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम ने झूठ बोला वह जहन्नम में नहीं जाएगा इसलिए कि वह बद्र और हुदैबिया में शरीक हुआ था।"

मुस्लिम:2495. अहमद:3/325. हाकिम:3/301.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3865 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ نَاجِيَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْن مُسْلِمٍ أَبِى طَيْبَةَ،

3865 - सय्यदना बुरैदा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "किसी भी

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ بُرَيْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا مِنْ أَحَدٍ مِنْ أَصْحَابِي يَمُوتُ بِأَرْضٍ إِلاَّ بُعِثَ قَائِدًا وَنُورًا لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

जगह पर फौत होने वाला मेरा सहाबी क़यामत के दिन लोगों के लिए क़ाइद और रोशनी (का मीनार) बना कर उठाया जाएगा।"

ज़ईफ़।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है,और यह हदीस अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम अबू तैबा से बवास्ता इब्ने बुरैदा, नबी(ﷺ) से मुर्सल भी मर्वी है और यह ज़्यादा सहीह है।

60 - بَابٌ

60 - बाब।

3866 - حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ نَافِعٍ قال: حَدَّثَنَا النَّضْرُ بْنُ حَمَّادٍ قال: حَدَّثَنَا سَيْفُ بْنُ عُمَرَ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا رَأَيْتُمُ الَّذِينَ يَسُبُّونَ أَصْحَابِي فَقُولُوا: لَعْنَةُ اللهِ عَلَى شَرِّكُمْ.

3866 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "जब तुम ऐसे लोगों को देखो जो मेरे सहाबा को गालियाँ देते हों, तो तुम कहो तुम्हारे शर पर अल्लाह की लानत हो।"

ज़ईफ़ जिद्दा: तबरानी फ़िल औसत:8362. हियातुर्रूवात:5963.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस मुन्कर है, हम इसे सिर्फ इसी तरीक़ से ही उबैदुल्लाह बिन उमर से जानते हैं, नीज़ नज़र और सैफ मज्हूल रावी हैं।

61 بَابُ مَا جَاءَ فِي فَضْلِ فَاطِمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا

61 - सय्यदा फ़ातिमा (رضي الله عنها) बिन्ते मुहम्मद{ﷺ} के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

3867 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قال: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ، قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ وَهُوَ عَلَى الْمِنْبَرِ: إِنَّ بَنِي

3867 - सय्यदना मिस्वर बिन मख़रमा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैंने मिम्बर पर नबी{ﷺ} को फ़रमाते हुए सुना: "बनू हिशाम बिन मुग़ीरा ने मुझसे इजाज़त मांगी है कि वह अपनी बेटी का निकाह अली बिन अबी तालिब से कर दें।

هِشَامِ بْنِ الْمُغِيرَةِ اسْتَأْذَنُونِي فِي أَنْ يُنْكِحُوا ابْنَتَهُمْ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ فَلاَ آذَنُ، ثُمَّ لاَ آذَنُ، ثُمَّ لاَ آذَنُ، إِلاَّ أَنْ يُرِيدَ ابْنُ أَبِي طَالِبٍ أَنْ يُطَلِّقَ ابْنَتِي وَيَنْكِحَ ابْنَتَهُمْ فَإِنَّهَا بِضْعَةٌ مِنِّي يَرِيبُنِي مَا رَابَهَا وَيُؤْذِينِي مَا آذَاهَا.

तो मैं इजाज़त नहीं देता, फिर इजाज़त नहीं देता, फिर इजाज़त नहीं देता, हाँ अगर अली बिन अबी तालिब चाहे तो मेरी बेटी को तलाक़ दे दे और उनकी बेटी से निकाह कर ले, इसलिए कि यह फ़ातिमा मेरे जिगर का टुकड़ा है, जो उसे बुरा लगे वह मुझे भी बुरा लगता है, और जिससे उसे तक्लीफ़ होती है उस से मुझे भी तक्लीफ़ होती है।"

बुख़ारी:5230. मुस्लिम:2449. अबू दाऊद:2071. इब्ने माजह:1998.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है, इसे अम्र बिन दीनार ने भी बवास्ता इब्ने अबी मुलैका सय्यदना मिस्वर बिन मख़रमा (رضي الله عنه) से ऐसे ही रिवायत किया है।

3868 - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعِيدٍ الجَوْهَرِيُّ قَالَ: حَدَّثَنَا الأَسْوَدُ بْنُ عَامِرٍ، عَنْ جَعْفَرٍ الأَحْمَرِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَطَاءٍ، عَنِ ابْنِ بُرَيْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: كَانَ أَحَبَّ النِّسَاءِ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاطِمَةُ وَمِنَ الرِّجَالِ عَلِيٌّ قَالَ إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعِيدٍ: يَعْنِي مِنْ أَهْلِ بَيْتِهِ.

3868 - सय्यदना बुरैदा (رضي الله عنه) से रिवायत है वह बयान करते हैं कि औरतों में से नबी (ﷺ) को सब से ज़्यादा मोहब्बत फ़ातिमा से और मर्दों में अली (رضي الله عنه) से थी। इब्राहीम बिन सईद कहते हैं: यानी आप (ﷺ) के घर वालों में से।

मुन्कर:हाकिम:तबरानी फ़िल औसत:7258. अस-सिलसिला अज-ज़ईफा:1124.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है, हम इसे सिर्फ इसी सनद से जानते हैं।

3869 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ ابْنُ عُلَيَّةَ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، أَنَّ عَلِيًّا، ذَكَرَ بِنْتَ أَبِي جَهْلٍ فَبَلَغَ ذَلِكَ النَّبِيَّ صَلَّى

3869 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि अली (رضي الله عنه) ने अबू जहल की बेटी (से निकाह करने) का ज़िक्र किया, चुनांचे यह बात नबी (ﷺ) तक पहुंची तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, "फ़ातिमा तो मेरे जिगर का एक टुकड़ा है जिससे उसे तक्लीफ़ हो उससे

اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: إِنَّمَا فَاطِمَةُ بِضْعَةٌ مِنِّي يُؤْذِينِي مَا آذَاهَا وَيُنْصِبُنِي مَا أَنْصَبَهَا.

मुझे भी तक्लीफ़ होती है और जिससे उसे मशक्क़त हो उस से मुझे भी मशक्क़त होती है।"

सहीह: अहमद:4/5. हाकिम:3/159. अल-इर्वा:8/294.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है, अय्यूब ने इब्ने अबी मुलैका से रिवायत करते हुए इब्ने ज़ुबैर का ही ज़िक्र किया है, जबकि दीगर रावियों ने इब्ने अबी मुलैका के ज़रिए मिस्वर बिन मख़्रमा से रिवायत की है और हो सकता है कि इब्ने अबी मुलैका ने दोनों सहाबियों से ही रिवायत की हो, नीज़ अम्र बिन दीनार ने भी बवास्ता इब्ने अबी मुलैका, मिस्वर बिन मख़्रमा से लैस की रिवायत की तरह बयान की है।

3870 - حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ عَبْدِ الجَبَّارِ البَغْدَادِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ قَادِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَسْبَاطُ بْنُ نَصْرٍ الهَمْدَانِيُّ، عَنِ السُّدِّيِّ، عَنْ صُبَيْحٍ مَوْلَى أُمِّ سَلَمَةَ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ لِعَلِيٍّ وَفَاطِمَةَ وَالحَسَنِ وَالحُسَيْنِ: أَنَا حَرْبٌ لِمَنْ حَارَبْتُمْ، وَسِلْمٌ لِمَنْ سَالَمْتُمْ.

3870 - सय्यदना ज़ैद बिन अरक़म (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने अली, फ़ातिमा, हसन और हुसैन (رضي الله عنهم) से फ़रमाया, "मैं उससे जंग करने वाला हूँ जिससे तुम जंग करो और मैं उस से सुलह करने वाला हूँ जिससे तुम सुलह करो।"

ज़ईफ़:इब्ने माजह:145. हाकिम:3/149. इब्ने हिब्बान:6977.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है, हम इसे सिर्फ इसी सनद से जानते हैं और उम्मे सलमा के आज़ादकर्दा गुलाम सुबैह मारूफ़ नहीं हैं।

3871 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ الزُّبَيْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ زُبَيْدٍ، عَنْ شَهْرِ بْنِ حَوْشَبٍ، عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَلَّلَ عَلَى الحَسَنِ وَالحُسَيْنِ وَعَلِيٍّ وَفَاطِمَةَ كِسَاءً، ثُمَّ قَالَ: اللَّهُمَّ هَؤُلَاءِ أَهْلُ بَيْتِي

3871 - सय्यदा उम्मे सलमा (رضي الله عنها) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने हसन, हुसैन, अली और फ़ातिमा (رضي الله عنهم) के ऊपर एक चादर डाल कर कहा: ऐ अल्लाह! यह मेरे घर वाले हैं और मेरे ख़ास लोग हैं तू इन से निजासत दूर करके इन्हें ख़ूब पाक कर दे।" उम्मे सलमा ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! क्या मैं भी उन में शामिल हूँ? आप(ﷺ) ने फ़रमाया,

وَخَاصَّتِي، أَذْهِبْ عَنْهُمُ الرِّجْسَ وَطَهِّرْهُمْ تَطْهِيرًا، فَقَالَتْ أُمُّ سَلَمَةَ: وَأَنَا مَعَهُمْ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: إِنَّكِ إِلَى خَيْرٍ.

"तुम (अपनी जगह एक) भलाई पर हो।"

सहीह:अहमद:6/298. तबरानी फ़िल कबीर:2664.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है, और इस बाब में बयान की गई तमाम रिवायात में उम्दा तरीन है। नीज़ इस बारे में अनस बिन मालिक, उमर बिन अबी सलमा, अबू हमरा, माक़िल बिन यसार और आयशा (رضي الله عنها) से भी हदीस मर्वी है।

3872 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا إِسْرَائِيلُ، عَنْ مَيْسَرَةَ بْنِ حَبِيبٍ، عَنِ الْمِنْهَالِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ عَائِشَةَ بِنْتِ طَلْحَةَ، عَنْ عَائِشَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ، قَالَتْ: مَا رَأَيْتُ أَحَدًا أَشْبَهَ سَمْتًا وَدَلًّا وَهَدْيًا بِرَسُولِ اللهِ فِي قِيَامِهَا وَقُعُودِهَا مِنْ فَاطِمَةَ بِنْتِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَتْ: وَكَانَتْ إِذَا دَخَلَتْ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَامَ إِلَيْهَا فَقَبَّلَهَا وَأَجْلَسَهَا فِي مَجْلِسِهِ، وَكَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا دَخَلَ عَلَيْهَا قَامَتْ مِنْ مَجْلِسِهَا فَقَبَّلَتْهُ وَأَجْلَسَتْهُ فِي مَجْلِسِهَا، فَلَمَّا مَرِضَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَخَلَتْ فَاطِمَةُ فَأَكَبَّتْ عَلَيْهِ فَقَبَّلَتْهُ ثُمَّ رَفَعَتْ رَأْسَهَا فَبَكَتْ، ثُمَّ أَكَبَّتْ عَلَيْهِ ثُمَّ رَفَعَتْ رَأْسَهَا فَضَحِكَتْ، فَقُلْتُ: إِنْ كُنْتُ لَأَظُنُّ أَنَّ هَذِهِ مِنْ أَعْقَلِ نِسَائِنَا فَإِذَا هِيَ مِنَ النِّسَاءِ، فَلَمَّا تُوُفِّيَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ

3872 - उम्मुल मोमिनीन सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) फ़रमाती हैं: मैंने उठने बैठने के अतवार और चाल, ढाल और आदतों ख़साइल में फ़ातिमा बिन्ते रसूलुल्लाह(ﷺ) के अलावा किसी को अल्लाह के रसूल(ﷺ) के मुशाबेह नहीं देखा, जब वह नबी(ﷺ) के पास आतीं तो आप उनकी तरफ़ बढ़कर उन्हें बोसा देते और अपनी जगह पर बिठाते, और जब नबी(ﷺ) उन के यहाँ जाते तो वह अपनी जगह से खड़ी होती आप(ﷺ) को बोसा देतीं और अपनी जगह पर बिठाती, फिर जब नबी(ﷺ) बीमार हुए, तो फ़ातिमा आयीं आप(ﷺ) पर झुक गई, आप(ﷺ) को बोसा दिया फिर अपना सर उठाया तो रोने लग गयीं, फिर आप(ﷺ) पर झुकीं फिर अपना सर उठाया तो मुस्कुराने लगीं। मैंने कहा: मेरा तो ख़याल था यह हमारी औरतों में सब से अक़्लमन्द हैं लेकिन आखिर यह भी एक औरत ही थी, फिर जब नबी(ﷺ) की वफ़ात हो गई, तो मैंने उनसे कहा: आप यह बताइए कि जब आप नबी(ﷺ) पर झुकी थी फिर सर उठा कर रोने लगी फिर झुक कर सर

وَسَلَّمَ قُلْتُ لَهَا: أَرَأَيْتِ حِينَ أَكْبَبْتِ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَرَفَعْتِ رَأْسَكِ فَبَكَيْتِ ثُمَّ أَكْبَبْتِ عَلَيْهِ فَرَفَعْتِ رَأْسَكِ فَضَحِكْتِ، مَا حَمَلَكِ عَلَى ذَلِكَ؟ قَالَتْ: إِنِّي إِذًا لَبَذِرَةٌ أَخْبَرَنِي أَنَّهُ مَيِّتٌ مِنْ وَجَعِهِ هَذَا فَبَكَيْتُ، ثُمَّ أَخْبَرَنِي أَنِّي أَسْرَعُ أَهْلِهِ لُحُوقًا بِهِ فَذَاكَ حِينَ ضَحِكْتُ.

उठाया तो हंसने लगीं थीं इसका क्या माजरा था? उन्होंने कहा: मैं अब इस राज़ को ज़ाहिर कर देती हूँ, आप(ﷺ) ने मुझे यह बताया था कि आप अपनी इस तक्लीफ़ में ही फौत हो जाएँगे, तो मैं रोने लगी, फिर आप(ﷺ) ने मुझे बताया कि मैं आप के अहल में से सबसे पहले आप को जाकर मिलूंगी, तब मैं हंसने लगी थी।"

अबू दाऊद:5217. हाकिम:4/272. इब्ने हिब्बान:6953.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस इस सनद से हसन ग़रीब है और कई तुरूक़ से यह हदीस आयशा (رضي الله عنها) से मर्वी है।

3873 - أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ ابْنُ عَثْمَةَ، قَالَ: حَدَّثَنِي مُوسَى بْنُ يَعْقُوبَ الزَّمْعِيُّ، عَنْ هَاشِمِ بْنِ هَاشِمٍ، أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ وَهْبٍ أَخْبَرَهُ، أَنَّ أُمَّ سَلَمَةَ، أَخْبَرَتْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ دَعَا فَاطِمَةَ عَامَ الْفَتْحِ فَنَاجَاهَا فَبَكَتْ ثُمَّ حَدَّثَهَا فَضَحِكَتْ. قَالَتْ: فَلَمَّا تُوُفِّيَ رَسُولُ اللهِ ﷺ سَأَلْتُهَا عَنْ بُكَائِهَا وَضَحِكِهَا. قَالَتْ: أَخْبَرَنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ أَنَّهُ يَمُوتُ فَبَكَيْتُ، ثُمَّ أَخْبَرَنِي أَنِّي سَيِّدَةُ نِسَاءِ أَهْلِ الجَنَّةِ إِلاَّ مَرْيَمَ ابْنَةَ عِمْرَانَ فَضَحِكْتُ.

3873 - सय्यदा उम्मे सलमा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि फ़तहे मक्का के दिन अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने फ़ातिमा को बुला कर उन के कान में कोई बात कही तो वह रोने लगी, फिर आप(ﷺ) ने उन से कोई बात कही तो वह मुस्कुराने लगीं, कहती हैं: फिर जब अल्लाह के रसूल(ﷺ) फौत हो गए तो मैंने उनसे रोने और हंसने की वजह पूछी, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह{ﷺ} ने मुझे ख़बर दी थी कि आप(ﷺ) फौत हो जायेंगे तो मैं रोने लगी, फिर आप(ﷺ) ने मुझे बताया कि मैं मरियम बिन्ते इमरान के अलावा बाक़ी तमाम जन्नती औरतों की सरदार हुंगी तो मैं मुस्कुरा दी।

सहीह।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस तरीक़ से यह हदीस हसन ग़रीब है।

3874 - حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ يَزِيدَ الكُوفِيُّ، قَالَ:

3874 - जुमैअ बिन उमैर तैमी कहते हैं कि मैं अपनी फूफी के साथ सय्यदा आयशा (رضي الله عنها)

حَدَّثَنَا عَبْدُ السَّلَامِ بْنُ حَرْبٍ، عَنْ أَبِي الجَحَّافِ، عَنْ جُمَيْعِ بْنِ عُمَيْرٍ التَّيْمِيِّ، قَالَ: دَخَلْتُ مَعَ عَمَّتِي عَلَى عَائِشَةَ فَسُئِلَتْ أَيُّ النَّاسِ كَانَ أَحَبَّ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَتْ: فَاطِمَةُ، فَقِيلَ: مِنَ الرِّجَالِ؟ قَالَتْ: زَوْجُهَا، إِنْ كَانَ مَا عَلِمْتُ صَوَّامًا قَوَّامًا.

के पास गया तो उनसे पूछा गया कि अल्लाह के रसूल(ﷺ) को सबसे ज़्यादा महबूब कौन था? फ़रमाया: फ़ातिमा(رضي الله عنها), पूछा गया: मर्दों में? फ़रमाया: उनके शौहर, जहां तक मैं जानती हूँ वह बहुत ज़्यादा रोज़े रखने वाले और बहुत ज़्यादा कयाम करने वाले थे।

मुन्कर:हाकिम:3/ 154. अबू याला:4857.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। और अबू जह्हाफ का नाम दाऊद बिन अबी औफ़ है, सुफ़ियान सौरी कहते हैं हमें अबू जह्हाफ ने बयान किया जो पसंदीदा रावी है।

62 بَابُ فَضْلِ خَدِيجَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا

62 - सय्यदा ख़दीजा (رضي الله عنها) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

3875 - حَدَّثَنَا أَبُو هِشَامٍ الرِّفَاعِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غِيَاثٍ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: مَا غِرْتُ عَلَى أَحَدٍ مِنْ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا غِرْتُ عَلَى خَدِيجَةَ وَمَا بِي أَنْ أَكُونَ أَدْرَكْتُهَا، وَمَا ذَلِكَ إِلاَّ لِكَثْرَةِ ذِكْرِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَهَا، وَإِنْ كَانَ لَيَذْبَحُ الشَّاةَ فَيَتَتَبَّعُ بِهَا صَدَائِقَ خَدِيجَةَ فَيُهْدِيهَا لَهُنَّ.

3875 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि मुझे नबी(ﷺ) की किसी बीवी पर उतना रश्क नहीं आता था जितना ख़दीजा (رضي الله عنها) पर आता था, अगर मैं उन्हें पा लेती तो मेरा क्या हाल होता? उसकी वजह यह थी कि रसूलुल्लाह(ﷺ) उनका बहुत ज़िक्र किया करते थे और अगर आप कोई बकरी ज़बह करते तो आप(ﷺ) ख़दीजा (رضي الله عنها) की सहेलियों को तलाश करके उन्हें तोहफ़ा भेजते।

सहीह: तखरीज के लिए देखिए हदीस नम्बर:2017.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3876 - حَدَّثَنَا الحُسَيْنُ بْنُ حُرَيْثٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الفَضْلُ بْنُ مُوسَى، عَنْ هِشَامِ بْنِ

3876 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं मुझे किसी औरत पर उतना रश्क नहीं आया

عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: مَا حَسَدْتُ امْرَأَةً مَا حَسَدْتُ خَدِيجَةَ، وَمَا تَزَوَّجَنِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلاَّ بَعْدَ مَا مَاتَتْ، وَذَلِكَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَشَّرَهَا بِبَيْتٍ فِي الجَنَّةِ مِنْ قَصَبٍ لاَ صَخَبَ فِيهِ وَلاَ نَصَبَ.

जितना ख़दीजा (ﷺ) पर आया, हालांकि अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने उनकी वफ़ात के बाद मुझ से शादी की थी, और उस रश्क की वजह यह थी कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उन्हें जन्नत में बने हुए एक महल की बशारत दी थी जिस में शोर है न उकताहट।

तखरीज के लिए देखिए हदीस नम्बर:2017.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और من قصب : से मुराद मोती का सूराख है।

3877 - حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ إِسْحَاقَ الْهَمْدَانِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ جَعْفَرٍ، قَالَ: سَمِعْتُ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ، يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: خَيْرُ نِسَائِهَا خَدِيجَةُ بِنْتُ خُوَيْلِدٍ وَخَيْرُ نِسَائِهَا مَرْيَمُ بِنْتُ عِمْرَانَ.

3877 - सय्यदना अली बिन अबी तालिब (ﷺ) बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल(ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "(अपने ज़माने की औरतों में से) सबसे बेहतरीन औरत ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलिद थी। और मरियम बिन्ते इमरान (अपने दौर की ख़्वातीन में से) सब से बेहतरीन ख़ातून थीं।"

बुख़ारी:3432.मुस्लिम:2430.

वज़ाहत: इस बारे में अनस, इब्ने अब्बास और आयशा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3878 - حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ زَنْجُوَيْهِ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: حَسْبُكَ مِنْ نِسَاءِ العَالَمِينَ: مَرْيَمُ ابْنَةُ عِمْرَانَ، وَخَدِيجَةُ بِنْتُ خُوَيْلِدٍ، وَفَاطِمَةُ بِنْتُ مُحَمَّدٍ وَآسِيَةُ امْرَأَةُ فِرْعَوْنَ.

3878 - सय्यदना अनस (ﷺ) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, "जहान की औरतों में से तुझे मरियम बिन्ते इमरान, ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलिद, फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद और फ़िरऔन की बीवी आसिया ही काफी हैं।"

सहीह: अहमद:3/ 135. हाकिम:3/ 157. इब्ने हिब्बान:6951.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस सहीह है।

63 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

63 بَابُ مِنْ فَضْلِ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا

3879 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि लोग अपने तोहफ़े भेजने के लिए आयशा (رضي الله عنها) के दिन का इन्तिज़ार किया करते थे, कहती हैं फिर मेरे साथ वालियों ने उम्मे सलमा के पास जमा हो कर कहा: ऐ उम्मे सलमा! लोग अपने तोहफ़े देने के लिए आयशा के दिन का इन्तिज़ार करते हैं हालांकि हम भी वैसी ही भलाई चाहती हैं जैसी आयशा चाहती हैं, तो तुम अल्लाह के रसूल(ﷺ) से कहो कि वह लोगों को हुक्म दें कि आप जहां भी हों वह अपने तहाइफ़ (तोहफे) आप को भेज दिया करें। उम्मे सलमा ने यह बात आप से ज़िक्र की, तो आप(ﷺ) ने उन से मुंह फेर लिया, फिर आप(ﷺ) ने उनकी तरफ़ अपना चेहरा मुबारक किया तो उन्होंने वही बात कही: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! मेरे साथ वालियाँ ज़िक्र करती हैं कि लोग अपने तहाइफ़ (तोहफ़े) भेजने के लिए आयशा के दिन का इन्तिज़ार करते हैं, आप(ﷺ)लोगों को हुक्म दें कि आप जहां भी हों वह तहाइफ़ (तोहफे) भेज दिया करें। जब उन्होंने तीसरी मर्तबा यही बात की तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ उम्मे सलमा आयशा के बारे में मुझे तक्लीफ़ मत दो, इसलिए कि मैं आयशा के अलावा तुम में से किसी बीवी के बिस्तर में हूँ तो मुझ पर वहि

3879 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ دُرُسْتَ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: كَانَ النَّاسُ يَتَحَرَّوْنَ بِهَدَايَاهُمْ يَوْمَ عَائِشَةَ، قَالَتْ: فَاجْتَمَعَ صَوَاحِبَاتِي إِلَى أُمِّ سَلَمَةَ فَقُلْنَ: يَا أُمَّ سَلَمَةَ إِنَّ النَّاسَ يَتَحَرَّوْنَ بِهَدَايَاهُمْ يَوْمَ عَائِشَةَ وَإِنَّا نُرِيدُ الخَيْرَ كَمَا تُرِيدُ عَائِشَةُ، فَقُولِي لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْمُرِ النَّاسَ يُهْدُونَ إِلَيْهِ أَيْنَمَا كَانَ، فَذَكَرَتْ ذَلِكَ أُمُّ سَلَمَةَ فَأَعْرَضَ عَنْهَا، ثُمَّ عَادَ إِلَيْهَا فَأَعَادَتِ الكَلَامَ، فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ صَوَاحِبَاتِي قَدْ ذَكَرْنَ أَنَّ النَّاسَ يَتَحَرَّوْنَ بِهَدَايَاهُمْ يَوْمَ عَائِشَةَ فَأْمُرِ النَّاسَ يُهْدُونَ أَيْنَمَا كُنْتَ، فَلَمَّا كَانَتِ الثَّالِثَةُ قَالَتْ ذَلِكَ. قَالَ: يَا أُمَّ سَلَمَةَ لاَ تُؤْذِينِي فِي عَائِشَةَ، فَإِنَّهُ مَا أُنْزِلَ عَلَيَّ الوَحْيُ وَأَنَا فِي لِحَافِ امْرَأَةٍ مِنْكُنَّ غَيْرِهَا.

नाज़िल नहीं होती। (लेकिन उसके लिहाफ़ में हूँ तो वहि नाज़िल हो जाती है)।"

बुख़ारी:2581. मुस्लिम:2441 मुख़्तसर।
निसाई:3949,3951.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है, बअ़ज़ ने इस हदीस को हम्माद बिन ज़ैद से बवास्ता हिशाम बिन उर्वा उनके बाप के ज़रिए नबी(ﷺ) से मुर्सल रिवायत किया है, नीज़ हिशाम बिन उर्वा से बवास्ता औफ़ बिन मालिक, रुमैसा के ज़रिए उम्मे सलमा से भी इस हदीस का कुछ हिस्सा मर्वी है, और इस बारे में हिशाम बिन उर्वा से मुख़्तलिफ़ रिवायात मर्वी हैं, जबकि सुलैमान बिन हिलाल ने भी हिशाम बिन उर्वा से उनके बाप के ज़रिए आयशा (رضی اللہ عنہا) से हम्माद बिन ज़ैद की तरह रिवायत की है।

3880 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ عَلْقَمَةَ الْمَكِّيِّ، عَنِ ابْنِ أَبِي حُسَيْنٍ، عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ جِبْرِيلَ، جَاءَ بِصُورَتِهَا فِي خِرْقَةِ حَرِيرٍ خَضْرَاءَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: هَذِهِ زَوْجَتُكَ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ.

3880 - सय्यदा आयशा (رضی اللہ عنہا) से रिवायत है कि जिब्रील (علیہ السلام) सब्ज़ रेशम के टुकड़े में उनकी तस्वीर लेकर नबी(ﷺ) के पास आए तो कहा: यह दुनिया और आख़िरत में आप की बीवी होंगी।

इब्ने हिब्बान:7094.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है, हम इसे अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल्क़मा के तरीक़ से ही जानते हैं, इस हदीस को अब्दुर्रहमान बिन महदी ने इसी सनद के साथ अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल्क़मा से मुर्सल रिवायत किया है। इसमें आयशा (رضی اللہ عنہا) का ज़िक्र नहीं किया, नीज़ अबू उसामा ने भी हिशाम बिन उर्वा से उन्होंने अपने बाप से बवास्ता आयशा (رضی اللہ عنہا) नबी(ﷺ) से इस हदीस का कुछ हिस्सा बयान किया है।

3881 - حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: يَا عَائِشَةُ هَذَا جِبْرِيلُ وَهُوَ يَقْرَأُ عَلَيْكِ السَّلاَمَ قَالَتْ: قُلْتُ وَعَلَيْهِ السَّلاَمُ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ، تَرَى مَا لاَ نَرَى.

3881 - सय्यदा आयशा (رضی اللہ عنہا) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ आयशा! यह जिब्रील हैं और तुम्हें सलाम कह रहे हैं" कहती हैं: मैंने कहा: उन पर भी अल्लाह की तरफ़ से सलामती, उसकी रहमत और उसकी बरकतें हों, आप(ﷺ) वह देखते हैं जो हम नहीं देख सकते।

सहीह: तखरीज के लिए देखिए हदीस नम्बर:2693.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3882 - حَدَّثَنَا سُوَيْدٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا زَكَرِيَّا، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: قَالَ لِي رَسُولُ اللهِ: إِنَّ جِبْرِيلَ يَقْرَأُ عَلَيْكِ السَّلاَمَ، فَقُلْتُ: وَعَلَيْهِ السَّلاَمُ وَرَحْمَةُ اللَّهِ.

3882 - सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मुझ से फ़रमाया, "जिब्रील तुम्हें सलाम कह रहे हैं, मैंने कहा: उन पर भी सलामती, अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें हों।

सहीह: तखरीज के लिए देखिए हदीसे साबिक़।

3883 - حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ مَسْعَدَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا زِيَادُ بْنُ الرَّبِيعِ، قَالَ: حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ سَلَمَةَ الْمَخْزُومِيُّ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ: مَا أَشْكَلَ عَلَيْنَا أَصْحَابَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَدِيثٌ قَطُّ فَسَأَلْنَا عَائِشَةَ إِلاَّ وَجَدْنَا عِنْدَهَا مِنْهُ عِلْمًا.

3883 - सय्यदना अबू मूसा (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं: हम अस्हाबे रसूल(ﷺ) पर किसी भी हदीस में मुश्किल पेश आई, फिर हम ने आयशा (رضي الله عنها) से पूछा, तो हम ने उनके पास इस बारे में इल्म पाया।

सहीह।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3884 - حَدَّثَنَا الْقَاسِمُ بْنُ دِينَارٍ الْكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرٍو، عَنْ زَائِدَةَ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ مُوسَى بْنِ طَلْحَةَ، قَالَ: مَا رَأَيْتُ أَحَدًا أَفْصَحَ مِنْ عَائِشَةَ.

3884 – मूसा बिन तल्हा कहते है: मैंने आयशा (رضي الله عنها) से बड़ा फ़सीह नहीं देखा।

सहीह:हाकिम:4/ 11.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: ये हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3885 - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ يَعْقُوبَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ وَاللَّفْظُ لاِبْنِ يَعْقُوبَ، قَالاَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمَّادٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ

3885 - सय्यदना अम्र बिन आस (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उन्हें ज़ातुस सलासिल[1] के लश्कर पर अमीर मुक़र्रर किया, कहते हैं: मैं आप(ﷺ) के पास आया,

الْمُخْتَارِ، قَالَ: حَدَّثَنَا خَالِدُ الحَذَّاءُ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ، عَنْ عَمْرِو بْنِ العَاصِ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اسْتَعْمَلَهُ عَلَى جَيْشِ ذَاتِ السَّلَاسِلِ قَالَ: فَأَتَيْتُهُ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ أَيُّ النَّاسِ أَحَبُّ إِلَيْكَ؟ قَالَ: عَائِشَةُ. قُلْتُ: مِنَ الرِّجَالِ؟ قَالَ: أَبُوهَا.

तो मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! लोगों में से आप को सब से ज़्यादा महबूब कौन है? आप(ﷺ) ने फर्माया: "आयशा" मैंने कहा: मर्दों में? आप ने फ़रमाया, "उसके वालिद।"

बुख़ारी:3662. मुस्लिम:2384. अहमद:4/ 203.

तौज़ीह: (1) जज़ाम के इलाक़ा में एक चश्मे का नाम अस-सलासिल है उसकी तरफ़ यह लश्कर रवाना किया गया था इसीलिए इसे ज़ातुस्सलासिल का नाम दिया गया है।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3886 - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعِيدٍ الْجَوْهَرِيُّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ الأُمَوِيُّ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ، عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ، أَنَّهُ قَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ مَنْ أَحَبُّ النَّاسِ إِلَيْكَ قَالَ " عَائِشَةُ " . قَالَ مِنَ الرِّجَالِ قَالَ " أَبُوهَا "

3886 - सय्यदना अम्र बिन आस (رضي الله عنه) से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह(ﷺ) से पूछा लोगों में आप(ﷺ) को सबसे ज़्यादा महबूब कौन है? आप ने फ़रमाया, "आयशा" अर्ज़ किया, मर्दों में से? फ़रमाया,उसके अब्बा जान।"

सहीह: हाकिम:4/12. इब्ने हिब्बान:4540.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिजी फ़र्माते हैं बवास्ता इस्माईल क़ैस से मर्वी ये हदीस इस तरीक़ से हसन ग़रीब है।

3887 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ مَعْمَرٍ الأَنْصَارِيِّ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: فَضْلُ عَائِشَةَ عَلَى النِّسَاءِ كَفَضْلِ الثَّرِيدِ عَلَى سَائِرِ الطَّعَامِ.

3887 - सय्यदना अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "आयशा की बाकी औरतों पर ऐसे ही फ़ज़ीलत है जैसे सरीद को तमाम खानों पर फ़ज़ीलत है।"

बुख़ारी:3770. मुस्लिम:2446. इब्ने माजह:3281. अहमद:3/ 156.

वज़ाहत: इस बारे में आयशा और अबू मूसा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान बिन मामर, अबू तवाला अंसारी ही हैं जो मदीना के रहने वाले सिक़ह् रावी थे उनसे मालिक बिन अनस (رحمہ اللہ) ने भी रिवायत किया है।

3888 - अम्र बिन ग़ालिब से रिवायत है कि एक आदमी ने सय्यदना अम्मार बिन यासिर (رضی اللہ عنہ) के पास सय्यदा आयशा (رضی اللہ عنہا) को बुरा भला कहा: तो उन्होंने फ़रमाया, "दूर हो जाओ, बदतरीन, धुत्कारे हुए, तुम अल्लाह के रसूल(ﷺ) की महबूबा को तक्लीफ़ देते हो।

ज़ईफ़ुल इस्नाद:मिज्ज़ी फी तहज़ीबिल कमाल:22/ 184.

3888- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ غَالِبٍ، أَنَّ رَجُلاً نَالَ مِنْ عَائِشَةَ عِنْدَ عَمَّارِ بْنِ يَاسِرٍ، فَقَالَ: أَغْرِبْ مَقْبُوحًا مَنْبُوحًا أَتُؤْذِي حَبِيبَةَ رَسُولِ اللهِ ﷺ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3889 - अब्दुल्लाह बिन जियाद असदी बयान करते हैं कि मैंने सय्यदना अम्मार बिन यासिर (رضی اللہ عنہ) को फ़रमाते हुए सुना: वह दुनिया और आख़िरत में रसूलुल्लाह(ﷺ) की बीवी हैं। यानी आयशा (رضی اللہ عنہا)।

बुख़ारी:7100. हाकिम:4/6. अस-सिलसिला अस-सहीहा:1142.

3889 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ عَيَّاشٍ، عَنْ أَبِي حُصَيْنٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ زِيَادٍ الأَسَدِيِّ، قَالَ: سَمِعْتُ عَمَّارَ بْنَ يَاسِرٍ، يَقُولُ: هِيَ زَوْجَتُهُ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ، يَعْنِي عَائِشَةَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और इस बारे में अली (رضی اللہ عنہ) से भी हदीस मर्वी है।

3890 - सय्यदना अनस (رضی اللہ عنہ) रिवायत करते हैं कि पूछा गया ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! लोगों में से आप को सबसे ज़्यादा महबूब कौन है? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "आयशा" पूछा गया: मर्दों में से? फ़रमाया, "उसके अब्बा जान।"

सहीह: अहमद:101. इब्ने माजह्:7107.

3890 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدَةَ الضَّبِّيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ حُمَيْدٍ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: قِيلَ: يَا رَسُولَ اللهِ مَنْ أَحَبُّ النَّاسِ إِلَيْكَ؟ قَالَ: عَائِشَةُ، قِيلَ: مِنَ الرِّجَالِ. قَالَ: أَبُوهَا.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: यह हदीस इसी सनद से अनस (رضی اللہ عنہ) से हसन सहीह ग़रीब है।

64 - नबी{ﷺ} की अज़्वाजे मुतह्हरात (رضي الله عنهن) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

64 بَابٌ فِي فَضْلِ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

3891 – इक्रिमा (رحمه الله) कहते हैं कि सुबह की नमाज़ के बाद इब्ने अब्बास को बताया गया कि नबी(ﷺ) की फुलां बीवी वफ़ात पा गई हैं तो उन्होंने सज्दा किया, उनसे कहा गया: आप इस घड़ी में सज्दा करते हैं? तो फ़रमाया, "क्या रसूलुल्लाह(ﷺ) ने नहीं फ़रमाया कि "जब तुम कोई निशानी देखो, तो सज्दा करो? तो नबी(ﷺ) के अज़्वाजे मुतह्हरात के चले जाने से बड़ी निशानी क्या हो सकती है?

हसन:अबू दाऊद: 1197.

3891 - حَدَّثَنَا عَبَّاسٌ العَنْبَرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ كَثِيرٍ العَنْبَرِيُّ أَبُو غَسَّانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَلْمُ بْنُ جَعْفَرٍ وَكَانَ ثِقَةً، عَنِ الحَكَمِ بْنِ أَبَانَ، عَنْ عِكْرِمَةَ، قَالَ: قِيلَ لِابْنِ عَبَّاسٍ بَعْدَ صَلَاةِ الصُّبْحِ مَاتَتْ فُلَانَةُ لِبَعْضِ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَجَدَ، فَقِيلَ لَهُ: أَتَسْجُدُ هَذِهِ السَّاعَةَ؟ فَقَالَ: أَلَيْسَ قَدْ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا رَأَيْتُمْ آيَةً فَاسْجُدُوا، فَأَيُّ آيَةٍ أَعْظَمُ مِنْ ذَهَابِ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है, हम इसे सिर्फ इसी तरीक़ से जानते हैं।

3892 - उम्मुल मोमिनीन सय्यदा सफिय्या बिन्ते हुई (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह{ﷺ} मेरे पास तशरीफ़ लाये, मुझे हफ्सा और आयशा (رضي الله عنها) की तरफ़ से कोई बात पहुंची थी तो मैंने इसका ज़िक्र आप(ﷺ) से कर दिया, आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम ने यह नहीं कहा कि तुम दोनों मुझसे किस तरह बेहतर हो सकती हो? जबकि मेरे शौहर मुहम्मद(ﷺ) मेरे बाप हारून (عليه السلام) और मेरे

3892 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ بْنُ عَبْدِ الوَارِثِ، قَالَ: حَدَّثَنَا هَاشِمٌ هُوَ ابْنُ سَعِيدٍ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا كِنَانَةُ، قَالَ: حَدَّثَتْنَا صَفِيَّةُ بِنْتُ حُيَيٍّ، قَالَتْ: دَخَلَ عَلَيَّ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَدْ بَلَغَنِي عَنْ حَفْصَةَ وَعَائِشَةَ كَلَامٌ فَذَكَرْتُ

ذٰلِكَ لَهُ، فَقَالَ: أَلاَ قُلْتِ: فَكَيْفَ تَكُونَانِ خَيْرًا مِنِّي وَزَوْجِي مُحَمَّدٌ وَأَبِي هَارُونُ وَعَمِّي مُوسَى؟ وَكَانَ الَّذِي بَلَغَهَا أَنَّهُمْ قَالُوا: نَحْنُ أَكْرَمُ عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْهَا، وَقَالُوا: نَحْنُ أَزْوَاجُ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَبَنَاتُ عَمِّهِ.

चचा मूसा (ﷺ) हैं।" और उन्हें यह बात पहुंची थी कि उन्होंने कहा था:हम अल्लाह के रसूल(ﷺ) के यहाँ उस सफिय्या (ﷺ) से ज़्यादा क़ाबिले एहतराम हैं और उन्होंने कहा था: हम नबी{ﷺ} की बीवियां और आप के चचा की बेटियाँ हैं।

ज़ईफुल इस्नाद:हाकिम:4/29. तबरानी फ़िल औसत:8498. अस-सिलसिला अज-ज़ईफा:4963.

वज़ाहत: इस बारे में अनस (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है।
इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है, हम इसे हाशिम कूफी के तरीक़ से ही जानते हैं और इसकी सनद मज़बूत नहीं है।

3893 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ ابْنُ عَثْمَةَ، قَالَ: حَدَّثَنِي مُوسَى بْنُ يَعْقُوبَ الزَّمْعِيُّ، عَنْ هَاشِمِ بْنِ هَاشِمٍ، أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ وَهْبٍ، أَخْبَرَهُ أَنَّ أُمَّ سَلَمَةَ، أَخْبَرَتْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَعَا فَاطِمَةَ عَامَ الفَتْحِ فَنَاجَاهَا فَبَكَتْ ثُمَّ حَدَّثَهَا فَضَحِكَتْ. قَالَتْ: فَلَمَّا تُوُفِّيَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَأَلْتُهَا عَنْ بُكَائِهَا وَضَحِكِهَا. قَالَتْ: أَخْبَرَنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ أَنَّهُ يَمُوتُ فَبَكَيْتُ، ثُمَّ أَخْبَرَنِي أَنِّي سَيِّدَةُ نِسَاءِ أَهْلِ الجَنَّةِ إِلاَّ مَرْيَمَ بِنْتَ عِمْرَانَ فَضَحِكْتُ.

3893 - उम्मुल मोमिनीन सय्यदा उम्मे सलमा (ﷺ) बयान करती हैं कि फ़तहे मक्का के साल अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने फ़ातिमा को बुला कर उन के कान में कोई बात कही, तो वह रोने लगीं, फिर उन से कोई बात कही तो वह हंसने लगीं, फ़रमाती हैं: जब रसूलुल्लाह{ﷺ} फौत हो गए तो मैंने उनसे रोने और हंसने का सबब पूछा तो उन्होंने कहा: मुझे रसूलुल्लाह(ﷺ) ने बताया कि आप फौत होने वाले हैं तो मैं रो पड़ी, फिर आप ने मुझे बताया कि मैं मरियम बिन्ते इमरान के अलावा बाकी जन्नती औरतों की सरदार हूँ तो मैं मुस्कुरा दी।

सहीह: तखरीज के लिए देखिए हदीस नम्बर:3874.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस तरीक़ से यह हदीस हसन ग़रीब है

3894 - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالاَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: بَلَغَ صَفِيَّةَ أَنَّ حَفْصَةَ، قَالَتْ: بِنْتُ يَهُودِيٍّ، فَبَكَتْ، فَدَخَلَ عَلَيْهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهِيَ تَبْكِي، فَقَالَ: مَا يُبْكِيكِ؟ فَقَالَتْ: قَالَتْ لِي حَفْصَةُ: إِنِّي بِنْتُ يَهُودِيٍّ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: وَإِنَّكِ لاَبْنَةُ نَبِيٍّ، وَإِنَّ عَمَّكِ لَنَبِيٌّ، وَإِنَّكِ لَتَحْتَ نَبِيٍّ، فَفِيمَ تَفْخَرُ عَلَيْكِ؟ ثُمَّ قَالَ: اتَّقِي اللَّهَ يَا حَفْصَةُ.

3894 - सय्यदना अनस (ﷺ) बयान करते हैं: सय्यदा सफिय्या (ﷺ) को यह ख़बर पहुंची कि हफ्सा ने उन्हें यहूदी की बेटी कहा है, तो वह रोने लगीं, फिर नबी(ﷺ) उनके पास गए तो वह रो रही थीं, आप ने पूछा " किस लिए रोती हो?" अर्ज़ किया, हफ्सा ने मेरे बारे में कहा है कि मैं यहूदी की बेटी हूँ। तो नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम तो एक नबी की बेटी हो, तुम्हारा चचा भी नबी था और तुम एक नबी के निकाह में हो, तो यह किस बात में तुम पर फ़ख्र करती है।" फिर आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ हफ्सा! अल्लाह से डरो।"

सहीह: अहमद:3/135. इब्ने हिब्बान:7211. तबरानी फ़िल कबीर:24/186. अब्द बिन हुमैद:1248.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है

3895 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: خَيْرُكُمْ خَيْرُكُمْ لأَهْلِهِ وَأَنَا خَيْرُكُمْ لأَهْلِي، وَإِذَا مَاتَ صَاحِبُكُمْ فَدَعُوهُ.

3895 - सय्यदा आयशा (ﷺ) रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम में से बेहतर वह है जो अपने घर वालों के लिए बेहतर हो और तुममें सबसे ज़्यादा मैं अपने घर वालों के लिए बेहतर हूँ और जब तुम्हारा कोई साथी फौत हो जाए तो उसे छोड़ दिया करो।" (यानी उसकी बुराई न किया करो)।

सहीह:अबू दाऊद:4899. अस-सिलसिला अस-सहीहा:285. दारमी:2265. इब्ने हिब्बान:3018.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस सौरी के तरीक़ से हसन ग़रीब सहीह है जबकि सौरी से बहुत से लोगों ने रिवायत की है। नीज़ यह हदीस हिशाम बिन उर्वा से उनके बाप के ज़रिए नबी(ﷺ) से मुर्सल भी मर्वी है।

3896 - अब्दुल्लाह बिन मसऊद (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "मेरे सहाबा में से कोई शख़्स एक दूसरे की बात मुझ तक न पहुंचाए क्योंकि मैं चाहता हूँ कि मैं उनकी तरफ़ इस हालत में निकलूँ कि मेरा सीना साफ़ हो।" अब्दुल्लाह कहते हैं: फिर अल्लाह के रसूल(ﷺ) के पास माल लाया गया, नबी(ﷺ) ने उसे तक़्सीम किया, फिर मैं दो आदमियों के पास पहुंचा जो बैठे कह रहे थे, अल्लाह की क़सम! मुहम्मद(ﷺ) ने इस तक़्सीम में अल्लाह की खुशनूदी को मतलूब नहीं रखा और न ही आख़िरत के घर को। मैंने जब यह बात सुनी तो मुझे बुरी लगी, चुनांचे मैंने अल्लाह के रसूल(ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हो कर आप(ﷺ) को बताया, तो आपका चेहरा मुबारक सुर्ख़ हो गया और आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "उन बातों को छोड़ो मूसा (عليه السلام) को इस से भी ज़्यादा अज़ियत (तक्लीफ़) दी गई थी (लेकिन) फिर भी उन्होंने सब्र किया।"

3896 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنِ الوَلِيدِ، عَنْ زَيْدِ بْنِ زَائِدَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لاَ يُبَلِّغْنِي أَحَدٌ عَنْ أَحَدٍ مِنْ أَصْحَابِي شَيْئًا؛ فَإِنِّي أُحِبُّ أَنْ أَخْرُجَ إِلَيْهِمْ وَأَنَا سَلِيمُ الصَّدْرِ. قَالَ عَبْدُ اللهِ: فَأُتِيَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَالٍ فَقَسَّمَهُ، فَانْتَهَيْتُ إِلَى رَجُلَيْنِ جَالِسَيْنِ وَهُمَا يَقُولاَنِ: وَاللهِ مَا أَرَادَ مُحَمَّدٌ بِقِسْمَتِهِ الَّتِي قَسَمَهَا وَجْهَ اللهِ وَلاَ الدَّارَ الآخِرَةَ. فَتَثَبَّتُّ حِينَ سَمِعْتُهُمَا، فَأَتَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَخْبَرْتُهُ فَاحْمَرَّ وَجْهُهُ وَقَالَ: دَعْنِي عَنْكَ فَقَدْ أُوذِيَ مُوسَى بِأَكْثَرَ مِنْ هَذَا فَصَبَرَ.

ज़ईफ़ुल इस्नाद:अबू दाऊद:4860. अहमद:1/395.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस ग़रीब है और इस सनद में एक आदमी का इजाफ़ा भी किया गया है।

3897 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (ﷺ) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, "कोई शख़्स किसी दूसरे की बात मुझ तक न पहुंचाए।"

ज़ईफ़: तखरीज के लिए देखिए हदीसे साबिक़।

3897 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، وَالحُسَيْنُ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنِ السُّدِّيِّ، عَنِ الوَلِيدِ بْنِ أَبِي هِشَامٍ، عَنْ زَيْدِ

بْنِ زَائِدَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لاَ يُبَلِّغُنِي أَحَدٌ عَنْ أَحَدٍ شَيْئًا.

वज़ाहत: इस हदीस का कुछ हिस्सा एक और सनद से भी बवास्ता इब्ने मसऊद(رضي الله عنه) नबी(ﷺ) से मर्वी है।

65 بَابُ فَضْلِ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ رضي الله عنه

3898 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَاصِمٍ، قَالَ: سَمِعْتُ زِرَّ بْنَ حُبَيْشٍ، يُحَدِّثُ عَنْ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَهُ: إِنَّ اللَّهَ أَمَرَنِي أَنْ أَقْرَأَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ، فَقَرَأَ عَلَيْهِ{لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا} وَقَرَأَ فِيهَا: إِنَّ ذَاتَ الدِّينِ عِنْدَ اللهِ الْحَنِيفِيَّةُ الْمُسْلِمَةُ لاَ الْيَهُودِيَّةُ وَلاَ النَّصْرَانِيَّةُ وَلاَ الْمَجُوسِيَّةُ، مَنْ يَعْمَلْ خَيْرًا فَلَنْ يُكْفَرَهُ وَقَرَأَ عَلَيْهِ: لَوْ أَنَّ لاِبْنِ آدَمَ وَادِيًا مِنْ مَالٍ لاَبْتَغَى إِلَيْهِ ثَانِيًا، وَلَوْ كَانَ لَهُ ثَانِيًا، لاَبْتَغَى إِلَيْهِ ثَالِثًا، وَلاَ يَمْلأُ جَوْفَ ابْنِ آدَمَ إِلاَّ التُّرَابُ، وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَى مَنْ تَابَ.

65 - सय्यदना उबय बिन काब (رضي الله عنه) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब।

3898 - सय्यदना उबय बिन काब (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने उनसे फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें क़ुरआन पढ़ कर सुनाऊँ।" फिर आप(ﷺ) ने उन्हें सूरह बय्यना पढ़ कर सुनाई और इसमें यह पढ़ा: "अल्लाह के नज़दीक दीन वही है जो यक तरफ़ा मुस्लिम है, जो न यहूदियत का दीन है और न ही ईसाइयत और मजूसियत का, जो शख़्स भलाई का काम करेगा उसे रद्द नहीं किया जाएगा।" और आप(ﷺ) ने यह भी पढ़ा " अगर इब्ने आदम के लिए माल की एक वादी हो तो वह दूसरी को तलाश करेगा और अगर दूसरी भी मिल जाए तो वह तीसरी की ख़्वाहिश करेगा इब्ने आदम का पेट सिर्फ़ (क़ब्र की) मिट्टी ही भर सकती है और अल्लाह उसी की तौबा क़ुबूल करता है जो सच्चे दिल से तौबा करे।"

अहमद:5/ 131. हाकिम:2/ 224. तयालिसी:539.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है, और एक दूसरी सनद से भी मर्वी है और अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान बिन अब्ज़ा ने अपने बाप के ज़रिए सय्यदना उबय बिन काब (رضي الله عنه) से रिवायत की है कि नबी(ﷺ) ने सय्यदना उबय बिन काब (رضي الله عنه) से फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें क़ुरआन सुनाऊँ।"

नीज़ क़तादा ने सय्यदना अनस (رضي الله عنه) से रिवायत की है कि नबी(ﷺ) ने सय्यदना उबय बिन काब (رضي الله عنه) से फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें क़ुरआन सुनाऊँ।"

66 - अंसार और क़ुरैश की फ़ज़ीलत।

66 بَابٌ فِي فَضْلِ الأَنْصَارِ وَقُرَيْشٍ

3899 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ، عَنْ زُهَيْرِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ عَقِيلٍ، عَنِ الطُّفَيْلِ بْنِ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: لَوْلاَ الهِجْرَةُ لَكُنْتُ امْرَأً مِنَ الأَنْصَارِ.

3899 - सय्यदना उबय बिन काब (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "अगर हिज्रत न की होती तो मैं भी अंसार का ही एक फ़र्द होता।"

हसन सहीह: अहमद:5/137. हाकिम:4/78. अस-सिलसिला अस-सहीहा:1768.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इसी सनद से यह भी मर्वी है कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, "अगर लोग किसी वादी या घाटी में चले तो मैं अंसार के साथ चलूँ।"
इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है।

3900 - حَدَّثَنَا بُنْدَارٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ، عَنِ البَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ، أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ، أَوْ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ، فِي الأَنْصَارِ: لاَ يُحِبُّهُمْ إِلاَّ مُؤْمِنٌ، وَلاَ يُبْغِضُهُمْ إِلاَّ مُنَافِقٌ، مَنْ أَحَبَّهُمْ فَأَحَبَّهُ اللَّهُ، وَمَنْ أَبْغَضَهُمْ فَأَبْغَضَهُ اللَّهُ فَقُلْتُ لَهُ: أَأَنْتَ سَمِعْتَهُ مِنَ الْبَرَاءِ؟ فَقَالَ: إِيَّايَ حَدَّثَ.

3900 - सय्यदना बराअ बिन आज़िब (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने अंसार के बारे में फ़रमाया, "उनसे मोमिन ही मोहब्बत करता है और मुनाफ़िक़ ही उनसे नफ़रत करता है, जो उनसे मोहब्बत करेगा अल्लाह भी उससे मोहब्बत करेगा और जो उनसे नफ़रत करेगा अल्लाह भी उनसे नफ़रत करेगा।" (शोबा) कहते हैं: हमने (अदी से) कहा: क्या आपने यह हदीस बराअ से ख़ुद सुनी है? तो उन्होंने कहा: उन्होंने ख़ुद मुझे बयान की थी।

बुख़ारी:3783. मुस्लिम:75. इब्ने माजह:163. अस-सिलसिला अस-सहीहा:1975.
वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3901 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ:

3901 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने अंसार के कुछ

سَمِعْتُ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ قَالَ: جَمَعَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَاسًا مِنَ الأَنْصَارِ فَقَالَ: هَلْ فِيكُمْ أَحَدٌ مِنْ غَيْرِكُمْ؟ قَالُوا: لاَ، إِلاَّ ابْنَ أُخْتٍ لَنَا، فَقَالَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ ابْنَ أُخْتِ الْقَوْمِ مِنْهُمْ، ثُمَّ قَالَ: إِنَّ قُرَيْشًا حَدِيثٌ عَهْدُهُمْ بِجَاهِلِيَّةٍ وَمُصِيبَةٍ، وَإِنِّي أَرَدْتُ أَنْ أَجْبُرَهُمْ وَأَتَأَلَّفَهُمْ، أَمَا تَرْضَوْنَ أَنْ يَرْجِعَ النَّاسُ بِالدُّنْيَا وَتَرْجِعُونَ بِرَسُولِ اللهِ إِلَى بُيُوتِكُمْ؟ قَالُوا: بَلَى، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَوْ سَلَكَ النَّاسُ وَادِيًا أَوْ شِعْبًا وَسَلَكَتِ الأَنْصَارُ وَادِيًا أَوْ شِعْبًا لَسَلَكْتُ وَادِيَ الأَنْصَارِ أَوْ شِعْبَهُمْ.

लोगों को जमा करके फ़रमाया, "तुम में कोई ग़ैर तो नहीं है?" उन्होंने कहा: नहीं, सिवाए हमारे एक भांजे के, तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "लोगों का भांजा भी उन्हीं में से होता है" फिर आपने फ़रमाया, "कुरैश के लोगों ने जाहिलियत और मुसीबत के अय्याम को नया नया छोड़ा है, और मैं उनके हालात की इस्लाह और उन (के दिलों) की तालीफ़ करना चाहता हूँ, क्या तुम इस बात से खुश नहीं होते कि लोग दुनिया को लेकर वापस जाएँ और तुम रसूलुल्लाह(ﷺ) की मोहब्बत को लेकर अपने घरों में जाओ।" लोगों ने अर्ज़ किया, क्यों नहीं, फिर अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने फ़रमाया, "अगर लोग किसी वादी या घाटी में चलें और अंसार भी किसी वादी या घाटी में चलें तो मैं अंसार की वादी या उनकी घाटी में चलूँ।"

बुख़ारी:3146. मुस्लिम:1059. निसाई:2611.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3902 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ زَيْدِ بْنِ جُدْعَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا النَّضْرُ بْنُ أَنَسٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ، أَنَّهُ كَتَبَ إِلَى أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ يُعَزِّيهِ فِيمَنْ أُصِيبَ مِنْ أَهْلِهِ وَبَنِي عَمِّهِ يَوْمَ الْحَرَّةِ، فَكَتَبَ إِلَيْهِ: إِنِّي أُبَشِّرُكَ بِبُشْرَى مِنَ اللهِ، إِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِلأَنْصَارِ وَلِذَرَارِيِّ الأَنْصَارِ وَلِذَرَارِيِّ ذَرَارِيهِمْ.

3902 - नज़र बिन अनस (رضي الله عنه) से रिवायत है कि ज़ैद बिन अरक़म ने अनस बिन मालिक को ख़त लिखा, जिसमें उन्होंने हर्रा के दिन उनके अहल और चचा के बेटों की शहादत पर ताजियत की थी, तो उन्होंने जवाबन ख़त लिखा, मैं तुम्हें अल्लाह की तरफ़ से एक खुशखबरी सुनाता हूँ मैंने अल्लाह के रसूल(ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "ऐ अल्लाह! अंसार, अंसार की औलाद और उनकी औलाद की औलाद को बख़्श दे।"

बुख़ारी:4906. मुस्लिम:2506.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

हमें अहमद बिन मुनीअ ने हुशैम से उन्हें अली बिन ज़ैद बिन जुदआन ने नज़र बिन अनस से हदीस बयान की है उसे क़तादा ने भी बवास्ता नज़र बिन अनस, ज़ैद बिन अरक़म (رضي الله عنه) से रिवायत किया है।

3903 - सय्यदना अबू तल्हा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मुझ से फ़रमाया, "अपनी कौम को सलाम कहना मैं तो यही जानता हूँ कि वह पाक दामन और सब्र करने वाले हैं।"

ज़ईफ़: (लेकिन हदीस का दूसरा हिस्सा सहीह है) हाकिम:4/79. अबू याला:1420. तबरानी फ़िल कबीर:4710.

3903 - حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الخُزَاعِيُّ البَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، وَعَبْدُ الصَّمَدِ، قَالاَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ ثَابِتٍ البُنَانِيُّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ أَبِي طَلْحَةَ، قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللهِ ﷺ أَقْرِئْ قَوْمَكَ السَّلاَمَ فَإِنَّهُمْ مَا عَلِمْتُ أَعِفَّةٌ صُبُرٌ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3904 - सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, "आगाह हो जाओ! मेरे राज़दार[1] जिनकी तरफ़ मैं जगह लेता हूँ वह मेरे घर वाले हैं और मेरे साथी[2] और मसाहिब अंसार हैं, सो तुम उनके बुरे से दरगुज़र करो उनके अच्छे से कुबूल करो।"

(अहले बैत के ज़िक्र के साथ मुन्कर है।) अहमद:3/89. इब्ने अबी शैबा:12/158.

3904 - حَدَّثَنَا الحُسَيْنُ بْنُ حُرَيْثٍ قَالَ: حَدَّثَنِي الفَضْلُ بْنُ مُوسَى، عَنْ زَكَرِيَّا بْنِ أَبِي زَائِدَةَ، عَنْ عَطِيَّةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: أَلاَ إِنَّ عَيْبَتِيَ الَّتِي آوِي إِلَيْهَا أَهْلُ بَيْتِي، وَإِنَّ كَرِشِيَ الأَنْصَارُ، فَاعْفُوا عَنْ مُسِيئِهِمْ، وَاقْبَلُوا مِنْ مُحْسِنِهِمْ.

तौज़ीह: عيبتي : العيبة दिल और सीने को कहा जाता है अरब कहते हैं:فلان عيبة فلان फ़ुलां शख़्स फ़ुलां का राज़दार है। (देखिये:अल्मोजमुल वसीत:पृ.760)

كَرِشِي: मुख़्लिस साथी और मसाहिब (देखिये:अल-कामूसुल वहीद,पृ.1398)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है और इस बारे में अनस (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

3905 - सय्यदना साद (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "जो शख़्स कुरैश को रुस्वा करने का इरादा करेगा अल्लाह

3905 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ الحَسَنِ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ الهَاشِمِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا

إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي صَالِحُ بْنُ كَيْسَانَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي سُفْيَانَ، عَنْ يُوسُفَ بْنِ الحَكَمِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَنْ يُرِدْ هَوَانَ قُرَيْشٍ أَهَانَهُ اللَّهُ.

उसे रुस्वा कर देगा।"

सहीह: अहमद:1/183. हाकिम:4/74. अस-सिलसिला अस-सहीहा:1178.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस ग़रीब है। (अबू ईसा कहते हैं) हमें अब्द बिन हुमैद ने उन्हें याकूब बिन इब्राहीम बिन साद ने अपने बाप के ज़रिए सालेह बिन कैसान से उन्होंने इब्ने शिहाब से इसी सनद के साथ ऐसी ही हदीस बयान की है।

3906 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ السَّرِيِّ، وَالمُؤَمَّلُ، قَالَا: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ أَبِي ثَابِتٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِي: لَا يَبْغَضُ الأَنْصَارَ أَحَدٌ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَاليَوْمِ الآخِرِ.

3906 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने मुझसे फ़रमाया, "जो शख़्स अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है वह अंसार से बुग्ज़ नहीं रख सकता।"

सहीह: अहमद:1/309. अबू याला:2698. तबरानी फ़िल कबीर:12339. अस-सिलसिला अस-सहीहा:1234.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3907 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ: سَمِعْتُ قَتَادَةَ، يُحَدِّثُ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: الأَنْصَارُ كَرِشِي وَعَيْبَتِي، وَإِنَّ النَّاسَ سَيَكْثُرُونَ وَيَقِلُّونَ، فَاقْبَلُوا مِنْ مُحْسِنِهِمْ، وَتَجَاوَزُوا عَنْ مُسِيئِهِمْ.

3907 - अनस बिन मालिक (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "अंसार मेरे मुख़्लिस साथी और राज़दार हैं, अन्क़रीब (दुसरे) लोग बढ़ेंगे और यह अंसार कम होंगे, तो तुम उनके अच्छे से कुबूल करना और बुरे से दरगुज़र करना।"

बुख़ारी:3801. मुस्लिम:2510. अहमद:3/176.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3908 - حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو

3908 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास

يَحْيَى الحِمَّانِيُّ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ طَارِقِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: اللَّهُمَّ أَذَقْتَ أَوَّلَ قُرَيْشٍ نَكَالاً فَأَذِقْ آخِرَهُمْ نَوَالاً.

(ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ अल्लाह! तूने कुरैश के पहले लोगों को तकालीफ़[1] (तक्लीफ़ों) से दो चार किया है, तो उनके आख़िरी लोगों को अताओं से नवाज़ दे।"

हसन सहीह: अहमद: 1/242. इब्ने अबी आसिम फ़िस सुन्ना: 1538. अस-सिलसिला अज-ज़ईफा: 398.

तौज़ीह: نَكَالاً : अज़ाब, सज़ा, यानी पहले लोग शहीद हुए और अल्लाह के रास्ते में बड़ी तकालीफ़ उठाई।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। हमें अब्दुल वहहाब वर्राक़ ने बवास्ता यहया बिन सईद, आमश से ऐसे ही हदीस बयान की है।

3909 - حَدَّثَنَا القَاسِمُ بْنُ دِينَارٍ الكُوفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، عَنْ جَعْفَرٍ الأَحْمَرِ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ السَّائِبِ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِلأَنْصَارِ، وَلأَبْنَاءِ الأَنْصَارِ، وَلأَبْنَاءِ أَبْنَاءِ الأَنْصَارِ، وَلِنِسَاءِ الأَنْصَارِ.

3909 - सय्यदना अनस (ﷺ) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने दुआ फ़रमाई: "ऐ अल्लाह! अंसार के बेटों, अंसार के पोतों और अंसार की औरतों को बख़्श दे।"

अहमद: 3/162. अब्दुर्रज्ज़ाक़: 19913. दूसरे तरीक़ से।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन ग़रीब है।

67 بَابُ مَا جَاءَ فِي أَيِّ دُورِ الأَنْصَارِ خَيْرٌ

67 - अंसार के कौन से घराने बेहतर हैं।

3910 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ الأَنْصَارِيِّ، أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ، يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَلاَ أُخْبِرُكُمْ بِخَيْرِ دُورِ الأَنْصَارِ، أَوْ بِخَيْرِ الأَنْصَارِ؟ قَالُوا: بَلَى يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: بَنُو النَّجَّارِ، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ

3910 - अनस बिन मालिक (ﷺ) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने फ़रमाया, "क्या मैं तुम्हें अंसार के बेहतरीन घरानों या बेहतरीन अंसार के बारे में न बताऊँ?" लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! ज़रूर, आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "बनू नजार फिर उसके साथ वाले बनू अब्दुल अशहल फिर उनसे

بَنُو عَبْدِ الأَشْهَلِ، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ بَنُو الحَارِثِ بْنِ الخَزْرَجِ، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ بَنُو سَاعِدَةَ، ثُمَّ قَالَ بِيَدِهِ فَقَبَضَ أَصَابِعَهُ، ثُمَّ بَسَطَهُنَّ كَالرَّامِي بِيَدَيْهِ، قَالَ: وَفِي دُورِ الأَنْصَارِ كُلِّهَا خَيْرٌ.

मिलने वाले बनू हारिस बिन खज़्रज, फिर उनके साथ बनू साइदा।" फिर आप(ﷺ) ने अपने हाथ के इशारे से फ़रमाया अपनी उँगलियों को बंद किया फिर उन्हें फैलाया गोया हाथों के साथ कोई चीज़ फ़ेंक रहे हों, फ़रमाया, "अंसार के तमाम घरों में ही भलाई है।"

बुख़ारी:5300. मुस्लिम:2511.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और यह हदीस इसी तरह ही अनस (رضي الله عنه) से बवास्ता अबू उसैद साइदी (رضي الله عنه) भी नबी(ﷺ) से मर्वी है।

3911 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ: سَمِعْتُ قَتَادَةَ، يُحَدِّثُ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ أَبِي أُسَيْدٍ السَّاعِدِيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: خَيْرُ دُورِ الأَنْصَارِ دُورُ بَنِي النَّجَّارِ، ثُمَّ دُورُ بَنِي عَبْدِ الأَشْهَلِ، ثُمَّ بَنِي الحَارِثِ بْنِ الخَزْرَجِ، ثُمَّ بَنِي سَاعِدَةَ، وَفِي كُلِّ دُورِ الأَنْصَارِ خَيْرٌ، فَقَالَ سَعْدٌ: مَا أَرَى رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلاَّ قَدْ فَضَّلَ عَلَيْنَا، فَقِيلَ: قَدْ فَضَّلَكُمْ عَلَى كَثِيرٍ.

3911 - सय्यदना अबू उसैद साइदी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने फ़रमाया, "अंसार का सब से बेहतरीन ख़ानदान बनू नज्जार का खानदान है, फिर बनू अशहल का खानदान, फिर बनू हारिस बिन खज़्रज का ख़ानदान, फिर बनू साइदा का ख़ानदान और अंसार के तमाम घरानों में ही भलाई है।" साद (رضي الله عنه) कहते हैं: मेरे ख़याल में अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने हमारे ऊपर फ़ज़ीलत दी है तो उनसे कहा गया: आप ने तुम्हें बहुत से लोगों पर फ़ज़ीलत दी है।

बुख़ारी:3789. मुस्लिम:2511. अहमद:3/496.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है और अबू साइदी का नाम मालिक बिन रबीया (رضي الله عنه) था, नीज़ यह हदीस बवास्ता अबू हुरैरा (رضي الله عنه) भी नबी(ﷺ) से इसी तरह ही मर्वी है। इसे मामर ने ज़ोहरी से बवास्ता अबू सलमा और उबैदुल्लाह बिन उमर, अबू हुरैरा (رضي الله عنه) के ज़रिए नबी(ﷺ) से रिवायत किया है।

3912 - حَدَّثَنَا أَبُو السَّائِبِ سَلْمُ بْنُ جُنَادَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ بَشِيرٍ، عَنْ مُجَالِدٍ، عَنِ

3912 - सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "अंसार का सबसे बेहतर घराना बनू

الشَّعْبِيِّ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: خَيْرُ دِيَارِ الأَنْصَارِ بَنُو النَّجَّارِ.

नज्जार (का ख़ानदान) है।"

सहीह लिग़ैरिही।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस ग़रीब है।

3913 - حَدَّثَنَا أَبُو السَّائِبِ سَلْمُ بْنُ جُنَادَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ بَشِيرٍ، عَنْ مُجَالِدٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ خَيْرُ الأَنْصَارِ بَنُو عَبْدِ الأَشْهَلِ.

3913 - सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "अंसार का बेहतरीन ख़ानदान बनू अब्दुल अशहल है।"

सहीह लिग़ैरिही।

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

68 بَابُ مَا جَاءَ فِي فَضْلِ الْمَدِينَةِ

68 - मदीना की फ़ज़ीलत।

3914 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ عَمْرِو بْنِ سُلَيْمٍ الزُّرَقِيِّ، عَنْ عَاصِمِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ، قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى إِذَا كَانَ بِحَرَّةِ السُّقْيَا الَّتِي كَانَتْ لِسَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ائْتُونِي بِوَضُوءٍ، فَتَوَضَّأَ ثُمَّ قَامَ فَاسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ، فَقَالَ: اللَّهُمَّ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ كَانَ عَبْدَكَ وَخَلِيلَكَ وَدَعَا لأَهْلِ مَكَّةَ بِالْبَرَكَةِ، وَأَنَا عَبْدُكَ وَرَسُولُكَ أَدْعُوكَ لأَهْلِ الْمَدِينَةِ أَنْ تُبَارِكَ لَهُمْ فِي مُدِّهِمْ وَصَاعِهِمْ مِثْلَيْ مَا

3914 - सय्यदना अली बिन अबी तालिब (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि हम रसूलुल्लाह(ﷺ) के साथ निकले यहाँ तक कि जब आप(ﷺ) हर्रतुस्सुक्या पहुंचे जो साद बिन अबी वक़्क़ास का मोहल्ला था तो अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने फ़रमाया, "मेरे पास वुज़ू के लिए पानी लाओ।" आप(ﷺ) ने वुज़ू फ़रमाया, "फिर क़िब्ला रुख खड़े हो कर दुआ की "ऐ अल्लाह! इब्राहीम (عليه السلام) तेरे बन्दे और तेरे खलील थे, उन्होंने मक्का वालों के लिए बरकत की दुआ की थी और मैं भी तेरा बन्दा और तेरा रसूल हूँ, मैं तुझ से मदीना वालों के लिए दुआ करता हूँ कि तू उनके लिए उनके मुद और साअ में ऐसे ही बरकत दे जैसे अहले मक्का के लिए बरकत रखी है उस एक बरकत के साथ दोहरी बरकत दे दे।

بَارَكْتَ لأَهْلِ مَكَّةَ مَعَ الْبَرَكَةِ بَرَكَتَيْنِ.

सहीह:अहमद:1/ 115. इब्ने हिब्बान:3746. इब्ने खुज़ैमा:209. सहीहुत्तर्गीब:1201.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। नीज़ इस बारे में आयशा, अब्दुल्लाह बिन ज़ैद और अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

3915 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي زِيَادٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو نُبَاتَةَ يُونُسُ بْنُ يَحْيَى بْنِ نُبَاتَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَلَمَةُ بْنُ وَرْدَانَ، عَنْ أَبِي سَعِيدِ بْنِ أَبِي الْمُعَلَّى، عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ، وَأَبِي هُرَيْرَةَ، قَالاَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَا بَيْنَ بَيْتِي وَمِنْبَرِي رَوْضَةٌ مِنْ رِيَاضِ الْجَنَّةِ.

3915 - सय्यदना अली बिन अबी तालिब और अबू हुरैरा (رضي الله عنهما) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह{ﷺ} ने फ़रमाया, "मेरे घर और मेरे मिम्बर के दर्मियान (की जगह) जन्नत के बागीचों में से एक बागीचा है।"

सहीह: बज़्ज़ार:511.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: अली (رضي الله عنه) के इस तरीक़ से यह हदीस ग़रीब हसन है। नीज़ यह एक और तरीक़ से भी अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से मर्वी है।

- 3916 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَامِلٍ الْمَرْوَزِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي حَازِمٍ الزَّاهِدُ، عَنْ كَثِيرِ بْنِ زَيْدٍ، عَنِ الْوَلِيدِ بْنِ رَبَاحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَا بَيْنَ بَيْتِي وَمِنْبَرِي رَوْضَةٌ مِنْ رِيَاضِ الْجَنَّةِ.

وَبِهَذَا الإِسْنَادِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: صَلاَةٌ فِي مَسْجِدِي هَذَا خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ صَلاَةٍ فِيمَا سِوَاهُ مِنَ الْمَسَاجِدِ إِلاَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ.

3916 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, "मेरे घर और मेरे मिम्बर के दर्मियान वाली जगह जन्नत के बागीचों में से एक बागीचा है।" और इसी सनद से मर्वी है कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, "मेरी इस मस्जिद में एक नमाज़ बाक़ी मसाजिद में (पढ़ी जाने वाली) एक हज़ार नमाज़ से बेहतर है सिवाए मस्जिदे हराम (बैतुल्लाह) के।"

बुख़ारी:1190. मुस्लिम:1394. इब्ने माजह:1404. निसाई:694.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है। और कई तुरूक़ से बवास्ता अबू हुरैरा (رضي الله عنه) नबी(ﷺ) से मर्वी है।

3917 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَنِ اسْتَطَاعَ أَنْ يَمُوتَ بِالْمَدِينَةِ فَلْيَمُتْ بِهَا، فَإِنِّي أَشْفَعُ لِمَنْ يَمُوتُ بِهَا.

3917 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, "जो शख़्स मदीना में फौत होने की ताक़त रखता हो तो वह यहाँ फौत हो मैं यहाँ पर मरने वालों के लिए शफ़ाअत करूंगा।"

सहीह: इब्ने माजह:3112. अहमद:2/74. इब्ने हिब्बान:3741.

वज़ाहत: इस बारे में सुबैया बिन्ते हारिस अस्लमिया (رضي الله عنها) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: अय्यूब सख़्तियानी के तरीक़ से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3918 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الأَعْلَى، قَالَ: حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، قَالَ: سَمِعْتُ عُبَيْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ مَوْلَاةً لَهُ أَتَتْهُ فَقَالَتْ: اشْتَدَّ عَلَيَّ الزَّمَانُ، وَإِنِّي أُرِيدُ أَنْ أَخْرُجَ إِلَى العِرَاقِ. قَالَ: فَهَلاَّ إِلَى الشَّامِ أَرْضِ الْمَنْشَرِ اصْبِرِي لَكَاعِ، فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: مَنْ صَبَرَ عَلَى شِدَّتِهَا وَلَأْوَائِهَا كُنْتُ لَهُ شَهِيدًا أَوْ شَفِيعًا يَوْمَ القِيَامَةِ.

3918 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) से रिवायत है कि एक आज़ादकर्दा लौंडी ने उनके पास आकर कहा: हादिसाते ज़माना मुझ पर सख़्त हो गए हैं और मैं इराक जाना चाहती हूँ। उन्होंने फ़रमाया, "शाम क्यों नहीं जाती जो मह्शर का इलाक़ा है? ऐ नादान! सब्र कर इसलिए कि मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को फ़रमाते हुए सुना: "जो शख़्स इस (मदीना) की सख्ती और भूक पर सब्र करेगा तो क़यामत के दिन मैं उसका सिफ़ारशी या गवाह हुँगा।"

मुस्लिम:1377. अहमद:2/155.

वज़ाहत: इस बारे में अबू सईद, सुफ़ियान बिन अबी ज़ुहैर और सुबैया अस्लमिया(رضي الله عنهم) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: उबैदुल्लाह के तरीक़ से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3919 - حَدَّثَنَا أَبُو السَّائِبِ سَلْمُ بْنُ جُنَادَةَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا أَبِي جُنَادَةُ بْنُ سَلْمٍ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: آخِرُ قَرْيَةٍ مِنْ قُرَى الإِسْلَامِ خَرَابًا الْمَدِينَةُ.

3919 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने फ़रमाया, "इस्लाम की बस्तियों में सबसे आखिर में उजड़ने वाली बस्ती मदीना है।"

ज़ईफ़: इब्ने हिब्बान:6776. अस-सिलसिला अज-ज़ईफा:1300.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (रहमतुल्लाह) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे बवास्ता जुनादा ही हिशाम बिन उर्वा से जानते हैं।

फ़रमाते हैं: मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी ने अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की इस हदीस से तअज्जुब किया।

3920 - حَدَّثَنَا الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ (ح) وحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرٍ، أَنَّ أَعْرَابِيًّا بَايَعَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى الإِسْلاَمِ فَأَصَابَهُ وَعَكٌ بِالمَدِينَةِ فَجَاءَ الأَعْرَابِيُّ، إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ أَقِلْنِي بَيْعَتِي، فَأَبَى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَخَرَجَ الأَعْرَابِيُّ ثُمَّ جَاءَهُ فَقَالَ: أَقِلْنِي بَيْعَتِي، فَأَبَى، فَخَرَجَ الأَعْرَابِيُّ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّمَا الْمَدِينَةُ كَالكِيرِ تَنْفِي خَبَثَهَا وَتُنَصِّعُ طَيِّبَهَا.

3920 - जाबिर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि एक आराबी ने रसूलुल्लाह(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से इस्लाम पर बैअत की, फिर मदीना में उसे बुखार हो गया तो वह आराबी रसूलुल्लाह(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास आकर कहने लगा: आप मेरी बैअत ख़त्म कर दीजिए, रसूलुल्लाह(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इन्कार कर दिया, तो आराबी चला गया, फिर आप(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास आकर कहने लगा: आप मेरी बैअत ख़त्म कर दीजिए आप(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इन्कार किया तो आराबी निकल गया, फिर अल्लाह के रसूल(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इर्शाद फ़रमाया, "मदीना एक भट्टी की तरह है नापाक चीज़ को दूर कर देता है और पाक को ख़ालिस कर देता है।"

बुख़ारी:1883. मुसलिम:1383. निसाई:4158.

वज़ाहत: (इमाम तिर्मिज़ी ने कहा:) इस बारे में अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (रहमतुल्लाह) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3921 - حَدَّثَنَا الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكٌ (ح) وحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، عَنْ مَالِكٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ: لَوْ رَأَيْتُ الظِّبَاءَ تَرْتَعُ بِالمَدِينَةِ مَا ذَعَرْتُهَا، إِنَّ

3921 - सय्यदना अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से मर्वी है कि उन्होंने फ़रमाया, "अगर मैं मदीना में हिरन चरते हुए देखूं तो मैं उन्हें न डराऊं इसलिए कि अल्लाह के रसूल(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, "इस (मदीना) के दोनों कंकरीले पहाड़ों के दर्मियान (वाली जगह) हरम है।"

बुख़ारी:1873. मुस्लिम:1372.

رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَا بَيْنَ لَابَتَيْهَا حَرَامٌ.

वज़ाहतः (इमाम तिर्मिज़ी ने कहा:) इस बारे में साद, अब्दुल्लाह बिन ज़ैद, अनस, अबू अय्यूब, ज़ैद बिन साबित, राफ़े बिन ख़दीज, जाबिर और सहल बिन हुनैफ़ (ﷺ) से भी ऐसे ही हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: अबू हुरैरा (ﷺ) की यह हदीस हसन सहीह है।

3922 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، عَنْ مَالِكٍ (ح) وحَدَّثَنَا الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ عَمْرِو بْنِ أَبِي عَمْرٍو، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ طَلَعَ لَهُ أُحُدٌ، فَقَالَ: هَذَا جَبَلٌ يُحِبُّنَا وَنُحِبُّهُ، اللَّهُمَّ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ حَرَّمَ مَكَّةَ وَإِنِّي أُحَرِّمُ مَا بَيْنَ لَابَتَيْهَا.

3922 - सय्यदना अनस बिन मालिक (ﷺ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) को उहुद पहाड़ नज़र आया तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "यह पहाड़ हमसे मोहब्बत करता है और हम इससे मोहब्बत करते हैं। ऐ अल्लाह! इब्राहीम (ﷺ) ने मक्का को हुर्मत वाला कहा था और मैं इन दोनों पहाड़ों के दर्मियान वाली जगह को हुर्मत वाला क़रार देता हूँ।"

बुख़ारी:2889. मुस्लिम:1365. इब्ने माजह:3115.

वज़ाहतः इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3923 - حَدَّثَنَا الحُسَيْنُ بْنُ حُرَيْثٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الفَضْلُ بْنُ مُوسَى، عَنْ عِيسَى بْنِ عُبَيْدٍ، عَنْ غَيْلَانَ بْنِ عَبْدِ اللهِ العَامِرِيِّ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ بْنِ عَمْرِو بْنِ جَرِيرٍ، عَنْ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ اللَّهَ أَوْحَى إِلَيَّ: أَيَّ هَؤُلَاءِ الثَّلَاثَةِ نَزَلْتَ فَهِيَ دَارُ هِجْرَتِكَ: الْمَدِينَةَ، أَوِ البَحْرَيْنِ، أَوْ قِنَّسْرِينَ.

3923 - सय्यदना जरीर बिन अब्दुल्लाह (ﷺ) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने मेरी तरफ़ वहि उतारी कि उन तीन इलाक़ों में जहां आप चले जाएँ वहीं आपकी हिज्रत की जगह है। मदीना, बहरैन या क़िन्नसरीन।"

मौज़ू:हाकिम:2/3. तबरानी फ़िल कबीर:2417. ज़ईफ़ुल जामे:1573.

वज़ाहतः इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। हम इसे फ़ज़्ल बिन मूसा के तरीक़ से ही जानते हैं, अबू आमिर अकेले रावी हैं।

3924 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، قَالَ: حَدَّثَنَا الفَضْلُ بْنُ مُوسَى، قَالَ: حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ، عَنْ صَالِحِ بْنِ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: لاَ يَصْبِرُ عَلَى لأْوَاءِ الْمَدِينَةِ وَشِدَّتِهَا أَحَدٌ إِلاَّ كُنْتُ لَهُ شَفِيعًا أَوْ شَهِيدًا يَوْمَ القِيَامَةِ.

3924 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "जो शख़्स मदीना की भूक और सख्ती पर सब्र करेगा तो क़यामत के दिन मैं उसके लिए सिफ़ारिशी या गवाह हुँगा।"

मुस्लिम:1378. अहमद:2/288. इब्ने हिब्बान:3740.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी ने कहा: इस बारे में अबू सईद, सूफ़ियान बिन अबी ज़ुहैर और सुबैया अस्लमिया (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस इस सनद से हसन ग़रीब है, और फ़रमाया,कि सालेह बिन अबी सालेह, सुहैल बिन अबी सालेह के भाई हैं।

69 بَابٌ فِي فَضْلِ مَكَّةَ

69 - मक्का की फ़ज़ीलत।

3925 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَدِيِّ بْنِ حَمْرَاءَ، قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاقِفًا عَلَى الحَزْوَرَةِ فَقَالَ: وَاللَّهِ إِنَّكِ لَخَيْرُ أَرْضِ اللهِ، وَأَحَبُّ أَرْضِ اللهِ إِلَى اللهِ، وَلَوْلاَ أَنِّي أُخْرِجْتُ مِنْكِ مَا خَرَجْتُ.

3925 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अदी बिन हमरा ज़ोहरी (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को हज्वरा (नामी चोटी) पर खड़े हुए देखा आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह की क़सम! (ऐ मक्का) तू अल्लाह की बेहतरीन ज़मीन है और मुझे सबसे ज़्यादा पसंद ज़मीन है, अगर मुझे तुझ से निकाला न जाता तो मैं न निकलता।"

सहीह: इब्ने माजह:3108. अहमद:4/305. दारमी:2513. हाकिम:3/7.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है। इसे यूनुस ने भी ज़ोहरी से इसी तरह रिवायत किया है, जबकि मुहम्मद बिन अम्र ने इसे अबू सलमा से बवास्ता अबू हुरैरा (رضي الله عنه) नबी(ﷺ) से रिवायत किया है। लेकिन ज़ोहरी की बवास्ता अबू सलमा, अब्दुल्लाह बिन अदी बिन हमरा (رضي الله عنه) से बयानकर्दा हदीस मेरे नज़दीक ज़्यादा सहीह है।

3926 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُوسَى الْبَصْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْفُضَيْلُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُثْمَانَ بْنِ خُثَيْمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ جُبَيْرٍ، وَأَبُو الطُّفَيْلِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِمَكَّةَ: مَا أَطْيَبَكِ مِنْ بَلَدٍ، وَأَحَبَّكِ إِلَيَّ، وَلَوْلاَ أَنَّ قَوْمِي أَخْرَجُونِي مِنْكِ مَا سَكَنْتُ غَيْرَكِ.

3926 - अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने मक्का से फ़रमाया, "तू किस क़दर पाकीज़ा शहर है और मुझे किस क़दर महबूब है, अगर तेरी कौम मुझे यहाँ से न निकालती तो मैं तेरे सिवा किसी और जगह न रहता।"

सहीह: इब्ने हिब्बान:3709. तबरानी फ़िल कबीर:10624.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस सनद से यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

70 بَابٌ فِي فَضْلِ الْعَرَبِ

70 - अरब की फ़ज़ीलत।

3927 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى الأَزْدِيُّ، وَأَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، وَغَيْرُ وَاحِدٍ قَالُوا: حَدَّثَنَا أَبُو بَدْرٍ شُجَاعُ بْنُ الْوَلِيدِ، عَنْ قَابُوسَ بْنِ أَبِي ظَبْيَانَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ سَلْمَانَ، قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَا سَلْمَانُ لاَ تَبْغَضْنِي فَتُفَارِقَ دِينَكَ، قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ كَيْفَ أَبْغَضُكَ وَبِكَ هَدَانَا اللَّهُ؟ قَالَ: تَبْغَضُ الْعَرَبَ فَتَبْغَضُنِي.

3927 - सय्यदना सलमान (رضي الله عنه)रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने मुझ से फ़रमाया, "ऐ सलमान! तुम मुझ से नफ़रत मत रखना वर्ना तुम दीन खो दोगे मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल मैं आपसे बुग्ज़ कैसे रख सकता हूँ जबकि अल्लाह ने हमें आप ही की बदौलत हिदायत दी है। आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम अरब से बुग्ज़ रखोगे तो मुझसे ही बुग्ज़ होगा।"

ज़ईफ़: अहमद:5/440. हाकिम:4/86. तयालिसी:658. अस- सिलसिला अज- ज़ईफा:2029.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे अबु बद्र शुजा बिन वलीद के तरीक़ से ही जानते हैं, और मैंने मुहम्मद बिन इस्माईल बुखारी को फ़रमाते हुए सुना: अबू ज़ब्यान ने सलमान (رضي الله عنه) को नहीं पाया ,सलमान की वफ़ात अली (رضي الله عنه)से पहले हुई है।

3928 - حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا

3928 - उस्मान बिन अफ्फान (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया,

مُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ العَبْدِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ الأَسْوَدِ، عَنْ حُصَيْنِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ مُخَارِقِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنْ طَارِقِ بْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَنْ غَشَّ العَرَبَ لَمْ يَدْخُلْ فِي شَفَاعَتِي وَلَمْ تَنَلْهُ مَوَدَّتِي.

"जिसने अरब को धोका दिया वोह मेरी शफ़ाअत में दाख़िल नहीं होगा और न ही मेरी मोहब्बत उसे मिलेगी।"

मौज़ू:अहमद:1/72. इब्ने अबी शैबा:12/193. अस-सिलसिला अज-ज़ईफा:545.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं यह हदीस ग़रीब है। हम इसे हुसैन बिन उमर अल अह्मसी के वास्ते से ही मुख़ारिक़ से जानते हैं, और हुसैन मोहद्दिसिन के नज़दीक क़वी नहीं हैं।

3929 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى، قَالَ: حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي رَزِينٍ، عَنْ أُمِّهِ قَالَتْ: كَانَتْ أُمُّ الحُرَيْرِ، إِذَا مَاتَ أَحَدٌ مِنَ العَرَبِ اشْتَدَّ عَلَيْهَا، فَقِيلَ لَهَا: إِنَّا نَرَاكِ إِذَا مَاتَ رَجُلٌ مِنَ العَرَبِ اشْتَدَّ عَلَيْكِ. قَالَتْ: سَمِعْتُ مَوْلَايَ، يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مِنْ اقْتِرَابِ السَّاعَةِ هَلَاكُ العَرَبِ.

3929 - मुहम्मद बिन अबी रजीन (رحمه الله) अपनी मां से रिवायत करते हैं वह कहती हैं: जब अरब में से कोई शख़्स फौत हो जाता तो उम्मे हुरैर को बहुत ग़म होता । उनसे कहा गया: हम आपको देखते हैं कि जब अरब में से कोई शख़्स फौत होता है तो आपको बहुत ग़म होता है। वह कहने लगी: मैंने अपने मालिक से सुना वह कह रहे थे: कि अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने फ़रमाया, "अरब का हलाक होना क़यामत के क़रीब आने की अलामत है।"

ज़ईफ़:तबरानी फ़िल कबीर:8159. अस-सिलसिला अज-ज़ईफा:4515.

वज़ाहत: मुहम्मद बिन अबी रजीन कहते हैं: उनके मालिक तल्हा बिन मालिक (رضي الله عنه) थे।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं यह हदीस ग़रीब है, हम इसे सुलैमान बिन हर्ब के तरीक़ से ही जानते हैं।

3930 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى الأَزْدِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو الزُّبَيْرِ، أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ

3930 - सय्यदा उम्मे शरीक (رضي الله عنها) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "लोग दज्जाल से भाग कर पहाड़ों पर जा

عَبْدِ اللهِ، يَقُولُ: حَدَّثَتْنِي أُمُّ شَرِيكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ، قَالَ: لَيَفِرَّنَّ النَّاسُ مِنَ الدَّجَّالِ حَتَّى يَلْحَقُوا بِالجِبَالِ. قَالَتْ أُمُّ شَرِيكٍ: يَا رَسُولَ اللهِ فَأَيْنَ العَرَبُ يَوْمَئِذٍ؟ قَالَ: هُمْ قَلِيلٌ.

पहुंचेंगे" उम्मे शरीक ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! उस दिन अरब कहाँ होंगे? फ़रमाया, "वह थोड़े होंगे।"

मुस्लिम:2945. अहमद:6/462.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3931 - حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ مُعَاذٍ العَقَدِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي عَرُوبَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنِ الحَسَنِ، عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدَبٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: سَامٌ أَبُو العَرَبِ، وَيَافِثُ أَبُو الرُّومِ، وَحَامٌ أَبُو الحَبَشِ.

3931 - सय्यदना समुरा बिन जुन्दुब (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "साम अरब का बाप, याफ़िस रूम का बाप और हाम हबश का बाप है।

ज़ईफ़: तखरीज के लिए देखिए हदीस नम्बर:3231.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है, और याफ़िस को यफ्स भी कहा जाता है।

71 بَابٌ فِي فَضْلِ العَجَمِ

71 - अजम की फ़ज़ीलत।

3932 - أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ بْنُ وَكِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ عَيَّاشٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا صَالِحُ بْنُ أَبِي صَالِحٍ، مَوْلَى عَمْرِو بْنِ حُرَيْثٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ: ذُكِرَتِ الأَعَاجِمُ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَأَنَا بِهِمْ أَوْ بِبَعْضِهِمْ أَوْثَقُ مِنِّي بِكُمْ أَوْ بِبَعْضِكُمْ.

3932 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) के पास अज्मियों का ज़िक्र किया गया तो नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, "मुझे उन पर या उन के बअ़ज़, तुम या तुम्हारे बअ़ज़ से ज़्यादा एतमाद है।"

ज़ईफ़:अस- सिलसिला अज- ज़ईफा:4862.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) ने कहा, यह हदीस ग़रीब है। हम इसे अबू बक्र बिन अयाश के तरीक़ से ही जानते हैं और सालेह, अबू सालेह के बेटे हैं उन्हें सालेह बिन मेहरान मौला अम्र बिन हुरैस भी कहा जाता है।

3933 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ

3933 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत

اللهِ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي ثَوْرُ بْنُ زَيْدٍ الدِّيلِيُّ، عَنْ أَبِي الغَيْثِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: كُنَّا عِنْدَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ أُنْزِلَتْ سُورَةُ الجُمُعَةِ فَتَلاَهَا، فَلَمَّا بَلَغَ{وَآخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ} قَالَ لَهُ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللهِ مَنْ هَؤُلاَءِ الَّذِينَ لَمْ يَلْحَقُوا بِنَا؟ فَلَمْ يُكَلِّمْهُ. قَالَ: وَسَلْمَانُ الفَارِسِيُّ فِينَا. قَالَ: فَوَضَعَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدَهُ عَلَى سَلْمَانَ، فَقَالَ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوْ كَانَ الإِيمَانُ بِالثُّرَيَّا لَتَنَاوَلَهُ رِجَالٌ مِنْ هَؤُلاَءِ.

करते हैं कि जब सूरह जुमा नाज़िल हुई तो हम अल्लाह के रसूल{ﷺ} के पास थे, आप{ﷺ} ने उसकी तिलावत की, फिर जब आयत (तर्जुमा) "कुछ दूसरे जो अभी तक उन से नहीं मिले।" (अल-जुमा:3) पर पहुंचे, तो एक आदमी ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! यह कौन लोग हैं जो हम से नहीं मिले? आप{ﷺ} ने कोई बात न की और सलमान फ़ारसी हमारे साथ मौजूद थे, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने अपना हाथ सलमान पर रख कर फ़रमाया, "उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! अगर ईमान सुरय्या की बलंदी पर भी हुआ तो इन लोगों में से कुछ आदमी उसे हासिल कर लेंगे।"

सहीह: तखरीज के लिए देखिए हदीस नम्बर:3310.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है, और कई तुरूक़ से बवास्ता अबू हुरैरा (رضي الله عنه) नबी(ﷺ) से मर्वी है, अबू गैस का नाम सालिम है यह अब्दुल्लाह बिन मुतीअ के आज़ादकर्दा गुलाम, और मदीना के रहने वाले थे।

72 بَابٌ فِي فَضْلِ اليَمَنِ

72 - यमन की फ़ज़ीलत।

3934 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي زِيَادٍ وَغَيْرُ وَاحِدٍ، قَالُوا: حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عِمْرَانُ القَطَّانُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَظَرَ قِبَلَ اليَمَنِ فَقَالَ: اللَّهُمَّ أَقْبِلْ بِقُلُوبِهِمْ، وَبَارِكْ لَنَا فِي صَاعِنَا وَمُدِّنَا.

3934 - सय्यदना ज़ैद बिन साबित (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने यमन की तरफ़ देख कर फ़रमाया, "ऐ अल्लाह! उनके दिल (हमारी तरफ़) फेर दे और हमारे लिए हमारे साअ और मुद में बरकत अता फ़रमा।"

हसन सहीह:अहमद:5/ 185. तबरानी फ़िल कबीर:4789. हियातुर्रूवात:6225.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ज़ैद बिन साबित के तरीक़ से हसन सहीह ग़रीब है। हम इसे इमरान अल-क़त्तान के तरीक से ही जानते हैं।

3935 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम्हारे पास यमन के लोग आए हैं जो निहायत नर्म दिल और रक़ीक़ुल क़ल्ब हैं, ईमान भी यमन से निकला है और हिक्मत भी यमन वाली ही है।"

सहीह:अहमद:2/502. मज़ीद देखिए: (2243)

3935 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: أَتَاكُمْ أَهْلُ الْيَمَنِ، هُمْ أَضْعَفُ قُلُوبًا، وَأَرَقُّ أَفْئِدَةً، الإِيمَانُ يَمَانٍ، وَالْحِكْمَةُ يَمَانِيَةٌ.

वज़ाहत: इस बारे में इब्ने अब्बास और अबू मसऊद (رضي الله عنه) से भी हदीस मर्वी है। नीज़ यह हदीस हसन सहीह है।

3936 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "बादशाहत क़ुरैश में, फ़ैसला अंसार में, अज़ान हब्शा (के लोगों) में और अमानत अज़्द यानी यमन (के लोगों) में है।"

सहीह: अहमद:2/346. इब्ने अबी शैबा:12/172. अस-सिलसिला अस-सहीहा:1083.

3936 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ حُبَابٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ صَالِحٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مَرْيَمَ الأَنْصَارِيُّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: الْمُلْكُ فِي قُرَيْشٍ، وَالْقَضَاءُ فِي الأَنْصَارِ، وَالأَذَانُ فِي الْحَبَشَةِ وَالأَمَانَةُ فِي الأَزْدِ يَعْنِي: الْيَمَنَ.

वज़ाहत: हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने वह कहते हैं हमें अब्दुर्रहमान बिन महदी ने मुआविया बिन सालेह से बवास्ता अबू मरियम अंसारी, अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से ऐसी ही हदीस बयान की है। वह मर्फ़ू नहीं है और यह ज़ैद बिन हुबाब की हदीस से ज़्यादा सहीह है।

3937 - सय्यदना अनस (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "अज़्द (के लोग) ज़मीन पर अल्लाह के शेर हैं।" लोग उन्हें पस्त करना चाहते हैं, जबकि अल्लाह उन्हें बलंद करना चाहता है, और लोगों पर एक वक़्त ऐसा भी आएगा कि आदमी कहेगा: काश मेरा बाप अज़्द का रहने वाला होता! काश मेरी मां अज़्द की रहने वाली होती!"

3937 - حَدَّثَنَا عَبْدُ الْقُدُّوسِ بْنُ مُحَمَّدٍ الْعَطَّارُ قَالَ: حَدَّثَنِي عَمِّي صَالِحُ بْنُ عَبْدِ الْكَبِيرِ بْنِ شُعَيْبٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عَمِّي عَبْدُ السَّلَامِ بْنُ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الأَزْدُ أَزْدُ اللهِ فِي الأَرْضِ يُرِيدُ النَّاسُ أَنْ يَضَعُوهُمْ

وَيَأْبَى اللَّهُ إِلاَّ أَنْ يَرْفَعَهُمْ، وَلَيَأْتِيَنَّ عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ يَقُولُ الرَّجُلُ: يَا لَيْتَ أَبِي كَانَ أَزْدِيًّا يَا لَيْتَ أُمِّي كَانَتْ أَزْدِيَّةً.

ज़ईफ़: तबरानी फ़िल औसत:7399. अस-सिलसिला अज-ज़ईफा:2467.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है, हम इसे सिर्फ इसी तरीक़ से ही जानते हैं। नीज़ यह हदीस इसी सनद के साथ अनस (ﷺ) से मौकूफ़न भी मर्वी है, और यह हमारे नज़दीक ज़्यादा सहीह है।

3938 - حَدَّثَنَا عَبْدُ الْقُدُّوسِ بْنُ مُحَمَّدٍ الْعَطَّارُ الْبَصْرِيُّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ الْعَبْدِيُّ الْبَصْرِيُّ، حَدَّثَنَا مَهْدِيُّ بْنُ مَيْمُونٍ حَدَّثَنِي غَيْلاَنُ بْنُ جَرِيرٍ، قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يَقُولُ إِنْ لَمْ نَكُنْ مِنَ الأَزْدِ فَلَسْنَا مِنَ النَّاسِ.

3938 - सय्यदना अनस बिन मालिक (ﷺ) फ़रमाते हैं: अगर हम अज़्द से न हों तो हम भले लोगों से नहीं।

सहीह: अस-सिलसिला अज-ज़ईफा:2467.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है।

3939 - حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ زَنْجُوَيْهِ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي، عَنْ مِينَاءَ، مَوْلَى عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ: كُنَّا عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَجَاءَهُ رَجُلٌ، أَحْسَبُهُ مِنْ قَيْسٍ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ الْعَنْ حِمْيَرًا، فَأَعْرَضَ عَنْهُ، ثُمَّ جَاءَهُ مِنْ الشِّقِّ الآخَرِ فَأَعْرَضَ عَنْهُ، ثُمَّ جَاءَهُ مِنَ الشِّقِّ الآخَرِ فَأَعْرَضَ عَنْهُ، ثُمَّ جَاءَهُ مِنَ الشِّقِّ الآخَرِ، فَأَعْرَضَ عَنْهُ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: رَحِمَ اللَّهُ حِمْيَرًا، أَفْوَاهُهُمْ سَلاَمٌ، وَأَيْدِيهِمْ طَعَامٌ، وَهُمْ أَهْلُ أَمْنٍ وَإِيمَانٍ.

3939 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) बयान करते हैं: कि हम नबी(ﷺ) के पास थे कि आप{ﷺ} के पास एक आदमी आया, मेरे ख़याल में वह क़बील-ए-कैस से था। उस ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! हिम्यर कबीले पर लानत कीजिए। आप{ﷺ} ने उस से अपना चेहरा हटा लिया, फिर वह दूसरी जानिब से आया, तो आप ने मुंह फेर लिया, फिर नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, "अल्लाह हिम्यर पर रहम फ़रमाए, उनके मुंह में सलाम और उनके हाथों में खाना है, वह अमनो ईमान वाले हैं।"

मौज़ू:अहमद:2/278.अस-सिलसिला अज-ज़ईफा: 349.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। हम इसे अब्दुर्रज़ाक के तरीक़ से ही जानते हैं और इस मीना से बहुत सी मुन्कर अहादीस मर्वी हैं।

73 - गिफ़ार, असलम, जुहैना और मुजैना के फ़ज़ाइल।

73 بَابٌ فِي غِفَارٍ وَأَسْلَمَ وَجُهَيْنَةَ وَمُزَيْنَةَ

3940 - सय्यदना अबू अय्यूब अंसारी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने फ़रमाया, "अंसार, मुज़ैना, जुहैना, अश्जा, गिफ़ार और बनू अब्दे दार के लोग मेरे दोस्त हैं, उनका अल्लाह के अलावा कोई मौला (दोस्त) नहीं हैं, अल्लाह और उसका रसूल ही उनके दोस्त हैं।"

मुस्लिम:2519. (यहाँ बनी अब्दुल्लाह है) अहमद:5/417.

3940 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مَالِكٍ الأَشْجَعِيُّ، عَنْ مُوسَى بْنِ طَلْحَةَ، عَنْ أَبِي أَيُّوبَ الأَنْصَارِيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: الأَنْصَارُ وَمُزَيْنَةُ وَجُهَيْنَةُ وَغِفَارٌ وَأَشْجَعُ وَمَنْ كَانَ مِنْ بَنِي عَبْدِ الدَّارِ مَوَالِيَّ، لَيْسَ لَهُمْ مَوْلًى دُونَ اللهِ، وَاللَّهُ وَرَسُولُهُ مَوْلاَهُمْ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3941 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने फ़रमाया, "असलम कबीले को अल्लाह सलामत रखे, गिफ़ार कबीले को अल्लाह बख़्शे और उसय्या (कबीले वालों) ने अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी की है।"

बुख़ारी:3514 मुस्लिम:2518.

3941 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: أَسْلَمُ سَالَمَهَا اللَّهُ، وَغِفَارٌ غَفَرَ اللَّهُ لَهَا، وَعُصَيَّةُ عَصَتِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

74 - सक़ीफ़ और बनू हनीफ़ा का बयान।

74 بَابٌ فِي ثَقِيفٍ وَبَنِي حَنِيفَةَ

3942 - सय्यदना जाबिर (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि लोगों ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! सक़ीफ़ कबीले के लोगों के तीरों ने हमें छलनी

3942 - حَدَّثَنَا أَبُو سَلَمَةَ يَحْيَى بْنُ خَلَفٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الوَهَّابِ الثَّقَفِيُّ، عَنْ عَبْدِ

اللهِ بْنِ عُثْمَانَ بْنِ خُثَيْمٍ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ أَحْرَقَتْنَا نِبَالُ ثَقِيفٍ فَادْعُ اللَّهَ عَلَيْهِمْ. قَالَ: اللَّهُمَّ اهْدِ ثَقِيفًا.

कर दिया है उन पर बद्दुआ कीजिए। तो आप ने दुआ किया, "ऐ अल्लाह सक़ीफ़ वालों को हिदायत फ़रमा।"

ज़ईफ़:अहमद:3/343. इब्ने अबी शैबा:12/201. हियातुर्रूवात:5941.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है।

3943 - حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ أَخْزَمَ الطَّائِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ القَاهِرِ بْنُ شُعَيْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنِ الحَسَنِ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ، قَالَ: مَاتَ النَّبِيُّ ﷺ وَهُوَ يَكْرَهُ ثَلَاثَةَ أَحْيَاءٍ ثَقِيفًا وَبَنِي حَنِيفَةَ وَبَنِي أُمَيَّةَ.

3943 - सय्यदना इमरान बिन हुसैन (رضي الله عنه) बयान करते हैं कि नबी(ﷺ) ने वफ़ात पाई, तो आप तीन क़बाइल को नापसंद करते थे: सक़ीफ़,बनू हनीफ़ा और बनू उमय्या को।

ज़ईफुल इस्नाद:तबरानी फ़िल कबीर: 18/379.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। हम इसे सिर्फ इसी सनद से जानते हैं।

3944 - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا الفَضْلُ بْنُ مُوسَى، عَنْ شَرِيكٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُصْمٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: فِي ثَقِيفٍ كَذَّابٌ وَمُبِيرٌ.

3944 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने फ़रमाया, "सक़ीफ़ में एक कज्जाब और एक हलाकू (क़त्ले आम करने वाला) होगा।"

सहीह: तखरीज के लिए देखिए हदीस नम्बर:2220.

वज़ाहत: हमें अब्दुर्रहमान बिन वाकिद अबू मुस्लिम ने भी शरीक से इसी सनद के साथ ऐसे ही हदीस बयान की है और अब्दुल्लाह बिन उस्म की कुनियत अबू अलवान थी और यह कूफा के रहने वाले थे।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस ग़रीब है। हम इसे शरीक के तरीक़ से ही जानते हैं और शरीक कहते हैं: अब्दुल्लाह बिन उस्म और इस्राईल उन्हीं (यानी इब्ने उमर رضي الله عنه) से रिवायत करते हैं और अब्दुल्लाह बिन उस्मा नाम भी ज़िक्र करते हैं।

नीज़ इस बारे में अस्मा बिन्ते अबी बक्र (رضي الله عنها) से भी हदीस मर्वी है।

3945 - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَيُّوبُ، عَنْ

3945 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि एक आराबी ने रसूलुल्लाह(ﷺ) को एक

سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ أَعْرَابِيًّا أَهْدَى لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَكْرَةً فَعَوَّضَهُ مِنْهَا سِتَّ بَكَرَاتٍ فَتَسَخَّطَهَا، فَبَلَغَ ذَلِكَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَحَمِدَ اللَّهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: إِنَّ فُلَانًا أَهْدَى إِلَيَّ نَاقَةً فَعَوَّضْتُهُ مِنْهَا سِتَّ بَكَرَاتٍ فَظَلَّ سَاخِطًا، لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ لاَ أَقْبَلَ هَدِيَّةً إِلاَّ مِنْ قُرَشِيٍّ أَوْ أَنْصَارِيٍّ أَوْ ثَقَفِيٍّ أَوْ دَوْسِيٍّ.

जवान ऊंटनी हदिया के तौर पर दी, तो आप(ﷺ) ने उसके एवज़ में उसे छ ऊंटनियाँ दीं, वह फिर भी ख़फ़ा हो गया। चुनांचे नबी(ﷺ) को यह बात पहुंची, तो आप(ﷺ) ने अल्लाह की हम्दो सना करने के बाद फ़रमाया "फुलां शख़्स ने एक ऊंटनी मुझे बतौर हदिया भेजी थी, तो मैंने उसके एवज़ में उसे छ ऊंटनियाँ भेजीं, लेकिन वह फिर भी नाराज़ हो गया (अब) मैंने इरादा किया है कि मैं सिर्फ कुरैशी, अंसारी, सक़फ़ी या दौसी का तोहफ़ा ही कुबूल करूंगा।"

सहीह: अबू दाऊद:3537. हियातुरूवात:2965. निसाई:2790. अहमद:2/292. अस-सिलसिला अस-सहीहा:1684.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस हदीस में उससे ज़्यादा कलाम है और यह हदीस कई तुरूक़ से अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से मर्वी है, और यज़ीद बिन हारून, अय्यूब अबू अला से रिवायत करते है और यह अय्यूब बिन मिस्कीन या अबू मिस्कीन हैं, और शायद यह हदीस जो अबू अय्यूब के ज़रिए सईद मक्बुरी से मर्वी है वह अय्यूब अबू अला ही हों जो कि अय्यूब बिन मिस्कीन या अबू मिस्कीन हैं।

3946 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ خَالِدٍ الحِمْصِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْحَاقَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: أَهْدَى رَجُلٌ مِنْ بَنِي فَزَارَةَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ نَاقَةً مِنْ إِبِلِهِ الَّتِي كَانُوا أَصَابُوا بِالغَابَةِ فَعَوَّضَهُ مِنْهَا بَعْضَ العِوَضِ فَتَسَخَّطَ، فَسَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ عَلَى الْمِنْبَرِ يَقُولُ: إِنَّ رِجَالاً مِنَ العَرَبِ يُهْدِي أَحَدُهُمُ الهَدِيَّةَ

3946 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि बनू फजारा के एक आदमी ने अपने उन ऊंटनियों में से एक ऊंटनी नबी(ﷺ) को भेजी जो उनको गाबा से मिले थे, आप(ﷺ) ने उसका बदला भी दे दिया, वह फिर भी ख़फ़ा हो गया। फिर मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को इस मिम्बर पर इर्शाद फ़रमाते हुए सुना: "अरब के लोगों में से कोई शख़्स मुझे तोहफ़ा भेजता है, मैं अपनी हैसियत के मुताबिक उसे बदला भी देता हूँ, फिर उसे यह बात नागवार लगती है तो वह मुझ पर ख़फ़ा हो जाता है, अल्लाह की क़सम! आज के बाद मैं अरब में से सिर्फ कुरैशी,

فَأُعَوِّضُهُ مِنْهَا بِقَدْرِ مَا عِنْدِي ثُمَّ يَتَسَخَّطُهُ فَيَظَلُّ يَتَسَخَّطُ فِيهِ عَلَيَّ، وَايْمُ اللهِ لاَ أَقْبَلُ بَعْدَ مَقَامِي هَذَا مِنْ رَجُلٍ مِنَ العَرَبِ هَدِيَّةً إِلاَّ مِنْ قُرَشِيٍّ أَوْ أَنْصَارِيٍّ أَوْ ثَقَفِيٍّ أَوْ دَوْسِيٍّ.

अंसारी, सक्फ़ी या दौसी का ही तोहफ़ा कुबूल करूंगा।

सहीह:अबू दाऊद:3537. अबू याला:6579. अस-सिलसिला अस-सहीहा:1684.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है, और यज़ीद बिन हारून की अय्यूब से बयानकर्दा रिवायत ज़्यादा सहीह है।

3947 - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ يَعْقُوبَ وَغَيْرُ وَاحِدٍ، قَالُوا: حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ مَلاَذٍ يُحَدِّثُ، عَنْ نُمَيْرِ بْنِ أَوْسٍ، عَنْ مَالِكِ بْنِ مَسْرُوحٍ، عَنْ عَامِرِ بْنِ أَبِي عَامِرٍ الأَشْعَرِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: نِعْمَ الحَيُّ الأَسْدُ وَالأَشْعَرُونَ، لاَ يَفِرُّونَ فِي القِتَالِ، وَلاَ يَغُلُّونَ، هُمْ مِنِّي وَأَنَا مِنْهُمْ. قَالَ: فَحَدَّثْتُ بِذَلِكَ مُعَاوِيَةَ، فَقَالَ: لَيْسَ هَكَذَا قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ، قَالَ: هُمْ مِنِّي وَإِلَيَّ، فَقُلْتُ: لَيْسَ هَكَذَا حَدَّثَنِي أَبِي، وَلَكِنَّهُ حَدَّثَنِي قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: هُمْ مِنِّي وَأَنَا مِنْهُمْ. قَالَ: فَأَنْتَ أَعْلَمُ بِحَدِيثِ أَبِيكَ.

3947 - अबू आमिर अशअरी (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "असद और कबील-ए-अशअर के लोग बहुत अच्छे हैं, यह न किताल से भागते हैं और न ही चोरी करते हैं, यह मुझ से हैं और मैं उनसे हूँ।" रावी कहते हैं: मैंने मुआविया को यह हदीस बयान की तो उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह(ﷺ) ने इस तरह नहीं फ़रमाया, बल्कि आप(ﷺ) ने यह फ़रमाया था: "यह मुझ से और मेरी तरफ़ हैं।" मैंने कहा: मेरे वालिद ने मुझे इस तरह बयान किया बल्कि उन्होंने बयान किया था कि मैंने रसूलुल्लाह(ﷺ) को सुना आप(ﷺ) फ़रमा रहे थे: "वह मुझ से हैं और मैं उन से हूँ" तो मुआविया ने कहा: तुम अपने बाप की हदीस को बेहतर जानते हो।

ज़ईफ़:अहमद:4/129. हाकिम:2/138. अबू याला:7386. अस-सिलसिला अज-ज़ईफा:4692.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे वहब बिन जरीर के तरीक़ से ही जानते हैं, और कहा जाता है कि इस से मुराद कबीले अज़्द ही है।

3948 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا

3948 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया,

عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: أَسْلَمُ سَالَمَهَا اللَّهُ، وَغِفَارُ غَفَرَ اللَّهُ لَهَا.

"असलम कबीले को अल्लाह सलामत रखे और कबीले गिफ़ार को अल्लाह बख़्श दे।"

सहीह: तखरीज के लिए देखिए हदीस नम्बर:3941.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: इस बारे में अबू ज़र,अबू बर्जा असलमी, बुरैदा और अबू हुरैरा (ﷺ) से भी हदीस मर्वी है और यह हदीस हसन सहीह है।

हमें अली बिन हुज्र ने इस्माईल बिन जाफ़र से बवास्ता अब्दुल्लाह बिन दीनार, अब्दुल्लाह बिन उमर (ﷺ) से हदीस बयान की है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "असलम को अल्लाह ने महफ़ूज़ कर दिया, गिफ़ार को अल्लाह ने बख़्श दिया और उसय्या ने अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी की है।" (साबिका हदीस देखिये)

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस भी हसन सहीह है।

3949 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُؤَمَّلٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، نَحْوَ حَدِيثِ شُعْبَةَ، وَزَادَ فِيهِ: وَعُصَيَّةُ عَصَتِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ.

3949 - हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने मोअम्मल से उन्हें सुफ़ियान ने अब्दुल्लाह बिन दीनार से शोबा की तरह हदीस बयान की है लेकिन इसमें यह इजाफा है कि "उसय्या ने अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी की है।"

सहीह: तखरीज के लिए देखिए हदीस नम्बर:3941.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3950 - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْمُغِيرَةُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لَغِفَارُ وَأَسْلَمُ وَمُزَيْنَةُ وَمَنْ كَانَ مِنْ جُهَيْنَةَ،، أَوْ قَالَ جُهَيْنَةُ، وَمَنْ كَانَ مِنْ مُزَيْنَةَ، خَيْرٌ عِنْدَ اللهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ أَسَدٍ وَطَيِّئٍ وَغَطَفَانَ:

3950 - सय्यदना अबू हुरैरा (ﷺ) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है! गिफ़ार, असलम, मुज़ैना,जुहैना के लोग या जुहैना और मुज़ैना में रहने वाले क़यामत के दिन अल्लाह के नज़दीक असद, तै और ग़तफ़ान से बेहतर होंगे।"

मुस्लिम:2521. अहमद:2/369.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3951 - सय्यदना इमरान बिन हुसैन (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि बनू तमीम के कुछ लोग नबी(ﷺ) के पास आए तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "ऐ बनू तमीम खुश हो जाओ।" उन्होंने कहा: आप(ﷺ) ने हमें ख़ुशख़बरी दी है, तो हमें कुछ अतिया भी दें, रावी कहते हैं: अल्लाह के रसूल{ﷺ} के चेहरे मुबारक का रंग बदल गया, फिर यमन के लोग आए तो आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "तुम ख़ुशख़बरी को कुबूल कर लो जबकि बनू तमीम ने उसे कुबूल नहीं किया।" उन्होंने कहा: हम ने कुबूल कर ली।

बुख़ारी:3190. अहमद:4/426.

3951 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ جَامِعِ بْنِ شَدَّادٍ، عَنْ صَفْوَانَ بْنِ مُحْرِزٍ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ، قَالَ: جَاءَ نَفَرٌ مِنْ بَنِي تَمِيمٍ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ ، فَقَالَ: أَبْشِرُوا يَا بَنِي تَمِيمٍ. قَالُوا: بَشَّرْتَنَا فَأَعْطِنَا، قَالَ: فَتَغَيَّرَ وَجْهُ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَجَاءَ نَفَرٌ مِنْ أَهْلِ الْيَمَنِ فَقَالَ: اقْبَلُوا الْبُشْرَى فَلَمْ يَقْبَلْهَا بَنُو تَمِيمٍ، قَالُوا: قَدْ قَبِلْنَا.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

3952 - सय्यदना अबू बक्रा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "असलम, गिफ़ार और मुजैना के क़बाइल तमीम, असद, ग़तफ़ान और बनू आमिर के क़बाइल से बेहतर हैं, आप(ﷺ) ने बलंद आवाज़ से कहा, तो लोग कहने लगे: वह तो भलाई से महरूम हो गए और नुक़सान में पड़ गए आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "वह उन से बेहतर हैं।"

बुख़ारी:3515. मुस्लिम:2522.

3952 - حَدَّثَنَا مَحْمُودُ بْنُ غَيْلَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرَةَ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: أَسْلَمُ وَغِفَارٌ وَمُزَيْنَةُ خَيْرٌ مِنْ تَمِيمٍ وَأَسَدٍ وَغَطَفَانَ وَبَنِي عَامِرِ بْنِ صَعْصَعَةَ. يَمُدُّ بِهَا صَوْتَهُ فَقَالَ الْقَوْمُ: قَدْ خَابُوا وَخَسِرُوا. قَالَ: فَهُمْ خَيْرٌ مِنْهُمْ.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सहीह है।

75 - शाम और यमन की फ़ज़ीलत।

75 بَابٌ فِي فضل الشام واليمن

3953 - حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ آدَمَ ابْنُ ابْنَةِ أَزْهَرَ السَّمَّانِ قَالَ: حَدَّثَنِي جَدِّي أَزْهَرُ السَّمَّانُ، عَنِ ابْنِ عَوْنٍ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي شَامِنَا، اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي يَمَنِنَا. قَالُوا: وَفِي نَجْدِنَا. فَقَالَ: اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي شَامِنَا، وَبَارِكْ لَنَا فِي يَمَنِنَا. قَالُوا: وَفِي نَجْدِنَا. قَالَ: هُنَالِكَ الزَّلَازِلُ وَالْفِتَنُ، وَبِهَا، أَوْ قَالَ: مِنْهَا يَخْرُجُ قَرْنُ الشَّيْطَانِ.

3953 - सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर (رضي الله عنه) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने दुआ की, ''ऐ अल्लाह हमारे लिए हमारे शाम को बा बरकत बना दे, ऐ अल्लाह! हमारे लिए हमारे यमन को बा बरकत बना दे।'' लोगों ने कहा: नज्द को भी। आप(ﷺ) ने फिर दुआ किया, "ऐ अल्लाह! हमारे लिए हमारे शाम में बरकत दे और हमारे लिए हमारे यमन में बरकत दे।" लोगों ने कहा: और हमारे नज्द में भी। आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "वहाँ ज़ल्ज़ले और फित्ने होंगे और वहीं से शैतान का सींग निकलेगा।"

बुख़ारी:7094. मुस्लिम:2905.मुख़्तसर। अहमद:2/90.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस इब्ने औन के तरीक़ से हसन सहीह ग़रीब है। इसी तरह यह हदीस सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर से भी उनके बाप के ज़रिए नबी(ﷺ) से मर्वी है।

3954 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبِي، قَالَ: سَمِعْتُ يَحْيَى بْنَ أَيُّوبَ، يُحَدِّثُ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ شِمَاسَةَ، عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ، قَالَ: كُنَّا عِنْدَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نُؤَلِّفُ الْقُرْآنَ مِنَ الرِّقَاعِ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: طُوبَى لِلشَّامِ، فَقُلْنَا: لأَيٍّ ذَلِكَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: لأَنَّ مَلَائِكَةَ الرَّحْمَنِ بَاسِطَةٌ أَجْنِحَتَهَا عَلَيْهَا.

3954 - सय्यदना ज़ैद बिन साबित (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि हम अल्लाह के रसूल(ﷺ) के पास चमड़े के टुकड़ों से कुरआन जमा कर रहे थे कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "शाम के लिए मुबारक हो।" हम ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! किस वजह से? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "इसलिए कि रहमान के फ़रिश्ते उस पर अपने पर फैलाए हुए हैं।"[1]

सहीह: अहमद:5/184. हाकिम:2/299. इब्ने हिब्बान:114. अस-सिलसिला अस-सहीहा:503.

तौज़ीह: लेकिन अफ़सोस आज यही शाम कत्लगाह बन चुका है और मुसलमानों का क़त्ले आम किया जा रहा है और इसकी वजह शाम में राफिज़ियों की यहूद नवाज़ हुकूमत है लेकिन वह वक़्त दूर नहीं जब महदी व ईसा (عليهما السلام) आदिल हुक्मरां बन कर यहाँ आयेंगे और ज़मीन में अदलो इंसाफ़ का बोल बाला होगा। (इंशा अल्लाह)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन ग़रीब है। हम इसे यहया बिन अय्यूब के तरीक़ से ही जानते हैं।

3955 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ العَقَدِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: لَيَنْتَهِيَنَّ أَقْوَامٌ يَفْتَخِرُونَ بِآبَائِهِمُ الَّذِينَ مَاتُوا إِنَّمَا هُمْ فَحْمُ جَهَنَّمَ، أَوْ لَيَكُونُنَّ أَهْوَنَ عَلَى اللهِ مِنَ الجُعَلِ الَّذِي يُدَهْدِهُ الخِرَاءَ بِأَنْفِهِ، إِنَّ اللَّهَ أَذْهَبَ عَنْكُمْ عُبِّيَّةَ الجَاهِلِيَّةِ وَفَخْرَهَا بِالآبَاءِ، إِنَّمَا هُوَ مُؤْمِنٌ تَقِيٌّ وَفَاجِرٌ شَقِيٌّ، النَّاسُ كُلُّهُمْ بَنُو آدَمَ وَآدَمُ خُلِقَ مِنْ تُرَابٍ.

3955 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत है कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, "क़ौमें अपने मरे हुए आबाओ अज्दाद के साथ फ़ख़्र करने से बाज़ आ जाएं, वह तो सिर्फ जहन्नम के कोयले हैं या वह अल्लाह के नज़दीक[1] उस कीड़े से भी ज़्यादा ज़लील हो जायेंगें जो अपनी नाक के साथ पाखाने[2] को उलटता पलटता है। अल्लाह तआला ने तुम से जाहिलियत की नुहूसत और उसका अपने आबा के साथ फ़ख़्र करना ले गया है, अब या तो कोई तक़्वा वाला मोमिन है या बदबख़्त नाफ़रमान, तमाम लोग आदम के बेटे हैं और आदम को मिट्टी से पैदा किया गया था।"

हसन:अहमद:2/361. बैहक़ी फी सुनन:10/232. सहीहुत्तर्गीब:2922.

तौज़ीह: الجُعَل : भौंरे: काले कीड़े की मानिंद एक कीड़ा जो तर जगहों में पाया जाता है। (देखिये: अल-मोजमुल वसीत:पृ.147)

الخِرَاء : बीट, लीद, पाख़ाना। (देखिये अल-कामूसुल वहीद:पृ.419)

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: इस बारे में इब्ने उमर और इब्ने अब्बास (رضي الله عنهما) से भी हदीस मर्वी है। यह हदीस हसन ग़रीब है।

3956 - حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ مُوسَى بْنِ أَبِي

3956 - सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया,

عَلْقَمَةَ الْفَرْوِيُّ الْمَدَنِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ هِشَامِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: قَدْ أَذْهَبَ اللَّهُ عَنْكُمْ عُبِّيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ وَفَخْرَهَا بِالآبَاءِ، مُؤْمِنٌ تَقِيٌّ، وَفَاجِرٌ شَقِيٌّ، وَالنَّاسُ بَنُو آدَمَ وَآدَمُ مِنْ تُرَابٍ.

"अल्लाह तआला ने तुम से जाहिलियत का तकब्बुर और आबा के फ़ख़्र करना ख़त्म कर दिया है। अब कोई मुत्तक़ी मोमिन है और कोई बदबख़्त फ़ाजिर है, लोग आदम के बेटे हैं और आदम मिट्टी से (पैदा किए गए) थे।"

हसन:अबू दाऊद:5116. बैहक़ी फी सुनन:10/232.

वज़ाहत: इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है, और हमारे नज़दीक पहली हदीस से ज़्यादा सहीह है और सईद मक्बुरी ने अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से सिमा किया था और अपने बाप के ज़रिए अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से बहुत सी अहादीस रिवायत किया है।

नीज़ सुफ़ियान सौरी और दीगर मोहद्दिसीन ने भी इस हदीस को हिशाम बिन साद से बवास्ता सईद मक्बुरी, अबू हुरैरा (رضي الله عنه) के ज़रिए नबी(ﷺ) से अबू आमिर हिशाम से बयानकर्दा हदीस की तरह ही बयान किया है।

(इसकी तक्मील पर) हर तरह की तारीफ़ अल्लाह ही की है मुहम्मद(ﷺ) पर और आप की पाकीज़ा आल पर अल्लाह की रहमतें और उसकी सलामती हो।

मल्हूज़ा (नोट): इमाम तिर्मिज़ी की जामे का इख़्तिताम इस हदीस पर हो चुका है किताबुल इलल अलाहिदा (अलग) से एक किताब है जिसमें रावियों के हालात और जरह व तादील के कुछ अहकाम का बयान है।

ख़ुलासा

- अल्लाह तआला ने अपने हबीब(ﷺ) के लिए आला तरीन खानदानों का इंतेखाब किया।
- रोज़े क़यामत सबसे पहले नबी(ﷺ) उठेंगे।
- नबी(ﷺ) दुनिया की तरफ़ भेजे जाने वाले आख़िरी पैगम्बर और नबी(ﷺ) हैं, आपके बाद क़यामत तक कोई नबी नहीं आयेगा।

- आप(ﷺ) निहायत खूबसूरत थे आपकी खूबसूरती को अल्फ़ाज़ में बयान करना मुम्किन नहीं है।
- नबी(ﷺ) को अल्लाह ने बहुत से मोजिजात अता फ़रमाए जो कि नबी का खास्सा होते हैं।
- नबी(ﷺ) ठहर ठहर कर गुफ़्तगू करते थे ताकि अहले मजलिस समझ सकें।
- नबी(ﷺ) 53 साल मक्का और 10 साल मदीना में रहे आप(ﷺ) की उम्र 63 बरस थी।
- अबू बक्र (رضي الله عنه) इस उम्मत के बेहतरीन शख़्स हैं उन के बाद उमर (رضي الله عنه) का नम्बर आता है।
- अशर-ए-मुबश्शरा में दस सहाबा हैं: अबू बक्र, उमर, उस्मान, अली, तल्हा, ज़ुबैर, साद, सईद, अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और अबू उबैदा बिन जर्राह (رضي الله عنهم)।
- अशर-ए-मुबश्शरा के फ़ज़ाइल व मनाक़िब बहुत हैं जो कि साहिबे किताब ने तफ़्सील से बयान किए हैं।
- हसन व हुसैन (رضي الله عنهما) जन्नती नौजवानों के सरदार होंगे।
- नबी(ﷺ) अपने दोनों नवासों को दुनिया के फूल कहा करते थे।
- सहाब-ए-किराम की तौहीन करने वालों का इस्लाम से कोई ताल्लुक़ नहीं रहता।
- नबी(ﷺ) ज़ैद बिन हारिसा और उसामा बिन ज़ैद से बहुत मोहब्बत किया करते थे।
- अनस बिन मालिक नबी(ﷺ) के खादिमे ख़ास थे।
- सय्यदना अबू हुरैरा (رضي الله عنه) हदीसे रसूल के सब से बड़े हाफ़िज़ थे।
- खालिद बिन वलीद अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार हैं।
- जंगे बद्र और बैअते रिजवान में शरीक होने वाले तमाम सहाबा को अल्लाह ने बख़्श दिया था।
- फ़ातिमा (رضي الله عنها) जन्नती ख़्वातीन की सरदार होंगी।
- नबी(ﷺ) अपनी वफ़ादार और ग़मख़्वार बीवी को सारी ज़िंदगी न भूल पाए।
- इस उम्मत की सबसे बड़ी मोहद्दिसा व फ़क़ीहा सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) हैं।
- सय्यदा आयशा (رضي الله عنها) को फ़रिश्ते भी सलाम कहा करते थे।
- सय्यदा सफ़िय्या (رضي الله عنها) एक नबी की बेटी एक की बहन और इमामुल अंबिया की बीवी थी।
- नबी करीम(ﷺ) की अज़्वाजे मुतह्हरात आला सोच और किरदार की मालिक थीं।
- अंसार ने मुहाजिरीन के साथ बहुत तआवुन किया।
- अल्लाह तआला ने तमाम सहाबा व सहाबियात से राजी होने का वादा किया और उन्हें जन्नत अता फ़रमा दी है।

मज़मून नम्बर 48

كتاب العلل عن رسول الله صلي الله عليه وسلم.

हदीस की इल्लतों का बयान।

तआरुफ़

इस मज़मून में दर्ज ज़ेल बातों पर गुफ्तगू होगी:

- मोहद्दिसीन का इल्म व फ़ज़ल।
- रावियों के हालात।
- ज़ुअफ़ (ज़ईफ़) हदीस के अस्बाब।

मुक़द्दमा

अबू ईसा तिर्मिज़ी (ﷺ) फरमाते हैं, "इस किताब की तमाम अहादीस पर अमल है और दो हदीसों के अलावा बाकी तमाम अहादीस को उलमा ने लिया है।"

(1)- इब्ने अब्बास (ﷺ) की हदीस कि नबी(ﷺ) ने बग़ैर खौफ़ और सफ़र मदीना में ज़ुहर और अस्र और मग़रिब और इशा को जमा किया था।

(2)- नबी(ﷺ) की हदीस कि आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "जब कोई शख़्स शराब पिए तो उसे कोड़े लगाओ अगर चौथी मर्तबा भी पीता है तो उसे क़त्ल कर दो।" और हम ने दोनों अहादीस की इल्लत व वुजूहात (कारण) किताब में बयान कर दी हैं।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फरमाते हैं: इस किताब में हम ने फुक़हा के मज़ाहिब का जो ज़िक्र किया है (उसकी इस्नाद की तफ़्सीलात यह हैं)

सुफ़ियान सौरी के अक़्वाल की सनद

इस किताब में जो अक़्वाल सुफ़ियान सौरी से मर्वी है उनमें से अक्सर वह हैं जो हमें मुहम्मद बिन उस्मान कूफी ने बवास्ता उबैदुल्लाह बिन मूसा सुफ़ियान से बयान किए हैं। कुछ मुझे अबुल फ़ज़ल मक़्तूम बिन अब्बास तिर्मिज़ी ने मुहम्मद बिन यूसुफ़ फ़र्याबी के ज़रिए सुफ़ियान से बयान किए हैं।

इमाम मालिक बिन अनस के अक़्वाल की सनद।

इस किताब में मज़्कूर इमाम मालिक बिन अनस के ज़्यादातर अक़्वाल हमें इस्हाक़ बिन मूसा ने बवास्ता मअन बिन ईसा अल-क़ज़ाज़, इमाम मालिक बिन अनस (رحمہ اللہ) से बयान किए हैं।

जो अक़्वाल रोज़ों के मसाइल में बयान हैं वह हमें अबू मुस्अब मदनी ने इमाम मालिक बिन अनस (رحمہ اللہ) से बयान किए हैं। नीज़ इमाम मालिक (رحمہ اللہ) के बअ़्ज़ अक़्वाल हैं जो हमें मूसा बिन हिज़ाम ने, अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम अल-क़अनबी के ज़रिए इमाम मालिक बिन अनस से बयान किए हैं।

इमाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक के अक़्वाल की सनद

इस किताब में ज़िक्रकर्दा अब्दुल्लाह बिन मुबारक के अक़्वाल वह हैं:

जो हमें अहमद बिन अब्दे आमिली ने इब्ने मुबारक के शार्गिदों के ज़रिये उनसे बयान किये हैं कुछ अबू वहब के जरीये इब्ने मुबारक से मर्वी हैं, कुछ बवास्ता अली बिन हसन, अब्दुल्लाह बिन मुबारक से, कुछ अबदान से बवास्ता सुफ़ियान बिन अब्दुल मलिक, इब्ने मुबारक से, और कुछ हिब्बान बिन मूसा के ज़रिए इब्ने मुबारक (رحمہ اللہ) से मर्वी हैं।

कुछ अक़्वाल वहब बिन ज़मआ से बवास्ता फज़ाला निस्वी, अब्दुल्लाह बिन मुबारक से मर्वी हैं और इन मज़्कूरा लोगों के अलावा कुछ और नाम भी हैं जो इब्ने मुबारक (رحمہ اللہ) से रिवायत करते हैं।

इमाम शाफ़ेई (رحمہ اللہ) के अक़्वाल की इस्नाद।

इस किताब में मज़्कूर इमाम शाफ़ेई के अक्सर अक़्वाल मुझे हसन बिन मुहम्मद ज़ाफ़रानी ने इमाम शाफ़ेई (رحمہ اللہ) से बयान किए हैं और उनमें से वह जो वुज़ू और नमाज़ से मुताल्लिक़ अक़्वाल हैं हमें अबू वलीद मक्की ने शाफ़ेई से बयान किए हैं:

उन में से कुछ अक़्वाल अबू इस्माईल ने, यूसुफ़ बिन यहया कुर्शी बुवैती के ज़रिए इमाम शाफ़ेई (رحمہ اللہ) से बयान किए हैं और उन्होंने कुछ अक़्वाल बवास्ता रबीअ इमाम शाफ़ेई (رحمہ اللہ) से ज़िक्र किए हैं और रबीअ ने हमें इसकी इजाज़त भी दी और हमारी तरफ़ लिख कर भी भेजा था।

इमाम अहमद बिन हंबल और इमाम इस्हाक़ बिन इब्राहीम (رحمہ اللہ) के अक़्वाल की सनद

इस किताब में हज, दियत और हुदूद के अलावा ज़िक्र किए गए। इमाम अहमद बिन हंबल और इमाम इस्हाक़ बिन इब्राहीम (رحمہ اللہ) के बाकी अक़्वाल हमें इस्हाक़ बिन मंसूर ने इमाम अहमद बिन हंबल और इमाम इस्हाक़ बिन इब्राहीम (رحمہ اللہ) से बयान किए हैं।

नीज़ इमाम इस्हाक़ के बअ़्ज़ अक़्वाल हमें मुहम्मद बिन अफ़्लह ने इस्हाक़ से बयान किए हैं जिन्हें हम ने किताब में उसी तरह बयान कर दिया है।

अहादीस और रावियों की इल्लतों के मसादिर

इस किताब में अहादीस, रुवाते हदीस और तारीख की जो इल्लतें मज्कूर हैं उन्हें मैंने (इमाम बुख़ारी की) किताबे तारीख़ से लिया है। इनमें अक्सर ऐसी हैं जिस पर मैंने इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल से मुनाज़रा किया कुछ का मुनाज़रा अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान और अबू ज़ुरआ से किया है लेकिन ज़्यादातर इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (ﷺ) से ही लिया है। अब्दुल्लाह और अबू ज़ुरआ से बहुत कम, और मैं इराक़ खुरासान में इलल, तारीख़, इस्नाद की मारिफ़त में इमाम बुख़ारी से ज़्यादा आलिम किसी को ख़्याल नहीं करता।

फ़ुक़हा के अक़्वाल और अहादीस की इल्लतें हमने इसलिए ज़िक्र की हैं कि लोग हमसे इस बारे में पूछते थे। चुनांचे एक अर्सा तक तो हमने यह काम न किया फिर लोगों के फ़ायदे के पेशे नज़र हमने यह काम किया, क्योंकि हमने बहुत से अइम्मा को देखा कि उन्होंने मेहनते-शाक्क़ा के साथ ऐसी तसानीफ़ की थीं जो पहले नहीं की गई थी।

उनमें हिशाम बिन हस्सान, अब्दुल मलिक बिन अब्दुल अज़ीज़ बिन जुरैज, सईद बिन अबी अरूबा, मालिक बिन अनस, हम्माद बिन सलमा, अब्दुल्लाह बिन मुबारक, यहया बिन ज़करिया बिन अबी ज़ायदा, वकीअ बिन जर्राह, अब्दुर्रहमान बिन महदी (ﷺ) और दीगर अहले इल्म व फ़ज़ल के नाम आते हैं। जिन्होंने किताबें तस्नीफ़ की, तो अल्लाह तआला ने उनमें बहुत नफ़ा रखा और उन मोहद्दिसीन के लिए अल्लाह के यहाँ बहुत बड़ा सवाब है क्योंकि उनकी तसानीफ़ के साथ अल्लाह तआला ने मुसलमानों को नफ़ा दिया और वह फन्ने तस्नीफ में मुक़्तदा हैं।

बअ़ज़ नासमझ लोगों ने मोहद्दिसीन के रावियों पर कलाम की वजह से उन पर ऐब लगाया। जबकि हम ताबेईन में से अइम्मा को देखते हैं कि उन्होंने रावियों पर कलाम किया है। उनमें हसन बसरी और ताऊस ने माबद जुहनी पर कलाम किया है, सईद बिन जुबैर ने तल्क़ बिन हबीब जब कि इब्राहीम नखई और आमिर शअ़बी ने हारिस आवर पर कलाम किया है।

नीज़ अबू अय्यूब सख्तियानी, अब्दुल्लाह बिन औन, सुलेमान तैमी, शोबा बिन हज्जाज, सुफ़ियान सौरी, मालिक बिन अनस, औज़ाई, अब्दुल्लाह बिन मुबारक, यहया बिन सईद क़त्तान, वकीअ बिन जर्राह, अब्दुर्रहमान बिन महदी और दीगर उलमा ने भी रावियों पर कलाम करते हुए उन्हें ज़ईफ़ कहा है।

रावियों और इस्नाद पर हुक्म लगाने का जवाज़।

बेहतर इल्म तो अल्लाह तआला ही के पास है लेकिन हमारे मुताबिक इन अइम्म-ए-किराम ने यह काम मुसलमानों की ख़ैरख्वाही के लिए ही किया है और इनके बारे में यह गुमान नहीं किया जा सकता कि

इन्होंने लोगों पर तअन और गीबत के इरादे से यह काम किया है, हमारे मुताबिक़ इनका इरादा यही था कि वह उन लोगों का ज़ुअफ़ बयान कर दें ताकि उनकी पहचान हो जाए, क्योंकि जिन रावियों को ज़ईफ़ कहा है उनमें कुछ बिद्अती, हदीस में झूट बोलने वाले, कुछ ग़फ़लत से काम लेने वाले और बहुत ज़्यादा गलतियाँ करने वाले थे। तो इन अइम्म-ए-किराम ने चाहा कि दीन का ख़्याल और सबात मद्देनज़र रखते हुए उनके अहवाल बयान कर दें कि दीन में सबूतों की गवाही हुक़ूक़ और अमवाल में गवाही से ज़्यादा हक़दार है।

इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी ने मुहम्मद बिन यहया बिन सईद क़त्तान से उनके वालिद का कौल नक़ल किया है वह कहते हैं: मैंने सुफ़ियान सौरी, शोबा, मालिक बिन अनस और सुफ़ियान बिन उयय्ना से उस आदमी के बारे में सवाल किया जिस पर झूट की तोहमत लगी या उसमें ज़ुअफ़ हो कि मैं ख़ामोश रहूँ या उसे बयान कर दूं? उन्होंने कहा: बयान कर दो।

मुहम्मद बिन राफे नीशापूरी कहते हैं: हमें यहया बिन आदम ने बताया कि अबू बक्र बिन अयाश से लोगों ने कहा: कुछ लोग हदीस बयान करने बैठ जाते हैं और लोग भी उनके पास (सुनने को) बैठ जाते हैं हालांकि वह इस काबिल नहीं होते। तो अबू बक्र बिन अयाश ने कहा: लोगों का तरीक़ा यही है कि जो भी (दर्से हदीस के लिए) बैठता है लोग उसके पास बैठते हैं, और सुन्नत वाला शख़्स जब फौत हो जाता है तो अल्लाह तआला उसका तज़किरा ज़िंदा रखते हैं, लेकिन बिद्अती का तजकिरा नहीं होता। (वह उन से एराज़ करते और उनका तजकिरा नहीं करते थे।)

हमें मुहम्मद बिन अली बिन हसन बिन शकीक़ ने नज़र बिन अब्दुल्लाह असम्म से बवास्ता इस्माईल बिन ज़करिया, आसिम से बयान किया कि इब्ने सीरीन फरमाते हैं: पहले ज़माने में लोग सनद के बारे में नहीं पूछते थे, जब फ़ित्नों ने सर उठाया तो लोग इस्नाद के बारे में पूछने लगे ताकि अहले सुन्नत की रिवायात को लें और अहले बिद्अत की रिवायात को छोड़ दें।

हमें मुहम्मद बिन अली बिन हसन ने अबदान से बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन मुबारक फरमाते हैं: मेरे नज़दीक इस्नाद दीन में दाख़िल हैं, अगर इस्नाद न होती तो जिसका जो दिल चाहता कह देता, अब जिससे यह पूछा जाता है कि तुम्हें किस ने बयान किया? तो वह ख़ामोश रहता है। मुहम्मद बिन अली बिन हसन बयान करते हैं कि हमें हिब्बान बिन मूसा ने बताया कि अब्दुल्लाह बिन मुबारक के पास एक हदीस बयान की गई तो उन्होंने कहा: इस (की मज़बूती) के लिए ईटों के सुतूनों की ज़रुरत है। यानी उन्होंने उसकी सनद को ज़ईफ़ कहा।

हमें अहमद बिन अब्दा बवास्ता वहब बिन ज़मआ, अब्दुल्लाह बिन मुबारक से बयान करते हैं कि उन्होंने हसन बिन उमारा, हसन बिन दीनार, इब्राहीम बिन मुहम्मद असलमी, मुकातिल बिन सुलैमान, उस्मान बर्री, रूह बिन मुसाफिर, अबू शैबा वास्ती, अम्र बिन साबित, अय्यूब बिन खूत, अय्यूब बिन सुवैद,

नस्र बिन तरीफ़ अबू जज़अ, हकम और हबीब की अहादीस को छोड़ दिया था और हकम ने किताबुर्रिकाक में उन्हें एक हदीस बयान की थी लेकिन फिर उन्होंने उसे छोड़ दिया और हबीब को मैं नहीं जानता।

अहमद बिन अब्दा, अबदान से बयान करते हैं कि अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने बक्र बिन ख़ुनैस की अहादीस पढ़ीं फिर आख़िरी उम्र में जब उन पर से गुज़रते तो उनसे एराज़ करते और उनका तजकिरा नहीं करते थे।

अहमद कहते हैं: हमें अबू वहब ने बताया कि लोगों ने अब्दुल्लाह बिन मुबारक के पास एक आदमी का नाम लिया जो हदीस में वहम करता था, तो उन्होंने फ़रमाया, मैं डाका डालूँ यह मेरे उसकी तरफ़ से हदीस बयान करने से बेहतर है।

मूसा बिन हिज़ाम कहते हैं: मैंने यज़ीद बिन हारून से सुना वह कह रहे थे: किसी मोहद्दिस के लिए सुलैमान बिन अम्र नखई कूफी की तरफ़ से हदीस बयान करना हलाल नहीं है। हमें महमूद बिन गैलान बवास्ता अबू यहया हमानी से बयान किया वह फरमाते हैं: मैंने अबू हनीफा को कहते हुए सुना कि मैं जाबिर जोफ़ी से ज़्यादा झूठा और अता बिन अबी रिबाह से ज़्यादा अफ़ज़ल शख़्स किसी को ख़याल नहीं करता मैंने जारूद से सुना, उन्होंने वकीअ को फरमाते हुए सुना कि अगर कूफा में जाबिर जोफ़ी न होता तो कूफा हदीस से खाली होता और अगर हम्माद न होता तो कूफा फ़ुक़हात से खाली होता।

अहमद बिन हसन कहते हैं हम इमाम अहमद बिन हंबल के पास थे कि लोगों ने ज़िक्र किया: किन पर जुमा वाजिब है, तो उनमें से बअ़ज़ ताबेईन के अक़्वाल ज़िक्र किए, तो मैंने कहा: इस बारे में नबी(ﷺ) से एक हदीस भी मर्वी है। उन्होंने पूछा नबी(ﷺ) से? मैंने कहा: जी हाँ, हमें हज्जाज बिन मुसैर ने मुआरिक बिन अब्बाद से उन्होंने अब्दुल्लाह बिन सईद से उनके बाप के ज़रिए अबू हुरैरा (رضي الله عنه) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़र्माया, "जुमा उस शख़्स पर वाजिब है जो रात अपने घर में ठहरे।" कहते हैं अहमद बिन हंबल गुस्से में आ गए और दो मर्तबा कहा: अपने रब से इस्तिग़फ़ार करो।

इमाम अहमद बिन हंबल ने यह इसलिए कहा कि यह हदीस अपनी सनद की कमज़ोरी की वजह से नबी(ﷺ) से साबित नहीं है, इसलिए भी कि वह इसे नबी(ﷺ) से नहीं जानते थे, और हज्जाज बिन नसीर हदीस में ज़ईफ़ है और अब्दुल्लाह बिन सईद को भी यहया बिन सईद ने हदीस में सख़्त ज़ईफ़ कहा है।

पस हर वह हदीस जो मुत्तहम बिल किज़्ब, गफ़लत की वजह से ज़ईफ़ या कसीर खता रावी से मर्वी हो और वह हदीस भी सिर्फ उसी से मर्वी हो तो वह क़ाबिले एहतजाज नहीं है। नीज़ बहुत से अइम्म-ए-हदीस ने ज़ईफ़ रावियों से अहादीस रिवायत की हैं, लेकिन उनके अहवाल लोगों से बयान कर दिए हैं।

इब्राहीम बिन अब्दुल्लाह बिन मुन्ज़िर बाहिली, याला बिन उबैद से बयान करते हैं कि सुफ़ियान

सौरी ने हम से फ़रमाया, कलबी (की रिवायत) से बचो, उनसे कहा गया: आप भी उससे रिवायत करते हैं, तो उन्होंने फ़रमाया, मैं उसकी सच्ची और झूठी रिवायत को जानता हूँ।

मुझे इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी ने बताया कि यहया बिन मईन ने मुझे अफ़्फ़ान से बयान किया कि अबू अवाना कहते हैं: जब हसन बसरी फौत हुए तो मैंने उनके कलम की ख़्वाहिश की, चुनांचे मैंने उसे हसन के शागिर्दों से तलाश करना शुरू किया, फिर मैं उसे अबान बिन अबी अयाश के पास लेकर गया तो उस ने मुझे जो कुछ सुनाया था वह सब हसन बसरी की तरफ़ से था इसलिए मैं अब उसकी तरफ़ से रिवायत करना हलाल नहीं समझता।

हालांकि अबान बिन अबू अयाश से बहुत से अइम्मा ने रिवायत की है, अगरचे उसमें ज़ुअफ, ग़फ़लत और वह सब कुछ था जो अबू अवाना वग़ैरह ने बयान किया है। चुनांचे इस बात से धोके में नहीं आना चाहिए कि सिक़ह् क़िस्म के लोग ऐसे लोगों से रिवायत करते हैं। क्योंकि इब्ने सीरीन फरमाते हैं: कोई आदमी मुझे हदीस बयान करता है तो मैं उसे मुत्तहम नहीं जानता, बल्कि उससे ऊपर वाले रावी को मुत्तहम जानता हूँ।

बहुत से मोहद्दिसीन ने बवास्ता इब्राहीम नखई, अल्क़मा से सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (ﷺ) से रिवायत की है कि नबी(ﷺ) अपने वित्र में रुकू से पहले क़ुनूत करते थे।

जबकि अबान बिन अबू अयाश ने भी इब्राहीम नखई से बवास्ता अल्क़मा, अब्दुल्लाह (ﷺ) से रिवायत की है कि नबी(ﷺ) अपने वित्र में रुकू से पहले क़ुनूत किया करते थे, सुफ़ियान सौरी ने अबान बिन अबू अयाश से इसी तरह रिवायत की है।

बअ़ज़ ने अबान से इसी सनद के साथ ऐसी ही रिवायत की है। इसमें यह इज़ाफ़ा है कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद (ﷺ) फरमाते हैं: मुझे मेरी वालिदा ने बयान किया कि उन्होंने नबी(ﷺ) के यहाँ रात गुज़ारी तो उन्होंने नबी(ﷺ) को देखा आप ने अपने वित्र में रुकू से पहले क़ुनूत किया था।

(इमाम तिर्मिज़ी फरमाते हैं): अबान बिन अबी अयाश गोया कि इबादत व रियाज़त के साथ मुत्तसिफ़ था लेकिन हदीस में इसका यह हाल था। बहुत से लोग हाफ़िज़ होते हैं, बसा औकात एक आदमी नेक भी होता है लेकिन गवाही के काबिल नहीं होता और न ही उसे याद रखता है। पस हर वह शख़्स जो हदीस के मामले में मुत्तहम बिल किज़्ब हो या वह गाफ़िल व कसीरुल ख़ता हो तो मोहद्दिसीन ने इसी बात को पसंद किया है कि उसकी रिवायत को न लिया जाए। क्या आप नहीं देखते कि अब्दुल्लाह बिन मुबारक (ﷺ) ने अहले इल्म की एक कौम से हदीस बयान की, फिर जब उनके मामले का पता चला तो उनसे रिवायत करना छोड़ दिया था। मुझे मूसा बिन हिज़ाम ने बयान किया वह कहते हैं मैंने सालेह बिन

अब्दुल्लाह को फ़रमाते हुए सुना कि हम अबू मुक़ातिल समरकंदी के पास थे तो वह औन बिन अबू शद्दाद से तवील अहादीस बयान करना शुरू हो गया, वह क़िस्सा लुक़मान, सईद बिन जुबैर के क़त्ल का क़िस्सा और उसके मुशाबेह वाक़ियात बयान करने लगा तो उसे मेरे भतीजे अबू मुकातिल ने कहा:ऐ चचा! ऐसा मत कह: हमें औन ने बयान किया कि तूने ऐसी कोई बात नहीं सुनी, उसने कहा: ऐ बच्चे वही अच्छा कलाम है।

हाफ़िज़े की वजह से किसी को ज़ईफ़ कहना।

बअ़ज़ मोहद्दिसीन ने अजिल्ल-ए-उलमा की एक जमाअत के बारे में कलाम करते हुए उनके हाफ़िज़े की वजह से उन्हें ज़ईफ़ कहा है। जबकि दूसरे लोगों ने उनकी अज़मते शान और सच्चाई की वजह से सिक़ह् कहा है अगरचे उन्होंने बअ़ज़ रिवायात में वहम किया है, यहया बिन सईद क़त्तान ने मुहम्मद बिन अम्र के बारे में कलाम की, फिर उनसे रिवायत भी ली है।

हमें अबू बक्र अब्दुल क़ुद्दूस बिन मुहम्मद अत्तार बसरी ने बताया कि अली बिन मदीनी फ़रमाते हैं: मैंने यहया बिन सईद से मुहम्मद बिन अम्र बिन अल्क़मा के बारे में पूछा तो उन्होंने फ़रमाया,तुम दर गुज़र करना चाहते हो या तशद्दुद? मैंने कहा। तशद्दुद उन्होंने फ़रमाया,यह तुम्हारे मतलब के नहीं हैं। हालांकि कहा करते थे कि हमारे शुयूख अबू सलमा (मुहम्मद बिन अम्र) और यहया बिन अब्दुर्रहमान बिन हातिब हैं।

यहया कहते हैं: मैंने इमाम मालिक बिन अनस (رحمه الله) से मुहम्मद बिन अम्र के बारे में पूछा, तो उन्होंने भी उनके बारे में मुझ से मिलती जुलती बात कही, अली कहते हैं: यहया का कहना है कि मुहम्मद बिन अम्र, सुहैल बिन अबी सालेह से बलंद मर्तबा के हैं, और मेरे नज़दीक यह अब्दुर्रहमान बिन हर्मला से ऊपर हैं।

अली कहते हैं मैंने यहया से कहा आप ने अब्दुर्रहमान बिन हर्मला में क्या देखा? उन्होंने कहा अगर मैं उन्हें तल्कीन करना चाहूँ तो कर सकता हूँ, मैंने कहा: क्या उन्हें तल्कीन की जाती है? उन्होंने कहा: हाँ, अली कहते हैं: यहया ने शरीक, अबू बक्र बिन अयाश, रबीअ बिन सबीह और मुबारक बिन फ़ज़ाला से रिवायत नहीं की।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: गो कि यहया बिन सईद क़त्तान ने उन हज़रात से रिवायत छोड़ी है, उन्होंने इसलिए उनकी रिवायत को नहीं छोड़ा कि यह हज़रात मुत्तहम बिल किज़्ब थे बल्कि उनके हाफ़िज़े की वजह से उन्हें छोड़ा है।

नीज़ यहया बिन सईद से मर्वी है कि वह जब ऐसा शख़्स देखते जो अपने हाफ़िज़े की वजह से एक मर्तबा कैसे और दूसरी मर्तबा किसी और तरीक़े से रिवायत करता और एक रिवायत पर साबित न रहता, तो वह उसे मतरूक कर देते थे जबकि जिन हज़रात को यहया बिन सईद क़त्तान ने तर्क किया है उनसे

अब्दुल्लाह बिन मुबारक, वकीअ बिन जर्राह, अब्दुर्रहमान बिन महदी (رحمہ اللہ) और दीगर अइम्म-ए-हदीस ने रिवायत की है।

इसी तरह बअ़ज़ मोहद्दिसीन ने सुहैल बिन अबी सालेह, मुहम्मद बिन इस्हाक़, हम्माद बिन सलमा, मुहम्मद बिन अजलान (رحمہ اللہ) और उन जैसे दीगर अइम्म-ए-किराम पर कलाम की है और यह कलाम सिर्फ बअ़ज़ रिवायात में हाफ़िज़े की वजह से हुई है जबकि अइम्म-ए-हदीस ने उनसे अहादीस बयान की है।

हमें हसन बिन अली हलवानी ने अली बिन मदीनी की तरफ़ से बयान किया कि सुफ़ियान बिन उयय्ना फ़रमाते हैं: हम सुहैल बिन अबी सालेह को हदीस में सब्त (पुख्ता) शुमार करते हैं।

हमें इब्ने अबी उमर ने बताया कि सुफ़ियान बिन उयय्ना फ़रमाते हैं: मुहम्मद बिन अजलान सिक़ह् और हदीस में मामून हैं।

हमारे इल्म के मुताबिक़ यहया बिन सईद अल-क़त्तान ने मुहम्मद बिन अजलान की सईद मक्बुरी से ली हुई रिवायत पर ही कलाम की है। हमें अबू बक्र ने अली बिन अब्दुल्लाह की तरफ़ से बताया कि यहया बिन सईद, मुहम्मद बिन अजलान का कौल नक़ल करते हैं कि उन्होंने कहा: सईद मक्बुरी की रिवायात बअ़ज़ बवास्ता सईद, अबू हुरैरा (رضی اللہ عنہ) से हैं और बअ़ज़ अहादीस सईद ने एक मज्हूल आदमी के ज़रिए अबू हुरैरा (رضی اللہ عنہ) से बयान की हैं वह मुझ पर गडमड हो गई, तो मैंने उनको बवास्ता सईद ही अबू हुरैरा (رضی اللہ عنہ) से रिवायत कर दिया, हमारे मुताबिक सिर्फ यही वजह से ही यहया बिन सईद अल-क़त्तान ने मुहम्मद बिन अजलान पर कलाम किया है और यहया ने इब्ने अजलान से बहुत ज़्यादा रिवायत किया है।

इसी तरह इब्ने अबी लैला पर कलाम करने वालों ने उनके हाफ़िज़े की वजह से उन पर कलाम किया है। अली कहते हैं कि यहया बिन सईद ने फ़रमाया, शोबा ने इब्ने अबी लैला से उनके भाई ईसा के ज़रिए अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला से बवास्ता अबू अय्यूब (رضی اللہ عنہ) नबी(ﷺ) से छींक के बारे में रिवायत की है।

यहया कहते हैं: फिर मैं इब्ने अबी लैला से मिला, तो उन्होंने हमें अपने भाई ईसा से बवास्ता अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला, अली (رضی اللہ عنہ) से नबी(ﷺ) की यही हदीस बयान की है।

इमाम तिर्मिज़ी कहते हैं: इब्ने अबी लैला से ऐसा बहुत सी रिवायात में मर्वी है, वह एक मर्तबा कैसे और दूसरी मर्तबा और तरीक़े पर बयान करते, इस्नाद को बदल देते थे और यह काम उनसे उनके हाफ़िज़े की वजह से होता था। उसकी वजह यह है कि पिछले बहुत से उलमा लिखते नहीं थे और जो उनमें से लिखता था वह सिमा के बाद ही लिखता था।

मैंने अहमद बिन हसन से सुना वह बयान कर रहे थे कि इमाम अहमद बिन हंबल फ़रमाते हैं: इब्ने अबी लैला की रिवायत से दलील नहीं ली जा सकती।

ऐसे ही जिन उलमा ने मुजालिद बिन सईद, अब्दुल्लाह बिन लहीया और दीगर लोगों पर कलाम की है यह भी उनके हाफ़िज़े की कमज़ोरी और कस्रते ख़ता की वजह से ही है जबकि उनसे बहुत से अइम्मा ने रिवायत की है। चुनांचे जब उनमें से कोई रावी किसी हदीस की रिवायत में अकेला रह जाए उस पर मुताबअत भी न हो तो उसे क़ाबिले हुज्जत नहीं समझा जाता, जैसा कि इमाम अहमद बिन हंबल फ़रमाते हैं: इब्ने अबी लैला की रिवायत दलील नहीं बन सकती, इससे उनकी मुराद यही है कि जब वह किसी रिवायत में अकेले हों। और सबसे ज़्यादा ज़ुअफ़ (कमज़ोरी) रिवायत में उस वक़्त होता है जब रावी सनद भूल जाए, सनद में कमी या ज़्यादती कर दे, सनद को तब्दील कर दे या ऐसी बात बयान कर दे जिससे मफहूम बदल जाता है।

रिवायत बिल माना।

जो शख़्स सनद को कायम रखे और उसे याद भी हो लेकिन उसके अल्फ़ाज़ बदल दे तो जब तक उसके माना में फ़र्क ना आए तो मोहद्दिसीन के नज़दीक यह इसमें वुस्अत है।

हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने उन्हें अब्दुर्रहमान बिन महदी ने उन्हें मुआविया बिन सालेह ने बवास्ता अला बिन हारिस, मक्हूल से रिवायत की है कि वासिला बिन अस्क़ा (ﷺ) फ़रमाते हैं: जब हम तुम्हें मफ़हूम बयान कर दें तो वह काफी है।

हमें यहया बिन मूसा बयान करते हैं कि हमें अब्दुर्रज्जाक ने मामर से बवास्ता अय्यूब, मुहम्मद बिन सीरीन (ﷺ) से बयान किया है वह कहते हैं: मैं दस आदमियों से हदीस सुनता था जिनके अल्फ़ाज़ मुख़्तलिफ़ होते थे लेकिन मफ़हूम एक ही होता था।

हमें अहमद बिन मुनीअ ने बवास्ता मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अंसारी, इब्ने औन से बयान किया है कि इब्राहीम नखई, हसन बसरी और शअबी (ﷺ) मफ़्हूम के साथ हदीस रिवायत करते थे, जबकि क़ासिम बिन मुहम्मद, मुहम्मद बिन सीरीन और रिजा बिन हैवा (ﷺ) पहले हुरूफ़ पर ही हदीस का इआदा किया करते थे।

हमें अली बिन ख़ुशरम ने हफ्स बिन गियास से बयान किया कि आसिम अहवल कहते हैं: मैंने अबू उस्मान नहदी से कहा: आप हमें एक हदीस बयान करते हैं, फिर दूसरी मर्तबा और अल्फ़ाज़ से बयान करते हैं, उन्होंने फ़रमाया, तुम पहली मर्तबा वाले सिमा को ही लाजिम रखो।

हमें जारूद ने बवास्ता वकीअ, रबीअ बिन सबीह से बयान किया है कि हसन बसरी (ﷺ) फ़रमाते हैं: जब तुम्हें मफ़हूम मिल जाए तो वह तुम्हें काफी है।

हमें अली बिन हुज्र ने बवास्ता अब्दुल्लाह बिन मुबारक, सैफ बिन सुलैमान से बयान किया है कि मुजाहिद फ़रमाते हैं: अगर चाहो तो हदीस के अल्फ़ाज़ में कमी कर सकते हो लेकिन इसमें इज़ाफ़ा न करो।

हमें अबू अम्मार हुसैन बिन हुरैस ने बवास्ता ज़ैद बिन हुबाब एक आदमी से बयान किया कि सुफ़ियान सौरी ने हमारे पास आकर कहा: अगर मैं तुम लोगो से यह कहूं कि मैं तुम्हें इस तरह हदीस बयान करता हूँ जैसे मैंने सुनी होती है तो तुम मुझे सच्चा न समझना वह तो मफ़्हूम होता है।

हमें हुसैन बिन हुरैस ने बताया कि मैंने वकीअ से सुना वह कह रहे थे: अगर रिवायत बिल माना जायज़ न होती तो लोग तबाह हो जाते।

हिफ़्ज़ में उलमा की एक दूसरे पर फ़ज़ीलत।

अहले इल्म की हिफ़्ज़ो इत्कान और तसब्बुत फ़िल हदीस में एक दूसरे पर फ़ज़ीलत सिमा की वजह से होती है, गो कि ज़्यादातर अइम्म-ए-हदीस अपने हाफ़िज़े के बावजूद ख़ता और गलती से न बच सके।

हमें मुहम्मद बिन हुमैद अर्राज़ी ने बवास्ता जरीर, उमारा बिन क़ाक़ा से बयान किया कि इब्राहीम नखई (رحمه الله) ने मुझ से कहा: जब तुम मुझे हदीस बयान करो तो अबू ज़ुर्आ के ज़रिए अम्र बिन जरीर से बयान किया करो क्योंकि उन्होंने मुझे एक मर्तबा हदीस बयान की फिर कई साल बाद मैंने उनसे दोबारा पूछी तो उन्होंने एक भी हर्फ़ कम नहीं किया।

अबू हफ्स अम्र बिन अली बवास्ता यहया बिन सईद अल-क़त्तान, सुफ़ियान से बयान करते हैं कि मंसूर कहते हैं: मैंने इब्राहीम से कहा: क्या वजह है कि सालिम बिन अबी जाद की हदीस आपसे ज़्यादा मुकम्मल होती है? उन्होंने कहा: इसलिए कि वह लिखते थे।

हमें अब्दुल जब्बार बिन अला बिन अब्दुल जब्बार ने सुफ़ियान से बयान किया कि अब्दुल मलिक बिन उमैर कहते हैं: मैं कोई हदीस बयान करता हूँ तो मैं उससे एक भी हर्फ़ नहीं छोड़ता।

हमें हुसैन बिन महदी अल-बसरी ने बवास्ता अब्दुर्रज्जाक मामर से बयान किया कि क़तादा फ़रमाते हैं: जब भी मेरे कानों ने कोई बात सुनी तो मेरे दिल ने उसे महफ़ूज़ कर लिया।

हमें सईद बिन अब्दुर्रहमान मख्ज़ूमी ने सुफ़ियान बिन उयय्ना (رحمه الله) से बयान किया है कि अम्र बिन दीनार (رحمه الله) ने फ़रमाया, मैंने ज़ोहरी से ज़्यादा बेहतर हदीस बयान करने वाला नहीं देखा।

हमें इब्राहीम बिन सईद अल-जौहरी ने सुफ़ियान बिन उयय्ना से बयान किया कि अय्यूब सख्तियानी (رحمه الله) फ़रमाते हैं: ज़ोहरी के बाद अहले मदीना की अहादीस को यहया बिन अबी कसीर (رحمه الله) से ज़्यादा याद रखने वाला मैंने कोई नहीं देखा।

हमें मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (رحمه الله) ने सुलैमान बिन हर्ब से बयान किया कि हम्माद बिन ज़ैद कहते हैं: इब्ने औन कोई हदीस बयान करते फिर जब मैं उन्हें उसके मुख़ालिफ़ अय्यूब की तरफ़ से कोई हदीस बयान करता, तो वह अपनी हदीस को छोड़ देते, मैं कहता आपने उनसे सुना है "तो वह फ़रमाते, मुहम्मद बिन सीरीन (رحمه الله) हम से ज़्यादा जानने वाले हैं।

हमें अबू बक्र ने अली बिन अब्दुल्लाह के बारे में बयान किया उन्होंने यहया बिन सईद से कहा: हिशाम दस्तवाई और मिस्अर में से कौन ज़्यादा पुख़्ता है? उन्होंने फ़रमाया, मैं मिस्अर के मिस्ल किसी को नहीं देखता और मिस्अर लोगों में सबसे ज़्यादा सब्त वाला था। हमें अबू बक्र अब्दुल क़ुद्दूस बिन मुहम्मद और अबुल वलीद ने बयान किया कि हम्माद बिन ज़ैद फ़रमाते हैं: शोबा जिस चीज़ में मेरी मुख़ालिफ़त करे मैं उसे छोड़ देता हूँ।

अबू बक्र और अबुल वलीद कहते हैं: हम्माद बिन सलमा ने फ़रमाया, अगर तुम हदीस को हासिल करना चाहते हो तो शोबा का दामन थाम लो।

हमें अब्द बिन हुमैद ने अबू दाऊद से बयान किया कि शोबा कहते हैं: जिससे मैंने एक हदीस रिवायत की है उसके पास मैं एक से ज़्यादा मर्तबा गया हूँ, जिससे मैंने दस आहादीस रिवायत कीं हैं उसके पास दस से ज़्यादा दफ़ा गया हूँ, जिससे मैंने पच्चास अहादीस रिवायत की हैं उसके पास पच्चास मर्तबा से भी ज़्यादा गया हूँ और जिससे मैंने सौ हदीसें रिवायत कीं हैं उसके पास मैं सौ से ज़्यादा मर्तबा गया हूँ, मगर हय्यान अल-बारिक़ी से मैंने कुछ अहादीस सुनी फिर जब दोबारा मैं उनके पास गया तो उनका इन्तिकाल हो चुका था।

हमें मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी ने बवास्ता अब्दुल्लाह बिन अबू अस्वद, इब्ने महदी से बयान किया कि सुफ़ियान फ़रमाते हैं शोबा हदीस में मोमिनों के अमीर हैं।

हमें अबू बक्र ने अली बिन अब्दुल्लाह से रिवायत किया कि यहया बिन सईद फ़रमाते हैं मुझे शोबा से ज़्यादा महबूब और कोई नहीं है और मेरे नज़दीक उनके बराबर भी कोई नहीं है लेकिन जब सुफ़ियान उनकी मुख़ालिफ़त करें तो मैं सुफ़ियान के कौल को लेता हूँ।

अली कहते हैं: मैंने यहया से पूछा, लम्बी अहादीस को इन दोनों में से कौन ज़्यादा याद रखने वाला था, सुफ़ियान या शोबा? उन्होंने कहा, शोबा (رحمه الله) इसमें ज़्यादा कवी थे। यहया बिन सईद (رحمه الله) कहते हैं: शोबा रावियों को ज़्यादा जानते थे कि फुलां ने फुलां से रिवायत की है जबकि सूफ़ियान अबवाब, (यानी मसाइल) में माहिर थे।

हमें अबू अम्मार हुसैन बिन हुरैस ने वकीअ से बयान किया कि शोबा कहते हैं: सुफ़ियान का हाफ़िज़ा मुझसे ज़्यादा है सुफ़ियान ने मुझे किसी मोहद्दिस की तरफ़ से कोई हदीस बयान की फिर मैंने उस मोहद्दिस से ख़ुद पूछा तो मैंने उस हदीस को वैसे ही पाया।

इस्हाक़ बिन मूसा अंसारी कहते है: मैंने मअन बिन ईसा को यह कहते हुए सुना कि इमाम मालिक बिन अनस (رحمہ اللہ) हदीसे रसूलुल्लाह में या, ता और ऐसे दीगर हुरूफ़ में भी मुतशद्दिद थे।

हमें अबू मूसा ने क़ाज़िये मदीना इब्राहीम बिन अब्दुल्लाह बिन मरियम अल-अंसारी से बयान किया। वह कहते हैं कि इमाम मालिक बिन अनस अबू हाज़िम के पास से गुज़रे तो वह बैठे (हदीस बयान कर रहे) थे। लेकिन इमाम साहब गुज़र गए उनसे सबब पूछा गया तो वह कहने लगे: मुझे बैठने के लिए कोई जगह नज़र नहीं आई और खड़े हो कर हदीसे रसूल को अख़्ज़ करना मुझे अच्छा नहीं लगा।

हमें अबू बक्र ने अली बिन अब्दुल्लाह से बयान किया कि यहया बिन सईद कहते हैं: इमाम मालिक की सईद बिन मुसय्यब से रिवायतकर्दा हदीस मुझे सुफ़ियान सौरी की इब्राहीम नखई से बयानकर्दा हदीस से ज़्यादा पसंद है। यहया फ़रमाते हैं: लोगों में इमाम मालिक बिन अनस से ज़्यादा सहीह हदीस बयान करने वाला कोई दूसरा नहीं है, और इमाम मालिक हदीस में इमाम थे।

मैंने अहमद बिन हसन से सुना वह कहते थे कि इमाम अहमद बिन हंबल (رحمہ اللہ) फ़रमा रहे थे: मैंने भी अपनी इन आँखों से यहया बिन सईद अल-क़त्तान जैसा नहीं देखा और इमाम अहमद बिन हंबल (رحمہ اللہ) से वकीअ और अब्दुर्रहमान बिन महदी (رحمہ اللہ) के बारे में पूछा गया तो इमाम अहमद (رحمہ اللہ) ने फ़रमाया, मेरे दिल में वकीअ का एहतराम बहुत है लेकिन अब्दुर्रहमान इमाम है।

मुहम्मद बिन अम्र बिन नबहान बिन सफ़वान सक्फ़ी अल-बसरी कहते हैं मैंने अली बिन मदीनी से सुना वह कह रहे थे: अगर मुझसे हजरे अस्वद और मकामे इब्राहीम के दर्मियान में क़सम ली जाए तो मैं क़सम उठा दूं कि मैंने अब्दुर्रहमान बिन महदी से बड़ा आलिम नहीं देखा।

इमाम तिर्मिज़ी (رحمہ اللہ) फ़रमाते हैं: इस बारे में मोहद्दिसीन की रिवायत और कलाम बहुत हैं हमने इख़्तिसार के साथ यही कुछ बयान किया है ताकि अहले इल्म के मरातिब और हिफ्ज़ो इत्कान में एक दूसरे पर फ़ज़ीलत की दलील बन सके और जिस पर अहले इल्म ने कलाम किया है तो इस कलाम की वजह से किया है।

आलिम के सामने पढ़ना।

आलिम के सामने ऐसी चीज़ पढ़ना जो उसे याद हो या अगर याद न भी हो तो उसके पास लिखी हुई असल मौजूद हो तो मोहद्दिसीन के नज़दीक यह भी सिमा की तरह दुरुस्त है।

हमें हुसैन बिन महदी अल-बसरी ने अब्दुर्रज़्ज़ाक से बयान किया कि इब्ने जुरैज कहते हैं: मैंने अता बिन अबी रबाह पर किरअत की तो मैंने कहा: मैं कैसे कहूं? तो उन्होंने फ़रमाया, तुम कहो حدثنا (हमें हदीस बयान की)।

हमें सुवैद बिन नस्र ने अली बिन हुसैन बिन वाकिद से बवास्ता अबू इस्मा, यज़ीद अन्नहवी से बयान किया कि इक्रिमा फ़रमाते हैं। ताइफ़ वालों में से कुछ लोग इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) के पास उनकी कुछ किताबें लेकर आए तो (अब्दुल्लाह) वह अहादीस उन्हें पढ़ कर सुनाने लगे तो आगे पीछे कर रहे थे फिर फ़रमाने लगे: भाई मैं तो इस मुसीबत से आजिज़ आ गया तुम मुझे पढ़ कर सुनाओ इसलिए कि मेरा इक़रार कर लेना मेरे पढ़ने की तरह ही है।

मुनावला...(किसी को अपनी किताब अता करना)

हमें सुवैद ने बवास्ता अली बिन हुसैन बिन वाकिद उनके बाप से बयान किया है कि मंसूर बिन मोतमिर कहते हैं जब कोई आदमी किसी शख़्स को अपनी किताब देते हुए यह कह दे कि इसे मेरी तरफ़ से रिवायत कर सकते हो तो उसे रिवायत करना जायज़ होगा नीज़ मैंने मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी(رحمه الله) से सुना वह फ़रमा रहे थे कि मैंने आसिम नबील से एक हदीस के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा: मुझे पढ़ कर सुनाओ लेकिन मैं यह चाहता था कि वह पढ़ें तो उन्होंने कहा: क्या तुम किरअत को जायज़ नहीं समझते? जबकि सुफ़ियान सौरी और इमाम मालिक बिन अनस (رحمه الله) किरअत को जायज़ समझते थे।

हद्दसना और अख़्बरना में फ़र्क़

हमें अहमद बिन हसन ने यहया बिन सुलैमान अल-जोफ़ी अल-मिस्री से बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन वहब ने फ़रमाया, जिस रिवायत में मैं तुम्हें حدثنا कहूं यह वह रिवायत होगी जो मैंने लोगों के साथ सुनी थी, जब حدثني कहूं तो यह वह होगी जो अकेले में मैंने सुनी, जब मैं اخبرنا कहूं तो यह वह रिवायत है जो एक आलिम के सामने पढ़ी गई और मैं भी मौजूद था और जब मैं اخبرني कहूं तो यह वह रिवायत होगी जो मैंने अकेले किसी आलिम के सामने पढ़ी।

(इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं) : मैंने अबू मूसा मुहम्मद बिन मुसन्ना से सुना वह कहते थे यहया बिन सईद अल-क़त्तान फ़रमाते हैं: اخبرنا और حدثنا एक ही चीज़ है।

इमाम तिर्मिज़ी कहते हैं: हम अबू मुस्अब अल-मदनी के पास थे कि उनके सामने उनकी कोई हदीस पढ़ी गई तो मैंने उनसे कहा: हम कैसे कहें? तो उन्होंने कहा: तुम कहो: حدثنا ابو مصعب ।

इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: बअ़ज़ उलमा ने الاجازة को जायज़ कहा है जब आलिम किसी शख़्स के लिए अपनी तरफ़ से रिवायत की इजाज़त दे तो वह रिवायत कर सकता है।

हदीस को लिखना।

हमें महमूद बिन गैलान ने वकीअ से उन्हें इमरान बिन हुदैर ने अबू मिज्लज के ज़रिए बशीर बिन नुहैक से बयान किया है वह कहते हैं मैंने अबू हुरैरा (رضي الله عنه) की रिवायात पर मुश्तमिल एक किताब लिखी फिर उनसे पूछा क्या मैं आप की तरफ़ से रिवायत कर सकता हूँ? उन्होंने फ़रमाया, हाँ।

हमें मुहम्मद बिन इस्माईल अल-वास्ती बवास्ता मुहम्मद बिन् हसन अल-वास्ती ने औफ़ अल-आराबी से बयान किया कि एक आदमी ने हसन बसरी से कहा: मेरे पास आपकी रिवायतकर्दा कुछ अहादीस हैं क्या मैं उन्हें आप की तरफ़ से रिवायत कर सकता हूँ उन्होंने फ़रमाया, हाँ।

इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं मुहम्मद बिन हसन महबूब बिन हसन के नाम से मारूफ़ हैं उनसे कई अइम्मा ने रिवायत की है। हमें जारूद बिन मुआज़ ने अनस बिन अयाज़ से बयान क्या है कि उबैदुल्लाह बिन उमर कहते हैं मैं एक किताब लेकर इमाम ज़ोहरी के पास गया उनसे कहा: यह आपकी अहादीस हैं मैं आपकी तरफ़ से इन्हें रिवायत कर सकता हूँ उन्होंने कहा: हाँ,

हमें अबू बक्र ने अली बिन अब्दुल्लाह से बयान किया है कि यहया बिन सईद बयान करते हैं इब्ने जुरैज एक किताब लेकर हिशाम बिन उर्वा के पास गए उनसे कहा: यह आप की अहादीस हैं क्या मैं इन्हें रिवायत कर सकता हूँ? उन्होंने फ़रमाया, हाँ, यहया कहते हैं कि मैंने अपने दिल में कहा: पता नहीं इन में से कौन सा मामला बेहतर है (इजाज़त का किरअत का)।

अली कहते हैं: मैंने यहया बिन सईद से इब्ने जुरैज की अता अल-खुरासानी से रिवायतकर्दा हदीस के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा: ज़ईफ़ है मैंने कहा: वह तो कहते हैं मुझे ख़बर दी है कहने लगे यह कुछ नहीं है यह एक किताब थी जो उन्होंने उनको दी थी।

मुर्सल हदीस।

इमाम तिर्मिज़ी कहते हैं: मुर्सल हदीस जुम्हूर मोहद्दिसीन के नज़दीक सहीह नहीं है इसे बहुत से मोहद्दिसीन ने ज़ईफ़ कहा है हमें अली बिन हुज्र ने बकिय्या बिन वलीद से बयान किया है कि उत्बा बिन अबी हकीम कहते हैं: ज़ोहरी (رحمه الله) ने इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी फ़र्वा को सुना वह कह रहे थे अल्लाह के रसूल(ﷺ) ने फ़रमाया, " तो इमाम ज़ोहरी कहने लगे: ऐ इब्ने अबी फ़र्वा! अल्लाह तुझे तबाह करे तुम ऐसी अहादीस रिवायत करते हो जिनकी न कोई लगाम है न रस्सी।

हमें अबू बक्र ने अली बिन अब्दुल्लाह से बयान किया है कि यहया बिन सईद कहते हैं कि मुजाहिद की मुर्सल रिवायात कई वुजूहात की बिना पर मुझे अता बिन अबी रिबाह की मुर्सलात से अच्छी लगती हैं अता हर क़िस्म की रिवायत करते हैं। अली ने कहा: यहया कहते हैं: सईद बिन जुबैर की मुर्सलात भी मुझे अता की मुर्सलात

से अच्छी लगती हैं।

मैंने यहया से कहा: आप को मुजाहिद की मुर्सालात अच्छी लगती हैं या ताऊस की? उन्होंने कहा: यह दोनों बहुत क़रीब हैं। अली कहते हैं: मैंने यहया बिन सईद से सुना वह कह रहे थे: मेरे नज़दीक अबू इस्हाक़ की मुर्सलात की कुछ हैसियत नहीं है। इसी तरह आमश, अत्तैमी, यहया बिन अबी कसीर और इब्ने उयय्ना की मुर्सलात भी हवा की तरह ही हैं फिर कहने लगे: अल्लाह की क़सम! सुफ़ियान बिन सईद की मुर्सलात भी। तो मैंने यहया से पूछा इमाम मालिक की मुर्सलात? वह कहने लगे: यह मुझे पसंद हैं, फिर यहया ने कहा: लोगों में इमाम मालिक (رحمه الله) से ज़्यादा सहीह हदीस बयान करने वाला कोई नहीं।

हमें सिवार बिन अब्दुल्लाह अंबरी ने बयान किया कि यहया बिन सईद कहते हैं: जिस हदीस में हसन बसरी यह कहें कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "तो हमें उसकी असल मिल जाती है सिवाए एक दो अहादीस के।

इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: जिसने मुर्सल हदीस को ज़ईफ़ कहा है वह इस वजह से ज़ईफ़ कहते हैं कि अइम्म-ए-किराम ने सिक़ह् और गैर सिक़ह् हर क़िस्म के रावियों से ली है। फिर जब उनमें से कोई मोहद्दिस एक हदीस इर्साल के साथ बयान करता है तो हो सकता है वह उसने गैर सिक़ह् रावी से ली हो। जबकि हसन बसरी (رحمه الله) ने माबद जुहनी के बारे में कलाम की फिर उनसे रिवायत भी की है।

हमें बिश्र बिन मुआज़ बसरी ने बयान किया कि मरहूम बिन अब्दुल अज़ीज़ अत्तार कहते हैं: मुझे मेरे बाप और मेरे चचा ने बताया कि हमने हसन बसरी से सुना वह कह रहे थे: माबद जुहनी से बचो वह ख़ुद भी गुमराह है और दूसरों को भी गुमराह करने वाला है।

इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: शअ़बी से मर्वी है वह कहते हैं: हमें हारिस आवर ने बयान किया जबकि वह झूठा रावी है।

अली (رضي الله عنه) से और इस के अलावा फ़राइज़ बयान करने वाला यही है और शअ़बी कहते हैं मुझे हारिस आवर ने फ़राइज़ के मसाइल सिखलाए हैं और वह लोगों में सबसे ज़्यादा फ़राइज़ को जानने वाला था।

मुहम्मद बिन बश्शार कहते हैं: मैंने अब्दुर्रहमान बिन महदी को फ़रमाते हुए सुना किया तुम सुफ़ियान बिन उयय्ना पर तअज्जुब नहीं करते? कि मैंने उनके कहने पर जाबिर जोफ़ी की एक हज़ार से ज़ायद अहादीस छोड़ दी लेकिन वह ख़ुद उसकी तरफ़ से बयान करते हैं। मुहम्मद बिन बश्शार कहते हैं: अब्दुर्रहमान बिन महदी ने जाबिर जोफ़ी की रिवायत छोड़ दी थी।

जबकि बअ़ज़ अहले इल्म ने मुर्सल हदीस से दलील भी ली है।

हमें अबू उबैदा बिन अबी सफ़र कूफी ने बवास्ता सईद बिन आमिर, शोबा से बयान किया है कि

सुलैमान आमश कहते हैं: मैंने इब्राहीम नखई से कहा: आप मुझे सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद से कोई मुत्तसिल रिवायत बयान करें तो इब्राहीम कहने लगे: जब मैं तुम्हें अब्दुल्लाह (رضي الله) से कोई हदीस बयान करूं तो यह वही रिवायत होती है जो मैं ने उनसे सुनी हो और जब मैं यह कहूं अब्दुल्लाह (رضي الله) ने फ़रमाया, तो वह दीगर लोगों के ज़रिए अब्दुल्लाह (رضي الله) से मर्वी हदीस होती है।

रावियों को ज़ईफ़ कहने में इख़्तिलाफ़

अहले इल्म में से बहुत से अइम्मा ने रावियों को ज़ईफ़ कहने पर इख़्तिलाफ़ किया है, जैसा कि बाकी उलूम में इख़्तिलाफ़ है। शोबा से मर्वी है कि उन्होंने अबू ज़ुबैर मक्की, अब्दुल मलिक बिन सुलैमान और हकीम बिन ज़ुबैर को ज़ईफ़ कहा है और उनसे रिवायत को भी तर्क किया है, लेकिन शोबा ने हिफ़्ज़ो-अदालत में उनसे कमतर रावियों से हदीस बयान की है। उन्होंने जाबिर जोफ़ी, इब्राहीम बिन मुस्लिम हजरी, मुहम्मद बिन उबैदुल्लाह अरज़मी और हदीस में ज़ईफ़ समझे जाने वाले दीगर रुवात से हदीस बयान की है।

हमें मुहम्मद बिन अम्र बिन नबहान बिन सफ़वान बसरी ने बयान किया कि उमय्या बिन ख़ालिद कहते हैं: मैंने शोबा से कहा: आप अब्दुल मलिक बिन अबी सुलैमान को छोड़ कर मुहम्मद बिन उबैदुल्लाह बिन अरज़मी से हदीस लेते हैं? उन्होंने कहा: हाँ।

इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: शोबा ने अब्दुल मलिक बिन अबी सुलैमान से हदीस बयान की फिर उन्हें छोड़ दिया, और बयान किया जाता है कि उन्होंने उन्हें इस हदीस की वजह से छोड़ा जो उन्होंने अकेले अता बिन अबी रिबाह से बवास्ता जाबिर बिन अब्दुल्लाह (رضي الله) नबी(ﷺ) से रिवायत की है कि आप ने फ़रमाया, "आदमी अपने शुफ़आ का ज़्यादा हक़दार है, अगर गैर हाज़िर भी हो तो उसका इन्तिज़ार किया जाएगा जब उन दोनों का रास्ता एक है।"

जबकि कई अइम्मा ने तसब्बुत के साथ अबी ज़ुबैर, अब्दुल मलिक बिन सुलैमान और हकीम बिन ज़ुबैर से रिवायत की है।

हमें अहमद बिन मुनीअ ने बवास्ता हिशाम, हज्जाज और इब्ने अबी लैला से बयान किया कि अता बिन अबी रिबाह फ़रमाते हैं: हम जब जाबिर बिन अब्दुल्लाह (رضي الله) के पास से निकलते, फिर हम उनकी अहादीस का आपस में मुज़ाकरा करते तो अबू ज़ुबैर को सबसे ज़्यादा अहादीस याद होती थी।

मुहम्मद बिन यहया बिन अबी उमर मक्की बयान करते हैं: सुफ़ियान बिन उयय्ना ने हमें बताया कि अबू ज़ुबैर कहते हैं: अता मुझे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (رضي الله) के सामने बिठाते थे मैं उनके लिए हदीस को याद करता था।

हमें इब्ने अबी उमर ने सुफ़ियान से बयान किया कि अय्यूब सख्तियानी कहते हैं: मुझे अबू ज़ुबैर ने

बयान किया और अबू जुबैर ऐसे थे सुफ़ियान ने अपना हाथ बंद कर के इशारा किया।

इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: इससे हिफ़्ज़ो-इत्कान मुराद है।

अब्दुल्लाह बिन मुबारक से मर्वी है कि सुफ़ियान सौरी कहा करते थे: अब्दुल मलिक बिन अबी सुलैमान इल्म में एक तराज़ू की हैसियत रखते थे।

हमें अबू बक्र ने बयान किया कि अली बिन अब्दुल्लाह कहते हैं: मैंने यहया बिन सईद से हकीम बिन जुबैर के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा: उन्हें शोबा ने इस हदीस की वजह से छोड़ा है जो उन्होंने सदक़ा के बाब में रिवायत की है यानी अब्दुल्लाह बिन मसऊद की हदीस कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, " जिसने लोगों से सवाल किया जबकि उसके पास बकद्रे किफ़ायत माल भी था तो यह चीज़ क़यामत के दिन उसके चेहरे में ज़ख्मों का बाइस होगी।" लोगों ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! उसे कितना माल काफ़ी है? फ़रमाया, " पच्चास दिरहम या उनकी कीमत के मुताबिक़ सोना।"

अली कहते हैं: यहया बिन सईद का कहना है कि हकीम बिन जुबैर से सुफ़ियान सौरी और ज़ायदा ने भी रिवायत की है। अली कहते हैं: यहया उनकी हदीस को सहीह समझते थे।

हमें महमूद बिन गैलान ने यहया बिन आदम से बवास्ता सुफ़ियान सौरी हकीम बिन जुबैर से सदक़ा की हदीस बयान की है। यहया बिन आदम कहते हैं: शोबा के साथी अब्दुल्लाह बिन उस्मान ने सुफ़ियान सौरी से कहा: काश! इस हदीस को हकीम के बजाये कोई और रिवायत करता, तो सुफ़ियान ने उनसे कहा: क्या शोबा हकीम से रिवायत नहीं करते? उन्होंने कहा: हाँ! तो सुफ़ियान सौरी ने कहा: मैंने ज़ुबैद को यह हदीस मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन यज़ीद से भी बयान करते हुए सुना है।

इमाम तिर्मिज़ी की इस्तिलाहात की वज़ाहत।

इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: इस किताब में हमने जिस हदीस को हसन कहा है, इससे हमारी मुराद इसकी इस्नाद का हसन होना है, वह हदीस जिसकी सनद में मुत्तहम बिल किज्ब रावी न हो और न ही वह हदीस शाज़ हो और किसी दूसरी सनद से भी वह मर्वी हो तो हमारे नज़दीक वह हसन है।

इस किताब में जिस हदीस को ग़रीब ज़िक्र किया गया है, तो अहले हदीस उसको कई वुजूहात की बिना पर ग़रीब कहते हैं बअ़ज़ अहादीस को ग़रीब कहा जाता है जो सिर्फ एक ही सनद से मर्वी हों।

जैसा कि हम्माद बिन सलमा बवास्ता अबी अशरा उनके बाप से रिवायत करते हैं कि मैंने अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ) क्या जबह सिर्फ़ हल्क़ और सीने में नहीं होता? आप (ﷺ) ने फ़र्माया: अगर तुम उसकी रान में नेज़ा मार दो तो वह काफ़ी है तो इस हदीस को हम्माद बिन सलमा अबू अशरा से रिवायत करने में अकेले हैं।

अबू अशरा से उनके बाप की यही एक हदीस मर्वी है, अगरचे यह हदीस उलमा के नज़दीक मशहूर है। लेकिन सिर्फ हम्माद बिन मस्लमा की वजह से मशहूर हुई है और सिर्फ उन्हीं से मर्वी है।

यानी अइम्मा में से कोई आदमी एक हदीस बयान करता है और वह सिर्फ उसी से ही मर्वी होती है, फिर उससे लेने वाले रावियों की कस्रत की वजह से मशहूर हो जाती है। मसलन वह हदीस जो अब्दुल्लाह बिन दीनार इब्ने उमर (ﷺ) से रिवायत करते हैं, रसूलुल्लाह(ﷺ) ने वला को बेचने और उसे हिबा करने से मना किया। ये सिर्फ अब्दुलाह बिन दीनार से ही मारूफ़ है।

इसे इब्ने दीनार से उबैदुल्लाह बिन उमर, शोबा, सुफ़ियान सौरी इमाम मालिक बिन अनस (ﷺ) और दीगर अइम्म-ए-हदीस ने रिवायत किया है।

यहया बिन सुलैम ने इस हदीस को उबैदुल्लाह बिन उमर से बवास्ता नाफ़े, इब्ने उमर (ﷺ) से रिवायत किया है। इसमें यहया बिन सुलैम को वहम हुआ है। सहीह यही है कि उबैदुल्लाह बिन उमर, बवास्ता अब्दुल्लाह बिन दीनार, इब्ने उमर (ﷺ) से रिवायत करते हैं।

अब्दुल वह्हाब सक़फ़ी और अब्दुल्लाह बिन नुमैर ने भी उबैदुल्लाह बिन उमर से बवास्ता अब्दुल्लाह बिन दीनार, इब्ने उमर (ﷺ) से रिवायत की है, जबकि मुअम्मल ने इस हदीस को शोबा से बयान करते हुए कहा है कि शोबा कहते हैं: मैं चाहता था कि अब्दुल्लाह बिन दीनार मुझे इजाज़त देते और मैं उनका माथा चूम लेता।

इस्नाद की ग़राबत।

इमाम तिर्मिज़ी (ﷺ) फ़रमाते हैं: कुछ अहादीस हदीस में ज़्यादती की वजह से ग़रीब होती हैं, और यह उस वक़्त सहीह होती है जब यह ज्यादती किसी क़ाबिले एतमाद हाफ़िज़े वाले रावी की तरफ़ से हो,। जैसे वह हदीस जिसे इमाम मालिक बिन अनस ने बवास्ता नाफ़े, इब्ने उमर (ﷺ) से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने रमजान की ज़कात मुसलमानों में से हर आज़ाद गुलाम, मर्द और औरत पर खुजूर या जौ का एक साअ मुक़र्रर की। कहते हैं: इसमें من المسلمين का इज़ाफ़ा इमाम मालिक बिन अनस (ﷺ) की तरफ़ से है।

जबकि अय्यूब सख्तियानी, उबैदुल्लाह बिन उमर और दीगर अइम्म-ए-किराम ने इस हदीस को बवास्ता नाफ़े इब्ने उमर (ﷺ) से रिवायत किया है इसमें उन्होंने من المسلمين का ज़िक्र नहीं किया।

और बअ़ज़ ने नाफ़े से इमाम मालिक जैसी रिवायत की है जिनका हाफ़िज़ा क़ाबिले एतमाद नहीं है।

इसलिए बहुत से अइम्मा ने मालिक की हदीस को लिया है और इसी से इस्तिदलाल भी करते हैं जिन में शाफ़ेई और इमाम अहमद बिन हंबल (ﷺ) भी हैं। यह दोनों कहते हैं कि जब किसी आदमी के गैर

मुस्लिम गुलाम हों तो वह उनकी तरफ़ से सदक़-ए-फित्र अदा नहीं करेगा, उन्होंने इमाम मालिक (رحمه الله) की हदीस से दलील ली है। तो जब कोई क़ाबिले एतमाद हाफ़िज़े वाला इज़ाफ़ा करे तो उसके इजाफे को क़ुबूल किया जा सकता है।

नीज़ बअ़ज़ अहादीस कई तुरूक़ से मर्वी होती हैं, उन्हें सिर्फ उनकी इस्नाद की वजह से ग़रीब कहा जाता है।

हमें अबू कुरैब, अबू हिशाम रिफ़ाई, अबू साइब और हुसैन बिन अस्वद ने अबू उसामा से उन्हें बरीद बिन अब्दुल्लाह बिन अबी बुर्दा ने अपने दादा अबू बुर्दा के ज़रिए अबू मूसा (رضي الله عنه) से हदीस बयान की है कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, " काफ़िर सात आँतों में खाता है और मोमिन एक आंत में खाता है।"

इमाम तिर्मिज़ी ने कहा: यह हदीस अपनी इस्नाद की वजह से हसन ग़रीब है।

नीज़ यह हदीस कई तुरूक़ से नबी(ﷺ) से मर्वी है, और इसे अबू मूसा (رضي الله عنه) से ग़रीब तसव्वुर किया जाता है।

मैंने महमूद बिन गैलान से इस हदीस के बारे में पूछा तो उन्होंने फ़रमाया, यह अबू कुरैब की अबू उसामा से बयानकर्दा हदीस है।

मैंने इस हदीस के बारे में इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (رحمه الله) से पूछा तो उन्होंने फ़रमाया,यह अबू कुरैब की अबू उसामा से रिवायतकर्दा हदीस है,हम इसे अबू कुरैब की सनद से जानते हैं। तो मैंने उनसे कहा: हम इसे कई रावियों के ज़रिए अबू उसामा से जानते हैं, तो उन्होंने तअज्जुब करते हुए फ़रमाया, मैं नहीं जानता था कि इसे अबू कुरैब के अलावा भी किसी ने रिवायत किया है।

मुहम्मद कहते हैं: हमारे ख़्याल के मुताबिक़ अबू कुरैब ने इस हदीस को मुजाकिरा में अबू उसामा से लिया है।

हमें अब्दुल्लाह बिन अबी ज़ियाद और दीगर रावियों ने शबाबा बिन सिवार से उन्हें शोबा ने बवास्ता बुकैर बिन अता, अब्दुर्रहमान बिन यामर से हदीस बयान की है कि नबी(ﷺ) ने कद्दू और मुज़फ्फत बर्तन (में नबीज़ बनाने) से मना किया है।

इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस इस सनद से ग़रीब है शबाबा के अलावा हम किसी को नहीं जानते जिसने इसे शोबा से बयान किया हो।

जबकि कई तुरूक़ से नबी(ﷺ) से मर्वी है कि आप ने कद्दू और मुज़फ्फत बर्तन में नबीज़ बनाने से मना किया है। शबाबा की हदीस ग़रीब है, इसलिए कि वह शोबा से बयान करने में अकेले हैं।

शोबा और सुफ़ियान सौरी ने इसी सनद के साथ बवास्ता बुकैर बिन अता, अब्दुर्रहमान बिन यामर से रिवायत की है कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, "हज, अरफ़ा (में वक़ूफ़ करने का नाम) ही है।" तो यह हदीस अहले इल्म के यहाँ इसी सनद से मारूफ़ है।

हमें मुहम्मद बिन बश्शार ने उन्हें मुआज़ बिन हिशाम ने अपने बाप से बवास्ता यहया बिन अबी कसीर, अबू मजाहिम से हदीस बयान की है उन्होंने अबू हुरैरा से सुना वह बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह(ﷺ) ने फ़रमाया, "जो शख़्स किसी जनाज़े के पीछे गया फिर उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी तो उसके लिए एक कीरात (सवाब) है, और जो उसके पीछे चले फिर उससे फ़रागत तक साथ रहे तो उसके लिए दो कीरात हैं।" लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! दो कीरात क्या हैं? आप ने फ़रमाया, "उनमें छोटा (कीरात) उहुद पहाड़ की तरह है।"

हमें अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान ने, उन्हें मरवान बिन मुहम्मद ने मुआविया बिन सलाम से उन्हें यहया बिन अबी कसीर ने बवास्ता अबू मजाहिम सय्यदना अबू हुरैरा (رضی الله عنه) से हदीस बयान की है कि नबी(ﷺ) ने फ़रमाया, "ज़ो शख़्स जनाज़े के पीछे गया उसके लिए एक कीरात है...आखिर तक।" फिर इसी मफ़्हूम की हदीस बयान की।

अब्दुल्लाह कहते हैं: हमें मरवान ने मुआविया बिन सलाम से उन्हें यहया ने महरी के मौला अबू सईद से बवास्ता हम्ज़ा बिन सफ़ीना, साइब से बयान किया है कि उन्हें सय्यदा आयशा (رضی الله عنها) ने नबी(ﷺ) से ऐसी ही हदीस बयान की है।

मैंने अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान से पूछा: इराक में लोगों ने आपकी कौन सी हदीस ग़रीब कहा है? तो उन्होंने जवाब दिया, साइब की बवास्ता आयशा (رضی الله عنها) नबी(ﷺ) से मर्वी यह हदीस।

नीज मैंने मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी को भी यह हदीस अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान से बयान करते हुए सुना।

इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस कई तुरूक़ से बवास्ता आयशा (رضی الله عنها) नबी करीम(ﷺ) से मर्वी है, और इसे इसकी सनद की वजह से ग़रीब कहा जाता है जो कि साइब की बवास्ता आयशा नबी(ﷺ) से रिवायत है।

हमें अबू हफ़्स अम्र बिन अली ने उन्हें यहया बिन सईद अल-क़त्तान ने बवास्ता मुग़ीरा बिन अबी कुर्रा अस्सदूसी, सय्यदना अनस बिन मालिक (रजि०) से हदीस बयान की है कि एक आदमी ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल(ﷺ)! मैं ऊँट को बाँध कर अल्लाह पर तवक्कुल करूं या उसे खोल कर तवक्कुल करूं? आप(ﷺ) ने फ़रमाया, "उसे बाँध और फिर तवक्कुल कर।"

अम्र बिन अली कहते हैं कि यहया बिन सईद ने फ़रमाया, मेरे मुताबिक यह हदीस मुन्कर है।

इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं: यह हदीस इस सनद से ग़रीब है हम इसे अनस बिन मालिक से सिर्फ इसी सनद से जानते हैं। नीज़ अम्र बिन उमय्या ज़मरी के ज़रिए भी नबी(ﷺ) से ऐसी ही हदीस मर्वी है।

ख़ातमा...

हमने इस किताब को इख़्तिसार के साथ मुरत्तब किया है इसलिए कि हमें इसमें नफ़ा की उम्मीद है, हम अल्लाह तआला से इसमें आने वाले अहकामात से नफ़ा हासिल करने का सवाल करते हैं और यह भी सवाल करते हैं कि वह अपनी रहमत से इसे हमारे लिए हुज्जत बना ले और हमारे ऊपर वबाल न बनाए।

यह किताबुल इलल की आख़िरी बात थी। अल्लाह के इन्आम और फ़ज़्ल पर हर क़िस्म की तारीफ़ उसी के लिए है और सय्यदुल मुर्सलीन नबी मुहम्मद(ﷺ) और आप की आल पर उस परवरदिगार की रहमतें और सलामती हो।

हमें अल्लाह ही काफी है, वह अच्छा कारसाज़ है, गुनाह से बचने और नेकी करने की ताक़त उसी अल्लाह की तौफ़ीक़ से है जो बहुत बलंद अज़्मत वाला है। इस इत्माम (मुकम्मल होने) पर अल्लाह की तारीफ़ है और नबी(ﷺ) पर अफ़ज़ल तरीन रहमत और पाकीज़ा सलाम निछावर हों और तमाम तारीफें अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए ही हैं।

हर्फ़े आख़िर...

इस किताब का उर्दू तर्जुमा और मुख़्तसर तौज़ीह अल्लाह के फ़ज़्ल, उसकी रहमत और एहसाने ख़ास के साथ 4 जून 2014, बरोज़ बुद्ध बमुताबिक़ 5 शाबान 1435 हिजरी फज्र की नमाज़ के बाद 5:55 पर मुकम्मल हुआ।

हम अल्लाह से दुआ गो हैं कि वह इसे हमारे लिए आख़िरत में जमा फ़रमाए, क़यामत के दिन इसे हमारे मीज़ाने हसनात में रखे, पढ़ने वालों के लिए इसे नफ़ा बख़्श बनाए और इस अजीम तालीफ़ पर इमाम तिर्मिज़ी (رحمه الله) को सवाबे जजील अता फ़रमाए अल्लाह पाक दुआओं को सुनने वाला क़ुबूल करने वाला है।

اللهم أغفر للمترجم ووالديه ، ولمن يطالعه،أن يصلي علي النبي الأمي محمد و أله ويدعوه لمولفه ولمترجمه و لطابعه بالعفو والمغفره والرحمة ولمن قال امين ولجمع المؤمنين والمؤمنات و انفعه عافية برحمتك إنك سميع مجيب الدعوات كريم جواد

नोट्स

(पेंसिल और रबर काम में लेना मुफ़ीद रहेगा।)